II Part

206. सामान्य स्त्री वेद मार्गणा

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	1–9	1–9	2, (मि.,सा. गुण.)
2.	जीवसमास	4 (संज्ञी असंज्ञी प व अ.)	2 (संज्ञी व असंज्ञी पर्याप्त)	2 (संज्ञी असंज्ञी अपर्याप्त)
3.	पर्याप्ति	6,5 पर्याप्ति, अपर्याप्ति	6,5 पर्याप्ति	6,5 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10,9,7,7	10,9	7,7
5.	संज्ञा	4	–	–
6.	गति	3 (नरक गति बिना)	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	13 योग (आहारकद्विक बिना)	10	3 योग (औद.मि., वैक्रि.मि., कार्मण)
10.	वेद	1 स्त्रीवेद	–	–
11.	कषाय	23 कषाय (पुरुष व नपुंसक वेद बिना)	–	–
12.	ज्ञान	6 (3 ज्ञान, 3 कुज्ञान)	–	2 कुज्ञान
13.	संयम	4 (अ.दे.,सा.छे.)	–	1 असंयम
14.	दर्शन	3 (केवल दर्शन बिना)	–	2 (चक्षु, अचक्षु)
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	द्र.2(का.शु.)भावसे(3 अशुभ व पीत
16.	भव्य	दोनों (भव्य, अभव्य)	–	–
17.	सम्यक्त्व	6	–	2 (मि.सा.)
18.	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी,	(दोनों) सं. असं.	संज्ञी, असंज्ञी
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों (आहारक, अनाहारक)
20.	उपयोग	9 (6 ज्ञानो. + 3 दर्शनो)	–	4 (2 ज्ञानो.+2 दर्शनो.)
21.	ध्यान	13 (4 आर्त्त+4 रौद्र+4 धर्म+1 शु.)	–	8 (4 आर्त्त+4 रौद्र)
22.	आस्रव	53 (23 क.+13 यो.+12 अवि.+ 5मि.)	50 (23+10+12+5)	43 (23+3+12+5)
23.	जाति	22 लाख		
24.	कुलकोटि	83½ लाख करोड़		
25.	संख्या	असंख्यात (देवियों से कुछ अधिक)		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	स्व. लोक का असंख्यातवां भाग, वि.वे. विक्रि.से कुछ कम 8/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा ज. एक समय, उ. पल्योपम शत पृथक्त्व		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – निरन्तर एक जीव की अपेक्षा– ज. क्षुद्रभव उ. असंख्यात पुद्गल परावर्तन स्वरूप अनंतकाल		
30.	भाव	42 (औद. 18, क्षयो. 17, क्षा.2 औप. 2, पा.3) अपर्या. –27 भाव		
31.	अवगाहना	जघन्य– संख्यात अंगुल	उत्कृष्ट– संख्यात धनुष*	
32.	बन्ध	120		
33.	उदय	105 (आहारकद्विक, पुरुषवेद, स्थावरादि, चार नरकद्विक तीर्थंकर, एकेन्द्रिय, विकलत्रय, नपुंसकवेद, आतप, नरकायु इन 17 प्रकृति बिना)		
34.	सत्त्व	148		
		*कर्मभूमि की महिलायें 525 धनुष भोगभूमि की महिलाओं की 3 कोश प्रमाण अवगाहना होती है।		

206. इत्थि वेदी सामण्णं

अह वेदमग्गणाणुवादेण आलावभण्णमाणे मूल ओघालावे वण्णदि सो णादव्वो एयत्तो अणियट्टियरण णव गुणट्ठाणाणि संति। इत्थि वेदी जीवाणं सामण्णालाव भण्णमाणे अत्थि आदि णव गुणट्ठाणाणि अपज्जत्तेसु मिच्छत्त सासण बे गुणट्ठाणाणि, सण्णी असण्णी पज्जत्तापज्जत्त चत्तारि जीव समासा, छ पंच पज्जत्ती छ पंच अपज्जत्ती, दस णव सत्त सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, णिरयेण विणा तिण्णि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, आहार दुगेण विणा तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, एग इत्थिवेदो, तेबीस कसाया, मणपज्जयेण केवलणाणेहिं विणा छण्णाणाणि अपज्जत्तेसु बे अण्णाणाणि, असंजम देससंजम सामाइय छेदोवट्ठावणा चत्तारि संजमा अपज्जत्तेसु असंजमो, केवलदंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि अपज्जत्तेसु बे दंसणाणि, छल्लेस्सा अपज्जत्तेसु दव्वेण काउ सुक्क बे लेस्सा भावेण तिण्णि असुह एग तेजोलेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्वसिद्धिया दोण्णि, छ सम्मत्ता अपज्जत्तेसु मिच्छत्त सासणं बे सम्मत्ता, सण्णी असण्णी दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, णव उवजोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द चत्तारि धम्मो एगं सुक्को तेरस झाणाणि अपज्जत्तेसु अट्ठ झाणाणि, तिरेवण्ण आसवा पज्जत्तेसु पंचास अपज्जत्तेसु तिदाल आसवा, बाबीस लक्ख जादी, अद्धुत्तर तिअसीदिलक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा असंखेज्ज देवीणं अहिंओ, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा सगट्ठाणं लोयस्स असंखेज्जदि भागा विहार वेयणा वेगुव्वियत्तो अट्ठ चौद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स सदपुधत्तं, अंतरं-णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण खुद्दाभवो उक्कस्सेण असंखेज्ज पोग्गलपरायट्टं पमाणो अणंतकाल, बादाल भावा अपज्जत्तेसु सत्ताबीस भावा, जहण्णमवगहणं संखेज्ज घणंगुल उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू भोग भूमि अवेक्खा तिण्णि कोसाणि, बीसुत्तर सयं पयडीणं बंधो, पंचुत्तर सयं पयडीणं उदयो, अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु इत्थिवेद सामण्णालाव सम्मत्ता।

स्त्रीवेदी सामान्य

स्त्री वेदी जीवों के सामान्यालाप कहने पर आदि के नौ गुणस्थान अपर्याप्त में मिथ्यात्व सासादन दो गुणस्थान, संज्ञी असंज्ञी पर्याप्तापर्याप्त चार जीव समास, छह-पाँच पर्याप्ति-छह-पाँच अपर्याप्ति, दस-नौ-सात-सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्य-तिर्यंच-देव तीन गतियाँ, पंचेन्द्रिय, एक त्रसकाय, आहारक द्विक बिना तेरह योग (3 अपर्याप्त में, 10 पर्याप्त में योग), एक स्त्री वेद, तेईस कषाय, मन: पर्यय व केवलज्ञान बिना छह ज्ञान अपर्याप्तकों में दो कुज्ञान, असंयम-देशसंयम-सामायिक-छेदोपस्थापना चार संयम अपर्याप्त में एक असंयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन अपर्याप्तक में दो दर्शन, द्रव्य भाव से छहों लेश्या अपर्याप्त में द्रव्य से दो (कापोत, शुक्ल) लेश्या भाव से तीन अशुभ व एक पीत लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक दोनों, छहों सम्यक्त्व अपर्याप्त में मिथ्यात्व व सासादन दो सम्यक्त्व, संज्ञी-असंज्ञी दोनों, आहारक अनाहारक दोनों, पर्याप्त में आहारक अपर्याप्त में आहारक और अनाहारक दोनों, नौ उपयोग अपर्याप्तक में चार उपयोग, तेरह ध्यान (चार आर्त, चार रौद्र, चार धर्म, एक शुक्ल ध्यान) अपर्याप्तक में आठ ध्यान, तिरेपन आस्रव पर्याप्तकों में पचास अपर्याप्तक तेंतालीस आस्रव, बाईस लाख जाति, साढ़े तैरासी लाख करोड़ (83½ लाख करोड़) कुल कोटि, संख्यापेक्षा असंख्यात (देवियों से कुछ अधिक), क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन स्वस्थान लोक का असंख्यातवां भाग विहार-वेदना-विक्रिया कुछ कम 8/14 राजू, काल नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम शत पृथक्त्व, अंतर नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य क्षुद्रभव उत्कृष्ट असंख्यात पुद्गल परिवर्तन प्रमाण अनंतकाल, बयालीस भाव अपर्याप्तक में सत्ताईस भाव, जघन्य अवगाहना संख्यात अंगुल उत्कृष्ट कर्मभूमि की महिलाओं की अपेक्षा पाँच सौ पच्चीस धनुष भोगभूमि की अपेक्षा तीन कोस, एक सौ सत्तरह प्रकृतियों का बंध, एक सौ पाँच प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार वेद मार्गणा में स्त्री वेदियों का सामान्यालाप समाप्त।

नोट :- वेद मार्गणा सामान्य आलाप ओघवत् है इसलिए यहाँ नहीं कहा जा रहा है वहाँ से जान लेना चाहिए।

207. स्त्रीवेद मिथ्यात्व गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	मिथ्यात्व गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी असंज्ञी पंचेन्द्रिय प.व अ.	संज्ञी असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6,5 पर्याप्ति, 6,5 अपर्याप्ति	5,6 पर्याप्ति	5,6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10,9 व 7,7	10 प्राण, 9 प्राण	7,7 प्राण
5.	संज्ञा	4	–	–
6.	गति	3 (मनुष्य, देव, तिर्यंच)	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	त्रसकाय	–
9.	योग	13 (आहारकद्विक बिना)	10	3 (औदा.मि., वैक्रि.मि. कार्मण)
10.	वेद	स्त्रीवेद	–	–
11.	कषाय	23 कषाय (पुरुष व नपुंसक वेद बिना)	–	–
12.	ज्ञान	3 कुज्ञान	–	2 कुज्ञान (कुमति, कुश्रुत)
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 (चक्षु व अचक्षु दर्शन)	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	6 लेश्या	4 लेश्या (द्रव्य से 2 (का.,शु.)
				भाव से 3 अशुभ व पीत लेश्या
16.	भव्य	भव्य व अभव्य	भव्य व अभव्य	दोनों
17.	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी,	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	अनाहारक/आहारक (दोनों)
20.	उपयोग	5 (3 ज्ञानो. + 2 दर्शनो.)	–	4 (2 ज्ञानो.+2 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8 ध्यान	–	–
22.	आस्रव	53 (23 क.+12 अवि.+5 मि.+13 योग)	50 (23+12+5+10)	43 (23+12+5+3)
23.	जाति	22 (14+4+4) लाख	–	–
24.	कुलकोटि	83½ (26 लाख करोड़+43½ लाख+14 लाख)	–	–
25.	संख्या	असंख्यात (देवियों से कुछ अधिक)		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	स्व. लोक का असंख्यातवां भाग वि.वे. विक्रि.क.स. कुछ कम 8/14 राजू, मा.व.उ.– सर्वलोक		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा ज. अन्तर्मुहूर्त उ. शत पृथक्त्व पल्योपम*[1]		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – निरन्तर एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम 55 पल्योपम		
30.	भाव	प. 31 भाव (औद.18, मि. 10, पा.3) अप. 30 भाव (कुअवधि बिना)		
31.	अवगाहना	जघन्य– घनागुंल का संख्यातवाँ भाग या संख्यात अंगुल उत्कृष्ट– संख्यात धनुष (525 धनुष) कुछ कम		
32.	बन्ध	117 गुणस्थानोक्त अ. 107 (चार आयु, तीर्थंकर, आहारकद्विक, वैक्रियिक षट्क बिना		
33.	उदय	103 (105 प्रकृति में से सम्यक्त्व व सम्यग्मिथ्यात्व इन दो प्रकृति बिना)		
34.	सत्त्व	148		
		*[1] शत पृथक्त्व= सात सौ आठ सौ पल्य प्रमाण स्त्री वेद में लगातार रह सकता है पश्चात् अन्तर पड़ जाता है।		

207. इत्थिवेदी मिच्छाइट्ठी गुणट्ठाणं

तेसिं इत्थिवेदी मिच्छाइट्ठिजीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि एग-मिच्छाइट्ठी गुणट्ठाणं, सण्णी असण्णी* पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त चत्तारि जीवसमासा, छ पंच पज्जत्ती छ पंच अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस णव पाणा अपज्जत्तेसु सत्त सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, तिरिक्ख मणुस्स देव तिण्णि गदी, एग पंचिंदियाणि, तसकाओ, तेरह जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु ओरालिय मिस्स वेगुव्वियमिस्स कम्माणकाय तिण्णि जोगा, एग इत्थिवेदो, तेबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि अपज्जत्तेसु बे अण्णाणाणि, एग असंजमो, चक्खु-अचक्खु बे दंसणाणि, दव्वभावेहिं छल्लेस्सा अपज्जत्तेसु दव्वेण काऊ सुक्क लेस्सा भावेण किण्हणीलकाऊ तेजो चत्तारि लेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्वसिद्धिया दोण्णि, एग मिच्छत्त सम्मत्तं, सण्णी असण्णी दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, अट्ठज्झाणाणि, तिवण्ण आसवा पज्जत्तेसु पंचास अपज्जत्तेसु तिदाल आसवा, बाबीस लक्ख जादी, अद्धुत्तर ति असीदि लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा असंखेज्ज देवीसु साहिय, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा सगट्ठाणं लोयस्स असंखेज्जदि भागा कसाय वेयणा वेगुव्विया विहारवद् अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा उववाद मारणंतिओ सव्वलोगो, कालो-णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पलिदोवमस्स सदपुधत्तं, अंतरं णाणा जीवावेक्खा णिरंतरं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पणवण्ण पलिदोवमस्स देसूणा, इगतीस भावा अपज्जत्तेसु तीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्ज भागा उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू तिण्णि कोसाणि, सत्तदसुत्तर सयं पयडीणं बंधो, तिउत्तर सयं पयडीणं उदओ, अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु इत्थिवेदीसु मिच्छत्तगुणाट्ठाणालाव सम्मत्ता।

स्त्रीवेदी मिथ्यादृष्टि गुणस्थान

उन्हीं स्त्री वेदी मिथ्यादृष्टि जीवों के आलाप कहने पर - एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी-असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त - अपर्याप्त चार जीव समास, छह-पाँच पर्याप्ति-छह-पाँच अपर्याप्ति, दस-नौ-सात-सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, तिर्यंच-मनुष्य-देव तीन गतियाँ, एक पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में औदारिक मिश्र वैक्रियिक मिश्र कार्माण काय तीन योग, एक स्त्री वेद, तेईस कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्त में दो अज्ञान, एक असंयम, चक्षु-अचक्षु दो दर्शन, द्रव्य भाव से छहों लेश्या अपर्याप्त में द्रव्य से कापोत शुक्ल लेश्या भाव से कृष्ण नील-कापोत पीत चार लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक दोनों, एक मिथ्यात्व सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी दोनों, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, पाँच उपयोग अपर्याप्तक में चार उपयोग, आठ ध्यान, तिरेपन आस्रव पर्याप्तक में पचास अपर्याप्तक में तेतालीस आस्रव, बाईस लाख जाति, साढ़े तैरासी लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा असंख्यात (देवियो से कुछ अधिक), क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन स्वस्थान लोक का असंख्यातवां भाग कषाय-वेदना-विक्रिया-विहारवत् कुछ कम 8/14 राजू मारणान्तिक उपपाद सर्वलोक, काल- नाना जीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम शत पृथक्त्व, अंतर नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवाअपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम पचपन पल्योपम, इकत्तीस भाव अपर्याप्त में तीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक सौ सत्रह प्रकृतियों का बंध, एक सौ तीन प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार वेद मार्गणा में स्त्री वेदियों में मिथ्यात्व गुणस्थान समाप्त हुआ।

* ध.पु. 1 सू. 102

विशेषार्थ :- स्त्री वेद में जीव का काल जघन्य से क्षुद्रभव (अन्तर्मुहूर्त) और उत्कृष्ट काल सात सौ-आठ सौ पल्य कहा है यही मिथ्यादृष्टि स्त्रीवेद का काल है। मिथ्यादृष्टि का अन्तर जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट 55 पल्य है वह इस प्रकार है- कोई जीव मोहनीय कर्म की 28 प्रकृति की सत्ता के साथ स्त्री वेदियों में उत्पन्न हुआ पर्याप्तियों को पूर्ण कर अन्तर्मुहूर्त में सम्यक्त्व को प्राप्त कर अन्तर्मुहूर्त सम्यक्त्व के साथ रहा पुन: मिथ्यादृष्टि हो गया इस प्रकार जघन्य अन्तर प्राप्त हुआ। एक जीव मोहनीय कर्म की 28 प्रकृतियों की सत्ता के साथ 55 पल्य की आयु वाली देवियों में उत्पन्न हुआ अन्तर्मुहूर्त में पर्याप्त हो विशुद्ध बना सम्यग्दृष्टि हो गया जीवन भर सम्यक्त्व के साथ रहा और अन्तर्मुहूर्त आयु शेष रहने पर मिथ्यात्व को प्राप्त हुआ इस प्रकार उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम 55 पल्य प्राप्त हुआ। शेष कथन सुगम है।

208. स्त्रीवेदी सासादन गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	सासादन	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व संज्ञी असंज्ञी अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी, असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6, 5 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति, 5 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10 व 7	10	7, 7
5.	संज्ञा	4	–	–
6.	गति	3 (नरक गति बिना)	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	13 योग (आहारकद्विक बिना)	10	3 योग (औद.मि.वै.मि.कार्मण.)
10.	वेद	स्त्रीवेद	–	–
11.	कषाय	23	–	–
12.	ज्ञान	3 कुज्ञान	–	2 कुज्ञान
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 दर्शन (चक्षु, अचक्षु दर्शन)	–	–
15.	लेश्या	द्रव्य से 6 भाव 6 अपर्या. 4	6 लेश्या द्रव्य 6 व भाव से	द्रव्य से 2 लेश्या भाव से 4
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	सासादन	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी	संज्ञी	दोनों
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों (आहारक, अनाहारक)
20.	उपयोग	5 (3 ज्ञानो. + 2 दर्शन.)	5 (उपयोग)	4 (2 ज्ञानो.+2 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8	–	–
22.	आस्रव	48 (क.23+अवि. 12+योग 13)	45 (23+12+10)	38 (23+12+3)
23.	जाति	22 लाख		
24.	कुलकोटि	83½ लाख करोड़		
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	स्व. लोक का असंख्यातवां भाग व क.वि.वे. स. कुछ कम 8/14 राजू मा. कुछ कम 9/14 राजू उप. कुछ कम 11/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा– ज. एक समय, उ. 6 आवली		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा – ज. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग उ. पल्योपम शत पृथक्त्व		
30.	भाव	29 (औद. 17, मि. 10, पा. 2)	अपर्याप्त–26 (औद. 15, मि. 9, पा.2)	
31.	अवगाहना	जघन्य– घनागुंल का संख्यातवाँ भाग (संख्यात अंगुल) उत्कृष्ट– संख्यात धनुष		
32.	बन्ध	101गुणस्थानोक्त	अ. 94 (107 प्रकृति में से पूर्व की13 प्रकृति कम करने पर)	
33.	उदय	102 (105 प्रकृति में से सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व व मिथ्यात्व ये तीन प्रकृति कम करने पर)		
34.	सत्त्व	145 (आहारकद्विक, तीर्थंकर बिना)		

208. इत्थिवेदी सासण-गुणट्ठाणं

तेसिं इत्थिवेदीसासण सम्माइट्ठिगुणटठाणमालाव-भण्णमाणे अत्थि एग सासण गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त असण्णी पंचेन्द्रिय अपज्जत्त तिण्णि जीव समासा, छ पज्जत्ती छ पंच अपज्जत्ती, दस सत्त सत्त पाणा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु सत्त सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, तिरिक्ख मणुस्स देव तिण्णि गदी, एग पंचिंदयाणि, तसकाओ, आहारदुगेहिं विणा तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, एग इत्थिवेदो, तेबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि अपज्जत्तेसु बे अण्णाणाणि, एग असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, छल्लेसा अपज्जत्तेसु दव्वेण काऊ सुक्क बे लेस्सा भावेण किण्हणीलकाऊ तेजो चत्तारि लेस्सा, भव्वसिद्धिया, एग सासणसम्मत्तं, सण्णी असण्णी दोण्णि पज्जत्तेसु सण्णी अपज्जत्तेसु दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि,अपज्जत्तेसु दोण्णि, पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, अट्ठज्झाणाणि, अडदाल आसवा पज्जत्तेसु पणदाल अपज्जत्तेसु अडतीस आसवा, बाबीस लक्ख जादी, अद्ध तिअसीदि लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोगस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा सगट्ठाणं लोगस्स असंखेज्जदि भागा कसाय विक्किया वेयणा विहार अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा* मारणंतिओ णव चोद्दस भागा वा देसूणा उपपादवेक्खा एगारस चौद्दस भागा वा देसूणा, *कालो णाणा जीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छावली, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण पलिदोवम सदपुधत्तं, पज्जत्तेसु उणतीस भावा अपज्जत्तेसु छब्बीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्ज भागा अहवा संखेज्जअंगुल उक्कस्सेण संखेज्ज धणू, पज्जत्तेसु एगुत्तर सयं अपज्जत्तेसु चउणउदि पयडीणं बंधो, बे उत्तर सयं पयडीणं उदओ पणदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु इत्थिवेदीसु सासण गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

स्त्रीवेदी सासादन गुणस्थान

उन्हीं स्त्रीवेदी सासादन सम्यग्दृष्टि जीवों के आलाप कहने पर - एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त संज्ञी असंज्ञी अपर्याप्त, तीन जीव समास, छहों पाँच अपर्याप्ति छहों पर्याप्ति, दस-सात सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, तिर्यंच-मनुष्य-देव तीन गतियाँ, एक पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, आहारक द्विक बिना तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, एक स्त्री वेद, तेईस कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्तक में दो अज्ञान, एक असंयम, चक्षु-अचक्षु दो दर्शन, द्रव्य भाव से छहों लेश्या अपर्याप्त में द्रव्य से कापोत शुक्ल दो भाव से कृष्ण नील कापोत पीत चार लेश्या, भव्य सिद्धिक, एक सासादन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्त में आहारक अनाहारक दोनों, पाँच उपयोग अपर्याप्तक में चार उपयोग, आठ ध्यान, अड़तालीस आस्रव पर्याप्तक में पैंतालीस अपर्याप्तक अड़तीस आस्रव, बाईस लाख जाति, साढ़े तेरासी लाख करोड़ कुल कोटि संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन स्वस्थान लोक का असंख्यातवां भाग कषाय विक्रिया-वेदना-विहार कुछ कम 8/14राजू मारणान्तिक कुछ कम 9/14 राजू, उपपाद कुछ कम 11/14 राजू, काल नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह आवली, अंतर-नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य पल्योपम का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट पल्योपम शत पृथक्त्व, पर्याप्त में 29 भाव अपर्याप्त में 26 भाव, जघन्य अवगाहना घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट संख्यात धनुष, पर्याप्तक में एक सौ एक अपर्याप्तक में चौरानवे प्रकृतियों का बंध, एक सौ दो प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ पैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार स्त्री वेदियों में सासादन गुणस्थानालाप समाप्त हुआ।

---

*ध.पु. 4 सूत्र नं. 105।

विशेषार्थ :- धवला जी ग्रंथ के अनुसार संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक व अपर्याप्तक को ही सासादन गुणस्थान होता है किंतु गोम्मटसार कर्मकाण्ड व कषाय पाहुड ग्रंथ के अनुसार असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक में भी द्वितीय गुणस्थान पाया जाता है किन्तु असंज्ञी पर्याप्तक में दूसरा गुण. कदापि नहीं होता, ऐसा समझना चाहिए और हम दोनों सिद्धांतों को लेकर चल रहे हैं इसलिए दोनों ग्रहण किये हैं शेष कथन सरल है। स्पर्शन का कथन करते हुए मारणांतिक की अपेक्षा कुछ कम 9/14 राजू बनता है क्योंकि कोई स्त्रीवेदी सासादन गुणस्थान वाला ऊपर सिद्धशिला में एकेन्द्रियों में मारणांतिक समुद्घात करता है उसका 7/14 राजू बनता है यदि कोई देवी तृतीय पृथ्वी में स्थिति है व मध्यलोक के तिर्यंचों में जन्म लेने के पहले मारणांतिक समुद्घात करें तो दो राजू बनता है इस प्रकार 2+7=9 राजू बनता है शेष कथन के लिए आगम देखना चाहिए। यह कथन मैने अपनी युक्ति से किया है। कृपया मनीषियों को आगम में इस कथन से हटकर कथन मिले तो इसे स्वीकार न करके आगम का कथन स्वीकार करें। उपपाद-इसी प्रकार कोई देवी या देव सासादन सम्यक्त्व के साथ स्त्री वेदी तिर्यंचों में उत्पन्न होता है तो उसका उपपाद क्षेत्र 6/14 राजू बनता है और कोई नारकी स्त्री वेदी तिर्यंचों में सासादन सम्यक्त्व के साथ उत्पन्न होता है तो उसका 5/14 राजू क्षेत्र बनता है इस प्रकार कुछ कम 5/14+6/14=11/14 राजू बनता है शेष कथन सरल है। ध.पु. 4 पृ. 273, 274 सू. 104

209. स्त्रीवेदी मिश्र गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	सम्यग्मिथ्यात्व
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	3 (नरकगति बिना)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	10 योग (4 मन, 4 वचन, 1 औदा., 1 वैक्रि.)
10.	वेद	स्त्रीवेद
11.	कषाय	19 कषाय (अनन्तानुबन्धी कषाय पुरुष व नपुंसक वेद बिना)
12.	ज्ञान	3 मिश्रज्ञान
13.	संयम	असंयम
14.	दर्शन	2 दर्शन (चक्षु, अचक्षु दर्शन)
15.	लेश्या	6 लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	सम्यग्मिथ्यात्व सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 (3 ज्ञानो.+ 2 दर्शनो.) गो.क.का. के अनुसार मिश्र गुणस्थान में तीन दर्शन कहे है 3+3=6 उप.
21.	ध्यान	8 ध्यान
22.	आस्रव	41 (19 कषाय+12 अवि.+10 योग)
23.	जाति	22 लाख
24.	कुलकोटि	83½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग वि.वे.विक्रि.क.स. कुछ कम 8/14 राजू
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा – ज.व उ. = अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा–ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. पल्योपम शत पृथक्त्व
30.	भाव	29 (औ. 17, मिश्र. 10, पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य– संख्यात अंगुल उत्कृष्ट– संख्यात धनुष (कर्म भूमि में 525 धनुष, भोगभूमियों में तीन कोस)
32.	बन्ध	74 गुणस्थानोक्त
33.	उदय	96 (105 में से 9 प्रकृति कम करने पर)
34.	सत्त्व	147 (तीर्थंकर बिना)
		* 105 प्रकृति में 9 प्रकृति चार अनंतानुबंधी कषाय, देव–मनुष्य व तिर्यंच गत्यानुपूर्वी, सम्यक्त्व व मिथ्यात्व प्रकृति बिना

209. इत्थि वेदी मिस्स–गुणट्ठाणं

तेसिं इत्थिवेदीसम्मामिच्छाइट्ठि जीवाणामालाव–भण्णमाणे अत्थि–एग सम्मामिच्छाइट्ठिगुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त एग जीवसमासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, तिरिक्ख मणुस्स देव तिण्णि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, चत्तारि मणोजोगा चत्तारि वचिजोगा ओरालिय वेगुव्वियकाय दसजोगा, एग–इत्थिवेदो, उणबीस कसाया, तिण्णि मिस्सणाणाणि, एग असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, दव्वभावेहि छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया, एग मिस्ससम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, अट्ठज्झाणाणि, इगदाल आसवा, बाबीस लक्ख जादी, अद्धुत्तर ति असीदि लक्ख कोडि कुल कोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोगस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोगस्स असंखेज्जदि भागा विहार वेयणा वेगुव्विया कसाय अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणा जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा जहण्णुकस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समयो उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पलिदोवम सदपुधत्तं, ऊणतीस भावा, जहण्णमवगहणं संखेज्ज अंगुल उक्कस्सेण संखेज्ज धणू, चउसत्तदि पयडीणं बंधो, छण्णवदि पयडीणं उदओ एवं सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु इत्थि वेदीसु मिस्स गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

स्त्रीवेदी मिश्र गुणस्थान

उन्हीं स्त्रीवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों के आलाप कहने पर – एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छह पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, तिर्यंच मनुष्य–देव तीन गतियाँ, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, (चार मन–चार वचन–औदारिक काय, वैक्रियिक काय) दस योग, एक स्त्री वेद, उन्नीस कषाय, तीन मिश्र ज्ञान, एक असंयम, चक्षु–अचक्षु दो दर्शन, द्रव्य भाव से छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, एक मिश्र सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, आठ ध्यान, इकतालीस आस्रव, बाईस लाख जाति, साढ़े तिरासी लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग विहार–वेदना–विक्रिया कषायवत् कुछ कम 8/14 राजू, काल–नाना जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम शत पृथक्त्व, उनतीस भाव, जघन्यावगाहना संख्यात अंगुल उत्कृष्ट संख्यात धनुष, चौहत्तर प्रकृतियों का बंध, 96 (छयानवे) प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार वेद मार्गणा में स्त्री वेदियों का मिश्र गुणस्थानालाप समाप्त हुआ।

यहाँ प्रश्न हो सकता है कि कर्म भूमिज मनुष्य तिर्यंचों में वेद वैषम्यता पायी जाती है जैसे द्रव्य से कोई पुरुष वेदी है भाव से स्त्री वेदी है अथवा नपुंसक वेदी हो सकता है या द्रव्य से स्त्री वेदी भाव से पुरुष वेदी या नपुंसक वेदी आदि हो सकता है अब प्रश्न ये है कि द्रव्य वेद तो जन्म से लेकर मरण पर्यंत एक ही वेद होता है उसीप्रकार भाव वेद भी जन्म से लेकर मरण पर्यंत एक ही होता है या बदलता रहता है ?

अब इसका उत्तर कहते हैं–वेद द्रव्य हो चाहे भाव वेद बदलता नहीं है जिस वेद में जन्म हुआ है वही वेद मरण पर्यंत रहता है मरण के पश्चात् अगली पर्याय में बदल भी सकता है अथवा वही मिल सकता है किंतु एक जीवन में वही वेद रहता है जिसमें जन्म हुआ है। धवला जी पुस्तक एक पृ. 346 सूत्र 10 टीका में कहा है जैसे विवक्षित कषाय केवल अन्तर्मुहूर्त पर्यंत रहती है उस प्रकार सभी वेद केवल अन्तर्मुहूर्त पर्यंत नहीं रहते हैं क्योंकि जन्म से लेकर मरण पर्यंत किसी एक वेद का उदय पाया जाता है। मरण के पश्चात् वेद परावर्तन हो सकता है। (ध.पु.1 पृ. 346 व ध.पु.7)

210. स्त्रीवेदी असंयत गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	असंयत सम्यग्दृष्टि
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	3 गति (नरकगति बिना)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	10 योग
10.	वेद	स्त्रीवेद
11.	कषाय	19 कषाय (पूर्वोक्त के बिना)
12.	ज्ञान	3 ज्ञान
13.	संयम	असंयम
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	6 लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 सम्यक्त्व (औपशामिक, क्षायिक, क्षयोपशमिक)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	6 (3 ज्ञान+ 3 दर्शन) उपयोग
21.	ध्यान	10 (4 आर्त्त 4 रौद्र दो धर्मध्यान)
22.	आस्रव	41 (19+12+10)
23.	जाति	22 लाख
24.	कुलकोटि	83½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग1
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	स्वस्थान लोक का असंख्यातवाँ भाग वि.वे.वि.क. कुछ कम 8/14 राजू मारंणांतिक कुछ कम 6/14 राजू
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम 55 पल्य
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – निरन्तर एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. पल्योपम शत पृथक्त्व
30.	भाव	33 (औ. 17, क्षयो.12, क्षा.1, पा.2, औप.1)
31.	अवगाहना	जघन्य– संख्यात अंगुल उत्कृष्ट– संख्यात धनुष*
32.	बन्ध	77 गुणस्थानोक्त
33.	उदय	96 (पूर्व की 9 प्रकृति में से सम्यक्त्व प्रकृति कम करके 8+1 सम्यग्मिथ्यात्व ये 9 प्रकृति कम करके)
34.	सत्त्व	148
		* कर्मभूमि में 525 धनुष भोगभूमि में तीन कोस

210. इत्थिवेदी असंजदसम्माइट्ठिगुणट्ठाणं

तेसिं इत्थिवेदी असंजद सम्माइट्ठि जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अविरद सम्माइट्ठी गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदियपज्जत्तजीव समासो*, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, तिरिक्ख मणुस्स देव तिण्णि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, दस जोगा चत्तारि मणोजोगा चत्तारि वचि जोगा ओरालियवेगुव्वियकाय दस जोगा, एग इत्थि वेदो, उणबीस कसाया, मदि सुद ओहि तिण्णि णाणाणि, एग असंजमो, केवलदंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, दव्वभावेहिं छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिया तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, छ उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द जे धम्मा दस झाणाणि, इगदाल आसवा, बाबीस लक्ख जादी, अद्धुत्तर ति असीदि लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोगस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा सगट्ठाणं लोयस्स असंखेज्जदि भागा विहार वेयणा वेगुव्विया कसाय अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा मारणांतियो छ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणा जीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पणवण्ण पलिदोवमाणि देसूणाणि, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पलिदोवम सदपुधत्तं, तेतीस भावा, जहण्णमवगहणं संखेज्ज अंगुलस्स उक्कस्सेण संखेज्ज धणूं कम्म भूमिआवेक्खा पणबीसुत्तर पंचसयं धणू भोगभूमिआवेक्खा तिण्णि कोसाणि, सत्तसत्तदि पयडीणं बंधो, छण्णउदि पयडीणं उदओ, अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु इत्थि वेदीसु असंज गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

स्त्रीवेदी असंयत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान

उन्हीं स्त्रीवेदी असंयत सम्यग्दृष्टि जीवों के आलाप कहने पर – एक अविरत सम्यग्दृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, तिर्यंच मनुष्य देव तीन गतियाँ, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, (चार मन–चार वचन–औदारिक वैक्रियिक काय) दस योग, एक स्त्री वेद, उन्नीस कषाय, (मति–श्रुत–अवधि) तीन ज्ञान, एक असंयम, केवलदर्शन बिना तीन दर्शन, द्रव्य भाव से छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, औपशमिक–क्षायिक–क्षयोपशमिक तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, (चार आर्त्त चार रौद्र दो धर्म ध्यान) दस ध्यान, इकतालीस आस्रव, बाईस लाख जाति, साढ़े तैरासी लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन स्वस्थान लोक का असंख्यातवां भाग विहार–वेदना विक्रिया कषायवत् कुछ कम 8/14 राजू मारणांतिक समुद्घात की अपेक्षा छह राजू, काल नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम पचपन पल्य, अन्तर नाना जीव निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम शत पृथक्त्व, तैंतीस भाव, जघन्यावगाहना संख्यात अंगुल उत्कृष्ट संख्यात धनुष कर्म भूमि में 525 धनुष भोगभूमि में तीन कोश, सतत्तर प्रकृतियों का बंध, छयानवें प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार वेद मार्गणा में स्त्री वेदियों का असंयत गुणस्थानालाप समाप्त हुआ।

---

*स्त्रीवेदी जीवों के अपर्याप्त अवस्था में चौथा गुणस्थान नहीं होता क्योंकि सम्यग्दृष्टि जीव मर कर स्त्रियों में जन्म नहीं लेता।

विशेषार्थ :– यहाँ तीन प्रकार के सम्यक्त्व का विवेचन किया है उसका यह आशय है कि कर्म भूमिज द्रव्य से जो पुरुष है भाव से स्त्रीवेदी है ऐसा मनुष्य केवली या श्रुत केवली के पादमूल में दर्शन मोहनीय का क्षय करता है वह क्षायिक सम्यग्दृष्टि हो जाता है। इसके अलावा किसी प्रकार की स्त्रियों में द्रव्य स्त्री में तो क्षायिक सम्यक्त्व पाया ही नहीं जाता भाव स्त्री में मनुष्य ही प्राप्त करता है शेष तिर्यंच अथवा देव प्राप्त नहीं करते हैं शेष कथन सुगम है। स्पर्शन विहारादि की अपेक्षा 8/14 राजू उपपाद पद पाया नहीं जाता मारणांतिक 6/14 राजू बन जाता है। क्योंकि कोई तिर्यंचनी सम्यग्दृष्टि है और सोलहवें स्वर्ग में उत्पन्न होती है तो उत्पन्न होने से पूर्व मारणांतिक समुद्घात करती है जो कि कुछ कम 6/14 राजू बन जाता है। काल नाना जीव तो निरंतर रहते हैं एक जीव जघन्य से सुगम है उत्कृष्ट की अपेक्षा कोई मोहनीय कर्म की 28 प्रकृति की सत्ता वाला जीव पचपन पल्य वाली देवियों में उत्पन्न हुआ अन्तर्मुहूर्त में पर्याप्त हो सम्यक्त्व को प्राप्त किया सारा जीव सम्यक्त्व के साथ रहा और मरण कर अन्य वेद को चला गया इस प्रकार कुछ कम 55 पल्य बन जाता है। अन्तर भी इसी प्रकार निकालना चाहिए जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त यानि कोई स्त्री वेदी मनुष्य तिर्यंच या देवी सम्यक्त्व को प्राप्त हुआ अन्तर्मुहूर्त बाद मिथ्यादृष्टि हो गया पुन: अन्तर्मुहूर्त बाद सम्यग्दृष्टि हुआ इस प्रकार जघन्य अन्तर प्राप्त हुआ। उत्कृष्ट अन्तर कोई देवी का जीव 28 प्रकृति या 26 प्रकृति की सत्ता के साथ उत्पन्न हुआ अन्तर्मुहूर्त पर्याप्तियाँ पूर्ण कर सम्यक्त्व को प्राप्त हुआ अन्तर्मुहूर्त के पश्चात् मिथ्यादृष्टि हो गया पल्योपम शत पृथक्त्व काल तक मिथ्यात्व के साथ रहा पुन: सम्यक्त्व को प्राप्त किया इस प्रकार उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त हुआ।

211. स्त्रीवेदी संयतासंयत गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	संयमासंयम
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	2 गति (मनुष्यगति, तिर्यंचगति)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग (4 मन, 4 वचन, 1 औदारिक काययोग)
10.	वेद	1 स्त्रीवेद
11.	कषाय	15 कषाय (4 प्रत्याख्यानावरण, 4 संज्वलन, 7 नोकषाय)
12.	ज्ञान	3 ज्ञान
13.	संयम	संयमासंयम
14.	दर्शन	3 दर्शन (केवल दर्शन बिना)
15.	लेश्या	3 लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षायिक, क्षयोपशमिक, औपशामिक)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	6 (3 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	11 ध्यान (4 आर्त्त+ 4 रौद्र+ 3 धर्मध्यान)
22.	आस्रव	35 (15 कषाय+9 योग+11 अवि.)
23.	जाति	18 लाख
24.	कुलकोटि	57½ (43½ लाख करोड़ (तिर्यंच)+14 लाख करोड़ मनु.)
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	स्वस्थान, कषाय, वे.वि.-लोक का असंख्यातवाँ भाग, मा. कुछ कम 6/14 राजू
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा - सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा - ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम एक कोटि पूर्व
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा - निरन्तर एक जीव की अपेक्षा - ज. अन्तर्मुहूर्त उ. पल्योपम शत पृथक्त्व
30.	भाव	29 (क्षायो.13, औद.12, पा.2, क्षा.1, औप.1)
31.	अवगाहना	जघन्य- अंगुल का संख्यातवाँ भाग अथवा संख्यात अंगुल उत्कृष्ट- संख्यात धनुष (525 धनुष)
32.	बन्ध	67 गुणस्थानोक्त
33.	उदय	85* (105 प्रकृति में से 20 प्रकृति बिना)
34.	सत्त्व	147 (नरकायु बिना)

* पूर्व की 9+11 प्रकृति अप्रत्याख्यान कषाय की चार, देवगति, देवायु, वैक्रियिकद्विक, दुर्भग, अनादेय, अयश: कीर्ति इन 20 प्रकृति बिना।

211. इत्थिवेदी संजदासंजद–गुणट्ठाणं

तेसिं इत्थिवेदीजीवेसु संजदासंजदगुणट्ठाणालाव–भण्णमाणे अत्थि, एग संजदासंजदगुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तजीवसमासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, तिरिक्ख मणुस्स बे गदी, एग पंचिंदियाणि, तसकाओ, चत्तारि मणो जोगा चत्तारि वचि जोगा एग ओरालियकाय णव जोगा, एग इत्थिवेदो, पंचदस कसाया, मदिसुदओहि तिण्णि णाणाणि, एग देससंजमो, केवलदंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसम तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, छ उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द तिण्णि धम्म एगारस झाणाणि, पणतीस आसवा, अट्ठदस लक्ख जादी, अद्धुत्तर सत्तावण्ण लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा सगट्ठाणं कसाय वेयणा वेगुव्विया लोयस्स असंखेज्जदि भागा मारणंतियोअवेक्खा छ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण कोडि पुव्वं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पलिदोवमसदपुधत्तं, ऊणतीस भावा, जहण्णमवगहणं अंगुलस्स संखेज्ज भागा अहवा संखेज्जांगुल उक्कस्सेण संखेज्जधणू (पणबीसुत्तर पंचसयं धणू), सडसट्ठि पयडीणं बंधो, पंचासीदि पयडीणं उदओ, सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु इत्थिवेदीसु संजदासंजद गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

स्त्रीवेदी संयतासंयत

उन्हीं स्त्रीवेदी जीवों में संयतासंयत गुणस्थानालाप कहने पर – एक संयतासंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, तिर्यंच–मनुष्य दो गति, एक पंचेन्द्रिय, एक त्रसकाय, चार मन–चार वचन एक औदारिक काय नौ योग, एक स्त्री वेद, पंद्रह कषाय, मतिश्रुत अवधि तीन ज्ञान, एक संयमासंयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, द्रव्य से छह भाव से तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम–क्षायिक–क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, (चार आर्त्त चार रौद्र तीन धर्म) ग्यारह ध्यान, पैंतीस आस्रव, अठारह लाख जाति, साढ़े सत्तावन लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन स्वस्थान लोक का असंख्यातवां भाग मारणान्तिक की अपेक्षा कुछ कम 6/14 राजू, काल नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम एक कोटि पूर्व, अंतर नाना जीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम शतपृथक्त्व, उनतीस भाव, जघन्यावगाहना अंगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट संख्यात धनुष, सड़सठ प्रकृतियों का बंध, पचासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार वेद मार्गणा में स्त्री वेदियों का संयतासंयत गुणस्थानालाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– क्षायिक सम्यक्त्व का कथन पूर्व गुणस्थान की तरह समझना चाहिए क्योंकि उसमें और इसमें कोई भेद नहीं पाया जाता। स्पर्शन भी चतुर्थ गुणस्थान के समान ही समझना फर्क इतना है कि विहार, वेदना, विक्रिया, कषाय समुद्घात की अपेक्षा भी स्पर्शन लोक का असंख्यात वां भाग होता है। मारणांतिक पूर्व गुणस्थान के समान समझना चाहिए इस गुणस्थान में उपपाद पद होता ही नहीं है शेष कथन सुगम है। काल जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त सुगम है उत्कृष्ट काल कुछ कम एक पूर्व कोटि भी सरल है। क्योंकि कई बार व्याख्यान हो चुका है एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर सरल है उत्कृष्ट अन्तर जैसे कोई स्त्री वेदी तिर्यंचनी ने जन्म से अन्तर्मुहूर्त के पश्चात् सम्यक्त्व व देश संयम को एक साथ प्राप्त किया अन्तर्मुहर्त के पश्चात् असंयम को प्राप्त हो गई अन्तर को प्राप्त होती हुई पल्योपम शत पृथक्त्व तक असंयमी रहकर अन्तिम अन्तर्मुहूर्त में पुन: देशव्रत को प्राप्त किया इस प्रकार कुछ कम पल्योपम शत पृथक्त्व उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त हुआ।

212. स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयत गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	प्रमत्त संयत गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	1 (मनुष्यगति)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	स्त्रीवेद
11.	कषाय	11 (4 संज्वलन 7 नो कषाय)
12.	ज्ञान	3 ज्ञान (स्त्रीवेद में मन:पर्ययज्ञान नहीं होता)
13.	संयम	2 (सामायिक, छेदोपस्थापना)
14.	दर्शन	3 दर्शन (केवलदर्शन बिना)
15.	लेश्या	3 शुभ लेश्या भाव से, द्रव्य से 6 लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षायिक, क्षायोपशमिक, औपशमिक)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	6 (3 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	7 ध्यान (3 आर्त्तध्यान (निदान बिना)+ 4 धर्मध्यान)
22.	आस्रव	20 (11 कषाय+9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	संख्यात (59398206)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – निरन्तर एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. पल्योपम शत पृथक्त्व
30.	भाव	28 (औद.11, क्षयो. 13, पा.2, क्षा.1, औप.1)
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष
32.	बन्ध	63 गुणस्थानोक्त
33.	उदय	77 (28 पूर्व की 20 प्रकृति + प्रत्याख्यान कषाय चार, उद्योत, तिर्यंचगति, नीच गोत्र, तिर्यंचायु इन 28 प्रकृति बिना)
34.	सत्त्व	146 (तिर्यंच आयु बिना व नरकायु बिना)

212. इत्थिवेदी पमत्तसंजद-गुणट्ठाणं

तेसिं इत्थिवेदी जीवेसु पमत्त संजदाणामालाव-भण्णमाणे अत्थि - एग पमत्तसंजद-गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तजीवसमासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, एग मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, एग इत्थि वेदो, एगादस कसाया, मदिसुदओहि तिण्णि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, केवलदंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसमिय खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, छ उवजोगा, चत्तारि धम्म तिण्णि अट्ट सत्त झाणाणि, बीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पंच कोडि तिणउदि लक्ख अट्ठणउदि सहस्स छ उत्तर बे सयं संखेज्ज वा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोगस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणा जीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पलिदोवम सदपुधत्तं, अट्ठाबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, तिसट्ठि पयडीणं बंधो, सत्तसत्तदि पयडीणं उदओ, छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु इत्थि वेदीसु पमत्तसंजद गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयत गुणस्थान

उन्हीं स्त्रीवेदी प्रमत्तसंयत जीवों के आलाप कहने पर - एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, एक मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, एक स्त्रीवेद, ग्यारह कषाय, मति श्रुत अवधि तीन ज्ञान, सामायिक-छेदोपस्थापना दो संयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, द्रव्य से छहों लेश्या भाव से तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, औपशमिक-क्षायिक-क्षायोपशमिक तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, (चार धर्म तीन आर्त) सात ध्यान, बीस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पाँच करोड़ तेरानवे लाख अन्ठानवे हजार दो सौ छह अथवा संख्यात, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर-नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम शत पृथक्त्व, अट्ठाईस भाव, जघन्य अवगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, तिरेसठ प्रकृतियों का बंध, सतत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार के वेद मार्गणा में स्त्री वेदियों का प्रमत्त संयत गुणस्थानालाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- संख्या का कथन यहाँ सामान्य से है अर्थात् तीनों वेद वाले प्रमत्त गुणस्थान वालों की, विशेषता से केवल स्त्री वेद वाले संयतों की संख्या स्पष्ट रूप से आगम में देखने को नहीं मिली है इसलिए संख्यात कह दिया है। अगर विद्वत्जनों को प्राप्त हो तो वही मानी जाना चाहिए। स्पर्शन सभी पदों की अपेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग है जो सरल है। काल यदि हम नाना जीवों के ऊपर दृष्टिपात करें तो ऐसा एक भी समय नहीं है जिस समय स्त्री वेदी मनुष्य प्रमत्त संयत न हो, एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल जो कहा है वह इस प्रकार है कि कोई अप्रमत्त संयत गुणस्थान वाला जीव प्रमत्त गुणस्थान को प्राप्त हुआ एक समय रहा और मर गया तथा अन्य अधस्तन गुणस्थान को प्राप्त हो गया तो इस प्रकार जघन्य काल एक समय प्राप्त हुआ उत्कृष्ट काल सरल है इसी प्रकार अन्तर का कथन करना चाहिए उसमें कोई ज्यादा विशेषता नहीं है शेष कथन सुगम है।

213. स्त्रीवेदी अप्रमत्तसंयत गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	अप्रमत्त संयत गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 संज्ञा (आहार संज्ञा बिना)
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रस
9.	योग	9 योग
10.	वेद	स्त्रीवेद
11.	कषाय	11 कषाय
12.	ज्ञान	3 ज्ञान
13.	संयम	2 (सामायिक, छेदोपस्थापना)
14.	दर्शन	3 दर्शन (केवलदर्शन बिना)
15.	लेश्या	द्रव्य से 6 लेश्या, भाव से तीन शुभ लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षायिक, क्षयोपशमिक, औपशमिक)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	6 (3 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान
22.	आस्रव	20 (11 कषाय+9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	संख्यात (29699103)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – निरन्तर एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. पल्योपम शत पृथक्त्व
30.	भाव	28 (औद. 11, क्षयो. 13, क्षा.1, औप.1,पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष
32.	बन्ध	59 गुणस्थानोक्त
33.	उदय	74 पूर्व की 28 + स्त्यानगृद्धि आदि 3 निद्रा, इन 31 प्रकृति बिना
34.	सत्त्व	146 (नरकायु, तिर्यंचायु बिना)

213. इत्थिवेदी अपमत्तगुणट्ठाणं

तेसिं इत्थिवेदी जीवाणं अप्पमत्तसंजद–गुणट्ठाणालावभण्णमाणे अत्थि – एग अप्पमत्त संजद गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तजीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, आहार सण्णाओ विणा तिण्णि सण्णा, एग मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, चत्तारि मणोजोगा चत्तारि वचिजोगा एग ओरालियकायजोगो णव जोगा, एग इत्थिवेदो, एगारस कसाया, मदि सुद ओहि तिण्णि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, केवलदंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, ओवसमिय खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, छह उवजोगा, चत्तारि धम्मज्झाणाणि, बीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा बे कोडि छण्णउदि लक्ख णवणउदि सहस्सं तिउत्तर सयं, खेत्तावेक्खा लोगस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोगस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं–णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंत्तोमुहुत्तं उक्कस्सेण पलिदोवम सदपुधत्तं, अट्ठाबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, ऊणसट्ठि पयडीणं बंधो, चउसत्तदि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु इत्थिवेदीसु अपमत्त संजद गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

स्त्रीवेदी अप्रमत्त संयत गुणस्थान

उन्हीं स्त्री वेदी जीवों के अप्रमत्तसंयत गुणस्थानालाप कहने पर – एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, आहार संज्ञा बिना तीन संज्ञा, एक मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, (चारों मनोयोग चारों वचनयोग एक औदारिक काय) नौ योग, एक स्त्री वेद, ग्यारह कषाय, मति श्रुत अवधि तीन ज्ञान, सामायिक–छेदोपस्थापना दो संयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, द्रव्य से छहों भाव से तीन शुभ लेश्या, भव्यसिद्धिक, औपशमिक–क्षायिक–क्षायोपशमिक तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, चार धर्म ध्यान, बीस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा दो करोड़ छियानवे लाख निन्यानवे हजार एक सौ तीन, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल–नाना जीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर नाना जीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट पल्योपम शत पृथक्त्व, अट्ठाईस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, उनसठ प्रकृतियों का बंध, चौहत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार वेद मार्गणा में स्त्री वेदियों का अप्रमत्त गुणस्थानालाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– संख्या प्ररूपणा करते समय सामान्य से जो संख्या कही है (29699103) उसको संख्यात से भाजित करने पर एक भाग प्रमाण स्त्रीवेदी प्रमत्त संयत है किन्तु वर्तमान में स्त्रीवेदी प्रमत्त–अप्रमत्तसंयत कितने हैं ऐसा स्पष्ट उल्लेख नहीं मिला (ध.पु.3 पृ.416, 19 सू. नं. 126, 131 की टीका)

आगम में इस प्रकार का उल्लेख नहीं है यदि विद्वज्जनों को किन्हीं प्राचीन आचार्यों का उल्लेख मिलता हैं तो उसे भी स्वीकार करें। इसी प्रकार पूर्व कथित प्रमत्त गुणस्थान में भी समझना चाहिए, शेष कथन सुगम है ! कोई विशेषता नहीं है। इतना अवश्य है कि अवगाहना जो साढ़े तीन हाथ कही है वह भरत क्षेत्र व ऐरावत क्षेत्र की अपेक्षा है और 525 धनुष प्रमाण अवगाहना भी भरत ऐरावत क्षेत्र की अपेक्षा ही प्राप्त होती है विदेह क्षेत्र में नहीं।

214. स्त्रीवेदी अपूर्वकरण गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	अपूर्वकरण गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 संज्ञा (आहार संज्ञा बिना)
6.	गति	1 मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	स्त्रीवेद
11.	कषाय	11 कषाय
12.	ज्ञान	3 सुज्ञान
13.	संयम	2 (सामायिक, छेदोपस्थापना)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	द्रव्य से 6 लेश्या, भाव से एक शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (क्षायिक, औपशमिक)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	6
21.	ध्यान	चार धर्मध्यान अथवा 1 शुक्ल ध्यान
22.	आस्रव	20 (11 कषाय+9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	संख्यात (30) (औप.10+क्ष.20)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	उप. नाना व एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक–ना.व.ए.जीव–अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा क्षपक व उपशामक – ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व उप. एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. पल्योपम शत पृथक्त्व क्षपक–निरन्तर
30.	भाव	26 (औ.9, क्षयो.11, क्षा.2, औप.2, पा.2) क्षपक 24 (औ.9 मि.11 पा.2 क्षा.2) उप. 25
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष
32.	बन्ध	58 गुणस्थानोक्त
33.	उदय	70 (पूर्व की 31 प्रकृति+सम्यक्त्व, अर्धनाराच, कीलक व सृपाटिका संहनन इन 35 प्रकृति बिना)
34.	सत्त्व	क्षप. 137 (तीर्थंकर प्रकृति बिना) उप. 146, 145, 142, 141, 139
		विशेष–आचार्य पूज्यपाद के अनुसार 8वें गुणस्थान से शुक्ल ध्यान कहा है किन्तु आचार्य वीरसेन स्वामी ने 10वें गुणस्थान से शुक्ल ध्यान स्वीकार किया है। दोनों महान आचार्य है अत: हमें दोनों मान्य है।

214. इत्थिवेदी अपुव्वयरण-गुणट्ठाणं

तेसिं इत्थिवेदी जीवेसु अपुव्वयरणगुणट्ठाणालावभण्णमाणे अत्थि-एग अपुव्वयरण गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तजीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, आहारेण विणा तिण्णि सण्णा, एग मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, चत्तारि मणोजोगा चत्तारि वचि जोगा एग ओरालियकाय णव जोगा, एग इत्थिवेदो, एगारस कसाया, मदि सुद ओहि तिण्णि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणं बे संजमा, केवलदंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, छह उवजोगा, चत्तारि धम्मज्झाणाणि अहवा एग सुक्क झाणाणि, *[1]बीस आसवा, चउदस लक्ख जादी, चउदस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा तीस खवगेसु बीस उवसामगेसु*[2] दस, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो-णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेग जीवावेक्खा अंतोमुहुत्तं, अंतरं उवसम खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वास पुधत्तं एगजीवावेक्खा उवसामगेसु जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पलिदोवमसदपुधत्तं खवगेसु णिरंतरं, छब्बीस भावा खवगेसु चउबीस उवसामगेसु पणबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, अट्ठावण्ण पयडीणं बंधो, सत्तदि पयडीणं उदओ, उवसामगेसु छादालुत्तरसयं खवगेसु सत्ततीसुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु इत्थिवेदीसु अपुव्व यरण गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

स्त्री वेदी अपूर्वकरण गुणस्थान

उन्हीं स्त्री वेदी जीवों में अपूर्वकरण गुणस्थानालाप कहने पर - एक अपूर्वकरण गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्तियाँ, दस प्राण, आहार बिना तीन संज्ञाएँ, एक मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, (चार मनोयोग चार वचन योग एक औदारिक काय) नौ योग, एक स्त्री वेद, ग्यारह कषाय, मतिश्रुत-अवधि तीन ज्ञान, सामायिक-छेदोपस्थापना दो संयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, द्रव्य से छहों लेश्या भाव से एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, औपशमिक-क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, चार धर्म ध्यान अथवा एक शुक्ल ध्यान, बीस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा 30 (क्षपक बीस उपशमक दस), क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल-उपशामक नाना जीवापेक्षा व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त क्षपक नाना व एक जीव अन्तर्मुहूर्त, अंतर-नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व क्षपक नाना जीव ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व एक जीव निरंतर उपशामक एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम शत पृथक्त्व, छब्बीस भाव उपशामक में 25 भाव क्षपक में 24 भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, अट्ठावन प्रकृतियों का बंध, सत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है। क्षपक श्रेणी में एक सौ सैंतीस प्रकृति का सत्त्व होता है।

इस प्रकार वेद मार्गणा में स्त्री वेदियों का अपूर्वकरण गुणस्थानालाप समाप्त हुआ।

---

*[1] सिरी पुज्जपादाइरिय मतेण अपुव्वयरण गुणट्ठाणेसु एय सुक्कज्झांण व सिरी वीरसेणाइरिय मतेण चत्तारि धम्मज्झाण भवदि दोण्णि वि महदाइरिय दोण्णि वि मण्णदि। आचार्य पूज्यपाद जी मतानुसार एक शुक्लध्यान व वीरसेन स्वामी जी के अनुसार चार धर्म ध्यान माने गये हैं दोनों मान्य हैं।

*[2] (संख्यात) यद्यपि गुणस्थानों की अपेक्षा स्त्रीवेदियों का कथन नहीं आया, षट्खण्डागम में मात्र संख्यात कहकर छोड़ दिया है। शेष कथन सुगम है।

*[3] यहाँ उपशम श्रेणी में 146, 45, 142, 139, 138 प्रकृतियों का सत्त्व होता है किन्तु क्षपक श्रेणी में स्त्री वेद में देवायु एक व तीर्थंकर का सत्त्व नहीं होता अत: 137 प्रकृति का सत्त्व ही पाया जाता है।

विशेषार्थ :- संख्या का कथन करते समय सामान्य से कथन किया है विशेषता से स्त्रीवेदियों में उपशामक 10 (दस) और क्षपक 20 (बीस) होते हैं। शेष कथन सुगम है। (ध.पु. 3 पृ. 416 सूत्र नं. 126 की टीका)

काल का कथन करते समय नाना व एक जीव का जघन्य एक समय कैसे प्राप्त होता है उसका उत्तर कहते हैं-जैसे एक जीव अथवा कई जीव उपशम श्रेणी से उतरते समय अनिवृत्ति करण से अपूर्वकरण में आये एक समय रहकर मर गये इस प्रकार एक समय जघन्य काल प्राप्त हुआ उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त सुगम है।

शंका - यहाँ उपशम श्रेणी से उतारते हुए एक समय क्यों प्राप्त कराया चढ़ते हुए क्यों नहीं कराया, क्या उपशम श्रेणी पर चढ़ते अपूर्वकरण गुणस्थान में मरण का अभाव है?

समाधान- नहीं क्योंकि उपशम श्रेणी चढ़ते हुए अपूर्वकरण में एक समय प्राप्त नहीं होता क्योंकि जब तक भय और जुगुप्सा इन दो प्रकृतियों की उदय व्युच्छिति नहीं होती है तब तक मरण संभव नहीं है, उसके बाद हो सकता है और उसमें अन्तर्मुहूर्त का समय लगता है। अत: एक समय प्राप्त नहीं होता क्षपक का नाना व एक जीव का काल ज.व उ. अन्तर्मुहूर्त है। शेष कथन सुगम है।

215. स्त्रीवेदी अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	अनिवृत्तिकरण गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	2 संज्ञा (आहार भय बिना)
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	स्त्रीवेद
11.	कषाय	5 कषाय
12.	ज्ञान	3 ज्ञान
13.	संयम	2 (सामायिक, छेदोपस्थापना)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	द्रव्य से 6 लेश्या, भाव से एक शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (क्षायिक, औपशमिक)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	6 (3 ज्ञानो.+3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	एक पृथक्त्व वितर्क शुक्लध्यान (अथवा चार धर्म ध्यान)
22.	आस्रव	14 (5 कषाय+9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	संख्यात (30) (औप.10 +क्ष.20) (ध.पु. 3 पृ. 416 सू. 126 की टीका)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना व एक जीव की अपेक्षा – उपशामक ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक–ना.व.ए.जीवापेक्षा–अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – उपशामक ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व क्षपक ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व एक जीव की अपेक्षा – उपशामक ज. अन्तर्मुहूर्त उ. पल्योपम शत पृथक्त्व क्षपक–ज.व उ. निरन्तर
30.	भाव	26 भाव (औद.9, क्षयो.11, क्षा.2, औप. 2, पा.2) उपशामक 25 क्षपकों में 24
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष
32.	बन्ध	22 गुणस्थानोक्त (सवेद भाग के चरम समय में 21 प्रकृति का बन्ध होता है)
33.	उदय	64 (पूर्व की 35+6 हास्य रति, अरति, शोक, भय, जगुप्सा इन 41 प्रकृति बिना)
34.	सत्त्व	क्ष. 137 (तीर्थंकर का सत्त्व नहीं है) उप. 146 (नरकायु व तिर्यंचायु बिना)
		✻ 146, 145, 142, 141, 139, 138 प्रकृति

215. इत्थिवेदी अणियट्टियरण गुणट्ठाणं

तेसिं इत्थिवेदी अणियट्टियरण जीवाणामालाव-भण्णमाणे अत्थि-एग अणियट्टियररणगुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तजीवसमासा, छह पज्जत्ती, दस पाणा, आहारभएहि विणा मेहुण परिग्गह सण्णा, एग मणुस्स गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, चत्तारि मणोजोगा चत्तारि वचि जोगा एग ओरालियकाय णव जोगा, एग इत्थि वेदो, पंच कसाया, मदि सुद ओहि तिण्णि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, केवलदंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइया बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, छह उवजोगा, एग पिथक्कवितक्क सुक्कज्झाणो चत्तारि धम्मज्झाणाणि, चोद्दस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा तीस खवगेसु बीस उवसामगेसु दस, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो खवगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं उवसामगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण वास पुधत्तं एग जीवावेक्खा णिरंतरं उवसामगेसु णाणा जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वास पुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पलिदोवमसदपुधत्तं, छब्बीस भावा उवसामगेसु पणबीस खवगेसु चउबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, बाबीस पयडीणं बंधो, चउसट्ठि पयडीणं उदओ, खवगेसु सत्ततीसुत्तर सयं उवसामगेसु अड़तीसुत्तरत्तो सयं छदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु इत्थिवेदीसु अणियट्टियरण गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

स्त्रीवेदी अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

उन्हीं स्त्रीवेदी अनिवृत्तिकरण जीवों के आलाप कहने पर - एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्तियाँ, दस प्राण, (आहार भय बिना) मैथुन परिग्रह दो संज्ञा, एक मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, (चार मनोयोग चार वचन योग एक औदारिक काय) नौ योग, एक स्त्रीवेद, पाँच कषाय, मति श्रुत अवधि तीन ज्ञान, सामायिक-छेदोपस्थापना दो संयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, द्रव्य से छहों लेश्या भाव से एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, औपशमिक-क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, एक पृथक्त्ववितर्क शुक्ल ध्यान अथवा चार धर्मध्यान, चौदह आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा तीस (क्षपक बीस उपशामक दस), क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल क्षपक एक व नानाजीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त उपशामक नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर क्षपक-नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा निरंतर उपशामक-नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम शत पृथक्त्व, छब्बीस भाव क्षपकों में चउबीस उपशामको में पच्चीस भाव, जघन्य-अवगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, बाईस प्रकृतियों का बंध, चौंसठ प्रकृतियों का उदय एवं क्षपकों में एक सौ सैंतीस उपशामकों में एक सौ छयालीस प्रकृति से एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार वेद मार्गणा स्त्री वेदियों में अनिवृत्तिकरण गुणस्थानालाप समाप्त हुआ।

---

*यहाँ 138 प्रकृतियों का सत्त्व उपशम श्रेणी की अपेक्षा है। क्षपक श्रेणी में 137 प्रकृतियों का ही सत्व हो सकता है, क्योंकि स्त्री वेद अथवा नपुंसक वेद में क्षपक श्रेणी में तीर्थंकर प्रकृति का सत्त्व नहीं होता।

विशेष - अनिवृत्तिकरण में स्त्रीवेद का क्षय हो जाने पर एक संज्ञा रह जाती है। क्षपक श्रेणी में अनिवृत्तिकरण के सवेद भाग में 114 प्रकृतियों का सत्त्व पाया जाता है। संख्या एवं काल का कथन अपूर्वकरण गुणस्थान के समान समझना चाहिए। अन्तर का कथन करते है-स्त्री वेदी क्षपक श्रेणी पर एक के बाद एक या बहुत से जीव लगातार श्रेणी आरोहण करते हैं तो संख्यात ही करेंगे उसके बाद अन्तर पड़ जायेगा जो कम से कम एक समय अधिक से अधिक 7-8 वर्ष प्रमाण तक हो सकता है यानि इतने समय तक कोई जीव क्षपक श्रेणी नहीं चढ़ेगा उसके बाद कोई न कोई जीव क्षपक श्रेणी चढ़ेगा। इसी प्रकार उपशामकों में नाना जीवों का अन्तर जानना चाहिए। क्षपक एक जीव की अपेक्षा निरंतर है जो सुगम है। उपशामकों का एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त भी सुगम है उत्कृष्ट पल्योपम शत पृथक्त्व है यहाँ एक बात और विचारणीय है जहाँ काल का कथन नाना व एक जीव का अन्तर्मुहूर्त कहा है उसमें एक जीव की अपेक्षा नाना जीवों का काल यद्यपि अन्तर्मुहूर्त ही है परन्तु संख्यात समय अधिक है क्योंकि अन्तर्मुहूर्त के भी असंख्यात भेद हैं शेष कथन सुगम है।

216. पुरुष वेदी सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	1–9	–	1, 2, 4, 6
2.	जीवसमास	संज्ञी असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त	संज्ञी असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति व 6 अपर्याप्ति, 5 पर्या. 5 अपर्या.	5, 6 पर्याप्ति	5, 6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 9 प्राण व 7 प्राण 7	10 प्राण, 9 प्राण	7 प्राण, 7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	3 (नरक गति बिना)	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	15 योग	11	4 (औदा.मि.,आ.मि.,कार्मण, वैक्रि.मि.)
10.	वेद	1 पुरुषवेद	–	–
11.	कषाय	23 (स्त्री व नपुंसक वेद बिना	–	–
12.	ज्ञान	7 ज्ञान (केवलज्ञान बिना)	–	5 ज्ञान (मन:पर्यय बिना व कुअवधि बिना)
13.	संयम	5 (सूक्ष्मसाम्पराय, यथाख्यात बिना)	–	3 (असंयम, सामा., छेदो.)
14.	दर्शन	3 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	सभी	–	–
16.	भव्य	दोनों	–	–
17.	सम्यक्त्व	6	–	5 (सम्यग्मिथ्यात्व बिना)
18.	संज्ञी	संज्ञी असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	दोनों (आहारक, अनाहारक)	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	10 (7 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)	–	8 (5 ज्ञानो.+3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	13 (4 आर्त्त+4 रौद्र+4 धर्म+1 शुक्ल)	–	12 (1 शुक्ल ध्यान बिना)
22.	आस्रव	55 (15 योग+23 कषाय+12 अवि.+5 मि.)	51 (11+23+12+5)	44 (4 योग+23+12+5)
23.	जाति	22 लाख	–	–
24.	कुलकोटि	83½ लाख करोड़ (26 लाख करोड़ देव+ 14 लाख करोड़ मनुष्य+43½ लाख करोड़ तिर्यंच)		
25.	संख्या	असंख्यात (देवों से कुछ अधिक)		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14 राजू व सर्वलोक		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा–सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. सागरोपम शत पृथक्त्व		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा–निरन्तर एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अनंत संसार रूप असंख्यात पुद्‌गल परावर्तन		
30.	भाव	43 (18 औद + 18 मि., क्षा–2, औ–2, पा–3)		
31.	अवगाहना	जघन्य– संख्यात अंगुल	उत्कृष्ट– संख्यात धनुष, 3 कोश	
32.	बन्ध	120 गुणस्थानवत्	अपर्याप्त–112 (चार आयु, नरकद्विक,आहारकद्विक बिना)	
33.	उदय	107 गुणस्थानवत्		
34.	सत्त्व	148 गुणस्थानवत्		

216. पुरिसवेदी सामण्णालावो

अह पुरिसवेदी जीवाणं सामण्णालाव–भण्णमाणे अत्थि – णव गुणट्ठाणं अपज्जत्तेसु एय दो चत्तरि छ गुणट्ठाणं, सण्णी असण्णी*[1] पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त चत्तारि जीवसमासा, छ–पंच पज्जत्ती छ पंच अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस णव अपज्जत्तेसु सत्त सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, तिरिक्ख मणुस्स देव तिण्णि*[2] गदी, एग पंचिंदियाणि, तसकाओ, पंचदस जोगा पज्जत्तेसु एगारस अपज्जत्तेसु चत्तारि जोगा, एग पुरिसवेदो, तेबीस कसाया, केवलणाणेण विणा सत्त णाणाणि अपज्जत्तेसु कुमदि कुसुद मदि सुद ओहि पंच णाणाणि, असंजम देससंजमो सामाइय छेदोवट्ठावणा विहार सुद्धि पंच संजमा अपज्जत्तेसु असंजमो सामाइय छेदोवट्ठाणवणा तिण्णि संजमा, केवलदंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, दव्वभावेहि छल्लेस्सा, भव्व सिद्धिया अभव्वसिद्धिया दोण्णि, छ सम्मत्ता अप्पज्जत्तेसु सम्मामिच्छत्तेण विणा पंच सम्मत्ता, सण्णी असण्णी दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु अट्ठ उवजोगा, तेरस झाणाणि अपज्जत्तेसु वारस झाणाणि, पणवण्ण आसवा पज्जत्तेसु एगावण्ण अपज्जत्तेसु चदुदाल आसवा बावीस लक्ख जादी, अद्धुत्तर तिअसीदि लक्ख कोडि कुलकोडीण संखावेक्खा असंखेज्ज देवत्तो सादिरेयाणि, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा*[3] सव्वलोगो वा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण सायरोवम सद पुधत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहूत्तं उक्कस्सेण अणंतसंसार रूव असंखेज्ज पोग्गलपरायट्टं, तिदाल भावा, जहण्णमवगहणं संखेज्ज अंगुल उक्कस्सेण संखेज्ज धणू, बीसुत्तर सयं पयडीणं बंधो, सत्तुत्तर सयं पयडीणं उदओ, अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु पुरिस वेदीसु सामण्णालाव सम्मत्ता।

पुरुषवेदी सामान्यालाप

अब पुरुषवेदी जीवों के सामान्यालाप कहने पर – आदि के नौ गुणस्थान अपर्याप्तक में एक दो चार छह गुणस्थान, संज्ञी–असंज्ञी पर्याप्तापर्याप्त चार जीव – समास, छह–पाँच पर्याप्तियाँ छह–पाँच अपर्याप्तियाँ, पर्याप्त में दस–नौ प्राण अपर्याप्त में सात–सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, तिर्यंच–मनुष्य–देव तीन गतियाँ, एक पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, पन्द्रह योग पर्याप्त में ग्यारह अपर्याप्त में चार योग, एक पुरुषवेद, तेईस कषाय, केवलज्ञान बिना सात ज्ञान अपर्याप्त में कुमति कुश्रुत मति–श्रुत–अवधि पाँच ज्ञान, (असंयम–देशसंयम–सामायिक छेदोपस्थापना परिहार विशुद्धि) पाँच संयम अपर्याप्त में (असंयम–सामायिक–छेदोपस्थापना) तीन संयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, द्रव्य–भाव से छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक–अभव्य सिद्धिक दोनों, छहों सम्यक्त्व अपर्याप्त में सम्यग्मिथ्यात्व बिना पाँच सम्यक्त्व, संज्ञी–असंज्ञी दोनों, आहारक अनाहारक पर्याप्त में आहारक अपर्याप्त में आहारक अनाहारक दोनों, पर्याप्त में दश उपयोग अपर्याप्त में आठ उपयोग, तेरह ध्यान अपर्याप्तक में 12 ध्यान (एक शुक्ल ध्यान बिना), पचपन आस्रव पर्याप्त में इक्कावन आस्रव अपर्याप्त में चवालीस आस्रव, बाईस लाख जाति, साढ़े तेरासी लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा असंख्यात (देवों से कुछ अधिक), क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम चौदह भागों में से आठ भाग प्रमाण अर्थात् कुछ कम 8/24 राजू व सर्वलोक, काल–नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट सागरोपम शत पृथक्त्व, अंतर नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अनंत संसार रूप असंख्यात पुद्गल परावर्तन, तेतालीस भाव, जघन्यावगाहना संख्यात अंगुल उत्कृष्ट संख्यात धनुष, एक सौ बीस प्रकृतियों का बंध, एक सौ सात प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार वेद मार्गणा में पुरुष वेदियों का सामान्यालाप समाप्त हुआ।

---

*[1] ध.पु. 1 सू. 102।

*[2] नरक में एक नपुसंक वेद ही होता है इसलिए तीन गतियाँ कहीं।

*[3] स्वस्थान लोक का असंख्यातवाँ भाग विहार वेदना विक्रिया कषाय समुद्घात पद परिणत जीवों का 8/14 मारणांतिक समुद्घात व उपपाद पद परिणत जीवों ने सर्वलोक स्पर्श किया है।

217. पुरुष वेदी मिथ्यात्व गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	मिथ्यात्व	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्या. अपर्या.	2	2
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति व 6 अपर्याप्ति 5 पर्या., 5 अपर्या.	6, 5 पर्याप्ति	6, 5 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 9प्राण व 7, प्राण 7	10, 9 प्राण	7, 7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	3 (नरक गति बिना)	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	13 (आहारकद्विक बिना)	10, 2 (असंज्ञियों में दो)	3 (औद.मि.,वैक्रि.मि., कार्मण), 2 अस.
10.	वेद	पुरुषवेद	–	–
11.	कषाय	23 (स्त्री व नपुंसक वेद बिना)	–	–
12.	ज्ञान	3 कुज्ञान अस. 2 कुज्ञान	3, 2	2 कुज्ञान, 2
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 दर्शन (चक्षु, अचक्षु)	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या अस. 3 अशुभ लेश्या	6/3	अस. 3 अशुभ लेश्या
16.	भव्य	भव्य/अभव्य	भव्य/अभव्य	भव्य व अभव्य
17.	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	दोनों	आहारक	2 (अनाहारक/आहारक)
20.	उपयोग	5 (3 ज्ञानो.+ 2 दर्शनो.)	(अस. 4 उप.) (स. 5 उप.)	4 (2 ज्ञानो.+ 2 दर्शनो.) (अस.4 उप.)
21.	ध्यान	8 (4 आर्त 4 रौद्र)	–	–
22.	आस्रव	53 (13 योग+23 कषाय+12 अवि.+5 मि.)	50 (10+23+12+5) अस. 42	43 (3+23 क.+12+5) अस.42
23.	जाति	22 लाख (14 लाख+4+4) अस. 4 लाख		
24.	कुलकोटि	83½ लाख करोड़ (14 लाख+26 लाख+43½ लाख करोड़)		
25.	संख्या	असंख्यात (देवों से कुछ अधिक)		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14 राजू सर्वलोक		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल	एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त	उ. सागरोपम शत पृथक्त्व
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – निरन्तर	एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त	उ. दो छयासठ सागर*
30.	भाव	31 (18 औद, क्षयो.10, पा. 3) अप. 30 अस. 25		
31.	अवगाहना	जघन्य– संख्यात अंगुल	उत्कृष्ट– संख्यात धनुष	
32.	बन्ध	117 गुणस्थानवत्	अप. 107 (112 में से सुरचतुष्क तीर्थंकर बिना)	
33.	उदय	103 (107 में से स.मि., स. आहा. द्वि घटाने पर)		
34.	सत्त्व	148 गुणस्थानवत्		

किसी अनादि अथवा सादि मिथ्यादृष्टि जीव ने प्रथमोपशम के पश्चात् क्षयोपशम सम्यक्त्व प्राप्त किया 66 सागर सम्यक्त्व में रहा पुन: अन्तर्मुहूर्त के लिए सम्यग्मिथ्यादृष्टि हुआ [illegible]

217. पुरिसवेदी मिच्छत्तगुणट्ठाणं

तेसिं पुरिसवेदी मिच्छाइट्ठीजीवाणामालाव-भण्णमाणे अत्थि - एगॅ मिच्छत्तगुणट्ठाणं, सण्णी [*1]असण्णी पज्जत्तापज्जत्त चत्तारि जीव समासा, छ पंच पज्जत्ती छ पंच अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस णव पाणा अपज्जत्तेसु सत्त सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, णिरयेण विणा तिण्णि गदी असण्णीसु एग तिरिक्ख, पंचिंदियाणि, तसकाओ, आहार दुगेहिं विणा तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, एग पुरिसवेदो, तेबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि असण्णी व अपज्जत्तेसु बे अण्णाणाणि, एग असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, दव्व भावेहिं छल्लेस्सा असण्णीसु तिण्णि असुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्व सिद्धिया दोण्णि, एग मिच्छत्त सम्मत्तं, सण्णी असण्णी दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, पंच उवजोगा असण्णी व अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, अट्ठ झाणाणि, तिरेवण्ण आसवा पज्जत्तेसु पंचास अपज्जतेसु तिदाल आसवा असण्णी सामण्णं चदुदाल आसवा पज्जत्तेसु बादाल अपज्जतेसु बादाल आसवा, बावीस लक्ख जादी असण्णीसु चत्तारि लक्खजादी, पज्जत्तेसु अद्धुत्तर तिअसीदि लक्ख कोडिकुलकोडीणं असण्णीसु अद्धतिदाल लक्ख कुलकोडीणं, संखावेक्खा असंखेज्ज, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा व सव्वलोगो, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण सायरोवम सदपुधत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण बे छावट्ठि सायरोवमाणि, इगतीस भावा अपज्जत्तेसु तीस, असण्णीसु पणवीस भावा जहण्णमवगहणं संखेज्जांगुल उक्कस्सेण संखेज्ज धणू, सत्तदसुत्तर सयं पयडीणं बंधो, तिउत्तर सयं पयडीणं उदओ, अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु पुरिस वेदीसु मिच्छत्त गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

पुरुषवेदी मिथ्यात्व गुणस्थान

उन्हीं पुरुषवेदी मिथ्यादृष्टि जीवों के आलाप कहने पर - एक मिथ्यात्व गुणस्थान, संज्ञी-असंज्ञी पर्याप्तापर्याप्त चार जीव समास, छह-पाँच पर्याप्तियाँ-छह-पाँच अपर्याप्तियाँ, पर्याप्त में दस-नौ प्राण अपर्याप्त में सात-सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, नरक बिना तीन गतियाँ, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, आहारक द्विक बिना तेरह योग, पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, एक पुरुष वेद, तेईस कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्त में दो अज्ञान, एक असंयम, चक्षु-अचक्षु दो दर्शन, द्रव्य-भाव से छहों लेश्या, असंज्ञियों में तीन अशुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक दोनों, एक मिथ्यात्व सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी दोनों, आहारक अनाहारक पर्याप्त में आहारक अपर्याप्त में आहारक अनाहारक दोनों, पाँच उपयोग असंज्ञी व अपर्याप्त में चार उपयोग, आठ ध्यान, तिरेपन आस्रव संज्ञियों में सामान्य से तिरेपन आस्रव पर्याप्तको में पचास अपर्याप्तकों में तैतालीस तथा असंज्ञियों में सामान्य से 44 पर्याप्तकों में ब्यालीस अपर्या. ब्यालीस आस्रव होते हैं।, बाईस लाख जाति असंज्ञियों में चार लाख जाति, साढ़े तेरासी लाख करोड़ कुल कोटि, असंज्ञियों में साढे तेतालीस लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा असंख्यात, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 8/14 राजू सर्वलोक, काल-नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट सागरोपम शत पृथक्त्व, अंतर नाना जीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट दो छ्यासठ सागर, इकतीस भाव अपर्याप्तक में तीस असंज्ञियों में पच्चीस भाव, जघन्य अवगाहना संख्यात अंगुल उत्कृष्ट संख्यात धनुष, एक सौ सत्तरह प्रकृतियों का बंध, एक सौ तीन प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार वेद मार्गणा में पुरुष वेदियों का मिथ्यात्व गुणस्थानालाप समाप्त हुआ।

[*1] ध.पु. 1 (संत परुवणा) सू. नं. 102

विशेषार्थ :- यहाँ संज्ञी असंज्ञी दोनों का कथन एक साथ किया है क्योंकि पुरुष वेदी संज्ञी असंज्ञी दोनों प्रकार के होते हैं ऐसा कथन धवल पु. एक सूत्र नं 102 में किया है। असंज्ञियों में मिथ्यात्व सासादन दो गुणस्थान पाये जाते हैं असंज्ञियों के पर्याप्त अपर्याप्त में तीन अशुभ लेश्याएँ ही पायी जाती हैं, यहाँ चार लाख जाति कही हैं वो इसलिए कि असंज्ञी केवल तिर्यंचों में ही होते हैं। अन्य गतियों में नहीं और पंचेन्द्रिय तिर्यंचों की चार लाख जातियाँ हैं इसी प्रकार कुल कोटि का भी कथन करना चाहिए असंज्ञी के दो कुज्ञान तथा दो दर्शन होने से चार उपयोग होते है, इसी प्रकार आस्रवों में कुछ फर्क है, जो मूल में दिया है असंज्ञियों में योग चार ही पाये जाते हैं इसलिए आस्रवों में अन्तर है। शेष कथन सुगम है इसी प्रकार स्त्री वेदियों में जानना चाहिए। स्पर्शन का कथन करते हुए स्वस्थान की अपेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग विहार वेदना विक्रिया कषाय से परिणत चौदह भागों में से आठ भाग उपपाद व मारणांतिक पद परिणत जीवों का सर्वलोक स्पर्शन बन जाता है शेष कथन सुगम है।

218. पुरुष वेदी सासादन गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	सासादन	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी, असंज्ञी, पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी, असंज्ञी, पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति व 6 अपर्याप्ति, 5 अपर्या.	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति, 5 अपर्या.
4.	प्राण	10 प्राण व 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण, 7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	3 गति (नरक गति बिना)	–	सं. 3 ग. असंज्ञी एक तिर्यंचगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	13 (आहारकद्विक बिना)	10	3 (औदा.मि.,वैक्रि.मि.,कार्मण असं.औ.मि.का.का.यो.)
10.	वेद	1 पुरुषवेद	–	–
11.	कषाय	23 (स्त्री व नपुंसक वेद बिना)	–	–
12.	ज्ञान	3 कुज्ञान	–	2 कुज्ञान
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	संज्ञी 6, असंज्ञी 3 अशुभ
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	सासादन	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी	संज्ञी	संज्ञी,असंज्ञी दोनों
19.	आहारक	दोनों	आहारक	अनाहारक/आहारक
20.	उपयोग	5 (3 ज्ञानो.+ 2 दर्शनो.)	–	4 (2 ज्ञानो.+ 2 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8	–	–
22.	आस्रव	48 (23 कषाय+12 अवि.+13 योग)	45 (23+12+10)	38 (23+12+3) असंज्ञी में 37
23.	जाति	22 लाख (14 लाख मनुष्य +4 लाख देव +4 लाख तिर्यंच)		
24.	कुलकोटि	83½ (14 लाख करोड़ म.+26 लाख करोड़ देव+43½ लाख करोड़ तिर्यंच)		
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व वि.विक्रि., वेदना, कषाय–कुछ कम 8/14 राजू मा. कुछ कम 9/14 राजू उप. कुछ कम 11/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – ज. एक समय एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय	उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग उ. 6 आवली	
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – ज. एक समय एक जीव की अपेक्षा – ज. पल्यो.अ.भाग	उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग उ. सागरोपम शत पृथक्त्व	
30.	भाव	29 पर्या. (औद.17, मि.10, पा.2)	अपर्या. 28 (कुअवधि कम करने पर) असंज्ञी में 23 भाव	
31.	अवगाहना	जघन्य– संख्यात अंगुल	उत्कृष्ट– संख्यात धनुष	
32.	बन्ध	प.–101 गुणस्थानवत्	अ. 94 (107 में से प्रथम गुणस्थान में जो 16 प्रकृति व्युच्छिन्न वाली उनमें से नरकद्विक व नरकायु बिना 13 प्रकृति कम करने पर	
33.	उदय	102 (103 प्रकृति में से मिथ्यात्व कम करने पर)		
34.	सत्त्व	145 (तीर्थंकर व आहारकद्विक बिना)		

नोट– असंज्ञियों और अपर्याप्तक में जो समानता थी उसे एक साथ दिया है असमानता को अलग से सूचित किया है। स्पर्शन असंज्ञियों का विहार वि.वे. कषाय की अपेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग ही है।

218. पुरिसवेदी सासणगुणट्ठाणं

तेसिं पुरिसवेदी सासणगुणट्ठाणालाव-भण्णमाणे अत्थि-एग-सासणगुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदियपज्जत्तापज्जत्त असण्णी अपज्जत्ततिण्णि जीवसमासा, छ पज्जत्ती छ पंच अपज्जत्ती, दस सत्त सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, णिरयगदी विणा तिण्णि गदी असण्णीसु एग तिरिक्ख गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, आहारदुगेहि विणा तेरस जोगा सण्णी पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि असण्णी अपज्जत्तेसु बे जोगा, एग पुरिसवेदो, इत्थिणवुंसयवेदेहि विणा तेबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि अपज्जत्तेसु व असण्णीसु बे अण्णाणाणि, असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, छल्लेस्सा असण्णीसु तिण्णि असुहलेस्सा, भव्व सिद्धिया, सासण सम्मत्तं, सण्णी असण्णी पज्जत्तेसु सण्णी अपज्जत्तेसु दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि अपज्जत्तेसु आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि, पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु असण्णीसु चत्तारि उवजोगा, अट्ठज्झाणाणि, अडदाल आसवा पज्जत्तेसु पणदाल अपज्जत्तेसु अट्ठतीस असण्णीसु सत्ततीस आसवा, बाबीस लक्ख जादी असण्णी सु चत्तारि लक्ख जादी, अद्ध तिअसीदि लक्ख कोडि कुलकोडीणं असण्णीसु अद्धतिदाल कोड़ी कुल कोड़ीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा विहार वेयणा वेगुव्वियकसाय अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा मारणंतिओ णव चोद्दस भागा वा देसूणा उववादा वेक्खा एगादस चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमयो उक्कस्सेण छावली, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण सागरोवम सद पुधत्तं, पज्जत्तेसु ऊणतीस भावा अपज्जत्तेसु अट्ठाबीस भावा असण्णीसु तेबीस भावा, जहण्णमवगहणं संखेज्ज अंगुल उक्कस्सेण संखेज्ज धणू, तिण्णि कोसा पज्जत्तेसु एगुत्तर सयं अपज्जत्तेसु चउणवदि पयडीणं बंधो, बे उत्तर सयं पयडीणं उदओ, तित्थयर आहारदुगेहि विणा पणदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु पुरिस वेदीसु सासण गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

पुरुषवेदी सासादन गुणस्थान

उन्हीं पुरुषवेदी सासादन गुणस्थानालाप कहने पर एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त तीन जीव समास, छह पर्याप्ति छह अपर्याप्ति पाँच अपर्याप्ति, दस व सात सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, नरक गति बिना तीन गति असंज्ञी में एक तिर्यंच गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, आहारक द्विक बिना तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में 3 योग असंज्ञियों में दो योग, एक पुरुष वेद (स्त्री नपुसंक वेद बिना) तेईस कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्त व असंज्ञी में दो अज्ञान, असंयम, चक्षु अचक्षु दो दर्शन, छहों लेश्या असंज्ञियों में तीन अशुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, सासादन सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी पर्याप्तक संज्ञी अपर्याप्तक में दोनों, आहारक अनाहारक पर्याप्त में आहारक अपर्याप्त में आहारक अनाहारक दोनों, पाँच उपयोग अपर्याप्त व असंज्ञी में चार उपयोग, आठ ध्यान, अड़तालीस आस्रव पर्याप्त में पैंतालीस अपर्याप्त में अड़तीस असंज्ञी में सेंतीस आस्रव, बाईस लाख जाति असंज्ञी में चार लाख जाति, साढ़े तेरासी लाख करोड़ असंज्ञी में साढ़े तेतालीस लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग - विहार-वेदना-विक्रिया कषाय कुछ कम 8/14 राजू मारणान्तिक कुछ कम 9/14 राजू उपपाद कुछ कम 11/14 राजू, काल नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य-एक समय उत्कृष्ट-छह आवली, अंतर नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य पल्योपम का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट सागरोपम शत पृथक्त्व, पर्याप्त में उनतीस भाव अपर्याप्त में अट्ठाईस असंज्ञी में तेईस भाव, जघन्यावगाहना संख्यात अंगुल उत्कृष्ट संख्यात धनुष, पर्याप्त में एक सौ एक अपर्याप्त में चौरानवे प्रकृतियों का बंध, एक सौ दो प्रकृतियों का उदय एवं तीर्थंकर व आहारक द्विक बिना एक सौ पैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार पुरुष वेदियों का सासादन गुणस्थानालाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ:- अब पुरुषवेदियों के अवहार काल को कहते हैं-ओघ असंयत सम्यग्दृष्टियों के अवहार काल को आवली के असंख्यातवें भाग से भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी ओघ असंयतसम्यग्दृष्टियों के अवहार काल में मिला देने पर पुरुषवेदी असंयत सम्यग्दृष्टियों का अवहार काल होता है। इसे आवली के असंख्यातवें भाग से गुणित करने पर पुरुषवेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टियों का अवहार काल होता है। इसे आवली के संख्यातवें भाग से गुणित करने पर पुरुषवेदी सासादन सम्यग्दृष्टियों का अवहार काल होता है। इस अवहार काल के समयों की संख्या का भाग पल्योपम में देने पर सासादन सम्यग्दृष्टि पुरुष वेदी जीवों की संख्या प्राप्त होती है। इसे आवली के असंख्यातवें भाग से गुणित करने पर पुरुषवेदी संयतासंयतों का अवहार काल होता है। ओघ प्रमत्त संयत आदि राशियों में से अपने-अपने संख्यातवें स्त्रीवेदी और नपुंसकवेदी प्रमत्तादि राशि के प्रमाण को घटा देने पर पुरुषवेदी प्रमत्तसंयत आदि जीव होते हैं।

219. पुरुषवेदी मिश्रगुणस्थान

1.	गुणस्थान	सम्यग्मिथ्यात्व*1
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	3 गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	10 योग
10.	वेद	पुरुषवेद
11.	कषाय	19 (अनन्तानुबन्धी स्त्री, नपुंसक वेद बिना)
12.	ज्ञान	3 मिश्रज्ञान
13.	संयम	असंयम
14.	दर्शन	2 दर्शन (गोम्मटसार कर्मकाण्ड में मिश्रगुणस्थान में तीन दर्शन कहे है)
15.	लेश्या	6 लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	सम्यग्मिथ्यात्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 उपयोग (3 ज्ञानोपयोग + 2 दर्शनोपयोग)
21.	ध्यान	8
22.	आस्रव	41 (19 कषाय+12 अवि.+10 योग)
23.	जाति	22 लाख (14 लाख + 4 लाख + 4 लाख)
24.	कुलकोटि	83½ लाख करोड़ (14 + 26 +43½)
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व वि.विक्रि., वेदना, कषाय–कुछ कम 8/14 राजू
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा – ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त्त उ. सागरोपम शत पृथक्त्व
30.	भाव	29 (औ. 17+क्षयो. 10+ पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य– संख्यात अंगुल उत्कृष्ट– संख्यात धनुष
32.	बन्ध	74 गुणस्थानवत्
33.	उदय	96 (सम्यक्त्व, आहारकद्विक, मिथ्यात्व, अनन्तानुबंधी चार कषाय, नरक गत्यानुपूर्वी आदि तीन आनुपूर्वी बिना)
34.	सत्त्व	147 गुणस्थानवत्
		*1 यहाँ संज्ञी पंचेन्द्रिय ही होते हैं तथा इससे आगे के गुणस्थानों में भी संज्ञी ही होते हैं असंज्ञी नहीं।

219. पुरिसवेदी मिस्सगुणट्ठाणं

तेसिं पुरिसवेदीसु सम्मामिच्छत्तगुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि, – एग सम्मामिच्छत्तगुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त एग जीवसमासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, णिरयेण विणा तिण्णि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, दस जोगा, एग पुरिसवेदो, अणंताणुबंधिणो विणा उणबीस कसाया, तिण्णि मिस्सणाणाणि, एग असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया, सम्मामिच्छत्त सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, अट्ठज्झाणाणि, इगदाल आसवा, बाबीस लक्ख जादी, अद्धुतरतिअसीदि लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व विहार वेयणा वेगुव्विया कसायोत्ति अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण सायरोवम सदपुधत्तं, उणबीस भावा, जहण्णमवगहणं संखेज्जांगुल उक्कस्सेण संखेज्ज धणू, चउसत्तदि पयडीणं बंधो, छण्णवदि पयडीणं उदओ, सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु पुरिस वेदीसु मिस्स गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

पुरुषवेदी मिश्रगुणस्थान

उन्हीं पुरुषवेदियों में सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थानालाप कहने पर एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, नरक बिना तीन गतियाँ, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, दस योग, एक पुरुष वेद, स्त्री व नपुंसक वेद तथा (अनंतानुबंधी बिना) उन्नीस कषाय, तीन मिश्र ज्ञान, असंयम, चक्षु अचक्षु दो दर्शन छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, आठ ध्यान, इकतालीस आस्रव, बाईस लाख जाति, साढ़े तेरासी लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग व विहार वेदना विक्रिया कषाय कुछ कम 8/14 राजू, काल नानाजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट सागरोपम शत पृथक्त्व, उनतीस भाव, जघन्यावगाहना संख्यात अंगुल उत्कृष्ट संख्यात धनुष, चौहत्तर प्रकृतियों का बंध, छियानवे प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार वेद मार्गणा में पुरुष वेदियों का मिश्र गुणस्थानालाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- संख्या का कथन इस प्रकार है असंयत सम्यग्दृष्टियों का अवहार काल+असंयत सम्यग्दृष्टियों के अवहार काल का आवली का असंख्यातवां भाग= स. मि. अवहार काल इस अवहार काल से पल्य को भाजित करने पर पुरुष वेदी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों की संख्या प्राप्त होती है जो पल्य के असंख्यातवें भाग हैं असंयत सम्यग्दृष्टि का अवहार (भागहार) आगे के गुणस्थान में कहेंगे। स्पर्शन की अपेक्षा यहाँ मारणांतिक व उपपाद दो पद नहीं होते शेष पदों की अपेक्षा मूल में कथन किया ही है। काल नाना जीवों की अपेक्षा सरल है एक जीव की भी अपेक्षा सरल है। अन्तर का कथन भी सरल है आगे के गुणस्थान में भी कहेगे वहाँ से जान लेना चाहिए शेष कथन सरल है।

220. पुरुषवेदी असंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	अविरत	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति व 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण व 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	3 गति (नरक गति बिना)	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	13 (आहारकद्विक बिना)	10	3 (औदा. मि.,वै.,मि., कार्मण)
10.	वेद	1 पुरुषवेद	–	–
11.	कषाय	19	–	–
12.	ज्ञान	3 ज्ञान	–	–
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	3 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो., उपशम)	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	दोनों	आहारक	अनाहारक/आहारक
20.	उपयोग	6 (3 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)	–	
21.	ध्यान	10 (4 आर्त्त+4 रौद्र+2 धर्म)	–	–
22.	आस्रव	44 (19 कषाय+12 अवि.+13 योग)	41 (19+12+10)	34 (19+12+3)
23.	जाति	22 लाख		
24.	कुलकोटि	83½ लाख करोड़		
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	स्वस्थान–लोक का असंख्यातवाँ भाग व वि.विक्रि., वेदना, कषाय–कुछ कम 8/14 राजू, मा. उप. कुछ कम 6/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 33 सागर		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – निरन्तर एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. सागरोपम शत पृथक्त्व*[1]		
30.	भाव	33 (औ. 17, मि. 12, पा.2, क्षा.1, औप.1)		
31.	अवगाहना	जघन्य– संख्यात अंगुल उत्कृष्ट– संख्यात धनुष		
32.	बन्ध	77*[2] गुणस्थानवत् अपर्या. 72 द्वितीय गुणस्थान की व्युच्छित्ति प्रकृतियों के बिना)		
33.	उदय	99 (8 मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, आहारकद्विक, 4 अनन्तानुबंधी कषाय बिना)		
34.	सत्त्व	148 गुणस्थानवत्		

*[1] कोई पुरुष वेदी हुआ सम्यक्त्व को प्राप्त किया पुन: मिथ्यादृष्टि हो गया 300, (700–800) से 900 सागर तक मिथ्यादृष्टि रहा पुन: अन्तिम भव में सम्यक्त्व प्राप्त किया।

*[2] तीर्थंकर, आयु कर्म को जोड़ देने पर

220. पुरुषवेदी असंजद-गुणट्ठाणं

तेसिं पुरिसवेदी जीवेसु असंजदगुणट्ठाणालाव-भण्णमाणे अत्थि, एग अविरद सम्मत्त गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, दस सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, णिरयेण विणा तिण्णि गदी, पंचिंदियाणि तसकाओ, तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, एग पुरिसवेदो, उणबीस कसाया, तिण्णि णाणाणि, एग असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम-खइय-खओवसम तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, छ उवजोगा, दस झाणाणि, चदुदाल आसवा पज्जत्तेसु इगदाल अपज्जत्तेसु चउतीस आसवा, बाबीस लक्ख जादी, अद्धुत्तर तिअसीदि लक्ख कोडि कुल कोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स*[1] असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा सगट्ठाणं लोयस्स असंखेज्जदि भागा विहार वेयणा वेगुव्विया कसायोत्ति अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा मारणंतिओ उपपाद छ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो-णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण सायरोवम सद पुधत्तं, तेतीस भावा, जहण्णमवगहणं संखेज्जांगुल उक्कस्सेण संखेज्ज धणूं, सत्तसत्तदि पयडीणं बंधो अपज्जत्तेसु बेसत्तदि पयडीणं बंधो, णवणउदि पयडीणं उदओ, अड़दालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु पुरिस वेदीसु असंजद गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

पुरुषवेदी असंयत गुणस्थान

उन्हीं पुरुषवेदी जीवों में असंयत गुणस्थानालाप कहने पर - एक अविरत सम्यक्त्व गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, दस-सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, नरक बिना तीन गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, एक पुरुष वेद, उन्नीस कषाय, तीन सुज्ञान, असंयम, तीन दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्त में आहारक अपर्याप्त में दोनों, छह उपयोग, दस ध्यान, चवालीस आस्रव पर्याप्त में इकतालीस अपर्याप्त में चौंतीस आस्रव, बाईस लाख जाति, साढ़े तेरासी लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन स्वस्थान लोक का असंख्यातवां भाग-विहार-वेदना-विक्रिया-कषायवत् कुछ कम 8/14 राजू मारणांतिक उपपाद कुछ कम 6/14 राजू, काल नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक तेतीस सागर, अंतर-नाना जीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट सागरोपम शत पृथक्त्व, तेतीस भाव, जघन्यावगाहना संख्यात अंगुल उत्कृष्ट संख्यात धनुष, सतत्तर प्रकृतियों का बंध अपर्याप्त में पचहत्तर प्रकृतियों का बंध, निन्यानवै प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार वेद मार्गणा में पुरुष वेदियों का असंयत गुणस्थानालाप समाप्त हुआ।

---

*[1] विशेषार्थ:- संख्या का कथन इस प्रकार है सम्पूर्ण असंयतों के अवहार काल में आवली के असंख्यातवें भाग का भाग देने पर जो राशि प्राप्त हो उस राशि को उसी असंयतों के भागहार में मिलाने पर जो राशि उत्पन्न हो उसका पल्योपम में भाग देने पर पुरुष वेदी असंयतों का प्रमाण प्राप्त होता है। जैसे माना पल्य का प्रमाण=1000 है असंयतों का अवहार (भागहार)=20 सम्पूर्ण असंयतों का प्रमाण=1000/20=50 (पल्योपम का असंख्यातवां भाग है।) पुरुष वेदी असंयतों का अवहार काल =20 आवली का असंख्यात वा भाग माना 4= 20+5=25 पल्योपम में भाग देने पर 1000/25=40 यह पुरुष वेदी असंयतों का प्रमाण है।

स्पर्शन सरल है काल का कथन करते हैं-एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल सरल है उत्कृष्ट काल कुछ अधिक 33 सागर इस प्रकार है कोई सम्यग्दृष्टि मनुष्य संयमी हुआ संयम के बल से एक समय कम तेतीस सागर की देवों की आयु बांधकर देवों में उत्पन्न हुआ एक समय कम तेतीस सागर देवों में बिताकर एक पूर्वकोटि वर्ष की आयु वाले मनुष्यों में उत्पन्न हुआ सारा जीवन असंयमी रहकर आयु के अन्तिम अन्तर्मुहूर्त में संयमासंयम या संयम को प्राप्त कर छटवें, सातवें गुणस्थान को प्राप्त हुआ इस प्रकार उत्कृष्ट काल प्राप्त हुआ शेष कथन सरल है, अन्तर का कथन भी सरल है क्योंकि कई बार व्याख्यान हो चुका है वहाँ से जानकर समझना चाहिए।

221. पुरुषवेदी संयतासंयत गुणस्थान

1.	गुणस्थान	संयतासंयत
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	दो (मनुष्य, तिर्यंच)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 (चार मन + चार वचन + 1 औदारिक काय योग)
10.	वेद	1 पुरुषवेद
11.	कषाय	15 (4 अनंताबंधी, 4 अप्रत्याख्यान, स्त्री व नपुं. वेद बिना)
12.	ज्ञान	3 ज्ञान
13.	संयम	संयमासंयम
14.	दर्शन	3 दर्शन (केवल दर्शन बिना)
15.	लेश्या	3 शुभ लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षायिक, क्षयोपशमिक, उपशम सम्यक्त्व)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	6 (3 ज्ञानोपयोग + 3 दर्शनोपयोग)
21.	ध्यान	11 (4 आर्त्त + 4 रौद्र + 3 धर्मध्यान)
22.	आस्रव	35 (15 कषाय + 9 योग + 11 अविरति)
23.	जाति	18 लाख (14 लाख+4 लाख)
24.	कुलकोटि	57½ लाख करोड़ (14 लाख करोड़+43½ लाख करोड़)
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व मा. कुछ कम 6/14 राजू
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम पूर्व कोटि
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – निरन्तर एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. सागरोपम शत पृथक्त्व
30.	भाव	29 (औ. 12, मिश्र 13+ क्षा.1, औप. 1, पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य– संख्यात अंगुल उत्कृष्ट– संख्यात धनुष
32.	बन्ध	67 गुणस्थानवत्
33.	उदय	85 (22 प्रकृति बिना (8पूर्व की+ अप्रत्याख्यान कषाय 4, वैक्रियकद्विक, देवायु, मनुष्य व तिर्यंच गत्यानुपूर्वी, देवद्विक, दुर्भग, अनादेय, अयशकीर्ति)
34.	सत्त्व	147 (नरक आयु बिना) गुणस्थानवत्

221. पुरिसवेदी संजदासंजद–गुणट्ठाणं

तेसिं पुरिसवेदी जीवेसु संजदासंजद गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि एग संजदासंजद गुणट्ठाणं एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तजीव समासो, छ पज्जत्ती, दसपाणा, चत्तारिसण्णा, मणुस्स तिरिक्ख बे गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, एग पुरिसवेदो, पंचदस कसाया, तिण्णि णाणाणि, एग देससंजमो, केवलदंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसम तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, छ उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द तिण्णि धम्म एगारस झाणाणि, पणतीस आसवा, अट्ठदस लक्ख जादी, अद्धुत्तर सत्तावण्ण लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा सगट्ठाणं लोयस्स असंखेज्जदि भागा मारणंतिओ छ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण पुव्वकोडीणं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण सायरोवम सदपुधत्तं, उणतीस भावा, जहण्णमवगहणं संखेज्जांगुल उक्कस्सेण संखेज्ज धणू, सडसट्ठि पयडीणं बंधो, पंचासीदि पयडीणं उदओ, णिरयाउं विणा सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु पुरिस वेदीसु संजदासंजद गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

पुरुषवेदी संयतासंयत गुणस्थान

उन्हीं पुरुषवेदी जीवों में संयतासंयत गुणस्थानालाप कहने पर – एक संयतासंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्य–तिर्यंच दो गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, एक पुरुष वेद, पन्द्रह कषाय, तीन ज्ञान, एक संयमासंयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम–क्षायिक–क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, चार आर्त्त चार रौद्र तीन धर्म ग्यारह ध्यान, पैंतीस आस्रव, अठारह लाख जाति, साढ़े सत्तावन लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन स्वस्थान लोक का असंख्यातवां भाग मारणान्तिक कुछ कम 6/14 राजू, काल नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एकजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम एक पूर्व कोटि, अंतर नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट सागरोपम शत पृथक्त्व, उनतीस भाव, जघन्यावगाहना संख्यात अंगुल उत्कृष्ट संख्यात धनुष, सड़सठ प्रकृतियों का बंध, पचासी प्रकृतियों का उदय एवं नरकायु बिना एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार वेद मार्गणा में पुरुष वेदियों का संयतासंयत गुणस्थानालाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– संख्या का कथन करते हुए पल्योपम का असंख्यातवां भाग उसका अवहार काल कहते हैं–सासादन सम्यग्दृष्टियों के अवहार काल को आवली के संख्यातवे भाग से गुणित करने पर संयतासंयतों का अवहार (भागहार) प्राप्त होता है उसका भाग पल्योपम प्रमाण में देने पर संयतासंयतों की संख्या प्राप्त होती है।

स्पर्शन की अपेक्षा यहाँ विहार, वेदना, विक्रिया, कषाय समुद्घात की अपेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग ही होता है उपपाद पद होता नहीं, मारणांतिक समुद्घात कुछ कम 6 राजू पाया जाता है कोई तिर्यंच संयतासंयत सोलहवें स्वर्ग में देव होने वाला है वह मरण से पूर्व मारणांतिक समुद्घात करता है उसका स्पर्श कुछ कम छह राजू बनता है शेष कथन सुगम है। अवगाहना में जो जघन्य का कथन है वह भी आगम में उपलब्ध नहीं होता मात्र इन्द्रिय मार्गणा के अनुसार ही उपलब्ध होता है उसी के अनुसार यहाँ संख्यात अंगुल कहा है, क्योंकि उसके बिना स्त्री पुरुष का व्यवहार संभव नहीं है, संख्यात अंगुल का मतलब है एक अंगुल से लेकर आगे उत्कृष्ट संख्यात धनुष इसमें यद्यपि 525 धनुष भी लिया जा सकता था किन्तु सही माप प्राप्त न होने के कारण इतना लिया है इसमें सभी माप समाहित हैं क्योंकि इससे ज्यादा हो नहीं सकता शेष कथन सुगम है।

222. पुरुषवेदी प्रमत्तसंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	प्रमत्तसंयत	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त, अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10	7
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	मनुष्यगति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	11 योग	10 योग	1 आहारक मिश्र
10.	वेद	पुरुषवेद	–	–
11.	कषाय	11 (4 संज्वलन, स्त्री व नपुं. बिना 7 नोकषाय)	–	–
12.	ज्ञान	4 (मति, श्रुत, अवधि, मन:पर्यय)		3 (मन:पर्यय बिना)*
13.	संयम	3 (सा.,छे.,प.)	–	2 (सा.,छे.)
14.	दर्शन	3 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	भाव से 3 शुभ लेश्या, द्रव्य से 6 लेश्या	–	द्रव्य से शुक्ल भाव से 3 शुभ लेश्या
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो., उपशम)	–	2 (उपशम बिना)*
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक	–	–
20.	उपयोग	7 (4 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)	–	6 उपयोग (मन:पर्यय बिना)*
21.	ध्यान	7 (3 आर्त्त+4 धर्मध्यान)	–	–
22.	आस्रव	22 (11 कषाय, योग11)	21 (10+11)	12 (1+11)
23.	जाति	14 लाख		
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़		
25.	संख्या	संख्यात (59398206)	अपर्याप्तक में 27	
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल	एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय	उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – निरन्तर	एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त	उ. सागरोपम शत पृथक्त्व
30.	भाव	29 (औद.11, मिश्र–14, क्षा.1, औ.1, पा.2) अपर्याप्तक–27		
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ	उत्कृष्ट– 525 धनुष	
32.	बन्ध	63 गुणस्थानवत्		
33.	उदय	79 (85–8 (प्रत्याख्यानावरण कषाय 4, तिर्यंचगति, तिर्यंचायु, नीचगोत्र, 3 उपघात)=77+आहारकद्विक=79		
34.	सत्त्व	146 गुणस्थानवत्		

* आहारक काययोग के साथ परिहार विशुद्धि, मन:पर्यय ज्ञान उपशम सम्यक्त्व नहीं होते।

222. पुरुषवेदी प्रमत्तसंजद–गुणट्ठाणं

तेसिं पुरिसवेदीजीवेसु पमत्तसंजद–गुणट्ठाणालाव–भण्णमाणे अत्थि – एग पमत्तसंजद गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदियपज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, दस सत्त णाणा, चत्तारि सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, एगारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु एग आहारमिस्सकाय जोगा, एग पुरिसवेदो, एगारस कसाया, चत्तारि णाणाणि अपज्जत्तेसु मणपज्जयेण विणा तिण्णि णाणाणि, तिण्णि संजमा सामाइय छेदोवट्ठावणा विहार सुद्धि संजमा अपज्जत्तेसु बे संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण तिण्णि सुहलेस्सा अपज्जत्तेसु दव्वेण एग सुक्क लेस्सा भावेण तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता अपज्जत्तेसु उवसम विणा बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा अपज्जत्तेसु छ उवजोगा, सत्त झाणाणि, बाबीस आसवा पज्जत्तेसु इगबीस अपज्जत्तेसु बारस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पंच कोडि तिणउदि लक्ख अट्ठणउदि सहस्सं छ उत्तर बे सयं संखेज्ज अपज्जत्तेसु सत्ताबीस, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो–णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एग जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं अपज्जत्तेसु णाणेग जीवावेक्खा जहण्णुक्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं–णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण सायरोवम सदपुधत्तं, उणतीस भावा अपज्जत्तेसु सत्तावीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, तिसट्ठि पयडीणं बंधो, ऊणासीदि पयडीणं उदओ, छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु पुरिस वेदीसु पमत्तसंजद गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

पुरुषवेदी प्रमत्त संयत गुणस्थान

उन्हीं पुरुषवेदी जीवों में प्रमत्त संयत गुणस्थानालाप कहने पर – एक प्रमत्त संयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्तक दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहो अपर्याप्ति, दस प्राण सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, ग्यारह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में आहारक मिश्र एक काय योग, एक पुरुष वेद, ग्यारह कषाय, चार ज्ञान अपर्याप्त में मन:पर्यय बिना तीन ज्ञान, तीन संयम (सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहार विशुद्धि) अपर्याप्तकों में दो संयम, तीन दर्शन, द्रव्य से छहों लेश्या भाव से तीन शुभ लेश्या अपर्याप्तक में द्रव्य से शुक्ल भाव से तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व अपर्याप्तक में उपशम बिना दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग अपर्यापत में छह उपयोग, सात ध्यान, बाईस आस्रव पर्याप्त में इक्कीस अपर्याप्त में बारह आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पाँच करोड़ तेरानवै लाख अन्ठानवै हजार दो सौ छह अपर्याप्तक में सत्ताईस, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल–नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त अपर्याप्तक नाना व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट सागरोपम शत पृथक्त्व, उनतीस भाव अपर्याप्तक में सत्ताईस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, तिरेसठ प्रकृतियों का बंध, उन्यासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छयालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार वेद मार्गणा में पुरुष वेदियों का प्रमत्त गुणस्थानालाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– संयत राशि के संख्यात खण्ड करने पर एक भाग स्त्री वेदी प्रमत्त संयत होते हैं स्त्री वेदी प्रमत्त संयतों की राशि के संख्यात खण्ड करने पर एक खण्ड नपुंसक वेदी प्रमत्तों की संख्या होती है। सम्पूर्ण प्रमत्त संयतों की राशि में से स्त्री वेदी, नपुंसक वेदी प्रमत्त संयतों की राशि घटाने पर जो शेष बचे वह पुरुष वेदी प्रमत्त संयतों की राशि होती है। आगम में अभी ऐसा उल्लेख नहीं है कि पुरुष वेदी संयत इतने हैं। अपर्याप्त का कथन आहारक शरीर की अपेक्षा किया है और कोई कारण अपर्याप्तक का नहीं है तथा अपर्याप्त में आहारक मिश्र काययोग ही होता है कार्मण काययोग नहीं होता। एक जीव की अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर मूल में कहा है उसे जानकर निकाल लेना चाहिए क्योंकि अन्तर निकालने का तरीका पहले कई बार बता चुके हैं– शेष कथन सुगम है।

223. पुरुषवेदी अप्रमत्तसंयत गुणस्थान

1.	गुणस्थान	अप्रमत्तसंयत गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 संज्ञा (आहार संज्ञा बिना)
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	1 पुरुषवेद
11.	कषाय	11 कषाय (4 संज्वलन, ''स्त्री–नपुंसक वेद बिना'' 7 नोकषाय)
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	3 (सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहार विशुद्धि)
14.	दर्शन	3 दर्शन (केवल दर्शन बिना)
15.	लेश्या	भाव से 3 शुभ लेश्या, द्रव्य से 6 लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षायिक, क्षायोपशमिक, औपशमिक)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 (4 ज्ञानोपयोग + 3 दर्शनोपयोग)
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान
22.	आस्रव	20 (11 कषाय + 9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	सर्व संयत–स्त्री+नपुंसक वेदी संयतो की संख्या=पुरुष वेदी संयत
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – निरन्तर एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. सागरोपम शत पृथक्त्व
30.	भाव	29 (औ. 11, मिश्र 14, क्षा.1, औप. 1, पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य–3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष
32.	बन्ध	59 गुणस्थानवत्
33.	उदय	74 (79–5 (आहारकद्विक – स्त्यानगृद्धि, निद्रा–निद्रा, प्रचला–प्रचला बिना)
34.	सत्त्व	146 (नरक व तिर्यञ्च आयु बिना)

223. पुरिसवेदी अपमत्तसंजद-गुणट्ठाणं

तेसिं पुरिसवेदीजीवेसु अपमत्त-गुणट्ठाणालाव-भण्णमाणे अत्थि - एग-अप्पमत्त गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदियपज्जत्त जीवसमासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, आहारेहि विणा तिण्णि सण्णा, एग मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, एग पुरिसवेदो, एगारस कसाया, केवलणाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा विहार सुद्धि तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, खइय खओवसम ओवसमिअ तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्मज्झाणाणि, बीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा बे कोडि छण्णउदि लक्ख णवणउदि सहस्स तिउत्तर सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणा जीवावेक्खा सव्वकालो एग जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण सायरोवम सद पुधत्तं, ऊणतीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, ऊणसट्ठि पयडीणं बंधो, चउसत्तदि पयडीणं उदओ, णिरय तिरिक्खेहि विणा छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु पुरिर वेदीसु अपमत्त संजद गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

पुरुषवेदी अप्रमत्तसंयत गुणस्थान

उन्हीं पुरुषवेदी जीवों में अप्रमत्त गुणस्थानालाप कहने पर - एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, तीन संज्ञाएँ, एक मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, एक पुरुषवेद, ग्यारह कषाय, चार सुज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना परिहार विशुद्धि तीन संयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, द्रव्य से छहों लेश्या भाव से तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक औपशमिक क्षयोपशम तीनसम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्म ध्यान, बीस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा दो करोड़ छ्यानवै लाख निन्यानवै हजार एक सौ तीन, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट सागरोपम शत पृथक्त्व, उनतीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, उनसठ प्रकृतियों का बंध, चौहत्तर प्रकृतियों का उदय एवं नरक तिर्यंचायु बिना एक सौ छ्यालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार वेद मार्गणा में पुरुष वेदियों का अप्रमत्तसंयत गुणस्थानालाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- आहार संज्ञा 6वें गुणस्थान तक ही होती है उसके बाद 7वें गुणस्थान में तीन संज्ञाएँ होती हैं। पीत, पद्म लेश्याऐं भी मिथ्यादृष्टि से 7वें गुण. तक ही होती हैं आगे के गुणस्थानों में मात्र एक शुक्ल लेश्या ही होती है। संख्या का व्याख्यान पूर्व गुणस्थान कथित कथन के समान समझना चाहिए उससे इसमें कोई भेद नहीं है। काल एक समय कहने का तात्पर्य है कोई जीव अप्रमत्त संयत हुआ एक समय रहा और मर गया इस प्रकार से जघन्य एक समय प्राप्त हुआ उकृष्ट का कथन सरल है। अन्तर का कथन भी सरल है। अवगाहना जघन्य 3½ हाथ जो भरत, ऐरावत क्षेत्र में ही पायी जाती है इसी प्रकार उत्कृष्ट 525 धनुष की अवगाहना भरत ऐरावत क्षेत्र में ही होती अन्यत्र नहीं शेष कथन सुगम है।

224. पुरुषवेदी अपूर्वकरण गुणस्थान

1.	गुणस्थान	अपूर्वकरण गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 (आहार संज्ञा बिना)
6.	गति	1 मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	1 पुरुषवेद
11.	कषाय	11 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	2 (सामायिक, छेदोपस्थापना)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	भाव से 1 शुक्ल लेश्या, द्रव्य से 6 लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (क्षायिक, औपशमिक)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 (4 ज्ञानोपयोग + 3 दर्शनोपयोग)
21.	ध्यान	चार धर्मध्यान अथवा 1 शुक्ल ध्यान
22.	आस्रव	20 (11 कषाय + 9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	सा. संख्यात –897 (उपशामक–299, क्षपक–598) विशेष–क्षपक 568 उप. 284
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना व एक जीव की अपेक्षा – उपशामक–ज. एक समय, उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक नाना व एक जीव की अपेक्षा – ज.व उ.– अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उपशामक नाना जीवों की अपेक्षा–ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीव की अपेक्षा–ज. अन्तर्मुहूर्त उ. सागरोपम शत पृथक्त्व क्षपक नाना जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. एक वर्ष एक जीव की अपेक्षा ज.व उ.निरन्तर
30.	भाव	सामान्य से – 27, उपशामक के – 26, क्षपक के – 25
31.	अवगाहना	जघन्य–3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष
32.	बन्ध	58 गुणस्थानवत्
33.	उदय	70 (74–4 (सम्यक्त्व, अर्धनाराच, कीलक व सृपाटिका संहनन बिना)
34.	सत्त्व	146 से 138 तक (अपेक्षा लगाकर) क्षपक= 138 प्रकृति

224. पुरिसवेदी अपुव्वयरणगुणट्ठाणं

तेसिं पुरिसवेदी जीवेसु अपुव्वयरणगुणट्ठाणालाव–भण्णमाणे अत्थि एग अपुव्वयरण गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदियपज्जत्त जीवसमासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, आहार सण्णाओ विणा तिण्णि सण्णा, एग मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, एग पुरिस वेदो, एगारस कसाया, चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेसा भावेण एग सुक्क लेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्मज्झाणाणि अहवा एग सुक्कज्झाणाणि, बीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा संखेज्ज सत्तणउदि उत्तर अट्ठ सयं उवसामगेसु णवणउदिउत्तर बे सयं खवगेसु अट्ठणउदिउत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो उवसामगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वास पुधत्तं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण सायरोवम सदपुधत्तं खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण एग वासं एगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण णिरंतरं, सत्ताबीस भावा उवसामगेसु छब्बीस खवगेसु पणबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, अट्ठावण्ण पयडीणं बंधो, सत्तदि पयडीणं उदयो, छादालुत्तर सयं पयडीणं अड़तीसुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु पुरिस वेदीसु अपुव्वयरण गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

पुरुषवेदी अपूर्वकरण गुणस्थान

उन्हीं पुरुषवेदी जीवों में अपूर्वकरण गुणस्थानालाप कहने पर– एक अपूर्वकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, आहार संज्ञा बिना तीन संज्ञाएँ, एक मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, एक पुरुषवेद, ग्यारह कषाय, चार सुज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, तीन दर्शन, द्रव्य से छहों लेश्या भाव से एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्मध्यान अथवा एक शुक्ल ध्यान, बीस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा आठ सौ सन्तानवै उपशामक दो सौ निन्यानवै क्षपक पाँच सौ अन्ठानवै, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल नाना व एक जीवापेक्षा उपशामक–जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त क्षपक–नाना जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर–उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एकजीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट सागरोपम शत पृथक्त्व क्षपक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट एक वर्ष एकजीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट निरंतर, सत्ताईस भाव उपशामकों में छब्बीस क्षपकों में पच्चीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, अट्ठावन प्रकृतियों का बंध, सत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस से एक सौ अड़तीस तक प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार वेद मार्गणा में पुरुष वेदियों का अपूर्वकरण गुणस्थानालाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– संज्ञा का व्याख्यान करते हुए पूर्ववत् तीन संज्ञा कहीं हैं क्योंकि यहाँ भय नामक नो कषाय का सद्भाव होने के कारण भय संज्ञा का सद्भाव है संयम दो पाये जाते हैं क्योंकि परिहार विशुद्धि छटवे सातवें गुणस्थान में ही पाया जाता है, सम्यकत्व भी दो पाये जाते हैं क्योंकि वेदक सम्यक्त्व सातवें गुणस्थान तक ही पाया जाता है। चार धर्म ध्यान अथवा एक शुक्ल ध्यान होता है संख्या का कथन करते समय क्षपक में जो 598 सामान्य संख्या बतलाई है उसमें से 20 स्त्री वेदी 10 नपुंसक वेदी कम करने पर 568 पुरुष वेद क्षपक श्रेणी वाले है तथा उपशम श्रेणी में 299 सामान्य में से 10 स्त्री वेदी 5 नपुंसक वेदी घटाने पर 284 पुरुष वेदी होते है यह कथन हमने ध.पु. 3 की टीका पृ. संख्या 416 व 419 से लिया है अत: विशेष जानने के लिए देखें उक्त पुस्तक। काल नाना व एक जीव का क्षपक श्रेणी में अन्तर्मुहूर्त प्राप्त है जो सुगम है। उपशम श्रेणी वालों का नाना व एक जीव का जघन्य एक समय मरण की अपेक्षा प्राप्त है। क्योंकि उतरते हुए अनिवृत्तिकरण से अपूर्व करण को प्राप्त हुआ और एक समय रहा और मर गया इस प्रकार बहुत सारे जीव अनिवृत्तिकरण से अपूर्वकरण में आये एक समय के बाद मर गये इस प्रकार नाना व एक जीव की अपेक्षा एक समय प्राप्त हुआ शेष कथन सरल है। अन्तर का कथन भी सरल है क्योंकि कई बार उसका व्याख्यान हुआ है और भी आगे जहाँ अवसर होगा करेंगे।

शंका – अपूर्वकरण में जो मरण कहा है वह उतरते हुए कहा है किन्तु चढ़ते हुए क्यों नहीं कहा ?

समाधान– इसका उत्तर हम पहले बतला चुके है देखे स्त्री वेद अपूर्वकरण गुणस्थान का विशेषार्थ।

225. पुरुषवेदी अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

1.	गुणस्थान	अनिवृत्तिकरण गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	2 (भय व आहार संज्ञा बिना)
6.	गति	1 मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	1 पुरुषवेद
11.	कषाय	5 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	2 (सामायिक, छेदोपस्थापना)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	भाव से 1 शुक्ल लेश्या, द्रव्य से 6 लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (क्षायिक, उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 (4 ज्ञानोपयोग + 3 दर्शनोपयोग)
21.	ध्यान	5 (4 धर्मध्यान या 1 शुक्ल (पृथक्त्व वितर्क शुक्ल ध्यान) अथवा 2 (एक धर्म+1 शुक्ल)* (दो मत)
22.	आस्रव	14 (5 कषाय + 9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	संख्यात (897) (उपशामक में 299, क्षपक में 598) अपूर्वकरण गुणस्थानवत्
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	उपशामक नाना व एक जीव की अपेक्षा - एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक-नाना व एक जीव की अपेक्षा - ज. व उ.- अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उपशामक नाना जीवों की अपेक्षा-ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीव अपेक्षा-ज. अन्तर्मुहूर्त उ. सागरोपम शत पृथक्त्व क्षपक नाना जीव की अपेक्षा - ज. एक समय उ. एक वर्ष एक जीव अपेक्षा - निरन्तर
30.	भाव	सामान्य से - 27, उपशामक के - 26, क्षपक के - 25 शेष कथन पूर्ववत्
31.	अवगाहना	जघन्य-3½ हाथ उत्कृष्ट- 525 धनुष
32.	बन्ध	22 गुणस्थानवत्
33.	उदय	64 (70-6 (हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा बिना)
34.	सत्त्व	146 से 106 तक

225. पुरिसवेदी अणियट्टियरणगुणट्ठाणं

तेसिं पुरिसवेदी जीवेसु अणियट्टियरणगुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि–एग अणियट्टियरणगुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदियपज्जत्त जीवसमासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, आहार भयेहि विणा बे सण्णा, एग मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, एग पुरिसवेदो, पंच कसाया, चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्म अहवा एग सुक्क पंच झाणाणि अहवा एग धम्मं झाणाणि, चोद्दस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा संखेज्ज सत्तणउदि उत्तर अट्ठ सयं उवसामगेसु णवणउदि उत्तर बे सयं खवगेसु अट्ठणउदि उत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो उवसामगेसु णाणेग जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणा व एगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण वास पुधत्तं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण सायरोवम सद पुधत्तं खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण एयवासं एग जीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण णिरंतरं, सत्ताबीस भावा उवसामगेसु छब्बीस खवगेसु पणबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणूं, बाबीस पयडीणं बंधो, चउसट्ठि पयडीणं उदओ, छादालुत्तर एयत्तो छ उत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेदी मग्गणासु पुरिस वेदीसु अणियट्ठीयरण गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

पुरुषवेद अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

उन्हीं पुरुषवेदी जीवों में अनिवृत्तिकरण गुणस्थानालाप कहने पर – एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, (आहार, भय बिना) दो संज्ञाएँ, एक मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, एक पुरुष वेद, पाँच कषाय, चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, तीन दर्शन, द्रव्य से छहों लेश्या भाव से एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्म अथवा एक शुक्ल ध्यान पाँच ध्यान अथवा एक धर्म ध्यान, चौदह आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा आठ सौ सत्तानवे उपशामक दो सौ निंन्यानवै क्षपक पाँच सौ अन्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल–उपशामक नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपक नाना व एकजीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर–उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट सागरोपम शत पृथक्त्व क्षपक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट एक वर्ष एक जीवापेक्षा निरंतर, सत्ताईस भाव उपशामकों में छब्बीस क्षपकों में पच्चीस भाव, जघन्य अवगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, बाईस प्रकृतियों का बंध, चौंसठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छियालीस से एक सौ छह तक प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार वेद मार्गणा में पुरुष वेदियों का अनिवृत्तिकरण गुणस्थानालाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ–*आचार्य पूज्यपाद के अनुसार नोवें गुणस्थान में प्रथम शुक्ल ध्यान होता हैं किन्तु आचार्य वीरसेन स्वामी के अनुसार धर्मध्यान होता है अब प्रश्न यह है कि कौनसा धर्मध्यान होता है रूपातीत नामक अन्तिम धर्मध्यान होता है ऐसा हमने अपनी ओर से लिखा है यदि युक्त बैठता है तो स्वीकार करें अन्यथा हमने दोनों आचार्यो का मत रखते हुए एक व चार ध्यान भी कहें है पाठकगण आगम से स्वीकार कर पढ़ें।

भय नो कषाय की उदय व्युच्छित्ति अपूर्वकरण गुणस्थान में हो जाती है, इसलिए भय संज्ञा समाप्त होने से दो संज्ञा रह जाती हैं–शेष कथन सुगम है। संख्या स्पर्शन कालादि का जैसा कथन पिछले गुणस्थान में किया वैसा ही जानना अन्य कोई विशेषता नहीं है। बंध उदय में कोई विशेष बात नहीं है गुणस्थानानुसार है। सत्त्व कथन यद्यपि गुणस्थानोक्त हैं फिर भी जो बात है उसे कहते हैं–क्षयोपशम सम्यक्त्व में यदि आयु का बन्ध किया है और उपशम श्रेणी चढ़ा है तो एक सौ छयालीस प्रकृतियाँ सत्ता में रहती है यदि आयु का बन्ध नहीं किया है तो 145 प्रकृतियों का सत्त्व पाया जाता है क्योंकि यहाँ नरक व तिर्यंच आयु का सत्त्व नहीं होता यदि आयु का बन्ध किया है और अनंतानुबंधी का विसंयोजक है तो 142 आयु का अबंधक है तो 141 दर्शन मोहनीय का क्षय कर दिया है तो 139 आयु बिना 138 इस प्रकार उपशामक के सत्त्व पाया जाता है। क्षपक के अनिवृत्ति करण के प्रारंभ में 138 प्रकृति का सत्त्व फिर क्रमश: घटते हुए अंत में एक सौ छ: प्रकृति का सत्त्व होता है इसमें और भी विशेषता है यदि तीर्थंकर प्रकृति आहारकद्विक का सत्त्व है तो इतना सत्त्व बनेगा अगर नहीं है तो उन प्रकृतियों को और घटाना चाहिए जो नहीं है फिर जो सत्त्व प्राप्त होता है वह सत्त्व होता है शेष कथन सुगम है।

226. अपगतवेदी सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान

1.	गुणस्थान	सूक्ष्म सांपराय गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	1 परिग्रह संज्ञा
6.	गति	मनुष्य गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	अवेद (द्रव्य से पुरुष वेद) भाव से अपगत वेद
11.	कषाय	सूक्ष्म लोभ
12.	ज्ञान	4 सुज्ञान
13.	संयम	सूक्ष्म सांपराय
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (क्षायिक, उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7
21.	ध्यान	पृथक्त्व वितर्क शुक्ल ध्यान अथवा धर्मध्यान
22.	आस्रव	10 (9 कषाय + 1 सूक्ष्म लोभ)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	897 (उपशामक 299, क्षपक - 598)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	उपशामक नाना व एक जीव की अपेक्षा-ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक-नाना व एक जीव जीव की अपेक्षा-ज.व उ.- अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उपशामक नाना जीवों की अपेक्षा-ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीव अपेक्षा -ज. अन्तर्मुहूर्त उ. सागरोपम शत पृथक्त्व क्षपक नाना जीव की अपेक्षा - ज. एक समय उ. एक वर्ष, एक जीव अपेक्षा- ज. व उ. - निरन्तर
30.	भाव	*सा.-22, उपशामक-21, क्षपक-20 (औद.4, मि.12, क्षा.2, औप.2, पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य-3½ हाथ उत्कृष्ट- 525 धनुष
32.	बन्ध	17 गुणस्थानवत्
33.	उदय	60 गुणस्थानवत्
34.	सत्त्व	146, 142, 139, 102
		नोट - शेष आलाप गुणस्थानवत् जानना चाहिए।

* सामान्य

226. अवगदवेदी सुहुमसंपरायगुणट्ठाणं

तेसिं अवगद–जीवेसु सुहुमसाम्परायगुणट्ठाणालाव–भण्णमाणे अत्थि – एग सुहुमसांपरायगुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदियपज्जत्त जीवसमासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, एग परिग्गह सण्णा, एग मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, दव्वेण पुरिसवेदो भावेण अवेदो, एग सुहुम लोहोसामो, चत्तारि णाणाणि, एग सुहुमसांपरायसंजमो, तिण्णि दंसणाणि, एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, एग पिथक्क वितक्क सुक्कज्झाणं, दस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा सत्तणउदिउत्तर अट्ठ सयं, उवसामगेसु णवणउदिउत्तर बे सयं खवगेसु अट्ठणउदिउत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो उवसामगेसु णाणेग जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, खवगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण सायरोवम सद पुधत्तं खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण एयं वासं एगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण णिरंतरं, बाबीस भावा उवसामगेसु इगबीस खवगेसु बीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, सत्तदस पयडीणं बंधो, सट्ठि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं बादालुत्तर सयं ऊणदालुत्तर सयं व बे उत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु अवगद वेदीसु सुहुमसंपराय गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

अपगतवेदी सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान

उन्हीं अपगत वेदी जीवों में सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानालाप कहने पर – एक सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, एक परिग्रह संज्ञा, एक मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, द्रव्य से पुरुष वेद भाव से अवेद, एक सूक्ष्म लोभ कषाय, चार ज्ञान, एक सूक्ष्मसांपराय संयम, तीन दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, एक पृथक्त्व वितर्क शुक्ल ध्यान, दस आस्रव , चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा आठ सौ सन्तानवे उपशामक दो सौ निन्यानवै क्षपक पाँच सौ अन्ठानवै, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल उपशामक नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपक नानाजीवापेक्षा व एकजीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर–उपशामक नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट सागरोपम शत पृथक्त्व क्षपक नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट एक वर्ष एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट निरंतर, बाईस भाव उपशामकों के इक्कीस क्षपकों के बीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, सत्रह प्रकृतियों का बंध, साठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छियालीस एक सौ ब्यालीस एक सौ उनतालीस व एक सौ दो प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार वेद मार्गणा में अपगत वेदी सूक्ष्म सांपराय गुणस्थानालाप समाप्त हुआ।

नोट – शेष आलाप गुणस्थानवत् जानना चाहिए।

विशेषार्थ :– वेद खत्म होने से मैथुन संज्ञा खत्म हो गयी मात्र परिग्रह संज्ञा रह गई है। शेष कथन जैसा पहले कर आये हैं वैसा ही जान लेना जो कुछ अन्तर है उसे समझ लेना चाहिए शेष कथन सुगम है।

227. नपुंसक वेदी सामान्ययालाप

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	1–9	1–9	1, 2, 4*[1]
2.	जीवसमास	14 जीव समास 7 पर्याप्त व 7 अपर्याप्त	7 जीव समास पर्याप्त	7 जीव समास अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति व अपर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति	6,5,4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	3 से 10 तक	10,9,8,7,6,4 प्राण	7,7,6,5,4,3 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	3 (देव गति बिना)	–	–
7.	इन्द्रिय	1–5 इन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रस/स्थावर	–	–
9.	योग	13 (आहारक द्विक बिना)	10	3 (औदा. मि. वैक्रि.मि. कार्मा.)
10.	वेद	नपुंसक वेद	–	–
11.	कषाय	23 कषाय	–	–
12.	ज्ञान	6 ज्ञान (3 ज्ञान + 3 कुज्ञान)	–	5 (कुअवधि बिना)
13.	संयम	4 (अ.,सा.,छे., संयमासंयम)	–	1 असंयम
14.	दर्शन	3 दर्शन	–	3 दर्शन
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	तीन अशुभ
16.	भव्य	दोनों (भव्य व अभव्य)	–	–
17.	सम्यक्त्व	6	–	4 (सम्यग्मिथ्यात्व व उपशम बिना)
18.	संज्ञी	संज्ञी व असंज्ञी दोनों	–	–
19.	आहारक	दोनों	आहारक	अनाहारक व आहारक
20.	उपयोग	9 (6 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)	–	8 (3 दर्शनो.+ 5 ज्ञानोपयोग)
21.	ध्यान	13 (4 आर्त्त+4 रौद्र+4 धर्म+1 शुक्ल)	13	10 (4+4+2*[2] अथवा 9 ध्यान
22.	आस्रव	53 (23 कषाय+5 मि.+13 योग+12 अवि.)	50 (23+5+10+12+)	43 (23+5+3+12)
23.	जाति	80 लाख (देवगति के बिना)		
24.	कुलकोटि	173½ लाख करोड़		
25.	संख्या	अनन्तानंत		
26.	क्षेत्र	सर्वलोक		
27.	स्पर्शन	सर्वलोक		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा–सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा–ज. एक समय उ. अनंतकाल रुप असंख्यात पुद्गल परावर्तन		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा–निरन्तर एक जीव की अपेक्षा–ज. अन्तर्मुहूर्त उ. सागरोपम शत पृथक्त्व		
30.	भाव	42 (औद.18, मिश्र–17, क्षा.2, औ.2, पा.3) अपर्याप्ति– 33 (15+14+3+1)		
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट– 1000 योजन		
32.	बन्ध	120		
33.	उदय	114 (पुरुष, स्त्रीवेद, आहा. द्वि.,देव द्वि. देवायु तीर्थं) इन आठ प्र. बिना		
34.	सत्त्व	148		

*[1] प्रथम नरक में सम्यक्त्व सहित जा सकता है इसलिए नपुसंक वेद अपर्याप्तक में चौथा गुणस्थान कहा है। *[2] मतांतर से 9 ध्यान भी पाये जाते है (4+4+1 धर्मध्यान)

✲ प्रथमोपशम तथा द्वितीयोपशम दोनों सम्यक्त्व नहीं पाये जाते।

227. णवुंसयवेदी सामण्णालावो

अह णवुंसयवेदी जीवाणं सामण्णालाव-भण्णमाणे अत्थि - आदित्ति णव गुणट्ठाणं अपज्जत्तेसु एय बे चउ तिण्णि गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीव समासा, छ पंच चउ पज्जत्ती छ पंच चउ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस णव अट्ठ सत्त-छ-चदु पाणा अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छ पंच चदु तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णा, देवेण विणा तिण्णि गदी, एग वे ति चउ पंचिंइंदियाणि, छक्काया, आहार दुगेहिं विणा तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, एग णवुंसयवेदो, तेबीस कसाया, मणपज्जय व केवलणाणेहि विणा छण्णाणाणि पज्जत्तेसु छ अपज्जत्तेसु विभंगणाणेण विणा पंच णाणाणि, असंजम देससंजम सामाइय छेदोवट्ठावणा चत्तारि संजमा अपज्जत्तेसु एगं असंजमो, केवलदंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, दव्वभावेण छल्लेस्सा अपज्जत्तेसु भाणेण तिण्णि असुह लेस्सा दव्वेण सुक्क काउलेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्वसिद्धिया दोण्णि, छ सम्मत्ता अपज्जत्तेसु मिस्स उवसमेहि विणा मिच्छत्त सासण खइय-खओवसमा चत्तारि सम्मत्ता, सण्णी असण्णी दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, णव अट्ठ उवजोगा पज्जत्तेसु णव अपज्जत्तेसु अट्ठ उवजोगा तेरस झाणाणि चत्तारि अट्ट चत्तारि रूद्द चत्तारि धम्म एग सुक्कज्झाणाणि अपज्जत्तेसु णव झाणाणि,* तिवण्ण आसवा पज्जत्तेसु पंचास अपज्जत्तेसु तिदाल आसवा, असीदि लक्ख जादी, अद्धतिसत्तदि उत्तर सयं लक्ख कोड़ि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अणंताणंत, खेत्तावेक्खा सव्वलोगो, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा सव्वलोगो वा कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एक जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अणंतकालसरूव असंखेज्ज पोग्गलपरायट्टं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण सायरोवम सद पुधत्तं, बादाल भावा अपज्जत्तेसु तेतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, बीसुत्तर सयं पयडीणं बंधो अपज्जत्तेसु अट्ठुत्तर सयं पयडीणं बंधो, चउदसुत्तर सयं पयडीणं उदओ, अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति

इदि वेद मग्गणासु णवुंसय वेदीसु सामण्णालाव सम्मत्ता।

नपुंसक वेदी सामान्यालाप

अब नपुंसक वेदी जीवों के सामान्यालाप कहने पर - आदि के नौ गुणस्थान अपर्याप्त में एक-दो-चार गुणस्थान, चौदहों जीव समास, छह-पाँच-चार पर्याप्तियाँ-छह-पाँच-चार अपर्याप्तियाँ, पर्याप्त में दस-नौ-आठ-सात-छह-चार प्राण अपर्याप्तक में सात-सात-छह-पाँच-चार-तीन प्राण, चारों संज्ञाएँ, देव बिना तीन गतियाँ, एक-दो-तीन-चार-पाँच इन्द्रिय, छहों काय, आहारक द्विक बिना तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, एक नपुंसक वेद, तेईस कषाय, मन:पर्यय व केवलज्ञान बिना छह ज्ञान पर्याप्त में छह ज्ञान अपर्याप्त में विभंगावधि बिना पाँच ज्ञान (मति श्रुत अवधि कुमति कुश्रुत), असंयम-देशसंयम-सामायिक-छेदोपस्थापना चार संयम अपर्याप्त में एक असंयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, द्रव्य व भाव से छहों लेश्या अपर्याप्तकों में द्रव्य से शुक्ल कापोत दो लेश्या भाव से तीन अशुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक, छहों सम्यक्त्व अपर्याप्त में मिथ्यात्व-सासादन-क्षायिक-क्षयोपशम चार सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी दोनों, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्त में आहारक अपर्याप्त में आहारक-अनाहारक दोनों, आठ नौ उपयोग पर्याप्त नौ उपयोग अपर्याप्त में आठ उपयोग, तेरह ध्यान (चार आर्त्त, चार रौद्र चार धर्म एक शुक्ल ध्यान) अपर्याप्त में नौ ध्यान, तिरेपन आस्रव पर्याप्त में पचास व अपर्याप्त में तेंतालीस आस्रव, अस्सी लाख जाति, एक सौ साढ़े तिहत्तर लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा अनंतानंत, क्षेत्रापेक्षा सर्वलोक, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग व सर्वलोक, काल नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय/उत्कृष्ट अनंतकालस्वरूप असंख्यात पुद्गल परावर्तन, अंतर नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट सागरोपम शत पृथक्त्व, ब्यालीस भाव अपर्याप्तक में तेतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ बीस प्रकृतियों व अप. एक सौआठ प्रकृतियों का बंध, एक सौ चौदह का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार वेद मार्गणा में नपुंसक वेदियों में सामान्यालाप समाप्त हुआ।

---

* देव गति में नपुंसक वेदी जीव नहीं होते।

* अनंतानंत उत्सर्पिणी अवसर्पिणी से अपहृत नहीं होते हैं।

* नपुंसक वेद अपर्याप्तक अवस्था में क्षयोपशम सम्यक्त्व प्रथम नरक जाते समय कृत-कृत्य वेदक की अपेक्षा होता है। अन्य अवसर पर नहीं। पुरुष वेदियों में वेदक सम्यक्त्व अपर्याप्तक अवस्था में तीनों गतियों में पाया जाता है, दो में सामान्य से तिर्यंच गति में कृत कृत्य वेदक की अपेक्षा पाया जाता है।

* ध्यान कहते समय दो मतों का उल्लेख किया है एक मत से चारों धर्मध्यान दूसरे मत से एक शुक्ल ध्यान जानना चाहिए।

228. नपुंसक वेदी मिथ्यात्व गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	मिथ्यात्व	–	–
2.	जीवसमास	14 जीव समास 7 पर्याप्त व 7 अपर्याप्त	7 जीव समास पर्याप्त	7 जीव समास अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति व अपर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति	6,5,4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10,9,8,7,6,5,4,3	10,9,8,7,6,4 प्राण	7,7,6,5,4,3 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	3 गति (देव गति बिना)	–	–
7.	इन्द्रिय	1–5	–	–
8.	काय	त्रस/स्थावर	–	–
9.	योग	13 (आहारकद्विक बिना)	10 (4 मन, 4 वचन, औ.वै.)	3 (औ.मि., वै.मि., कार्मण)
10.	वेद	1 नपुंसक वेद	–	–
11.	कषाय	23 कषाय (स्त्री, पुरुष वेद बिना)	–	–
12.	ज्ञान	3 (कुमति, कुश्रुत, कुअवधि)	–	2 (कुमति, कुश्रुत)
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 (चक्षु व अचक्षु दर्शन)	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	द्र. से का.शु. भा.3 अशुभ
16.	भव्य	दोनों	–	–
17.	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी व असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	दोनों (आहारक, अनाहारक)	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	5 (3 ज्ञानो.+ 2 दर्शनो.)	–	4 (2 ज्ञानो.+ 2 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8 ध्यान	–	–
22.	आस्रव	53 (23 कषाय+5 मि.+12 अ.+13 योग)	50 (23+10 योग+5+12अ.)	43 (23+3 योग+5+12 अ.)
23.	जाति	80 लाख		
24.	कुलकोटि	173½ लाख करोड़		
25.	संख्या	अनन्तानंत (पूर्ववत्)		
26.	क्षेत्र	सर्वलोक		
27.	स्पर्शन	सर्वलोक		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. अर्द्धपुद्गल परावर्तन		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – निरन्तर एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम 33 सागर		
30.	भाव	31 भाव (औद.18, मिश्र–10, पा.3) अपर्याप्त– 27 भाव (कुअवधि तीन शुभ लेश्या बिना)		
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट– 1000 योजन		
32.	बन्ध	117 (तीर्थ. व आहा.द्वि. कम करने पर) अपर्याप्त में – 107 (तीर्थंकर बिना)		
33.	उदय	112 (114 में से स.मि. व सम्यक्त्व प्र. घटाने पर)		
34.	सत्त्व	148		

228. णवुंसयवेदी मिच्छाइट्ठीगुणट्ठाणं

तेसिं णवुंसयवेदी मिच्छाइट्ठीजीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग मिच्छत्त गुणट्ठाणं, सत्त पज्जत्त सत्त अपज्जत्त चोद्दस जीवसमासा, छ पंच चउ पज्जत्ती छ पंच चउ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस णव अट्ठ सत्त छ चउ पाणा अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छ पंच चउ ति पाणा, चत्तारि सण्णा, देव गदि विणा तिण्णि गदी, एग वे ति चउ पंचिइंदियाणि, छक्काया, आहार दुगेहि विणा तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अप्पज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, एगं णवुंसय वेदो, तेबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि अप्पज्जत्तेसु बे अण्णाणाणि, एग असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, दव्वभावेण छल्लेस्सा अपज्जत्तेसु दव्वेण काउसुक्क भावेण तिण्णि असुह लेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्व सिद्धिया दोण्णि, एग मिच्छत्त सम्मत्तं, सण्णी असण्णी दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, पंच उवजोगा पज्जत्तेसु पंच अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, अट्ठ झाणाणि, तिवण्ण आसवा पज्जत्तेसु पंचास अपज्जत्तेसु तिदाल आसवा, असीदि लक्ख जादी, अद्धतिसत्तदि सयं लक्ख कोडी कुलकोडीणं, संखावेक्खा अणंताणंत, खेत्तावेक्खा सव्वलोय, फासावेक्खा सव्वलोय, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरायट्टं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण तेतीस सागरोवमाणि, इगतीस भावा अपज्जत्तेसु तीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सत्तदसुत्तर सयं पयडीणं बंधो अपज्जत्तेसु सत्तुत्तर सयं पयडीणं बंधो, बारसुत्तर सयं पयडीणं उदओ, अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु णवुंसय वेदीसु मिच्छत्त गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

नपुंसक वेदी मिथ्यादृष्टि गुणस्थान

उन्हीं नपुंसक वेदी मिथ्यादृष्टि जीवों के आलाप कहने पर – एक मिथ्यात्व गुणस्थान, सात पर्याप्तक सात अपर्याप्तक चौदहों जीव समास, छह पाँच चार पर्याप्तियाँ छह पाँच चार अपर्याप्तियाँ, पर्याप्त में दस–नौ–आठ–सात–छह–चार प्राण अपर्याप्त में सात–सात–छह–पाँच–चार–तीन प्राण, चारों संज्ञाएँ, देव बिना तीन गतियाँ, एक–दो–तीन–चार–पाँचों इंद्रिय, छहों काय, आहारक द्विक बिना तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, एक नपुंसक वेद, तेईस कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्त में दो अज्ञान, एक असंयम, चक्षु–अचक्षु दो दर्शन, द्रव्य भाव से छहों लेश्या अपर्याप्तक में द्रव्य से कापोत शुक्ल भाव से तीन अशुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक दोनों, एक मिथ्यात्व सम्यक्त्व, संज्ञी–असंज्ञी दोनों, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्त में आहारक अपर्याप्त में आहारक अनाहारक दोनों, पर्याप्त में पाँच उपयोग अपर्याप्त में चार उपयोग, आठ ध्यान, तिरेपन आस्रव पर्याप्त में पचास आस्रव अर्पाप्त में तेंतालीस आस्रव, अस्सी लाख जाति, एक सौ साढ़े तिहत्तर लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा अनंतानंत, क्षेत्रापेक्षा सर्वलोक, स्पर्शन सर्वलोक, काल नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अर्द्ध पुद्गल परावर्तन,※ अंतर नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम तेतीस सागर, इकतीस भाव अपर्याप्त में तीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ सत्तरह प्रकृतियों का बंध अपर्याप्त में एक सौ सात का बंध, एक सौ बारह प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार नपुंसक वेदियों में मिथ्यादृष्टि गुणस्थानालाप समाप्त हुआ।

※ यहाँ काल तीन प्रकार का है सादि सान्त, अनादि सान्त, अनादि अनंत यहाँ सादि सान्त का प्रकरण है।

विशेषार्थ :– पूर्व में हम सामान्य कथन नहीं कर पाये थे पहले उसे कहते हैं। सम्यक्त्व का कथन करते हुए जहाँ क्षायिक सम्यक्त्व कहा है वह मात्र प्रथम नरक की अपेक्षा कहा है अन्य कारणों में कोई भी ऐसा कारण नहीं है, जिसमें क्षायिक सम्यग्दृष्टि अपर्या. नपुंसक वेदी हो, इसी प्रकार वेदक सम्यग्दृष्टि भी मात्र कृतकृत्य वेदक की अपेक्षा प्रथम पृथ्वी में ही पाया जाता है शेष कोई भी अवसर पर नपुंसक वेदी अपर्याप्तकों में वेदक सम्यक्त्व नहीं पाया जाता है सामान्य से नपुंसक वेदियों में काल एक समय कहा है वह उपशम श्रेणी की अपेक्षा से कोई जीव नपुंसक वेद से उपशम श्रेणी पर चढ़ा अवेदी हो पुन: लोटकर नपुंसक वेदी हो एक समय रहा और मरकर पुरुष वेदी होगया, इस प्रकार एक समय जघन्य काल प्राप्त हुआ उत्कृष्ट काल असंख्यात पुद्गल परावर्तन स्वरुप अनंत काल पाया जाता है जो सुगम है। इसी प्रकार अन्तर का कथन है यानि जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त दो प्रकार से पाया जाता है कोई जीव नपुंसक वेद से उपशम श्रेणी चढ़ा अवेदी हो अन्तर्मुहूर्त अवेदी रह कर गिरा पुन: नपुंसक वेदी हो गया।

दूसरे प्रकार से कोई मिथ्यादृष्टि नपुंसक वेद के साथ मरकर अन्य वेद के साथ पर्याप्तकों में सर्वजघन्य अन्तर्मुहूर्त की आयु लेकर उत्पन्न हुआ आयु पूर्ण कर मरण करके नपुंसक वेदियों में उत्पन्न हुआ इस प्रकार जघन्य अन्तर प्राप्त हुआ। उत्कृष्ट अन्तर शत पृथक्त्व सागर है क्योंकि पुरुष वेदियों का उत्कृष्ट काल शतपृथक्त्व सागर है वही नपुंसक वेदियों का अन्तर है।

शंका – यहाँ पर्याप्तकों के स्थान पर लब्ध्यपर्याप्तकों में उत्पन्न क्यों नहीं कराया क्योंकि और भी कम अन्तर काल प्राप्त हो सकता था ?

समाधान – नहीं क्योंकि लब्ध्यपर्याप्तकों में केवल नपुंसक वेद ही पाया जाता है अन्य वेद नहीं पाया जाता बिना अन्य वेद में जाये अन्तर प्राप्त नहीं होता।

आगे प्रथम गुणस्थान का जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट अर्धपुद्गल परावर्तन इस प्रकार है कोई जीव नपुंसक वेदियों में उत्पन्न हो अन्तर्मुहूर्त में सम्यग्दृष्टि हो गया तो जघन्य काल प्राप्त हुआ उत्कृष्ट काल सुगम है। अन्तर जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त उत्पन्न होने के बाद सम्यक्त्व को प्राप्त हुआ अन्तर्मुहूर्त बाद पुन: मिथ्यादृष्टि हो गया यह जघन्य अन्तर प्राप्त हुआ उत्कृष्ट तेतीस सागर की आयु वालों में उत्पन्न होने के बाद अन्तर्मुहूर्त बाद सम्यक्त्व उत्पन्न हुआ सारा जीवन सम्यक्त्वी रहा और अन्तर्मुहूर्त शेष रहने पर मिथ्यात्व को प्राप्त हुआ इस प्रकार अन्तर प्राप्त हुआ शेष कथन सुगम है।

229. नपुंसक वेदी सासादन गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	सासादन	–	–
2.	जीवसमास	7 जीव (1 पर्याप्त+6 अपर्याप्त)	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	6 (1 स्थावर+2,3,4,5 (संज्ञी व असंज्ञी
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6,5,4 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6, 5,4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7, 6, 5, 4, 3 प्राण	10 प्राण	7, 6,5,4,3 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	3 गति (देव गति बिना)	–	2 (नरकगति बिना)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय (1–5)	पंचेन्द्रिय	1–5
8.	काय	स्थावर त्रसकाय	त्रसकाय	स्थावर त्रसकाय
9.	योग	13 (आहारकद्विक बिना)	10	3
10.	वेद	नपुंसक वेद	–	–
11.	कषाय	23 कषाय	–	–
12.	ज्ञान	3 (कुमति, कुश्रुत, कुअवधि)	–	2 (कुमति, कुश्रुत)
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	3 अशुभ
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	सासादन	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी	संज्ञी	दोनों
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक दोनों	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	5 (3 ज्ञानो.+ 2 दर्शनो.)	–	4 (2 ज्ञानो.+ 2 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8 ध्यान	–	–
22.	आस्रव	48 (23 कषाय+13 योग+12 अविरति)	45 (23+10+12)	38 (23+3+12)
23.	जाति	52 लाख	22 लाख	48 लाख (4 नरक गति बिना)
24.	कुलकोटि	163½ लाख करोड़	82½ लाख करोड़	138½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व मा. कुछ कम 12/14 राजू व उप. 11/14 राजू अथवा उप. 12/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा–ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा–ज. एक समय उ. 6 आवली		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – ज. एक समय एक जीव की अपेक्षा – ज. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग	उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन	
30.	भाव	29 (औद. 17, मि. 10, पा.2)	अप. 24 (औद. 13+क्षयो. 9+पा. 2)	
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग	उत्कृष्ट– संख्यात धनुष	
32.	बन्ध	101 (प्र.गु. की 16 व्युच्छिन्न प्रकृति+पूर्वोक्त 3 कुल 19 बिना) अपर्याप्त– 94 (व्यु. 13+तीर्थंकर बिना)		
33.	उदय	106 (मिथ्यात्व, आतप, सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त, सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, नरकगत्यानुपूर्वी इन 8 बिना		
34.	सत्त्व	145 (आहारकद्विक व तीर्थंकर के बिना)		

229. णवुंसयवेदी सासण-गुणट्ठाणं

तेसिं णवुंसयवेदी जीवेसु सासणगुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि-एग सासणगुणट्ठाणं, एयत्तो सण्णी पंचिंदिय पज्जतापज्जत्त सत्तजीव समासा, छ पज्जत्ती छ पंच चउ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस पाणा अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छ पंच चउ ति पाणा, चत्तारि सण्णा, देव गदि विणा तिण्णि गदी अपज्जत्तेसु णिरयं विणा बे गदी, पज्जत्तेसु पंचिंदियाणि अपज्जत्तेसु एयत्तो पंचेन्दियाणि, पज्जत्तेसु तसकाओ अपज्जत्तेसु, तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, एग णवुंसयवेदो, तेबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि अपज्जत्तेसु बे अण्णाणाणि, एगं असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, छल्लेस्सा अपज्जत्तेसु तिण्णि असुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, सासण सम्मत्तं, सण्णी असण्णी दोण्णि पज्जत्तेसु सण्णी अपज्जत्तेसु सण्णी असण्णी दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, अट्ठज्झाणाणि, अडदाल आसवा, पज्जत्तेसु पणदाल अपज्जत्तेसु अड़तीस आसवा, वावण्ण लक्ख जादी पज्जत्तेसु बाबीस लक्ख अपज्जत्तेसु चत्तारि णिरय गदिं विणा लक्ख जादी, अद्धति सट्ठी उत्तर सयं लक्ख कोडी कुलकोडीणं पज्जत्तेसु अद्धुत्तर बे असीदि लक्ख कोडी अपज्जत्तेसु अद्धअडतीसुत्तर सयं लक्ख कोडी कुल कोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व मारणंतिओ बारस चोद्दस भागा वा देसूणा व उववादवेक्खा एकादस चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण छावली, अंतरं-णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गलपरायट्टं ऊणतीस भावा अपज्जत्तेसु चउबीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण संखेज्ज धणू, पज्जत्तेसु एगुत्तर सयं पयडीणं बंधो अपज्जत्तेसु चउणउदि पयडीणं बंधो, छउत्तर सयं पयडीणं उदओ, पणदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदी वेद मग्गणासु णवुंसय वेदीसु सासण गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

नपुंसकवेदी सासादन गुणस्थान

उन्हीं नपुंसक वेदी जीवों में सासादन गुणस्थानालाप कहने पर - एक सासादन गुणस्थान, एकेन्द्रिय से लेकर संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त सात जीव समास, छह पर्याप्ति छह पाँच चार अपर्याप्ति, पर्याप्तक में दस प्राण अपर्याप्तक में सात छह पाँच चार तीन प्राण, चारों संज्ञाएँ देव गति बिना तीन गतियाँ अपर्याप्त में देव नरक गति बिना दो गतियाँ, पर्याप्तक में पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक में एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय , पर्याप्तक में त्रसकाय अपर्याप्तक में त्रस स्थावर काय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, एक नपुंसक वेद, तेईस कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्त में दो अज्ञान, एक असंयम, चक्षु अचक्षु दो दर्शन, छह लेश्या अपर्याप्तकों में तीन अशुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, सासादन सम्यक्त्व, संज्ञी-असंज्ञी दोनों पर्याप्तक में संज्ञी अपर्याप्तक में दोनों, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्त में आहारक अपर्याप्त में दोनों, पाँच उपयोग अपर्याप्त में चार उपयोग, आठ ध्यान, अड़तालीस आस्रव पर्याप्त में पैंतालीस अपर्याप्त में अड़तीस आस्रव, बावन लाख जाति अपर्याप्तकों में अड़तालीस लाख पर्याप्तकों में बाईस लाख जाति, एक सौ साढे तिरेसठ लाख करोड़ कुलकोटि पर्याप्त में साढे बयासी लाख करोड़ व अपर्याप्त में एक सौ साढे अड़तीस लाख करोड़ कुलकोटि, संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग व मारणान्तिक कुछ कम 12/14 राजू व उपपाद 11/14 राजू, काल नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह आवली, अंतर नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य पल्योपम का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्ध पुद्गल परावर्तन, उनतीस भाव अपर्याप्त में चौबीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट संख्यात धनुष, पर्याप्ति में एक सौ एक अपर्याप्त में चौरानवे प्रकृतियों का बंध, एक सौ छह प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ पैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार नपुंसक वेदियों में सासादन गुणस्थानालाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- यद्यपि धवलाकार के अनुसार द्वितीय गुणस्थान मे मात्र संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक अपर्याप्तक ही पाये जाते हैं, किन्तु कषायपाहुड के अनुसार एकेन्द्रिय व विकलेन्द्रिय अपर्याप्त अवस्था में सासादन गुणस्थानवर्ती पाये जा सकते हैं किंतु पर्याप्त अवस्था में संज्ञी पंचेन्द्रिय ही होते हैं इस प्रकार सात जीव समास बन जाते हैं। स्पर्शन कहते समय स्वस्थानादि लोक का असंख्यातवां भाग किंतु मारणांतिक समुद्घात में 12/14 राजू बन जाता है क्योंकि किसी जीव को एकेन्द्रियों में सिद्धशिला के ऊपर उत्पन्न हो तो उसका मारणांतिक समुद्घात के समय कुछ कम 7 राजू स्पर्श बन जाता है इसी प्रकार कोई नारकी समुद्घात करता है तो कुछ कम 5 राजू बनता है इस प्रकार (5+7=12) कुछ कम 12 राजू बन जाता है। उपपाद पद से कुछ कम ग्यारह राजू बनता है क्योंकि ऊपर स्वर्ग से कोई नपुंसक वेदी में जन्म लेता है तो उसका कुछ कम छह भाग बन जाता है कोई नारकी नपुंसक तिर्यंचों में जन्म लेता है तो कुछ कम पाँच राजू बन जाता है इस प्रकार 6+5=11 राजू बन गया किन्तु द्वितीय सिद्धांत कषाय पाहुड के मत से एकेन्द्रियों में भी उत्पन्न हो सकता है सिद्धशिला पर उत्पन्न होने से कुछ कम बारह राजू भी बन जाता है। शेष कथन सुगम है संख्या का कथन आगे के गुणस्थान में करेंगे वहाँ से जानना चाहिए।

230. नपुंसक वेदी मिश्र गुणस्थान

1.	गुणस्थान	सम्यग्मिथ्यात्व
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	3 गति (देवगति बिना)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	10 योग
10.	वेद	नपुंसक वेद
11.	कषाय	19 कषाय (4 अनंतानुबंधी स्त्री व पुरुष वेद बिना)
12.	ज्ञान	3 मिश्रज्ञान
13.	संयम	असंयम
14.	दर्शन	2 दर्शन
15.	लेश्या	6 लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	सम्यग्मिथ्यात्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 उप. (3 ज्ञानो.+ 2 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8 ध्यान
22.	आस्रव	41 (19 कषाय+10 योग+12 अविरति)
23.	जाति	22 लाख
24.	कुलकोटि	82½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा – ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा–ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा–ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन
30.	भाव	29 (औद. 17, मि. 10, पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट– 1000 योजन
32.	बन्ध	74 (प्र.गु. की 16 व दुसरे गुण. की 25 व्यु. प्रकृति+आहारकद्विक, तीर्थंकर, मनुष्यायु, देवायु कुल 46 बिना)
33.	उदय	96 (अनन्तानुबंधी की 4, एकेन्द्रिय, स्थावर, विकलत्रय, मनुष्य व तिर्यंच गत्या.+पूर्वोक्त 8 में से सम्यग्मिथ्यात्व बिना 7 कुल 11+7=18 बिना)
34.	सत्त्व	147 (तीर्थंकर बिना)

230. णवुंसयवेदी मिस्सगुणट्ठाणं

तेसिं णवुंसयवेदी जीवेसु सम्मामिच्छत्तगुणट्ठाणालाव–भण्णमाणे अत्थि, एग सम्मामिच्छत्तगुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदियपज्जत्त जीवसमासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, देव गदी विणा तिण्णि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, दस जोगा, एग णवुंसयवेदो, उणबीस कसाया, तिण्णि मिस्स णाणाणि, एग असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, छल्लेसा, भव्व सिद्धिया, मिस्स–सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, अट्ठज्झाणाणि, इगदाल आसवा, बाबीस लक्ख जादी, अद्धुत्तर बे असीदि लक्ख कोडी कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अद्ध पोग्गल परायट्टं, ऊणतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, चउसत्तदि पयडीणं बंधो, छण्णउदि पयडीणं उदओ, तित्थयरेण विणा सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु णवुंसय वेदीसु मिस्स गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

नपुंसक वेदी सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान

उन्हीं नपुंसक वेदी जीवों में सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थानालाप कहने पर – एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, देव बिना तीन गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, दस योग, एक नपुंसक वेद, उन्नीस कषाय, तीन मिश्र ज्ञान, एक असंयम, चक्षु अचक्षु दो दर्शन, छह लेश्या, भव्य सिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, आठ ध्यान, इकतालीस आस्रव, बाईस लाख जाति, साढ़े बयासी लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल नानाजीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर–नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट अर्द्ध पुद्गल परावर्तन, उनतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, चौहत्तर प्रकृतियों का बंध, छ्यानवै प्रकृतियों का उदय, तीर्थंकर बिना एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार वेद मार्गणा में नपुंसक वेदियों का मिश्र गुणस्थानालाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– संख्या का कथन करते हैं यद्यपि सामान्य से संख्या पल्योपम का असंख्यात वां भाग है उसका अवहार काल कहते हैं स्त्रीवेदी असंयतों के अवहार काल (भागहार) से आवली के असंख्यातवे भाग को गुणित करने पर नपुंसक वेदी असंयतों का अवहार काल होता है असंयतों के अवहार काल को आवली के असंख्यातवे भाग को गुणित करने पर सम्यग्मिथ्यादृष्टियों का अवहार काल होता है उसे संख्यात से गुणित करने पर सासादन सम्यग्दृष्टियों का अवहार काल होता है उसे आवली के असंख्यातवे भाग से गुणित करने पर संयतासंयतों का अवहार काल होता है।

शंका – अवहार काल किसे कहते हैं ?

समाधान– भागहार को अवहार काल कहते हैं काल से तात्पर्य समय यानि चारों गुणस्थानवर्ती जीवों की कुल संख्या पल्योपम का असंख्यात वां भाग है तात्पर्य एक तरफ अन्तर्मुहुर्त के समयों को स्थापित कर लो दूसरी तरफ उन समयों के बराबर पल्योपम के खण्ड करो, एक–एक समय में एक–एक खण्ड निकालते जाओ जितने समय में खण्ड समाप्त हो जाए वही उसका भागहार है उसमें एक भाग प्रमाण उक्त गुणस्थानों वाले जीव है। उसी अवहार (भागहार) में आवली के असंख्यातवें भाग से क्रमश: गुणित करने पर विवक्षित गुणस्थान के जीवों का अवहार काल प्राप्त होता है। शेष कथन सुगम है। काल का कथन सुगम है, अन्तर का कथन भी सुगम है क्योंकि कई बार व्याख्यान हो चुका है आगे भी करेंगे वहाँ से समझ लेना चाहिए।

231. नपुंसक वेदी असंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	असंयत गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त, अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	3 गति	–	एक नरक गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	12 (आहारकद्विक, औदा. मिश्र बिना)	10	2 योग (वैक्रियक मिश्र,कार्मण)
10.	वेद	1 नपुंसक वेद	–	–
11.	कषाय	19 कषाय (4 अनंतानुबंधी स्त्री व पुरुष वेद बिना)	–	–
12.	ज्ञान	3 ज्ञान	–	–
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	3 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	एक कापोत लेश्या
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा.क्षयो.उप.)	–	2 (औपशमिक बिना)
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	दोनों	आहारक	अनाहारक/आहारक
20.	उपयोग	6	6	6
21.	ध्यान	10 (आर्त्त, 4 रौद्र, 2 धर्मध्यान)	–	–
22.	आस्रव	43 (19+12+12)	41 (19+10+12)	33 (19+2+12)
23.	जाति	22 लाख	–	4 लाख
24.	कुलकोटि	82½ लाख करोड़	–	25 लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 6/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम 33 सागर		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – निरन्तर एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन		
30.	भाव	33 (औ. 17, क्षायो. 12, पा.2, औप.1, क्षा.1) अपर्याप्तक – 25 (औद. 10, क्षयो. 12, पा.2, क्षा.1)		
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट– 1000 योजन		
32.	बन्ध	77 (पूर्वोक्त 74 प्रकृतियों में तीर्थंकर, देवायु, मनुष्यायु जोड़ने पर) अपर्या.–71 (प्र.गु. की 16 व्यु. में से नरकद्विक, नरकायु बिना 13+दूसरे गुण. की 25 व्यु. में से तिर्यंचायु बिना 24 कुल 37 बिना)		
33.	उदय	97 (पूर्वोक्त 96 प्रकृतियों में से सम्यग्मिथ्यात्व घटाकर सम्यक्त्व व नरक गत्या. जोड़ने पर)		
34.	सत्त्व	148		

231. णवुंसयवेदी असंजद-गुणट्ठाणं

तेसिं णवुंसयवेदी जीवेसु असंजदगुणट्ठाणालाव-भण्णमाणे अत्थि - एग-अविरद सम्मत्तगुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदियपज्जत्तापज्जत्त बे जीवसमासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, दस सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, तिण्णि गदी अपज्जत्तेसु एयं णिरय गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, बारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु ओरालिय मिस्सं विणा बे जोगा, एग णवुंसयवेदो, उणबीस कसाया, तिण्णि णाणाणि, एग असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, छल्लेस्सा अपज्जत्तेसु एग काउलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसमा तिण्णि सम्मत्ता पज्जत्तेसु तिण्णि सम्मत्ता अपज्जत्तेसु उवसमेण विणा दोण्णि सम्मत्ता[*1],सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, छ उवजोगा, णव/दस झाणाणि, तिदाल आसवा पज्जत्तेसु इगदाल अपज्जत्तेसु तेतीस आसवा, बाबीस लक्ख जादी अपज्जत्तेसु चत्तारि लक्ख जादी, अद्धुत्तर बेअसीदिं लक्ख कोडि कुलकोडीणं अपज्जत्तेसु पणबीस लक्ख कोडि कुलकोडीण, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व छच्चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण तेतीस सायरोवमाणि, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गलपरायट्टं, तेतीस भावा अपज्जत्तेसु पणवीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सत्तसत्तदि पयडीणं बंधो, सत्तणउदि पयडीणं उदओ, अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु णवुंसयवेदीसु असंजद गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

नपुसंक वेदी असंयत गुणस्थान

उन्हीं नपुंसक वेदी जीवों में असंयत गुणस्थानालाप कहने पर - एक अविरत सम्यक्त्व गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, दस-सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, तीन गति अपर्याप्तक में एक नरक गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, बारह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में औदारिक मिश्र बिना दो योग, एक नपुंसक वेद, उन्नीस कषाय, तीन ज्ञान, एक असंयम, तीन दर्शन, छहों लेश्या अपर्याप्तक में एक कापोत लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम-क्षायिक-क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व अपर्याप्त में उपशम बिना दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्त में आहारक अपर्याप्त में आहारक, अनाहारक दोनों, छह उपयोग, नौ या दस ध्यान, तेंतालीस आस्रव, पर्याप्त में इकतालीस अपर्याप्त में तेतीस आस्रव, बाईस लाख जाति अपर्याप्तक में चार लाख जाति, साढ़े बयासी लाख करोड़ कुल कोटि अपर्याप्तक में पच्चीस लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 6/14 राजू, काल नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम तेतीस सागर, अंतर नानाजीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्ध पुद्गल परावर्तन, तेतीस भाव अपर्याप्तक में पच्चीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, सतत्तर प्रकृतियों का बंध अपर्याप्त में इकहत्तर प्रकृतियों का बंध, सन्तानवै प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार वेद मार्गणा में नपुंसक वेदियों का असंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

[*1] यहाँ नपुंसक वेद अपर्याप्तक अवस्था में क्षयोपशम सम्यक्त्व कृतकृत्य वेदक की अपेक्षा कहा है।

विशेषार्थ :- संख्या का विचार करते हैं तो संख्या सामान्य से तो पल्य के असंख्यात वे भाग है विशेषता से स्त्री वेदी असंयतों के अवहार काल को आवली के असंख्यात वे भाग से गुणा करने पर नपुंसक वेदी असंयतों का अवहार काल होता है उसका भाग पल्योपम में देने से नपुंसक वेदी असंयतों की संख्या प्राप्त होती है। अपर्याप्त अवस्था केवल प्रथम पृथ्वी में ही पायी जाती है अन्यत्र नहीं। स्पर्शन का कथन इस प्रकार है विहार वेदना विक्रिया उपपाद आदि सभी पदों की अपेक्षा लोक का असंख्यात वा भाग है केवल मारणांतिक समुद्घात कुछ कम 6/14 बनता है क्योंकि कोई नपुंसक वेदी असंयमी सोलहवें स्वर्ग में मरण से पहले मारणांतिक समुद्घात कर सकता है। शेष कथन सुगम है। काल में थोडी विशेषता है उसे कहते हैं, नाना जीवों की अपेक्षा सुगम है एक जीव की अपेक्षा जघन्य भी सुगम है उत्कृष्ट कुछ कम तेतीस सागर इस प्रकार है कोई सादि अथवा अनादि मिथ्यादृष्टि सातवी पृथ्वी में उत्पन्न हुआ पर्याप्त हो विशुद्धि को पूर्ण कर सम्यक्त्वी हो गया सारा जीवन सम्यकत्व के साथ रहा अन्तर्मुहूर्त शेष रह जाने पर मिथ्यादृष्टि हो गया इस प्रकार कुछ कम 33 सागर उत्कृष्ट काल प्राप्त हुआ शेष कथन अन्तर आदि सरल है क्योंकि पहले कई बार व्याख्यान हो चुका है आगे भी करेंगे।

शंका - सम्यक्त्व के साथ सातवीं पृथ्वी से क्यों नहीं निकाला ?

समाधान - नहीं सातवीं पृथ्वी में मिथ्यात्व के साथ ही जाता हैं और मिथ्यात्व के साथ ही आता है।

232. नपुसंक वेदी संयमासंयत गुणस्थान

1.	गुणस्थान	संयतासंयत
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	2 (मनुष्य, तिर्यञ्च गति)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	1 नपुंसक वेद
11.	कषाय	15 कषाय (4 अनंतानुबंधी, 4 अप्रत्या., स्त्री व पुरुष वेद बिना)
12.	ज्ञान	3 ज्ञान
13.	संयम	संयमासंयम
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	3 शुभ लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षायिक, क्षयोपशम, उपशम) (तिर्यंच गति में क्षायिक के बिना)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	6 उपयोग
21.	ध्यान	11 ध्यान (4 आर्त्त+4 रौद्र+3 धर्म.)
22.	आस्रव	35 (15 कषाय+9 योग+11 अविरति)
23.	जाति	18 लाख
24.	कुलकोटि	57½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग देशोन 6/14 राजू
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम एक पूर्व कोटि
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – निरन्तर एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन
30.	भाव	29 (औद. 12, मि. 13, औप. 1, क्षा.1, पा.2)
31.	अवगाहना	पूर्ववत् ज. घनांगुल का संख्यातवां भाग उ. 1000 योजन
32.	बन्ध	67 (अप्रत्याख्यान की 4, वज्रर्षभनाराच संहनन, औदा.द्विक, मनुष्यद्विक, मनुष्यायु+पूर्वोक्त 43 कुल 53 बिना)
33.	उदय*	85
34.	सत्त्व	147 (नरकायु बिना)

* अनंतानुबंधी 4, अप्रत्याख्यान 4, एकेन्द्रिय, स्थावर, विकलत्रय, मनुष्य व तिर्यंच गत्या. वैक्रियिकद्विक, नरकद्विक, नरकायु, दुर्भग, अनादेय, अयश:कीर्ति सम्यग्मिथ्यात्व, आतप, सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त मिथ्यात्व इन 29 बिना

232. णवुंसयवेदी संजदासंजद–गुणट्ठाणं

तेसिं णवुंसयवेदी जीवेसु संजदासंजद–गुणट्ठाणालाव–भण्णमाणे अत्थि – एग–संजदासंजदगुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदियपज्जत्त एग जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, मणुस्स तिरिक्ख बे गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, एग णवुंसयवेदो, पंचदस कसाया, तिण्णि णाणाणि, एग संजमासंजमो, तिण्णि दंसणाणि, तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम–खइय–खओवसमा तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, छ उवजोगा, एगादस झाणाणि, पणतीस आसवा, अट्ठदस लक्ख जादी, अद्धुत्तर सत्तावण्ण लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा छ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण पुव्वकोडीणं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गलपरायट्टं, ऊणतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजणसहस्सं, सडसट्ठि पयडीणं बंधो, पंचासीदि पयडीणं उदओ, सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेदमग्गणासु णवुंसय वेदीसु संजदासंजद गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

नपुसंक वेदी संयतासंयत गुणस्थान

उन्हीं नपुंसक वेदी जीवों में संयतासंयत गुणस्थानालाप कहने पर – एक संयतासंयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त एक जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्य तिर्यंच दो गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, एक नपुसंक वेद, पन्द्रह कषाय, तीन ज्ञान, एक संयमासंयम, तीन दर्शन, तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक–क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, ग्यारह ध्यान, पैंतीस आस्रव, अठारह लाख जाति, साढ़े सत्तावन लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम छह राजू, काल नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम एक पूर्व कोटि, अंतर नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्ध पुद्गल परावर्तन, उनतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, सड़सठ प्रकृतियों का बंध, पचासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार वेद मार्गणा में नपुंसक वेदियों का संयतासंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– संख्या का विचार करने पर सामान्य से पल्योपम का असंख्यात वां भाग विशेषता से सासादन सम्यक्त्वी के अवहार काल को आवली के असंख्यात वे भाग से गुणा करने पर नपुंसक वेदी संयतासंयतों का अवहार काल होता है उसका भाग पल्योपम में देने पर संयतासंयतों की संख्या प्राप्त होती है। क्षायिक सम्यक्त्व केवल मनुष्य गति में ही पाया जाता है अन्य गति में कदापि नहीं पाया जा सकता शेष क्षयोपशम, उपशम दोनों गतियों में पाये जाते हैं। स्पर्शन पूर्व की तरह समझना। काल नाना जीवापेक्षा सुगम है एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त भी सुगम है उत्कृष्ट काल कुछ कम पूर्व कोटि है शेष कथन में कोई विशेषता नहीं है सुगम है।

233. नपुंसक वेदी प्रमत्त गुणस्थान

1.	गुणस्थान	प्रमत्तसंयत गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	नपुंसक वेद
11.	कषाय	11 कषाय (4 संज्वलन, 7 नोकषाय)
12.	ज्ञान	3 ज्ञान
13.	संयम	2 (सा., छे.)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	द्रव्य से 6, भाव से 3 शुभ लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो., उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	6 (3 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	7 (3 आर्त्त + 4 धर्मध्यान)
22.	आस्रव	20 (11 कषाय+9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	संख्यात (59398206) सामान्य से विशेषता से स्वगुणस्थान की संख्या का संख्यातवां भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – निरन्तर एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन
30.	भाव	28 (औद.11, मि. 13, क्षा.1, औप.1, पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष
32.	बन्ध	63 (पूर्वोक्त 53+4 प्रत्याख्यान कुल 57 बिना)
33.	उदय	77 (प्रत्याख्यान–4, तिर्यंचायु, तिर्यंचगति, नीच गोत्र, उद्योत+पूर्वोक्त 29 कुल 37 बिना)
34.	सत्त्व	146 (नरकायु व तिर्यंचायु बिना)

233. णवुंसयवेदी पमत्तसंजद–गुणट्ठाणं

तेसिं णवुंसयवेदी जीवेसु पमत्तसंजदगुणट्ठाणालाव–भण्णमाणे अत्थि – एग–पमत्तसंजद–गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदियपज्जत्त जीवसमासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा*1, एग णवुंसयवेदो, एगारस कसाया, तिण्णि णाणाणि*2, सामाइय–छेदोवट्ठावणा बे संजमा*3, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिया तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, छ उवजोगा, तिण्णि अट्ठ चत्तारि धम्म सत्त झाणाणि, बीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पंच कोडि तिणउदि लक्ख अट्ठणउदि सहस्सं छ उत्तर*4 बे सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो–णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एग जीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गलपरायट्टं, अट्ठाबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ट हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, तिसट्ठि पयडीणं बंधो, सत्तसत्तदि पयडीणं उदओ, छादालुत्तर सयं पयडीणं*5 सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु णवुंसय वेदीसु पमत्त संजद गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

नपुंसक वेदी प्रमत्तसंयत गुणस्थान

उन्हीं नपुंसक वेदी जीवों में प्रमत्तसंयत गुणस्थानालाप कहने पर – एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, एक नपुंसक वेद, ग्यारह कषाय, तीन सुज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, तीन दर्शन, द्रव्य से छहों लेश्या भाव से तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम–क्षायिक–क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, (तीन आर्त्त चार धर्म) सात ध्यान, बीस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पाँच करोड़ तेरानवे लाख अन्ठानवे हजार दो सौ छह, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल–नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्ध पुद्गल परावर्तन, अट्ठाईस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, तिरेसठ प्रकृतियों का बंध, सतत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छियालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार वेद मार्गणा में नपुंसक वेदियों का प्रमत्त संयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

---

*1 नपुंसक वेदी प्रमत्त संयतों में आहारक काययोग व आहारक मिश्र काययोग नहीं होता।

*2 मन: पर्ययज्ञान नहीं होता क्योंकि पुरुष वेदियों में ही मन:पर्यय ज्ञान होता है।

*3 परिहार विशुद्धि संयम भी नपुंसक वेद वालों में नहीं पाया जाता।

*4 संख्या की अपेक्षा स्त्री वेदी प्रमत्त संयतों के संख्यात खण्ड करने पर एक खण्ड प्रमाण नपुंसक वेदी प्रमत्तसंयत होते हैं परन्तु मूल प्ररुपणा में जो संख्या कही है वह सामान्य से है।

*5 सत्त्व का यहाँ कथन किया जाता है किसी जीव ने क्षयोपशम सम्यक्त्व प्राप्त किया और अनन्तानुबंधी की विसंयोजना कर दी है तो वह यदि आयु का बंधक है तो उसके 142 प्रकृति का सत्त्व पाया जाता है यदि आयु का बन्धक नहीं है तो 141 प्रकृति का सत्त्व पाया जाता है यदि उसने दर्शनयमोहनी का क्षय किया है तथा आयु का बन्धक है तो 139 यदि आयु का अबन्धक है तो 138 प्रकृति का सत्त्व होता है

शंका – अनंतानुबंधी कषाय की विसंयोजना कौन करता है और क्षयोपशम सम्यक्त्व के काल में कितने समय तक अनंतानुबंधी की सत्ता से रहित रह सकता है ?

समाधान – चारों गति का क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि विसंयोजना करता है इसका उत्कृष्ट काल 132 सागर है इसके पश्चात् या तो दर्शन मोहनीय का क्षय कर क्षायिक सम्यग्दृष्टि हो जायेगा अथवा मिथ्यात्व को प्राप्त हो जायेगा, यदि मिथ्यात्व को प्राप्त हुआ तो उसके एक आवली काल तक अनंतानुबंधी कषाय का उदय नहीं पाया जाता है उसके बाद उदय आ जाता है। विशेष जानने के लिए पढ़े कषाय पाहुड़ पु.2।

234. नपुंसक वेदी अप्रमत्त गुणस्थान

1.	गुणस्थान	अप्रमत्तसंयत गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	नपुंसक वेद
11.	कषाय	11 कषाय
12.	ज्ञान	3 ज्ञान
13.	संयम	2 (सामायिक, छेदोपस्थापना)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	द्रव्य से 6, भाव से 3 शुभ लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो., उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	6 (3 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान
22.	आस्रव	20 (11 कषाय+9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	संख्यात 29699103 (संख्यात) = नपुंसक वेदी अप्रमत्त प्रमत्त संयतों के समान जानना चाहिए
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – निरन्तर एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन
30.	भाव	28 (औद.11, मि.13, क्षा.1, उप.1, पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष
32.	बन्ध	59 (अस्थिर, अशुभ, असातावेदनीय, अयश:कीर्ति, अरति, शोक इन 6 + पूर्वोक्त 57 इन 63 प्र. में से कम करके आहारकद्विक जोड़ने पर
33.	उदय	74 (स्त्यानगृद्धि आदि तीन निद्रा+पूर्वोक्त 37 कुल 40 प्रकृतियों बिना)
34.	सत्त्व	146 (नरकायु व तिर्यंचायु बिना)

234. णवुंसयवेदी अपमत्त संजद–गुणट्ठाणं

तेसिं णवुंसयवेदी जीवेसु अपमत्त गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि – एगअपमत्त संजद–गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदियपज्जत्त जीवसमासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, तिण्णि सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, णवुंसय वेदो, एगारस कसाया, तिण्णि णाणाणि, सामाइय–छेदोवट्ठावणा बे संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, छह उवजोगा, चत्तारि धम्मज्झाणाणि, बीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा बे कोडि छण्णउदि लक्ख णवणउदि सहस्सं तिउत्तर सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एग जीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गलपरायट्टं, अट्ठाबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, ऊणसट्ठि पयडीणं बंधो, चदुसत्तदि पयडीणं उदओ, छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु णवुंसय वेदीसु अपमत्त संजद गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

नपुंसक वेदी अप्रमत्तसंयत गुणस्थान

उन्हीं नपुंसक वेदी जीवों में अप्रमत्त संयत गुणस्थानालाप कहने पर – एक अप्रमत्त संयत गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, तीन संज्ञाएँ, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, नपुंसक वेद, ग्यारह कषाय, तीन सुज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, तीन दर्शन, द्रव्य से छहों लेश्या भाव से तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, चार धर्म ध्यान, बीस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा दो करोड़ छयानवै लाख निन्यानवै हजार एक सौ तीन, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अन्तर नाना जीवापेक्षा निरन्तर, एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्ध पुद्गल परावर्तन, अट्ठाईस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, उनसठ प्रकृतियों का बंध, चौहत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार वेद मार्गणा में नपुंसक वेदियों का अप्रमत्तसंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

सम्पूर्ण कथन प्रमत्त गुणस्थान के सामान समझना चाहिए उससे इसमें कोई भेद नहीं है संख्या में थोड़ा अन्तर है क्योंकि प्रमत्त गुणस्थान से अप्रमत्त गुणस्थान की संख्या आधी है। जघन्य काल एक समय इस प्रकार प्राप्त होता है कोई जीव प्रमत्त से अथवा अपूर्वकरण से अप्रमत्त गुणस्थान को प्राप्त हुआ एक समय रहा और मरण को प्राप्त हुआ इस प्रकार जघन्य काल प्राप्त हुआ उत्कृष्ट काल सुगम है। अन्तर का कथन भी सुगम है शेष कथन सुगम है।
यद्यपि दोनों का कथन अन्तर्मुहूर्त होने के कारण समानता बतला दी है, वास्तविक तो भिन्नता है क्योंकि प्रमत्त गुणस्थान से अप्रमत्त गुणस्थान का काल संख्यात गुणाहीन है।

235 नपुंसक वेदी अपूर्वकरण गुणस्थान

1.	गुणस्थान	अपूर्वकरण गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	नपुंसक वेद
11.	कषाय	11 कषाय
12.	ज्ञान	3 ज्ञान
13.	संयम	2 (सामायिक, छेदोपस्थापना)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	भाव से 1 शुक्ल लेश्या, द्रव्य से 6 लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (क्षा., उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	6 (3 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	5 (4 धर्मध्यान अथवा 1 शुक्ल ध्यान)
22.	आस्रव	20 (11 कषाय+9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	897 (उपशामकों में –299, क्षपक में –598) यह संख्या सामान्य से है विशेषता से नपुंसक वेदी क्षपक दस उपशामक पाँच इस प्रकार 15 होते हैं।
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	उपशामक नाना व एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अर्न्तमुहूर्त क्षपक नाना व एक जीव की अपेक्षा – अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उपशामक नाना जीवों की अपेक्षा–ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन क्षपक नाना जीवों की अपेक्षा – ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा– ज.व उ. निरन्तर
30.	भाव	26 (उपशामक 25/ क्षपक 24) (औद. 9, क्षयो. 11, क्षा. 2, उ. 2, पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष
32.	बन्ध	58 (पूर्वोक्त 59 में से देवायु बिना)
33.	उदय	70 (सम्यक्त्व, अर्धनाराच, कीलक, सृपाटिका संहनन+पूर्वोक्त 40 कुल 44 प्रकृतियों बिना)
34.	सत्त्व	उप. 146 – नरकायु व तिर्यंचायु बिना
		क्षपक – 137 (अनंतानुबंधी 4, दर्शनमोहनीय 3, नरक, तिर्यंच, देवायु व तीर्थंकर प्रकृति इन 11 प्रकृतियों बिना)

235. णवुंसयवेदी अपुव्वयरणगुणट्ठाणं

तेसिं णवुंसयवेदी जीवाणं अपुव्वयरण-गुणट्ठाणालाव-भण्णमाणे अत्थि - एग अपुव्वयरणगुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदियपज्जत्त जीवसमासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, तिण्णि सण्णा, एग मण्णुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, णवुंसयवेदो, एगारस कसाया, तिण्णि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण एगं सुक्कलेस्सा, भव्व सिद्धिया, खइय-उवसमा बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, छह उपजोगा, चत्तारि धम्म अहवा एग सुक्क पंच झाणाणि, बीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा सत्तणउदिउत्तर अट्ठसयं उवसामगेसु*[1] णवणउदि उत्तर बे सयं खवगेसु अट्ठणउदिउत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणेग जीवावेक्खा उवसामगेसु जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु जहण्णुक्कस्सेहि अंतोमुहुत्तं, अंतरं उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गलपरायट्ठं खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण वास पुधत्तं एग जीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण णिरंतरं, छब्बीस भावा उवसामगेसु पणबीस भावा खवगेसु चउबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, अट्ठावण्ण पयडीणं बंधो, सत्तदि पयडीणं उदओ, छादालुत्तर सयं व सत्ततीसुत्तर सयं, पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु णवुंसय वेदीसु अपुव्वयरण गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

नपुंसक वेदी अपूर्वकरण गुणस्थान

उन्हीं नपुंसक वेदी जीवों में अपूर्वकरण गुणस्थानालाप कहने पर – एक अपूर्वकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, तीन संज्ञाएँ, एक मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, नपुंसक वेद, ग्यारह कषाय, तीन सुज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, तीन दर्शन, भाव से एक शुक्ल लेश्या द्रव्य से छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक उपशम दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, चार धर्म अथवा एक शुक्ल पाँच ध्यान, बीस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्या आठ सौ सत्तानवै उपशामक दो सौ निन्यानवै क्षपक पाँच सौ अन्ठानवै, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल–नाना व एक जीवापेक्षा उपशामक जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपकों में नाना व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अन्तर्मुहुर्त, अंतर उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्ध पुद्गल परावर्तन क्षपक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट निरंतर, छब्बीस भाव उपशामकों में पच्चीस भाव क्षपकों में चौबीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, अट्ठावन प्रकृतियों का बंध, सत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस व एक सौं सेंतीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार वेद मार्गणा में नपुंसक वेदियों का अपूर्वकरण गुणस्थान समाप्त हुआ।

*[1] यहाँ जो संख्या कही है वह सामान्य से है विशेषता से कहने पर नपुंसक वेदी क्षपक श्रेणी में दस व उपशम श्रेणी में 5 जीव पाये जाते हैं जैसा धवला जी पुस्तक नं. तीन पृष्ठ 318 सू. नं. 130 की टीका में कहा है अथवा सम्पूर्ण उपशम क्षपकों की संख्या के संख्यात खण्ड करने पर एक भाग नपुंसक वेदी अपूर्वकरण गुणस्थान वाले हैं इसीप्रकार अल्प बहुत्व से निकालते हैं तो संख्यात ही उपलब्ध होते हैं। काल का कथन करते हुए उपशामकों में नाना जीवों की अपेक्षा व एक जीव की अपेक्षा एक समय मरण की अपेक्षा जानना जिसका व्याख्यान हमने पहले कर दिया है वहाँ से जान लेना चाहिए अब उत्कृष्ट काल एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त काल से नाना जीवों का काल अन्तर्मुहूर्त संख्यात समय अधिक है क्योंकि भिन्न-भिन्न समयों में संचित जीवों का काल ग्रहण करना चाहिए इसी प्रकार क्षपकों का जानना चाहिए। अन्तर इतना है वहाँ जघन्य उत्कृष्ट का भेद नहीं है शेष कथन सुगम है इसी प्रकार चारों उपशामकों में चारों क्षपकों में जानना चाहिए अन्तर का कथन अगले गुणस्थान के आलाप में करेंगे।

236. नपुंसक वेदी अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

1.	गुणस्थान	अनिवृत्तिकरण गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	2 संज्ञा (मैथुन, परिग्रह)
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	नपुंसक वेद
11.	कषाय	5 कषाय
12.	ज्ञान	3 ज्ञान
13.	संयम	2 (सामायिक, छेदोपस्थापना)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	भाव से 1 शुक्ल लेश्या, द्रव्य से 6 लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (क्षा., उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	6 (3 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	1 शुक्ल ध्यान अथवा धर्मध्यान
22.	आस्रव	14 (5 कषाय+9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	उपशामक 5 क्षपक 10
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना व एक जीव उपशामक ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त नाना व एक जीव-क्षपक ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीव व एक जीव उपशामक व क्षपक - पूर्ववत्
30.	भाव	26 (उपशामक-25, क्षपक-24) (औद.9, क्षयो. 11, क्षा.2, उ.2, पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य- 3½ हाथ उत्कृष्ट- 525 धनुष
32.	बन्ध	22 (98 प्रकृति बिना (गुणस्थानोक्त)
33.	उदय	64 (हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा+पूर्वोक्त 44 कुल 50 प्रकृतियों बिना)
34.	सत्त्व	क्षपक - 137 (पूर्वोक्त) उपशामक-146 (नरकायु व तिर्यंचायु बिना)

236. णवुंसयवेदी अणियट्टियरणं गुणट्ठाणं

तेसिं णवुंसयवेदी जीवेसु अणियट्टियरणगुणट्ठाणालाव भण्णमाणे–अत्थि – एग–अणियट्टियरणगुणट्ठाणं, एग–सण्णी पंचिंदियपज्जत्त जीवसमासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, मेहुण परिग्गह बेसण्णा, एग मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, एग–णवुंसयवेदो, पंच कसाया, तिण्णि णाणाणि, सामाइय–छेदोवट्ठावणा बे संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण एग सुक्क लेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, छ उवजोगा, एगं सुक्क अहवा चत्तारि धम्मज्झाणाणि, चोद्दस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुल कोडीणं, संखावेक्खा सत्तणउदि उत्तर अट्ठ सयं उवसामगेसु णवणउदि उत्तर बे सयं खवगेसु अट्ठणउदि उत्तर पंच सयं अहवा उवसामगेसु पंच खवगेसु दस, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो–णाणेगजीवावेक्खा उवसामगेसु जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतर–उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वास पुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्त उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गलपरायट्टं खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वास पुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण णिरंतरं, छब्बीस भावा उवसामगेसु पणबीस खवगेसु चउबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, बाबीस पयडीणं बंधो, चउसट्ठि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं वा सत्ततीसुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि वेद मग्गणासु णवुंसय वेदीसु अणियट्टियरण गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

नपुंसक वेदी अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

उन्हीं नपुंसक वेदी जीवों में अनिवृत्तिकरण गुणस्थानालाप कहने पर – एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, दो संज्ञाएँ, एक मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, एक नपुंसक वेद, पाँच कषाय, तीन सुज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, तीन दर्शन, द्रव्य से छहों लेश्या भाव से एक शुक्ल लेश्या, भव्यसिद्धिक, उपशम क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, एक शुक्ल अथवा चार धर्म ध्यान, चौदह आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा आठ सौ सन्तानवै उपशामक दो सौ निंन्यानवै क्षपक पाँच सौ अन्ठानवै निश्चय से क्षपक दस उपशामक पाँच होते हैं, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल नानाजीवापेक्षा उपशामक जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त क्षपक नानाजीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्ध पुद्गल परावर्तन क्षपक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट निरंतर, छब्बीस भाव उपशामकों में पच्चीस क्षपकों में चौबीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, बाईस प्रकृतियों का बंध, चौसठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छियालीस व एक सौ सेंतीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार वेद मार्गणा में नपुंसक वेदियों का अनिवृत्तिकरण गुणस्थान समाप्त हुआ।

नोट – आ. पूज्यपाद स्वामी के अनुसार 8, 9, 10 वे गुणस्थान में प्रथम शुक्ल ध्यान पाया जाता है किन्तु आ. वीरसेन स्वामी के अनु. 8, 9, 10 वे गुणस्थान में चार धर्म ध्यान पाये जाते हैं।

यहाँ संज्वलन लोभ के बिना सम्पूर्ण मोहनीय कर्म का क्षय कर देता है इसलिए यहाँ से आगे गुणस्थानों में अपगत वेदी हो जाता है, क्योंकि 9वें गुणस्थान के 9 भाग होते हैं अत: क्रमश: प्रकृतियों का क्षय कर देता है, किंतु संज्ज्वलन लोभ 10वें गुणस्थान तक पाया जाता है।

विशेषार्थ :– इस गुणस्थान में संख्या आदि का कथन पूर्व गुणस्थानों में किया है वैसा ही जानना उनसे कोई अन्तर नहीं है। अन्तर का कथन यहाँ प्रयोजनीय है क्षपक और उपशामकों का जघन्य अन्तर एक समय यानि प्रथम समय में क्षपक या उपशम श्रेणी पर एक अथवा अनेक जीव चढ़े द्वितीय समय में एक भी जीव नहीं चढ़ा, तृतीय समय में फिर चढ़े तो जघन्य अन्तर एक समय प्राप्त हुआ और उपशामकों में एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन यानि कोई जीव उपशम श्रेणी चढ़ा और उपशम श्रेणी से गिरकर मिथ्यात्व को प्राप्त हुआ कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन काल भ्रमण कर पुन: नपुंसक वेदी मनुष्य हुआ और उपशम श्रेणी पर चढ़ा इस प्रकार उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त हुआ शेष कथन सरल है इसी प्रकार पिछले गुणस्थान में भी अन्तर लगा लेना चाहिए। क्षपकों का नाना जीवापेक्षा उत्कृष्ट अन्तर वर्ष पृथक्त्व जो सरल है इसी प्रकार उपशामकों में समझना चाहिए।

अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में सत्त्व असत्त्व इस प्रकार पाया जाता है– अनिवृत्तिकरण के प्रथम भाग में सत्व 138 असत्त्व (अनंतानुबंधी 4 दर्शन मोहनीय 3 तथा आयु 3) द्वितीय समय में 26 प्रकृति असत्त्व रूप हैं। 122 सत्त्व रूप है तृतीय समय में 4 अप्रत्याख्यानावरण, 4 प्रत्याख्यान वरण इस प्रकार 8 कषाय नष्ट हो जाने से असत्व 34 सत्व 114 प्रकृति का चतुर्थ भाग में नपुंसक वेद व स्त्री वेद का एक साथ क्षय करता है क्योंकि नपुंसक वेद से श्रेणी आरोहक है। अत: दोनों का एक साथ क्षय करता है क्योंकि स्त्री वेद का सवेद भाग में क्षय होता है इसलिए साथ में क्षय होने से सत्त्व 112 असत्त्व 36 आगे के भाग में 6 नोकषाय का क्षय करता है तो असत्व 42 प्रकृति सत्त्व 106 का अगले भाग में पुरुष वेद का क्षय करता है तो सत्त्व 105 असत्त्व 43 प्रकृति का अगले भाग में क्रोध का क्षय करता है फिर मान का फिर माया का क्षय करता है इस गुणस्थान में सत्व संख्या = 138, 122, 114, 113, 112, 106, 105, 104, 103 इस प्रकार गुणस्थान का समापन करता है।

237. कषाय मार्गणा सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	1–10	1–10	1,2,4,6
2.	जीवसमास	14 जीव समास	7 जीव समास पर्याप्त	7 जीव समास अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति व अपर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति	6,5,4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10–7,9–7,8–6,7–5,6–4,4–3	10,9,8,7,6,4 प्राण	7,7,6,5,4,3 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	चारों गति	–	–
7.	इन्द्रिय	1–5 इन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रस/स्थावर	–	–
9.	योग	15 योग	11 योग	4 (औ.मि.,वै.मि.आ.मि. कार्मण)
10.	वेद	3 वेद	–	–
11.	कषाय	25 कषाय	–	–
12.	ज्ञान	7 (केवलज्ञान बिना)	7 ज्ञान	5 (कुअवधि, मन:पर्यय बिना)
13.	संयम	6 (यथाख्यात बिना)	–	3 (असंयम, सामायिक छेदो.)
14.	दर्शन	3 दर्शन (केवलदर्शन बिना)	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य, अभव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	6	–	5 (मिश्र बिना)
18.	संज्ञी	संज्ञी व असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	10 उपयोग (7 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)	–	8 (5 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	13 (4आर्त्त+4 रौद्र+4 धर्म.+1 शुक्ल)*	–	12 ध्यान
22.	आस्रव	57 (25 कषाय+15 योग+12अवि.+5मि.)	53 (25+11+12+5)	46 (25+14+12+5)
23.	जाति	84 लाख	–	–
24.	कुलकोटि	199½ लाख करोड़	–	–
25.	संख्या	अनंतानंत (अनंतानंत लोक प्रमाण) (अनंतानंत उत्सर्पिणी अव. से अपहृत नहीं होते)		
26.	क्षेत्र	सर्वलोक		
27.	स्पर्शन	सर्वलोक		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल	एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय	उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – निरन्तर	एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय	उ. अन्तर्मुहूर्त
30.	भाव	46 (औद. 21, मि. 18, क्षा.2, औप.2, पा.3)		
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग	उत्कृष्ट– 1000 योजन	
32.	बन्ध	120		
33.	उदय	121 (तीर्थंकर प्रकृति बिना)		
34.	सत्त्व	148		

* एक आचार्य के मतानुसार कषायी जीव के शुक्ल ध्यान नहीं होता अत: 12 ध्यान होंगे एक आचार्य के मतानुसार कषाय सहित जीव के भी शुक्ल ध्यान होता है इसलिए 13 होंगे वर्तमान में केवलीश्रुत केवली का अभाव है। अत: दोनों आचार्य मान्य हैं।

237. कसायमग्गणा सामण्णं

अह कसायमग्गणाणुवादेण सामण्णेण कसायालाव-भण्णमाणे अत्थि-एयत्तो दस गुणट्ठाणं अपज्जत्तेसु एग-दो चत्तारि छ गुणट्ठाणा, चोद्दस जीव समासा सत्त पज्जत्त सत्त अपज्जत्त, छ-पंच-चत्तारि पज्जत्ती-छ-पंच-चत्तारि अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस णव अट्ठ सत्त छ पंच चत्तारि पाणा अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छ पंच चत्तारि तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, एयत्तो पंचिंदियाणि, छक्काया, पंचदस जोगा पज्जत्तेसु एगादस अपज्जत्तेसु चत्तारि जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, सत्त णाणाणि अपज्जत्तेसु मणपज्जय विभंगेहि विणा पंच णाणाणि, जहाक्खादेहिं विणा छ संजमा अपज्जत्तेसु असंजम-सामाइय-छेदोवट्ठावणं तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्व सिद्धिया दोण्णि, छ सम्मत्ता अपज्जत्तेसु मिस्सेण विणा पंच सम्मत्ता, सण्णी असण्णी दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि, दस उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द चत्तारि धम्म एग सुक्क-तेरस झाणाणि[*1] अपज्जत्तेसु वारस झाणाणि, सत्तावण्ण आसवा पज्जत्तेसु तिवण्ण अपज्जत्तेसु छादाल आसवा, चउरासीदि लक्ख जादी, अद्ध णवणउदिउत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अणंताणंत लोयपमाणो, खेत्तावेक्खा सव्वलोयो, फासावेक्खा सव्वलोयो, कालो-णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, छादाल भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजणसहस्सं, बीसुत्तर सयं पयडीणं बंधो, इगवीसोत्तर सयं पयडीणं उदओ, अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि कसाय मग्गणासु सामण्णालाव सम्मत्ता।

कषाय मार्गणा सामान्य

अब कषाय मार्गणा के अनुवाद से कषाय का सामान्य से कथन करने पर - एक से दस गुणस्थान अपर्याप्त में एक-दो-चार-छह गुणस्थान, चौदहों जीव समास सात पर्याप्त सात अपर्याप्त, छह-पाँच-चार पर्याप्ति छह-पाँच-चार अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस-नौ-आठ-सात-छह चार प्राण अपर्याप्त में सात-सात-छह-पाँच-चार तीन प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, एक से पाँच इन्द्रिय, छहों काय, पन्द्रह योग पर्याप्त में ग्यारह अपर्याप्त में चार योग, तीनों वेद, पच्चीस कषाय, केवलज्ञान बिना सात ज्ञान अपर्याप्त में मन:पर्यय व विभंग ज्ञान बिना पाँच ज्ञान, यथाख्यात बिना छ: संयम अपर्याप्तकों में (असंयम सामायिक छेदोपस्थाना) इस प्रकार तीन संयम, तीन दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक दोनों, छहों सम्यक्त्व अपर्याप्तकों में मिश्र के बिना पाँच सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी दोनों, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्त में आहारक अपर्याप्त में दोनों, दस उपयोग अपर्याप्त में आठ उपयोग, चार आर्त चार रौद्र चार धर्म एक शुक्ल तेरह ध्यान अपर्याप्तकों में बारह ध्यान, सत्तावन आस्रव पर्याप्त में तिरेपन अपर्याप्त में छियालीस आस्रव, चौरासी लाख जाति, एक सौ साढ़े निन्यानवे लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा अनंतानंत लोक प्रमाण, क्षेत्रापेक्षा सर्वलोक, स्पर्शन सर्वलोक, काल नाना जीवापेक्षा सर्वकाल, एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर नाना जीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, छयालीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ बीस प्रकृतियों का बंध, तीर्थंकर प्रकृति बिना एक सौ इक्कीस प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार कषाय मार्गणा का सामान्यालाप समाप्त हुआ।

[*1] आचार्य पूज्यपाद के अनुसार कषाय मार्गणा में सामान्य से 13 ध्यान रहेंगे किन्तु आचार्य वीरसेन स्वामी के अनुसार 12 ध्यान रहेंगे क्योंकि 10वें गुणस्थान में धर्मध्यान स्वीकार किया है।

विशेषार्थ :- यहाँ सारे पदों की अपेक्षा कोई विशेषता नहीं है केवल अंतर की अपेक्षा थोड़ा कथन करते हैं जहाँ जघन्य अन्तर एक समय कहा है वह इस प्रकार है कोई जीव अकषायी उपशांत मोह गुणस्थानवर्ती हुआ एक समय में ही मरण को प्राप्त हो असंयमी सकषायी हो गया इस प्रकार जघन्य अन्तर प्राप्त हुआ उत्कृष्ट अन्तर कोई जीव उपशांत गुणस्थानवर्ती हो अन्तर्मुहूर्त रहकर नीचे सूक्ष्मसांपराय में आया इस प्रकार सकषायी हो गया इस प्रकार उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त हुआ।

238. क्रोध कषाय सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	1–9	1–9	1,2,4,6
2.	जीवसमास	14 जीवसमास	7 पर्याप्त जीवसमास	7 अपर्याप्त जीवसमास
3.	पर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति व अपर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति	6,5,4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10–7,9–7,8–6,7–5,6–4,4–3	10,9,8,7,6,4 प्राण	7,7,6,5,4,3 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	चारों गति	–	–
7.	इन्द्रिय	1–5 इन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रस व स्थावर काय	–	–
9.	योग	15 योग	11 योग	4 (औ.मि.,वै.मि.आ.मिश्र व कार्मण)
10.	वेद	3 वेद	–	–
11.	कषाय	क्रोध	–	–
12.	ज्ञान	7 (4 ज्ञान + 3 अज्ञान)	–	5 (3 ज्ञान+ दो अज्ञान)
13.	संयम	5 (अ.,सा.,छे.,परिहार, संयमासंयम)	–	3 (असंयम, सा.,छेदो.)*[1]
14.	दर्शन	3 (चक्षु, अचक्षु, अवधि दर्शन)	–	3 (चक्षु, अचक्षु, अवधिदर्शन)
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	2 (भव्य, अभव्य)	–	–
17.	सम्यक्त्व	6 (उ.,क्षा.,क्षयो., मि.सा.,मिश्र.)	–	5 (मिश्र बिना)*[2]
18.	संज्ञी	संज्ञी – असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	10 (7 ज्ञान+ 3 दर्शन)	–	8 (5 ज्ञान + 3 दर्शन)
21.	ध्यान	13 (4 आर्त्त, 4 रौद्र, 4 धर्म., 1 शु.)	–	12 (4 आ., 4 रौ., 4 धर्म.)
22.	आस्रव	45 (13 क.+15 यो.+12 अ.+5 मि.)	41 (13क.+11यो.+12+5)	34 (13+4यो.+12+5)
23.	जाति	84 लाख		
24.	कुलकोटि	199½ लाख करोड़		
25.	संख्या	अनंतानंत (अनंतानंत लोक प्रमाण) (अनंतानंत अवसर्पिणी उत्सर्पिणी से अपहृत नहीं होते)		
26.	क्षेत्र	सर्वलोक		
27.	स्पर्शन	सर्वलोक		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – निरन्तर एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त		
30.	भाव	43 (औद.18, क्षयो. 18, पा.3, क्षा.2, औप.2) अप. 38		
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट– 1000 योजन		
32.	बन्ध	120		
33.	उदय	109 (4 मान, 4 माया, 4 लोभ, 1 तीर्थंकर के बिना)		
34.	सत्त्व	148		

*[1] अपर्याप्तक में सामायिक छेदोपस्थापना संयम आहारक मिश्र की अपेक्षा होते हैं।

*[2] अपर्याप्तक में उपशम सम्यक्त्व देवगति में द्वितीयोपशम की अपेक्षा जानना चाहिए।

238. कोहकसाय–सामण्णं

अह कसायमग्गणाणुवादेण कोहकसायी सामण्णं जीवाणामालाव–भण्णमाणे अत्थि–एयत्तो णव गुणट्ठाणं अपज्जत्तेसु एय बे चत्तारि छ गुणट्ठाणं, सत्त पज्जत्त सत्त अपज्जत्त चोद्दस जीव समासा, छ–पंच–चउ पज्जत्ती छ–पंच–चउ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस णव अट्ठ सत्त छ चदु पाणा अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छ पंच चदु ति पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, एयत्तो पंचिंदियाणि, तसथावरकाया, पंचदस जोगा पज्जत्तेसु एगारस अपज्जत्तेसु चत्तारि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कोहकसाया, सत्त णाणाणि पज्जत्तेसु तिण्णि अण्णाणाणि चत्तारि णाणाणि अपज्जत्तेसु बे अण्णाणाणि तिण्णि णाणाणि, सुहुमसांपराइयजहक्खादेण विणा पंच संजमा अपज्जत्तेसु असंजम सामाइय छेदोवट्ठावणा तिण्णि संजमा, केवल दंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्वसिद्धिया दोण्णि, छ सम्मत्ता अपज्जत्तेसु मिस्सेण विणा पंच सम्मत्ता, सण्णी असण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, दस उवजोगा अपज्जत्तेसु अट्ठउवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द चत्तारि धम्म एयं सुक्क तेरस झाणाणि अपज्जत्तेसु सुक्केण विणा बारस झाणाणि, पणदाल आसवा*[1] पज्जत्तेसु इगदाल अपज्जत्तेसु चउतीस आसवा, चउरासीदि लक्ख जादी, अद्धणव णवउदि उत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, सखावेक्खा अणंताणंत लोयपमाणं, खेत्तावेक्खा सव्वलोय, फासावेक्खा सव्वलोयो, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समयो उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, तिदाल भावा पज्जत्तेसु तिदाल अपज्जत्तेसु अडतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागो उक्कस्सेण जोजणसहस्सं, बीसुत्तर सयं पयडीणं बंधो, णवुत्तरसयं पयडीणं उदओ, अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि कसाय मग्गणासु कोहकसायी सामणालाव सम्मत्ता।

क्रोध कषाय सामान्य

कषाय मार्गणा के अनुवाद से क्रोध कषायी जीवों के सामान्य आलाप कहने पर–एक से नौ तक नौ गुणस्थान अपर्याप्तक में एक दो चार छह गुणस्थान, चौदह जीव समास, छह पाँच चार पर्याप्ति छह पाँच चार अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस–नौ–आठ–सात–छह–चार प्राण अपर्याप्त में सात–सात–छह–पाँच–चार–तीन प्राण होते हैं, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, एक से पाँच इन्द्रिय, त्रस स्थावर दोनों काय, पंद्रह योग पर्याप्त में ग्यारह अपर्याप्त में चार योग, तीनों वेद, चार क्रोध कषाय, सात ज्ञान पर्याप्तक में केवलज्ञान बिना 7 ज्ञान अपर्याप्त में कुअवधि मन:पर्यय बिना 5 ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय यथाख्यात बिना पाँच संयम अपर्याप्त में (असंयम सामायिक छेदोपस्थापना) तीन संयम, केवलदर्शन बिना तीन दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक दोनों, छहों सम्यक्त्व अपर्याप्त में मिश्र बिना पाँच सम्यक्त्व, संज्ञी–असंज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्त में आहारक अपर्याप्त में दोनों, दस उपयोग अपर्याप्त में आठ उपयोग, (चार आर्त्त–चार रौद्र–चार धर्म–एक शुक्ल) तेरह ध्यान अपर्याप्त में शुक्ल ध्यान बिना बारह ध्यान, पैंतालीस आस्रव पर्याप्त में इकतालीस अपर्याप्त में चौंतीस, चौरासी लाख जाति, एक सौ साढ़े निन्यानवे लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा–अनंतानंत लोक प्रमाण, क्षेत्र–सर्वलोक, स्पर्शन–सर्वलोक, काल–नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर–नाना जीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतुर्मुहूर्त, तेंतालीस भाव अपर्याप्त में अडतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ बीस प्रकृतियों का बंध, एक सो नौ प्रकृतियों का उदय, एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार कषाय मार्गणा में क्रोध कषाय का सामान्यालाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– काल का कथन करते है यहाँ जघन्य काल एक समय से तात्पर्य है कोई जीव क्रोध कषायी हुआ एक समय रहा पश्चात् दूसरी कषाय को अर्थात् मान आदि को प्राप्त हुआ इस प्रकार से एक समय प्राप्त होता है उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त सरल है। इसी प्रकार अन्तर क्रोध से कोई जीव मान कषायी या माया अथवा लोभ कषायी हुआ एक समय के बाद पुन: क्रोध कषायी हो गया इस प्रकार जघन्य अन्तर प्राप्त हुआ। उत्कृष्ट अन्तर भी सुगम है कोई विशेषता नहीं है। बन्ध में कोई विशेषता नहीं है। उदय में थोड़ा फर्क है यहाँ मान, माया, लोभ व तीर्थंकर प्रकृति का उदय नहीं होता शेष कथन सरल है।

*[1] यहाँ 45 आस्रव कहे हैं वह इस प्रकार है चार क्रोध कषाय नो नो कषाय इस प्रकार तेरह कषाय हो जाती हैं, शेष 12 अविरति 15 योग 5 मिथ्यात्व इस प्रकार 45 आस्रव हुए।

239. क्रोध कषाय मिथ्यात्व गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	मिथ्यात्व	-	-
2.	जीवसमास	14 जीवसमास	7 जीव समास पर्याप्त	7 जीवसमास अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति, अपर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति	6,5,4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10-7,9-7,8-6,7-5,6-4,4-3	10,9,8,7,6,4 प्राण	7,7,6,5,4,3 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	-	-
6.	गति	4 गति	-	-
7.	इन्द्रिय	1-5 इन्द्रिय	-	-
8.	काय	त्रस-स्थावर	-	-
9.	योग	13 (आहारकद्विक बिना)	10	3 (औद.मि., वै.मि.,कार्मण)
10.	वेद	3 वेद	-	-
11.	कषाय	क्रोध चार प्रकार नौ नो. क. (13)	-	-
12.	ज्ञान	3 कुज्ञान	-	2 (कुमति, कुश्रुत)
13.	संयम	असंयम	-	-
14.	दर्शन	2 (चक्षु, अचक्षु)	-	-
15.	लेश्या	6 लेश्या	-	-
16.	भव्य	भव्य, अभव्य	-	-
17.	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व	-	-
18.	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी	-	-
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	आहारक, अनाहारक
20.	उपयोग	5 (3 ज्ञानो.+ 2 दर्शनो.)	-	4 (2 ज्ञानो. + 2 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8 (4 आर्त्त+4 रौद्र)	-	-
22.	आस्रव	43 (13 कषाय+13 योग+5 मि.+12अ.)	40 (13+10योग+5+12)	33 (13+3+12+5)
23.	जाति	84 लाख		
24.	कुलकोटि	199½ लाख करोड़		
25.	संख्या	अनंतानंत		
26.	क्षेत्र	सर्वलोक		
27.	स्पर्शन	सर्वलोक		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा - सर्वकाल	एक जीव की अपेक्षा - ज. एक समय	उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना व एक जीव की अपेक्षा - निरन्तर		
30.	भाव	31 (क्षयो. 10, औद.18, पा. 3)	अपर्याप्त-30 (कुअवधि बिना)	
31.	अवगाहना	जघन्य- घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग	उत्कृष्ट- 1000 योजन	
32.	बन्ध	117 (आहारकद्विक, तीर्थंकर के बिना)		
33.	उदय	105 (सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, आहारकद्विक बिना)		
34.	सत्त्व	148		

239.कोहकसाय मिच्छत्तगुणट्ठाणं

तेसिं कसाइयजीवेसु कोहकसायी जीवाणं मिच्छत्तगुणट्ठाणालाव-भण्णमाणे अत्थि - एग मिच्छत्त गुणट्ठाणं, सत्तपज्जत्त सत्तअपज्जत्त चोद्दस जीवसमासा, छ पंच चदु पज्जत्ती छ पंच चदु अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस णव अट्ठ सत्त छ चदु पाणा अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छ पंच चदु तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, एयत्तो पंचिंदियाणि, छक्काया, आहार दुगेहिं विणा तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कोह[*1] कसाओ, तिण्णि अण्णाणाणि अपज्जत्तेसु बे अण्णाणाणि, एग-असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्वसिद्धिया दोण्णि, मिच्छत्त-सम्मत्तं, सण्णी असण्णी दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द अट्ठझाणाणि, तिदाल आसवा पज्जत्तेसु दाल अपज्जत्तेसु तेंतीस आसवा, चउरासीदि लक्ख जादी, अद्ध णवणउदिउत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अणंताणंत, खेत्तावेक्खा सव्वलोयो, फासावेक्खा सव्वलोयो, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं-णाणेगजीवावेक्खा णिरंतरं, इगतीस भावा अपज्जत्तेसु तीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजणसहस्सं, सत्तदसुत्तर सयं पयडीणं बंधो, पंचुत्तर सयं पयडीणं उदओ, अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि कसाय मग्गणासु कोह कसायेसु मिच्छत्त गुणट्ठाण सम्मत्ता।

क्रोधकषाय मिथ्यात्व गुणस्थान

उन्हीं काषायिक जीवों में क्रोध कषायी जीवों के मिथ्यात्व गुणस्थानालाप कहने पर - एक मिथ्यात्व गुणस्थान, सात पर्याप्तक सात अपर्याप्तक चौदह जीव समास, छह-पाँच-चार पर्याप्ति-छह-पाँच-चार अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस-नौ-आठ-सात-छह-चार प्राण अपर्याप्त में सात-सात-छह-पाँच-चार तीन प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, एक से पाँच इन्द्रिय, छहों काय, आहारक द्विक के बिना तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीनों वेद, चारों क्रोध कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्त में दो अज्ञान, एक असंयम, चक्षु अचक्षु दो दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक दोनों, मिथ्यात्व सम्यक्त्व, संज्ञी-असंज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्त में आहारक अपर्याप्त में दोनों, पाँच उपयोग अपर्याप्त में चार उपयोग, (चार आर्त्त चार रौद्र) आठ ध्यान, तैंतालीस आस्रव पर्याप्त में चालीस एवं अपर्याप्त में तैंतीस आस्रव, चौरासी लाख जाति, एक सौ साढ़े निन्यानवै लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा अनंतानंत, क्षेत्रापेक्षा सर्वलोक, स्पर्शन सर्वलोक, काल नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर नाना व एक जीवापेक्षा निरंतर, इकत्तीस भाव अपर्याप्तक में तीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ सत्रह प्रकृतियों का बंध, एक सौ पाँच प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार कषाय मार्गणा में क्रोध कषाय का मिथ्यात्व गुणस्थान समाप्त हुआ।

नोट - चारों कषाओं के साथ में नो कषाओं का उदय पाया जाता है। अत: अलग से कथन नहीं किया गया है।

[*1] चत्तारि कोह कषाय-अर्थात् अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यानावरण, प्रत्याख्यानावरण, संज्वलन चार कषाय क्योंकि जहाँ अनंतानुबंधी है वहाँ चारों कषाय हैं तथा इन्हीं चारों कषायों के साथ ही नव नो कषाय भी पायी जाती हैं। अत: 4+9=13 कषाय होती है। इसलिए इन नो कषायों का अलग से वर्णन नहीं किया जा रहा है। शेष सभी सरल है कहीं कोई विशेष बात नहीं है इतना जरूर है कि मिथ्यात्व गुणस्थान में जो तीर्थंकर प्रकृति का सत्त्व बताया है उसका आशय है जब किसी जीव ने नरकायु का बन्ध कर लिया पश्चात् सम्यक्त्व प्राप्त कर केवली के पादमूल में तीर्थंकर प्रकृति का आस्रव व बन्ध कर सत्त्व कर लिया ऐसा जीव जब नरक जाने के सम्मुख होता है उस समय मिथ्यात्व गुणस्थान को प्राप्त होता है तीर्थंकर प्रकृति की सत्ता वाला केवल एक ही काल में अन्तर्मुहूर्त के लिए मिथ्यात्व गुणस्थान को प्राप्त होता है शेष काल में कभी भी मिथ्यादृष्टि आदि इन तीन गुणस्थानों को प्राप्त नहीं होता शेष सब सरल है।

240. क्रोध कषाय सासादन गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	सासादन	–	–
2.	जीवसमास	7 जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	6 अपर्याप्त जीवसमास
3.	पर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्त व अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6,5,4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10,7,6,5,4,3 प्राण	10 प्राण	7,7,6,5,4,3 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	चारों गति	–	3 (नरक गति बिना)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय, अपर्याप्त में 1–5 इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	1–5 इन्द्रिय
8.	काय	त्रस स्थावर काय	त्रसकाय	त्रस स्थावर
9.	योग	13 (आहारकद्विक बिना)	10	3 (औदा.मिश्र., वैक्रि.मिश्र.,कार्मण)
10.	वेद	3 वेद	–	–
11.	कषाय	चारों क्रोध नौ नो कषाय (13)	–	–
12.	ज्ञान	3 कुज्ञान	–	2 (कुज्ञान) (कुअवधि बिना)
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 (चक्षु, अचक्षु)	2 दर्शन	2 दर्शन व एक दर्शन
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	सासादन	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी	संज्ञी	दोनों
19.	आहारक	आहारक व अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	5 (3 ज्ञानो.+ 2 दर्शनो.)	5	4 उपयोग (कुअवधिज्ञान बिना)
21.	ध्यान	8 (4 आर्त्त+4 रौद्र)	–	–
22.	आस्रव	38 (13 कषाय+12 अवि.+13 योग)	35 (13+12+10 योग)	28 (13+12 अवि.+3 योग)
23.	जाति	56 लाख (28 लाख कम करने)	26 लाख	52 लाख (28+4 लाख नारकी के कम करने पर)
24.	कुलकोटि	189½ लाख करोड़ (वायु–7, अग्नि–3 लाख करोड कम करने पर)	108½ लाख करोड़	164½ लाख करोड़ (10लाख+नारकी 25 लाख कम करने पर)
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	स्व. लोक का असंख्यातवाँ भाग वि.वे.विक्रि.–कुछ कम 8/14 राजू मा. कुछ कम 12/14 उप. कुछ कम 11/14 राजू*		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा–ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा –ज. एक समय उ. छह आवली		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा– निरन्तर		
30.	भाव	29 (औद–17, क्षयो–10, पा.–2)	अपर्याप्त–27 (नरकगति व कु अवधि बिना)	
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग व संख्यातवाँ भाग		उत्कृष्ट– संख्यात धनुष
32.	बन्ध	101	अपर्याप्त में पूर्ववत्	
33.	उदय	99 (105–6 मिथ्यात्व, आतप, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, नरक गत्यानुपूर्वी बिना)		
34.	सत्त्व	145 (तीर्थंकर, आहारकद्विक बिना)		

* 12/14 राजू भी बनता है अपेक्षाकृत

240. कोहकसाय सासण-गुणट्ठाणं

तेसिं कोहकसाइयजीवेसु सासणगुणट्ठाणालाव-भण्णमाणे अत्थि - एग-सासण-गुणट्ठाणं, सत्त जीव समासा पज्जत्तेसु एग-सण्णी पंचिंदिय अपज्जत्तेसु एयं बे ति चउ सण्णी असण्णी पंचिंदिय छ जीव समासा, छ पज्जत्ती छ पंच चउ अपज्जत्ती, दस पाणा अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छ पंच चउ ति पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी अपज्जत्तेसु तिण्णि गदी कुदो अपज्जत्तेसु सासणे णिरयेण णत्थि, पज्जत्तेसु पंचिंदिय अपज्जत्तेसु एयत्तो पंचिंदियाणि, थावर तसकाओ पज्जत्तेसु तसकाओ अपज्जत्तेसु दोण्णि, तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, चत्तारि कोहकसाया[*1], तिण्णि अण्णाणाणि अपज्जत्तेसु बे अण्णाणाणि, एग असंजमो, बे दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया, एग सासण-सम्मत्तं, सण्णी असण्णी दोण्णि पज्जत्तेसु सण्णी अपज्जत्तेसु दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, पज्जत्तेसु पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, अट्ठ झाणाणि, अडतीस आसवा पज्जत्तेसु पणतीस अपज्जत्तेसु अटठवीस आसवा, छप्पण लक्ख जादी पज्जत्तेसु छव्वीस लक्ख अपज्जत्तेसु वावण्ण लक्ख जादी, अद्धणवासीदि उत्तर सयं लक्ख कोडी कुलकोडीणं पज्जत्तेसु अद्धटठुत्तर सयं लक्ख कोडी अपज्जत्तेसु अद्धचउसटिठ उत्तर सयं लक्ख कोडी कुल कोडीणं, संखावेक्खा-पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा-सगट्ठाणं लोयस्स असंखेज्जदि भागा विहार वेयणा वेगुव्विया कसायत्तो अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा मारणांतिओ बारस चोद्दस भागा वा देसूणा उववाद एगादस चोद्दस[*1] भागा वा बारस चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण छावली, अंतर-णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा णिरंतरं, पज्जत्तेसु ऊणतीस भावा अपज्जत्तेसु सत्तबीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण संखेज्ज धणू, एगुत्तर सयं पयडीणं बंधो, णवणउदि पयडीणं उदओ, पणदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि कसाय मग्गणासु कोह कसाये सासण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

क्रोधकषाय सासादन गुणस्थान

उन्हीं क्रोधकषायी जीवों में सासादन गुणस्थानालाप कहने पर - एक सासादन गुणस्थान, सात जीव समास पर्याप्त में एक संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त में एक-दो-तीन-चार-असंज्ञी संज्ञी पंचेन्द्रिय छह जीव समास, छह पर्याप्ति छह-पाँच-चार अपर्याप्ति, दस प्राण अपर्याप्त में सात छह पाँच चार तीन प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति अपर्याप्त में तीन गति क्योंकि नरक गति में अपर्याप्त अवस्था में सासादन गुणस्थान नहीं होता। पर्याप्त में पंचेन्द्रिय अपर्याप्त में एक से पाँच इंद्रिय, त्रसकाय अपर्याप्त में तीन स्थावर एक त्रसकाय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीनों वेद, एक क्रोध कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्त में दो अज्ञान, एक असंयम, दो दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, एक सासादन सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी दोनों पर्याप्तक में संज्ञी अपर्याप्तक में दोनों, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में आहारक अनाहारक दोनों, पर्याप्त में पाँच उपयोग अपर्याप्त में चार उपयोग, आठ ध्यान, अडतीस आस्रव पर्याप्तक में पैतीस अपर्याप्तक में अट्ठाईस आस्रव, छप्पन लाख जाति पर्याप्तक में छब्बीस लाख अपर्याप्तक में बावन लाख जाति , एक सौ साढ़े नवासी लाख करोड़ कुलकोटि पर्याप्तक में एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ अपर्याप्तक में एक सौ साढ़े चौसठ लाख करोड़ कुलकोटि, संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन स्वस्थान लोक का असंख्यातवां भाग व विहार-वेदना-विक्रिया-कषायवत् कुछ कम 8/14 राजू मारणांतिक कुछ कम 12/14 राजू उपपाद कुछ कम 11/14 राजू, काल-नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह आवली, अंतर-नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा निरंतर, पर्याप्तक में उनतीस भाव अपर्याप्त में सत्ताईस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां व संख्यातवां भाग उत्कृष्ट संख्यात धनुष, एक सौ एक प्रकृति का बंध, निन्यानवै प्रकृतियों का उदय, एक सौ पैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार कषाय मार्गणा में क्रोध कषाय का सासादन गुणस्थान समाप्त हुआ।

नोट - [*1] उपपाद में भी अपेक्षाकृत कुछ कम 12/14 राजू बनेगा। क्योंकि अन्य आचार्यों के अनुसार सासादन गुणस्थान में एकेन्द्रियों में उपपाद कहा है। अत: सात राजू ऊपर व पाँच राजू नीचे इस प्रकार 12/14 राजू भी बन सकता है।

241. क्रोध कषाय सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान

1.	गुणस्थान	सम्यग्मिथ्यात्व
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय जीवसमास
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	चारों गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	10 योग (4 मनोयोग, 4 वचनयोग, औदारिक काय योग, वैक्रियिक काय योग)
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	तीन क्रोध कषाय
12.	ज्ञान	3 मिश्रज्ञान
13.	संयम	असंयम
14.	दर्शन	2 दर्शन (चक्षु अचक्षु) (कर्मकाण्ड के अनुसार तीन दर्शन कहे हैं।)
15.	लेश्या	6 लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	सम्यग्मिथ्यात्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 उपयोग (3 ज्ञानो.+ 2 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8 ध्यान (4 आर्त्त 4 रौद्र)
22.	आस्रव	34 (10 योग+12 कषाय+12 अविरति)
23.	जाति	26 लाख
24.	कुलकोटि	108½ लाख करोड़ (जलचर–12½ लाख, थल–19, नभ–12, नारकी–25, देव–26, मनु.–14 लाख करोड़)
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14 राजू
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा – निरन्तर
30.	भाव	29 (औद. 17, मि.10, पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट– 1000 योजन
32.	बन्ध	74
33.	उदय	91 (पूर्व की 9 प्रकृति में से – सम्यग्मिथ्यात्व + मिथ्यात्व प्रकृति कम करके 8+1=9)
34.	सत्त्व	147 (तीर्थंकर बिना)
		नोट– यदि तीन दर्शन स्वीकार करते हैं तो उपयोग छ: हो जाते हैं तथा भावों में एकवृद्धि होकर 29 के स्थान पर 30 हो जाते हैं।

241. कोहकसायसम्मामिच्छतगुणट्ठाणं

तेसिं कोहकसाइयजीवेसु सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि - एग सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदियपज्जत्त जीवसमासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, तिण्णि कोह[*1] कसाया, तिण्णि मिस्स णाणाणि, एग असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया, मिस्स सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, अट्ठ झाणाणि, चउतीस[*2] आसवा, छब्बीस लक्ख जादी, अद्धट्ठुत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा-पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा-लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा-लोयस्स असंखेज्जदि भागा एवं अट्ठचोद्दस भागा वा देसूणा, कालो-णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं-णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा णिरंतरं, ऊणतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि[*3] भागा उक्कस्सेण जोजणसहस्सं, चउसत्तदि पयडीणं बंधो[*4], एगणउदि पयडीणं उदओ, तित्थयरेण विणा सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि कोह कसाए सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

क्रोध कषाय सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान

उन्हीं क्रोध कषायी जीवों में सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थानालाप कहने पर - एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, दस योग (तीनों मिश्र व कार्माण बिना), तीन वेद, तीनों क्रोध कषाय, तीन मिश्र ज्ञान, एक असंयम, चक्षु अचक्षु दो दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, मिश्र सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, आठ ध्यान, चौंतीस आस्रव, छब्बीस लाख जाति, एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा-पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा-लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 8/14 राजू, काल-नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एकजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर-नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा निरंतर, उनतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, चौहत्तर प्रकृतियों का बंध, इक्यानवें प्रकृतियों का उदय एवं तीर्थंकर बिना एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार क्रोध कषाय में सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान समाप्त हुआ।

[*1] (अणंताणु वंधेहि विणा तिण्णि कोह कसाया) क्योंकि तृतीय व चतुर्थ गुणस्थान में अनंतानुबंधी का उदय नहीं होता। कर्मकाण्ड ग्रंथ में तीन दर्शन स्वीकृत किये हैं।

[*2] 12 कषाय 12 अवि. 10 योग = 34 आस्रव

[*3] तंदुल मच्छ की अवगाहना

[*4] मि.गुणस्थान व सा.गुणस्थान में व्युच्छित प्रकृतियाँ 41+देव, मनुष्यायु+आहारकद्विक+तीर्थंकर के बिना।

विशेषार्थ :- तीन प्रकार की क्रोध कषाय है क्योंकि अनंतानुबंधी यहाँ उदय में नहीं होती है तथा 9 नोकषाय इस प्रकार 12 कषाय होती हैं। बारह अविरति और 4 मन के 4 वचन 2 (औदा.वैक्रि.) काय इस प्रकार 10 योग इस प्रकार 34 आस्रव होते हैं। संख्या का कथन आगे के गुणस्थान में करेंगे। क्षेत्र स्पर्शन का कथन सरल है। काल का सम्पूर्ण कथन मनोयोगियों के समान करना चाहिए विशेषता यह है कि क्रोध कषाय में व्याघात से एक समय नहीं बनता। अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय क्योंकि कई जीव क्रोध कषाय के साथ मिश्र गुणस्थान को प्राप्त हुए दूसरे समय में एक भी जीव क्रोध कषाय के साथ मिश्र गुणस्थान को प्राप्त नहीं हुआ। पुन: तीसरे समय में फिर क्रोध कषाय के साथ मिश्र गुणस्थान को प्राप्त हुआ इस प्रकार जघन्य अन्तर प्राप्त हुआ उत्कृष्ट, अन्तर पल्य का असंख्यात वा भाग यानि पल्य के असंख्यातवे भाग काल तक कोई भी जीव क्रोध के साथ मिश्र गुणस्थान को प्राप्त न हो इस प्रकार उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त हुआ। एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है क्योंकि दोनों का काल समान होने से अन्तर संभव नहीं है।

242. क्रोध कषाय असंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	अविरतसंयत गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	चारों गति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	13 (आहारकद्विक बिना)	10 (4 मन.,4 व.के व औ.,वै. काय)	3 (औदा.मिश्र,वैक्रियिक मिश्र कार्मण)
10.	वेद	3 वेद	–	2 वेद (स्त्रीवेद बिना)
11.	कषाय	क्रोध तीनों	–	–
12.	ज्ञान	3 ज्ञान	–	–
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	3 दर्शन (चक्षु, अचक्षु, अवधि दर्शन)	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (उपशम, क्षायिक, क्षयोपशम)	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक व अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	6 (3 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)	–	–
21.	ध्यान	10 ध्यान (4 आर्त्त+4 रौद्र+2 धर्म)	–	–
22.	आस्रव	37 (12 कषाय+13 योग+12 अवि.)	34 (12+10+12)	27 (12+3+12)✻
23.	जाति	26 लाख	–	–
24.	कुलकोटि	108½ लाख करोड़	–	–
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	स्व. लोक का असंख्यातवाँ भाग, वि.विक्रि.,वे.क.,मा., कुछ कम 8/14 राजू व उप. 6/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल	एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय	उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – निरन्तर	एक जीव की अपेक्षा – निरन्तर	
30.	भाव	33 (क्षयो.12, औप.1, क्षा.1, औद.17, पा.2) अपर्या. 32 भाव (स्त्री वेद कम करके)		
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का संख्यातवाँ भाग	उत्कृष्ट– 1000 योजन	
32.	बन्ध	77		
33.	उदय	95		
34.	सत्त्व	148		
		✻ नो कषाय हमेशा कषाय के साथ चलती हैं, विनष्ट कषाय से पहले हो जाती हैं, इसलिए वे यहाँ समाहित हैं इस लिए आस्रव में उन्हें सम्मिलत किया है।		

242. कोहकसाय असंजद गुणट्ठाणं

तेसिं कोहकसाइय जीवेसु अविरदसंजदो गुणट्ठाणालाव-भण्णमाणे अत्थि-एग असंजद गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, दस सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, आहारदुगेहि विणा तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु थी-वेद विणा बे वेदा, तिण्णि कोह कसाया, तिण्णि णाणाणि, एग असंजमो, चक्खु-अचक्खु ओहि तिण्णि दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिया तिण्णि सम्मत्ता*1, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि, छ उवजोगा, दस झाणाणि चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द बे धम्मज्झाणाणि*2, सत्ततीस आसवा पज्जत्तेसु चउतीस अपज्जत्तेसु सत्तबीस आसवा, छब्बीस लक्ख जादी, अद्धट्ठुत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा-पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा-लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा-सगट्ठाणं लोयस्स असंखेज्जदि भागा विहार वेयणा वेगुव्विया कसायो मारणांतियो अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा उववादावेक्खा छ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो-णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो, एगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं-णाणेगजीवावेक्खा णिरंतरं, तेतीस भावा अपज्जत्तेसु बत्तीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्ज भागा उक्कस्सेण जोजणसहस्सं, सत्तसत्तदि*3 पयडीणं बंधो, पंचणउदि पयडीणं उदओ, अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि कोह कसाय असंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

क्रोध कषाय असंयत गुणस्थान स्त्री

उन्हीं क्रोध कषायी जीवों में अविरत संयत गुणस्थानालाप कहने पर - एक असंयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, दस-सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, आहारकद्विक बिना तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीन वेद अपर्याप्तक में स्त्रीवेद बिना दो वेद, तीन क्रोध कषाय, तीन ज्ञान, एक असंयम, (चक्षु-अचक्षु अवधि) तीन दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, तीन सम्यक्त्व (उपशम क्षायिक क्षयोपशम), संज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, छह उपयोग, दस ध्यान (चार आर्त्त चार रौद्र दो धर्म), सैंतीस आस्रव पर्याप्त में चौंतीस अपर्याप्त में सत्ताईस, छब्बीस लाख जाति, एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन स्वस्थान लोक का असंख्यातवां भाग विहार-वेदना-विक्रिया-कषाय-मारणान्तिक कुछ कम 8/14 उपपाद कुछ कम 6/14 राजू, काल-नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एकजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर-नानाजीवापेक्षा निरन्तर एक जीवापेक्षा निरन्तर, तेतीस भाव अपर्याप्तक में बत्तीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, सतत्तर प्रकृतियों का बंध, पंचानवै प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार क्रोध कषाय में असंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

---

*1 औपशमिक सम्यक्त्व यहाँ अपर्याप्त अवस्था में द्वितीयोपशम सम्यक्त्व की अपेक्षा कथन किया है और वह देव गति में ही पाया जाता है।

*2 दो धर्म ध्यान भी स्वीकार किये हैं इस प्रकार 10 धर्म ध्यान हो जाते हैं परन्तु नारकियों की अपेक्षा एक धर्म ध्यान स्वीकारा है।

*3 मिश्र गुणस्थान में बँधने वाली 74 प्रकृतियों में तीर्थंकर व देव, मनु. आयु मिलाने पर 77 प्रकृतियों का बंध है।

विशेषार्थ :- स्पर्शन का कथन सुगम है ओघवत् जानना यहाँ संख्या का कथन करते है। उसके अवहार के माध्यम से पता लगाया जा सकता है कि कौन सी कषाय में जीव कम हैं और कौनसी कषाय में ज्यादा है क्योंकि सामान्य से तो पल्य का असंख्यातवां भाग है विशेषता से कहते हैं। ओघअसंयत राशि के अवहार काल को संख्यात से खंडित करने पर लब्धराशि को उसी में मिलाने पर लोभ कषाय वालों का अवहार काल होता है। असंयत सम्यग्दृष्टि लोभ कषाय वाले सबसे ज्यादा है क्योंकि यहाँ देवों की अपेक्षा कथन है। इस अवहार काल को संख्यात से गुणित करने पर माया कषाय तथा पुन: इसे संख्यात से गुणित करने पर मान कषाय का पुन: इसे संख्यात से गुणित करने पर क्रोध कषाय का अवहार काल होता है। यानि सबसे कम क्रोध कषाय वाले होते हैं। क्योंकि भागहार (अवहार काल) जितना बड़ा होगा भजनफल उतना कम होगा यहाँ भागहार बड़ा है अत: सबसे कम संख्या क्रोध कषायी असंयतों की है। इसी प्रकार से सम्यग्मिथ्यात्व में तथा सासादन की प्ररूपणा करना चाहिए। ध.पु.तीन पृ. 427। इस अवहार का भाग उक्त संख्या में देने पर क्रोधी असंयतों की संख्या प्राप्त होती हैं जो कि पल्य के असंख्यातवे भाग ही है क्योंकि पल्य के असंख्यातवें भाग के भी असंख्यात भेद हैं।

243. क्रोध कषाय संयतासंयत गुणस्थान

1.	गुणस्थान	संयमासंयम गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	2 गति (देव व नरक गति बिना)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग (4 मन, 4 वचन, 1 औदारिक काययोग)
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	दो क्रोध कषाय
12.	ज्ञान	3 ज्ञान
13.	संयम	संयमासंयम
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	6 लेश्या (द्रव्य से 6, भाव से 3 शुभ लेश्या)
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो., उप.)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	6 उपयोग (3 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	11 (4 आर्त्त, 4 रौद्र, 3 धर्मध्यान)
22.	आस्रव	31 (11 कषाय+9 योग+11 अविरति)
23.	जाति	18 लाख
24.	कुलकोटि	57½ लाख करोड़ (देव की 26 व नारकी 25 लाख करोड़ कम करने पर)
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व मा.कुछ कम 6/14 राजू
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – निरन्तर एक जीव की अपेक्षा – निरन्तर
30.	भाव	28 (उप.1, क्षा.1, क्षयो. 13, औद. 11, पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट– 1000 योजन
32.	बन्ध	67
33.	उदय	81
34.	सत्त्व	147 (नरकायु बिना)

243. कोहकसाय संजमासंजम-गुणट्ठाणं

तेसिं कोहकसाय देससंजदो जीवाणामालाव-भण्णमाणे अत्थि - एग-संजमासंजम गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तजीवसमासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, देव-णिरयेहिं विणा बे गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, चत्तारि मणोजोगा चत्तारि वचि जोगा एग ओरालियकाय णव जोगा, तिण्णि वेदा, बे कोह कासायो, तिण्णि णाणाणि, एग-संजमासंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम-खइय-खओवसमिया तिण्णि सम्मत्ता*[1], सण्णी, आहारिणो, छ उवजोगा, एगादस*[2] झाणाणि, इगतीस आसवा, अट्ठदस लक्ख जादी, अद्धुत्तर सत्तावण्ण लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, छच्चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं-णाणेगजीवावेक्खा णिरंतरं, अट्ठाबीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्ज*[4] भागा उक्कस्सेण जोजणसहस्सं, सडसट्ठि पयडीणं बंधो, एगासीदि पयडीणं उदओ, सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि कोह कसाए संजमासंजम गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

क्रोध कषाय संयतासंयत गुणस्थान

उन्हीं क्रोध कषायी जीवों में देशसंयत गुणस्थानालाप कहने पर - एक संयमासंयम गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, देव नरक बिना दो गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, (चार मनोयोग चार वचनयोग एक औदारिक काय) नौ योग, तीन वेद, दो क्रोध कषाय, तीन सुज्ञान, एक संयमासंयम, तीन दर्शन, द्रव्य से छहों लेश्या भाव से तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, (उपशम क्षायिक क्षयोपशम) तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, ग्यारह ध्यान, इकत्तीस आस्रव, अठारह लाख जाति, साढ़े सत्तावन लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 6/14 राजू, काल-नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर-नानाजीवापेक्षा निरन्तर एक जीवापेक्षा निरंतर, अट्ठाईस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, सड़सठ प्रकृतियों का बंध, इक्यासी प्रकृतियों का उदय एवं नरकायु बिना एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार क्रोध कषाय में संयमासंयम गुणस्थान समाप्त हुआ।

---

*[1] चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द तिण्णि धम्मज्झाणाणि

*[2] क्षायिक सम्यक्त्व कर्मभूमिज मनुष्य की अपेक्षा कहा है, शेष तिर्यंचों की अपेक्षा संयमासंयम गुणस्थान क्षायिक सम्यक्त्व के साथ होता ही नहीं है कारण जानकर कहना चाहिए शेष कथन सुगम है।

*[3] चार आर्त्त, चार रौद्र, तीन धर्मध्यान इस प्रकार ग्यारह ध्यान।

*[4] यहाँ जो जघन्य अवगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग कहीं है उसका आशय यह है कि तंदुल मत्स्य जो देशव्रती बन सकता है। तथा उत्कृष्ट 1000 योजन महामत्स्य की अपेक्षा कही है।

काल का जो कथन किया है जघन्य एक समय उसका आशय इतना मात्र है-कोई जीव संयमासंयम गुणस्थानवर्ती क्रोध कषाय के साथ हुआ एक समय तक क्रोध कषाय के साथ में रहा दूसरे समय में अन्य कषायवर्ती हो गया इस प्रकार जघन्य काल प्राप्त हुआ उत्कृष्ट काल सुगम है। नाना जीवों की अपेक्षा क्रोध कषाय के साथ संयमासंयम गुणस्थान सदा काल पाया जाता है। इसी प्रकार से अन्तर नाना जीव की अपेक्षा तो अन्तर है ही नहीं एक जीव का भी अन्तर नहीं होता क्योंकि कषाय मार्गणा की अपेक्षा कथन है। अत: एक कषाय के काल में गुणस्थान का पलटना संभव नहीं है। इसलिए अन्तर भी नहीं पड़ता। शेष कथन सुगम है।

संख्या-सामान्य से पल्योपम का असंख्यात वा भाग है अवहार काल भी ओघवत् है। जानने के लिए देखें। ध.पु. 3 पृ.428 स्पर्शन भी ओघवत् जानना चाहिए।

244. क्रोध कषाय प्रमत्तसंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	प्रमत्तसंयम गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त, अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण, 7 प्राण	10	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	1 मनुष्य गति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	11 योग (4 मन,4 वचन,औदा.आहा.द्विक)	10 योग	आहारक मिश्र काययोग
10.	वेद	3 वेद	–	एक पुरुष वेद*[1]
11.	कषाय	1 स. क्रोध	–	–
12.	ज्ञान	4 ज्ञान (केवलज्ञान बिना)	–	3 ज्ञान (मन:पर्यय बिना)
13.	संयम	3 (सा.छेदो.परिहार विशुद्धि)	–	2 (सामायिक, छेदोपस्थापना)
14.	दर्शन	3 दर्शन (केवलदर्शन बिना)	–	–
15.	लेश्या	द्रव्य से 6 भाव से 3 शुभ लेश्या	–	द्र. से शु. ले. भा. से 3 शु.ले.
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो., उपशम)	–	2 (क्षा., क्षयोपशम)*[2]
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक	–	–
20.	उपयोग	7 (4 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)	–	6 (3 ज्ञानो. + 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	7 (3 आर्त्त+4 धर्मध्यान)	–	–
22.	आस्रव	21 (10 कषाय+11 योग)	20 (10 कषाय+10 योग)	9 (8 कषाय+1 योग)
23.	जाति	14 लाख		
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़		
25.	संख्या	संख्यात (59398206)		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त		
29.	अन्तर	नाना व एक जीव की अपेक्षा – निरन्तर अपर्याप्तकों का अन्तर नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा निरंतर		
30.	भाव	28 (उ.1, क्षा.1, क्षयो.14, औ.10, पा.2) अपर्याप्त 25 (मन:पर्यय, स्त्री, नपुंसक वेद बिना)		
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष		
32.	बन्ध	63		
33.	उदय	78		
34.	सत्त्व	146 (नरकायु, तिर्यंच आयु बिना)		

*[1] आहारक शरीर केवल पुरुष वेदी में ही उत्पन्न होता है स्त्री व नपुंसक वेद में नहीं होता।

*[2] उपशमक सम्यक्त्व में आहारक शरीर नहीं होता।

244. कोहकसाय पमत्तसंजद गुणट्ठाणं

तेसिं कोहकसायपमत्तसंयताणामालाव-भण्णमाणे अत्थि- एग पमत्तसंजद-गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदियपज्जत्तापज्जत्त-बे जीवसमासा, छह पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, दस सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, एग मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, एगारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु एग मिस्सकाय जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु एग पुरिसवेदा, एग संजलण कोहकसायो, केवलणाणेण विणा चत्तारि णाणाणि अपज्जत्तेसु मणपज्जयं विणा तिण्णि णाणाणि, सामाइय-छेदोवट्ठावणा विहारसुद्धि तिण्णि संजमा अपज्जत्तेसु बे संजमा, केवलदंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसमियो तिण्णि सम्मत्ता अपज्जत्तेसु उवसमेण विणा बे सम्मत्ता, सण्णी, अहारिणो, सत्त उवजोगा अपज्जत्तेसु छ उवजोगा, सत्त झाणाणि, इगबीस आसवा पज्जत्तेसु बीस अप्पज्जत्तेसु णव आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा-(संखेज्ज) पंच कोडि तिणउदि लक्ख अट्ठणउदि सहस्स छ उत्तर बे सयं, *[1]खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं-णाणाजीवावेक्खा व एगजीवावेक्खा णिरंतरं, अट्ठबीस भावा अपज्जत्तेसु पण्णवीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसय धणू, तिसट्ठि पयडीणं बंधो, अट्ठसत्तदि पयडीणं उदओ, णिरय तिरियेहिं विणा छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि कोह कसाए पमत्त संजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

क्रोधी कषायी प्रमत्त संयत गुणस्थान

उन्हीं क्रोध कषायी प्रमत्तसंयत जीवों के आलाप कहने पर - एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त-अपर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्तियाँ छहो अपर्याप्ति, दस प्राण-सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, एक मनुष्य गति, एक पंचेन्द्रिय, एक त्रसकाय, ग्यारह योग पर्याप्त में दस योग अपर्याप्तक में एक आहारक मिश्र काय योग, तीन वेद अपर्याप्तक में एक पुरुष वेद, एक संज्वलन क्रोध कषाय, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान अपर्याप्तक में तीन ज्ञान, (सामायिक, छेदोपस्थापना और परिहार विशुद्धि) तीन संयम आहारक मिश्र में परिहार विशुद्धि बिना दो संयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, द्रव्य से छहों लेश्या भाव से तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, (उपशम, क्षायिक और क्षयोपशम) तीन सम्यक्त्व अपर्याप्त में उपशम बिना दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग अपर्याप्तक में छः उपयोग, सात ध्यान, इक्कीस आस्रव पर्याप्त में बीस अपर्याप्त में नो आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा (संख्यात) पाँच करोड़ तेरानवे लाख अन्ठानवे हजार दो सौ छह*[2], क्षेत्रापेक्षा-लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल-नानाजीवापेक्षा-सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर-नाना जीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा निरंतर, अट्ठाईस भाव अपर्याप्त में सत्ताईस, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, तिरेसठ प्रकृतियों का बंध, अट्ठत्तर प्रकृतियों का उदय एवं नरक तिर्यंच आयु के बिना एक सौ छियालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार क्रोध कषाय में प्रमत्त संयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

---

*[1] यद्यपि सम्पूर्ण प्रमत्त संयत जीवों का प्रमाण ऊपर उल्लिखित किया है, क्रोध कषायियों का प्रमाण हमें अलग से प्राप्त न होने के कारण संख्यात लिखा है। यहाँ संख्या निकालने का विधान कहते हैं सम्पूर्ण संयत राशि में संख्यात का भाग देने पर एक भाग अलग रख कर शेष बहु भाग के चार भाग कर देने पर प्रथम भाग लोभ, द्वितीय भाग माया तृतीय भाग क्रोध, चतुर्थ भाग मान को देना चाहिए। पश्चात् जो शेष बचा भाग है उसे संख्यात से भाजित करने पर बहुभाग प्रथम लोभ कषाय को दें। इस प्रकार एक भाग बचा है पुनः संख्यात से खंडित करने पर बहुभाग द्वितीय भेद माया कषाय को दे पश्चात् एक भाग को संख्यात से खण्डित करके बहुभाग क्रोध कषाय को दें शेष बचा मान कषाय को दें इस प्रकार चारों कषाय वाले जीव होते हैं

*[2] प्रकृति सत्त्व में इतनी विशेषता जाननी चाहिए यदि किसी जीव ने पूर्व आयु का बन्ध किया उसके 146 प्रकृतियों का व आयु का अबन्धक है तो 145 यदि किसी जीव ने अनंतानुबंधी की विसंयोजना की है तो 142 व 141 यदि किसी जीव ने दर्शन मोहनीय का क्षय कर दिया है तो 139 व 138 प्रकृति का सत्त्व पाया जाता है।

245. क्रोध कषाय अप्रमत्तसंयत गुणस्थान

1.	गुणस्थान	अप्रमत्तसंयत गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 संज्ञा (आहार संज्ञा बिना)
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद (द्रव्य से पुरुष वेद)
11.	कषाय	क्रोध (1 संज्वलन क्रोध)
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	3 (सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहार विशुद्धि)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	भाव से 3 शुभ व द्रव्य से 6 लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो., उप.)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग (4 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान
22.	आस्रव	19 (10 कषाय+9 योग) (1 संज्वलन क्रोध+9 नोकषाय+ 9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	संख्यात सामान्य विशेषता से प्रमत्त गुणस्थान वत् जानना
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना व एक जीव की अपेक्षा – निरन्तर
30.	भाव	28 (उप.1, क्षा.1, क्षयो. 14, औद. 10, पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष
32.	बन्ध	59
33.	उदय	73
34.	सत्त्व	146

245. कोहकसायअपमत्तसंजद गुणट्ठाणं

तेसिं कोहकसाइय जीवेसु अप्पमत्तसंजद जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि–एग अप्पमत्तसंजद गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदियपज्जत्त जीवसमासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, आहार सण्णा विणा तिण्णि सण्णा[*1], एग मणुस्सगदी, एग पंचिंदियाणि, एग तसकाओ, चत्तारि मणोजोगा चत्तारि वचि जोगा एग ओरालियकायजोगो णव जोगा, तिण्णि वेदा, संजलणकोहकसायो, केवलणाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, सामाइय–छेदोवट्ठावणा विहारसुद्धि तिण्णि संजमा, केवलदंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिया तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्मज्झाणाणि, ऊणबीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा संखेज्ज बे कोडि छण्णउदि लक्ख णवणउदि सहस्सं तिउत्तरसयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणेगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण णिरंतरं, अट्ठाबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, ऊणसट्ठि पयडीणं बंधो, तिसत्तदि पयडीणं उदओ, छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि कोह कसाए अपमत्तसंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

क्रोध कषाय अप्रमत्त संयत गुणस्थान

उन्हीं क्रोध कषायी जीवों में अप्रमत्तसंयत जीवों के आलाप कहने पर – एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्तियाँ, दस प्राण, आहार संज्ञा के बिना तीन संज्ञाएँ, एक मनुष्य गति, एक पंचेन्द्रिय, एक त्रसकाय, (चार मनोयोग चार वचन योग एक औदारिक काययोग) नौ योग, तीन वेद, एक क्रोध कषाय, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान, (सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहार विशुद्धि) तीन संयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, द्रव्य से छहों लेश्या भाव से तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, (उपशम क्षायिक क्षयोपशम) तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्म ध्यान, उन्नीस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा (संख्यात) दो करोड़ छियानवै लाख निन्यानवे हजार एक सौ तीन[*2], क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल–नाना जीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर नाना व एक जीवापेक्षा निरंतर, अट्ठाईस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, उनसठ प्रकृतियों का बंध, तिहत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार क्रोध कषाय में अप्रमत्तसंजद गुणस्थान समाप्त हुआ।

[*1] अप्रमत गुणस्थान में आहार संज्ञा नहीं होती, तीन संज्ञा होती हैं। सत्त्व का कथन प्रमत्त गुणस्थानवत् जानना चाहिए। शेष सभी प्रकार के कथन सरल है। संख्या का कथन प्रमत्त गुणस्थानवत् जानना उससे इसमें कोई भेद नहीं।

[*2] जिस प्रकार प्रमत्त संयत आलाप में टिप्पण दिया है उसी प्रकार यहाँ भी जानना।

246. क्रोध कषाय अपूर्वकरण गुणस्थान

1.	गुणस्थान	अपूर्वकरण गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 संज्ञा (आहार बिना)
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	संज्वलन क्रोध कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	2 (सामायिक, छेदोपस्थापना)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	1 शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (क्षायिक, उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग (4 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	5 (4 धर्मध्यान या 1 शुक्लध्यान) (एक शुक्ल ध्यान, मतांतर से 4 धर्मध्यान)
22.	आस्रव	19 (10 कषाय+9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	897 (उपशामक 299, क्षपक–598) (संख्यात)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	उपशामक–नाना व एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक– नाना जीव व एक जीव अपेक्षा – ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उपशामक–नाना जीवों की अपेक्षा – ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व/एक जीव निरंतर क्षपक–नाना जीव ज. एक समय उ. 6 माह एक जीव की अपेक्षा – निरन्तर
30.	भाव	सा. 26 भाव उपशामक–25 (उप.2, क्षा.1 (क्षायिक सम्यक्त्व), औद.8, क्षयोप.–12, पा.2)क्षपक=24
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष
32.	बन्ध	58
33.	उदय	69
34.	सत्त्व	क्षपक–138, उपशामक – 146 (नरकायु व तिर्यञ्चायु बिना) व अन्य जिसने अनन्तानुबन्धी कषाय की विसंयोजना कर दी उसके 142 प्रकृति व क्षायिक सम्यग्दृष्टि के 138 प्रकृति

246. कोहकसाय–अपुव्वयरण गुणट्ठाणं

तेसिं कोहकसायअपुव्वयरणजीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अपुव्वयरण गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदियपज्जत्त जीवसामसो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, आहारेण विणा तिण्णि सण्णा, एग मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, एग कोहकसाओ, केवलणाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, केवलदंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइया बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्मो अहवा एग सुक्को पंच झाणाणि, ऊणबीस आसवा, चौद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा सत्तणवदि उत्तर अट्ठसयं उवसामगेसु णवणवदिउत्तर बे सयं खवगेसु अट्ठणउदिउत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो उवसामगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं–उवसामगेसु णाणा जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वास पुधत्तं एगजीवावेक्खा णिरंतरं खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण छम्मास एग जीवावेक्खा णिरंतरं, छब्बीस भावा उवसामगेसु पणबीस भावा खवगेसु चउबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, अट्ठावण्ण पयडीणं बंधो, ऊणसत्तदि पयडीणं उदओ, खवगेसु अट्ठतीसुत्तर सयं उवसामगेसु छादालुत्तर सयं बादालुत्तर सयं व अट्ठतीसुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि कोह कसाए अपुव्वयरण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

क्रोधकषायी अपूर्वकरण गुणस्थान

उन्हीं क्रोध कषायी अपूर्वकरण जीवों के सामान्यालाप कहने पर – एक अपूर्वकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, आहार बिना तीन संज्ञाएँ, एक मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, एक त्रसकाय, नौ योग, तीन वेद, एक क्रोध कषाय, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान, (सामायिक–छेदोपस्थापना) दो संयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, द्रव्य से छहों लेश्या भाव से एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, (उपशम क्षायिक) दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्म अथवा एक शुक्ल पाँच ध्यान, उन्नीस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा आठ सौ सत्तानवे उपशामक दो सौ निन्यानवै क्षपक पाँच सौ अन्ठानवै, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल–उपशामक नाना व एकजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त क्षपक नाना व एकजीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर–उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एकजीवापेक्षा निरंतर क्षपक–नानाजीवापेक्षा ज. एक समय उत्कृष्ट छह माह* एक जीवापेक्षा निरंतर, छब्बीस भाव उपशामकों में पच्चीस भाव क्षपकों में चौबीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, अट्ठावन प्रकृतियों का बंध, उनहत्तर प्रकृतियों का उदय, क्षपकों में एक सौ अड़तीस उपशामकों में एक सौ छ्यालीस एक सौ ब्यालीस व एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार क्रोध कषाय में अपूर्वकरण गुणस्थान समाप्त हुआ।

---

*1 नरकायु, तिर्यंचायु बिना 146, अनंतानुबंधी का विसंयोजक के 142 क्षायिक सम्यग्दृष्टि उपशम श्रेणी वाले के 138 प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

*2 यहाँ पर जो अन्तर कहा है वह सामान्य की अपेक्षा छह माह कहा है ध.पु.5 कषाय पाहुड में क्रोध कषाय मान कषाय माया का क्षपक श्रेणी की अपेक्षा अन्तर एक वर्ष कहा है इसी प्रकार सर्वार्थसिद्धि में भी कहा है। कषाय पा.पु. 10 पृ. 308, 9 सर्वार्थसिद्धि 1,8।

विशेषार्थ :– संख्या का कथन करते समय जो नियम प्रमत्त गुणस्थान में कहा है वही यहाँ कहना है उससे इसमें कोई भेद नहीं है इतना विशेष है सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान में लोभ कषाय वाले जीव सामान्यवत् गुणस्थान के समान जानना। काल की व्याख्या करते हुए कहते हैं जिस प्रकार गुणस्थान परिवर्तन, कषाय परिवर्तन, व्याघात आदि से एक समय प्राप्त था उस प्रकार यहाँ नहीं होता यहाँ तो मात्र मरण की अपेक्षा ही प्राप्त होताहै। वह भी अपूर्वकरण में उतरते हुए मरण होता है तभी प्राप्त होता है चढ़ते हुए प्राप्त नहीं होता कारण पहले कह आये हैं। शेष अनिवृत्तिकरण सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान में चढ़ते हुए व उतरते हुए दोनों प्रकार से मरण होने पर प्राप्त होता है।

247. क्रोध कषाय अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

1.	गुणस्थान	अनिवृत्तिकरण गुणस्थान प्रथम भाग
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	2 (भय व आहार संज्ञा बिना)
6.	गति	मनुष्य गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	क्रोध कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	2 (सामायिक, छेदोपस्थापना)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	1 शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (क्षायिक, उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 (4 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	1 शुक्ल ध्यान व धर्मध्यान 4 (वीर स्वामी के अनुसार 4 धर्मध्यान व पृथक्त्व वितर्क शुक्ल ध्यान)
22.	आस्रव	13 (9 योग +4 कषाय) (एक क्रोध कषाय तीन वेद नो कषाय)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	897 (उपशामक 299, क्षपक 598)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	उपशामक- नाना जीव व एक जीव की अपेक्षा - ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक-नाना जीव व एक जीव की अपेक्षा- अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उपशामक- नाना जीव ज. एक समय, उ. वर्ष पृथक्त्व एक जीव निरंतर क्षपक- नाना जीव ज. एक समय उ. छः माह अथवा एक वर्ष एक जीव अपेक्षा-निरन्तर
30.	भाव	सामा.=26 (उप.25 - (क्षपक के-24 उपशम सम्यक्त्व बिना)
31.	अवगाहना	जघन्य- 3½ हाथ उत्कृष्ट- 525 धनुष
32.	बन्ध	22
33.	उदय	63
34.	सत्त्व	क्षपक - 138 उपशामक- 146 (सत्त्व संबंधी सारा कथन प्रमत्त अप्रमत्त गुणस्थान के समान जानना चाहिए।)

247. कोहकसायअणियट्टियरण गुणट्ठाणं पढम भागो

तेसिं कोहकसाइयपढमअणियट्टीणं जीवेसु आलाव भण्णमाणे अत्थि - एग-अणियट्टियरण-गुणट्ठाणं एग-सण्णी पंचिंदियपज्जत्त जीवसमासो, छह पज्जत्ती, दस पाणा, मेहुण परिग्गह बे सण्णा, एग मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, एग-कोहकसाओ, केवलणाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, सामाइय-छेदोवट्ठावणा बे संजमा, केवलदंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम-खइया बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, एग सुक्कज्झाणो पिथक्क वितक्क व चत्तारि धम्मज्झाणाणि (वीरसेण सामी मतेण तेरस आसवा), चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा सत्तणउदिउत्तर अट्ठ सयं उवसामगेसु णवणउदिउत्तर बे सयं, खवगेसु अट्ठणउदि उत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो उवसामगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वास पुधत्तं एगजीवावेक्खा णिरंतरं खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छम्मासा एग जीवावेक्खा णिरंतरं, सामण्णेण छब्बीस भावा उवसामगेसु पणबीस भावा खवगेसु चउबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, बाबीस पयडीणं बंधो, तिसट्ठि पयडीणं उदओ, खवगेसु अट्ठतीसुत्तर सयं उवसामगेसु छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि कोह कसाए अणियट्ठियरणस्स पढम भागो सम्मत्ता।

क्रोधकषाय अनिवृत्तिकरण गुणस्थान प्रथम भाग

उन्हीं क्रोध कषायी अनिवृत्तिकरण प्रथम भागवर्ती जीवों के आलाप कहने पर - एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, मैथुन परिग्रह दो संज्ञा, एक मनुष्य गति, एक पंचेन्द्रिय, एक त्रसकाय, नौ योग, तीनों वेद, एक क्रोध कषाय, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान, (सामायिक छेदोपस्थापना) दो संयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, द्रव्य से छहों लेश्या भाव से एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, (उपशम और क्षायिक) दो सम्यक्त्व*[1], संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, एक शुक्ल ध्यान पृथक्त्व वितर्क व चार धर्म ध्यान (वीरसेन स्वामी के अनुसार), तेरह आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा आठ सौ सत्तानवे उपशामक दो सौ निन्यानवे क्षपक पाँच सौ अन्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल उपशामक नाना व एकजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त क्षपक नाना व एकजीवापेक्षा अन्तर्मुहूर्त, अंतर-उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा निरंतर क्षपक नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह माह*[2] एक जीवापेक्षा निरन्तर, सामान्य से छब्बीस उपशामकों में पच्चीस भाव क्षपकों में चौबीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, बाईस प्रकृतियों का बंध, तिरेसठ प्रकृतियों का उदय एवं क्षपकों में एक सौ अड़तीस व उपशामकों में एक सौ छ्यालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार क्रोध कषाय में अनिवृत्तिकरण गुणस्थान का प्रथम भाग समाप्त हुआ।

---

*[1] क्षपक श्रेणी में केवल क्षायिक सम्यक्त्व होता है उपशम श्रेणी में दोनों सम्यक्त्व होते हैं।

*[2] यहाँ कषायों में क्षपक श्रेणी वाले जीवों का अन्तर सामान्य से 6 मास कहा है आचार्य पुष्पदंत भूतबली के अनुसार ध.पु. 5 पृ.112 सू.नं. 223 किंतु कषाय पाहुड व सर्वार्थ सिद्धि के अनुसार क्रोध, मान, माया कषाय से क्षपक श्रेणी का अन्तर कुछ अधिक एक वर्ष है। कषाय पाहुड़ पु.10 पृ. 308, 9। द्वयो: क्षपकयोनानाजीवापेक्षया जघन्यनैक: समय: उत्कर्षेण संवत्सर: सातिरेक: केवल लोभस्य सूक्ष्म सांपरायोपशमकस्य नाना जीवापेक्षा सामान्यवत् एक जीव प्रति नास्त्यन्तरम क्षपकस्य तस्य सामान्यवत् स.सि. 1,8।

248. क्रोध कषाय अनिवृत्तिकरण गुणस्थान द्वितीय भाग

1.	गुणस्थान	अनिवृत्तिकरण गुणस्थान द्वितीय भाग
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	परिग्रह संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	अपगत वेद
11.	कषाय	क्रोध कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	2 (सामायिक, छेदोपस्थापना)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	1 शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (उपशम, क्षायिक)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान अथवा एक शुक्ल ध्यान
22.	आस्रव	10 (9 योग + 1 कषाय)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	897 (उपशामक 299, क्षपक 598
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	उप. नाना व एक जीव की अपेक्षा- ज. एक समय, उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक नाना व एक जीव- अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उप. नाना जीव की अपेक्षा- ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीव निरंतर क्षपक नाना जीव ज. एक समय, उ. 6 माह, एक जीव- निरन्तर
30.	भाव	सामान्य से 23 उपशामक 22 क्षपक 21
31.	अवगाहना	जघन्य- 3½ हाथ उत्कृष्ट- 525 धनुष
32.	बन्ध	21
33.	उदय	60
34.	सत्त्व	क्षपक 106 उपशामक 146
		नोट- इसी प्रकार चारों कषाय के चार्ट समझना चाहिए इतनी विशेषता है कि जहाँ जिस कषाय का व्याख्यान करना हो वहाँ वही कषाय कहना चाहिए। इतनी और विशेषता है कि लोभ कषाय में दसवाँ गुणस्थान भी पाया जाता है।

248. कोहकसायअणियट्टियरणं विदियभागो

तेसिं कोहकसाइय अणियट्टीणं विदिय भागे जीवेसु आलाव भण्णमाणे अत्थि एग अणियट्टियरण गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदियपज्जत्त जीवसमासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, एग-परिग्गहसण्णा, एग-मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, अवगदवेदो, एग कसाओ, केवलणाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, केवल दंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेसा भावेण एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम-खइया बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, एगं पिथक्कवितक्कसुक्कज्झाणं वा चत्तारि धम्मज्झाणाणि, दस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा सत्तणउदि उत्तर अट्ठ सयं उवसामगेसु णवणउदिउत्तर बे सयं खवगेसु अट्ठणउदिउत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो उवसामगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वास पुधत्तं एग जीवावेक्खा णिरंतरं खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छम्मासा एगजीवावेक्खा णिरंतरं, तेबीस भावा उवसामगेसु बाबीस खवगेसु इगबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं, उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, इगबीस पयडीणं बंधो, सट्ठि पयडीणं उदओ, खवगेसु छ उत्तर सयं उवसामगेसु छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि कोह कसाए अणियट्टियरणस्स विदिय भागो सम्मत्ता।

क्रोध कषाय अनिवृत्तिकरण द्वितीय भाग

उन्हीं क्रोध कषायी अनिवृत्तिकरण द्वितीय भागवर्ती जीवों के आलाप कहने पर - एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, एक परिग्रह संज्ञा, एक मनुष्य गति, एक पंचेन्द्रिय, एक त्रसकाय, नौ योग, अपगत वेद, एक क्रोध कषाय, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, द्रव्य से छहों लेश्या भाव से एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, एक पृथक्त्व वितर्क शुक्ल अथवा चार धर्म ध्यान, दस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा आठ सौ सत्तानवै उपशामक दो सौ निन्यानवै क्षपक पाँच सौ अट्ठानवै, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल-उपशामक नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त क्षपक - नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अन्तर-उपशामक नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा निरंतर क्षपक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह माह* एक जीवापेक्षा निरंतर, 23 भाव उपशामकों में 22 भाव क्षपकों में 21 भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, इक्कीस प्रकृतियों का बंध, साठ प्रकृतियों का उदय एवं क्षपकों में एक सौ छह व उपशामकों में एक सौ छ्यालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार क्रोध कषाय में अनिवृत्तिकरण का द्वितीय भाग समाप्त हुआ।

नोट - अनिवृत्तिकरण में यद्यपि क्रम क्रम से प्रकृतियाँ नष्ट होती है, जैसे प्रथम भाग में 16, द्वितीय भाग में 8 कषाय, तृतीय भाग में नपुंसक वेद, चतुर्थ भाग में स्त्री वेद, पंचम भाग में 6 नो कषाय, छटवें भाग में पुरुष वेद, सप्तम में क्रोध, आठवें में मान, नोवें में माया इस प्रकार केवल सत्त्व में अंतर आता है।

* यही क्रम मान, माया, लोभ में चलेगा मात्र सत्त्व में अंतर आयेगा विशेष इतना है कि लोभ के साथ दसवाँ गुणस्थान भी बनेगा।

यहाँ मात्र प्रथम भाग व द्वितीय भाग के रुप में जिसमें वेद नष्ट होता है वह प्रथम भाग रूप में तथा जिसमें संज्वलन क्रोध कषाय नष्ट होती है उसे द्वितीय भाग रूप में दर्शाया है शेष अन्य भागों में आगम से जानकर ग्रहण करें यहाँ विस्तार भय से नहीं दिया जा रहा है।

नोट- मान, माया, लोभ कषाय के आलाप इसी प्रकार बनेंगे इनमें उनमें कोई अन्तर नहीं है। इतनी विशेषता है कि क्रोध कषाय कहते समय मान अथवा माया अथवा लोभ कषाय कहना चाहिए इतनी और विशेषता है कि लोभ कषाय में दसवां गुणस्थान भी बनता है जो सामान्यवत् है।

249. अकषायी सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	11–12–13–14	11–12–13–14	13
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त	पर्याप्त	अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	छहों पर्याप्ति छ अपर्याप्ति	छ प.	6 अ.
4.	प्राण	दस–चार दो एक	10–4–2–1	2, 1
5.	संज्ञा	संज्ञातीत	–	–
6.	गति	1 मनुष्यगति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रस, अकाय	–	–
9.	योग	11, अयोगी भी	नौ, पाँच, अयो.	2 औ.मि.,का.
10.	वेद	अपगत वेदी	–	–
11.	कषाय	अकषायी	–	–
12.	ज्ञान	5	5	1 केवलज्ञान
13.	संयम	1 यथाख्यात	–	–
14.	दर्शन	चार	चार	1 केवलदर्शन
15.	लेश्या	6 द्रव्य 1 भाव लेश्या, अलेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य, भव्याभव्य रहित	भव्य व भव्याभव्य रहित	भव्य
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक, उपशम	दोनों	क्षायिक
18.	संज्ञी	संज्ञी, नो संज्ञी नो असंज्ञी	–	नो संज्ञी नो असंज्ञी
19.	आहारक	आहारक अनाहारक	आहारक अनाहारक	दोनों
20.	उपयोग	9 व युगपत्	9	2
21.	ध्यान	4 शुक्ल	4	कोई ध्यान नहीं
22.	आस्रव	11 अनास्रव	9, 5	दो
23.	जाति	14 लाख	–	–
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़	–	–
25.	संख्या	संख्यात, 11–299, 12–598, 13–898502, 14–598		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग–सर्वलोक		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग–सर्वलोक		
28.	काल	नाना एकजीवापेक्षा ज.–एक समय उ.–अंतर्मुहूर्त, तेरहवें ना. जीव. सर्वकाल एक. जी. ज.–अन्तर्मुहूर्त उ. 8 वर्ष अंतर्मुहूर्त कम एक पूर्व कोटि		
29.	अन्तर	नाना. ज.–एक समय उ.–उपशांत में वृर्ष पृथक्त्व, क्षीणमोह में छ माह, सयोगी निरंतर एक. जीव उपशांत में ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन शेष में निरंतर		
30.	भाव	21, 20, 14, 13		
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ	उत्कृष्ट– 525 धनुष	
32.	बन्ध	1 साता वेदनीय 14वें में अबंध		
33.	उदय	59, 57, 42, 12/13		
34.	सत्त्व	146, 101, 85, चोदहवें द्विचरम 85 चरम 12/13		
		✻ नो कषाय हमेशा कषाय के साथ चलती हैं, विनष्ट कषाय से पहले हो जाती हैं, इसलिए वे यहाँ समाहित हैं आस्रव में उन्हें सम्मिलत किया है।		

249. अकसायी

अकसायजीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि - उवसंत-खीण-सजोगी-अजोगी चत्तारि गुणट्ठाणाणि, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीवसमासा अतीदजीव समासो वा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, दस पाणा चउ-बे-एग पाणा अतीद पाणा अपज्जत्तेसु बे एग पाणा वा, उवसंत व खीण सण्णा, मणुस्सगदी सिद्धगदी वा, पंचिंदियाणि अणिंदियाणि व, तसकाओ अकाओ, एगारस जोगा पज्जत्तेसु णवजोगा अपज्जत्तेसु बे जोगा (चत्तारि मणजोगा चत्तारि वचि जोगा ओरालियकाय ओरालियमिस्स कम्माण काय जोगा) अजोगो, अवगदवेदो, अकसायो, पंच णाणाणि अपज्जत्तेसु एग केवल णाणो, जहाक्खाद-विहारसुद्धि संजमो अतीदसंजमो वा, चत्तारि दंसणाणि अपज्जत्तेसु एग केवल दंसण वा, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण एग सुक्क लेस्सा अलेस्सा वि, भव्व सिद्धिया भव्वाभव्वसिद्धया विणा, उवसम खइय बे सम्मत्ता अपज्जत्तेसु खइय सम्मत्ता, सण्णी व णोसण्णी-णो असण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि, णव उवजोगा व दंसणणाणोवजोगा जुगुमं, चत्तारि सुक्कज्झाणाणि, एकारस सत्त आसवा आसवातीत पज्जत्तेसु नव पंच अपज्जत्तेसु बे आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा उवसंतेसु णवणउदिउत्तर बे सयं, खीणमोहेसु अट्ठणउदि उत्तर पंच सयं सजोगीसु अट्ठ लक्ख अट्ठणउदि सहस्स बे उत्तर पंच सयं अजोगीसु अट्ठणउदि उत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा-लोयस्स असंखेज्जदि भागा सव्वलोयो, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा सव्वलोयो वा, कालो णाणेगजीवावेक्खया जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं सजोगेसु णाणा जीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अट्ठवास अंतोमुहुत्तूण कोडिपुव्वं, अंतरं-णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण उवसंतेसु वासपुधत्तं खीणमोहो अजोगीसु छम्मास सजोगीसु णिरंतरं एग जीवावेक्खा उवसंतेसु जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गलपरायट्टं सेसेसु जहण्णुक्कस्सेण णिरंतरं, उवसंते इगवीस खीण मोहे बीस सजोगीसु चोद्दस अजोगिसु तेरस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणवीसुत्तर पंचसयं धणू उवसंतादो सजोगिसु एग सादा वेयणियो बन्धो अजोगे अबंधो, ऊणसट्ठि सत्तावण्ण बादाल तेरस बारस वा पयडीणं उदयो, छादाल उत्तरसयं एगुत्तर सयं पंचासीदि अजोगिसु दुचरिमे पंचासीदी चरिमे वारस तेरसवा पयडीणं सच्च होंति।

इदि कसाय मग्गणासु अकसायी आलाव सम्मत्ता।

अकषायी

अकषायी जीवों के आलाप कहने पर - उपशान्तकषाय क्षीणकषाय सयोग केवली अयोग केवली चार गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास अतीत जीव समास स्थान भी है। छ पर्याप्ति छ अपर्याप्ति, दशों प्राण चार-दो-एक प्राण व सिद्ध जीवों की अपेक्षा प्राणातीत, उपशांत व क्षीण संज्ञा, मनुष्य गति तथा सिद्ध गति भी है, पंचिन्द्रिय अनिन्द्रिय, त्रसकाय व अकाय, ग्यारह योग पर्याप्तक में नौ योग (चारों मनोयोग, चारों वचन योग, औदारिक, औदारिक मिश्र, कार्माण काय योग) व अयोग, अपगत वेद, अकषाय, पाँचों ज्ञान अपर्याप्तक में केवलज्ञान, यथाख्यात विहार शुद्धि संयम और संयम रहित स्थान भी है, चारों दर्शन अपर्याप्तक में केवल दर्शन, द्रव्य से छहों लेश्या भाव से शुक्ल लेश्या तथा अलेश्या स्थान भी है, भव्य सिद्धिक और भव्य व अभव्य सिद्धिक बिना, उपशम क्षायिक दो सम्यक्त्व, अपर्याप्तक में क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञी तथा नो संज्ञी नो असंज्ञी, आहारक और अनाहारक दोनों, नौ उपयोग व दर्शन ज्ञानोपयोग युगपत, चारों शुक्ल ध्यान, ग्यारह-सात आस्रव व अनास्रव पर्याप्त में नौ-पाँच अपर्याप्त में दो आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा ग्यारहवें में 299, बारहवें में 598, तेरहवें में 898502 चौदहवें में 598, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग व सर्वलोक, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग व सर्वलोक काल-नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त तेरहवें गुणस्थान में नाना जीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम एक कोटि पूर्व, अंतर-नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट उपशान्त में वर्ष पृथक्त्व क्षीण मोह में छ माह सयोगी में निरंतर एक जीवापेक्षा उपशांत में जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन शेष सभी में जघन्योत्कृष्ट निरंतर ग्यारहवे गुण 21 भाव बारहवे में 20 सयोग केवली 14 अयोग केवली 13 भाव होते हैं। जघन्य अवगाहना 3½ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, बंध ग्यारह बारह तेरह एक साता वेदनीय अयोगी बंध रहित, उदय ग्यारहवें 59 बारहवें 57 सयोगी 42 अयोगी 12/13 प्रकृति, सत्त्व 11 = 146 12 = 101 13 = 85 14=द्वि चरम 85 चरम=12/13 सत्त्व होता है।

इस प्रकार कषाय मार्गणा में अकषायियों का आलाप समाप्त हुआ।

नोट - अयोग केवली के द्विचरम समय में 85 प्रकृति व चरम समय में 12 प्रकृति का सत्त्व पाया जाता है।

249. 11वां गुणस्थान (अकषाय) (I)

1.	गुणस्थान	उपशान्त कषाय गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	0 उपशांत संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग (4 मन+4 वचन+ 1 औदारिक)
10.	वेद	0 अवेद
11.	कषाय	उपशांत कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	यथाख्यात संयम
14.	दर्शन	3 (चक्षु, अचक्षु, अवधिदर्शन)
15.	लेश्या	1 शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग (4 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	1 पृथक्त्व वितर्क
22.	आस्रव	9 योग
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	299
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा– ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त एक जीव की अपेक्षा– ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीव की अपेक्षा– ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व एक जीव की अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन
30.	भाव	21 (उपशम 2, क्षा.1 (क्षायिक सम्यक्त्व), क्षयो. 12, औद.4, पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष
32.	बन्ध	1 साता वेदनीय
33.	उदय	59
34.	सत्त्व	146

249. 12वा गुणस्थान अकषाय (II)

1.	गुणस्थान	क्षीण कषाय गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	0 क्षीण संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	0 अपगतवेद
11.	कषाय	0 क्षीण कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	यथाख्यात
14.	दर्शन	3 दर्शन (केवल दर्शन बिना)
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग (4 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	2(1) पृथक्त्व वितर्क (2) एकत्व वितर्क
22.	आस्रव	9 योग
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	598
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा- ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त एक जीव की अपेक्षा- ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीव की अपेक्षा- ज. एक समय उ. छ: माह एक जीव की अपेक्षा- निरन्तर
30.	भाव	20 (औद. 4, क्षयो. 12, क्षा.2, पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य- 3½ हाथ उत्कृष्ट- 525 धनुष
32.	बन्ध	1 साता वेदनीय
33.	उदय	57
34.	सत्त्व	101

249. 13वा गुणस्थान सयोगकेवली अकषायी (III)

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	13वाँ संयोगकेवली गुणस्थान	–	
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त	–	–
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति 6 अपर्याप्ति	–	अपर्या.
4.	प्राण	4 (आयु, स्वासोच्छवास, वचनबल, कायबल)	4	2 (आयु. का.ब.)
5.	संज्ञा	0	–	–
6.	गति	मनुष्यगति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	7 सामान्य पर्याप्तक में 5 व अपर्या. 2 समुद्घात के समय	5	2 (औ.मि.का.)
10.	वेद	0 अपगतवेद	–	–
11.	कषाय	0 अकषायी	–	–
12.	ज्ञान	केवलज्ञान	–	–
13.	संयम	यथाख्यात चारित्र	–	–
14.	दर्शन	केवल दर्शन	–	–
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व	–	–
18.	संज्ञी	नो संज्ञी, नो असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	दोनों (आहारक, अनाहारक)	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	2 (केवलज्ञान + केवलदर्शन)	–	–
21.	ध्यान	1 सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती	–	कोई ध्यान नहीं
22.	आस्रव	7 (5 + 2 समुद्घात के समय)	5	2
23.	जाति	14 लाख	–	–
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़	–	–
25.	संख्या	898502		60
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग सर्वलोक (सर्वलोक समुद्घात के समय)		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग सर्वलोक (सर्वलोक समुद्घात के समय)		
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा– सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. 8 वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम एक कोटिपूर्व		
29.	अन्तर	नाना जीव की अपेक्षा– निरन्तर एक जीव की अपेक्षा– निरन्तर		
30.	भाव	14 (क्षायिक 9, औद. 3, पा. 2)		
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ	उत्कृष्ट– 525 धनुष	
32.	बन्ध	1 साता वेदनीय		
33.	उदय	42		
34.	सत्त्व	85		

249. 14वा गुणस्थान अयोग केवली अकषायी (IV)

1.	गुणस्थान	14वाँ अयोग केवली गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	1 आयु
5.	संज्ञा	0
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	अयोग
10.	वेद	अपगतवेद
11.	कषाय	अकषाय
12.	ज्ञान	केवलज्ञान
13.	संयम	यथाख्यात संयत
14.	दर्शन	केवल दर्शन
15.	लेश्या	अलेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	नो संज्ञी, नो असंज्ञी
19.	आहारक	अनाहारक
20.	उपयोग	2
21.	ध्यान	व्युपरत क्रिया निवर्तीनि
22.	आस्रव	0
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	598
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना व एक जीव की अपेक्षा– ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीव की अपेक्षा– ज. एक समय उ. 6 माह एक जीव की अपेक्षा– निरन्तर
30.	भाव	13 (क्षायिक 9, पा.2, औद.2)
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष
32.	बन्ध	0
33.	उदय	12/13
34.	सत्त्व	द्विचरम समय 85, चरम समय 12

250. ज्ञान मार्गणा सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	1–14	–	1,2,4,6,13
2.	जीवसमास	14 जीवसमास पर्याप्त व अपर्याप्त	7 जीवसमास पर्याप्त	7 जीवसमास अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति, अपर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति	6,5,4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	पर्याप्त 4,6,7,8,9,10, अपर्याप्ति 3,4,5,6,7,7	10,9,8,7,6,4	7,7,6,5,4,3
5.	संज्ञा	चारों संज्ञा व क्षीण संज्ञा	–	–
6.	गति	चारों गति	–	–
7.	इन्द्रिय	एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	स्थावर व त्रसकाय	–	–
9.	योग	15 योग व अयोगी	11 योग	4
10.	वेद	3 वेद व अपगतवेद	–	–
11.	कषाय	25 व अकषाय	–	–
12.	ज्ञान	8 ज्ञान	–	6 (कुअवधि व मन:पर्यय बिना
13.	संयम	7 संयम	–	4 (मिश्र, सूक्ष्मसाम्पराय, परिहार विशुद्धि)
14.	दर्शन	4 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य व अभव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	6 सम्यक्त्व	–	5 (मिश्र बिना)
18.	संज्ञी	संज्ञी व असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक व अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	12	–	10 (6 ज्ञानो.+4 दर्शनो.)
21.	ध्यान	सभी 16	–	12
22.	आस्रव	57	53 (25+11+12+5)	46 (25+4+12+5)
23.	जाति	84 लाख		
24.	कुलकोटि	199½ लाख करोड़		
25.	संख्या	अनंतानंत		
26.	क्षेत्र	सर्वलोक		
27.	स्पर्शन	स्व.वे.वि.मा. उ.–सर्वलोक		
28.	काल	नाना व एक जीव की अपेक्षा – सर्वकाल		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – निरन्तर एक जीव की अपेक्षा – निरंतर		
30.	भाव	53 (औदा. 21, मिश्र 18, क्षा.9, पा.3, औप.2) अपर्याप्तक 50		
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट– 1000 योजन		
32.	बन्ध	120		
33.	उदय	122		
34.	सत्त्व	148		

250. णाणमग्गणा सामण्णं

अह णाणमग्गणा भण्णदे तेसुं णाणमग्गणाणुवादेण सामण्णालाव भण्णमाणे अत्थि, एयत्तो चोद्दस गुणट्ठाणाणि अपज्जत्तेसु मिच्छत्त सासण असंजदो पमत्त सजोगी पंच गुणट्ठाणाणि, सत्त पज्जत्त सत्त अपज्जत्त चोद्दस जीवसमासा, छ पंच चउ पज्जत्ती छ पंच चउ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस णव अट्ठ सत्त छ चउ अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छ पंच चउतिपाणा, चत्तारि सण्णा व खीणसण्णा, चत्तारि गदी, एइंदियत्तो पंचिंदियाणि, तसथावरा दोण्णि काया, पंचदस जोगा पज्जत्तेसु एगारस अपज्जत्तेसु चत्तारि जोगा अजोगी वि तिण्णि वेदा अवेदी, पणबीस कसाया व अकसायी, अट्ठ णाणाणि अपज्जत्तेसु विभंगेहि व मणपज्जयेहि विणा छणाणाणि, सत्त संजमा पज्जत्तेसु सत्त अपज्जत्तेसु चत्तारि संजमा, चत्तारि दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्वसिद्धिया दोण्णि, छ सम्मत्ता अपज्जत्तेसु मिस्सेण विणा पंच सम्मत्ता, सण्णी असण्णी दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, बारस उवजोगा अपज्जत्तेसु दस उवजोगा, सोडस झाणाणि अपज्जत्तेसु बारस झाणाणि, सत्तावण्ण आसवा पज्जत्तेसु तिरेवण्ण अपज्जत्तेसु छादाल आसवा, चउरासीदि लक्ख जादी, अद्धणवणउदि उत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडिणं, संखावेक्खा अणंताणंत, खेत्तावेक्खा सव्वलोयो, फासावेक्खया सगट्ठाणं विहार वेयणा वेगुव्विया मारणांतिय उववादोवेक्खा सव्वलोयो, कालो णाणेगजीवावेक्खा सव्वकालो, अंतरं-णाणेगजीवावेक्खा णिरंतरं तिरेवण्ण भावा अपज्जत्तेसु पंचास भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागो उक्कस्सेण जोजणसहस्सं, बीसुत्तर सयं पयडीण बंधो, बाबीसुत्तर सयं पयडीणं उदयो, अड़दालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि णाण मग्गणासु सामण्णालाव सम्मत्ता।

ज्ञान मार्गणा सामान्य

अब ज्ञान मार्गणा का कथन करते हुए उसी ज्ञान मार्गणा के अनुवाद से सामान्यालाप कहने पर-एक से चौदह गुणस्थान अपर्याप्त में एक-दो-चार-छह-तेरह गुणस्थान, सात पर्याप्त सात अपर्याप्त चौदह जीस समास, छह-पाँच-चार पर्याप्ति छह-पाँच-चार अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस-नौ-आठ-सात-छह-चार प्राण अपर्याप्त में सात-सात-छ-पाँच-चार-तीन प्राण, चारों संज्ञाएँ व क्षीण संज्ञा, चारों गति, एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय, त्रस स्थावर दोनों काय, पंद्रह योग व अयोगी पर्याप्त में ग्यारह अपर्याप्त में चार योग, तीनों वेद व अवेदी, पच्चीस कषाय व अकषाय, आठों ज्ञान अपर्याप्त में कुअवधि व मन:पर्यय ज्ञान बिना 6 ज्ञान, सातों संयम अपर्याप्त में चार संयम, चारों दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक दोनों, छहो सम्यक्त्व अपर्याप्त में मिश्र बिना पाँच सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी दोनों, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्त में आहारक अपर्याप्त में दोनों, बारह उपयोग, सोलह ध्यान अपर्याप्तक में बारह ध्यान, सत्तावन आस्रव पर्याप्त में तिरेपन अपर्याप्त में छियालीस आस्रव, चौरासी लाख जाति, एक सौ साढ़े निन्यानवे लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा अनंतानंत, क्षेत्रापेक्षा सर्वलोक, स्पर्शन-स्वस्थान वेदना विक्रिया मारणांतिक उपपाद की अपेक्षा सर्वलोक, काल-नाना जीवापेक्षा सर्वकाल एकजीवापेक्षा सर्वकाल, अंतर-नाना जीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा निरंतर, तिरेपन भाव अपर्याप्तक में पंचास भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ बीस प्रकृति का बंध, एक सौ बाईस प्रकृति का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार ज्ञान मार्गणा में सामान्यालाप समाप्त हुआ।

251. मति अज्ञानी व श्रुत अज्ञानी का अलाप सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	1, 2 (मिथ्यात्व सासादन)	–	–
2.	जीवसमास	14 जीवसमास	7 पर्याप्त जीवसमास	7 अपर्याप्त जीवसमास
3.	पर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति व अपर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति	6,5,4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	प. 4,6,7,8,9,10, अप.3,4,5,6,7,7	प. 4,6,7,8,9,10	3,4,5,6,7,7
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	चारों गति	–	–
7.	इन्द्रिय	1–5 इन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रस, स्थावर	–	–
9.	योग	13 (आहारकद्विक बिना)	10 योग	3 योग
10.	वेद	3 वेद	–	–
11.	कषाय	25 कषाय	–	–
12.	ज्ञान	2 (कुमति, कुश्रुत)	–	–
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 दर्शन (चक्षु व अचक्षु)	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य व अभव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व, सासादन सम्यक्त्व	2	2
18.	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	2 (आहारक, अनाहारक)	आहारक	2 (आहारक, अनाहारक)
20.	उपयोग	4 (2 ज्ञानो. + 2 दर्शनो.)	–	–
21.	ध्यान	8 (4 आर्त्त, 4 रौद्र)	–	–
22.	आस्रव	55 (25 कषाय+12 अवि.+13 योग+5 मि.)	52 (25क.+12अवि.+10यो+5मि.)	45 (25+12+3+5)
23.	जाति	84 लाख		
24.	कुलकोटि	199½ लाख करोड़		
25.	संख्या	अनंतानंत (अनंतानंत लोक प्रमाण या अनंतानंत उत्सर्पिणी अवसर्पिणी से अपहृत नहीं होते		
26.	क्षेत्र	सर्वलोक		
27.	स्पर्शन	स्वस्थान–वे.क.मा.उ.– सर्वलोक, वि.विक्रि.पद परिणत जीवो ने कुछ कम 8/14 राजू स्पर्श किया है।		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन*		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – निरन्तर एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. 132 सागर		
30.	भाव	33 (औद. 21, मि.9, पा.3) अपर्याप्तक – 33		
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट– 1000 योजन		
32.	बन्ध	117 (तीर्थंकर व आहारकद्विक बिना)		
33.	उदय	117 गुणस्थानोक्त (आहारकद्विक, तीर्थंकर, सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्त्व बिना)		
34.	सत्त्व	148		

* यहाँ सादि मिथ्यादृष्टि की अपेक्षा से काल कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन कहा है किन्तु अनादि मिथ्यादृष्टि का काल तथा अभव्य का काल तो अनंतकाल कहा है।

251. मदिसुदअण्णाणी सामण्णं

अह णाणमग्गणालाव भण्णदे मदिसुदअण्णाणी जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि-मिच्छत्त सासणं बे गुणट्ठाणाणि, सत्त पज्जत्त सत्त अपज्जत्त चोद्दस जीवसमासा, छ पंच चउ पज्जत्ती छ पंच चउ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस णव अट्ठ सत्त छ चउ पाणा अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छ पंच चउ तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, एयत्तो पंचिंदियाणि, छक्कायो, आहारदुगेहि विणा तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, कुमदिकुसुद बे अण्णाणाणि, एग असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्वसिद्धिया दोण्णि, मिच्छत्त सासणं बे सम्मत्ता, सण्णी असण्णी दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, चत्तारि उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द अट्ठज्झाणाणि, पणवण्ण आसवा पज्जत्तेसु वावण्ण अपज्जत्तेसु पणदाल आसवा, चउरासीदि लक्ख जादी, अद्ध णवणउदि उत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अणंताणंत, खेत्तावेक्खा सव्वलोयो, फासावेक्खा सगट्ठाणं वेयणा कसाय मारणंतिय उपपादावेक्खा सव्वलोयो विहार वेगुव्विया अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गलपरायट्टं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण बत्तीसुत्तर सयं सायरोवमाणि, तेतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजणसहस्सं, सत्तदसुत्तर सयं पयडीणं बंधो, सत्तदसुत्तर सयं पयडीणं उदओ, अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि मदि सुद अण्णाणीसु सामण्णालाव सम्मत्ता

मतिश्रुत अज्ञानी सामान्य

अब ज्ञान मार्गणा का कथन करते हैं। मतिश्रुत अज्ञानी जीवों के सामान्यालाप कहने पर - मिथ्यात्व सासादन दो गुणस्थान, सात पर्याप्त सात अपर्याप्त चौदहों जीव समास, छह पाँच चार पर्याप्ति छह पाँच चार अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस नौ आठ सात छह चार प्राण अपर्याप्त में सात-सात-छह-पाँच-चार-तीन प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, एक से पंचेन्द्रिय, छहों काय, आहारक द्विक बिना तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीनों वेद, पच्चीस कषाय, कुमति कुश्रुत दो अज्ञान, एक असंयम, चक्षु-अचक्षु दो दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक दोनों, मिथ्यात्व सासादन दो सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी दोनों, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, चार उपयोग, चार आर्त्त चार रौद्र आठ ध्यान, पचपन आस्रव पर्याप्त में बावन अपर्याप्त में पैंतालीस आस्रव, चौरासी लाख जाति, एक सौ साढ़े निन्यानवे लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा अनंतानंत, क्षेत्रापेक्षा-सर्वलोक, स्पर्शन-स्वस्थान-वेदना-कषाय समुद्घात-मारणान्तिक उपपाद की अपेक्षा सर्वलोक व विहार विक्रिया कुछ कम 8/14 राजू, काल-नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एकजीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्ध पुद्गल परावर्तन, अंतर नानाजीवापेक्षा निरंतर एकजीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट एक सौ बत्तीस सागर, पर्याप्तक अपर्याप्तक में तैंतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ सत्तरह प्रकृतियों का बंध, एक सौ सत्तरह प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार मति श्रुत अज्ञानियों में सामान्यालाप समाप्त हुआ।

✻ अनंत लोक प्रमाण या अनंतानंत उत्सर्पिणी अवसर्पिणी से अपहृत नहीं होते।

विशेषार्थ :- मतिज्ञान और श्रुतज्ञान दोनों साथ साथ रहते हैं यदि कोई जीव सम्यग्दृष्टि है तो उनका ज्ञान सम्यग्ज्ञान हो जाता है यदि मिथ्यादर्शन का उदय है अर्थात् मिथ्यादृष्टि है तो उनका ज्ञान मिथ्याज्ञान हो जाता है। यहाँ चारों गतियों के जीव पाये जाते हैं प्रश्न हो सकता है कि देव और नारकियों के तो तीन ज्ञान होते हैं फिर दो ज्ञान के साथ वे कैसे हो सकते हैं ?

समाधान- यहाँ ऐसी शंका नहीं करनी चाहिए क्योंकि उनको ज्ञान तो तीन हैं यानि लब्धिरूप में तो तीन है किन्तु उपयोग रूप मतिज्ञान और उसका सहचारी श्रुतज्ञान है। इसलिए स्पर्शन विहारादि की अपेक्षा 8/14 राजू कहा है क्योंकि 8/14 राजू स्पर्शन देवों के ही बनता है अन्य में नहीं। काल नाना जीवों का तो सर्वकाल कहा है एक जीव का यद्यपि अनादि अनंत भी प्राप्त होता है क्योंकि अभव्य और अभव्य जैसे ही दूरानदूरभव्यों का काल अनादि अनंत तथा अनादि सांत, मुक्तिगत जीवों का प्राप्त होता है और सादि सांत जिन्होंने पहले सम्यक्त्व प्राप्त किया यानि सम्यग्ज्ञान प्राप्त किया बाद में मिथ्यादृष्टि हो गये। यहाँ सादि सात जीवों का यानि पहले सम्यक्त्व प्राप्त किया बाद में मिथ्यादृष्टि हो गये उनका काल यहाँ प्रयोजनीय है और उनका काल जघन्य से अन्तर्मुहूर्त है उत्कृष्ट से कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन कहा जिसका अर्थ इसी ग्रंथ में कई बार आया है। अत: समझ लेना चाहिए। अन्तर भी जघन्य अन्तर्मुहूर्त सुगम है। उत्कृष्ट दो छयासठ सागर यानि कोई अनादि मिथ्यादृष्टि उपशम सम्यक्त्व को प्राप्त हुआ पश्चात् वेदक सम्यग्दृष्टि हो गया और वेदक सम्यक्त्व के साथ 66 सागर तक रहा पुन: अन्तुर्मुहूर्त के लिए मिश्र में गया पश्चात् पुन: वेदक सम्यक्त्वी हो गया और 66 सागर रहा पश्चात् मिथ्यादृष्टि हो गया इस प्रकार दोनों कुज्ञानों का अन्तर प्राप्त हुआ शेष कथन सरल है।

252. कुमति व कुश्रुत अज्ञानी मिथ्यात्व गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	मिथ्यात्व	–	–
2.	जीवसमास	14 जीवसमास पर्याप्त व अपर्याप्त	7 जीवसमास पर्याप्त	7 जीवसमास अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति व अपर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति	6,5,4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	4,6,7,8,9,10 पर्याप्त, 3,4,5,6,7,7 अप.	10,9,8,7,6,4	7,7,6,5,4,3
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	चारों गति	–	–
7.	इन्द्रिय	एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रस/स्थावर	–	–
9.	योग	13 (आहारकद्विक बिना)	10 योग	3 योग
10.	वेद	3 वेद	–	–
11.	कषाय	25 कषाय	–	–
12.	ज्ञान	2 (कुमति, कुश्रुत)	–	–
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 दर्शन (चक्षु व अचक्षु दर्शन)	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य, अभव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी व असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	4 उपयोग	–	–
21.	ध्यान	8 (4 आर्त्त, 4 रौद्र)	–	–
22.	आस्रव	55 (25 कषा.+13 योग+12 अवि.+5 मि.)	52 (25+10+12+5)	45 (25+3+12+5)
23.	जाति	84 लाख		
24.	कुलकोटि	199½ लाख करोड़		
25.	संख्या	अनंतानंत		
26.	क्षेत्र	सर्वलोक		
27.	स्पर्शन	पूर्ववत् (अर्थात् सर्वलोक व कुछ कम 8/14 राजू)		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन		
29.	अन्तर	नाना व एक जीव की अपेक्षा – निरन्तर		
30.	भाव	33 (औद. 21, क्षयो. 9, पा.3) अपर्याप्तक में 33		
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट– 1000 योजन		
32.	बन्ध	117 गुणस्थानोक्त		
33.	उदय	117 गुणस्थानोक्त		
34.	सत्त्व	148		

252. मदिसुदअण्णाणी मिच्छत्त गुणट्ठाणं

तेसिं मदिसुदअण्णाणी मिच्छाइट्ठि जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि - एग मिच्छत्त गुणट्ठाणं, सत्त पज्जत्त सत्त अपज्जत्त चोद्दस जीवसमासा, छ पंच चउ पज्जत्ती छ पंच चउ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस णव अट्ट सत्त छ चदु पाणा अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छ पंच चदु तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, एइंदियत्तो पंचिंदियाणि, छक्काया, आहारदुगेहि विणा तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अप्पज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, कुमइ कुसुद बे अण्णाणाणि, असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्वसिद्धिया दोण्णि, मिच्छत्त सम्मत्तं, सण्णी असण्णी दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि, चत्तारि उवजोगा, अट्ठज्झाणाणि, पणवण्ण आसवा पज्जत्तेसु वावण्ण अपज्जत्तेसु पणदाल आसवा, चउरासीदि लक्ख जादी, अद्ध णवणउदि उत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अणंताणंत, खेत्तावेक्खा सव्वलोयो, फासावेक्खया सगट्ठाणं वेयणा कसाय मारणंतियो व उववादावेक्खा सव्वलोयो विहारवेगुव्विया अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गलपरायट्टं, अंतरं णाणेगजीवावेक्खा णिरंतरं, तेतीस भावा*, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजणसहस्सं, सत्तदसुत्तर सयं पयडीणं बंधो, सत्तदसुत्तर सयं पयडीणं उदओ, अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि मदिसुद अण्णाणीसु मिच्छत्त गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

मतिश्रुत अज्ञानी मिथ्यात्व गुणस्थान

उन्हीं मतिश्रुत अज्ञानियों में मिथ्यादृष्टियों का आलाप कहने पर - एक मिथ्यात्व गुणस्थान, सात पर्याप्त सात अपर्याप्त चौदहों जीव समास, छह-पाँच-चार पर्याप्ति छह-पाँच-चार अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस-नौ-आठ-सात-छह-चार प्राण अपर्याप्त में सात-सात-छह-पाँच-चार-तीन प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय, छहों काय, आहारक द्विक बिना तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीनों वेद, पच्चीस कषाय, कुमति कुश्रुत दो अज्ञान, असंयम, चक्षु अचक्षु दो दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक दोनों, मिथ्यात्व सम्यक्त्व, संज्ञी-असंज्ञी दोनों, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्त में आहारक अपर्याप्त में दोनों, चार उपयोग, आठ ध्यान, पचपन आस्रव पर्याप्त में बावन अपर्याप्त में पैंतालीस आस्रव, चौरासी लाख जाति, एक सौ साढ़े निन्यानवै लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा-अनंतानंत, क्षेत्रापेक्षा-सर्वलोक, स्पर्शन-स्वस्थान वेदना-कषाय-मारणांतिक व उपपाद सर्वलोक विहार-विक्रिया कुछ कम 8/14 राजू, काल-नानाजीवापेक्षा-सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्ध पुद्गल परावर्तन, अंतर-नाना व एकजीवापेक्षा निरंतर, तेतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ सत्तरह प्रकृतियों का बंध, एक सौ सत्रह प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार मतिश्रुत अज्ञानियों में मिथ्यात्व गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- सम्पूर्ण कथन पूर्ववत् है मात्र अन्तर में कुछ भेद हैं क्योंकि एक जीव की अपेक्षा भी यहाँ निरंतर है, इसका कारण यह है कि मिथ्याज्ञान के साथ गुणस्थान परावर्तन नहीं हो सकता अन्यथा मार्गणा टूट जायेगी इसलिए अन्तर उपलब्ध नहीं होता।

* पर्याप्त व अपर्याप्त में तेतीस भाव ही होते हैं।

253. मति, श्रुत अज्ञानी सासादन गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	सासादन	–	–
2.	जीवसमास	7 जीवसमास (1 पर्याप्त+6 अपर्याप्त)	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवसमास	6 अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति व 6,5,4 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6,5,4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10,7,7,6,5,4,3	10 प्राण	7,7,6,5,4,3
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	चारों गति	–	तीन गति (नरकगति बिना)
7.	इन्द्रिय	1–पंचेन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	1–5
8.	काय	त्रसकाय, 3 स्थावर (पृथ्वी, ज., वन.)	त्रस	त्रस, स्थावर–3
9.	योग	13 (आहारकद्विक बिना)	10 योग	3 योग
10.	वेद	3 वेद	–	–
11.	कषाय	25 कषाय	–	–
12.	ज्ञान	2 (कुमति, कुश्रुत)	–	–
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 दर्शन (चक्षु व अचक्षु दर्शन)	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	सासादन	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी/असंज्ञी	संज्ञी	दोनों (संज्ञी असंज्ञी)
19.	आहारक	आहारक/अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	4	–	–
21.	ध्यान	8	–	–
22.	आस्रव	50 (25+12+13 योग)	47 (25+10+12)	40 (25+3 योग+12अवि.)
23.	जाति	56 लाख	26 लाख	52 लाख
24.	कुलकोटि	189½ लाख करोड़	108½ लाख करोड़	164½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14, 12/14, 11/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा–ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा–ज. एक समय उ. 6 आवली		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा– निरन्तर		
30.	भाव	31 (औद. 20, मि. 9, पा.2) अपर्याप्तक में 30 (नरक गति बिना)		
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट– संख्यात धनुष		
32.	बन्ध	101 (16 प्रकृतियाँ प्रथम गुण. की व्युच्छित्ति +3 अबंध=19 के बिना)		
33.	उदय	111 गुणस्थानोक्त		
34.	सत्त्व	145 (तीर्थंकर आहारकद्विक बिना)		

253. मतिसुदअण्णाणी सासण गुणट्ठाणं

तेसिं कुमइकुसुदअण्णाणीसु सासण गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि - एग सासण गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदियपज्जत्त छ अपज्जत्त सत्तजीवसमासा, छ पज्जत्ती व छ पंच चत्तारि अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस पाणा अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छ पंच चउ तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी अपज्जत्तेसु णिरयेण विणा तिण्णि गदी, पज्जत्तेसु पंचिंदिय अपज्जत्तेसु एइंदियत्तो पंचिंदियाणि, तसकाओ अपज्जत्तेसु तिण्णि थावरा तसकाया, आहार दुगेहिं विणा तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, कुमइ कुसुदा बे अण्णाणाणि, असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्व सिद्धिया, सासण-सम्मत्तं, सण्णी असण्णी दोण्णि पज्जत्तेसु सण्णी अपज्जत्तेसु दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, चत्तारि उवजोगा, अट्ठज्झाणाणि, पंचास आसवा पज्जत्तेसु सत्तदाल अपज्जत्तेसु दाल आसवा, छप्पण लक्ख जादी पज्जत्तेसु छब्बीस लक्ख अपज्जत्तेसु वावण्ण लक्ख जादी, अद्धऊणणवासीदि उत्तर सयं लक्ख कोडि कुल कोडीणं पज्जत्तेसु अद्ध अट्ठुत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं अपज्जत्तेसु अद्ध चउसट्ठिउत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेखा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा एवं अट्ठ चोद्दस-बारस चोद्दस एगारस चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कसेण छावली, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा णिरंतरं, इगतीस भावा अपज्जत्तेसु तीस भावा, जहण्णमवगहण घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण संखेज्ज धणू, एगुत्तर सयं पयडीणं बंधो, एगारसुत्तर सयं पयडीणं उदओ, पणदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि मदिसुद अण्णाणीसु सासण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

मतिश्रुत अज्ञानी सासादन गुणस्थान

उन्हीं कुमति कुश्रुत अज्ञानियों में सासादन गुणस्थानालाप कहने पर - एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व छह अपर्याप्त सात जीव समास, छहों पर्याप्ति व छह-पाँच-चार अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस प्राण अपर्याप्त में सात-सात-छह-पाँच-चार-तीन प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति अपर्याप्त में नरक बिना तीन गति, पंचेन्द्रिय अपर्याप्त में एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक, त्रसकाय अपर्याप्त में तीन स्थावर व त्रसकाय, आहारकद्विक बिना तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीनों वेद, पच्चीस कषाय, कुमति कुश्रुत दो अज्ञान, असंयम, चक्षु अचक्षु दो दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, सासादन सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी दोनों पर्याप्तक में संज्ञी अपर्याप्तक में दोनों, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्त में आहारक अपर्याप्त में दोनों, चार उपयोग, आठ ध्यान, पचास आस्रव पर्याप्त में सैंतालीस अपर्याप्त में चालीस आस्रव, छप्पन लाख जाति पर्याप्त में छब्बीस लाख अपर्याप्त में बावन लाख जाति, एक सौ साढ़े नवासी लाख करोड़ कुल कोटि पर्याप्त में एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ अपर्याप्त में एक सौ साढ़े चौंसठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 8/14, 12/14, 11/14 राजू, काल-नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह आवली, अंतर-नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा निरन्तर, इकतीस भाव अपर्याप्तक में 30 भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट संख्यात धनुष, एक सौ एक प्रकृतियों का बंध, एक सौ ग्यारह प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ पैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार मतिश्रुत अज्ञानियों में सासादन गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- यहाँ ग्रंथराज कषाय पाहुड़ के मत से एकेन्द्रियादि जीवों की अपर्याप्तक अवस्था में द्वितीय गुणस्थान कहा है किंतु षट्खण्डागम के मत से एकेन्द्रियादि जीवों में एक मिथ्यात्व गुणस्थान ही पाया जाता है किन्तु मारणांतिक समुद्घात के समय सासादन पाया जाता है अत: दोनों ग्रंथों का समावेश करते हुए कहते हैं। सभी प्रकार के निगोद, अग्निकायिक, वायु कायिक सभी प्रकार के सूक्ष्म जीव, सभी प्रकार के लब्ध्यपर्याप्तक जीव इनमें मात्र एक मिथ्यात्व गुणस्थान ही पाया जाता है। नारकी जीवों की अपर्याप्तक अवस्था में भी प्रथम या चतुर्थ गुणस्थान ही पाया जाता है। इनके अलावा अन्य जीवों में द्वितीय गुणस्थान पाया जाता है। इन्हीं को दृष्टि में रखते हुए जीव समास, जाति व कुलकोटि का कथन किया है। स्पर्शन 11/14 राजू षट्खण्डागम ग्रंथ के अनुसार किन्तु द्वितीय सिद्धांत (कषाय पाहुड़) के अनुसार उपपाद पद गत 12/14 राजू भी बनता है मारणांतिक सर्वत्र 12/14 राजू सुगम है। शेष कथन भी सुगम है। काल गुणस्थानवत् समझना अन्तर नाना जीवों का सुगम है एक जीव में अन्तर प्राप्त नहीं होता क्योंकि दूसरे गुणस्थान से पहले में जायेगा वहाँ से दूसरे में आ नहीं सकता अत: गुणस्थान परिवर्तन संभव नहीं है अन्यथा मार्गणा टूट जायेगी इसलिए अन्तर नहीं है। बन्ध, उदय, सत्त्व गुणस्थानवत् समझना चाहिए।

254. विभंग ज्ञानी सामान्य

1.	गुणस्थान	1, 2 (मिथ्यात्व, सासादन)		
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त		
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति		
4.	प्राण	10 प्राण		
5.	संज्ञा	4 संज्ञा		
6.	गति	चारों गति		
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय		
8.	काय	त्रसकाय		
9.	योग	10 योग		
10.	वेद	3 वेद		
11.	कषाय	25 कषाय		
12.	ज्ञान	1 कुअवधि ज्ञान		
13.	संयम	असंयम		
14.	दर्शन	2 दर्शन (चक्षु व अचक्षु दर्शन)		
15.	लेश्या	6 लेश्या		
16.	भव्य	भव्य, अभव्य		
17.	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व, सासादन		
18.	संज्ञी	संज्ञी		
19.	आहारक	आहारक		
20.	उपयोग	3 (1 ज्ञानो.+ 2 दर्शनो.)		
21.	ध्यान	8 (4 आर्त्त + 4 रौद्र)	–	–
22.	आस्रव	52 (25 कषाय+10 योग+12 अविरति+5 मि.)		
23.	जाति	26 लाख		
24.	कुलकोटि	108½ लाख करोड़		
25.	संख्या	असंख्यात (असंख्यात जगत्श्रेणी प्रमाण)		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व सर्वलोक व 8/14 राजू (ध.पु. 4, पृ.252 सू. 126)		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– सर्वकाल	एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय	उ. कुछ कम 33 सागर
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– निरन्तर	एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त	उ. असंख्यात पुद्गल परावर्तन
30.	भाव	32 (औद. 21, मि. 8, पा.3)		
31.	अवगाहना	जघन्य– अंगुल का संख्यातवाँ भाग	उत्कृष्ट– संख्यात धनुष	(संख्यात अंगुल)
32.	बन्ध	मि. 117	सासादन गु. 101	
33.	उदय	मि. 104*	सासादन गु. 103 = 104–1 मि= (मिथ्यात्व बिना)	
34.	सत्त्व	मि. 148	सासादन गु. 145	

* 117 प्रकृति में से आतप, एकेन्द्रिय, विकलत्रय, स्थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, 4 आनुपूर्वी इन 13 प्रकृति बिना 104 प्रकृति का उदय

254. विभंगणाणी सामण्णं

णाणमग्गणाणुवादेण विभंगणाणिओ सामण्णालाव भण्णमाणे अत्थि - मिच्छत्त सासण बे गुणट्ठाणाणि, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीवसमासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, पंचिंदियाणि, तसकायो, दस जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, एग विभंगणाणं, असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्वसिद्धिया, मिच्छत्त सासण बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, तिण्णि उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द अट्ठज्झाणाणि, वावण्ण आसवा, छब्बीस लक्ख जादी, अद्धुट्ठउत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा असंखेज्ज जगसेढी पमाणो, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व सव्वलोयो* व अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एग जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण किंचिदूण तेतीस सायरोवमाणि, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण असंखेज्ज पोग्गलपरायट्टं, बत्तीस भावा, जहण्णमवगहणं घणांगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण संखेज्ज धणू, मिच्छत्तेसु सत्तदसुत्तर सयं पयडीणं सासणे एगुत्तर सयं पयडीणं बंधो, मिच्छत्तेसु चदुत्तर सयं पयडीणं सासणे तिउत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं मिच्छत्तेसु अडदालुत्तर सयं सासणे पणदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि विभंगणाणीसु सामण्णालाव सम्मत्ता।

विभंग ज्ञानी सामान्य

ज्ञान मार्गणा के अनुवाद से विभंगज्ञानियों के सामान्यालाप कहने पर - मिथ्यात्व सासादन दो गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, दस योग, तीन वेद, पच्चीस कषाय, एक विभंग ज्ञान, असंयम, चक्षु अचक्षु दो दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक, मिथ्यात्व सासादन दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, तीन उपयोग, चार आर्त्त चार रौद्र आठ ध्यान, बावन आस्रव, छब्बीस लाख जाति, एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा-असंख्यात जगत्श्रेणी प्रमाण, क्षेत्रापेक्षा-लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग व सर्वलोक व 8/14 राजू, काल-नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुछ कम तेतीस सागर, अंतर-नानाजीवापेक्षा-निरन्तर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात पुद्गल परावर्तन, बत्तीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट संख्यात धनुष, मिथ्यात्व में एक सौ सत्तरह प्रकृतियों का बंध व सासादन में एक सौ एक प्रकृतियों का बंध, मिथ्यात्व में एक सौ चार प्रकृतियों का उदय सासादन में एक सौ तीन प्रकृतियों का उदय एवं मिथ्यात्व में एक सौ अड़तालीस सासादन में एक सौ पैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार विभंग ज्ञानियों में सामान्यालाप समाप्त हुआ।

---

* स्वस्थान लोक का असंख्यातवां भाग मारणांतिक सर्वलोक वि.वे.वि.कषाय कुछ कम 8/14 राजू।

विशेषार्थ :- विभंग अवधिज्ञान संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक को ही होता है अपर्याप्तक को नहीं होता इसलिए चारों गतियाँ कही हैं अशुभ लेश्या तो होती ही है शुक्लादि लेश्या कल्पवासी देवों में पायी जाती है मनुष्य और तिर्यंच में भी पायी जाती है। स्पर्शन पूर्व की तरह ही समझना चाहिए कोई विशेषता नहीं है। काल की प्ररूपणा करते हैं। नाना जीवों का सर्वकाल सुगम है। एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल एक समय यानि कोई देव या नारकी आयु के अन्तर्मुहूर्त शेष रहने पर उपशम सम्यग्दृष्टि हुआ और उपशम के काल में एक समय शेष रहने पर सासादन गुणस्थान को प्राप्त हुआ, एक समय तक विभंगावधि ज्ञान के साथ रहा और मर गया मरने के पश्चात् विभंगावधि समाप्त हो जाता है, इस प्रकार जघन्य काल प्राप्त हुआ। उत्कृष्ट काल कुछ कम तेतीस सागर सुगम है। इसी प्रकार अंतर का कथन करना चाहिए नाना जीवों का निरंतर सुगम है।

एक जीव का जघन्य अन्तर्मुहूर्त यानि देख लिया है मार्ग सम्यक्त्व का जिसने ऐसा कोई देव या नारकी सम्यक्त्व को प्राप्त कर अन्तर्मुहूर्त तक अवधि ज्ञान के साथ रहा और मिथ्यात्व व विभंगावधि ज्ञान को एक साथ प्राप्त हुआ। इस प्रकार जघन्य अन्तर प्राप्त हुआ। उत्कृष्ट अन्तर असंख्यात (आवली के असंख्यात वे भाग) पुद्गल परावर्तन स्वरूप अनंतकाल इस प्रकार है कोई जीव विभंगावधि ज्ञानी हुआ अपनी आयुपूर्ण कर मर गया इस प्रकार अन्तर को प्राप्त हुआ और आवली के असंख्यातवे भाग पुद्गल परावर्तन काल तक एकेन्द्रियों में भ्रमण कर पुन: संज्ञी पंचेन्द्रिय होकर विभंगावधि ज्ञान को प्राप्त हुआ इस प्रकार उत्कृष्ट अंतर प्राप्त हुआ। शेष कथन सुगम है बंध, उदय, सत्त्व का कथन सुगम है।

255. विभंग ज्ञान मिथ्यात्व गुणस्थान

1.	गुणस्थान	मिथ्यात्व
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	चारों गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	10 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	25 कषाय
12.	ज्ञान	1 कुअवधि ज्ञान
13.	संयम	असंयम
14.	दर्शन	2 दर्शन
15.	लेश्या	6 लेश्या
16.	भव्य	भव्य, अभव्य
17.	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	3 (1 ज्ञानो.+ 2 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8 (4 आर्त्त + 4 रौद्र)
22.	आस्रव	52 (25 कषाय+10 योग+12 अविरति+5 मि.)
23.	जाति	26 लाख
24.	कुलकोटि	108½ लाख करोड़
25.	संख्या	असंख्यात (असंख्यात जगत्श्रेणी प्रमाण)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व सर्वलोक व कुछ कम 8/14 राजू
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा- सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा - ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम 33 सागर
29.	अन्तर	नाना व एक जीव की अपेक्षा- निरन्तर
30.	भाव	32 (औद.21, क्षयो. 8, पा.3)
31.	अवगाहना	जघन्य- अंगुल का संख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट- संख्यात अंगुल (संख्यात धनुष
32.	बन्ध	117 पूर्व की तरह
33.	उदय	104 पूर्व में कह दिया
34.	सत्त्व	148

255. विभंगणाणी मिच्छाइट्ठी गुणट्ठाणं

तेसिं विभंगणाणी मिच्छाइट्ठीणं आलावभण्णमाणे अत्थि – मिच्छत्त गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदियपज्जत्तजीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, एग विभंगणाणं, असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्वसिद्धिया दोण्णि, मिच्छत्त सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो तिण्णि उवजोगा, अट्ठज्झाणाणि, वावण्ण आसवा, छब्बीस लक्ख जादी, अद्धुट्ठ उत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा असंखेज्ज जगसेढी पमाणो, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा एवं अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा सव्वलोगो वा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण किंचिदूण तेतीस सायरोवमाणि, अंतरं णाणेगजीवावेक्खा णिरंतरं, बत्तीस भावा, जहण्णमवगहण घणंगुलस्स संखेज्ज भागा उक्कस्सेण संखेज्ज धणू, सत्तदसुत्तर सयं पयडीणं बंधो, चउत्तरसयं पयडीणं उदओ एवं अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि विभंगणाणीसु मिच्छाइट्ठी गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि गुणस्थान

उन्हीं विभंगज्ञानी मिथ्यादृष्टि जीवों के आलाप कहने पर – एक मिथ्यात्व गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, दस योग, तीन वेद, पच्चीस कषाय, एक विभंग ज्ञान, असंयम, दो दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक, मिथ्यात्व सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, तीन उपयोग, आठ ध्यान, बावन आस्रव, छब्बीस लाख जाति, एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा–असंख्यात जगत श्रेणी प्रमाण, क्षेत्र लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग सर्वलोक व कुछ कम 8/14 राजू, काल–नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम तेतीससागर, अंतर–नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा निरंतर, बत्तीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट संख्यात धनुष, एक सौ सत्तरह प्रकृतियों का बंध एक सौ चार प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार विभंग ज्ञानियों में मिथ्यादृष्टि गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ पर सम्पूर्ण कथन पूर्व की तरह ही जानना चाहिए स्पर्शन स्वस्थान लोक का असंख्यात वां भाग विहार, वेदना, विक्रिया, कषाय समुद्घात की अपेक्षा चौदह भागों में से आठ भाग मारणांतिक की अपेक्षा सर्वलोक इस प्रकार स्पर्शन का कथन हुआ। काल का कथन पूर्व के समान समझना चाहिए। अन्तर निरंतर कहा है क्योंकि ऐसा कोई समय प्राप्त नहीं होता जिस समय कोई मिथ्यादृष्टि विभंगावधि के साथ नहीं हो। एक जीव की अपेक्षा भी निरंतर है क्योंकि विभंगावधि ज्ञान मार्गणा के साथ गुणस्थान परावर्तन नहीं हो सकता यदि होता है तो मार्गणा टूट जायेगी अत: निरंतर ही प्राप्त हुआ। जघन्य अवगाहना का कथन तंदुल मत्स्य की अपेक्षा किया है संख्यात धनुष में सारी अवगाहना समाहित हैं। भावों की अपेक्षा क्षयोपशम में एक ज्ञान दो दर्शन ही ग्रहण किये है अत: उक्त भाव प्राप्त होते है। बंध उदय सत्त्व का कथन सुगम है। विशेष के लिए कर्मकाण्ड ग्रंथ को पढ़ना चाहिए संख्या में भी कोई विशेषता नहीं है गति मार्गणा के समान समझना चाहिए। शेष कथन सुबोध है।

नोट :– बन्ध उदय सत्त्व आदि स्पर्शन आदि जानने के लिए पीछे परिशिष्ट का अवलोकन अवश्य करें।

256. विभंगावधि ज्ञान सासादन गुणस्थान

1.	गुणस्थान	सासादन गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	चारों गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	10 योग (औदारिक, वैक्रियक काय योग)
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	25 कषाय
12.	ज्ञान	1 कुअवधि ज्ञान
13.	संयम	असंयम
14.	दर्शन	2 दर्शन
15.	लेश्या	6 लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	सासादन
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	3 (1 ज्ञानो.+ 2 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8
22.	आस्रव	47 (25 कषाय+10 योग+12 अविरति)
23.	जाति	26 लाख (देव=4 लाख मनुष्य 14 ला.तिर्यं.=4 लाख नरक = 4 लाख)
24.	कुलकोटि	108½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग कुछ कम 8/14, 12/14 राजू (यहाँ उपपाद पद नहीं है), मा. सर्वलोक
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा-ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा-ज. एक समय 3, 6 आवली
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा- ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा- निरंतर
30.	भाव	30 (औद. 20, पा.2, क्षयो. 8)
31.	अवगाहना	जघन्य- घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट- संख्यात धनुष
32.	बन्ध	101
33.	उदय	103
34.	सत्त्व	145 (आहारकद्विक, तीर्थंकर बिना)

256. विभंगणाणी सासण गुणट्ठाणं

तेसिं विभंगणाणीसु सासणगुणट्ठाणामालाव भण्णमाणे अत्थि-एग सासण गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तजीवसमासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, एग विभंगणाणं, असंजमो, बे दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया, सासण सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, तिण्णि उवजोगा, अट्ठज्झाणाणि, सत्तदाल आसवा, छब्बीस लक्ख जादी, अद्धट्ठुत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा सगट्ठाणं लोयस्स असंखेज्जदि भागा विहार वेयणा कसाय वेगुव्विया अवेक्खा अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा मारणंतिय बारह चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण छावली, अंतरं-णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा णिरंतरं, तीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण संखेज्ज धणू, एगुत्तर सयं पयडीणं बंधो, तिउत्तर सयं पयडीणं उदओ, तित्थयर आहारदुगेहिं विणा पणदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि विभंगणाणीसु सासण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

विभंगज्ञानी सासादन गुणस्थान

उसी विभंगज्ञानी सासादन गुणस्थानवर्ती जीवों के आलाप कहने पर - एक सासादन गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, दस योग, तीन वेद, पच्चीस कषाय, एक विभंगज्ञान, असंयम, दो दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, सासादन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, तीन उपयोग, आठ ध्यान, सैंतालीस आस्रव, छब्बीस लाख जाति, एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन स्वस्थान लोक का असंख्यातवां भाग कषाय विहार वेदना विक्रिया कुछ कम 8/14 राजू मारणांतिक कुछ कम 12/14 राजू, काल-नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छ आवली, अंतर-नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा निरंतर, तीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट संख्यात धनुष, एक सौ एक प्रकृतियों का बंध, एक सौ तीन प्रकृतियों का उदय एवं तीर्थंकर आहारक द्विक बिना एक सौ पैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार विभंगज्ञानियों में सासादन गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- सम्पूर्ण व्याख्यान पिछले गुणस्थान में किया जा चुका है कोई भेद नहीं है। अत: वहाँ से जानना चाहिए।

257. मति ज्ञान, श्रुत ज्ञान, अवधि ज्ञान सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	4–12	–	4,6
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा व क्षीण संज्ञा	4 संज्ञा–क्षीण संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	चारों गति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	15 योग	11 योग	4 योग
10.	वेद	3 वेद	–	2 (स्त्री वेद बिना)*
11.	कषाय	21 कषाय	–	20 (स्त्री वेद बिना)
12.	ज्ञान	3 (मतिज्ञान, श्रुतज्ञान व अवधिज्ञान)	–	–
13.	संयम	7 (असंयम,संयमासं.,सा.,छे.,परि.,सूक्ष्म.,यथाख्यात)	–	3 (असंयम, सा., छेदो.)
14.	दर्शन	3 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	द्रव्य भाव से 6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा.,क्षयो., उपशम)	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी	संज्ञी	–
19.	आहारक	आहारक/अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	6 उपयोग (3 दर्शन, 3 ज्ञानो.)	–	–
21.	ध्यान	14 (4 आर्त्त+4 रौद्र+4 धर्म+2 शुक्ल)	–	12 (4 आर्त्त+4 रौद्र+4 धर्मध्यान)
22.	आस्रव	48 (21+15+12 अवि.)	44 (21+11+12)	36 (20+4+12)
23.	जाति	26 लाख		
24.	कुलकोटि	108½ लाख करोड़		
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग (असंख्यात)		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14, 6/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा–सर्वकाल	एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त	उ. कुछ अधिक 66 सागर
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– निरन्तर	एक जीव की अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त	उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन
30.	भाव	39 (औद.20, क्षयो.13, पा. 2, क्षा.2, औप.2) अपर्याप्तक 35 (स्त्रीवेद, संयमासंयम तीन चारित्र आदि बिना)		
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का संख्यातवाँ भाग	उत्कृष्ट– 1000 योजन	
32.	बन्ध	79 क्रमशः (77,67,63,59,58,22,17,1,1)		
33.	उदय	106 (104,87,81,76,72,66,60,59,57)*2		
34.	सत्त्व	4 गुणस्थान से 9वें गुण तक क्रमशः 148–138 यथा योग्य 10–12 तक क्रमशः 146–102		
		विशेष – जिसने अनंतानुबंधी की विसंयोजना की है उसके क्रमशः 144, 143, 142, 141 जिसने दर्शन मोहनीय का क्षय कर दिया तो प्रत्येक गुणस्थान में से तीन, तीन कम करें और गुणस्थानवत् समझें।		

*1 सम्यग्दृष्टि जीव किसी प्रकार की स्त्रियों में उत्पन्न नहीं होता। इसी प्रकार कषायों में जानना चाहिए।

*2 चतुर्थ गुणस्थान में 77 प्रकृति का बन्ध था, किन्तु आगे 7वें गुणस्थान में आहारकद्विक का बन्ध प्रारंभ हो जाता है इसलिए 79 प्रकृति हो जाती है।

257. मदि सुद ओहि सामण्णालावो

अह मदि सुद ओहि णाणीणं सामण्णालाव भण्णमाणे अत्थि – चउत्तो बारस णव गुणट्ठाणाणि अपज्जत्तेसु असंजद व पमत्तसंजद गुणट्ठाणाणि, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, दस सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा व खीण सण्णा अपज्जत्तेसु चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, पंचदस जोगा पज्जत्तेसु एगारस अपज्जत्तेसु चत्तारि जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु इत्थि विणा बे वेदा, इगबीस कसाया अपज्जत्तेसु बीस कसाया, मदि सुदओहि तिण्णि णाणाणि, सत्त संजमा अपज्जत्तेसु असंजम सामाइय छेदोवट्ठावणा तिण्णि संजमा, चक्खु अचक्खु ओहि तिण्णि दंसणाणि, दव्वभावेण छल्लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, छ उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द चत्तारि धम्म बे सुक्क चोद्दस झाणाणि अपज्जत्तेसु चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द चत्तारि धम्म बारस झाणाणि, अडदाल आसवा पज्जत्तेसु चदुदाल अपज्जत्तेसु छत्तीस आसवा, छब्बीस लक्ख जादी, अद्धट्ठुत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा असंखेज्ज पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठ चोद्दस भागा वा छच्चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकाल एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण छावट्टि सायरोवमाणि सादिरेयाणि, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गलपरायट्टं, उणदाल भावा अपज्जत्तेसु पणतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्ज भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सामण्णेण उणासीदि पयडीणं बंधो चउत्थो बारस गुणट्ठाणेसु कमसो सत्तसत्तदि सडसट्ठि तिसट्ठि ऊणसट्ठि अट्ठावण्ण बाबीस सत्तदस एगेग पयडीणं बंधो, सामण्णेण छउत्तर सयं चदुत्तर सयं सत्तासीदि एगासीदि छसत्तदि बे सत्तदि छावट्ठि सट्ठि ऊणसट्ठि सत्तावण्ण पयडीणं उदओ एवं चउत्तो णवम गुणट्ठाणेसु कमसो अडदालुत्तर सयं छ सत्तदालुत्तर सयं छादालुत्तर सयं ऊणदालुत्तर सयं बादालुत्तर सयं ऊणदालुत्तर सयं अट्ठतीसुत्तर सयं दसत्तो बारस गुणट्ठाणे कमसो छादालुत्तर सयं ऊणदालुत्तर सयं बे उत्तर सयं छादालुत्तर सयं बादालुत्तर सयं ऊणदालुत्तर सयं बारसेसु एगुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि मदि सुद ओहि णाणीसु सामण्णालाव सम्मत्ता।

मतिश्रुत अवधि ज्ञानी सामान्यालाप

अब मति श्रुत अवधि ज्ञानियों के सामान्यालाप कहने पर – चार से बारह नौ गुणस्थान अपर्याप्त में चौथा व छट्वा दो गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, दस–सात प्राण, चारों संज्ञा व क्षीण संज्ञा अपर्याप्त में चारों संज्ञाएँ, चारों गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, पन्द्रह योग पर्याप्त में ग्यारह अपर्याप्त में चार योग, तीनों वेद अपर्याप्त में स्त्री बिना दो वेद, इक्कीस कषाय अपर्याप्तक में स्त्री वेद बिना बीस कषाय, मतिश्रुत अवधि तीन ज्ञान, सातों संयम अपर्याप्त में असंयम सामायिक छेदोपस्थापना तीन संयम, चक्षु अचक्षु अवधि तीन दर्शन, द्रव्य व भाव से छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम–क्षायिक–क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी आहारक–अनाहारक दोनों पर्याप्त में आहारक अपर्याप्त में दोनों, छह उपयोग, (चार आर्त्त, चार रौद्र चार धर्म दो शुक्ल) चौदह ध्यान, अपर्याप्त में (चार आर्त्त चार रौद्र चार धर्म) बारह ध्यान, अड़तालीस आस्रव पर्याप्त में चवालीस अपर्याप्त में छत्तीस आस्रव, छब्बीस लाख जाति, एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा–(असंख्यात) पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग कुछ कम 8/14 व 6/14 राजू, काल नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक छ्यासठ सागर, अंतर–नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्ध पुद्गल परावर्तन, उनतालीस भाव अपर्याप्तक में पैंतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, उन्यासी से क्रमश: सतत्तर, सड़सठ, तिरेसठ, उनसठ, अट्ठावन, बाईस, सत्रह, एक, एक प्रकृतियों का बंध, एक सौ छह, एक सौ चार सतासी, इक्यासी, छियत्तर, बहत्तर, छियासठ, साठ, उनसठ, सत्तावन प्रकृतियों का उदय, चौथे गुणस्थान से नोवे गुणस्थान तक एक सौ अडतालीस से लेकर एक सौ अडतीस तक दसवे से बारहवें तक एक सौ छयालीस से एक सौ एक प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार मतिश्रुत अवधि ज्ञानियों में सामान्यालाप समाप्त हुआ।

नोट – अवधिज्ञान का आलाप मतिश्रुत ज्ञान जैसा ही है केवल स्पर्शन में अंतर है वह भी चतुर्थ गुणस्थान में अंतर आता है।

258. मति, श्रुत व अवधिज्ञान असंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	असंयत गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त, अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	चारों गति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	13 (आहारकद्विक बिना)	10 योग	3 (औदा.मि.,वैक्रि. मि.,कार्मण)
10.	वेद	3 वेद	–	2 वेद (स्त्री वेद बिना)*1
11.	कषाय	21 कषाय	–	20 (कषाय स्त्री वेद बिना)
12.	ज्ञान	3 (मति, श्रुत, अवधिज्ञान)	–	–
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	3 दर्शन (चक्षु, अचक्षु, अवधिदर्शन)	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा.,क्षयो., उपशम)	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	आहारक, अनाहारक
20.	उपयोग	6 (3 ज्ञानो. + 3 दर्शनो.)	–	–
21.	ध्यान	10 (4 आर्त्त, 4 रौद्र, 2 धर्म)	–	–
22.	आस्रव	46 (21+13+12)	43 (21+10+12)	35 (20+3+12)
23.	जाति	26 लाख		–
24.	कुलकोटि	108½ लाख करोड़		
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		ध.पु.मू.सू. 54
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग वि.वे.विक्र. मा. कुछ कम 8/14 राजू उप. कुछ कम 6/14 राजू ष.ख.मू.सू. 108, ष.ख.मू.सू. 15		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– सर्वकाल	एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त	उ. कुछ अधिक 33 सागर
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– निरन्तर	एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त	उ. कुछ कम पूर्व कोटि
30.	भाव	36 (औद.20, मि.12, पा.2, क्षा.1, औप.1)	अपर्याप्तक 35 भाव	
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का संख्यातवाँ भाग	उत्कृष्ट– 1000 योजन	
32.	बन्ध	77	गो.क.का. बन्धाधिकार	
33.	उदय	104 (क. का. गा. 324)		
34.	सत्त्व	148 (गो.क.का.गा. 342)		

*1 नपुंसक वेद प्रथम नरक में जाने की अपेक्षा कहा है तथा स्त्रीवेद अपर्याप्तक के किसी भी अवस्था में नहीं बनता है।

258. मदिसुदओहि असंजद गुणट्ठाणं

तेसिं मदिसुदओहि णाणी असंजद जीवाणामालावभण्णमाणे अत्थि - एग अविरद संजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु सत्तपाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, आहार दुगेहि विणा तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु बे वेदा, इगबीस कसाया अपज्जत्तेसु बीस कसाया, मदि सुद ओहि तिण्णि णाणाणि, असंजमो, चक्खु अचक्खु ओहि तिण्णि दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, छ उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द बे धम्म दस झाणाणि, छादाल आसवा पज्जत्तेसु तिदाल अपज्जत्तेसु पणत्तीस आसवा, छब्बीस लक्ख जादी, अद्धट्ठुत्तर सयं लक्ख कोडि कुल कोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा अट्ठ चोद्दस भागा छ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, अंतर णाणा जीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण कोडि पुव्वं, छत्तीस भावा अपज्जत्तेसु पणतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सत्तसत्तदि पयडीणं बंधो, चदुत्तर सयं पयडीणं उदओ, अडदालुत्तर सयं पयडीओ सच्चं होंति।

इदि मदि सुद ओहि णाणीसु असंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

मतिश्रुत व अवधिज्ञानी असंयत गुणस्थान

उन्हीं मति श्रुतावधि ज्ञानी असंयत जीवों के आलाप कहने पर - एक अविरत संयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, दस-सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, आहारकद्विक बिना तेरह योग (पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीन वेद अपर्याप्तकों में दो वेद (स्त्री वेद बिना), इक्कीस कषाय अपर्याप्त में स्त्री वेद बिना बीस कषाय, मतिश्रुत अवधि तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु अचक्षु अवधि तीन दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम, क्षायिक, क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्त में आहारक अपर्याप्त में दोनों, छह उपयोग, दस ध्यान (चार आर्त चार रौद्र दो धर्म), छ्यालीस आस्रव पर्याप्त में तेतालीस अपर्याप्त में पेंतीस आस्रव, छब्बीस लाख जाति, एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा-पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग व कषाय वि.वे.मा. की अपेक्षा कुछ कम 8/14 राजू उपपाद की अपेक्षा कुछ कम 6/14 राजू, काल-नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट साधिक तेतीस सागर, अंतरं-नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम पूर्व कोटि, छत्तीस भाव अपर्याप्तक में पैंतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, सतत्तर प्रकृतियों का बंध, एक सौ चार प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

विशेषार्थ :- अपर्याप्तक अवस्था में भी अवधि ज्ञान हो सकता है क्योंकि देशावधिज्ञान दो प्रकार का होता है भव प्रत्यय और गुण प्रत्यय/गुण प्रत्यय अवधिज्ञान छह प्रकार का होता है। 1. अनुगामी 2. अननुगामी 3. वर्द्धमान 4. हीयमान 5. अवस्थित 6. अनवस्थित। अत: अनुगामी यानि पर भव में भी साथ जाए जैसे तीर्थंकरादि यद्यपि तीर्थंकर का ज्ञान तो भव प्रत्यय भी कहा जा सकता है। लेकिन उदाहरणार्थ कह दिया है क्योंकि अन्य पुरुषों में यह पाया जाता है तिर्यंचों में भी पाया जाता है। विशेषता यह है कि तिर्यंचों में अपर्याप्त अवस्था में मात्र भोगभूमि में ही पाया जाता है इसलिए चारों गतियों में पर्याप्त अपर्याप्त सभी अवस्थाओं में पाया जाता है। काल का कथन करते हुए कुछ अधिक तेतीस सागर उत्कृष्ट काल कहा है जघन्य काल सुगम है। एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर भी सुगम है उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम एक पूर्व कोटि का तात्पर्य है कोई जीव मोहनीय कर्म की अट्ठाईस प्रकृतियों की सत्ता वाला एक कोटि पूर्व की आयु के साथ सम्मूर्च्छन तिर्यंचों में उत्पन्न हुआ। 1. अन्तर्मुहूर्त में पर्याप्त हो 2. विश्राम ले 3. विशुद्धि को प्राप्त कर 4. वेदक सम्यक्त्व को उत्पन्न कर 5. अन्तर्मुहूर्त के पश्चात् संयमासंयम को प्राप्त कर अन्तर को प्राप्त हुआ। एक कोटि पूर्व की आयु पूर्ण कर मरकर देव असंयमी हुआ इस प्रकार चार अन्तर्मुहूर्त कम एक कोटि पूर्व का अन्तर प्राप्त हुआ। इसी प्रकार अवधिज्ञान का समझना चाहिए विशेषता यह है कि सम्यक्त्व के पश्चात् अवधिज्ञान कराना चाहिए पश्चात् संयमा संयम इतनी और विशेषता है कि यहाँ पाँच अन्तर्मुहूर्त लगते हैं अत: 5 अन्तर्मुहूर्त कम एक कोटि पूर्व का अन्तर है। शेष कथन सुगम है।

259. मति, श्रुत व अवधिज्ञान संयतासंयत गुणस्थान

1.	गुणस्थान	संयमासंयम गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	दो गति (मनुष्य व तिर्यञ्च)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	17 कषाय (4 अनं., 4 अप्र. बिना)
12.	ज्ञान	3 (मति, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान)
13.	संयम	संयमासंयम
14.	दर्शन	3 दर्शन (चक्षु, अचक्षु, अवधिदर्शन)
15.	लेश्या	6 लेश्या भाव से-3 शुभ लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा.,क्षयो., उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	6 उपयोग (3 ज्ञानो. + 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	11 (4 आर्त्त, 4 रौद्र, 3 धर्मध्यान)
22.	आस्रव	37 (17 कषाय+9 योग+11 अवि.)
23.	जाति	18 लाख
24.	कुलकोटि	57½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व मा. कुछ कम 6/14 राजू (ष.ख.मू.सू. 7)
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा- सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा - ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम एक कोटि पूर्व
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा- निरन्तर एक जीव की अपेक्षा- ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 66 सागर
30.	भाव	31(औद.14, क्षयो.13, पा.2, औप.1, क्षा.1)
31.	अवगाहना	जघन्य- घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट- 1000 योजन
32.	बन्ध	67 गो.क.का.
33.	उदय	87
34.	सत्त्व	147 (नरकायु बिना)

*[1] यहाँ जो कुछ कम एक पूर्व कोटि कहा है वह कर्म भूमि के तिर्यंच की अपेक्षा बनता है भोगभूमि में संयमासंयम नहीं होता।

*[2] क्षयोपशम सम्यक्त्व के साथ संयमासंयम व अवधिज्ञान को प्राप्त कर अन्तर्मुहूर्त पालन कर संयमी हो गया पुन: देवों में उत्पन्न हुआ पुन: मनुष्य बना पुन: देव बना इस प्रकार 66 सागर के पश्चात् मनुष्य बनकर संयमासंयम को प्राप्त किया।

259. मदि सुद ओहि संजदासंजद गुणट्ठाणं

तेसिं मदि सुद ओहि णाणी जीवाणं संजदासंजद गुणट्ठाणालावभण्णमाणे अत्थि-एगं देससंजदो गुणट्ठाणं, एगं सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, मणुस्स तिरिक्ख बे गदी, पंचिंदियाणि, तसकायो, णव जोगा, तिण्णि वेदा, सत्तदस कसाया, मदि सुद ओहि तिण्णि णाणाणि, एगं संजमासंजमो, चक्खु अचक्खु ओहि तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण तिण्णि सुह लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, छ उवजोगा, एगारस झाणाणि, सत्ततीस आसवा, अट्ठारस लक्ख जादी, अद्धुत्तर सत्तावण्ण लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा एवं छच्चोद्दस* भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण कोडि पुव्वं, अंतरं-णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण छावट्ठि सायरोवमाणि सादिरेयाणि, इगतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सडसट्ठि पयडीणं बंधो, सत्तासीदि पयडीणं उदओ, णिरयआउं विणा सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि मदि सुद ओहि णाणीसु संजदासंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

मतिश्रुत अवधि ज्ञानी संयतासंयत गुणस्थान

उन्हीं मतिश्रुतावधिज्ञानी जीवों के संयतासंयत गुणस्थान आलाप कहने पर - एक देशसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्य व तिर्यंच दो गतियाँ, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, तीनों वेद, सत्रह कषाय, मतिश्रुत अवधि तीन ज्ञान, एक संयमासंयम, चक्षु अचक्षु अवधि तीन दर्शन, छहों लेश्या भाव से तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, तीन सम्यक्त्व (उपशम, क्षायिक, क्षयोपशम), संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, ग्यारह ध्यान, सैंतीस आस्रव, अठारह लाख जाति, साढ़े सत्तावन लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा-पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा-लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन-लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 6/14 राजू, काल-नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम एक कोटि*1 पूर्व, अंतर-नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट छ्यासठ सागर*2 साधिक, इकतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, सड़सठ प्रकृतियों का बंध, सतासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस (नरकायु बिना) प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार मति श्रुत अवधि ज्ञानियों में संयतासंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

---

* मारणंतियोसमुग्घादेहिं

विशेषार्थ :- *1 यहाँ केवल काल व अन्तर का खुलासा करना प्रयोजनीय है शेष में कोई विशेषता उपलब्ध नहीं होती। स्पर्शन का कथन पूर्व में कई बार किया है वहाँ से जानना चाहिए। काल की अपेक्षा कथन है कोई जीव मोहनीय कर्म की अट्ठाईस प्रकृति की सत्ता के साथ सम्मूर्च्छिम तिर्यंच में एक कोटि पूर्व की आयु के साथ उत्पन्न हुआ अन्तर्मुहूर्त पर्याप्त हो, विश्राम ले, विशुद्ध हो, वेदक सम्यक्त्व को प्राप्त हुआ पश्चात् संयतासंयत हुआ और आयु प्रमाण रहा इस प्रकार उत्कृष्ट काल प्राप्त हुआ जघन्य काल सुगम है क्योंकि कई बार कह चुके हैं।

*2 अन्तर कुछ अधिक 66 सागर कोई एक जीव मोहनीय कर्म की 28 प्रकृति की सत्ता वाला एक कोटि पूर्व की आयु वाले मनुष्यों में पैदा हुआ आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त के पश्चात् वेदक सम्यक्त्व व संयमासंयम को एक साथ प्राप्त हुआ अन्तर्मुहूर्त काल तक संयमासंयम का पालन करके संयत हो गया और अन्तर प्रारंभ किया। आयु के अंत में मरकर तेतीस सागर आयु वाले विजयादि अनुत्तर विमानों में उत्पन्न हुआ वहाँ से चयकर पुन:एक कोटिपूर्व की आयु के साथ मनुष्य हो और केवली के पाद मूल में क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त कर संयमी हो गया। मरण कर पुन: विजयादि विमानों में तेंतीस सागर की आयु के साथ उत्पन्न हुआ वहाँ से चय कर पुन: एक कोटि पूर्व के मनुष्यों में उत्पन्न हुआ। सारा जीवन असंयमी रहा जीवन के अंत में संयतासंयत हो अन्तर पूर्ण किया पश्चात् अप्रमत्त संयत हो प्रमत्तसंयत हुआ पश्चात् अप्रमत्त हुआ और हजारों बार प्रमत्त अप्रमत्त श्रेणी आरोहण कर निर्वाण को प्राप्त हुआ।

यहाँ 6 अन्तर्मुहूर्त ऊपर व 5 नीचे इस प्रकार 8 वर्ष ग्यारह अन्तर्मुहूर्त कम तीन कोटि पूर्व अधिक 66 सागर प्राप्त हुआ शेष कथन सुगम है।

नोट:- धवला पुस्तक 5 में अवधिज्ञान संबंधी दो कथन हैं एक-सम्मुर्छिमों में अवधिज्ञान उत्पन्न होने का कथन दूसरा सम्मुर्छिमों में अवधि ज्ञान उत्पत्ति का अभाव दोनों कथन समझ में नहीं आ रहे लगता है कहीं टीका आदि में अशुद्धि हुई है।

260. मति, श्रुत, अवधिज्ञान प्रमत्तसंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	प्रमत्त संयत गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त	–	–
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण, 7	10	7
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	मनुष्यगति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	11 योग	10 योग	1 योग (आहारक मिश्र)
10.	वेद	तीन वेद (भाव से) पुरुष वेद (द्रव्य से)	–	पुरुष वेद
11.	कषाय	13 कषाय	–	11 (स्त्री व नपुं. बिना)
12.	ज्ञान	3 मति, श्रुत अवधि	–	–
13.	संयम	3 (सा.छेदा.परिहारविशुद्धि)	–	2 (प.वि.बिना)
14.	दर्शन	3 दर्शन (चक्षु, अचक्षु, अवधि)	–	–
15.	लेश्या	द्रव्य से 6, भाव से 3 शुभ	–	द्र.–शुक्ल, भाव–3 शुभ
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा.,क्षयो., उपशम)	–	2 (उपशम बिना)
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक	–	–
20.	उपयोग	6 उपयोग	–	–
21.	ध्यान	7 (3 आर्त्त, 4धर्मध्यान)	–	–
22.	आस्रव	24 (13 क.+11 योग)	23 (13+10)	12 (11 क.+1 यो.)
23.	जाति	14 लाख	–	–
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़	–	–
25.	संख्या	संख्यात (59398206)	संख्यात	27 मात्र
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग		ष.ख.मू.
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– सर्वकाल	एक जीव की अपेक्षा– ज. एक समय	उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– निरन्तर एक जीव की अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 33 सागर ष.ख.मू.सू. 240		
30.	भाव	30 (औद.13, मि.13, पा.2, क्षा.1, औप.1)	अपर्याप्तक – 27	
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ	उत्कृष्ट– 525 धनुष	
32.	बन्ध	63		
33.	उदय	81		
34.	सत्त्व	146 (तिर्यंचायु, नरकायु बिना)		

260. मदिसुद ओहि पमत्तसंजद गुणट्ठाणं

तेसिं मदि सुद ओहि णाणीसु पमत्तविरदाणामालावभण्णमाणे अत्थि एगं पमत्तविरदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, दस सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, मणुस्स गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, एगारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु एगं आहारमिस्स काय जोगा, भावेण तिण्णि वेदा दव्वेण पुरिस वेदो अपज्जत्तेसु पुरिसवेदो, तेरस कसाया अपज्जत्तेसु एगारस कसाया, मदि सुद ओहि तिण्णि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा विहार सुद्धि संजमा अपज्जत्तेसु सामाइय–छेदोवट्ठावणा बे संजमा, चक्खु अचक्खु ओहि तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण तिण्णि सुहलेस्सा अपज्जत्तेसु दव्वेण एगं सुक्क लेस्सा भावेण तिण्णि सुह लेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता अपज्जत्तेसु उवसम विणा बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, छ उवजोगा, तिण्णि अट्ट चत्तारि धम्म सत्त झाणाणि, चउबीस आसवा पज्जत्तेसु तेवीस अपज्जत्तेसु बारस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा संखेज्ज पंच कोडि तिणउदि लक्ख अट्ठणउदि सहस्स छ उत्तर बे सयं संखेज्ज अपज्जत्तेसु सत्ताबीस, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एग जीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, तीस भावा अपज्जत्तेसु सत्तबीस भावा, जहण्ण मवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्त पंच सयं धणूं, तिसट्ठि पयडीणं बंधो, एगासीदि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि मदि सुद ओहि णाणीसु पमत्तसंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

मतिश्रुत अवधि ज्ञानी प्रमत्त संयत गुणस्थान

उन्हीं मतिश्रुतावधि ज्ञानियों में प्रमत्त विरत गुणस्थानालाप कहने पर – एक प्रमत्त संयत गुणस्थान, दो संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अर्पाप्ति, दस प्राण, सात प्राण चारों संज्ञाएँ, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, ग्यारह योग (पर्याप्त में दस योग अपर्याप्त में एक आहारक मिश्र काय योग), भाव से तीनों वेद द्रव्य से पुरुष वेद अपर्याप्त में पुरुष वेद, तेरह कषाय अपर्याप्त में स्त्री व नपुंसक बिना ग्यारह कषाय, मति श्रुत अवधि तीन ज्ञान, सामायिक–छेदोपस्थापना–परिहार विशुद्धि तीन संयम अपर्याप्तक में परिहारविशुद्धि बिना दो संयम, चक्षु अचक्षु अवधि तीन दर्शन, द्रव्य से छहों भाव से तीन शुभ लेश्या अपर्याप्त में द्रव्य से शुक्ल व भाव से तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व अपर्याप्त में उपशम बिना दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, सात ध्यान (तीन आर्त्त चार धर्म), चौबीस आस्रव (पर्याप्त में तेईस, अपर्याप्त में बारह आस्रव), चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा–संख्यात (पाँच करोड़ तिरानवे लाख अन्ठानवे हजार दौ सौ छह) अपर्याप्त में सत्ताईस, क्षेत्रापेक्षा–लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर नाना जीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक तेतीस सागर, तीस भाव अपर्याप्तक में सत्ताईस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, तिरेसठ प्रकृतियों का बंध, इक्यासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार मतिश्रुत अवधि ज्ञानियों में प्रमत्त संयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

नोट – आहारक मिश्र काय योग में केवल एक वेद ही होता है। तीर्थंकर,देव, नारकी के अवधिज्ञान सर्वांग से होता है बाकी बचे मनुष्य तिर्यंच के चिह्न विशेषों से होता है जैसे शंख, कमल, स्वस्तिक आदि इसलिए नियत बताये हैं इन नियत चिह्नो के स्थानगत आत्मप्रदेशों में ही प्रकट होता है। नद्यावर्त, ध्वज, कमल, श्रीवत्स, कलश, हल ऐसे पावन लक्षण उन अवधिज्ञान होने वाले मनुष्यों तिर्यंचों में नाभि के ऊपर होते हैं। सरट, मर्कट, गधा, कंक, काक, बक, खर, ऐसे निन्दित लक्षण विभंग अवधिज्ञान होने वाले मनुष्य तिर्यंचों में नाभि के नीचे होते हैं। यदि अवधिज्ञान है तो शुभ चिन्ह नाभि के ऊपर बनते हैं। यदि वही ज्ञान विभंगावधि हो जाता है तो वे चिह्न खत्म होकर नाभि के नीचे अशुभ चिह्न प्रकट हो जाते हैं। यह कुअवधिज्ञान अवधिज्ञानावरण कर्म के क्षयोपशम से होता है। इसका काल नारकियों में कुछ कम 33 सागर देवों में कुछ कम 31 सागर मनुष्य तिर्यंचों में अन्तर्मुहूर्त जघन्य काल नारकियों में देवों में कुछ कम दस हजार वर्ष मनुष्य तिर्यंचों में एक समय।

261. मति, श्रुत, अवधिज्ञान अप्रमत्तसंयत गुणस्थान

1.	गुणस्थान	अप्रमत्त संयत गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 संज्ञा (आहार संज्ञा बिना)
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	द्रव्य से 1 (पुरुष वेद) भाव से 3
11.	कषाय	13 कषाय
12.	ज्ञान	3 (मति, श्रुत, अवधि)
13.	संयम	3 (सा.,छे., परिहार विशुद्धि)
14.	दर्शन	3 दर्शन (चक्षु, अचक्षु, अवधि दर्शन)
15.	लेश्या	भाव से 3 शुभ लेश्या, द्रव्य से 6
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा.,क्षयो., उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	6 (3 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	4 (धर्मध्यान)
22.	आस्रव	22 (13 कषाय+9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	संख्यात (2 करोड़ 96 लाख 99 हजार 103) यद्यपि इस संख्यात में अवधि के बिना मतिश्रुत ज्ञानी भी हैं इसलिए यह संख्या सामान्य है।
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त ष.ख.मू.
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– निरन्तर एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 33 सागर ष.ख.मू.
30.	भाव	30 भाव (औद.13, मि.13, पा.2, क्षा.1, औ.1)
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष
32.	बन्ध	59 कर्मकाण्ड
33.	उदय	76
34.	सत्त्व	146 से 139 तक (यदि क्षायिक सम्यग्दृष्टि है तो पूर्व आयुबन्ध रहित 138 आयु बन्ध सहित 139 यदि क्षयो. स.
		अनंतानुबंधी का विसंयोजक आयुबन्ध रहित 141 आयुबन्ध सहित 142 इन सबसे रहित क्षयो. सं. 146, 145

261 मदिसुदओहि अपमत्तसंजद गुणट्ठाणं

तेसिं मदिसुद ओहि णाणीसु अपमत्तविरदाणा मालावभण्णमाणे अत्थि – एगं अपमत्तविरदो गुणट्ठाणं, एगं सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, आहारेण विणा तिण्णि सण्णा, एगं मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, दव्वेण एगं भावेण तिण्णि वेदा, तेरस कसाया, मदिसुदओहि–तिण्णि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा विहार सुद्धि तिण्णि संजमा, चक्खु अचक्खु ओहि तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण तिण्णि सुह लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, छ उवजोगा, चत्तारि धम्मज्झाणाणि, बाबीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खाए–बे कोडि छण्णउदि लक्ख णवणउदि सहस्सं तिउत्तर सयं संखेज्ज, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्व कालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, तीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पण बीसुत्तर पंचसयं धणू, ऊणसट्ठि पयडीणं बंधो, छ सत्तदि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं पयडीणं ऊणदालुत्तर सयं अट्ठतीसुत्तर सयं[*2] पयडीणं सच्चं होंति।

इदि मदिसुदओहि णाणीसु अपमत्त संजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

मतिश्रुत अवधिज्ञानी अप्रमत्त संयत गुणस्थान

उन्हीं मतिश्रुतावधि ज्ञानी जीवों के अप्रमत्त विरत गुणस्थानालाप कहने पर – एक अप्रमत्त विरत गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, आहार बिना तीन संज्ञा, एक मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, द्रव्य से एक (पुरुष वेद) भाव से तीनों वेद, तेरह कषाय, मतिश्रुतावधि तीन ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना परिहार विशुद्धि तीन संयम, चक्षु–अचक्षु और अवधि तीन दर्शन, द्रव्य से छह भाव से तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, चार धर्मध्यान, बाईस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा संख्यात (दो करोड़ छ्यानवै लाख निन्यानवै हजार एक सौ तीन), क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर–नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट साधिक तेतीस सागर, तीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, उनसठ प्रकृतियों का बंध, छियत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छियालीस से एक सौ अड़तीस तक प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार मतिश्रुतावधि ज्ञानियों में अप्रमत्त संयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

[*1] यद्यपि जो संख्यात का कथन किया है वह सामान्य से है। विशेषता से इस गुणस्थान में जीव सम्पूर्ण सप्तम् गुणस्थान जीवों के संख्यातवें भाग हैं फिर भी संख्यात ही हैं परन्तु कितने हैं ऐसा कथन करना संभव नहीं है।

[*2] यदि पूर्व आयु का बन्धक है तो 146, 142, 139 प्रकृतियों का सत्त्व है यदि आयु का बन्धक नहीं है तो 145, 141, 138 प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

262. मति, श्रुत, अवधिज्ञान 8,9,10,11,12 गुणस्थान

1.	गुणस्थान	8,9,10,11,12 गुणस्थान	
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति	
4.	प्राण	10 प्राण	
5.	संज्ञा	8वें गुण. 3 संज्ञा 9वें गुण. में, 2 संज्ञा, 10वें गुण. में 1 संज्ञा, 11वें गुण. में उपशांत संज्ञा, 12 वें गुण. में क्षीण संज्ञा	
6.	गति	मनुष्यगति	
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	
8.	काय	त्रसकाय	
9.	योग	9 योग	
10.	वेद	भाव से 3, द्रव्य से पुरुष	10,11,12 गु. में अवेद
11.	कषाय	8वें गु. में 13 कषाय, 9वें गुण. 7, 10वें गु. 1 सूक्ष्मलोभ, 11,12 गु. में अकषाय	
12.	ज्ञान	3 (मति, श्रुत, अवधि)	
13.	संयम	(सा.,छे.) 8, 9वें, 10वें गु. सूक्ष्म साम्पराय, 11,12 गु. यथाख्यात चारित्र	
14.	दर्शन	3 दर्शन (चक्षु, अचक्षु, अवधि)	
15.	लेश्या	1 शुक्ल लेश्या	
16.	भव्य	भव्य	
17.	सम्यक्त्व	2 (क्षा.उपशम)	12 गु.-1 (क्षायिक)
18.	संज्ञी	संज्ञी	
19.	आहारक	आहारक	
20.	उपयोग	6 (3 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)	
21.	ध्यान	शुक्लध्यान एक मत=8वें गुण. से शुक्लध्यान दूसरा मत 8,9,10वें गुण. में धर्मध्यान तथा 11, 12 वे गुण. में शुक्ल ध्यान	
22.	आस्रव	8 वें गु. 22, 9वें16, 10वें 10, 11 व 12वें गु. में 9 आस्रव	
23.	जाति	14 लाख	
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़	
25.	संख्या	उपशामक-299, क्षपक-598 प्रत्येक गु. 897, 897, 897, 299, 598=3588	
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग	
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग	
28.	काल	उपशामक-नाना व एक जीव की अपेक्षा-ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक-नाना व एक जीव की अपेक्षा-ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त	
29.	अन्तर	उपशामक-नाना जीवों की अपेक्षा- ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व एक जीव ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 66 सागर क्षपक-नाना जीव की अपेक्षा- ज. एक समय उ. 6 माह , एक जीव-निरन्तर (ष.ख.मू.सू.)	
30.	भाव	8वें 9 गु. में 28 (औद.11, मि.11, पा.2, क्षा.2, औप.2) 10 गु. 22, 11वें गु. 20 12वें गु. में 19 भाव	
31.	अवगाहना	जघन्य- 3½ हाथ	उत्कृष्ट- 525 धनुष
32.	बन्ध	58 (8वाँ गु. उप., क्षपक) 9वाँ 22, 10वाँ 17, 11वाँ गु. 1 उपशम 12वाँ गु. 1 क्षपक	
33.	उदय	72 66 60 59 57	
34.	सत्त्व	क्षपक - 138-103, 102, 101	
		उपशम - 146, 145, 142, 141, 139, 138	

विशेष- उपशामक में जिसने अनंतानुबंधी की विसंयोजना नहीं की है तथा आयु बंध भी किया है, आयु का अबंधक, आयु का अबन्धक अनंतानु. का विसंयोजक आयु का बंधक,
[illegible]

262.मदिसुदओहि अपुव्वअणियट्टि सुहुमसांपरायउवसंत खीणमोह गुणट्ठाणं

तेसिं मदि सुद ओहि णाणीसु अपुव्वत्तो खीण मोहे गुणट्ठाणं आलाव भण्णमाणे अत्थि–अपुव्वयरण अणियट्टियरण सुहुमसंपराय उवसंत खीणमोह पंच गुणट्ठाणाणि, एगं सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, तिण्णि बे एग उवसंत खीण सण्णा, मणुस्स गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, भावेण तिण्णि वेदा दव्वेण एगं पुरिस वेदो व अवेदो, तेरस कसाया कमसा अकसाओ, मदि सुद ओहि तिण्णि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा सुहुम सांपराय जहाक्खाद चत्तारि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, एग सुक्क लेस्सा, भव्व सिद्धिया, खइय ओवसमिय बे सम्मत्ता खीणमोहे खइय सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, छ उवजोगा, एग सुक्कज्झाणं*[1], अपुव्वे बाबीस अणियट्टिसु सोलह सुहुमसाम्पराये दस उवसंत खीणे णव आसवा होंति। चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुल कोडीणं, संखावेक्खया–पत्तेय गुणट्ठाणे अट्ठतो दसम सत्तणउदि उत्तर अट्ठ सयं उवसामगेसु णवणउदि उत्तर बे सयं खवगेसु अट्ठणउदि उत्तर पंचसयं उवसंत मोह गुणट्ठाणे णवणउदि उत्तर बे सयं खीणमोह गुणट्ठाणे अट्ठणउदि उत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो उवसामगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण वास पुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण छावट्ठि सायरोवमणि सादिरेयाणि खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण छम्मास एगजीवावेक्खा णिरंतरं, अपुव्वे अणियट्टीसु अट्ठबीस सुहुमे बाबीस उवसंते बीस खीणे ऊणबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थ उक्कस्स पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, अपुव्वे अट्ठावण्ण अणियट्टिए बाबीस सुहुमे सत्तदस उवसंते एग खीणे एग पयडीणं बंधो, बे सत्तदि छावट्ठि सट्ठि ऊणसट्ठि सत्तावण्ण पयडीणं कमेण उदओ एवं खवगेसु अट्ठतीसुत्तर सयं तिउत्तर सयं बे उत्तर सयं एगुत्तर सयं कमेण उवसामगेसु छादालुत्तर सयं बादालुत्तर सयं व ऊणदालुत्तर सयं अट्ठतीसुत्तर सयं पयडीणं कमेण सच्चं होंति।

इदि मदिसुदओहि णाणीसु अपुव्वत्तो खीणमोह गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

मतिश्रुतावधिज्ञानी 8–9–10–11–12 गुणस्थान

मतिश्रुतावधि ज्ञानियों में अपूर्वकरण से क्षीण मोह गुणस्थान तक शेष गुणस्थानों के आलाप कहने पर – आठ–नौ–दस–ग्यारह–बारहवां पाँच गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, तीन–दो–एक व उपशांत क्षीण संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, भाव से तीनों वेद द्रव्य से एक पुरुष वेद व अवेद, तेरह कषाय सूक्ष्मलोभ व अकषाय, मति श्रुत अवधि तीन ज्ञान, सामायिक, छेदोपस्थापना सूक्ष्म साम्पराय और यथाख्यात चार संयम, तीन दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक उपशम दो सम्यक्त्व बारहवे गुणस्थान में एक क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, एक शुक्ल ध्यान, आठवें गुणस्थान में बाईस नोवें में सोलह दसवें में दस ग्यारह वे बारह वे में नौ आस्रव होते हैं। चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा आठ सौ संतानवै उपशामक दो सौ निन्यानवै क्षपक पाँच सौ अन्ठानवे*[1], क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल उपशामक नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त क्षपक–नाना व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर उपशामक नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट छयासठ सागर क्षपक नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट 6 माह एक जीवापेक्षा निरंतर, भाव 8–9 में अट्ठाईस, 10वे में बाईस 11वे में बीस, 12वे में उन्नीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, 8वे में अट्ठावन नौवे में बाईस 10वे में सत्तरह 11वे में एक 12वे में एक प्रकृति का बंध, क्रमश: बहत्तर छयासठ, साठ उनसठ व सत्तावन प्रकृति का उदय, क्षपक में क्रमश: एक सौ अड़तीस व एक सौ तीन एक सौ दो व एक सौ एक*[2] उपशामक में क्रमश: एक सौ छ्यालीस एक सौ ब्यालीस एक सौ उनतालीस एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार मतिश्रुतावधि ज्ञानियों में अपूर्वकरण से क्षीणमोह गुणस्थानालाप समाप्त हुआ।

---

*चार धर्म ध्यान भी कहें हैं।

विशेषार्थ–*[1] संख्या क्षपकों में प्रत्येक गुणस्थान में क्रमश: 598, 598, 598, 598 तथा उपशामकों में क्रमश: 299, 299, 299, 299 इस प्रकार से जानना चाहिए।

*[2] सत्त्व प्रकृतियों में क्षपक में क्रमश: आठवें से बारहवें गुणस्थान तक 138 नोवे गुणस्थान के नौ भागों में क्रमश: 138, 122, 114, 113, 112, 106, 105, 104, 103 दसवे गुणस्थान में 102 बारहवें गुण. में 101 प्रकृतियाँ सत्त्व रूप में रहती है तथा उपशामक में पूर्व आयु का बन्धक है तो क्रमश: 146, 142, 139 यदि आयु का बन्धक नहीं है तो क्रमश: 145, 141, 138 प्रकृतियों का सत्त्व पाया जाता है शेष कथन सुगम है।

263 मन:पर्यय ज्ञान सामान्य

1.	गुणस्थान	6–12
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा व क्षीण संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	1– पुरुष वेद, अवेद
11.	कषाय	11 कषाय (स्त्री व नपुंसक वेद बिना)
12.	ज्ञान	मन:पर्ययज्ञान
13.	संयम	4 (सामायिक, छेदो., सूक्ष्म साम्पराय, यथाख्यात चारित्र)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	3 शुभ लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षायिक, क्षयोपशम, द्वितीयोपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	4 (1 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	9 (4 धर्मध्यान+ 3 आर्तध्यान + 2 शुक्लध्यान)
22.	आस्रव	20 (11 कषाय + 9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	संख्यात
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम एक कोटि पूर्व
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– निरन्तर एक जीव की अपेक्षा–ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन
30.	भाव	28 (औद.11, मि.11, औप.2, क्षा.2, पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष
32.	बन्ध	65
33.	उदय	77
34.	सत्त्व	146 (नरक, तिर्यञ्चायु बिना)

263. मणपज्जय णाणी सामण्णं

अह मणपज्जय णाणीसु सामण्णालाव भण्णमाणे अत्थि-पमत्तादो खीणमोह सत्त गुणट्ठाणाणि, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो[*1], छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा व उवसंत/खीण सण्णा, मणुस्स गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, एग पुरिस वेदो व अवेदो[*2], एगारस कसाया, एगं मणपज्जय णाणं, सामाइय छेदोवट्ठावणा सुहुमसाम्पराय जहाक्खाद चत्तारि संजमा[*3], तिण्णि दंसणाणि, तिण्णि सुह लेस्सा, भव्व सिद्धिया, खइय खओवसमिय विदिओवसम तिण्णि सम्मत्ता[*4], सण्णी, आहारिणो, चत्तारि उवजोगा, तिण्णि अट्ट चत्तारि धम्म बे सुक्क णव झाणाणि, बीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा संखेज्ज[*5], खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण पुव्वंकोडिणं[*6], अंतरं-णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गलपरायट्टं[*7], अट्ठाबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, पणट्ठि पयडीणं बंधो, सत्तसत्तदि पयडीणं उदओ एवं णिरयतिरिक्खाऊ विणा छादाल उत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति[*8]।

इदि मणपज्जय णाणीसु सामण्णालाव सम्मत्ता

मन:पर्यय ज्ञान सामान्य

मन:पर्यय ज्ञानियों के आलाप कहने पर – प्रमत्त से क्षीण मोह तक सात गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञा व क्षीण संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, एक पुरुष वेद व अवेद, ग्यारह कषाय, एक मन:पर्यय ज्ञान, सामायिक-छेदोपस्थापना-सूक्ष्मसाम्पराय-यथाख्यात चार संयम, तीन दर्शन, तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक-क्षयोपशम उपशम (द्वितीयोपशम) तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, चार उपयोग, 9 ध्यान (चार धर्म दो शुक्ल 3 आर्त्त ध्यान), बीस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा संख्यात, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन-लोक का असंख्यातवां भाग, काल नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम एक कोटि पूर्व, अंतर-नानाजीवापेक्षा निरंतर एकजीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्ध पुद्गल परावर्तन, अट्ठाईस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, पैंसठ प्रकृतियों का बंध, सतत्तर प्रकृतियों का उदय एवं नरक तिर्यंचायु बिना एक सौ छ्यालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार मन:पर्यय ज्ञानियों में सामान्यालाप समाप्त हुआ।

[*1] मन: पर्यय ज्ञान पर्याप्त अवस्था में ही होता है।

[*2] स्त्री व नपुसंक वेदियों में मन: पर्ययज्ञान नहीं होता एक पुरुष वेदी जीवों में ही होता है।

[*3] मन:पर्यय ज्ञान के साथ परिहारविशुद्धि संयम नहीं होता।

[*4] प्रथमोपशम सम्यक्त्व के साथ मन:पर्ययज्ञान नहीं होता किंतु मन: पर्यय ज्ञान के साथ उपशम श्रेणी माड़ सकता है इसलिए द्वितीयोपशम सम्यक्त्व होता है।

[*5] संख्या अपेक्षा जो संख्यात कहा है उसका तात्पर्य है अपने-अपने गुणस्थानों में जितने जीव हैं उनके संख्यात वे भाग होते हैं अब इतने ही होते हैं ऐसा उपदेश नहीं पाया जाता।

[*6] जघन्य काल सुगम है उत्कृष्ट काल यानि कोई जीव एक कोटि पूर्व की आयु वाले मनुष्य में उत्पन्न हुआ आठ वर्ष की आयु में सम्यक्त्व व संयम को एक साथ प्राप्त किया पश्चात् मन: पर्यय ज्ञान को प्राप्त किया इस प्रकार कुछ अधिक आठ वर्ष कम एक पूर्व कोटि काल प्राप्त हुआ।

[*7] अन्तर अन्तर्मुहूर्त सुगम है उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन यानि कोई जीव संयम के साथ मन:पर्यय ज्ञान को प्राप्त हुआ संयम से व सम्यक्त्व दोनों से च्युत हो मिथ्यात्व को प्राप्त हुआ कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन काल तक भ्रमण कर पुन: मनुष्य पर्याय को प्राप्त कर संयम व मन:पर्यय ज्ञान को प्राप्त किया इस प्रकार उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त हुआ।

[*8] क्षायिक सम्यग्दृष्टि जिसने आयु बन्ध नहीं किया उसके 138 प्रकृतियों का सत्त्व, आयु बन्धक है तो 139 क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि परन्तु अनंतानुबंधी का विसंयोजक आयु का अबंधक 141, आयु का बंधक 142, क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि आयु बंधक 146, आयु अबंधक 145, क्षपक श्रेणी में क्रमश: 138, 122, 101।

विशेष- मन:पर्यय ज्ञान, परिहार विशुद्धि संयम, प्रथमोपशम सम्यक्त्व, आहारक शरीर ये साथ-साथ नहीं होते अलग-अलग ही होते हैं।

264. मन:पर्यय ज्ञान प्रमत्तअप्रमत्त गुणस्थान

1.	गुणस्थान	6 व 7 (प्रमत्त व अप्रमत्तसंयत गुण.)	
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति	
4.	प्राण	10 प्राण	
5.	संज्ञा	4 संज्ञा 6वें गु.	7वें गु.–3 संज्ञा (आहार संज्ञा बिना)
6.	गति	मनुष्यगति	
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	
8.	काय	त्रसकाय	
9.	योग	9 योग	
10.	वेद	1 पुरुष वेद (स्त्री वेदी व नपुंसक वेदी को मन:पर्यय ज्ञान नहीं होता)	
11.	कषाय	11 कषाय (स्त्री नपुंसक वेद बिना)	
12.	ज्ञान	मन:पर्ययज्ञान	
13.	संयम	2 (सामायिक, छेदो.) (मन:पर्यय ज्ञान के साथ परिहार विशुद्धि संयम का निषेध है	
14.	दर्शन	3 (चक्षु, अचक्षु, अवधि दर्शन)	
15.	लेश्या	भाव से 3 शुभ लेश्या, द्रव्य से 6 लेश्या	
16.	भव्य	भव्य	
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षायिक, क्षयोपशम, उपशम) (द्वितीयोपेशम की अपेक्षा)	
18.	संज्ञी	संज्ञी	
19.	आहारक	आहारक	
20.	उपयोग	4 (1 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)	
21.	ध्यान	7 (3 आर्त्त 4 धर्म) अप्रमत्त में 4 धर्मध्यान	
22.	आस्रव	20 (11 कषाय + 9 योग)	
23.	जाति	14 लाख	
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़	
25.	संख्या	संख्यात	
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग	
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग	
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय	उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– निरन्तर, एक जीव की अपेक्षा– ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त	
30.	भाव	28 (औद.11, मि. 11, क्षा.2, पा.2, औ.2)	
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ	उत्कृष्ट– 525 धनुष
32.	बन्ध	63 (6वाँ गु.)	59 (7वां गु.)
33.	उदय	77	74
34.	सत्त्व	146 – 138	146 – 138

264. मणपज्जय णाणी पमत्तापमत्त गुणट्ठाणं

तेसिं मणपज्जय णाणीसु पमत्तापमत्त गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि - पमत्तापमत्त संजदो बे गुणट्ठाणाणि, एगं सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा अपमत्ते तिण्णि सण्णा*[1], मणुस्स गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा*[2], एगं पुरिस वेदो, एगारस कसाया, मण पज्जयणाणं, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, चक्खु अचक्खु ओहि तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण तिण्णि सुह लेस्सा, भव्व सिद्धिया, खइय खओवसमिय विदिओवसम तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, चत्तारि उवजोगा, सत्त झाणाणि अपमत्तेसु चत्तारिधम्मझाणाणि, बीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा संखेज्ज*[3], खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं*[4], अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं*[5], अट्ठाबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, पमत्ते तिसट्ठि अपमत्ते ऊणसट्ठि पयडीणं बंधो, पमत्ते सत्तसत्तदि अपमत्ते चउसत्तदि पयडीणं उदओ एवं पमत्ते छादालुत्तर सयं अपमत्ते छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति*[6]।

इदि मणपज्जय णाणीसु पमत्तापमत्त गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

मन:पर्ययज्ञान प्रमत्त व अप्रमत्त गुणस्थान

उन्हीं मन:पर्यय ज्ञानियों में प्रमत्त अप्रमत्त गुणस्थानालाप कहने पर प्रमत्त संयत व अप्रमत्त संयत दो गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ अप्रमत्त में तीन संज्ञाएँ, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, एक पुरुष वेद, ग्यारह कषाय, मन:पर्ययज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, चक्षु अचक्षु अवधि दर्शन, द्रव्य से छहों लेश्या भाव से तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक क्षयोपशम द्वितीयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, चार उपयोग, सात ध्यान अप्रमत्त में चार धर्म ध्यान, प्रमत्त व अप्रमत्त में बीस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा संख्यात, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल-नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर-नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अट्ठाईस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, प्रमत्त में तिरेसठ अप्रमत्त में उनसठ प्रकृतियों का बंध, प्रमत्त में सतत्तर अप्रमत्त में चौहत्तर प्रकृतियों का उदय एवं प्रमत्त में एक सौ छ्यालीस अप्रमत्त में एक सौ छ्यालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार मन:पर्यय ज्ञानियों में प्रमत्त व अप्रमत्त गुणस्थान समाप्त हुआ।

---

*[1] अप्रमत्त गुणस्थान में आहार संज्ञा नहीं होती।

*[2] 4 मन, 4 वचन एक औदारिक काययोग

*[3] संख्या का कथन करने पर अपने अपने गुणस्थानों में जो संख्या है उसके संख्यातवें भाग होते हैं किंतु कितने होते हैं ऐसा वर्तमान में उपदेश नहीं पाया जाता। ध.पु. 3

*[4] काल का कथन गुणस्थान के समान है कोई विशेषता नहीं है।

*[5] अन्तर-जैसे कोई प्रमत्त संयत जीव अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती हो अन्तर आरंभ किया पुन: अन्तर्मुहूर्त बाद प्रमत्त गुणस्थानवर्ती हो गया इस प्रकार लब्ध प्राप्त हुआ इसी प्रकार प्रमत्त का अन्तर अप्रमत्त में पहुँचकर करें।
शंका-अप्रमत्त में उपशम श्रेणी चढ़ाकर अन्तर क्यों नहीं प्राप्त किया ?
समाधान-नहीं क्योंकि चार गुणस्थान चढ़ने के तीन उतरने के समयों से प्रमत्त गुणस्थान का काल संख्यात गुणा है। ऐसा गुरुओं का उपदेश है।

*[6] सत्त्व का कथन 146 से 138 प्रकृतियों तक का कथन पूर्व में किया है। उससे इसमें कोई भेद नहीं है।

265. मन:पर्यय ज्ञान अपूर्वकरण अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

1.	गुणस्थान	8–9	
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति	
4.	प्राण	10 प्राण	
5.	संज्ञा	8 गु.–3 संज्ञा (आहार बिना)	9 गु.–2 संज्ञा (भय बिना)
6.	गति	मनुष्यगति	
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	
8.	काय	त्रसकाय	
9.	योग	9 योग	
10.	वेद	1 पुरुष वेद	
11.	कषाय	11 कषाय अनि. 5 कषाय	
12.	ज्ञान	मन:पर्यय	
13.	संयम	2 (सामायिक, छेदो.)	
14.	दर्शन	3 (चक्षु, अचक्षु, अवधि दर्शन)	
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या	
16.	भव्य	भव्य	
17.	सम्यक्त्व	2 (क्षायिक, उपशम)	
18.	संज्ञी	संज्ञी	
19.	आहारक	आहारक	
20.	उपयोग	4 (एक ज्ञानो. तीन दर्शनो.)	
21.	ध्यान	शुक्लध्यान अपेक्षाकृत धर्म ध्यान	
22.	आस्रव	20 (कषाय 11 + योग 9) अनिवृत्तिकरण में 14 आस्रव)	
23.	जाति	14 लाख	
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़	
25.	संख्या	संख्यात (प्रत्येक गुणस्थान में उपशम श्रेणी में दस व क्षपक श्रेणी में बीस)	
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग	
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग	
28.	काल	उपशामक नाना व एक जीव ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त, क्षपक नाना व एक जीव अन्तर्मुहूर्त	
29.	अन्तर	उपशामक नाना जीवापेक्षा ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीव ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम एक पूर्व कोटि क्षपक नाना जीव– ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व एक जीव निरंतर	
30.	भाव	24 (औद. 9, मि.9, क्षा.2, औप.2, पा.2)	
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ	उत्कृष्ट– 525 धनुष
32.	बन्ध	58 (8 गु.)	22 (9 गु.)
33.	उदय	70	64
34.	सत्त्व	उपशामक–146–138	उपशामक–146 क्षपक – 138 (9 भाग में 103)

265. मणपज्जयणाणी अपुव्व अणियट्टियरण गुणट्ठाणं

तेसिं मणपज्जयणाणी अट्ठ णव गुणट्ठाणालावभण्णमाणे अत्थि – अपुव्वयरण अणियट्टियरण बे गुणट्ठाणा, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, अपुव्वे तिण्णि सण्णा अणियट्टियरणे बे सण्णा*1, मणुस्स गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, एगं पुरिस वेदो, एगारस कसाया अणियट्ठियरणे पंच कसाया, एगं मणपज्जय णाणं, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, तिण्णि दंसणाणि, एगं सुक्क लेस्सा, भव्वसिद्धिया, खइय व विदिओवसम बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, चत्तारि उवजोगा, एगं सुक्क झाणं*2, बीस आसवा अणियट्टियरणे चोद्दस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा संखेज्ज पत्तेय गुणट्ठाणेसु उवसामगेसु दस खवगेसु बीस, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा*3, कालो उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं*4 एगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेगजीवावेक्खा अंतोमुहुत्तं, अंतरं–उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एक समओ उक्कस्सेण वास पुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण पुव्व कोडिपमाणं*5 खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण वास पुधत्तं एगजीवावेकखा णिरंतरं, चउवीस भावा, उपसामगेसु तेवीसखवगेसु बाबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पचं सयं धणू, अपुव्वे अट्ठावण्ण अणियट्टियरणे बाबीस पयडीणं बंधो, अपुव्वे सत्तदि अणियट्टिए चउसटिठ पयडीणं उदओ एवं अपुव्वे उवसामगेसु छादालुत्तर सयं खवगेसु अड़तीसुत्तर सयं अणियट्टिएसु उवसामगेसु छादालुत्तर सयं खवगेसु णव भागेसु कमेणेण अट्ठतीसुत्तर सयं बाबीसुत्तर सयं चोद्दसुत्तर सयं तेरसुत्तर सयं बारसुत्तर सयं छउत्तर सयं तिउत्तर सयं*6 पयडीणं सच्चं होंति।

इदि मणपज्जय णाणीसु अपुव्व अणियट्टियरण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

मन:पर्यय ज्ञान अपूर्वकरण–अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

उन्हीं मन:पर्यय ज्ञानियों में अपूर्व अनिवृत्तिकरण गुणस्थानालाप कहने पर – अपूर्वकरण व अनिवृत्तिकरण दो गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, अपूर्वकरण में तीन संज्ञा अनिवृत्तिकरण में दो संज्ञा*1, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, भाव से व द्रव्य से एक पुरुष वेद, ग्यारह कषाय अनिवृत्तिकरण में पाँच कषाय, एक मन:पर्यय ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, तीन दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक व द्वितीयोपशम दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, चार उपयोग, एक शुक्ल ध्यान*, बीस आस्रव अनिवृत्तिकरण में चौदह आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा संख्यात (प्रत्येक गुणस्थान में उपशम श्रेणी में दस क्षपक श्रेणी में बीस होते हैं।), क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल–उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त क्षपक नाना व एक जीवापेक्षा अन्तर्मुहूर्त, अंतर–उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम पूर्व कोटि प्रमाण क्षपक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा निरंतर, चौबीस भाव उपशामकों में तेबीस क्षपकों में बाबीस भाव होते हैं, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, अपूर्वकरण में अट्ठावन अनिवृतिकरण में बाईस प्रकृतियों का बंध, अपूर्वकरण में सत्तर अनिवृत्तिकरण में चौंसठ प्रकृतियों का उदय एवं अपूर्वकरण में उपशामकों में एक सौ छयालीस क्षपकों में एक सौ अड़तीस अनिवृत्तिकरण में उपशामकों में एक सौ छयालीस क्षपकों के नौ भागों में क्रमश: एक सौ अड़तीस–एक सौ बाईस–एक सौ चौदह–एक सौ तेरह–एक सौ बारह–एक सौ छह–एक सौ तीन प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार मन: पर्यय ज्ञानियों में अपूर्वकरण व अनिवृत्तिकरण गुणस्थान समाप्त हुआ।

---

*1 अपूर्वकरण के प्रथम भाग में भय प्रकृति का उदय होने के कारण भय संज्ञा होती है किंतु उसी प्रथम भाग में भय प्रकृति की उदय व्युच्छित्ति होने से द्वितीय भाग में व अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में मात्र दो संज्ञा रह जाती हैं।

*2 दूसरे मत से चार धर्मध्यान (आचार्य वीरसेन स्वामी)

*3 स्पर्शन सभी पदों की अपेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग होता है यहाँ उपपाद पद नहीं होता।

*4 काल का कथन गुणस्थान के समान है दोनों श्रेणियों उपशमक, क्षपक में गुणस्थान से कोई भेद नहीं है मात्र इतनी विशेषता है कि उपशम व क्षपक एक जीव की अपेक्षा नाना जीवों का काल (अन्तर्मुहूर्त) संख्यात समय अधिक है। क्योंकि वह संग्रह रूप है।

*5 अन्तर भी गुणस्थानवत् है इतना विशेष है कि उपशामक एक जीव की अपेक्षा उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम एक पूर्वकोटि प्रमाण है शेष कथन सुगम है।

*6 सत्त्व प्रकृतियाँ गुणस्थानवत् हैं। इतनी और विशेषता है कि गुणस्थान क्षपक का उत्कृष्ट अन्तर छह माह है किंतु यहाँ वर्ष पृथक्त्व है।

266. मन:पर्यय ज्ञान सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान

1.	गुणस्थान	10वाँ गुण. (सूक्ष्म साम्पराय)
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	परिग्रह संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	अवेद (द्रव्य से पुरुष)
11.	कषाय	सूक्ष्म लोभ
12.	ज्ञान	मन:पर्ययज्ञान
13.	संयम	1 सूक्ष्म साम्पराय
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	1 शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (क्षायिक, उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	4 (1 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	शुक्लध्यान अथवा धर्मध्यान
22.	आस्रव	10 (1 लोभ कषाय + 9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	संख्यात 897 (उपशम 299+ क्षपक 598) यह संख्या सामान्य है विशेष की अपेक्षा संख्यात हैं।*[1]
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	उपशामक नाना व एक जीव- ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त, क्षपक नाना व एक जीव अपेक्षा- अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उपशामक नाना जीव ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीव ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम पूर्वकोटि प्रमाण क्षपक नाना जीव अपेक्षा- ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व एक जीव अपेक्षा निरन्तर
30.	भाव	20 (औद. 5, मि.9, क्षा.2, औप.2, पा.2) क्षपक= 18 उपशामक=19
31.	अवगाहना	जघन्य- 3½ हाथ उत्कृष्ट- 525 धनुष
32.	बन्ध	17
33.	उदय	60
34.	सत्त्व	उपशामक- 146 - 138 क्षपक - 102
		* (30) उपशामक 10 क्षपक 20

266. मणपज्जयणाणी सुहुमसंपराय गुणट्ठाणं

तेसिं मणपज्जय णाणीसु सुहुमसांपराय गुणट्ठाणालावभण्णमाणे अत्थि – एगं सुहुमसांपराय गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, एग परिग्गह सण्णा*[1], मणुस्स गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, अवेदो, एगं सुहुम लोह कसाओ, मणपज्जय णाणं, एग सुहुमसांपराय संजमो, तिण्णि दंसणाणि, एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, खइय व उवसम बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, चत्तारि उवजोगा, चत्तारि धम्मज्झाणं च एगं सुक्कज्झाणं*[2], दस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा (संखेज्ज) तीस उवसामगेसु दस खवगेसु बीस, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एक समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं एग जीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेग जीवावेक्खा जहणणुक्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं उवसामगेसु णाणा जीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण वास पुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण पुव्व कोडि पमाणो खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण वास पुधत्तं एगजीवावेक्खा णिरंतरं, बीस भावा खवगेसु अट्ठदस उवसामगेसु उणवीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, सत्तदस पयडीणं बंधो, सट्ठि पयडीणं उदओ एवं उवसामगेसु छादालुत्तर सयं खवगेसु बे उत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि मणपज्जय णाणीसु सुहुमसंपराय गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

मन:पर्यय ज्ञान सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान

उन्हीं मन:पर्यय ज्ञानियों के सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानालाप कहने पर – एक सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, एक परिग्रह संज्ञा*, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, अवेद, एक सूक्ष्मलोभ कषाय, मन:पर्यय ज्ञान, सूक्ष्म सांपराय संयम, तीन दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक व उपशम दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, चार उपयोग, चार धर्म ध्यान एक शुक्ल ध्यान, दस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा तीस (क्षपक बीस, उपशामक दस), क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल उपशामक नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त क्षपक नाना जीवापेक्षा व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर–उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम पूर्व कोटि प्रमाण क्षपक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा निरंतर, बीस भाव क्षपकों में अठारह उपशामकों में उन्नीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, सत्रह प्रकृतियों का बंध, साठ प्रकृतियों का उदय एवं उपशामकों के एक सौ छ्यालीस क्षपकों के एक सौ दो प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार मन:पर्यय ज्ञानियों सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान समाप्त हुआ।

---

*[1] वेद कषाय के नष्ट हो जाने से मैथुन संज्ञा नष्ट हो गयी मात्र लोभ कषाय के कारण परिग्रह है आगे इसी गुणस्थान में वो भी समाप्त हो जायेगी।

*[2] ध्यान के विषय में दोनों मतों का विवेचन पूर्व में कर ही चुके है। शेष सारे कथन सुगम है क्योंकि पहले कई बार व्याख्यान हो चुका है।

267. मन:पर्यय ज्ञान उपशान्त कषाय गुणस्थान

1.	गुणस्थान	11वाँ गुण (उपशान्त कषाय)
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	उपशांत संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	अवेद
11.	कषाय	अकषाय
12.	ज्ञान	मन:पर्ययज्ञान
13.	संयम	यथाख्यात संयम (चारित्र)
14.	दर्शन	3 दर्शन (केवल दर्शन बिना)
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 उपशम सम्यक्त्व, क्षायिक सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	4 (1 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	शुक्लध्यान
22.	आस्रव	9
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	10
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना व एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम पूर्वकोटि प्रमाण
30.	भाव	18 (औद. 4, मि. 9, क्षायि.1, औप.2, पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ उ.–525
32.	बन्ध	1
33.	उदय	59
34.	सत्त्व	146, 145, 142, 141, 139, 138

267. मणपज्जयणाणी उवसंत कसाय गुणट्ठाणं

तेसिं मणपज्जयणाणीसु उवसंत कसाय जीवाणामालावभण्णमाणे अत्थि – एगं उवसंत कसाय गुणट्ठाणं, एगं सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, उवसंत सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, अवेदी, अकसायी, एगं मणपज्जय णाणं, एगं जहाक्खाद संजमो, तिण्णि दंसणाणि, एगं सुक्क लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, चत्तारि उवजोगा, एगं सुक्कज्झाणं, णव आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा (संखेज्ज) दस, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा*[1], कालो णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं*[2], अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण पुव्व कोडि पमाणो, अट्ठदस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पचंसयं धणू, एगं सादावेयणीयो बंधो, ऊणसट्ठि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर अडतीससुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि मणपज्जय णाणीसु उवसंत कसाय गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

मन:पर्यय ज्ञान उपशान्त कषाय गुणस्थान

उन्हीं मन:पर्यय ज्ञानी उपशान्त कषाय जीवों के आलाप कहने पर – एक उपशान्त कषाय गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, उपशांत संज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, अवेद, अकषाय, एक मन:पर्यय ज्ञान, एक यथाख्यात संयम, तीन दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, चार उपयोग, एक शुक्ल ध्यान, नौ आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा संख्यात (दस), क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल– नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर–नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट* कुछ कम पूर्व कोटि प्रमाण, अठारह भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक साता वेदनीय का बंध, उनसठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार मन:पर्यय ज्ञानियों में उपशांत कषाय गुणस्थान समाप्त हुआ।

---

*[1] यहाँ स्वस्थान व मारणांतिक पद पाया जाता है शेष वेदना विक्रिया आदि पद नहीं पाये जाते हैं।

शंका– धवल पुस्तक दो में मन: पर्यय ज्ञान का आलाप कहते समय मात्र एक ज्ञान का कथन किया है। जबकि दर्शन मार्गणा में तीन दर्शन का कथन किया है। यहाँ एक ज्ञान लब्धि की अपेक्षा है या उपयोग की अपेक्षा यदि लब्धि की अपेक्षा है तो चार ज्ञान कहने चाहिए क्योंकि उनका भी सदभाव पाया जाता है। यदि उपयोग की अपेक्षा कथन है तो तीन दर्शन नहीं पाये जा सकते क्योंकि ज्ञानोपयोग के साथ दर्शनोपयोग का अभाव है ?

समाधान– धवला पुस्तक दो में ज्ञान मार्गणा व दर्शन मार्गणा का कथन क्षयोपशम की अपेक्षा है अन्यथा मन:पर्ययज्ञान का काल कुछ कम एक पूर्व कोटि प्रमाण नहीं बन सकता कहा भी है–

मणपज्जव णाणी केवल णाणी केवचिरं कालादो होंतिं ? उक्कसेण पुव्व कोडि देसूणा।। जीव मन:पर्ययज्ञानी कब तक रहते हैं अधिक से अधिक कुछ कम पूर्वकोटि प्रमाण

यह सत्य है कि जिसके मन: पर्यय ज्ञानावरण का क्षयोपशम होगा उसके अन्य ज्ञानावरण का भी क्षयोपशम होगा अत: चार ज्ञान कहना चाहिए किन्तु मन: पर्यय ज्ञान के आलाप में मन: पर्यय ज्ञान की विवक्षा होने से उसका कथन किया है। (रतनचन्द्र मुक्तार व्यक्तित्व कृतित्व से साभार)

*[2] काल का कथन करते समय जघन्य काल एक समय कहा है वह मरण की अपेक्षा है कोई जीव मन:पर्यय ज्ञान के साथ उपशम श्रेणी चढ़कर उपशांत मोह गुणस्थान वर्ती हुआ एक समय रहकर मरण को प्राप्त हो गया इस प्रकार एक समय जघन्य काल प्राप्त हुआ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त प्राप्त है।

268. मन:पर्यय ज्ञान क्षीण मोह गुणस्थान

1.	गुणस्थान	क्षीण मोह गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	क्षीण संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	अपगत वेद
11.	कषाय	अकषाय
12.	ज्ञान	मन:पर्ययज्ञान
13.	संयम	यथाख्यात
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	4 उपयोग
21.	ध्यान	2 शुक्लध्यान
22.	आस्रव	9 आस्रव
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	20 (संख्यात)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग (यहाँ मात्र स्वस्थान पद ही पाया जाता है शेष पद नहीं पाये जाते)
28.	काल	नाना व एक जीव– अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीव अपेक्षा– ज. एक समय, उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीव अपेक्षा– निरन्तर
30.	भाव	17 (औद.4, मि.9, क्षा.2, पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष
32.	बन्ध	1
33.	उदय	57
34.	सत्त्व	101

268. मणमज्जय णाणी खीण कसाय गुणट्ठाणं

तेसिं मणपज्जयणाणी खीण कसाय जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि - एगं खीण कसाय गुणट्ठाणं, एगं सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, खीण सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, अवेदी, अकषायी, एग मणपज्जयणाणं, एग जहाक्खाद संजमो, तिण्णि दंसणाणि, सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, एग खइय सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, चत्तारि उवजोगा, बे सुक्कज्झाणाणाणि, णव आसवा, चोद्दस लक्ख जादि, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा संखेज्ज बीस[*1], खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा[*1], कालो-णाणेगजीवावेक्खा अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एगजीवावेक्खा णिरंतरं, सत्त दस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, एग सादा वेयणीयो बंधो, सत्तावण्ण पयडीणं उदओ एवं एगुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि मणपज्जय णाणीसु खीणकसाय गुणट्ठाणं सम्मत्ता

मन:पर्यय ज्ञान क्षीणमोह गुणस्थान

उन्हीं मन:पर्यय ज्ञानी क्षीण कषाय जीवों के आलाप कहने पर एक क्षीण कषाय गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, क्षीण संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, अवेद, अकषाय, एक मन:पर्यय ज्ञान, यथाख्यात संयम, तीन दर्शन, शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, एक क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, चार उपयोग, एक शुक्ल ध्यान, नौ आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा बीस, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल-नाना व एक जीवापेक्षा अन्तर्मुहूर्त, अंतर-नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा निरंतर, सत्तरह भाव, जघन्यावगाहना साढे तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक साता वेदनीय का बंध, सत्तावन प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ एक प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार मन:पर्यय ज्ञानियों में क्षीण कषाय गुणस्थान समाप्त हुआ।

[*1] यहाँ पर जो संख्या दी जा रही है वह सामान्य है विशेषता से 8 से लेकर बारहवें गुणस्थान तक जीवों की संख्या संख्यात है।

विशेषार्थ :- संख्या का कथन करते हुए कहते हैं कि 8 से 12 वे गुणस्थान तक क्षपकश्रेणी वालों की प्रत्येक गुणस्थान में 20 होती है क्योंकि विशेष ऋद्धि से सम्पन्न ऋषि अधिक नहीं पाये जाते हैं।

[*2] इस गुणस्थान में स्पर्शन की अपेक्षा मात्र स्वस्थान पद ही पाया जाता है विहार, मारणांतिक उपपाद आदि पद नहीं पाये जाते हैं। काल का कथन सुगम है क्योंकि नाना जीव क्रमश: एक-एक समय में क्षीण कषाय गुणस्थान को प्राप्त करते हैं तो भी अन्तर्मुहूर्त प्राप्त होता है और एक जीव का भी अन्तर्मुहूर्त प्राप्त होता है। अन्तर का कथन करते समय नाना जीवों का सुगम है एक जीव का निरंतर सुगम है क्योंकि क्षपक श्रेणी से सभी कर्मों का क्षय करते हुए क्षीण मोह से ऊपर जाकर सयोगी हो फिर अयोगी और मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं इसलिए अन्तर नहीं होता। शेष कथन सुगम है समझ कर पढ़ना चाहिए।

269. केवलज्ञान सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	13 गुणस्थान, 14 गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	4 प्राण अप. 2 प्राण (आयु, कायबल)	4 प्राण	2 (अनाहारक में एक आयु प्राण)
5.	संज्ञा	0 (क्षीण संज्ञा)	–	–
6.	गति	मनुष्य गति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	7 योग अप. 2	5	2 योग (औ.मि.,का.)
10.	वेद	0 अवेदी	0	0
11.	कषाय	0 अकषाय	0	0
12.	ज्ञान	केवलज्ञान	–	–
13.	संयम	यथाख्यात	–	–
14.	दर्शन	केवलदर्शन	–	–
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या, अयोगों में अलेश्या	0	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक	–	–
18.	संज्ञी	नो संज्ञी, नो असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक अयोगों में अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	2 (केवलज्ञान + केवलदर्शन)	–	2
21.	ध्यान	2 सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती, व्युपरत क्रिया निवर्तिनि	–	–
22.	आस्रव	7 योग (5 पर्याप्त+2 अपर्याप्त), निरास्रवा	5	2 योग
23.	जाति	14 लाख	–	–
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़	–	–
25.	संख्या	898502, अयोगी 598	–	100
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग व सर्व लोक	–	–
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग, सर्वलोक	–	–
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम एक पूर्व कोटि		
29.	अन्तर	नाना व एक जीव अपेक्षा – निरन्तर		
30.	भाव	14 व अयोगी में 13		
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष –		
32.	बन्ध	1 साता, अयोगी में अबंध		
33.	उदय	42 व 12		
34.	सत्त्व	85 अयोगी में द्विचरम समय में85, चरम समय में 13		

269. केवलणाणी सामण्णं

अह केवलणाणी जीवाणामालावभण्णमाणे अत्थि–सजोगी अजोगी जिण बे गुणट्ठाणाणि, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, चत्तारि पाणा अपज्जत्तेसु बे पाणा अजोगीसु एगं आऊ पाणो, खीण सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, सत्त जोगा पज्जत्तेसु बे मणोजोगा बे वयण जोगा एग ओरालिय काय जोगा एदे पंचजोगा व अजोगी अपज्जत्तेसु बे जोगा, अवेदी, अकसायो, केवलणाणं, जहाक्खाद संजमो, केवलदंसणं, सुक्क लेस्सा अजोगीसु अलेस्सा, भव्वसिद्धिया, खइय सम्मत्तं, णो सण्णी णो असण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि अजोगी णिच्चं अणाहारिणो भवदि, बे उवजोगा जुगमं, सजोगीसु सुहुमक्किया पडिपाडि अजोगीसु विपुरतक्किया णिवित्तीणि बे सुक्कज्झाणाणं, सत्त आसवा पज्जत्तेसु पंच अपज्जत्तेसु बे अजोगी णिरासवो, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा सजोगी अट्ठ लक्ख अट्ठणवदि सहस्सं बे उत्तर पंच सयं अपज्जत्तेसु एगसयं अजोगी अट्ठणउदि उत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व सव्वलोय, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व सव्वलोयो, कालो सजोगी णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण पुव्वकोडि अजोगी णाणेग जीवावेक्खा जहण्णुक्कस्स अंतोमुहुत्तं, अंतरं सजोगी णाणेग जीवावेक्खा णिरंतरं अजोगीसु जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण छम्मास एग जीवावेक्खाए अजोगी णिरंतरं, चोद्दस भावा अजोगीसु तेरस भाव, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, एग सादा वेयणीयो बंधो अजोगीसु अबंधो, बादाल व बारस पयडीणं उदओ एवं सजोगीसु पंचासीदि पयडीणं सच्चं एवं अजोगीसु बेचरिमे पंचासीदि चरिमे तेरस पयडीणं सच्चं होंति।

इदि केवल णाणीसु सामण्णालाव सम्मत्ता।

केवलज्ञानी सामान्य

अब केवलज्ञानी जीवों के आलाप कहने पर – सयोगी अयोगी जिन दो गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, चार प्राण अपर्याप्त* में दो प्राण अयोगी में एक आयु प्राण, क्षीण संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, सात योग पर्याप्त में पाँच योग अयोगी अपर्याप्त में दो योग, अवेद, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यात संयम, केवल दर्शन, शुक्ल लेश्या अयोगी लेश्या रहित, भव्य सिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, नो संज्ञी नो असंज्ञी, आहारक अनाहारक पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों अयोगी नित्य ही अनाहारक होते हैं। दोनों उपयोग युगपत्, सयोगी में सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति अयोगी में व्युपरत क्रिया निवर्तीनि दो शुक्ल ध्यान, सात आस्रव पर्याप्तक में पाँच अपर्याप्तक में दो/एक आस्रव अयोगी निरास्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा सयोगी आठ लाख अन्ठानवै हजार पाँच सौ दो अपर्याप्तक में सौ होते हैं अयोगी पाँच सौ अन्ठानवै, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग व सर्वलोक*, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग व सर्वलोक*, काल–सयोगी नाना व एक जीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम एक कोटि पूर्व अयोगी जघन्योत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर–नानाजीवापेक्षा निरंतर अयोगी जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह माह, चौदह भाव अयोगी में तेरह भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक साता वेदनीय का बंध अयोगी अबंध, ब्यालीस व बारह प्रकृतियों का उदय एवं पचासी प्रकृतियों का सत्त्व अयोगी के द्विचरम समय में पचासी व चरम समय में तेरह प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार केवल ज्ञानियों में सामान्यालाप समाप्त हुआ।

नोट – सयोगी पर्याप्तकों में 5 आस्रव, अपर्याप्तक में दो आस्रव, अयोगी निरास्रव।

* सयोग केवली के अपर्याप्तक काल आहारक अवस्था में आयु और काय बल दो प्राण स्वीकार किये हैं किन्तु अनाहारक अवस्था में केवल एक प्राण आयु ही होता है तथा अयोगी हमेशा अनाहारक ही होते हैं।

* सयोग केवली स्वस्थान की अपेक्षा लोक के असंख्यातवे भाग में तथा दंड समुद्घात में भी लोक के असंख्यातवे भाग में प्रतर समुद्घात में लोक के असंख्यात बहुभाग में और लोक पूरण में सर्वलोक में रहते हैं वही स्पर्शन वही क्षेत्र बनता है। अयोगी सदा स्पर्शन और क्षेत्र की अपेक्षा लोक के असंख्यात वे भाग में ही रहते हैं।

सयोगी का काल की अपेक्षा नाना जीव सर्वकाल एक जीव जघन्य से अन्तर्मुहूर्त यानि केवल ज्ञान प्राप्त कर अन्तर्मुहूर्त में निर्वाण को प्राप्त हो गये। उत्कृष्ट कुछ कम पूर्व कोटि यानि कोई मनुष्य आठ वर्ष की आयु में दीक्षा लेकर केवली हो गया और उसकी पूर्व कोटि की आयु है तो उसका आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम एक पूर्व कोटि बनेगा। यह कथन सामान्य केवली की अपेक्षा है किन्तु तीर्थंकर का जघन्य काल वर्ष पृथक्त्व है शेष सामान्यवत् है।

270. संयम मार्गणा असंयम

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	1–4	–	1,2,4
2.	जीवसमास	14 जीवसमास	7 जीवसमास पर्याप्त	7 जीवसमास अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति, अपर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति	6,5,4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	3–10 प्राण	4–10	3–7
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	4	4
6.	गति	चारों	–	–
7.	इन्द्रिय	1–5 इन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रस/स्थावर	–	–
9.	योग	13 (आहारकद्विक बिना)	10	3
10.	वेद	3 वेद	–	–
11.	कषाय	25 कषाय	–	–
12.	ज्ञान	6 ज्ञान (3 ज्ञान+3 कुज्ञान)	–	5 (2 कुज्ञान, 3 सुज्ञान)
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	3 दर्शन	3 दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	दोनों	–	–
17.	सम्यक्त्व	6 (मि.,सा.,मि.,उप.,क्षा., क्षयो.)	–	5 सम्यक्त्व (मि. बिना)[*1]
18.	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	9 उपयोग	9 उपयोग	8 उपयोग (विभंगावधि बिना)
21.	ध्यान	10 ध्यान	10 ध्यान	9 या 10 ध्यान
22.	आस्रव	55 (25+13+12+5)	52	45
23.	जाति	84 लाख	84 लाख	–
24.	कुलकोटि	199½ लाख करोड़	199½ लाख करोड़	
25.	संख्या	अनंतानंत	–	–
26.	क्षेत्र	सर्वलोक		
27.	स्पर्शन	सर्वलोक		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा–सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा– सादि असंयमी अपेक्षा ज. अन्तर्मुहूर्त उ. अर्द्धपुद्गल परावर्तन		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– निरन्तर, एक जीव की अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम एक कोटि पूर्व		
30.	भाव	41 (औद.21, मिश्र.15, क्षा.1, औ.1, पा.3)		
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट– 1000 योजन		
32.	बन्ध	118 – 117+1 (तीर्थंकर)		
33.	उदय	119 – 117+2 (स.मि.,स.)		
34.	सत्त्व	148		
		[*1] देवगति में अपर्याप्तक अवस्था में द्वितीयोपशम सम्यक्त्व पाया जाता है इसलिए अपर्याप्तक अवस्था में मिश्र बिना पाँच सम्यक्त्व कहे हैं।		

270. संजम मग्गणा असंजम

अह संजम मग्गणाणुवादेण असंजमाणामालाव भण्णमाणे अत्थि–एयत्तो चत्तारि गुणट्ठाणाणि अपज्जत्तेसु एग मिच्छत्त सासण असंजद तिण्णि गुणट्ठाणाणि, सत्त पज्जत्त सत्त अपज्जत चोद्दस जीव समासा, छ पंच चदु पज्जत्ती छ पंच चदु अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस णव अट्ठ सत्त छ चदु पाणा अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छ पंच चउ ति पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, एयत्तो पंचिंदियाणि, तसथावरकाओ, आहार दुगेहि विणा तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि तिण्णि णाणाणि छ णाणाणि पज्जत्तेसु छण्णाणि अपज्जत्तेसु–बे अण्णाणाणि तिण्णि णाणाणि पंच णाणाणि, एग असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्व सिद्धिया अभव्व सिद्धिया दोण्णि, छ सम्मत्ता पज्जत्तेसु छ अपज्जत्तेसु पंच सम्मत्ता*[1], सण्णी असण्णी दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, णव उवजोगा अपज्जत्तेसु अट्ठ उपवजोगा, दस झाणाणि अपज्जत्तेसु णव झाणाणि*[2], पंचवण्ण आसवा पज्जत्तेसु बावण्ण अपज्जतेसु पणदाल आसवा, चउरासीदि लक्ख जादी, अद्ध णवणउदि उत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा–अणंताणंत, खेत्तावेक्खा–सव्वलोय, फासावेक्खा सव्वलोय, कालो–णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एग जीवावेक्खा सादी असंजमी अवेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरायट्टं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण पुव्वकोडीणं*[4], इगदाल भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, अट्ठदसुत्तर सयं पयडीणं बंधो, उणबीसुत्तर पयडीणं उदओ एवं अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति*[5]।

इदि संजम मग्गणासु असंजम सामण्णालाव सम्मत्ता।

संयम मार्गणा असंयम

अब संयम मार्गणा के अनुवाद से असंयमियों के आलाप कहने पर – एक से चार गुणस्थान अपर्याप्तक में एक–दो–चार गुणस्थान, चौदहों जीव समास सात पर्याप्त सात अपर्याप्त, छ–पाँच–चार पर्याप्ति छ–पाँच–चार अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस–नौ–आठ–सात–छ–चार प्राण अपर्याप्त में सात–सात–छह–पाँच–चार–तीन प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गतियाँ, एक से पाँच इन्द्रिय, त्रस स्थावर काय, आहारक द्विक बिना तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीनों वेद, पच्चीस कषाय, तीन अज्ञान तीन ज्ञान छह ज्ञान पर्याप्त में छह ज्ञान अपर्याप्त में दो अज्ञान तीन ज्ञान पाँच ज्ञान, एक असंयम, तीन दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक दोनों, पर्याप्त में छहों सम्यक्त्व अपर्याप्त में पाँच सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी दोनों, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, नौ उपयोग अपर्याप्तक में आठ उपयोग, दस ध्यान अपर्याप्त में नौ ध्यान, पचपन आस्रव पर्याप्त में बावन अपर्याप्त में पैंतालीस आस्रव, चौरासी लाख जाति, एक सौ साढ़े निन्यानवै लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा अनंतानंत, क्षेत्रापेक्षा सर्वलोक, स्पर्शन सर्वलोक, काल–नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा सादि असंयमी अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट अर्द्ध पुद्गल परावर्तन, अंतर–नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम एक पूर्व कोटि, इकतालीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ अठारह प्रकृतियों का बंध, एक सौ उन्नीस प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार संयम मार्गणा में असंयम सामान्यालाप समाप्त हुआ।

---

*[1] यहाँ अपर्याप्तक अवस्था में पाँच सम्यक्त्व कहें है इसका तात्पर्य है कि प्रथमोपशम सम्यक्त्व में मरण होता नहीं यत: द्वितीयोपशम सम्यक्त्व के साथ मरण कर देवों में उत्पन्न होता है। अत: देवगति को छोड़कर अन्य गति में अपर्याप्त अवस्था में चार सम्यक्त्व पाये जाते हैं क्योंकि मिश्र सम्यक्त्व अपर्याप्तक अवस्था में नहीं पाया जाता देवगति में ही अपर्याप्त अवस्था में पाँच सम्यक्त्व पाये जा सकते हैं।

*[2] अपर्याप्तक अवस्था में जो नौ ध्यान कहे हैं कथंचित् क्योंकि यहाँ कई लोग 9 ध्यानों की व्याख्या करते हैं।

*[3] असंयमी दो प्रकार के होते हैं अनादि अनंत और दूसरे सादि शांत अनादि अनंत वाले ने कभी संयमी भाव को प्राप्त नहीं किया। अत: उसका काल व अन्तर निकालना असंभव है। जिसके असंयम में अन्तर आया है ऐसे सादि असंयमी की चर्चा है उसका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट काल अर्द्धपुद्गल परावर्तन प्राप्त होता है क्योंकि सम्यक्त्व व संयम जिस जीव ने प्राप्त किया है वह अर्द्धपुद्गल परावर्तन काल से अधिक संसार में नहीं रह सकता।

*[4] इसी प्रकार अन्तर कुछ कम पूर्व कोटि व जघन्य अन्तर्मुहूर्त है क्योंकि संयमी अधिक से अधिक 8 वर्ष कम एक पूर्व कोटि रह सकता है इसके बाद या तो निर्वाण हो जायेगा या असंयमी हो जायेगा।

*[5] बन्ध प्रकृतियाँ 118 प्रकृति क्योंकि चतुर्थ गुणस्थान में तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध होता है इसी प्रकार उदय 119 प्रकृति क्योंकि उदय योग्य 122 में से तीर्थंकर, आहारकद्विक कम करने पर, सत्त्व पूरे 148 प्रकृति का हो सकता है। शेष कथन सुगम है।

271. असंयम मिथ्यात्व गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	मिथ्यात्व	–	–
2.	जीवसमास	1–14	7 जीवसमास पर्याप्त	7 जीवसमास अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	4–6 पर्याप्ति, 4–6 अपर्याप्ति	4–5–6 पर्याप्ति	4–5–6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	3–10 प्राण	4,6,7,8,9,10	3,4,5,6,7,7
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	4 संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	चारों गति	–	–
7.	इन्द्रिय	1–5 इन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रस/स्थावर	–	–
9.	योग	13 (आहारकद्विक बिना)	10 योग	3 योग
10.	वेद	3 वेद	–	–
11.	कषाय	25 कषाय	–	–
12.	ज्ञान	3 कुज्ञान	–	2 कुज्ञान
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 (चक्षु, अचक्षु)	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य, अभव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी/असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक व अनाहारक	आहारक	दोनों (आहारक, अनाहारक)
20.	उपयोग	5 (3 कुज्ञान+2 दर्शनो.)	–	4 (2 ज्ञानो.+2 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8 (4 आर्त्त+4 रौद्र)	–	–
22.	आस्रव	55 (25 कषाय+12 अवि.+13 योग+5 मि.)	52 (25+12+10+5)	45 (25+12+3+5)
23.	जाति	84 लाख		
24.	कुलकोटि	199½ लाख करोड़		
25.	संख्या	अनंतानंत		
26.	क्षेत्र	सर्वलोक व लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	सर्वलोक		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा –सादि असंयमी अपेक्षा ज. अन्तर्मुहूर्त उ. *[1]कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– निरन्तर एक जीव की अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम तेतीस सागर*[2]		
30.	भाव	34 (औद.21, क्षयो. 10, पा.3)		
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट– 1000 योजन		
32.	बन्ध	117		
33.	उदय	117		
34.	सत्त्व	148		

*[1] यहाँ एक जीव की अपेक्षा अनादि असंयमी का सर्वकाल है किन्तु जिसने सम्यक्त्व व संयम प्राप्त करके छोड़ा है और असंयमी मिथ्यादृष्टि हो गया उसका अधिकतम कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन काल बनता है।

271. असंजम मिच्छाइट्ठी गुणट्ठाणं

तेसुं असंजमेसुं मिच्छाइट्ठीणमालाव भण्णमाणे अत्थि-एग मिच्छाइट्ठी गुणट्ठाणं, सत्त पज्जत्त सत्त अपज्जत्त चोद्दस-जीव-समासा, छ-पंच-चउ पज्जत्ती छ-पंच-चउ-अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस-णव-अट्ठ-सत्त-छ-चउ पाणा अपज्जत्तेसु सत्त-सत्त-छ-पंच-चउ-तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, एयत्तो पंचिंदियाणि, थावर-तस-छक्काया, तेरस-जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णिवेदा, पणबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि अपज्जत्तेसु बे अण्णाणाणि, एग असंजमो, चक्खु-अचक्खु बे दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्व सिद्धिया अभव्व सिद्धया दोण्णि, मिच्छत्त सम्मत्तं, सण्णी असण्णी दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, अट्ठ झाणाणि, पणवण्ण आसवा पज्जत्तेसु वावण्ण अपज्जत्तेतु पणदाल आसवा, चउरासीदि लक्ख जादी, अद्धणवणउदि उत्तर सयं सदसहस्सं कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा-अणंताणंत, खेत्तावेक्खा-सव्वलोग व लोगस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा-सव्वलोग, कालो-णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा सव्वकाल* सादि असंजमी एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गलपरायट्टं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खाए जहण्णे अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि देसूणाणि, चउतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्ज भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सत्तदसुत्तर सयं पयडीणं बंधो, सत्तदसुत्तर पयडीणं उदओ एवं अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि असंजमेसु मिच्छाइट्ठी गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

असंयम मिथ्यात्व गुणस्थान

उन्हीं असंयमियों के मिथ्यादृष्टि गुणस्थानालाप कहने पर एक मिथ्यात्व गुणस्थान, सात पर्याप्त सात अपर्याप्त चौदहों जीव समास, छ-पाँच-चार पर्याप्ति छह-पाँच-चार अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस-नौ-आठ-सात-छह-चार प्राण अपर्याप्त में सात-सात-छह-पाँच-चार-तीन प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, एक से पाँच इंद्रियाँ, स्थावर त्रसकाय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीनों वेद, पच्चीस कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्त में दो अज्ञान, एक असंयम, चक्षु अचक्षु दो दर्शन, छहों लेश्या, भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक दोनों, मिथ्यात्व सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी दोनों, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्त में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, पाँच उपयोग अपर्याप्त में चार उपयोग, आठ ध्यान, पचपन आस्रव पर्याप्त में बावन अपर्याप्त में पैंतालीस आस्रव, चौरासी लाख जाति, एक सौ साढ़े निन्यानवै लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा अनंतानंत, क्षेत्रापेक्षा सर्वलोक व लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन-सर्वलोक, काल-नानाजीवापेक्षा-सर्वकाल एक जीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा सादि असंयमी जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्ध पुद्गल परावर्तन, अंतर नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम तेतीस सागर, चौंतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन एक सौ सत्तरह प्रकृतियों का बंध, एक सौ सत्तरह प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार असंयमियों में मिथ्यात्व गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- *[1] यद्यपि सादि असंयमी अनादि असंयमी का जो कथन पूर्व में किया है वैसा ही जानना क्योंकि अनादि काल से मिथ्यात्व के साथ असंयमी है और अनंतकाल तक रहने वाला उसका काल तो सर्वकाल है। सादि असंयमी का काल व अन्तर पूर्व में भी कहा जा चुका है और यहाँ मूल में दिया है अत: कोई विशेष नहीं है बाकी कथन सुगम है। यहाँ एक बात और है जो अन्तर निकला है वह असंयत में ही गुणस्थान परावर्तन कराकर निकाला है जैसे कोई असंयमी मिथ्यादृष्टि सप्तम पृथ्वी का नारकी हुआ अन्तर्मुहूर्त में पर्याप्त हो विशुद्धि प्राप्त कर सम्यक्त्व को प्राप्त हुआ आयु में अन्तर्मुहूर्त शेष रहने पर पुन: मिथ्यादृष्टि हो गया इस प्रकार अन्तर प्राप्त हुआ। शेष कथन सुगम है।

272. असंयम सासादन गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	सासादन	–	–
2.	जीवसमास	7 जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय	6 जीवसमास
3.	पर्याप्ति	6–5–4 पर्याप्ति व अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6,4,5 अपर्याप्ति
4.	प्राण	3–10 प्राण	10 प्राण	3,4,5,6,7,7
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	चारों गति	–	3 (नरक गति के बिना)*1
7.	इन्द्रिय	1 से 5 इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	1–5
8.	काय	त्रस, स्थावर दोनों	त्रस	त्रस, स्थावर
9.	योग	13 (आहारकद्विक बिना)	10 योग	3 योग
10.	वेद	3 वेद	–	–
11.	कषाय	25 कषाय	–	–
12.	ज्ञान	3 कुज्ञान	3 कुज्ञान	2 कुज्ञान
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	सासादन	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	संज्ञी, असंज्ञी दोनों
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों (आहारक, अनाहारक)
20.	उपयोग	5 (3 ज्ञानो.+2 दर्शनो.)	5	4
21.	ध्यान	8	–	–
22.	आस्रव	50	47	40
23.	जाति	56 लाख	26 लाख	52 लाख
24.	कुलकोटि	189½ लाख करोड़	108½ लाख करोड़	164½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम वि.वे.वि.क.समु. 8/14 राजू, उप. 11/14 राजू, मा. 12/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा –ज. एक समय उ. छ: आवली		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा– ज. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन		
30.	भाव	32 (औद.20, क्षयो. 10, पा.2)	अप. 30	
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग	उत्कृष्ट– संख्यात धनुष	
32.	बन्ध	101 – (16 प्रकृति प्रथम गुण. की व्युछिन्न, 3 प्रकृति अबन्ध)		
33.	उदय	111		
34.	सत्त्व	145 – (आहारकद्विक, तीर्थंकर बिना)		
		नोट– मिश्र व असंयत गुणस्थान का आलाप गुणस्थानवत् जानना चाहिए।		
		*1 सासादन सम्यक्त्व सहित नरक में उत्पन्न नहीं होता।		

272. असंजम गुणट्ठाणं

तेसुं असंजमेसुं सासण गुणट्ठाणालावभण्णमाणे अत्थि–एग सासण गुणट्ठाणं पज्जत्तेसु एग सण्णी पंचिंदिय अपज्जत्तेसु एग वे–ति चउ असण्णी सण्णी पंचिंदिय सत्त जीव समासा, छ पज्जत्ती छ पंच चउ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस पाणा अपज्जत्तेसु त्तेसत्त सत्त–छ पंच चउ तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी अपज्जत्तेसु तिण्णि गदी, एयत्तो पंचिंदियाणि, पज्जत्तेसु तस अपज्जत्तेसु थावर तसकाया, तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि अपज्जत्तेसु बे अण्णाणाणि, एगं असंजमो, चक्खू अचक्खू बे दंसणं, छल्लेस्सा, भव्व सिद्धिया, सासण सम्मत्तं, सण्णी असण्णी दोण्णि पज्जत्तेसु सण्णी अपज्जत्तेसु दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, अट्ठज्झाणाणि, पंचास आसवा पज्जत्तेसु सत्तदाल अपज्जत्तेसु दाल आसवा, छपण्ण लक्ख जादी पज्जत्तेसु छव्वीस सदसहस्सं अपज्जत्तेसु वावण्ण सदसहस्सं जादी, अद्धणवासीदि उत्तर सयं सदसहस्सं कोडि कुलकोडीणं अद्धअट्ठुत्तर सयं लक्खकोडि अपज्जत्तेसु अद्ध चउसट्ठि उत्तर सयं सदसहस्सं कोडि कुल कोडीणं, संखावेक्खा–पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा–लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा–लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठ चोद्दस भागा वा एगारस चोद्दस भागा विदिय सिद्धांते–बारस/चोद्दस भागा वा बारस चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो–णाणा जीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छावली, अंतरं–णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गलपरायट्टं, बत्तीस भावा अपज्जत्तेसु तीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण संखेज्ज धणू, एगुत्तर सयं पयडीणं बंधो, एगादसुत्तर सयं पयडीणं उदओ, एवं पणदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि असंजमेसु सासण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

असंयम सासादन गुणस्थान

उन्हीं असंयमी जीवों में सासादन गुणस्थानालाप कहने पर एक सासादन गुणस्थान, पर्याप्त में एक संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त में एक दो तीन चार असंज्ञी संज्ञी पंचेन्द्रिय सात जीव समास, छह–पर्याप्ति छह–पाँच–चार अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस प्राण अपर्याप्त में सात–सात–छह–पाँच–चार–तीन प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति अपर्याप्तक में तीन गति, एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय अपर्याप्त में पंचेन्द्रिय अपर्याप्त में एक से पाँच इन्द्रिय पर्याप्त में त्रसकाय अपर्याप्त में स्थावर त्रस छहों काय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीन वेद, पच्चीस कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्त में दो अज्ञान, एक असंयम, दो दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, सासादन सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी दोनों पर्याप्तक में संज्ञी अपर्याप्तक में दोनों, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, पाँच उपयोग अपर्याप्त में चार उपयोग, आठ ध्यान, पचास आस्रव पर्याप्त में सैंतालीस अपर्याप्त में चालीस आस्रव, छप्पन लाख जाति पर्याप्त में छब्बीस लाख अपर्याप्त में बावन लाख जाति, एक सौ साढ़े नवासी लाख करोड़ कुल कोटि पर्याप्त में एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ अपर्याप्त में एक सौ साढ़े चौंसठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन–लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम चौदह भागों में से आठ भाग ग्यारह भाग बारह भाग प्रमाण, काल नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह आवली, अंतर नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य पल्योपम का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन, बत्तीस भाव अपर्या. तीस, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट संख्यात धनुष, एक सौ एक प्रकृतियों का बंध, एक सौ ग्यारह प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ पैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार असंयमियों में सासादन गुणस्थान समाप्त हुआ।

नोट – तीसरे व चौथे गुणस्थान में आलाप गुणस्थान के समान ही हैं।

273. संयमासंयम गुणस्थान

1.	गुणस्थान	संयमासंयम
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	दो गति (तिर्यञ्च, मनुष्य)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 (4 मन, 4 वचन, 1 औदारिक काययोग)
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	17 कषाय (4 अनंतानुबंधी व अप्रत्याख्यानावरण बिना)
12.	ज्ञान	3 ज्ञान
13.	संयम	संयमासंयम
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	3 शुभ लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षायिक, क्षयोपशम, उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	6 (3 ज्ञानो.+ 3 दर्शनोपयोग)
21.	ध्यान	11 ध्यान (4 आर्त्त, 4 रौद्र, 3 धर्मध्यान)
22.	आस्रव	37 (17 कषाय+11 अवि.+9 योग)
23.	जाति	18 लाख
24.	कुलकोटि	57½ करोड़ लाख
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 6/14 राजू (मारणांतिक समुद्घात की अपेक्षा)
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा- सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा - ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम एक कोटि पूर्व
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा- निरन्तर एक जीव की अपेक्षा- ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन अथवा निरंतर*[1]
30.	भाव	31 (औद. 14, क्षयो. 13, क्षा.1, औप.1, पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य- घनांगुल का संख्यातवाँ भाग व संख्यात अंगुल उत्कृष्ट- 1000 योजन
32.	बन्ध	67
33.	उदय	87
34.	सत्त्व	147, 140
		नोट- संयमासंयम सामान्य गुणस्थानवत् ही है। *[1] संयामासंयम सामान्य की अपेक्षा कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन अन्तर पाया जाता है किंतु संयमासंयम मार्गणा में गुणस्थान परावर्तन की अपेक्षा अन्तर नहीं पाया जाता निरंतर है।

273. संजमासंजम गुणट्ठाणं

तेसुं संजम मग्गणाणुवादेण देस संजमाणालाव भण्णमाणे अत्थि – एग संजमासंजमो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, मणुस्स तिरिक्ख बे गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, चत्तारि मणो चत्तारि वचि एग ओरालिय काय णव जोगा, तिण्णि वेदा, सत्तदस कसाया, तिण्णि णाणाणि, एग संजमासंजमो, तिण्णि दंसणाणि, तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खओवसम खइय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, छ उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द तिण्णि धम्म एगारस झाणाणि, सत्ततीस आसवा, अट्ठदस लक्ख जादी, अद्धसत्तावण्ण लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा–पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा–लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा–लोयस्स असंखेज्जदि भागा व छ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो–णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एक जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण पुव्व कोडीणं, अंतरं–णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गलपरायट्टं अहवा णिरंतरं*, इगतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्ज भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सडसट्ठि पयडीणं बंधो, सत्तासीदि पयडीणं उदओ एवं सत्तदालुत्तर सयं व दालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति

इदि संजम मग्गणासु संजमासंजम गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

संयमासंयम गुणस्थान

उन्हीं संयम मार्गणा के अनुवाद से देशसंयमी जीवों के आलाप कहने पर– एक संयमासंयम गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्य व तिर्यंच दो गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, चार मन चार वचन एक औदारिक काय नौ योग, तीन वेद, सत्तरह कषाय, तीन ज्ञान, एक संयमासंयम, तीन दर्शन, तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षयोपशम क्षायिक तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, चार आर्त्त चार रौद्र तीन धर्म ग्यारह ध्यान, सैंतीस आस्रव, अठारह लाख जाति, साढ़े सत्तावन लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 6/14 राजू, काल नाना जीवपेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम एक कोटि पूर्व, अंतर नाना जीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्ध पुद्गल परावर्तन* अथवा निरंतर, इकतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग व संख्यात अंगुल उत्कृष्ट एक हजार योजन, सड़सठ प्रकृतियों का बंध, सतासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस व एक सौ चालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार संयम मार्गणा में संयमासंयम गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– काल का कथन करते हुए जघन्य अन्तर्मुहूर्त सुगम है उत्कृष्ट काल कुछ कम पूर्व कोटि प्रमाण इस प्रकार प्राप्त होता है, कोई जीव मोहनीय कर्म की 28 प्रकृति की सत्ता वाला एक पूर्व कोटि की आयु के साथ सम्मूर्छन तिर्यंचों में उत्पन्न हुआ अन्तर्मुहूर्त पृथक्त्व में सम्यक्त्व व संयम को प्राप्त कर कुछ कम पूर्व कोटि तक रहा इस प्रकार काल प्राप्त हुआ। स्पर्शन 6/14 राजू क्योंकि तिर्यंच जीव संयमासंयम का परिपालन कर सोलहवें स्वर्ग में उत्पन्न होते हैं इसलिए मारणांतिक समुद्घात करते हैं उस समय यह स्पर्श बनता है। उपपाद इस संयम के साथ नहीं होता।

* यह अन्तर सामान्य से है क्योंकि मार्गणा परावर्तन कराके निकाला है। किन्तु विशेषता मार्गणा को अखण्ड रखते हुए गुणस्थान परावर्तन की अपेक्षा अन्तर नहीं प्राप्त होता निरंतर है। जैसे विवक्षित संयम से असंयम में ले जाकर पुन: उसी संयम को प्राप्त कराने पर अन्तर प्राप्त होता है। अत: यह कथन ध.पु.नं. 7 के अनुसार है धवला पुस्तक 5 के अनुसार गुणस्थान परावर्तन कराकर अन्तर प्राप्त किया जाता है। जैसे विवक्षित गुणस्थान से मार्गणा को अखंड रखते हुए अन्य गुणस्थान में ले जाकर पुन: वापस उसी गुणस्थान में लाकर अन्तर प्राप्त कराया गया है। शेष कथन सुगम है।

नोट – काल = 3 अन्तर्मुहूर्त कम एक पूर्व कोटि ष.ख.पु. 4 सू. 18

274. सकलसंयमी सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	6–14 गुणस्थान	सभी 6–14 (9)	6–13 (2)
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	–	अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10,7,4,2,1 प्राण	10, 4, 1	7, 2
5.	संज्ञा	4 संज्ञा, क्षीण संज्ञा	4 व क्षीण संज्ञा	4 व क्षीण संज्ञा
6.	गति	मनुष्य गति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	13 योग, अयोग (वैक्रिय.,वै.मि. का.यो.बिना)	10 औ.मि.,आ.मि.,का.काययोग बिना	3 (वैक्रियक मिश्र काययोग बिना)
10.	वेद	3 वेद/अवेद	3/अवेद	पुरुष वेद/अवेद
11.	कषाय	13, 1 व अकषाय	13	11 व अकषाय (स्त्री.,नपुं. वेद बिना)
12.	ज्ञान	5 ज्ञान	–	4 (मन:पर्यय बिना)
13.	संयम	5 (सा., छेदो., परि., सूक्ष्म, यथाख्यात)	–	3 (सा.,छे.,यथा.)
14.	दर्शन	4 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	3 शुक्ल लेश्यादि भाव से, द्रव्य से 6 लेश्या	भाव 3 शुभ लेश्या/अलेश्या	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षायिक, क्षयोपशम, उपशम)	–	उपशम बिना दो सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी/नो संज्ञी नो असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	9 (5 ज्ञानो. + 4 दर्शनो.)	–	8 (मन: पर्यय ज्ञान बिना)
21.	ध्यान	11 (3 आर्त्त, 4 धर्मध्यान, 4 शुक्लध्यान)	11	7 (3 आर्त्त, 4 धर्मध्यान)
22.	आस्रव	26 (13 कषाय+13 योग)	23 (13 क.+10 यो.)	14 (11 क.+3 योग)[*1]
23.	जाति	14 लाख	–	–
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़	–	–
25.	संख्या	संख्यात (89999997)	–	प्रमत्त=27+सयोगी=100=127
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग व सर्वलोक		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व सर्वलोक		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम एक कोटि पूर्व		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– निरन्तर, एक जीव की अपेक्षा–ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन		
30.	भाव	40 (औद.13, क्षयो.14, क्षा.9, पा.2, औप.2) अपर्या. 35		
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ	उत्कृष्ट– 525 धनुष	
32.	बन्ध	63,59,58,22,17,1,1,1 अबंध	सामान्य से 65	
33.	उदय	81,76,72,66,42,12		
34.	सत्त्व	146,145,142,141,139,138,122,117,102,85,13		
		[*1] क्योंकि प्रमत्त गुणस्थान अपर्याप्तक में आहारक मिश्र काययोग, सयोग केवली अपर्याप्तक में औदारिक मिश्र व कार्माण काययोग।		

274. सयलसंजमी सामण्णा

तेसुं संजमी सयलसंजमाणामालाव भण्णमाणे अत्थि-छहत्तो चौद्दस णव गुणट्ठाणाणि पज्जत्तेसु छहत्तो चोद्दस णव अपज्जत्तेसु छ तेरस बे गुणट्ठाणाणि, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, दस सत्त पाणा चत्तारि बे एग पाणा पज्जत्तेसु दस चउ एग व अपज्जत्तेसु सत्त-बे पाणा, चत्तारि सण्णा व खीण सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, वेगुव्विय दुगेहिं विणा तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा व अजोगी, भावेण तिण्णि दव्वेण एग पुरिस वेदो अपज्जत्तेसु एग पुरिसवेदो व अवेदो, तेरस कसाया व अकसायी अपज्जत्तेसु एगारस कसाया, पंच णाणाणि अपज्जत्तेसु मणपज्जयेण विणा चत्तारि णाणाणि, असंजम व संजमासंजमेहि विणा पंच संजमा (सामाइय-छेदोवट्ठावणा-विहार सुद्धि-सुहुमसांपराय-जहाक्खाद पंच संजमा) अपज्जत्तेसु तिण्णि संजमा, चत्तारि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण तिण्णि सुह लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खओवसमिय खइय तिण्णि सम्मत्ता अपज्जत्तेसु बे सम्मत्ता, सण्णी आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, णव उवजोगा अपज्जत्तेसु अट्ठ उवजोगा, तिण्णि अट्ठ चत्तारि धम्म चत्तारि सुक्क एगारसज्झाणाणि, छब्बीस आसवा पज्जत्तेसु तेबीस अपज्जत्तेसु चोद्दस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा-तिऊण णव[*1] कोडीणं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व सव्वलोय[*2], फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा[*2] सव्वलोय, कालो-णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पुव्वकोडि देसूणाणि[*], अंतर णाणाजीवावेक्खाए णिरंतरं एग जीवावेक्खाए जहण्णेण अंत्तोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गलपरायटणं, दालभावा अपज्जत्तेसु पणतीस भाव, जहण्ण-मवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, पणट्ठी (तिसट्ठी, ऊणसट्ठी, अट्ठावण्ण, बावीस, सत्तदाल एगं) पयडीणं बंधो अबंधो वा, एगासीदि छसत्तदि वेसत्तदि छासटिठ बादाल बारस पयडीणं उदओ, छादालुत्तरसयं पणदालुत्तरसयं बादालुत्तर सयं इगदालुत्तर सयं उणदालुत्तर सयं अडतीसुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होति।

इदि संजम मग्गणासु सयल संजमाणं आलाव सम्मत्ता।

सकल संयमी सामान्य

उन्हीं संयमी जीवों में सकल संयम के आलाप कहने पर - छह से चौदह नौ गुणस्थान पर्याप्त में छ से चौदह अपर्याप्त में छ: और तेरह दो गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छ: अपर्याप्ति, दस-सात-चार-एक प्राण पर्याप्त में दस-चार-एक अपर्याप्त में सात-दो प्राण, चारों संज्ञाएँ व क्षीण संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, वैक्रियिकद्विक के बिना तेरह योग व अयोगी पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीनों वेद/अवेद पर्याप्त में तीनों वेद अवेद अपर्याप्त में पुरुष वेद/अवेद, तेरह कषाय अपर्याप्त में ग्यारह कषाय व अकषायी, पाँच ज्ञान पर्याप्तक में अपर्याप्त में चार ज्ञान, असंयम व देश संयम बिना पाँच संयम अपर्याप्तक में तीन संयम, चारों दर्शन, द्रव्य से छहों लेश्या भाव से तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम-क्षयोपशम क्षायिक तीन सम्यक्त्व अपर्याप्तक में उपशम बिना दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, नौ उपयोग अपर्याप्तक में आठ उपयोग, (तीन आर्त्त चार धर्म चारों शुक्ल) ग्यारह ध्यान, छब्बीस आस्रव अपर्याप्त में चौदह पर्याप्तक में तेइस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा (संख्यात) तीन कम नौ करोड़, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग व सर्वलोक, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग व सर्वलोक, काल नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अनतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम एक पूर्व कोटि, अन्तर नाना जीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन, चालीस भाव अपर्याप्तक पैतीस भाव, जघन्य अवगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, त्रेसठ, उनसठ, अट्ठावन, बाईस, सत्तरह और एक प्रकृति का बन्ध, इक्यासी, छियत्तर, बहत्तर, छयासठ, ब्यालीस, बारह प्रकृतियों का उदय, 146, 145, 142, 141, 134, 139, 122, 117, 102, 85, 13 प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार संयम मार्गणा में सकल संयमियों का कथन समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- यहाँ काल जो कुछ कम एक पूर्व कोटि का कथन है वह 8 वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम पूर्व कोटि जानना चाहिए कथन सुगम है। अन्तर निकालते समय असंयम में ले जाना पड़ेगा तब अन्तर निकलेगा। जैसे कोई मनुष्य संयम से च्युत हो असंयम को प्राप्त हुआ कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन काल तक भ्रमण कर संसारावास में अन्तर्मुहूर्त शेष रहने पर संयमी हुआ इस प्रकार अन्तर प्राप्त हुआ। संख्या का कथन करते हुए पर्याप्तक में तीन कम नो करोड़ अपर्याप्तक प्रमत्तसंयत सत्ताईस होते हैं, सयोग केवली 40 औदारिक मिश्र काययोग में 60 कार्माण काय योग इस प्रकार 100 होते हैं। क्योंकि कपाट समुद्घात प्रतर और लोक पूरण इनमें प्रत्येक में 20-20 होते हैं। खुलासा इस प्रकार है कपाट समुद्घात में चढ़ते हुए 20 जीव हो सकते हैं उतरते हुए भी 20 होते हैं। इस प्रकार औदारिक मिश्र काययोग में 40, प्रत्तर में चढ़ते हुए 20, लोकपूरण समुद्घात में 20 तथा उतरते हुए प्रतर समुद्घात में भी 20 इस प्रकार कार्माण काययोग में 60 जीव हो सकते हैं। इस प्रकार प्रमत व सयोगी जिन मिलाने पर अपर्याप्तक अवस्था में 100+27=127 जीव होते हैं।

275. सामायिक छेदोपस्थापना संयम सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	6-9	6-9	6
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त, अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	-	-
6.	गति	मनुष्यगति	-	-
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	-	-
8.	काय	त्रसकाय	-	-
9.	योग	11	10	1 (आहारक मिश्र काययोग)
10.	वेद	3 वेद	-	एक पुरुष वेद
11.	कषाय	13 कषाय	-	11 (ग्यारह)
12.	ज्ञान	4 ज्ञान	4 ज्ञान	3 ज्ञान (मन:पर्यय बिना)
13.	संयम	2 (सामायिक, छेदोपस्थापना)	-	-
14.	दर्शन	3 दर्शन	-	-
15.	लेश्या	3 शुभ लेश्या	-	-
16.	भव्य	भव्य	-	-
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षायिक, क्षयोपशम, उपशम)	-	2 (उपशम बिना)
18.	संज्ञी	संज्ञी	-	-
19.	आहारक	आहारक	-	-
20.	उपयोग	7 (4 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)	-	6 (3 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8 (3 आर्त्त+ 4 धर्म+ 1 शुक्ल)	-	7
22.	आस्रव	24 (13 कषाय+ 11 योग)	23 (13 कषाय+10 योग)	12 (11+1 योग)*
23.	जाति	14 लाख		
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़		
25.	संख्या	89099103 (संख्यात)		27
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा- सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा - ज. अन्तर्मुहूर्त उ. 8 वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम एक पूर्व कोटि		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा- निरन्तर, एक जीव की अपेक्षा- ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन		
30.	भाव	33 (औद. 13, मि. 14, क्षा.2, औप.2, पा.2) अपर्याप्त-27		
31.	अवगाहना	जघन्य- 3½ हाथ उत्कृष्ट- 525 धनुष		
32.	बन्ध	65 (63, 59, 58, 22)		
33.	उदय	81, 76, 72, 66		
34.	सत्त्व	146 (नरक, तिर्यंचायु बिना)		

275. सामाइय छेदोवट्ठावणा संजम सामण्णं

तेसुं संजमी जीवेसु सामाइय छेदोवट्ठावणा संजमाणामालाव भण्णमाणे अत्थि–पमत्तादो अणियट्टिकरण चत्तारि गुणट्ठाणाणि अपज्जत्तेसु एग पमत्त गुणट्ठाणाणि, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, एगारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु आहार मिस्स काय जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु एग पुरिस वेदो, तेरस कसाया अपज्जत्तेसु एगारस कसाया, चत्तारि णाणाणि अपज्जत्तेसु तिण्णि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, तिण्णि दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता अपज्जत्तेसु दोण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा अपज्जत्तेसु छ उवजोगा, तिण्णि अट्ट चत्तारि धम्म एग सुक्क अट्ठझाणाणि अपज्जत्तेसु सत्तझाणाणि, चउबीस आसवा पज्जत्तेसु तेबीस अपज्जत्तेसु बारस आसवा, चोद्दस लक्खजादि, चोद्दस लक्खकोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा संखेज्ज अट्ठ कोडि णवदि लक्ख णवणवदि सहस्स तिउत्तर सयं अपज्जत्तेसु सत्तबीस, खेत्तावेक्खा–लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा–लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो–णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अट्ठ वास अंतोमुहुत्तूणं पुव्व कोडीणं, अंतरं–णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गलपरायट्टं, तेतीस भावा अपज्जत्तेसु सत्तवीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, पणसट्ठि (पणट्ठि) (तिसट्ठि ऊणसट्ठि अट्ठावण्ण बाबीस) पयडीणं बंधो, एगासीदि–छसत्तदि–बेसत्तदि–छसट्ठि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तरत्तो अट्ठतीसुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि संजम मग्गणासु सामइय छदोवट्ठावणाणं सामण्णालाव सम्मत्ता।

सामायिक छेदोपस्थापना संयम सामान्य

उन्हीं संयमी जीवों में सामायिक छेदोपस्थापना संयम–आलाप कहने पर छह से नौ चार गुणस्थान अपर्याप्त में छटवाँ गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्तक दो जीव समास, छहों पर्याप्तियाँ छहों अपर्याप्तियाँ, पर्याप्तक में दस अपर्याप्तक में सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, ग्यारह योग पर्याप्तक में दस अपर्याप्तक में एक आहारक मिश्र काययोग, तीनों वेद अपर्याप्तक में एक पुरुष वेद, तेरह कषाय अपर्याप्त में ग्यारह कषाय, चार ज्ञान अपर्याप्त में तीन ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, तीन दर्शन, तीन शुभ लेश्या, भव्यसिद्धिक, उपशम क्षायिक क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व अपर्याप्तक में दो सम्यक्त्व, संज्ञी आहारक, सात उपयोग अपर्याप्तक में छह उपयोग, तीन आर्त्त चार धर्म एक शुक्ल आठ ध्यान अपर्याप्त में सात ध्यान, चौबीस आस्रव पर्याप्त में तेईस अपर्याप्त में बारह आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा संख्यात (आठ करोड़ नब्बे लाख निन्यानवे हजार एक सौ तीन अपर्याप्तक में सत्ताईस, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल–नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट आठ वर्ष अंतर्मुहूर्त कम एक कोटि पूर्व*, अंतर–नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्ध पुद्गल परावर्तन, तेतीस भाव अपर्याप्तक में सत्ताईस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, पैंसठ (तिरेसठ, उनसठ, अट्ठावन, बाईस) प्रकृतियों का बंध, इक्यासी–छियत्तर–बहत्तर–छयासठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छयालीस से एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार संयम मार्गणा में सामायिक छेदोपस्थापनालाप समाप्त हुआ।

नोट – आहारक शरीर के साथ में बन्ध प्रकृतियाँ 63 हैं, औपशमिक सम्यक्त्व बिना दो सम्यक्त्व, आहारकों में मन:पर्यय ज्ञानोपयोग बिना छ: उपयोग तथा मन:पर्यय बिना तीन ज्ञान।

* काल का कथन इस प्रकार है–कोई मनुष्य आठ वर्ष का होकर संयत हो गया एक कोटि पूर्व तक संयत रहा पश्चात् मरकर देवों में उत्पन्न हो असंयमी हो गया। इस प्रकार आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम एक कोटि पूर्व उत्कृष्ट काल प्राप्त हुआ जघन्य काल सुगम है। अन्तर नाना व एक जीव की अपेक्षा जघन्य सुगम है। उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन इस प्रकार है संयम से नीचे असंयम में लाकर कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन रहा, संसारावास के अन्तिम अन्तर्मुहूर्त में संयत हो गया इस प्रकार अन्तर प्राप्त हुआ। संख्यापेक्षा सामान्य से आठ करोड़ नब्बे लाख निन्यानवे हजार एक सौ तीन यह संख्या 6–9 गुणस्थान पर्याप्त अपर्याप्त सभी की है किन्तु अपर्याप्तक में मात्र सत्ताईस जीव ही होते हैं क्योंकि आहारक मिश्र काययोग है। वैसे आहारक काययोग में चौवन जीव होते है।

276. सामायिक, छेदोपस्थापना प्रमत्ताप्रमत्त गुणस्थान

		सामान्य	प्रमत्त पर्याप्तक/अपर्याप्तक		अप्रमत्त
1.	गुणस्थान	प्रमत गुणस्थान	–		अप्रमत्तसंयत गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय	पर्याप्त	अपर्याप्तक	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्त, 6 अपर्याप्त	6 प.	6 अपर्या.	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7	10	7	10 प्राण
5.	संज्ञा	4	–	–	3 संज्ञा (आहार बिना)
6.	गति	मनुष्य गति	–	–	मनुष्य गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय	–	–	त्रसकाय
9.	योग	11 योग	10 योग	आहारक मिश्र	9 योग
10.	वेद	भाव से 3 वेद द्रव्य से पुरुष वेद	तीनों वेद	एक पुरुष वेद	तीनों वेद
11.	कषाय	13 कषाय	13 कषाय	11 कषाय	13 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान	4 ज्ञान	3 ज्ञान[*1]	4 ज्ञान
13.	संयम	2 (सामायिक छदोपस्थापना)	2 (सा. छेदो.)	–	–
14.	दर्शन	3 दर्शन	3 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	भाव से 3 शुभ लेश्या, द्रव्य से 6	3 शुभ लेश्या,	3	–
16.	भव्य	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षायिक, क्षयोपशम, उपशम)	3 (क्षा.क्षयो.उ.)	2(क्षा.क्षयो.)[*2]	3 (क्षायिक, क्षयोपशम, उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक	आहारक	–	–
20.	उपयोग	7 (4 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)	7 उपयोग	6 उपयोग	7 (4 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	7 (3 आर्त्त+ 4 धर्म), चार धर्म ध्यान	–	–	4 धर्मध्यान
22.	आस्रव	24	पर्याप्त 23	12	22 (13 कषाय+ 9 योग)
23.	जाति	14 लाख	–	–	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़	–	–	14 लाख करोड़
25.	संख्या	59398206	–	27	29699103
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग	–	–	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग	–	–	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त			
29.	अन्तर	नाना जीव की अपेक्षा – निरन्तर, एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. अन्तर्मुहूर्त			
30.	भाव	31 (औद.13, मि.14, क्षा.1, औप.1, पा.2)			
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ	उत्कृष्ट– 525 धनुष		
32.	बन्ध	63 प्रमत्त	अप्रमत्त –59		
33.	उदय	81	–76		
34.	सत्त्व	146/139/138	146/139/138		
		[*1] आहारक काययोग के साथ मन: पर्यय ज्ञान व उपशम सम्यक्त्व नहीं होता इसलिए तीन ज्ञान दो सम्यक्त्व कहे हैं।			

276. सामाइय–छेदोवट्ठावणेसु पमत्तापमत्त गुणट्ठाणं

तेसु संजम मग्गणाणुवादेण सामाइय छेदोवट्ठावणा संजमाणां पमत्तापमत्त गुणट्ठाणामालावभण्णमाणे अत्थि–पमत्तापमत्तसंजदा बे गुणट्ठाणा, अपमत्तेसु सण्णी पंचिंदिय पमत्तेसु सण्णीपंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा अपमत्तेसु एग सण्णी पंचिंदिय जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, सत्त दस पाणा, पमत्ते चत्तारि सण्णा अपमत्ते तिण्णि सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, पमत्ते एगारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु एग आहार मिस्स काय जोगा अपमत्ते णव जोगा, तिण्णि वेदा पमत्त अपज्जत्तेसु एगं पुरिस वेदो, तेरस कसाया अपज्जत्तेसु एगारस कसाया, चत्तारि णाणाणि अपज्जत्तेसु तिण्णि णाणाणि, सामाइय–छेदोवट्ठावणा दोण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, भावेण तिण्णि दव्वेण छल्लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम–खइय–खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता अपज्जत्तेसु बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा अपज्जत्तेसु छ उवजोगा, तिण्णि अट्ट चत्तारि धम्म सत्त झाणाणि अपमत्ते चत्तारि धम्मज्झाणाणि, चौबीस आसवा पज्जत्तेसु तेबीस अपज्जत्तेसु बारस आसवा अपमत्ते बाबीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादि, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पमत्ते पंच कोडि तिणउदि लक्ख अट्ठणउदि सहस्स छ उत्तर बे सयं पमत्तअपज्जत्तेसु सत्तबीस अपमत्ते बे कोडि छण्णवदि लक्ख णवणवदि सहस्स तिउत्तर सयं खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा–लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो–णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं–णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णुक्स्सेण अन्तोमुहुत्तं, इगतीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, तिसट्ठि व ऊणसट्ठि पयडीणं बंधो, एगासीदि व छसत्तदि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं व ऊणदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि संजम मग्गणासु सामाइयं छेदोवट्ठावणाणं पमत्तापमत्त गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

सामायिक छेदोपस्थापना प्रमत्त–अप्रमत्त गुणस्थान

उन्हीं सामायिक छेदोपस्थापना संयमी जीवों के प्रमत्त–अप्रमत्त गुणस्थानालाप कहने पर – प्रमत्त संयत अप्रमत्त संयत दो गुणस्थान, प्रमत्त गुणस्थान में पर्याप्त अपर्याप्त दो जीव समास अप्रमत्त में एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त में संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्तियाँ छह अपर्याप्तियाँ, दस प्राण सात प्राण, प्रमत्त में चारों संज्ञाएँ, अप्रमत्त में तीन संज्ञाएँ मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, प्रमत्त में ग्यारह योग अपर्याप्त में आहारक मिश्र पर्याप्तक में दस योग अप्रमत्त में नौ योग, तीनों वेद अपर्याप्तक में एक पुरुष वेद, तेरह कषाय अपर्याप्तक में ग्यारह कषाय, चार ज्ञान अपर्याप्त में तीन ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, तीन दर्शन, भाव से तीन द्रव्य से छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व अपर्याप्तक में दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग अपर्याप्तक में छह उपयोग, तीन आर्त्त चार धर्म सात ध्यान अप्रमत्त में चार धर्मध्यान, चौबीस आस्रव पर्याप्तकों में तेईस व अपर्याप्तकों में बारह आस्रव अप्रमत्त में बावीस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुलकोटि, संख्यापेक्षा–प्रमत्त में पाँच करोड़ तेरानवे लाख अन्ठानवे हजार दो सौ छह अपर्याप्तक में सत्ताईस, अप्रमत्त में दो करोड़ छियानवे लाख निन्नयानवे हजार एक सौ तीन क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन–लोक का असंख्यातवां भाग, काल–नानाजीवापेक्षा सर्वकाल, एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर–नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, इकतीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, तिरेसठ/उनसठ प्रकृतियों का बंध, इक्यासी/छियत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छियालीस से एक सौ उनतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार संयम मार्गणा में सामायिक छेदोपस्थापना जीवों के प्रमत्ताप्रमत्त गुणस्थान समाप्त हुआ।

---

* ष.ख.पु. 5 सू. 262, 63,

विशेषार्थ :– काल का कथन इस प्रकार है कोई अप्रमत्त संयत जीव आयु के एक समय शेष रहने पर प्रमत्त संयत हुआ एक समय रहा दूसरे समय में मरण को प्राप्त हो गया इस प्रकार जघन्य काल एक समय प्राप्त हुआ उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त सुगम है। इसी प्रकार प्रमत्त से अप्रमत्त हुआ एक समय रहा और मर गया उत्कृष्ट अन्तर पूर्व की तरह सुगम है। अन्तर दोनों का अन्तर्मुहूर्त है। यहाँ प्रमत्त गुणस्थान में आहारक मिश्र काययोग में अपर्याप्तक में ही होता है। उसका विवेचन मूल में कर दिया गया है आहारक अपर्याप्तक में सत्ताईस जीव होते हैं तथा आहारक पर्याप्तक में चौवन जीव होते हैं शेष कथन सुगम है।

277. सामायिक, छेदो. संयम 8-9 गुणस्थान

		8वाँ गुण.	9वाँ गुण.
1.	गुणस्थान	अपूर्वकरण गुणस्थान	अनिवृत्तिकरण गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 संज्ञा	2 संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग	9 योग
10.	वेद	भाव से 3 वेद/द्रव्य से पुरुष वेद	भाव से 3 वेद/द्रव्य से पुरुष वेद
11.	कषाय	13 कषाय	7 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	सामायिक, छेदोपस्थापना	सामायिक, छेदोपस्थापना
14.	दर्शन	3 दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (उपशम, क्षायिक)	2 (उपशम, क्षायिक)
18.	संज्ञी	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग	7 उपयोग
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान अथवा 1 शुक्ल ध्यान	4 धर्मध्यान अथवा एक शुक्लध्यान
22.	आस्रव	22 (9 योग + 13 कषाय)	16 (9 योग + 7 कषाय)*
23.	जाति	14 लाख	-
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़	-
25.	संख्या	897 (उपशामक-299, क्षपक-598)	-
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग	-
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग	-
28.	काल	उपशामक-नाना व एक जीव अपेक्षा जघन्य एक समय, उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, क्षपक नाना व एक जीव अन्तुर्मुहूर्त	
29.	अन्तर	उपशामक-नाना जीव ज. एक समय, उ. वर्ष पृथक्त्व, क्षपक - नाना जीव ज. एक समय उ. 6 माह	
		उप.-एक जीव ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम एक पूर्व कोटि प्रमाण क्षपक-एक जीव निरन्तर	
30.	भाव	31 भाव (औद.13, क्षयो. 12, पा.2, उप.2, क्षा.2)	
31.	अवगाहना	जघन्य- 3½ हाथ	उत्कृष्ट- 525 धनुष
32.	बन्ध	58	22
33.	उदय	72	66
34.	सत्त्व	146 (उपशामक में 146, 145, 142, 141, 139, 138) क्षपक में 138	146 अनिवृत्ति. क्षपक में 138-103

277. सामाइय छेदोवट्ठाणेसु अपुव्व अणियट्टियरणं

तेसुं संजम मग्गणाणुवादेण सामाइय छेदोवट्ठावण संजमेसु अपुव्व अणियट्टियरण गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि–अपुव्वयरण व अणियट्टियरण बे गुणट्ठाणाणि, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त एग जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, अपुव्वे तिण्णि अणियट्टिए आहार भयेहिं विणा बे सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, भावेण तिण्णि दव्वेण एग पुरिसवेदो, तेरस कसाया अणियट्ठियरणे चत्तारि संजलण तिण्णि वेदो एदे सत्त कसाया, चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण एग शुक्क लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्म अहवा एग सुक्क पंच झाणाणि, बाबीस आसवा अणियट्ठियरणे सोलह आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा–संखेज्ज अपुव्वे व अणियटिटयरणे वि पत्तेयं सत्तणउदि उत्तर अट्ठ सयं उवसामगेसु णवणउदि उत्तर बे सयं खवगेसु अट्ठणउदि उत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा–लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो–णाणेग जीवावेक्खा उवसामगेसु जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेगजीवावेक्खा अंतोमुहुत्तं, अंतरं–उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वास पुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणाणी खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छम्मास एगजीवावेक्खा णिरंतरं, इगतीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, अट्ठावण्ण व बाबीस पयडीणं बंधो, बेसत्तदि व छावट्ठि पयडीणं उदओ एवं दोण्णिसु छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सामाइय छेदोवट्ठावणा संजमेसु अपुव्वअणियट्ठियरण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

सामायिक छेदोपस्थापना अपूर्व अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

उन्हीं सामायिक छेदोपस्थापना संयमियों के आठ व नौवे गुणस्थानालाप कहने पर – अपूर्वकरण अनिवृत्तिकरण दो गुणस्थान संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त एक जीव समास, छहों पर्याप्तियाँ, दसों प्राण, अपूर्वकरण में तीन अनिवृत्तिकरण में आहार भय बिना दो संज्ञाएँ, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, भाव से तीनों द्रव्य से एक पुरुष वेद, तेरह कषाय अनिवृत्तिकरण में सात कषाय, चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, तीन दर्शन, द्रव्य से छहों भाव से शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम–क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्म अथवा एक शुक्ल पाँच ध्यान, बाईस आस्रव अनिवृत्तिकरण में सोलह आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा–संख्यात, (आठ सौ सत्तानवें उपशामक दो सौ निन्यानवें क्षपक पाँच सौ अट्ठानवें) प्रत्येक गुणस्थान में, क्षेत्रापेक्षा–लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन–लोक का असंख्यातवां भाग, काल नानैकजीवापेक्षा उपशामक जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपक नानैकजीवापेक्षा अंतर्मुहूर्त, अंतर–उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम एक पूर्व कोटि क्षपक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह माह एक जीवापेक्षा निरंतर, इकत्तीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष अट्ठावन–बाईस प्रकृतियों का बंध, बहत्तर–छ्यासठ प्रकृतियों का उदय एवं दोनों में एक सौ छयालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार सामायिक छेदोपस्थापना संयम में अपूर्व अनिवृत्तिकरण गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– *कोई मनुष्य एक पूर्व कोटि प्रमाण आयु वाले ने संयम के योग्य काल आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त के पश्चात् संयम को धारणकर उपशम श्रेणी आरोहण की अपूर्वकरण अनिवृत्तिकरण सूक्ष्मसांपराय उपशांत मोह को प्राप्त कर पुन: सूक्ष्मसांपराय अनिवृत्तिकरण व अपूर्वकरण को प्राप्त हुआ पश्चात् अप्रमत्त गुणस्थान को प्राप्त कर अन्तर को प्राप्त हुआ। प्रमत्त अप्रमत्त गुणस्थान में पूर्व कोटि प्रमाण रहकर अनुदिश आदि विमानों की आयु बाँधकर आयु में अन्तर्मुहूर्त शेष रहने पर अपूर्वकरण गुणस्थान को प्राप्त हुआ तथा निद्रा और प्रचला प्रकृति के बन्ध व्युच्छिन्न होने पर मरण को प्राप्त हुआ। इस प्रकार आठ वर्ष ग्यारह अन्तर्मुहूर्त कम एक पूर्व कोटि का अन्तर होता है इसी प्रकार अनिवृत्तिकरण का जानना चाहिए। फर्क इतना है कि यहाँ ग्यारह अन्तर्मुहूर्त कम किये अनिवृत्तिकरण में आठ वर्ष नौ अन्तर्मुहूर्त कम करना चाहिए। शेष कथन सुगम है क्योंकि जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त भी सुगम है नाना जीवों की अपेक्षा भी कोई विशेषता नहीं है क्योंकि पहले कई बार कह चुके है काल का कथन भी नाना व एक जीव की अपेक्षा उत्कृष्ट जघन्य दोनों प्रकार से सरल है। यद्यपि गुणस्थान की अपेक्षा अन्तर कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन था किन्तु यहाँ मार्गणा की अपेक्षा है।

278. परिहार विशुद्धि संयम प्रमत्तअप्रमत्त गुणस्थान

		प्रमत्तम गु.	अप्रमत्तम गु.
1.	गुणस्थान	6 (प्रमत्त संयत)	7 गु. (अप्रमत्त संयत)
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	–
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति	–
4.	प्राण	10	–
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	3 संज्ञा (आहार बिना)
6.	गति	मनुष्यगति	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–
8.	काय	त्रसकाय	–
9.	योग	9	–
10.	वेद	पुरुष वेद*1	–
11.	कषाय	11 कषाय	–
12.	ज्ञान	3 ज्ञान (मन:पर्यय बिना)*2	–
13.	संयम	परिहार विशुद्धि संयम	–
14.	दर्शन	3 (चक्षु, अचक्षु, अवधि दर्शन)	–
15.	लेश्या	भाव 3 शुभ लेश्या, द्रव्य से 6 लेश्या	–
16.	भव्य	भव्य	–
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक, क्षयोपशम (परिहार विशुद्धि के साथ उपशम नहीं होता)	–
18.	संज्ञी	संज्ञी	–
19.	आहारक	आहारक	–
20.	उपयोग	6 (3 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)	–
21.	ध्यान	7 (3 आर्त्त 4 धर्मध्यान	4 धर्मध्यान
22.	आस्रव	20 (11 कषाय+9 योग) (स्त्री नपुं. वेद बिना)	–
23.	जाति	14 लाख	–
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़	–
25.	संख्या	6997	6997
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग	–
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग	–
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. 30 वर्ष+वर्ष पृथक्त्व (8 वर्ष) कम एक कोटि पूर्व	
29.	अन्तर	नाना जीव की अपेक्षा – निरन्तर, एक जीव की अपेक्षा–ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन व अन्तर्मुहूर्त	
30.	भाव	27 (औद.11, क्षयो. 13+क्षा. 1+पा. 2)	
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ (संख्यात हाथ) उत्कृष्ट– 525 धनुष	
32.	बन्ध	63	59
33.	उदय	77	74
34.	सत्त्व	146–145, 142, 141,	139–138

*1 परिहार विशुद्धि संयम एक पुरुष वेदी को ही होता है।

*2 मन:पर्यय के साथ परिहार विशुद्धि संयम नहीं होता।

278. विहारसुद्धि संजमे पमत्तापमत्त गुणट्ठाणं

तेसुं संजम मग्गाणाणुवादेण अह विहार सुद्धि संजमालावभण्णमाणे अत्थि–पमत्तापमत्त संजदा बे गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा अपमत्तेसु तिण्णि सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, एग पुरिसवेदो, एगारस कसाया, मणपज्जयेण विणा तिण्णि णाणाणि, एग विहार सुद्धि सजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण तिण्णि सुहलेस्सा, भव्व सिद्धिया, खइय खओवसमिय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, छह उवजोगा, सत्त झाणाणि अपमत्ते चत्तारि धम्मं झाणाणि, बीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्खकोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पमत्तापम तिऊण सत्त सहस्स, खेत्तावेक्खा–लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा–लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकाल एग जीवावेक्खा सामण्णेण जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अट्ठतीस वास देसूणाणि पुव्वकोडी (गुणट्ठाणाणु–परिवट्टणाणुसारेण ओघं णाणा जीवावेक्खा सव्वकाल एग जीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं), अंतरं–सामण्णेण णाणाजीवावेक्खा णत्थि अंतरं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरियट्टं देसूणाणि ओघाणुसारेण णाणा जीवावेक्खा णिरंतरं एग जीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, सत्तबीस भावा, जहण्ण मवगहणं अद्धुट्ठ*[1] हत्थं उक्कस्सेण पणवीसुत्तर पंच सयं धणू, तिसट्ठि पयडीणं बंधो, सत्तसत्तदि पयडीणं उदओ एवं छादाल, उणदाल अडतीसुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि विहार सुद्धि संजमे पमत्तापमत्त गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

परिहारविशुद्धि संयम प्रमत्ताप्रमत्त गुणस्थान

अब परिहार विशुद्धि संयमानुवाद से आलाप कहने पर – प्रमत्त–अप्रमत्त संयत दो गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ छठवें गुणस्थान में चारों संज्ञाएँ सातवें गुणस्थान में आहार बिना तीन संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रस काय, नौ योग, एक पुरुष वेद, ग्यारह कषाय, मन:पर्यय बिना तीन ज्ञान, एक परिहार विशुद्धि संयम, तीन दर्शन, द्रव्य से छहों भाव से तीनों शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक–क्षयोपशम दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, सात ध्यान अप्रमत्त में चार धर्मध्यान, बीस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा तीन कम सात हजार, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल सामान्य से नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट 38 वर्ष कम एक पूर्व कोटि (गुणस्थान परिवर्तन की अपेक्षा नाना जीव सर्वकाल एक जीव जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त), अन्तर सामान्य से नाना जीव निरंतर एक जीव जघन्य अन्तर्मुहूर्त्त उत्कृष्ट अर्द्धपुद्गल परावर्तन गुणस्थानानुसार नाना जीव निरंतर एक जीव जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, सत्ताईस भाव, जघन्य अवगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, 63 व 59 प्रकृतियों का बन्ध 77 व 74 प्रकृतियों का उदय एवं 146 से 138 तक प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार परिहार विशुद्धि संयम में प्रमत्ताप्रमत्त गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– काल सामान्य से कुछ (38 वर्ष) कम एक कोटि पूर्व है क्योंकि कोई मनुष्य जिसकी आयु एक कोटि पूर्व की है 30 वर्ष तक सुख के साथ घर में रहा पश्चात् तीर्थंकर अथवा केवली के पाद मूल में दीक्षा ले प्रत्याख्यान पूर्वक वर्ष पृथक्त्व तक प्रत्याख्यान नामक पूर्व का अध्ययन करता है तब एक ऐसी ऋद्धि प्रकट होती है जिसके कारण जब वह गमन करता है तब जमीन से चारअंगुल ऊँचा चलता है उसका नाम परिहार विशुद्धि संयम होता है इसलिए तो 38 वर्ष कम एक कोटि पूर्व काल प्राप्त होता है जघन्य से अन्तर्मुहूर्त सुगम है। गुणस्थान परिवर्तन की अपेक्षा जघन्य काल एक समय मरण की अपेक्षा प्राप्त होता है क्योंकि कोई परिहार विशुद्धि वाला संयत प्रमत्त से अप्रमत्त हुआ एक समय रहा और मरण को प्राप्त हो गया इसी प्रकार प्रमत्त का भी समझना चाहिए उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है जो सुगम है। अन्तर जो अर्द्धपुद्गल परावर्तन कहा गया है ये भी सामान्य से मार्गणा का परावर्तन करने पर जैसे कोई परिहार विशुद्धि संयत असंयम को प्राप्त हो अर्द्धपुद्गल परावर्तन काल तक भ्रमण कर संसारावास में अन्तर्मुहूर्त काल शेष रहने पर परिहार विशुद्धि संयत हुआ इस प्रकार उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त है जघन्य अन्तर सुगम है। गुणस्थान परिवर्तन करने पर जघन्य उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त होता है। यहाँ एक और बात समझ लेना चाहिए स्पर्शन का कथन यद्यपि पूर्व में किया है दूसरी बात स्पर्शन मनुष्यों की अपेक्षा सामान्य से लोक का असंख्यातवां भाग ही है। सभी पदों की अपेक्षा (विहार वेदना विक्रिया कषाय उपपाद मारणांतिक आदि) किन्तु देव, नारकी और तिर्यंचों की अपेक्षा स्पर्शन निकलता है यहाँ जहाँ अन्तर निकलता था वहाँ निकाला किंतु जहाँ लोक का असंख्यातवां भाग है वहाँ कोई विशेषता नहीं है इसलिए कोई विवेचन नहीं किया है ऐसा समझ लेना चाहिए। शेष कथन सुगम है।

279. सूक्ष्म साम्पराय संयम

1.	गुणस्थान	10 सूक्ष्म साम्पराय
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	1 परिग्रह संज्ञा
6.	गति	मनुष्य गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	अवेद
11.	कषाय	1 (सूक्ष्म संज्वलन लोभ)
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	सूक्ष्म साम्पराय
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (क्षायिक, उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग (4 ज्ञानो., 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	शुक्ल ध्यान/धर्मध्यान
22.	आस्रव	10 (9 योग+एक कषाय)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	897 (उपशामक 299, क्षपक-598)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	उपशामक-नाना व एक जीव की अपेक्षा- ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक नाना व एक जीव की अपेक्षा - ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उपशामक-नाना जीवों की अपेक्षा-ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व एक जीव ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परा.*[1] क्षपक-नाना जीवों की अपेक्षा- ज. एक समय उ. 6 माह एक जीव-निरन्तर
30.	भाव	23 (औद. 5, मि. 12, क्षा.2, औप.2, पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य- 3½ हाथ उत्कृष्ट- 525 धनुष
32.	बन्ध	17
33.	उदय	60
34.	सत्त्व	उपशामक 146, 142, 139, 138 क्षपक - 102
		*[1] यद्यपि संयम सामान्य की अपेक्षा उक्त प्रमाण अन्तर ठीक है किंतु मार्गणा के अनुसार गुणस्थान परावर्तन का अभाव होने से अन्तर प्राप्त नहीं होता निरंतर है।

279. सुहुमसंपराय–संजमो

तेसुं संजम मग्गणाणुवादेण संजमाणां सुहुम संपराय संजमाणालाव भण्णमाणे अत्थि–एग सुहुम संपरायगुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, एग परिग्गह सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, अवेदी, एगं सुहुम लोह कसाओ, चत्तारि णाणाणि, सुहुमसंपराय संजमो, तिण्णि दंसणाणि, सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, धम्मज्झाणं अहवा एग सुक्कज्झाणं, दस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा सत्तणउदि उत्तरं अट्ठ सयं उवसामगेसु णवणउदि उत्तर बे सयं खवगेसु अट्ठणउदि उत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा–लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा–लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो–णाणा व एगजीवावेक्खा उवसामगेसु जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणा व एगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं–उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एगजीवावेक्खा मग्गणा परिवट्ठणावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गल* परायट्टं गुणट्ठाण परिवट्णावेक्खा णत्थि अंतरं खवगेसु णाणा जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छम्मास एग जीवावेक्खया णिरंतरं, तेबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, सत्तदस पयडीणं बंधो, सट्ठि पयडीणं उदओ एवं उवसामगेसु छादालुत्तर सयं बदालुत्तर सयं ऊणदालुत्तर सयं व खवगेसु बेउत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सुहुमसांपराय संजमो सम्मत्ता।

सूक्ष्मसाम्पराय संयम

सूक्ष्म साम्पराय संयम का आलाप कहने पर एक सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, एक परिग्रह संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, अवेद*, सूक्ष्म लोभ कषाय, चार ज्ञान, सूक्ष्मसाम्पराय संयम, तीन दर्शन, शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, धर्म ध्यान या एक शुक्ल ध्यान, दस आस्रव*, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – आठ सौ संतानवै उपशामक दो सौ निन्यानवे क्षपक पाँच सौ अट्ठानवै, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन–लोक का असंख्यातवां भाग, काल–नाना व एक जीवापेक्षा उपशामक जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त क्षपक–नाना व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर–उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा मार्गणा परिवर्तन की अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन गुणस्थान परिवर्तन अपेक्षा निरंतर क्षपक– नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह मास एक जीवापेक्षा निरंतर, तेईस भाव, जघन्य अवगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, सत्रह प्रकृतियों का बंध, साठ प्रकृतियों का उदय एवं उपशामकों में एक सौ छयालीस एक सौ ब्याली एक सौ उनतालीस व क्षपकों में एक सौ दो प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार सूक्ष्मसाम्पराय संयमालाप समाप्त हुआ।

नोट– सूक्ष्म सांपराय संयम सामान्य का आलाप यहाँ नहीं दे रहे हैं क्योंकि कोई फर्क नहीं है केवल अंतर में फर्क है।

* नौवे गुणस्थान में सभी वेद समाप्त हो जाते हैं अत: उससे आगे सभी जीव अवेदी हैं। शेष कथन सुगम है कुछ भी व्याख्या करने का अवसर नहीं है।

* सामान्य से एक जीवापेक्षा उपशम का अर्द्धपुद्गल परावर्तन काल मार्गणा परावर्तन कराने पर उक्त अन्तर प्राप्त होता है। विशेष की अपेक्षा–गुणस्थान की अपेक्षा गुणस्थान परावर्तन की अपेक्षा उपशामक नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा अपेक्षा अन्तर नहीं है क्षपकों में नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह मास एक जीव निरंतर।

* आस्रव नौ योग व एक सूक्ष्म लोभ कषाय इस प्रकार दस आस्रव होते हैं।

280. यथाख्यातसंयत सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	11-14	11, 12, 13, 14	13
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त/अपर्याप्त	-	अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10 व 4 प्राण व 2, 1 प्राण	10, 4*1 1 आयु प्राण	दो/एक प्राण*2
5.	संज्ञा	उपशांत व क्षीण संज्ञा	-	-
6.	गति	मनुष्य गति	-	-
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	-	-
8.	काय	त्रसकाय	-	-
9.	योग	9 (9,7,5,2) अयोग	9, 5, योग, अयोग	2 (औ.मि., कार्मण काय योग)
10.	वेद	अवेद	-	-
11.	कषाय	अकषाय	-	-
12.	ज्ञान	11-12 में 4 ज्ञान 13-14 में केवलज्ञान	4/1	1 (केवलज्ञान)
13.	संयम	यथाख्यात संयम	-	-
14.	दर्शन	4 दर्शन (3 दर्शन 11-12 में) (13-14 गु. में केवलदर्शन)	3/1	1 (केवलदर्शन)
15.	लेश्या	1 शुक्ल लेश्या अलेश्या	1 (अलेश्या)	-
16.	भव्य	भव्य	-	-
17.	सम्यक्त्व	2 (11वें गु. में उपशम*3, 12, 13, 14 में क्षायिक)	-	1 क्षायिक
18.	संज्ञी	संज्ञी, नो संज्ञी नो असंज्ञी	-	नो संज्ञी नो असंज्ञी
19.	आहारक	आहारक व अनाहारक	आहारक अनाहारक	दोनों*4
20.	उपयोग	11वें 12 में 7 उपयोग 13 व 14 में 2 उप.	(4 ज्ञानो.+3 दर्शनो.) (1+1)	दो (एक ज्ञानो.+एक दर्शनो.)
21.	ध्यान	4 शुक्ल ध्यान	-	कोई ध्यान नहीं
22.	आस्रव	9 योग, 7 योग, 5 योग (आस्रव), अनास्रव	9/5, अनास्रव	दो आस्रव
23.	जाति	14 लाख	-	-
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़	-	-
25.	संख्या	संख्यात (899997)	गुणस्थानवत	100
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग व सर्वलोक		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व सर्वलोक		
28.	काल	उपशामक-नाना व एक जीव की अपेक्षा- ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक नाना व एक जीव की अपेक्षा - ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त- सयो. कुछ कम एक पूर्व कोटी, अयोगी अन्तर्मुहूर्त		
29.	अन्तर	उपशामक-नाना जीवों की अपेक्षा- ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व एक जीव ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम अर्द्धपद्गल परावर्तन क्षपक-नाना जीवों की अपेक्षा ज. एक समय उ. 6 माह, एक जीव की अपेक्षा- निरन्तर		
30.	भाव	22 (औद.4, मि.12, क्षा.2, औप.2, पा.2)		
31.	अवगाहना	जघन्य- 3½ हाथ उत्कृष्ट- 525 धनुष		
32.	बन्ध	1		
33.	उदय	60		
34.	सत्त्व	उपशामक क्षपक में 146 - 138ए 101, 85, 72, 13		

*1 सयोग केवली के वचनबल आयु, श्वासोश्वास, कायबल ये चार प्राण होते है। *2 केवली के कार्मण काय योग के समय एक आयु प्राण होता है, औदा. मि. में दो प्राण होते हैं।
*3 ग्यारह वे गुणस्थान में क्षायिक सम्यक्त्व भी हो सकता है इसलिए दोनों सम्यक्त्व होते है। *4 औ. मि. काय योग में आहारक,कार्माण का.यो. में अनाहारक होते हैं।
✻ सयोग केवली के भी मात्र एक आयु प्राण होती है (14वें गुण.) अनाहारक होते हैं

280. जहाक्खाद संजमो सामण्णं

तेसुं संजम मग्गणाणुवादेण जहाक्खाद संजमाणालाव भण्णमाणे अत्थि-उवसंत खीण सजोगी अजोगी जिण चत्तारि गुणट्ठाणाणि अपज्जत्तेसु एग सजोगी गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, दस अपज्जत्ते चउ बे व एगाउ पाणा, उवसंत व खीण सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव सत्त पंच बे जोगा अपज्जत्तेसु ओरालिय मिस्स व कम्माण कायजोगा व अजोगी वि, अवेदी, अकसायी, उवसंत खीणेसु चत्तारि णाणाणि व सजोगी अजोगीसु एग केवलणाणं अपज्जत्तेसु एग केवलणाणं, जहक्खाद संजमो, चत्तारि दंसणाणि अपज्जत्तेसु केवल दंसण, एग सुक्कलेस्सा अलेस्सावि, भव्वसिद्धिया, उवसंते उवसम* सेसेसु खइय बे सम्मत्ता अपज्जत्तेसु खइय सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अणाहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, चत्तारि उवजोगा अपज्जत्तेसु बे उवजोगा, चत्तारि सुक्कज्झाणाणि, णव आसवा पज्जत्तेसु णव व पण्ण अपज्जत्तेसु बे आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा उवसंते णवणउदि उत्तर बे सयं, खीणकसाये अट्ठणउदि उत्तर पंच सयं सजोगीसु अट्ठ लक्ख अट्ठ णउदि सहस्सं बे उत्तर पंच सयं अजोगीसु अट्ठणउदि उत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व सव्वलोय, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व सव्वलोय, कालो उवसामगेसु णाणेग जीवावेक्खा जहण्णेण एग समयो उक्कस्सेण अन्तोमुहुत्तं खवगेसु णाणेग जीवावेक्खा जहण्णेण उक्कस्सेण अन्तोमुहुत्तं*, अन्तरं उवसामगेसु णाणा जीवावेक्खा जहण्णेण एग समयो उक्कस्सेण वासपुधत्तं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अन्तोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गलपरायट्ठं* / खवगेसु णाणा जीवावेक्खा जहण्णेण एग समयो उक्कस्सेण छम्मास एग जीवावेक्खा णिरंतर, बाबीस भावा अपज्जत्तेसु चोद्दस भावा*, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, एग पयडीणं बंधो, सट्ठि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं एगुत्तर सयं पंचासीदि तेरस पयडीणं सच्चं होंति।

इदि जहाक्खाद संजमो सामण्णालाव सम्मत्ता।

यथाख्यातसंयम सामान्य

यथाख्यात संयमीजीवों के आलाप कहने पर - उपशांत-क्षीण-सयोगी-अयोगी जिन चार गुणस्थान अपर्याप्त में एक मात्र तेरह वां गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्तियाँ छहों अपर्याप्ति , दस-चार अपर्याप्त में दो व एक आयु प्राण, क्षीण संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ-सात-पाँच-दो योग व अयोग अपर्याप्त में दो योग, अवेद, अकषाय, 11-12 में चार ज्ञान व 13-14 में एक केवलज्ञान अपर्याप्त में एक केवलज्ञान, यथाख्यात संयम, चारों दर्शन अपर्याप्तक में केवल दर्शन, एक शुक्ल लेश्या अलेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशांत में उपशम* शेष में क्षायिक सम्यक्त्व अपर्याप्त में क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक अपर्याप्तक में दोनों पर्याप्तक में आहारक अनाहारक दोनों, सात व दो उपयोग अपर्याप्तक में दो उपयोग, चार शुक्ल ध्यान, नौ आस्रव पर्याप्तक में नौ पाँच अपर्याप्तक में दो आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा उपशांत में दो सौ निन्यानवै क्षीण कषाय में पाँच सौ अन्ठानवे सयोगी में आठ लाख अन्ठानवे हजार पाँच सौ दो अयोगी पाँच सौ अन्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग व सर्वलोक, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग व सर्वलोक, काल-उपशामकों में नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त क्षपक नाना व एक जीव अन्तर्मुहूर्त*, अन्तर उपशामक नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन क्षपक-नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट 6 माह एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट निरंतर, बाईस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक प्रकृति का बंध, साठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार यथाख्यात संयमालाप समाप्त हुआ।

---

* उपशांत कषाय गुणस्थान में भी दो सम्यक्त्व पाये जा सकते है क्योंकि कोई क्षायिक सम्यग्दृष्टि उपशम श्रेणी चढ़ता है तो उसके क्षायिक सम्यक्त्व पाया जाता है।

* औद. 4, मि. 12, क्षा.2, औ.2, पा.2 इस प्रकार 22 भाव हुए किन्तु ग्यारहवे गुणस्थान में 21 भाव तथा क्षीणमोह में 20 भाव तथा सयोगी जिन के 14 भाव अयोगी जिन के 13 भाव होते है।

* छह अपर्याप्ति यहाँ उपचार से कही गई है उस समय एक अवस्था ऐसी हो जाती है जहाँ औदारिक शरीर की प्रक्रिया बंध हो जाती है उस समय औदारिक शरीर कार्मण काययोग के साथ मिलकर कार्य करता है। यही अपर्याप्तपना है।

* केवल उपशांत मोह गुणस्थान में उपशम सम्यक्त्व पाया जाता है वहाँ भी विकल्प है शेष गुणस्थानों में क्षायिक सम्यक्त्व ही पाया जाता है।

ग्यारह, बारहवें गुणस्थान में नौ योग पाये जाते हैं तेरहवें पर्याप्तक में पाँच योग अपर्याप्त में औदारिक मिश्र व कार्मण दो योग ही है चौदहवें गुणस्थान में अयोग स्पर्शन स्वस्थान की अपेक्षा लोक का असंख्यात वां भाग केवली समुद्घात (दंड में लोक का असंख्यात वां भाग कपाट में लोक का संख्यात वा भाग प्रतर में लोक का असंख्यात बहुभाग लोक पूरण समुद्घात में सर्वलोक इसी प्रकार क्षेत्र जानना। काल क्षपक जीवों का काल नाना व एक जीव का काल बारहवे, चौदहवें गुणस्थान का है किंतु तेरहवे गुणस्थान का काल जघन्य अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट कुछ कम एक पूर्व कोटि है। सयोग केवली नाना व एक जीव की अपेक्षा निरंतर है। उपशामकों में मार्गणा परिवर्तन की अपेक्षा ध.पु.7 के अनुसार अन्तर अर्द्धपुद्गल परावर्तन निकलता है किन्तु गुणस्थान परावर्तन से निरंतर है अन्तर नहीं है।

नोट :- जहाँ सामान्य आलाप है वहाँ मार्गणा परिवर्तन से अन्तर है शेष स्थान में विशेष कथन गुणस्थान परावर्तन से अन्तर है।

281. यथाख्यात संयम उपशांत मोह गुणस्थान

1.	गुणस्थान	उपशान्त कषाय
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	0 उपशांत संज्ञा
6.	गति	मनुष्य गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	भाव से अवेद द्रव्य से 1 पुरुष वेद
11.	कषाय	0 (अकषाय)
12.	ज्ञान	4
13.	संयम	यथाख्यात संयम
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	1 शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 उपशम, क्षायिक सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 (4 ज्ञानो. 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	1 शुक्ल ध्यान (पृथक्त्व वितर्क)
22.	आस्रव	9 आस्रव
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	299
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा- ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त, एक जीव की अपेक्षा ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा- ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीव की अपेक्षा- निरंतर अथवा ज.-अन्तर्मुहूर्त, उ.-अर्द्धपुद्गल परावर्तन
30.	भाव	21 भाव (औद.4, क्षयो. 12, क्षा.1, औप.2, पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य- 3½ हाथ उत्कृष्ट- 525 धनुष
32.	बन्ध	1
33.	उदय	59
34.	सत्त्व	146, 142, 141, 139, 138
		नोट- क्षीणमोह, सयोग केवली, अयोगकेवलीयों में आलाप ओघ के समान ही जानना चाहिए।

281. जहाक्खाद संजम उवसंत कषाय गुणट्ठाणं

तेसुं संजम मग्गणाणुवादेण जहाक्खाद संजमेसु उवसंतकसाय गुणट्ठाणामालाव भण्णमाणे अत्थि - एग उवसंत कसाय गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छह पज्जत्ती, दस पाणा, उवसंत सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, अवेदी, अकसायी, केवलणाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, जहाक्खादसंजमो, तिण्णि दंसणाणि, एगं सुक्क लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, एग पिथक्कवितक्क सुक्कज्झाणं, णव आसवा, चोद्दस लक्ख जादि, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा णवणउदिउत्तर बे सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणेग जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणा जीवावेक्खा जहण्णेण एग समयो उक्कस्सेण वास पुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अन्तोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गलपरायट्ठं णिरंतरं वा, इगबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, एगं पयडीणं बंधो, ऊणसट्ठि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं, बादालुत्तर सयं उणदालुत्तुर सयं व अडतीसुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि संजम मग्गणासु जहाक्खाद संजमे उवसंत गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

यथाख्यात संयम उपशांत मोह गुणस्थान

संयम मार्गणा के अनुवाद से उन्हीं यथाख्यात संयमियों में उपशांत कषाय गुणस्थानालाप कहने पर - उपशांत कषाय गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छह पर्याप्तियाँ, दस प्राण, उपशांत संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, द्रव्य से पुरुषवेद भाव से अवेद, अकषायी, चार ज्ञान (केवलज्ञान बिना), यथाख्यात संयम, तीन दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम व क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, एक पृथक्त्व वितर्क शुक्ल ध्यान, नौ आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा-दो सौ निन्यानवे, क्षेत्रापेक्षा - लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन-लोक का असंख्यातवां भाग, काल नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीव जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन अथवा निरंतर, इक्कीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक प्रकृति का बंध, उनसठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस एक सौ ब्यालीस एक सौ उनतालीस-एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार संयम मार्गणा में यथाख्यात संयम में उपशांत गुणस्थान समाप्त हुआ।

12, 13, 14 गुणस्थान का आलाप गुणस्थानवत् ही बनेगा। कोई विशेषता नहीं है।
अर्द्धपुद्गल परावर्तन सामान्य से व विशेषता से निरंतर है जिसका कथन पूर्व में किया ही है।

282. दर्शन मार्गणा चक्षु दर्शन सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	1–12 गुणस्थान	–	1,2,4,6
2.	जीवसमास	6 (चार इन्द्रिय,संज्ञी,असंज्ञी पर्याप्त व अपर्याप्त	3 पर्याप्तक	3 अपर्याप्तक
3.	पर्याप्ति	6, 5 पर्याप्ति व अपर्याप्ति	6, 5 पर्याप्ति	6,5 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10,9,8,7,6 प्राण	10,9,8	7, 7,6 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा, क्षीण संज्ञा	4 संज्ञा व क्षीण संज्ञा	चार संज्ञा
6.	गति	चारों गति	–	–
7.	इन्द्रिय	चार इन्द्रिय, पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	15 योग	11 योग	4 योग
10.	वेद	3 वेद/अवेद	–	तीनों वेद/एक पुरुष वेद
11.	कषाय	25 व अकषाय	–	–
12.	ज्ञान	7 ज्ञान (केवलज्ञान बिना)	7	5 (मन:पर्यय बिना व कुअवधि बिना)
13.	संयम	7 संयम	–	3 (असंयम, सा.,छे.)
14.	दर्शन	1 चक्षु दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य, अभव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	6 (क्षा., क्षयो., उ., मि.,सा.,मि.)	6	5 (मिश्रबिना)
18.	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	8 (7 ज्ञानो.+1 दर्शनो.)	–	6 (5 ज्ञानो.+ 1 दर्शनो.)
21.	ध्यान	14	–	–
22.	आस्रव	57 (25+15+12+5)	53 (25+11+12+5)	46 (25+4+12+5)
23.	जाति	28 लाख	–	–
24.	कुलकोटि	117½ लाख करोड़	–	–
25.	संख्या	असंख्यात		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग, सर्वलोक व कुछ कम 8/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– ज.व उ. सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. 2000 सागर		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– निरन्तर, एक जीव की अपेक्षा– ज. क्षुद्रभव उ. असंख्यात पुद्गल परावर्तनरुप अनंतकाल		
30.	भाव	44 (औद.21, मि.16, पा.3, क्षा.2, औप.2)		
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का संख्यातवाँ भाग (घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग) उत्कृष्ट– 1000 योजन		
32.	बन्ध	120		
33.	उदय	114		
34.	सत्त्व	148		

282. दंसणमग्गणासु चक्खुदंसणसामण्णं

अह दंसण मग्गणाणुवादेण चक्खु दंसणीसु सामण्णालाव भण्णमाणे अत्थि-एयत्तो बारस गुणट्ठाणाणि अपज्जत्तेसु मिच्छत्त सासण अविरद पमत्त चत्तारि गुणट्ठाणाणि, चउरिंदिय असण्णी सण्णी पज्जत्तापज्जत्त छ जीव समासा, छह पंच पज्जत्ती छ पंच अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस णव अट्ठ पाणा अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छह पाणा, चत्तारि व खीण सण्णा, चत्तारि गदी, चदु पंचिंदियाणि, तसकाओ, पंचदस जोगा पज्जत्तेसु एगारस अपज्जत्तेसु चत्तारि जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया अकसायी व केवलणाणेण विणा सत्त णाणाणि अपज्जत्तेसु केवलणाण मणपज्ज्य व विभंगणाणेहि विणा पंच णाणाणि, सत्त संजमा अपज्जत्तेसु असंजम सामाइय छेदोवट्ठावणा तिण्णि संजमा, एग चक्खु दंसणो, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्वसिद्धिया दोण्णि, छ सम्मत्ता अपज्जत्तेसु मिस्सेण विणा पंच सम्मत्ता, सण्णी असण्णी दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, सत्त णाणाणि एगं दंसणं अट्ठ उवजोगा अपज्जत्तेसु छ उवजोगा, बे सुक्कज्झाणेहि विणा चोद्दस झाणाणि, सत्तावण्ण आसवा पज्जत्तेसु तिवण्ण अपज्जत्तेसु छादाल आसवा, अट्ठाबीस लक्ख जादी, अद्ध सत्तदसुत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा असंखेज्ज, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा अट्ठचोद्दस भागा वा देसूणा एवं सव्वलोय, कालो-णाणाजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण बे सहस्स सागरोवमाणि, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण खुद्दाभवो उक्कस्सेण असंखेज्ज पोग्गलपरायट्टं, चदुदाल भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्ज भावा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, बीसुत्तर सयं पयडीणं बंधो, चोद्दसुत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि दंसण मग्गणासु चक्खु दंसण सामण्णं सम्मत्ता।

दर्शन मार्गणा चक्षु दर्शन सामान्य

अब दर्शन मार्गणा के अनुवाद से चक्षु दर्शनी के सामान्यालाप कहने पर एक से बारह गुणस्थान अपर्याप्त में मिथ्यात्व सासादन असंयत प्रमत्त चार गुणस्थान, चार इंद्रिय-असंज्ञी-संज्ञी पर्याप्तापर्याप्त छह जीव समास, छह-पाँच पर्याप्ति छह-पाँच अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस-नौ-आठ प्राण अपर्याप्त में सात-सात छह प्राण, चारों संज्ञा व क्षीण संज्ञा, चारों गति व पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, पंद्रह योग पर्याप्त में ग्यारह अपर्याप्त में चार योग, तीनों वेद, पच्चीस कषाय व अकषाय, केवलज्ञान बिना सात ज्ञान अपर्याप्त में केवल ज्ञान-मन:पर्यय व विभंगावधि ज्ञान बिना पाँच ज्ञान, सातों संयम अपर्याप्त में असंयम सामायिक-छेदोपस्थापना तीन संयम, एक चक्षु दर्शन, छहों लेश्या, भव्यसिद्धिक, अभव्य सिद्धिक दोनों, छहों सम्यक्त्व अपर्याप्तक में मिश्र बिना पाँच सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी दोनों, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्त में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, सात ज्ञान एक दर्शन आठ उपयोग अपर्याप्त में छह उपयोग, दो शुक्ल ध्यान बिना चौदह ध्यान, सत्तावन आस्रव पर्याप्त में तिरेपन अपर्याप्त में छ्यालीस आस्रव, अट्ठाईस लाख जाति, एक सौ साढ़े सत्रह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा असंख्यात, क्षेत्रापेक्षा-लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन-लोक का असंख्यातवां भाग सर्वलोक व कुछ कम 8/14 राजू, काल-नानाजीवापेक्षा जघन्य व उत्कृष्ट सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट दो हजार सागर*, अंतर-नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य क्षुद्रभव उत्कृष्ट असंख्यात पुद्गल परावर्तन*, चवालीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां* भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ बीस प्रकृतियों का बंध, एक सौ चौदह प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार दर्शन मार्गणा में चक्षुदर्शन सामान्यालाप समाप्त हुआ।

नोट – सामान्य से दर्शन मार्गणा के चारों दर्शन के आलाप गुणस्थानवत् चलेंगे। यहाँ चक्षु दर्शन का वर्णन करते हैं।

* यद्यपि लब्ध्यपर्याप्तक की अपेक्षा जघन्य अवगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग भी बन जायेगी।

* जीव को त्रस पर्याय कुछ अधिक दो हजार सागर तक ही मिलती है अगर वह सम्यक्त्व व संयम को प्राप्त न करे तो पुन: एकेन्द्रियों में या निगोद में चला जाता है वहाँ आवली के असंख्यातवे भाग स्वरूप असंख्यात पुद्गल परावर्तन रूप अनंतकाल तक रहता है। पुन: वहाँ से निकलकर त्रस पर्याय को प्राप्त करता है। यही अन्तर है अर्थात् असंख्यात पुद्गल परावर्तन का अन्तर पड़ता है।

* यह अन्तर मार्गणा परावर्तन के अनुसार दिया है यह अन्तर सामान्य से है विशेषता से गुणस्थान के परावर्तन के साथ अन्तर पड़ेगा। यहाँ बन्ध प्रकृति सभी हैं क्योंकि सामान्य से सभी प्रकृतियों का बन्धक है। उदय प्रकृति एक सौ चौदह क्योंकि एकेन्द्रिय, दो इन्द्रिय, तीन इंद्रिय, साधारण, सूक्ष्म, स्थावर, आतप, तीर्थंकर, इन आठ प्रकृतियों का उदय नहीं पाया जाता है। सत्त्व सभी प्रकृति का है जो कि सुगम है।

283. चक्षु दर्शन मिथ्यात्व गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	मिथ्यात्व	-	-
2.	जीवसमास	6 (चार इन्द्रि., संज्ञर असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त)	3 (चार इंद्रिय, संज्ञी असंज्ञी पंचे. पर्याप्त जीवसमास)	3 (चार इन्द्रिय, संज्ञी असंज्ञी पंचे. अपर्याप्त)
3.	पर्याप्ति	6, 5 पर्याप्ति व अपर्याप्ति	6,5 पर्याप्ति	6,5 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10,9,8,7,6 प्राण	10,9,8 प्राण	7,7,6 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	-	-
6.	गति	4 गति	-	-
7.	इन्द्रिय	चार इन्द्रिय से पंचेन्द्रिय	-	-
8.	काय	त्रसकाय	-	-
9.	योग	13 योग (आहारकद्विक बिना)	10 योग	3 (औदा.मि., वैक्रि.मि.,कार्मण)
10.	वेद	3 वेद	-	-
11.	कषाय	25 (4 अनं., 4 अप्र., 4प्र.,4 सं., 9 नो. क.)	-	-
12.	ज्ञान	3 कुज्ञान	-	2 कुज्ञान
13.	संयम	असंयम	-	-
14.	दर्शन	1 चक्षु दर्शन	-	-
15.	लेश्या	6 लेश्या	-	-
16.	भव्य	दोनों (भव्य, अभव्य)	-	-
17.	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व	-	-
18.	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी	-	-
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	4 (3 ज्ञानो.+1 दर्शनो.)या (साकार+अनाकार)	4 उपयोग	3 (2 ज्ञानो.+ 1 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8	-	-
22.	आस्रव	55 (25क.+13 योग+12 अवि.+5 मि.)	52 (25+10+12+5)	45 (25+3+12+5)
23.	जाति	28 लाख		
24.	कुलकोटि	117½ लाख करोड़		
25.	संख्या	असंख्यातासंख्यात (असंख्यात जगत् श्रेणी प्रमाण)		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग, वि.वे.विक्रि. क. देशोन् 8/14 राजू मा.उ. सर्वलोक		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा- सर्वकाल	एक जीव की अपेक्षा - ज. अन्तर्मुहूर्त	उ. 2000 सागर
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा- निरन्तर	एक जीव की अपेक्षा- ज. अन्तर्मुहूर्त	उ. कुछ कम दो 66 सागर
30.	भाव	पर्याप्त-33 (औद.21, क्षयो.9, पा.3)	अपर्याप्त-32	
31.	अवगाहना	जघन्य- घनांगुल का संख्यातवाँ भाग अथवा असंख्यात वां भाग		उत्कृष्ट- 1000 योजन
32.	बन्ध	117 (तीर्थंकर, आहारकद्विक बिना)		
33.	उदय	110		
34.	सत्त्व	148		

283. चक्खु दंसण मिच्छत्त गुणट्ठाणं

तेसुं चक्खु दंसणी मिच्छाइट्ठी जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि-एग मिच्छत्त गुणट्ठाणं, चउरिंदिय सण्णी असण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त छ जीव समासा, छ पंच पज्जत्ती छ पंच अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस णव अट्ठ पाणा अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छ पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, चउपंचिंदियाणि, तसकाओ, तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, तिण्णि अण्णाण अपज्जत्तेसु बे अण्णाण, असंजमो, एगं चक्खु दंसण, छल्लेस्सा, भव्व सिद्धिया अभव्व सिद्धिया दोण्णि, मिच्छत्त सम्मत्तं, सण्णी असण्णी दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, चत्तारि उवजोगा अपज्जत्तेसु तिण्णि उवजोगा, अट्ठ झाणाणि, पणवण्ण आसवा पज्जत्तेसु वावण्ण अपज्जत्तेसु पणदाल आसवा, अट्ठाबीस लक्ख जादी, अद्ध सत्तदसुत्तर लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा असंखेज्जासंखेज्ज, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा विहार वेयणा वेगुव्विया कसायोत्ति अट्ठ चोद्दस भागा व देसूणा मारणंतियउवपादावेक्खा सव्वलोयो, कालो-णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण बे सायरोवमणि, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण दो छावट्ठिं सायरोवमाणि देसूणाणि*, पज्जत्तेसु चउतीस भावा अपज्जत्तेसु बत्तीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्ज भागा अहवा असंखेज्ज भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सत्तदसुत्तर सयं पयडीणं बंधो, दसुत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि चक्खु दंसणे मिच्छत्त गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

चक्षु दर्शन मिथ्यात्व गुणस्थान

उन्हीं चक्षुदर्शनी मिथ्यात्वी जीवों के आलाप कहने पर - एक मिथ्यात्व गुणस्थान, चार इन्द्रिय संज्ञी-असंज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त छह जीव समास, छह-पाँच पर्याप्ति छह-पाँच अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस-नौ-आठ प्राण अपर्याप्त में सात सात छह प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, चार-पाँच इन्द्रिय, त्रसकाय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीनों वेद, पच्चीस कषाय, तीन कुज्ञान अपर्याप्तकों में दो कुज्ञान, एक असंयम, एक चक्षु दर्शन, छह लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक दोनों, मिथ्यात्व सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी दोनों, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, चार उपयोग अपर्याप्त में तीन उपयोग, आठ ध्यान, पचपन आस्रव पर्याप्त में बावन अपर्याप्त में पैंतालीस आस्रव, अट्ठाईस लाख जाति, एक सौ साढ़े सत्रह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा-असंख्यातासंख्यात, क्षेत्रापेक्षा-लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग विहार-वेदना-विक्रिया-कषाय कुछ कम 8/14 राजू मारणान्तिक उपपादापेक्षा सर्वलोक, काल-नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट दो हजार सागर, अंतर नानाजीवापेक्षा निरन्तर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम दो छ्यासठ सागर, पर्याप्त में तेतीस भाव अपर्याप्त में बत्तीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग अथवा असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ सत्रह प्रकृतियों का बंध, एक सौ दस प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार चक्षु दर्शन में मिथ्यात्व गुणस्थान समाप्त हुआ।

* यहाँ मार्गणा को अखंड रखते हुए मिथ्यात्व में अन्तर किया है यानि मिथ्यादृष्टि सम्यक्त्व को प्राप्त कर अधिक से अधिक कितने समय बाद मिथ्यात्व को प्राप्त करेगा ? तो कहा है दो छ्यासठ सागर के बाद क्योंकि कोई जीव अनादि मिथ्यादृष्टि ने प्रथमोपशम सम्यक्त्व प्राप्त कर क्षयोपशम सम्यक्त्व को प्राप्त किया और लगातार छ्यासठ सागर तक रहा पश्चात् अन्तर्मुहूर्त के लिए मिश्र गुणस्थान को प्राप्त हुआ। पुन: क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि हो गया और छ्यासठ सागर तक रहा पश्चात् मिथ्यात्व को प्राप्त हुआ। इस प्रकार उक्त अन्तर प्राप्त हुआ यद्यपि इस कथन का खुलासा पहले भी किया है किन्तु भव्य जीवों पर अनुग्रह के कारण पुन: किया जा रहा है। शेष कथन सरल है कहीं कोई विशेषता नहीं है। अवगाहना की अपेक्षा थोड़ी विशेषता है वह यह कि पर्याप्तक की अपेक्षा जघन्य अवगाहना घनांगुल का संख्यात वां भाग है किंतु लब्ध्यपर्याप्तक की अपेक्षा घनांगुल का असंख्यातवां भाग है। मिथ्यात्व गुणस्थान में आहारकद्विक व तीर्थंकर प्रकृति बिना एक सौ सत्रह प्रकृति का बन्ध है। उदय प्रकृति (आहारकद्विक, तीर्थंकर, सम्यग्मिथ्यात्व व सम्यक्त्व के बिना) एक सौ दस प्रकृति का है यहाँ पर सत्त्व पूर्ववत् एक सौ अड़तालीस है।

284.चक्षु दर्शन सासादन गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	सासादन	सासादन	सासादन
2.	जीवसमास	4 (संज्ञी, असंज्ञी, चार इन्द्रिय,अप. संज्ञी प.)	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	3 (चार इन्द्रिय,संज्ञी,असंज्ञी अप.)
3.	पर्याप्ति	6, पर्याप्ति व 6,5 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6,5 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10,7,6 प्राण	10 प्राण	7,7,6 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	4 गति	–	3 (नरक बिना)
7.	इन्द्रिय	चार इन्द्रिय–पंचेन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	चार इन्द्रिय–पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	13 योग	10 योग	3 योग
10.	वेद	3 वेद	–	–
11.	कषाय	25 कषाय	–	–
12.	ज्ञान	3 कुज्ञान	–	2 कुज्ञान
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	चक्षु दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	सासादन	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	4 (3 ज्ञानो.+1 दर्शनों.)	–	3 (2 ज्ञानो.+ 1 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8	–	–
22.	आस्रव	50 (25+13+12)	47 (25+10+12)	40 (25+3+12)
23.	जाति	28 लाख (26 पंचेन्द्रिय+2 लाख चार इन्द्रिय)	26 लाख	24 लाख
24.	कुलकोटि	117½ लाख करोड़	108½ लाख करोड़	92½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग कुछ कम 8/14, 11/14 मा., 12/14 राजू*1		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– ज. एक समय उ. पलयोपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा–ज. एक समय उ. छ: आवली		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा– ज. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग उ. कुछ कम 2000 सागर		
30.	भाव	31(औद.20, मिश्र.9, पा.2)	अप. 29 (औद.19+मि.8+2)	
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का संख्यातवाँ भाग	उत्कृष्ट– संख्यात धनुष	
32.	बन्ध	101/14 प्र. (प्रथम गुणस्थान में व्युच्छुत्ति)		
33.	उदय	107		
34.	सत्त्व	145 (तीर्थंकर, आहारक द्विक बिना)		

*1 स्वस्थान लोक का असंख्यातवा भाग क.वि.वे.विक्रि. 8/14 मार.12/14, उप. 11/14

284. चक्खुदंसण सासण गुणट्ठाणं

तेसुं चक्खु दंसणीसु सासण गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एयं सासण गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त व चउरिंदिय सण्णी असण्णी पंचिंदिय अपज्जत्त चत्तारि जीव समासा, छ पज्जत्ती छ-पंच अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस पाणा अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छ पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी अपज्जत्तेसु णिरय विणा तिण्णिगदी, चउरिंदिय पंचिंदिय दोण्णि पज्जत्तेसु पंचिंदिय अपज्जत्तेसु चउपंचिंदियाणि, तसकाओ, तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि अपज्जत्तेसु बे अण्णाणाणि, एगं असंजमो, एग चक्खु दंसणं, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया, सासण सम्मत्तं, पज्जत्तेसु सण्णी अपज्जत्तेसु सण्णी असण्णी दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, चत्तारि उवजोगा अपज्जत्तेसु तिण्णि उवजोगा, अट्ठ झाणाणि, पंचास आसवा पज्जत्तेसु सत्तदाल अपज्जत्तेसु दाल आसवा, अट्ठाबीस लक्ख जादी पज्जत्तेसु छब्बीस लक्ख अपज्जत्तेसु चउबीस लक्ख जादी, अद्ध सत्तदसुत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं पज्जत्तेसु अद्ध अट्ठुत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडिणं अपज्जत्तेसु अद्ध दोणवदि लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा-पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा-लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा-लोयस्स असंखेज्जदि भागा अट्ठ चोद्दस बारस चोद्दस ग्यारस चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो-णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण छावली, अंतरं-णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण किंचिदूण बे सह सहस्स सायरोवमाणि, इगत्तीस भावा अपज्जत्तेसु उणतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण संखेज्ज धणू, एगुत्तर सयं पयडीणं बंधो, सतुत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं पणदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि चक्खु दंसणे सासण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

चक्षुदर्शन सासादन गुणस्थान

उन चक्षुदर्शनी सासादन गुणस्थानवर्ती जीवों के आलाप कहने पर सासादन गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त – चार इन्द्रिय संज्ञी-असंज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त चार जीव समास, छ पर्याप्ति छ-पाँच अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस प्राण अपर्याप्त में सात छह प्राण, चारों संज्ञाएं, चारों गति अपर्याप्तक में नरक बिना तीन गति, चार इन्द्रिय-पंचेन्द्रिय (पर्याप्त में पंचेन्द्रिय अपर्याप्त में चार पंचेन्द्रिय), त्रसकाय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीनों वेद, पच्चीस कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्त में दो अज्ञान, एक असंयम, एक चक्षु दर्शन, छहों लेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादन सम्यक्त्व, पर्याप्त में संज्ञी अपर्याप्त में संज्ञी असंज्ञी दोनों, आहारक-अनाहारक दोनों पर्याप्त में आहारक अपर्याप्त में दोनों चार उपयोग अपर्याप्त में तीन उपयोग, आठ ध्यान, पचास आस्रव पर्याप्त में सैंतालीस अपर्याप्त में चालीस आस्रव, अट्ठाईस लाख जाति पर्याप्त में छब्बीस लाख अपर्याप्त में चउवीस लाख जाति, एक सौ साढ़े सत्रह लाख करोड़ कुल कोटि पर्याप्त में एक सौ साढ़े आठ लाख अपर्याप्त में साढ़े बानवे लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा-पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा-लोक का असंख्यातवां, भाग, स्पर्शन-लोक का असंख्यातवां भाग कुछ कम आठ/चौदह बारह/चौदह ग्यारह/चौदह भाग, काल-नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह आवली, अंतर-नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य पल्योपम का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट कुछ कम दो हजार सागर, इकतीस भाव अपर्याप्तक में उनतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट संख्यात धनुष, एक सौ एक प्रकृतियों का बंध, एक सौ सात प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ पैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार चक्षु दर्शन में सासादन गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- कुछ भी कथन करने योग्य नहीं सभी पद सुगम है क्योंकि बहुत बार कह चुके हैं वहाँ से जान लेना चाहिए बन्ध प्रकृतियाँ एक सौ एक क्योंकि हुण्डक संस्थान, नपुसंक वेद, मिथ्यात्व, असंप्राप्तासृपाटिका संहनन, एकेन्द्रिय द्वी त्रीद्रिय चतुरिन्द्रिय जाति, स्थावर, आतप, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, नरक गति, नरक गत्यानुपूर्वी नरक आयु तथा आहारकद्विक व तीर्थंकर इन उन्नीस प्रकृति बिना। उदय प्रकृतियाँ नरक गत्यानुपूर्वी दो प्रकृतियाँ पूर्व गुणस्थान की व्युच्छित्ति व चार प्रकृतियाँ पूर्व की अनुदय इस प्रकार एक सौ सात प्रकृति का उदय पाया जाता है। सत्त्व प्रकृतियाँ तीर्थंकर व आहारकद्विक के बिना एक सौ पैंतालीस।

285. चक्षु दर्शन सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान

1.	गुणस्थान	सम्यग्मिथ्यात्व
2.	जीवसमास	संज्ञी
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	4 गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	10 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	21 कषाय (अनंतानुबंधी बिना)
12.	ज्ञान	3 मिश्रज्ञान
13.	संयम	असंयम
14.	दर्शन	चक्षु दर्शन
15.	लेश्या	6 लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	मिश्र
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	4 उपयोग
21.	ध्यान	8 (4 आर्त्त, 4 रौद्र)
22.	आस्रव	43 (21+10+12)
23.	जाति	26 लाख
24.	कुलकोटि	108½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14 राजू (वि.वेदना, विक्रि., कषाय)
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. प.असं.भा. एक जीव की अपेक्षा – ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– ज. एक समय उ. प.का.अ.भा. एक जीव की अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम 2000 सागर
30.	भाव	31 (औदा. 20, मि. 9, पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट– 1000 योजन
32.	बन्ध	74 (16+25 प्रथम व द्वितीय गुणस्थान में व्युच्छित्ति+देवायु, मनुष्यायु बिना)
33.	उदय	100
34.	सत्त्व	147 (तीर्थंकर प्रकृति बिना)

285. चक्खुदंसण-मिस्स गुणट्ठाणं

तेसिं चक्खु दंसणी जीवाणं मिस्स गुणट्ठाणामालाव भण्णमाणे अत्थि - एग सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, इगबीस कसाया, तिण्णि मिस्स णाणाणि, असंजमो, चक्खुदंसण, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया, मिस्ससम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, चत्तारि उवजोगा, अट्ठ झाणाणि, तिदाल आसवा, छब्बीस लक्ख जादी, अद्धअट्ठुत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा-पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा-लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा-लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो-णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण बे सहस्स सायरोवमाणि, इगतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्ज भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, चउसत्तदि पयडीणं बंधो, सयं पयडीणं उदओ एवं सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि चक्खु दंसणे सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

चक्षु दर्शन मिश्र

उन्हीं चक्षुदर्शनी जीवों के मिश्रगुणस्थानालाप कहने पर - एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छह पर्याप्तियाँ, दस प्राण, चार संज्ञाएँ, चार गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, दस योग, तीनों वेद, इक्कीस कषाय, तीन मिश्र ज्ञान, असंयम, चक्षु दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, मिश्र सम्यक्त्व संज्ञी, आहारक, चार उपयोग, आठ ध्यान, तेतालीस आस्रव, छब्बीस लाख जाति, एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा-पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा-लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 8/14 राजू, काल-नानाजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर-नानाजीवावेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम दो हजार सागर, इकत्तीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, चौहत्तर प्रकृतियों का बंध, सौ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार चक्षु दर्शन में सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- स्पर्शन स्वस्थान लोक का असंख्यातवां भाग विहार वेदना विक्रिया कषाय समुद्घात की अपेक्षा 8/14 राजू बनता है क्योंकि दो राजू नीचे तीसरी पृथ्वी तक छह राजू ऊपर इस प्रकार कुछ कम आठ राजू बनता है यहाँ आठ राजू कुछ कम से तात्पर्य है नीचे तीसरी पृथ्वी के 1000 योजन नीचे तक नारक बिल नहीं पाये जाते हैं, इस प्रकार कुछ कम कहा। मारणांतिक उपपाद पद यहाँ होता ही नहीं है। काल का कथन करते हैं क्योंकि नाना जीव की विवक्षा में यदि एक समय में एक जीव द्वितीय समय में दूसरा जीव तीसरे समय तीसरा अथवा बहुत से जीव तृतीय गुणस्थान को प्राप्त हुए चतुर्थ समय में पुन: एक अथवा अनेक जीव मिश्र गुणस्थान को प्राप्त हुए इस प्रकार लगातार पल्योपम के असंख्यात वे भाग यानि असंख्यातासंख्यात वर्ष तक लगातार चक्षु दर्शनी मिश्र गुणस्थानवर्ती जीव हो सकते हैं उसके बाद नियम से अन्तर पड़ता है वह अन्तर जघन्य से एक समय भी हो सकता है उत्कृष्ट से पल्योपम का असंख्यात वां भाग यानि इतने समय तक एक भी चक्षु दर्शनी मिश्र गुणस्थान वाला नहीं होता। एक जीव की अपेक्षा जघन्य व उत्कृष्ट काल सुगम है। नाना जीव की अपेक्षा अन्तर सुगम है एक जीव की अपेक्षा जघन्य भी सुगम है उत्कृष्ट कुछ कम 2000 सागर यानि कोई अनादि मिथ्यादृष्टि संज्ञी पंचेन्द्रिय गर्भजों में उत्पन्न हो सम्यक्त्व योग्य हो प्रथमोपशम सम्यक्त्व को प्राप्त हुआ उपशम काल समाप्त कर मिश्र गुणस्थान को प्राप्त हुआ पश्चात् मिथ्यात्व में जाकर कुछ कम 2000 सागर तक मिथ्यात्व में रहा अन्तर्मुहूर्त शेष रहने पर सम्यक्त्व को प्राप्त कर मिश्र गुणस्थान को प्राप्त हुआ इस प्रकार अन्तर प्राप्त हुआ।

286. चक्षु दर्शन असंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	चतुर्थ अविरत संयत गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	2 (संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त)	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	चारों गति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	13 योग	10 योग	3 योग
10.	वेद	3 वेद	–	2 (स्त्री वेद बिना)
11.	कषाय	21 कषाय	–	20 कषाय
12.	ज्ञान	3 ज्ञान	–	–
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	चक्षु दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो., उप.)	3	3*
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	4	–	–
21.	ध्यान	10 ध्यान	–	–
22.	आस्रव	46 (21+13+12)	43 (21+10+12)	35 (20+12+3)
23.	जाति	26 लाख	–	–
24.	कुलकोटि	108½ लाख करोड़	–	–
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग, कुछ कम 8/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– सर्वकाल	एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 33 सागर	
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– निरन्तर	एक जीव की अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम 2 हजार सागर	
30.	भाव	34 (क्षा.1, क्षयो.10, औद. 20, उप.1, पा.2) अपर्याप्तक–33 (औद.19, क्षयो.10, क्षा.1, उ.1, पा.2)		
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का संख्यातवाँ भाग	उत्कृष्ट– 1000 योजन	
32.	बन्ध	77 (तीर्थंकर, देवायु, मनुष्यायु का बन्ध होने लगता है अत: 74+3=77)		
33.	उदय	104		
34.	सत्त्व	148		
		* द्वितीयोपशम सम्यक्त्व अपर्याप्त अवस्था में पाया जा सकता है।		

286. चक्खुदंसण-असंजद-गुणट्ठाणं

तेसुं चक्खु दंसणी जीवेसु असंजद गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि - एग अविरद सम्मत्त गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, दस सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु बे वेदा, इगबीस कसाया अपज्जत्तेसु बीस कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, चक्खुदंसणं, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, चत्तारि उवजोगा, दस झाणाणि, छादाल आसवा पज्जत्तेसु तिदाल आसवा, अपज्जत्तेसु पणत्तीस आसवा, छब्बीस लक्ख जादी, अद्ध अट्ठुत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा-पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा-लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठ चोद्दस भागा व देसूणा, कालो-णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अन्तोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, अंतरं - णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण बे सहस्स सायरोवमाणि, चउतीस भावा अपज्जत्तेसु तेतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्ज भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सत्तसत्तदि पयडीणं बंधो, चदुत्तरसयं पयडीणं उदओ एवं अड़दालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि चक्खु दंसणे असंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

चक्षुदर्शन असंयत गुणस्थान

उन्हीं चक्षुदर्शनी जीवों में असंयत गुणस्थानालाप कहने पर एक अविरत सम्यक्त्व गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, दस-सात प्राण, चारों संज्ञा, चारों गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकायक, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीन वेद अपर्याप्तक में दो वेद, इक्कीस कषाय अपर्याप्तक में बीस कषाय, तीन ज्ञान, असंयम, चक्षु दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम-क्षायिक-क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, चार उपयोग, दस ध्यान, छ्यालीस आस्रव पर्याप्त में तेतालीस अपर्याप्त में पैंत्तीस आस्रव, छब्बीस लाख जाति, एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा-पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 8/14 राजू*, काल नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेतीस सागर साधिक, अंतर-नानाजीवापेक्षा निरन्तर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम दो हजार सागर, चौंतीस भाव अपर्याप्तक में तेतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, सत्तत्तर प्रकृतियों का बंध, एक सौ चार प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व है।

इस प्रकार चक्षु दर्शन में असंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

* स्वस्थान लोक का असंख्यात वां भाग विहार वेदना विक्रिया कषाय समुद्घात की अपेक्षा चौदह भागों में से कुछ कम 8 भाग स्पर्श किया है। शेष कथन सरल हैं कोई विशेषता नहीं है। उदय बंध सत्त्व की जो विशेषता है अब उनका खुलासा किया जायेगा। यहाँ सतत्तर प्रकृति का बन्ध है क्योंकि यहाँ मनुष्यायु, देवायु और तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध प्रारंभ हो जाता है इसलिए 74+3=77 प्रकृति का बन्ध है। प्रथम गुणस्थान की सोलह व्युच्छिन्न तथा सासादन गुणस्थान की पच्चीस व्युच्छिन्न प्रकृति इस प्रकार इकतालीस तथा दो अबन्ध इस प्रकार तेतालीस प्रकृति कम करके बन्ध योग्य सतत्तर प्रकृति है। उदय- पूर्वोक्त पन्द्रह प्रकृति में से चार गत्यानुपूर्वी और सम्यक्त्व कम करके दस प्रकृति अनुदय तथा एक सौ चार का उदय क्योंकि पहले से ही एक सौ चौदह प्रकृतियाँ उदय योग्य है। सत्त्व सुगम है।

287. चक्षु दर्शन देशसंयत गुणस्थान

1.	गुणस्थान	देशसंयत गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	2 गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	17 कषाय
12.	ज्ञान	3 ज्ञान
13.	संयम	संयमासंयम
14.	दर्शन	चक्षु दर्शन
15.	लेश्या	6 लेश्या द्रव्य से, भाव से 3 शुभ लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षायिक, क्षयोपशम, उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	4 (3 ज्ञानो.+1 दर्शनो.)
21.	ध्यान	11 ध्यान (4 आर्त्त, 4 रौद्र, 3 धर्मध्यान)
22.	आस्रव	37 (17 कषाय+11 अवि.+9 योग)
23.	जाति	18 लाख
24.	कुलकोटि	57½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 6/14 राजू
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम एक कोटि पूर्व
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– निरन्तर एक जीव की अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम 2000 सागर
30.	भाव	29 (औ.14, मि.11, क्षा.1, औ.1, पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट– 1000 योजन
32.	बन्ध	67 (चतुर्थ गुण. में 10 प्रकृति की व्युच्छित्ति हो जाने पर 77–10=67)
33.	उदय	87
34.	सत्त्व	147 (नरकायु बिना)

287. चक्खुदंसण-देससंजम-गुणट्ठाणं

तेसिं चक्खु दंसणी जीवाणं देससंजम गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि - एग संजदासंजद गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, मणुस्स तिरिक्ख बे गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, सत्तदस कसाया, तिण्णि णाणाणि, एयं संजमासंजमो, चक्खु दंसणं, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण तिण्णि सुह लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खइय[*1] खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, चत्तारि उवजोगा, एगादस झाणाणि, सत्ततीस आसवा, अट्ठ दस लक्ख जादी, अद्धुत्तर सत्तावन लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा-लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खादि-लोयस्स असंखेज्जदि भागा छच्चोद्दस भागा वा देसूणा[*2], कालो-णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खया जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण कोडि पुव्वं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण बे सहस्स सायरोवमाणि, उणतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्ज भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सडसट्ठि पयडीणं बंधो, सत्तासीदि पयडीओ उदओ एवं सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि चक्खु दंसणे देससंजम गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

चक्षुदर्शन देशसंयम गुणस्थान

उन्हीं चक्षुदर्शनी जीवों के देशसंयम गुणस्थानालाप कहने पर - एक संयतासंयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दसों प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्य तिर्यंच दो गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, तीनों वेद, सत्तरह कषाय, तीन ज्ञान, एक संयमासंयम, चक्षु दर्शन, द्रव्य से छहों लेश्या भाव से तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक क्षयोपशय तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, चार उपयोग, ग्यारह ध्यान, सैंतीस आस्रव, अठारह लाख जाति, साढ़े सत्तावन लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा-पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा - लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 6/14 राजू, काल-नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम एक कोटि पूर्व, अंतर-नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम दो हजार सागर, उनत्तीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, सड़सठ प्रकृतियों का बंध, सतासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सेंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार चक्षु दर्शन में संयमासंयम गुणस्थान समाप्त हुआ।

[*1] क्षायिक सम्यक्त्व के साथ पंचम गुणस्थान केवल मनुष्यों में ही पाया जाता है तिर्यचों में इसका अत्यंताभाव है। चतुर्थ गुणस्थान में दस प्रकृतियों की बंध व्युच्छित्ति होने के कारण उक्त प्रकृतियाँ बन्ध योग्य है।

[*2] यहाँ स्वस्थान, विहार, वेदना, विक्रिया, इन सभी की अपेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग है; क्योंकि यहाँ संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव राशि की मुख्यता है। और पंचेन्द्रिय ज्यादा विहार नहीं करते है। उपपाद पद यहां पाया नहीं जाता है। हाँ मारणांतिक समुद्घात पाया जाता है जिसके माध्यम से चौदह भागों में से छह भाग स्पर्श किये जाते है। शेष कथन सरल है।

प्रश्न - वे दस प्रकृतियाँ कौनसी हैं ?

उत्तर - अप्रत्याख्यानावरण चार कषाय, वज्र वृषभनाराच संहनन, मनुष्यद्विक (मनु.गति, मनु. गत्यानु.) औदारिक द्विक, मनुष्यायु।

उदय-असंयत गुणस्थान में सत्तरह प्रकृति उदय से व्युच्छिन्न होती है। अत: एक सौ चार में सत्तरह कम करने पर सत्तासी प्रकृतियों का उदय पाया जाता है।

प्रश्न - वे सत्तरह प्रकृति कौन सी हैं ?

उत्तर - अप्रत्याख्यानावरण चार, वैक्रियक षट्क नरक व देवायु मनुष्य, तिर्यंच गत्यानुपूर्वी, दुर्भग, अनादेय, अयस्कीर्ति।

सत्त्व प्रकृतियाँ नरकायु के बिना एक सौ सैंतालीस प्रकृतियाँ।

288. चक्षु दर्शन प्रमत्तसंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	छटवाँ गुण. (प्रमत्त संयत गुणस्थान)	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्या. जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्या.	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्या.
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6	6
4.	प्राण	10 प्राण, 7 प्राण	10	7
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	मनुष्यगति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	11 योग	10 योग	आहारक मिश्र
10.	वेद	तीनों वेद	3	पुरुष वेद
11.	कषाय	13 कषाय	–	11 (स्त्री व नपुं. वेद बिना)
12.	ज्ञान	4 ज्ञान	–	3 ज्ञान (मन:पर्यय ज्ञान बिना)
13.	संयम	3 (सा., छेदो., परिहार विशुद्धि)	–	2 (सा., छेदो.)
14.	दर्शन	चक्षु दर्शन	–	–
15.	लेश्या	3 शुभ लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो., उप.)	–	2 (उपशम बिना)
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक	–	–
20.	उपयोग	5 (4 ज्ञान + 1 दर्शन)	–	4 उपयोग*
21.	ध्यान	7 (3 आर्त्त + 4 धर्मध्यान)	–	–
22.	आस्रव	24 (13 कषाय+11 योग)	23 (13+10)	12 (11+1 योग)
23.	जाति	14 लाख	–	–
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़	–	–
25.	संख्या	59398206	–	(संख्यात) 27
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– निरन्तर एक जीव की अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम 2000 सागर		
30.	भाव	29 (औद. 13, मि.12, क्षा.1, औ.1, पा.2) अपर्याप्तक – 25*2		
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष		
32.	बन्ध	63 (देश संयत गुण. में 4 प्रत्याख्यान कषाय की व्युच्छित्ति)		
33.	उदय	81		
34.	सत्त्व	146 (नरकायु तिर्यंचायु बिना)		

*1 अपर्याप्तक अवस्था तथा आहारक काययोग के साथ मन:पर्यय ज्ञान का अभाव है अत: तीन ज्ञानोपयोग एक दर्शनोपयोग।

*2 अपर्या. में एक पुरुषवेद होने से औद.11 मि. में भी मन:प.ज्ञान बिना 11 ही होंगे। अत: अप. में उपशम सम्यक्त्व भी नहीं होता। अत: 11+11+1+2=25 भाव होते हैं।

288. चक्खुदंसण-पमत्त संजद गुणट्ठाणं

तेसुं चक्खु दंसणी जीवेसु पमत्त संजद गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि - एग पमत्त संजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, दस सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, एगारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु एग आहारक मिस्स काय जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु एयं पुरिस वेदो, तेरस कसाया अपज्जत्तेसु एगारस कसाया, केवल णाणेण विणा चत्तारि णाणाणि अपज्जत्तेसु तिण्णि णाणाणि, सामाइय-छेदोवट्ठावणा विहार सुद्धि तिण्णि संजमा पज्जत्तेसु तिण्णि अपज्जत्तेसु विहारशुद्धि विणा बे संजमा, एग चक्खु दंसण, तिण्णि सुहलेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता अपज्जत्तेसु उवसम विणा दोण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो*[1], पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, चत्तारि धम्म तिण्णि अट्ट सत्त झाणाणि, चउवीस आसवा अपज्जत्तेसु बारस पज्जत्तेसु तेवीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पंच कोडि तिणउदि लक्ख अट्ठणउदि सहस्स छ उत्तर बे सयं अपज्जत्तेसु सत्तावीस, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा-लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो-णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं*[2], अंतर णाणा जीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचंदूण बे सहस्स सायरोवमाणि*[3], उणतीस भावा अपज्जत्तेसु पणबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, तिसट्ठि पयडीणं बंधो, एगासीदि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि चक्खु दंसणे पमत्त संजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

चक्षुदर्शन प्रमत्त संयत गुणस्थान

उन्हीं चक्षुदर्शनी जीवों में प्रमत्तसंयत गुणस्थानालाप कहने पर - एक प्रमत्त संयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्तक दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहो अपर्याप्ति, दस प्राण व सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, ग्यारह योग अपर्याप्तक में एक आहारक मिश्र पर्याप्तक में दस योग, तीनों वेद अपर्याप्तक में पुरुष वेद, तेरह कषाय अपर्याप्तक में ग्यारह कषाय, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान अपर्याप्तक में मन:पर्यय बिना तीन ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना परिहारविशुद्धि तीन संयम अपर्याप्तक में परिहार विशुद्धि बिना दो संयम, एक चक्षु दर्शन, तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षयोपशम क्षायिक तीन सम्यक्त्व अपर्याप्तक में उपशम बिना दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग अपर्याप्तक में चार उपयोग, चार धर्म तीन आर्त सात ध्यान, चौबीस आस्रव पर्याप्तक में तेबीस अपर्याप्तक में बारह आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पाँच करोड़ तेरानवे लाख अन्ठानवे हजार दो सौ छह अपर्याप्तक में सत्ताईस, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर-नानाजीवापेक्षा निरन्तर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम दो हजार सागर, उनतीस भाव अपर्याप्तक में पच्चीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, तिरेसठ प्रकृतियों का बंध, इक्यासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार चक्षु दर्शन में प्रमत्त संयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- *[1] छटवे गुणस्थान में अपर्याप्त अवस्था तो होती है किंतु कार्माण काययोग नहीं होता है। बन्ध प्रकृतियों का कथन पूर्व के गुणस्थान में किया है। उनमें संयतासंयत गुणस्थान की व्युच्छिन्न प्रकृतियाँ कम कर देने पर बन्ध प्रकृतियाँ प्राप्त होती है। उदय भी गुणस्थानोक्त जानना चाहिए। सत्त्व एक सौ छ्यालीस प्रकृतियों का सामान्य से विशेषता से एक सौ अडतीस से एक सौ छ्यालीस तक इसका पूर्व में कई बार कथन किया है। वहाँ से जानना चाहिए। शेष कथन सुगम है

*[2] अपर्याप्तक में नाना व एक जीव की अपेक्षा काल अन्तर्मुहूर्त है।

*[3] अन्तर भी नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीव जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम दो हजार सागर।

289. चक्षु दर्शन अप्रमत्तसंयत गुणस्थान

1.	गुणस्थान	अप्रमत्त गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	13 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	3 (सा.,छे., परिहार विशुद्धि)
14.	दर्शन	चक्षु दर्शन
15.	लेश्या	तीन शुभ लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षायिक, क्षयोपशम, उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 (4 ज्ञानो.+ 1 दर्शनो.)
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान
22.	आस्रव	22 (13 कषाय+ 9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	संख्यात (29699103)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– निरन्तर, एक जीव की अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम 2000 सागर
30.	भाव	29 (औद.13, क्षयो.12, औप.1, क्षा.1, पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष
32.	बन्ध	59 (अप्रमत्त गुणस्थान में चार प्रकृति की व्युच्छित्ती)
33.	उदय	76
34.	सत्त्व	146 (नरक, तिर्यंच आयु बिना)

289. चक्खु दंसण अपमत्त संजद गुणट्ठाणं

तेसिं चक्खु दंसणी जीवाणं अपमत्त संजदो गुणट्ठाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अपमत्तसंजदो गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, आहारेण विणा तिण्णि सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, दव्वेण एग पुरिसवेदो भावेण तिण्णि वेदा, तेरस कसाया, चत्तारि णाणाणि, सामाइय–छेदोवट्ठाणा विहार सुद्धि तिण्णि संजमा, चक्खु दंसणं, तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसमखइयखओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, चत्तारि धम्मज्झाणाणि, बाबीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा बे कोडि छण्णवदि लक्ख णवणउदि सहस्सं तिउत्तर सयं, खेत्तावेक्खा–लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो–णाणाजीवावेक्खा–सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं–णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण बे सहस्स सायरोवमाणि, उणतीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणं, ऊणसट्ठि पयडीणं बंधो, छसत्तदि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि चक्खु दंसणे अपमत्त गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

चक्षुदर्शन अप्रमत्त संयत गुणस्थान

उन्हीं चक्षु दर्शनी जीवों के अप्रमत्त संयत गुणस्थानालाप कहने पर – एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, आहार बिना तीन संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौयोग, द्रव्य से एक पुरुष वेद भाव से तीनों वेद, तेरह कषाय, चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना परिहार विशुद्धि तीन संयम, चक्षु दर्शन, तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक उपशम क्षायिक क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, चार धर्म ध्यान, बाईस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा–दो करोड़ छ्यानवै लाख निन्यानवे हजार एक सौ तीन, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल–नानाजीवापेक्षा–सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम दो हजार सागर, उनतीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, उनसठ प्रकृतियों का बंध, छियत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार चक्षु दर्शन में अप्रमत्त गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– सम्पूर्ण कथन गुणस्थानवत् है विशेष कुछ नहीं है।

शंका – यहाँ सत्त्व प्रकृतियाँ एक सौ छयालीस कहीं हैं नाना जीवों की अपेक्षा एक सौ सेंतालीस या अड़तालीस क्यों नहीं हो सकती ?

समाधान – नहीं हो सकती क्योंकि सातवां गुणस्थान केवल मनुष्य गति में ही बनता है दूसरी गति में नहीं बनता, हाँ देवायु के सत्त्व के साथ तथा मनुष्यायु के उदय के साथ ही अप्रमत्त गुणस्थान होता है। अत: नरकायु व तिर्यंचायु को कम करके एक सौ छयालीस प्रकृति का ही सत्त्व होता है।

शंका – जिस प्रकार देवायु का सत्त्व होता है उस प्रकार नरक तिर्यंचायु का सत्त्व भी हो सकता है तो एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होना चाहिए ?

समाधान – नहीं क्योंकि तीन आयु का बन्ध हो जाने पर देश संयम अथवा सकल संयम नहीं होता है। इसलिए एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व नहीं होता एक सौ छयालीस–एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का ही सत्त्व होता है।

290. चक्षु दर्शन अपूर्वकरण गुणस्थान

1.	गुणस्थान	अपूर्वकरण गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	भाव से 3, द्रव्य से पुरुषवेद
11.	कषाय	13 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	2 (सामायिक, छेदोपस्थापना)
14.	दर्शन	चक्षु दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (क्षायिक, उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 (4 ज्ञानो.+ 1 दर्शनो.)
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान या एक शुक्ल ध्यान
22.	आस्रव	22 (13 कषाय+ 9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	897 (उपशामक 299, क्षपक–598)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	उपशामक–नाना व एक जीव की अपेक्षा–ज. एक समय, उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक–नाना व एक जीव की अपेक्षा–अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उपशामक– नाना जीवों की अपेक्षा– ज. एक समय, उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीव–ज. अन्तर्मुहूर्त, उ. कुछ कम 2000 सागर क्षपक– नाना जीव की अपेक्षा– ज. एक समय, उ. 6 माह, एक जीवापेक्षा–निरन्तर
30.	भाव	27 (औद.11, मि.10, क्षा.2, औ.2, पा.2) (उपशामकों में छब्बीस क्षपकों में पच्चीस)
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष
32.	बन्ध	58 (सातवें गुण. देवायु की व्युच्छित्ति हो जाने से 59–1=58)
33.	उदय	72
34.	सत्त्व	उपशामक 146, 145, 142, 141, 139, 138, क्षपक 138
		एक जीव की अपेक्षा नाना जीवों का जो अन्तर्मुहूर्त काल बतलाया है वह संख्यात समय अधिक होता है। क्योंकि संख्यात समय में संख्यात जीव अपूर्वकरण गुणस्थान को प्राप्त होते हैं।

290. चक्खुदंसण–अपुव्वयरणं गुणट्ठाणं

तेसुं चक्खु दंसणी जीवेसु अपुव्वयरण गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि एग अपुव्वयरण गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त एग जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, तिण्णि सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, भावेण तिण्णि वेदा दव्वेण एग पुरिस वेदो, तेरस कसाया, चत्तारि णाणाणि, सामाइय–छेदोवट्ठावणा बे संजमा, एग चक्खु दंसणं, एग सुक्क लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, चत्तारि धम्म अहवा एग सुक्क झाणाणि, बाबीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा–सत्तणउदि उत्तर अट्ठ सयं उवसामगेसु णव णउदिउत्तर बे सयं खवगेसु अट्ठणउदिउत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो–उवसामगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेग जीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अन्तोमुहुत्तं, अंतरं–णाणाजीवावेक्खा उवसामगेसु जहण्णेण एगसमओ उक्कसेण वासपुधत्तं एगजीवावेक्खा उवसामगेसु जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण बे सहस्स सायरोवमाणि खवगे णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छम्मास एगजीवावेक्खा णिरंतरं, सत्तवीस भावा उवसामगेसु छव्वीस खवगेसु पणवीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू अट्ठावण्ण पयडीणं बंधो, बेसत्तदि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि चक्खु दंसणे अपुव्वयरण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

चक्षुदर्शन अपूर्वकरण गुणस्थान

उन्हीं चक्षुदर्शनी जीवों में अपूर्वकरण गुणस्थानालाप कहने पर एक अपूर्वकरण गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, तीन संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, भाव से तीनों वेद द्रव्य से एक पुरुष वेद, तेरह कषाय, चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, चक्षु दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्यसिद्धिक, उपशम क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, चार धर्म व एक शुक्ल पाँच ध्यान*, बाईस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा आठ सौ संत्तानवे उपशामक में दो सौ निन्यानवै क्षपक पाँच सौ अन्ठानवै, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल उपशामकों में नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपकों में नाना व एक जीव की अपेक्षा ज. व उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर–नानाजीवापेक्षा उपशामक जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम दो हजार सागर क्षपक नानाजीवापेक्षा ज. एक समय उत्कृष्ट 6 माह एक जीवापेक्षा निरंतर, सत्ताइस भाव उपशामकों में क्षपकों में पच्चीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, अट्ठावन प्रकृतियों का बंध, बहत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

विशेषार्थ :– *ध्यान की अपेक्षा कथन करने पर प.पू.आचार्य पूज्यपाद स्वामी के अनुसार एक शुक्ल ध्यान प.पू. आचार्य श्री वीरसेन स्वामी के अनुसार चार धर्मध्यान होते हैं। काल का कथन सुगम है जिस प्रकार गुणस्थान में कहा है उसी प्रकार जानना चाहिए। अन्तर भी सुगम है फर्क इतना है कि चक्षु दर्शन मार्गणा है और चक्षु दर्शनी 2000 सागर तक ही हो सकते है। यद्यपि आठवां गुणस्थान त्रसों को ही प्राप्त होता है। परन्तु यहाँ मार्गणा में ही अन्तर घटित करना है। अत: उपशामकों में एक जीव की अपेक्षा कुछ कम दो हजार सागर प्राप्त होता है। क्षपकों में अन्तर सुगम है। बंध उदय सत्त्व सभी गुणस्थानवत् है। कुछ भी विशेषता नहीं है।

291. चक्षु दर्शन अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

1.	गुणस्थान	अनिवृत्तिकरण गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवसमास
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	2 संज्ञा (आहार, भय बिना)
6.	गति	1 मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	तीनों वेद (द्रव्य से पुरुष)
11.	कषाय	7 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	2 (सामायिक, छेदोपस्थाना)
14.	दर्शन	चक्षु दर्शन
15.	लेश्या	1 शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (क्षायिक, उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 (4 ज्ञानो.+ 1 दर्शनो.)
21.	ध्यान	एक शुक्ल ध्यान/चार धर्म ध्यान
22.	आस्रव	16 (7 कषाय + 9 योग) अन्त में 11 आस्रव
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़ कुल कोटि
25.	संख्या	897 (उपशामक 299, क्षपक–598)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	उपशामक– नाना व एक जीव की अपेक्षा– ज. एक समय, उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक– नाना व एक जीव की अपेक्षा – अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उपशामक– नाना जीवों की अपेक्षा– ज. एक समय, उ. वर्ष पृथक्त्व एक जीव–ज. अन्तर्मुहूर्त, उ. कुछ कम 2000 सागर क्षपक– नाना जीव की अपेक्षा– ज. एक समय, उ. 6 माह, एक जीव – ज.व उ.–निरन्तर
30.	भाव	27 (औद.11, क्षयो.10, क्षा.2, औप.2, पा.2) उप. 26 क्षपक 25
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष
32.	बन्ध	22 (अपूर्वकरण में 36 प्रकृतियों की व्युच्छित्ति हो जाने से 22+36=58)
33.	उदय	66
34.	सत्त्व	उपशामक–146, 145, 142, 141, 139, 138 क्षपक 138 से 102 तक रह जाती है।
		नोट – कषाय, नोकषाय आदि क्रमशः कम होती जाती है अतः आस्रव भी कम होते जाते है अन्तिम भाग में मात्र दो कषाय रह जाती हैं अतः आस्रव भी 2+9=11 होते हैं।

291. चक्खुदंसण अणियट्टियरण गुणट्ठाणं

तेसुं चक्खु दंसणी जीवेसु अणियट्टियरण गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अणियट्टियरण गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, आहार भयेहिं विणा*[1] बे सण्णा, एग मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, तिण्णि वेदा दव्वेण पुरिसवेदो, सत्त कसाया*[2], चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, चक्खु दंसणं, एग सुक्क लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, एग सुक्कज्झाणं अहवा चत्तारि धम्मझाणाणि, सोलह आसवा*[3], चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा सत्तणउदिउत्तर अट्ठ सयं उवसामगेसु णवणउदि उत्तर बे सयं खवगेसुअट्ठ णउदि उत्तर पंच संय, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो उवसामगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमयो उक्कस्सेण अन्तोमुहुत्तं खवगेसु णाणेगजीवावेक्खा अन्तोमुहुत्तं, अंतरं उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण बे सहस्स सायरोवमाणि खवगेसु णाणा जीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण छम्मास एगजीवावेक्खा णिरंतरं, सत्तवीस भावा उवसामगेसु छब्बीस खवगेसु पणबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, बाबीस पयडीणं बंधो, छावट्टि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर*[4] सयं बादाल उणदाल अडतीसुत्तरसयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि चक्खु दंसणीसु अणियट्टियरण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

चक्षुदर्शन अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

उन्हीं चक्षु दर्शनी जीवों में अनिवृत्तिकरण गुणस्थानालाप कहने पर – एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, आहार भय बिना दो संज्ञा, एक मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, तीन वेद द्रव्य से पुरुष वेद, सात कषाय, चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, चक्षु दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, एक शुक्ल ध्यान अथवा चार धर्मध्यान, सोलह आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा–आठ सौ सन्तानवै उपशामक दो सौ निन्यानवै क्षपक पाँच सौ अन्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा–लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन–लोक का असंख्यातवां भाग, काल–उपशामक नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपक नाना व एक जीवापेक्षा अंतर्मुहूर्त, अंतर – उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम दो हजार सागर क्षपक नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छ माह एक जीवापेक्षा निरंतर, सत्ताइस भाव उपशामकों में छब्बीस क्षपको में पच्चीस भाव होते है, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, बाईस प्रकृतियों का बंध, छ्यासठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस एक सौ ब्यालीस एक सौ उनतालीस एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार चक्षु दर्शनियों में अनिवृत्तिकरण गुणस्थान समाप्त हुआ।

---

*[1] छह नो कषाय की उदय व्युच्छित्ति अपूर्वकरण गुणस्थान में हो जाने से यहाँ सात (4 संज्वलन 3 वेद) कषाय कहीं है।

*[2] मैथुन और परिग्रह दो संज्ञा किंतु जब वेद समाप्त हो जाता है तो एक मात्र परिग्रह संज्ञा है।

*[3] यद्यपि बाईस आस्रव अपूर्वकरण गुणस्थान में थे लेकिन वहीं पर छह नो कषायों की उदय व्युच्छित्ति हो जानेसे 22–6=16 आस्रव अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में रह जाते हैं। पश्चात् जैसे–जैसे प्रकृतियां नाश करता जाता है आस्रव भी कम होते जाते हैं।

*[4] उपशम श्रेणी वाले जीवों के उत्कृष्ट से एक सौ छयालीस और कम से कम एक सौ अड़तीस प्रकृति का सत्त्व होता है। क्षपक श्रेणी वालों में उत्कृष्ट से एक सौ अड़तीस जघन्य से एक सौ तीन प्रकृति का सत्व होता है क्योंकि नोवे गुणस्थान के प्रारंभ में एक सौ अड़तीस प्रकृतियाँ होती है। पश्चात् क्रम से क्षय करते हुए अन्त में एक सौ तीन प्रकृति रह जाती है जैसे ही छत्तीस प्रकृतियों का क्षय होता है तो दसवां गुणस्थान हो जाता है। शेष कथन सुगम है।

292. चक्षु दर्शन सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान

1.	गुणस्थान	सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवसमास
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	1 परिग्रह संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	अवेद (द्रव्य से पुरुष वेद)
11.	कषाय	1 सूक्ष्मलोभकषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	सूक्ष्मसाम्पराय
14.	दर्शन	चक्षु दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	(क्षायिक, उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 उपयोग
21.	ध्यान	एक शुक्ल ध्यान/चार धर्म ध्यान
22.	आस्रव	10 (9 योग + 1 सूक्ष्म लोभ)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	897 (उपशामक 299, क्षपक–598)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	उपशामक– नाना व एक की अपेक्षा– ज. एक समय, उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक– नाना व एक जीव की अपेक्षा – अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उपशामक– नाना जीवों की अपेक्षा– ज. एक समय, उ. वर्ष पृथक्त्व* एक जीव–ज. अन्तर्मुहूर्त, उ. कुछ कम 2000 सागर क्षपक– नाना जीव की अपेक्षा– ज. एक समय उ. 6 माह, एक जीव – निरन्तर
30.	भाव	21 (क्षपक–19, उपशम–20) (औद. 5, क्षयो. 10, क्षा. 2, औप. 2, पा.2))
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष
32.	बन्ध	17
33.	उदय	60
34.	सत्त्व	146/102
		* वर्ष पृथक्त्व का समय जहाँ 3–9 वर्ष लिया है कही बाहुल्यता वश अधिक संख्या को भी वर्ष पृथक्त्व कह देते हैं सो विवक्षा लगा लेना चाहिए।

292. चक्खुदंसण सुहुमसांपराय गुणट्ठाणं

तेसुं चक्खु दंसणी जीवेसु सुहुमसांपराय गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि–एग सुहुमसांपराय गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, एग परिग्गह सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, दव्वेण पुरिस वेदो भावेण अवेदी, एग सुहुम लोह कसाओ, चत्तारि णाणाणि, एग सुहुमसाम्पराय संजमो, चक्खु दंसणं, एग सुक्कलेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, एग सुक्कज्झाणं, दस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा–सत्तणउदि उत्तर अट्ठ सयं उवसामगेसु णवणउदि उत्तर बे सयं खवगेसु अट्ठणउदि उत्तर पंचसयं, खेत्तावेक्खया–लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा–लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो–उवसामगेसु णाणेग जीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेग जीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं–उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण वास पुधत्तं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण बे सहस्स सायरोवमाणि खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छम्मास एगजीवावेक्खा णिरंतरं, इगबीस भावा खवगेसु उणवीस उवसामगेसु बीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, सत्तदस पयडीणं बंधो, सट्ठि पयडीणं उदओ एवं बे उत्तर सयं पयडीणं उवसामगेसु छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि चक्खु दंसणीसु सुहुमसांपराय गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

चक्षुदर्शन सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान

उन्हीं चक्षु दर्शनी जीवों में सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानालाप कहने पर एक सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, एक परिग्रह संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, अवेद द्रव्य से पुरुष वेद, एक सूक्ष्म लोभ कषाय, चार ज्ञान, एक सूक्ष्मसाम्पराय संयम, चक्षु दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम–क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, एक शुक्ल ध्यान, दस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा आठ सौ सन्तानवै उपशामक दो सौ निन्यानवे क्षपक पाँच सौ अन्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन–लोक का असंख्यातवां भाग, काल–उपशामक नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपक नाना व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम दो हजार सागर क्षपक–नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह माह एक जीवापेक्षा निरंतर, इक्कीस भाव क्षपकों में उन्नीस भाव उपशामकों में बीस भाव होते हैं। जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, सत्रह प्रकृतियों का बंध, साठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस एवं एक सौ दो प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार चक्षु दर्शनियों में सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ केवल लोभ कषाय का ही क्षय होता है और जैसे ही लोभ कषाय का क्षय होता है, तत्काल बारहवां गुणस्थान हो जाता है अर्थात् क्षीण (क्षय) कर दिया है मोह को जिन्होंने ऐसा क्षीणमोह गुणस्थान होता है। शेष कथन सुगम है कहीं कुछ भी विशेषता नहीं है जो विशेषता है उन्हें पूर्व में कह चुके हैं। यहाँ एक जीव की अपेक्षा अन्तर देख लें–जैसे किसी जीव ने उपशम श्रेणी पर आरोहण किया पश्चात् सुक्ष्म सांपराय संयत हुआ मरण हुआ तो चतुर्थ गुणस्थान को प्राप्त हुआ अगर ऊपर चढ़ा तो उपशांत मोह वाला हो गया वहाँ से गिरकर पुन: सूक्ष्म सांपराय गुणस्थान वाला हो गया यह जघन्य अन्तर प्राप्त हुआ। कोई सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान का परित्याग कर कुछ कम 2000 सागर तक मिथ्यात्व के साथ रहकर अन्त में सम्यग्दृष्टि हो उपशम श्रेणी चढ़ा। इस प्रकार सूक्ष्म सांपराय गुणस्थानवर्ती हुआ इस प्रकार उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त हुआ नाना जीवों की अपेक्षा सरल है क्षपकों में नाना जीवों की अपेक्षा गुणस्थानवत् एक जीव का निरंतर है।

293. चक्षुदर्शन उपशांत कषाय गुणस्थान

1.	गुणस्थान	उपशान्त कषाय गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	उपशांत संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	अवेद
11.	कषाय	अकषाय (उपशांत कषाय)
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	यथाख्यात
14.	दर्शन	चक्षु दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (उपशम, क्षायिक सम्यक्त्व)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 (4 ज्ञान+ 1 दर्शनोपयोग) (साकार+अनाकार उपयोग)
21.	ध्यान	1 (पृथक्त्व वितर्क)
22.	आस्रव	9 योग
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	299
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना व एक जीव की अपेक्षा– ज. एक समय, उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीव की अपेक्षा– ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीव की अपेक्षा–ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम 2000 सागर
30.	भाव	19 (औद.4, क्षयो. 10, पा.2, क्षा.1,औप.2)
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष
32.	बन्ध	1
33.	उदय	59
34.	सत्त्व	146/142, 139, 138

293. चक्खुदंसण उवसंत कषाय गुणट्ठाणं

तेसिं चक्खु दंसणी उवसंत जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि - एग उवसंतकसाय गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, उपशांत सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, अवेदी, उवसंत कसायी, चत्तारि णाणाणि, जहाक्खाद संजमो, एग चक्खु दंसणं, सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, एग सुक्कज्झाणं, णव आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा-णवणउदि उत्तर बे सयं, खेत्तावेक्खा-लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा-लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो-णाणेग जीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं-णाणा जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण बे सहस्स सायरोवमाणि, उणवीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, एयं सादा वेयणीओ बंधो, ऊणसट्ठि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं एवं बादालुत्तर सयं अडतीसुत्तर सयं व ऊणदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि चक्खु दंसणीसु उवसंत कषाय गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

चक्षुदर्शन उपशांत कषाय गुणस्थान

उन्हीं चक्षुदर्शनी उपशान्त जीवों के आलाप कहने पर एक उपशांत कषाय गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, उपशांत संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, अवेदी, अकषायी, चार सुज्ञान, यथाख्यात संयम, चक्षु दर्शन, शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, एक शुक्ल ध्यान, नौ आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा दो सौ निन्यानवे, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन-लोक का असंख्यातवां भाग, काल नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर-नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम दो हजार सागर, उन्नीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक साता वेदनीय का बंध, उनसठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस, एक सौ ब्यालीस, एक सौ उनतालीस एवं एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार चक्षु दर्शनियों में उपशांत कषाय गुणस्थान समाप्त हुआ।

नोट- यहाँ एक सौ छयालीस प्रकृतियों का सत्त्व तीन दर्शन मोहनीय चार अनंतानुबंधी सहित पूर्व की आयु का बंधक उसकी अपेक्षा से है अगर पूर्व की आयु नहीं बाँधी है तो 145 का सत्त्व बनेगा। यदि अनंतानुबंधी का विसंयोजक है तो 142 का पूर्व की आयु रहित 141 का तथा जिसने दर्शन मोहनीय का क्षय कर दिया है व पूर्व की आयु सहित है तो 139 प्रकृति का सत्त्व बनेगा जिसने पूर्व की आयु का बन्ध नहीं किया है उसके 138 प्रकृति का सत्त्व होगा। इसी प्रकार उपशम श्रेणी में सर्वत्र जानना।

294. चक्षुदर्शन क्षीण कषाय गुणस्थान

1.	गुणस्थान	क्षीण कषाय गुणस्थान	
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवसमास	
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति	
4.	प्राण	10 प्राण	
5.	संज्ञा	0 (क्षीण संज्ञा)	
6.	गति	मनुष्यगति	
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	
8.	काय	त्रसकाय	
9.	योग	9 योग	
10.	वेद	0 अवेद	
11.	कषाय	अकषाय (क्षीण कषाय)	
12.	ज्ञान	4 ज्ञान	
13.	संयम	यथाख्यात चारित्र	
14.	दर्शन	चक्षु दर्शन	
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या	
16.	भव्य	भव्य	
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व	
18.	संज्ञी	संज्ञी	
19.	आहारक	आहारक	
20.	उपयोग	5 (4 ज्ञान+ 1 दर्शनोपयोग)	
21.	ध्यान	2 शुक्लध्यान	
22.	आस्रव	9 योग	
23.	जाति	14 लाख	
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़	
25.	संख्या	598	
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग	
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग	
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा– ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त	एक जीव की अपेक्षा– ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीव की अपेक्षा– ज. एक समय	उ. 6 माह एक जीव की अपेक्षा– निरन्तर
30.	भाव	18 (औद.4, मि.10, क्षा.2, पा.2)	
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ	उत्कृष्ट– 525 धनुष
32.	बन्ध	1	
33.	उदय	57	
34.	सत्त्व	101	

294. चक्खुदंसणं खीणकसाय गुणट्ठाणं

तेसिं चक्खु दंसणी खीणकसायी जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि–एग खीणकसाय गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, खीण सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, अवेदी, अकसायी, चत्तारि णाणाणि, एग जहाक्खाद संजमो, एग चक्खु दंसणं, एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, खइय सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, बे सुक्कज्झाणा, णव आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुल कोडीणं, संखावेक्खा–अट्ठणउदि उत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा–लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा–लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो–णाणेगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं–णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छम्मासा एग जीवावेक्खा णिरंतरं, अट्ठदस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, एग पयडीणं बंधो, सत्तावण्ण पयडीणं उदओ एवं एगोत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि चक्खु दंसणीसु खीणकसाय गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

चक्षुदर्शन क्षीणकषाय गुणस्थान

उन्हीं चक्षु दर्शनी क्षीणकषायी जीवों के आलाप कहने पर – एक क्षीणकषाय गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, क्षीण संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, अवेदी, अकषायी, चार ज्ञान, एकयथाख्यात संयम, एक चक्षु दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, दो शुक्ल ध्यान, नौ आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पाँच सौ अट्ठानवै, क्षेत्रापेक्षा–लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन–लोक का असंख्यातवां भाग, काल–नानाजीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर–नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छ मास एक जीवापेक्षा निरंतर, अठारह भाव, जघन्यवगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक प्रकृति का बंध, सत्तावन प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ एक प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार चक्षु दर्शनियों में क्षीणकषाय गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– इस गुणस्थान के अन्त में दर्शनावरण चार, ज्ञानावरण पाँच, अन्तराय पाँच, निद्रा, प्रचला इन 16 प्रकृतियों का क्षय करके सयोग केवली हो जाता है। शेष कथन सुगम है कुछ भी कहने योग्य नहीं है।

295. अचक्षुदर्शन सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	1–12	–	1,2,4,6
2.	जीवसमास	14 जीव समास पर्याप्त, अपर्याप्त	7 जीवसमास पर्याप्त	7 जीवसमास अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति, अपर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति	6,5,4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	3 से 10 प्राण	4,6,7,8,9,10 प्राण	3,4,5,6,7,7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	चारों गति	–	–
7.	इन्द्रिय	1–5	–	–
8.	काय	षट्काय	–	–
9.	योग	15 योग	11 योग	4 योग
10.	वेद	3 वेद/अवेदी	–	–
11.	कषाय	25 कषाय/अकषाय	–	–
12.	ज्ञान	7 ज्ञान (केवलज्ञान बिना)	–	5 (कुअवधि, मन:पर्यय ज्ञान बिना)
13.	संयम	7	–	3 (असंयम, सा., छे.)
14.	दर्शन	अचक्षु दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6	–	–
16.	भव्य	दोनों	–	–
17.	सम्यक्त्व	6	6	5 सम्यक्त्व (मिश्र बिना)
18.	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	दोनों	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	8 (7 ज्ञानो. + 1 दर्शन)	–	6 (कुअवधि मन:पर्ययज्ञान के बिना)
21.	ध्यान	14	–	–
22.	आस्रव	57 (25क.+15यो.+12 अवि.+5 मि.)	53(25+11 योग+12अवि+5)	46 (25+4+12+5)
23.	जाति	84 लाख		
24.	कुलकोटि	199½ लाख करोड़		
25.	संख्या	अनंतानंत		
26.	क्षेत्र	सर्वलोक		
27.	स्पर्शन	सर्वलोक		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– सर्वकाल	एक जीव की अपेक्षा – सर्वकाल	
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– निरन्तर	एक जीव की अपेक्षा– निरन्तर	
30.	भाव	44 (औदा. 21, मि. 16, क्षा.2, औप.2, पा.3)*		
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग	उत्कृष्ट– 1000 योजन	
32.	बन्ध	120		
33.	उदय	121 (तीर्थंकर बिना)		
34.	सत्त्व	148		

* औद. ग.=4, क.=4, लि.=3, मि.द. 1, अज्ञान 1, असं. 1, 1 असिद्धत्व, ले. 6, क्षयो.=ज्ञान.4 अज्ञा.=3 दर्श.=1 अच. लब्धि=5 सम्य. संयमा चारि., क्षा.=2 (स.चा.) औप.=2 (स.चा.) पा.=3 भ.अभ. जीव

295. अचक्खु दंसण सामण्णं

अह दंसण मग्गणाणुवादेण अचक्खु दंसणी जीवाणं सामण्णालाव भण्णमाणे अत्थि – एयत्तो बारस गुणट्ठाणं अपज्जत्तेसु एग बे चउ छ चत्तारि गुणट्ठाणा, सत्तपज्जत्त सत्तअपज्जत्त चोद्दस जीव समासा, छ पंच चउ पज्जत्ती छ पंच चउ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस णव अट्ठ सत्त छ चउ पाणा अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छ पंच चउ ति पाणा, चत्तारि सण्णा खीण सण्णा वा, चत्तारि गदी, एयत्तो पंचिदियाणि छक्काय, पण्णदस जोगा पज्जत्तेसु एगादस अपज्जत्तेसु चत्तारि जोगा, तिण्णि वेदा अवेदी, पणबीस कसाया व अकसायी, केवलणाणेण विणा सत्त णाणाणि अपज्जत्तेसु मणपज्जय व विभंगेहिं विणा पंच णाणाणि, सत्त संजमा अपज्जत्तेसु असंजम सामाइय छेदोवट्ठाणा तिण्णि संजमा, अचक्खु दंसणं, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्वसिद्धिया दोण्णि, छ सम्मत्ता अपज्जत्तेसु मिस्सेण विणा पंच सम्मत्ता, सण्णी असण्णी दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, अट्ठ उवजोगा अपज्जत्तेसु छ उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द चत्तारि धम्म बे सुक्क चोद्दस झाणाणि, सत्तावण्ण आसवा पज्जत्तेसु तिवण्ण अपज्जत्ते छादाल आसवा, चउरासीदि लक्ख जादि, अद्ध णवणउदि उत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अणंताणंत, खेत्तावेक्खा सव्वलोय, फासावेक्खा सव्वलोय, कालो सव्वकालो, अंतरं णिरंतर, चदुदाल भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, बीसुत्तर सयं पयडीणं बंधो, तित्थयरेण विणा इगबीसुत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि अचक्खु दंसणं सामण्णालाव सम्मत्ता।

अचक्षुदर्शन सामान्य

अब दर्शन मार्गणा के अनुवाद से अचक्षु दर्शनी जीवों के सामान्यालाप कहने पर-एक से बारह-गुणस्थान अपर्याप्त में एक-दो-चार छ: चार गुणस्थान, सात पर्याप्त-सात अपर्याप्त चौदह जीव समास, छ-पाँच-चार पर्याप्ति छ-पाँच-चार अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस-नौ-आठ-सात-छह-चार प्राण, अपर्याप्त में सात-सात-छह-पाँच-चार-तीन प्राण, चारों संज्ञा व क्षीण संज्ञा, चारों गति, एक से पाँच इन्द्रियाँ छहों काय, पन्द्रह योग पर्याप्त में 11 अपर्याप्तक 4, तीनों वेद व अवेद, पच्चीस कषाय व अकषाय, केवलज्ञान बिना सात ज्ञान अपर्याप्तक में मन:पर्यय व कुवअधि बिना पाँच ज्ञान, सातों संयम अपर्याप्त में तीन संयम असंयम समायिक छेदोपस्थापना, अचक्षु दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक दोनों, छहों सम्यक्त्व अपर्याप्त में मिश्र बिना पाँच सम्यक्त्व, संज्ञी-असंज्ञी दोनों, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, आठ उपयोग अपर्याप्तक में छह उपयोग, चार आर्त्त-चार रौद्र-चार धर्म-दो शुक्ल चौदह ध्यान, सत्तावन आस्रव पर्याप्तकों में तिरेपन अपर्याप्तकों में छ्यालीस, चौरासी लाख जाति, एक सौ साढ़े निन्यानवे लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा-अनंतानंत, क्षेत्रापेक्षा-सर्वलोक, स्पर्शन-सर्वलोक, काल-सर्वकाल, अंतर-निरंतर, चवालीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ बीस प्रकृतियों का बंध, तीर्थंकर बिना एक सौ इक्कीस प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार अचक्षुदर्शन का सामान्यालाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- सभी पद सुगम है कहीं कुछ भी व्याख्या करने योग्य नहीं इतनी विशेषता है कि अचक्षु दर्शन वाले एकेन्द्रिय से लेकर संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त सभी पाये जाते हैं। अचक्षु दर्शन में बन्ध योग्य प्रकृतियां सभी एक सौ बीस हैं, उदय तीर्थंकर प्रकृति को छोड़कर क्योंकि तीर्थंकर का उदय तेरहवें गुणस्थान में पाया जाता है वहाँ अचक्षु दर्शन नहीं होता वहाँ केवल दर्शन होता है। अत: उदय एक सौ इक्कीस प्रकृति का ही पाया जा सकता है। सत्त्व पूरा एक सौ अड़तालीस का होता है यहाँ कुछ भी व्याख्या योग्य नहीं है। आगे जो विशेषता होगी वह दर्शायेंगे शेष कथन सुगम है।

296. अचक्षुदर्शन मिथ्यादृष्टि गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	मिथ्यात्व गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	14 जीवसमास	7 पर्याप्त जीवसमास	7 अपर्याप्त जीवसमास
3.	पर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति व अपर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति	6,5,4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	3,4,5,6,7,7,8,9,10	4,6,7,8,9,10	3,4,5,6,7,7
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	चारों गति	–	–
7.	इन्द्रिय	1–5 इन्द्रिय	–	–
8.	काय	षट्काय	–	–
9.	योग	13 योग	10 योग	3 योग
10.	वेद	3 वेद	–	–
11.	कषाय	25 कषाय	–	–
12.	ज्ञान	3 कुज्ञान	–	2 कुज्ञान
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	अचक्षु दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य, अभव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	आहारक, अनाहारक
20.	उपयोग	4 (3 ज्ञानो. + 1 दर्शनो.)	–	3 (2 ज्ञानो.+1 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8 ध्यान	–	–
22.	आस्रव	55 (25+13+12+5)	52 (25+10+12+5)	45 (25+3+12+5)
23.	जाति	84 लाख		
24.	कुलकोटि	199½ लाख करोड़		
25.	संख्या	अनंतानंत		
26.	क्षेत्र	सर्वलोक		
27.	स्पर्शन	सर्वलोक		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– सर्वकाल	एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त	उ. अर्द्धपुद्गल परावर्तन
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– निरन्तर एक जीव की अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम दो छयासठ सागर		
30.	भाव	33 (औद. 21, मि. 9, पा.3)		अप. 32 (1 अज्ञान बिना)
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग	उत्कृष्ट– 1000 योजन	
32.	बन्ध	117		
33.	उदय	117		
34.	सत्त्व	148		
		विशेष– कोई सादि मिथ्यादृष्टि अथवा अनादि मिथ्यादृष्टि सम्यक्त्व को प्राप्त हुआ दो छयासठ सागर सम्यक्त्व व सम्यग्मिथ्यात्व का पालन कर मिथ्यादृष्टि हो गया वह मिथ्यात्व का उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त हुआ कोई ऐसा जीव जिसने सम्यक्त्व को प्राप्त कर छोड़ दिया है उसका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट अर्द्धपुद्गल परावर्तन प्राप्त होता है।		

296. अचक्खुदंसण-मिच्छतं गुणट्ठाणं

तेसिं अचक्खु दंसणी मिच्छाइट्ठी जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि-एग मिच्छत्त गुणट्ठाणं, चोद्दस जीव समासा पज्जत्तेसु सत्त अपज्जत्तेसु सत्त जीव समासा, छ पंच चउ पज्जत्ती छ पंच चउ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस णव अट्ठ सत्त छ चउ पाणा अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छ पंच चउ तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, एयत्तो पंचिंदिय, छक्काया, तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि अपज्जत्तेसु बे अण्णाणाणि एगं असंजमो, एगं अचक्खुदंसणं, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्वसिद्धिया दोण्णि, एग मिच्छत्त सम्मत्तं, सण्णी असण्णी दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, चत्तारि उवजोगा अपज्जत्तेसु तिण्णि उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द अट्ठ झाणाणि, पणवण्ण आसवा पज्जत्तेसु वावण्ण अपज्जत्तेसु पणदाल आसवा होंति, चउरासीदि लक्ख जादी, अद्ध णवणउदि उत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अणंताणंत, खेत्तावेक्खा सव्वलोय, फासावेक्खा सव्वलोय, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरायट्टं देसूणाणि*, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण बे छावट्ठि सायरोवमाणि देसूणाणि, तेतीस भावा अपज्जत्तेसु बत्तीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सत्तदसुत्तर सयं पयडीणं बंधो, सत्तदसुत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि अचक्खु दंसणीसु मिच्छत्त गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

अचक्षुदर्शन मिथ्यात्व गुणस्थान

उन्हीं अचक्षुदर्शनी मिथ्यादृष्टि जीवों के आलाप कहने पर-मिथ्यात्व गुणस्थान, चौदह जीव समास (पर्याप्त में सात, अपर्याप्त में सात), छ-पाँच-चार पर्याप्ति छ-पाँच-चार अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस-नौ-आठ-सात-छह चार प्राण अपर्याप्त सात-सात-छह-पाँच-चार-तीन प्राण होते हैं, चारों संज्ञा, चारों गति, एक से पाँच इन्द्रिय, छहों काय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीनों वेद, पच्चीस कषाय, तीन कुज्ञान अपर्याप्त में दो कुज्ञान, एक असंयम, एक अचक्षु दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक दोनों, एक मिथ्यात्व सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी दोनों, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, पाँच उपयोग अपर्याप्तक में चार उपयोग, चार आर्त्त चार रौद्र आठ ध्यान, पचपन आस्रव पर्याप्त में बावन अपर्याप्त में पैंतालीस आस्रव होते हैं, चौरासी लाख जाति, एक सौ साढ़े निन्यानवै लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा-अनंतानंत, क्षेत्रापेक्षा-सर्वलोक, स्पर्शन-सर्वलोक, काल नानाजीवापेक्षा-सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन, अंतर-नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम दो छ्यासठ सागर, भाव तेतीस अपर्याप्तक में बत्तीस, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ सत्तरह प्रकृतियों का बंध, एक सौ सत्तरह प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार अचक्षुदर्शनियों में मिथ्यात्व गुणस्थान समाप्त हुआ।

---

*यहाँ पर तीन प्रकार का काल लिया गया है अनादि अनंत, अनादि सांत, सादि सांत, अनादि अनंत तो अभव्यों की अपेक्षा सर्वकाल है ही किन्तु अनादि शांत अनादि से तो था किन्तु अब शांत हो गया सादि शांत जो पहले टूटा पुन: हो गया ऐसा मिथ्यात्व ज्यादा से ज्यादा कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन काल तक रह सकता है। अत: कोई ऐसा जीव जिसने सम्यक्त्व को प्राप्त कर छोड़ दिया उसका जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त व उत्कृष्ट काल कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन हो सकता है। इससे अधिक नहीं होता यह सादि शांत कहलाता है। किन्तु अनादि अनंत मिथ्यादृष्टि का काल यहाँ नहीं लिया है उसका अनादि अनंतकाल है। अन्तर कहते समय कोई सादि या अनादि मिथ्यादृष्टि सम्यक्त्व को प्राप्त हुआ दो छ्यासठ सागर तक सम्यक्त्व व सम्यग्मिथ्यात्व के साथ रहा पश्चात् मिथ्यात्व को चला गया इस प्रकार मिथ्यादृष्टि का अन्तर प्राप्त हुआ। बन्ध योग्य प्रकृतियाँ एक सौ सत्तरह हैं क्योंकि आहारकद्विक व तीर्थंकर प्रकृति का यहाँ बन्ध नहीं होता। उदय योग्य प्रकृतियाँ (आहारक द्विक, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व के बिना) एक सौ सत्रह है तथा सत्त्व योग्य प्रकृतियाँ सभी एक सौ अड़तालीस हैं।

जिज्ञासा – एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व एक साथ कैसे होता है ?

समाधान – नहीं यहाँ नाना जीवों की अपेक्षा कथन किया है अत: एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व बन जाता है।

जिज्ञासा – तीर्थंकर प्रकृति का सत्त्व मिथ्यात्व अवस्था में कैसे हो सकता है ?

समाधान – किसी जीव ने नरकायु का बन्ध किया पश्चात् तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध आरंभ किया और सत्त्व कर लिया मरण समय के अन्तर्मुहूर्त पहले मिथ्यादृष्टि हो गया इस प्रकार मिथ्यात्व के साथ में तीर्थंकर प्रकृति का सत्त्व प्राप्त हुआ। नरक में पहुँच कर पर्याप्त हो पुन: सम्यक्त्वी हो जाता है और तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध पुन: होने लगता है।

297. अचक्षुदर्शन सासादन गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	सासादन	–	–
2.	जीवसमास	7 (संज्ञी, पंचेन्द्रिय व 1,2,3,4 इंदि.असंज्ञी, पंचे. अपर्याप्त व संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त)	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	6 जीवसमास अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6,5,4 अपर्याप्ति, 6 पर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6,5,4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	3–10 प्राण	10 प्राण	7,7,6,5,4,3
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	चारों गति	–	3 (नरक गति के बिना)
7.	इन्द्रिय	1–5 इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	1–5
8.	काय	त्रस स्थावर काय	पंचेन्द्रिय त्रसकाय	त्रस स्थावर काय
9.	योग	13 (आहारकद्विक बिना)	10 योग	3 योग
10.	वेद	3 वेद	–	–
11.	कषाय	25 कषाय	–	–
12.	ज्ञान	3 कुज्ञान	–	2 कुज्ञान
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	अचक्षु दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	सासादन	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी	संज्ञी	संज्ञी व असंज्ञी
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	4 (3 ज्ञानो.+1 दर्शनों.)	–	3 (2 ज्ञानो.+ 1 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8	–	–
22.	आस्रव	50 (25+12+13)	47 (25+12+10)	40 (25+12+3)
23.	जाति	56 लाख	26 लाख	52 लाख
24.	कुलकोटि	189½ लाख करोड़	108½ लाख करोड़	164½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14, 12/14, 11/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा –ज. एक समय उ. 6 आवली		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा– ज. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन		
30.	भाव	31 (औ.20+ मि.9,+पा.2)	अपर्या. 29 (औ. 19, क्षयो. 8, पा.2)	
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग	उत्कृष्ट– संख्यात धनुष	
32.	बन्ध	101 (पूर्वोक्त 3 अबंध प्रकृति, 16 प्रथम गुणस्थान की व्युच्छित्त प्रकृतियां)		
33.	उदय	111 (10, 4 पूर्वोक्त 6 = मिथ्यात्व, आतप, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, नरकगत्यानुपूर्वी)		
34.	सत्त्व	145 (तीर्थंकर, आहारकद्विक बिना)		

297. तसथावरा अचक्खुदंसण सासण गुणठाणं

तेसिं अचक्खु दंसणी सासण सम्माइट्ठी जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि, एयं सासण गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदियपज्जत्त व अपज्जत्तेसु असण्णी सण्णी पंचिंदिय चउ ति बे एइन्दियाणि सत्त जीव समासा, छ पज्जत्ती चउ पंच छ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस पाणा अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छ पंच चउ तिण्णि पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी अपज्जत्तेसु णिरय विणा तिण्णि गदी, पज्जत्तेसु पंचिंदिय अपज्जत्तेसु एइंदियत्तो पंचिंदिय, त्रस–थावर काओ, तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि अपज्जत्तेसु बे अण्णाणाणि, असंजमो, एयं अचक्खु दंसणं, छल्लेस्सा, भव्व सिद्धिया, सासण सम्मत्तं, सण्णी असण्णी दोण्णि पज्जत्तेसु सण्णी अपज्जत्तेसु दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, चत्तारि उवजोगा अपज्जत्तेसु तिण्णि उवजोगा, अट्ठज्झाणाणि, पंचास आसवा पज्जत्तेसु सत्तदाल अपज्जत्तेसु दाल आसवा, छप्पण लक्ख जादी पज्जत्तेसु छब्बीस लक्ख अपज्जत्तेसु वावण्ण लक्ख जादी, अद्ध णवासीदि उत्तर सयं लक्ख कोडि कुल कोडीणं पज्जत्तेसु अद्धट्ठुत्तर सयं लक्ख कोडि अपज्जत्तेसु अद्ध चउसट्ठि उत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा–पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा–लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठचोद्दस एगारस चोद्दस बारस चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो–णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण छावली, अंतरं–णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गलपरायट्टं, इगतीस भावा अपज्जत्तेसु उणतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण संखेज्ज धणू, एगुत्तर सयं पयडीणं बंधो, एगारसुत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं पणदालुत्तर सयं पयडीणं सच्च होंति।

इदि अचक्खु दंसणीसु सासण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

त्रस स्थावर अचक्षुदर्शन सासादन गुणस्थान

उन्हीं अचक्षु दर्शनी सासादन गुणस्थानवर्ती जीवों के आलाप कहने पर एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय व संज्ञी असंज्ञी एक–दो–तीन–चार इन्द्रिय अपर्याप्त सात जीव समास, छह पर्याप्ति–चार–पाँच–छ अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस प्राण अपर्याप्त में सात–सात–छह–पाँच–चार–तीन प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति अपर्याप्तक में नरक बिना तीन गति, पर्याप्त में पंचेन्द्रिय अपर्याप्त में एक से पंचेन्द्रिय, त्रस–स्थावर काय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीन वेद, पच्चीस कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्त में दो अज्ञान, असंयम, एक अचक्षु दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, सासादन सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी दोनों पर्याप्तक में संज्ञी अपर्याप्तक में दोनों, आहारक अनाहाराक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, चार उपयोग अपर्याप्त में तीन उपयोग, आठ ध्यान, पचास आस्रव पर्याप्त में सैंतालीस अपर्याप्त में चालीस आस्रव, छप्पन लाख जाति पर्याप्त में छब्बीस लाख अपर्याप्त में बावन लाख जाति, एक सौ साढ़े नवासी लाख करोड़ कुल कोटि पर्याप्त में एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ अपर्याप्त में एक सौ साढ़े चौंसठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा–पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 8/14, 12/14, 11/14 राजू, काल नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह आवली, अंतर–नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एकजीवापेक्षा जघन्य पल्योपम का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन, इकत्तीस भाव अपर्याप्तक में उनतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट संख्यात धनुष, एक सौ एक प्रकृतियों का बंध, एक सौ ग्यारह प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ पैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार अचक्षु दर्शनियों में सासादन गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– स्पर्शन का जो कथन किया है उसका आशय कहते हैं स्वस्थान की अपेक्षा लोक का असंख्यात वां भाग विहार वेदना विक्रिया कषाय समुद्घात की अपेक्षा चौदह भागों में कुछ कम आठ भाग मारणांतिक कुछ कम बारह भाग उपपादापेक्षा कुछ कम ग्यारह भाग किंतु कषाय पाहुड के मत से कुछ कम बारह भाग भी बन जाता है। शेष कथन सुगम है कर्म प्रकृति का विवेचन सारणी में ही कर दिया है। वहाँ से जान लेना चाहिए।

प्रश्न – तीर्थंकर प्रकृति की सत्ता वाला जीव सासादन गुणस्थान में क्यों नहीं जाता ?

उत्तर – तीर्थंकर प्रकृति की सत्ता वाला यदि नीचे वाले गुणस्थानों में जाता है तो केवल नरक जाने के सम्मुख केवल मिथ्यात्व में ही जाता है शेष गुणस्थानों में नहीं जाता ऐसा स्वभाव है।

298. अचक्षुदर्शन मिश्र गुणस्थान

1.	गुणस्थान	सम्यग्मिथ्यात्व
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	चार गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	10 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	21 कषाय
12.	ज्ञान	3 मिश्रज्ञान
13.	संयम	असंयम
14.	दर्शन	अचक्षु दर्शन
15.	लेश्या	6 लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	सम्यग्मिथ्यात्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	4 (3 ज्ञानोपयोग + 1 दर्शनोपयोग)
21.	ध्यान	8 ध्यान
22.	आस्रव	43 (21 कषाय+ 12 अवि.+ 10 योग)
23.	जाति	26 लाख
24.	कुलकोटि	108½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	स्वस्थान- लोक का असंख्यातवाँ भाग, क.वि.वे.विक्रि. कुछ कम 8/14 राजू
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा- ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा- ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीव की अपेक्षा-ज. अन्तर्मुहूर्त उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा-ज. अन्तर्मुहूर्त उ. अर्द्धपुद्गल परावर्तन
30.	भाव	31 (औद.20, मि.9, पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य- घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट- 1000 योजन
32.	बन्ध	74
33.	उदय	100
34.	सत्त्व	147 (तीर्थंकर प्रकृति का सत्त्व नहीं पाया जाता)

298. अचक्खुदंसण सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणं

तेसिं अचक्खु दंसणी सम्मामिच्छत्त जीवा भण्णमाणे अत्थि, - एग सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणं, सण्णी, पंचिंदिय पज्जत्त एयं जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, इगबीस कसाया, तिण्णि मिस्स णाणाणि, असंजमो, अचक्खु दंसण, छल्लेस्सा, भव्व सिद्धिया, सम्मामिच्छत्त सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, चत्तारि उवजोगा, अट्ठज्झाणाणि, तिदाल आसवा, छब्बीस लक्ख जादी, अद्धुट्ठत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा-पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा-लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा-सगट्ठाणं लोयस्स असंखेज्जदि भागा विहार वेयणा वेगुव्वियावेक्खा अट्ठचोद्दस भागा वा देसूणा, कालो-णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्स अंतोमुहुत्तं, अंतरं-णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरायट्टं, इगतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, चउसत्तदि पयडीणं बंधो, सयं पयडीणं उदओ एवं सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि अचक्खु दंसणीसु सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

अचक्षुदर्शन सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान

उन्हीं अचक्षुदर्शनी मिश्र गुणस्थानवर्ती जीवों के कहने पर एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छह पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, दस योग, तीन वेद, इक्कीस कषाय, तीन मिश्र ज्ञान, असंयम, अचक्षु दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व, संज्ञी, आहारक, चार उपयोग, आठ ध्यान, तेतालीस आस्रव, छब्बीस लाख जाति, एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा-पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा-लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन-स्वस्थान लोक का असंख्यातवां भाग विहार-वेदना-विक्रियापेक्षा कुछ कम 8/14 राजू, काल-नानाजीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर-नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एकजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अर्द्ध पुद्गल परावर्तन, इकतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, चौहत्तर प्रकृतियों का बंध, सौ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार अचक्षुदर्शनियों में सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- प्रथम गुणस्थान की सोलह व्युच्छित्ति प्रकृतियाँ दूसरे गुणस्थान की पच्चीस (अनंतानुबंधी चार, स्त्यानगृद्धि, निद्रा-निद्रा, प्रचला-प्रचला, दुर्भग, दुःस्वर, अनादेय, न्यग्रोध परिमण्डल, स्वाति, कुब्जक और वामन संस्थान, वज्रनाराचनाराच, अर्द्धनाराच, कीलक संहनन, अप्रशस्त विहायोगति, स्त्री वेद, नीच गोत्र, तिर्यंच गति, तिर्यञ्च गत्यानुपूर्वी, तिर्यंच आयु और उद्योत, इस प्रकार पच्चीस और सोलह, इकतालीस, मनुष्य, देव आयु, तीर्थंकर और आहारकद्विक के बिना चौहत्तर प्रकृतियों का बन्ध होता है। इक्कीस प्रकृति के बिना सौ प्रकृतियों का उदय और तीर्थंकर प्रकृति के बिना एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

299. अचक्षुदर्शन असंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	अविरत संयत गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त, अपर्याप्त दो जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7	10	7
5.	संज्ञा	4	–	–
6.	गति	चार गति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	13 योग	10 योग	3 योग
10.	वेद	3 वेद	–	2 (स्त्री वेद बिना)
11.	कषाय	21 कषाय	–	20 (स्त्री वेद बिना)
12.	ज्ञान	3 ज्ञान	–	–
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	अचक्षु दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षायिक, उपशम, क्षयोपशम)	–	(द्वितीयोपशम) देव गति में
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	आहारक, अनाहारक
20.	उपयोग	4 (3 ज्ञानो. + 1 दर्शनो.)	–	–
21.	ध्यान	10	–	–
22.	आस्रव	46 (21+12+13)	43 (21+12+10)	35 (20+12+3)
23.	जाति	26 लाख		
24.	कुलकोटि	108½ लाख करोड़		
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व देशोन 8/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त		उ. कुछ अधिक 33 सागर
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– निरन्तर, एक जीव की अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त		उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन
30.	भाव	34 (औद.20, मि.10, क्षा.1, औप.1, पा.2) अप.–33		
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का संख्यातवाँ भाग*	उत्कृष्ट– 1000 योजन	
32.	बन्ध	77 (तीर्थंकर, मनुष्यायु, देवायु मिलाने पर)		
33.	उदय	104		
34.	सत्त्व	148 (सभी प्रकृतियों का सत्त्व होता है।)		
		* तंदुल (शालिसिक्थ) मत्स्य		

299. अचक्खुदंसण असंजद गुणट्ठाणं

तेसिं अचक्खु दंसणी अविरद सम्माइट्ठीणं आलाव भण्णमाणे अत्थि - एयं असंजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, दस सत्त पाणा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेणु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु बे वेदा, इगबीस कसाया अपज्जत्तेसु बीस कसाया, तिण्णि णाणाणि, एग असंजमो, एग अचक्खु दंसणं, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खओवसम[*1] खइय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, चत्तारि उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द बे धम्म दस झाणाणि, छादाल आसवा पज्जत्तेसु तिदाल अपज्जत्तेसु पणतीस आसवा, छब्बीस लक्ख जादी, अद्धट्ठुत्तर सयं लक्ख कोडि कुल कोडीणं[*2], संखावेक्खा-पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा-लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा-सगट्ठाणं लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा[*3], कालो-णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि सादिरेयाणि,[*4] अंतरं-णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरायट्ठणं, चउतीस भावा जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सत्तदि पयडीणं बंधो, चदुत्तर सयं पयडीणं उदओ[*5] एवं अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि अचक्खु दंसणीसु असंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

अचक्षुदर्शन असंयत गुणस्थान

उन्हीं अचक्षुदर्शनी अविरत सम्यग्दृष्टि जीवों के आलाप कहने पर एक असंयत सम्यगदृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त दो जीव समास, छह पर्याप्तियाँ छह अपर्याप्ति, दस प्राण सात प्राण पर्याप्तक में दस अपर्याप्तक में सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, चार गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीनों वेद अपर्याप्तक में दो वेद, इक्कीस कषाय पर्याप्तक में इक्कीस अपर्याप्तक में बीस कषाय, तीन ज्ञान, एक असंयम, एक अचक्षु दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षयोपशम क्षायिक तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, चार उपयोग, चार आर्त चार रौद्र-दो धर्म दस ध्यान, छ्यालीस आस्रव पर्याप्त में तेतालीस अपर्याप्त में पैत्तीस आस्रव, छब्बीस लाख जाति, एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा-पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा-लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन-स्वस्थान-लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 8/14 राजू, काल नानाजीवापेक्षा-सर्वकाल एकजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक तेतीस सागर, अंतर नानाजीवापेक्षा निरंतर एकजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अर्द्ध पुद्‌गल परावर्तन, चौतीस भाव अपर्याप्तक में तेतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, सत्तत्तर प्रकृतियों का बंध एक सौ चार प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार अचक्षु दर्शनियों में असंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- [*1] अपर्याप्तक अवस्था में उपशम सम्यक्त्व केवल देवगति में ही पाया जाता है क्योंकि द्वितीयोपशम सम्यक्त्व के साथ श्रेणी आरोहण कर मरण को प्राप्त होने वाला जीव देव गति में ही जाता है। प्रथमोपशम सम्यक्त्व में तो मरण ही नहीं होता अत: द्वितीयोपशम की अपेक्षा जानना।

[*2] एक कोड़ा कोड़ी साढ़े आठ लाख करोड़।

[*3] विहार, वेदना, विक्रिया, कषाय समुद्घात की अपेक्षा कुछ कम आठ भाग, कुछ कम का कथन पहले कई बार किया है वहाँ जान लेना चाहिए।

[*4] एक प्रमत्त संयत अथवा अप्रमत्त तीनों उपशामकों में से कोई एक जीव मरण कर एक समय कम तेतीस सागर की आयु वाले अनुत्तर विमानवासी देवों में उत्पन्न हुआ वहाँ से चयकर एक कोटि पूर्व की आयु वाले मनुष्यों में उत्पन्न हुआ आयु के अन्तर्मुहूर्त काल कम रहने तक असंयत रहा पश्चात् मुनि हो। श्रेणी आरोहण कर केवली हो निर्वाण को प्राप्त हुआ इस प्रकार कुछ अधिक तेतीससागर प्राप्त हुआ।

[*5] तीर्थंकर, आहारकद्विक, सम्यग्मिथ्यात्व, मिथ्यात्व, आतप, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, स्थावर, एकेन्द्रिय व विकलत्रय, चार अनंतानुबंधी के बिना एक सौ चार प्रकृतियों का उदय होता है शेष बन्ध सत्त्व सभी सुगम है।

300. अचक्षुदर्शनदेशसंयत गुणस्थान

1.	गुणस्थान	देशविरत (देशसंयत/संयमासंयम)
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवसमास
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	2 गति (मनुष्य, तिर्यंच)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	17 कषाय
12.	ज्ञान	3 ज्ञान
13.	संयम	संयमासंयम
14.	दर्शन	अचक्षु दर्शन
15.	लेश्या	3 शुभ लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षायिक, उपशम, क्षयोपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	4 (3 ज्ञानोपयोग + 1 दर्शनोपयोग)
21.	ध्यान	11 (चार आर्त्त चार रौद्र तीन धर्म ध्यान)
22.	आस्रव	37 (17+9+11)
23.	जाति	18 लाख
24.	कुलकोटि	57½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग, मा.स. कुछ कम 6/14 राजू
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम 1 कोटि पूर्व
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– निरन्तर, एक जीव की अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन
30.	भाव	29 (औ.14, मि.11, क्षा.1, औप.1, पा.2)
31.	अवगाहना	जघन्य– घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट– 1000 योजन
32.	बन्ध	67
33.	उदय	87
34.	सत्त्व	147 (नरकायु बिना)

300. अचक्खुदंसण देससंजद गुणट्ठाणं

तेसुं अचक्खु दंसणी संजदासंजदाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग संजदासंजदो गुणट्ठाणं एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, मणुस्स तिरिक्ख बे गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, सत्तदस कसाया, तिण्णि णाणाणि, एग संजमासंजमो, एगअचक्खु दंसणं, तिण्णि सुहल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खओवसम खइय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, चत्तारि उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द तिण्णि धम्म एगारस झाणाणि, सत्ततीस आसवा, अट्ठदस लक्ख जादी, अद्धुत्तर सत्तावण्ण लक्ख कोडि कुल कोडीणं, संखावेक्खा–पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा–लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा–सगट्ठाणं लोयस्स असंखेज्जदि भागा मारणंतियो समुग्घादावेक्खा छ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो–णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पुव्वकोडि देसूणा, अंतरं–णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गलपरायट्टं, उणतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सडसट्ठि पयडीणं बंधो, सत्तासीदि पयडीणं उदओ एवं सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि अचक्खु दंसणीसु देससंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

अचक्षुदर्शन देशसंयत गुणस्थान

उन्हीं अचक्षुदर्शनीदेशसंयत जीवों के आलाप कहने पर एक संयतासंयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त एक जीव समास, छह पर्याप्तियाँ ,दस प्राण, चार संज्ञाएँ, मनुष्य तिर्यंच दो गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, तीन वेद, सत्तरह कषाय, तीन ज्ञान, एक संयमासंयम, एक अचक्षु दर्शन, तीन शुभ लेश्या, भव्यसिद्धिक, उपशम क्षयोपशम क्षायिक तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, चार उपयोग, ग्यारह ध्यान (चार आर्त्त–चार रौद्र–तीन धर्म), सैंतीस आस्रव, अठारह लाख जाति, साढ़े सत्तावन लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा–पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा–लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन–स्वस्थान लोक का असंख्यातवां भाग मारणान्तिक समुद्घातापेक्षा कुछ कम 6/14 राजू, काल–नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम एक कोटि पूर्व, अंतर–नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन, उनतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, सड़सठ प्रकृतियों का बंध, सत्तासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार अचक्षु दर्शनियों में देशसंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– देशसंयत गुणस्थान में मरण नहीं होता अथवा मरण तो होता भी है परन्तु जैसे ही आत्म प्रदेश शरीर से बाहर निकलते हैं उसी समय असंयत गुणस्थान हो जाता है इसलिए इस गुणस्थान में उपपाद पद नहीं होता विहार वेदना विक्रिया पद भी लोक का असंख्यातवां भाग ही होता है कारण सुगम है। मारणांतिक समुद्घात पद पाया जाता है क्योंकि देशव्रती सोलहवें स्वर्ग तक उत्पन्न हो सकता है। सोलहवा स्वर्ग मध्य लोक से छः राजू है। अतः 6/14 राजू बन जाता है। शेष कथन सुगम है। बन्ध प्रकृतियाँ चतुर्थ गुणस्थान में दस प्रकृति बंध से व्युछिन्न होती हैं। (चार अप्रत्याख्यानावरण, मनुष्यायु, वज्रवृषभनाराच संहनन, औदारिक शरीर, आंगोपांग, मनुष्यद्विक), उदय प्रकृतियाँ असंयत गुणस्थान की एक सौ चार में से उदय व्युछिन्न सत्रह प्रकृति कम कर के सतासी प्रकृतियाँ हैं। उदय व्युच्छिन्न (प्रकृतियाँ चार अप्रत्याख्यानावरण कषाय, वैक्रियक षट्क नरक व देवायु, मनुष्य गत्यानुपूर्वी, तिर्यंच गत्यानुपूर्वी, दुर्भग, अनादेय व अयशकीर्ति)

301. अचक्षुदर्शन प्रमत्तसंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	प्रमत्त संयत गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	2 (संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त, अपर्याप्त)	पर्याप्त	अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण, 7 प्राण	10	7
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	मनुष्य गति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	11 योग	10 योग	1 (आहारक मिश्र)
10.	वेद	भाव से 3, द्रव्य से 1 पुरुषवेद	–	द्रव्य, भाव से पुरुष वेद
11.	कषाय	13 कषाय	–	11 (स्त्री, नपुंसक वेद बिना)
12.	ज्ञान	4 ज्ञान	–	3 (मन:पर्यय ज्ञान बिना)
13.	संयम	3 (सा., छे., परि.)	3	2 (सा., छे.)
14.	दर्शन	अचक्षु दर्शन	–	–
15.	लेश्या	भाव से 3 शुभ, द्रव्य से 6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षायिक, उपशम, क्षयोपशम)	–	2 (उपशम के बिना)
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक	–	–
20.	उपयोग	5 (4 ज्ञानो. + 1 दर्शनो.)	–	4 उपयोग (3 ज्ञानो 1 दर्शनो.)
21.	ध्यान	7 (3 आर्त्त, 4 धर्म)	–	–
22.	आस्रव	24 (11योग +13 कषाय)	23 (13 कषाय +10 योग)	12 (11 कषाय +1 योग)
23.	जाति	14 लाख		
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़		
25.	संख्या	59398206		27
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त अप.ज.उ. अन्तर्मुहूर्त		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– निरन्तर एक जीव की अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन*		
30.	भाव	29 (औद.13 + मि.12 + 1 +1+2) अपर्याप्ति– 25 (औद.11, मि.11, पा.2, क्षा.1)		
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष		
32.	बन्ध	63		
33.	उदय	81		
34.	सत्त्व	146 (नरक, तिर्यंचायु के बिना)		
		*अपर्याप्तकों का अन्तर नाना जीवापेक्षा ज. एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीव ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन।		

301. अचक्खुदंसण पमत्तसंजदो गुणट्ठाणं

तेसुं अचक्खु दंसणी पमत्तसंजदो जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि - एगं पमत्त संजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीवसमासा, छपज्जत्ती छअपज्जत्ती, दस सत्तपाणा, चत्तारि सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, एगारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु एग आहारमिस्स कायजोगा, तिण्णि वेदा पज्जत्तेसु तिण्णि अपज्जत्तेसु एग पुरिसवेदो, तेरस कसाया अपज्जत्तेसु एगारह कसाया, केवलणाणेण विणा चत्तारि णाणाणि अपज्जत्तेसु मणपज्जयेण विणा तिण्णि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा विहार सुद्धि तिण्णि संजमा अपज्जत्तेसु सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, एग अचक्खु दंसणं, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण तिण्णि सुह लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खओवसम खइय तिण्णि सम्मत्ता अपज्जत्तेसु उवसम विणा दोण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, चत्तारि धम्म तिण्णि अट्ट सत्त झाणाणि, चउबीस आसवा पज्जत्तेसु तेबीस अपज्जत्तेसु वारस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा-पंच कोडि तिणउदि लक्ख अट्ठणउदि सहस्स छ उत्तर बे सयं अपज्जत्तेसु सत्तबीस, खेत्तावेक्खा-लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा-लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो-णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो अपज्जत्तेसु जहण्णुक्कसेण अंतोमुहुत्तं एग जीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं अपज्जत्तेसु जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतर-णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गलपरायट्टं अपज्जत्तेसु णाणा जीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एग जीवावेक्खा गुणट्ठाणवद्, उणतीस भावा अपज्जत्तेसु पणवीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, ति सट्ठि पयडीणं बंधो, एगासीदि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि अचक्खु दंसणीसु पमत्तसंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

अचक्षुदर्शन प्रमत्तसंयत गुणस्थान

उन्हीं अचक्षुदर्शनी प्रमत्त संयत जीवों के आलाप कहने पर - एक प्रमत्त संयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छह पर्याप्तियाँ छह अपर्याप्तियाँ, दस प्राण सात प्राण, चार संज्ञाएँ, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, ग्यारह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में एक आहारक मिश्रकाय योग, तीनों वेद अपर्याप्तक में एक पुरुष वेद, तेरह कषाय अपर्याप्तक में ग्यारह कषाय, चार ज्ञान अपर्याप्त में मन:पर्याय बिना तीन ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना परिहार विशुद्धि तीन संयम अपर्याप्त में सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, एक अचक्षु दर्शन, द्रव्य से छहों लेश्या भाव से तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम-क्षयोपशम क्षायिक तीन सम्यक्त्व अपर्याप्तक में दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग अपर्याप्त में चार उपयोग, (चार धर्म तीन आर्त्त) सात ध्यान, चौबीस आस्रव पर्याप्त में तेईस अपर्याप्त में बारह आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा-पाँच करोड़ तेरानवे लाख अन्ठानवे हजार दो सौ छह अपर्याप्तक में सत्ताइस, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल नानाजीवापेक्षा-सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त अपर्याप्तक का ज.उ. अन्तर्मुहूर्त, अंतर नानाजीवापेक्षा निरन्तर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्ध पुद्गल परावर्तन अपर्याप्तकों में अन्तर नाना जीव ज. एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीव गुणस्थानवत्, उनतीस भाव अपर्याप्तक में पच्चीस भाव , जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, तिरसेठ प्रकृतियों का बंध, इक्यासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार अचक्षु दर्शनियों में प्रमत्तसंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- यहाँ अपर्याप्तक आहारक शरीर की अपेक्षा से होता है आहारक शरीर केवल क्षायिक क्षयोपशम सम्यक्त्व के साथ ही होता है उपशम के साथ नहीं, पुरुष वेदक ही होता है स्त्री नपुंसक में नहीं, तीन ज्ञान के साथ ही हो सकता है, मन: पर्यय के साथ नहीं, इस प्रकार आहारक की विशेषताऐं छटवे गुणस्थान का जघन्य काल एक समय क्योंकि कोई मुनिराज छटवे गुणस्थान को प्राप्त हुए एक समय रहे और मरण को प्राप्त हो गये तो एक समय प्राप्त हुआ, अधिक से अधिक अन्तर्मुहूर्त सुगम है। इसी प्रकार अन्तर का कथन करना कोई विशेषता नहीं है। बन्ध प्रकृतियाँ देश संयत की सड़सठ में से व्युछिन्न प्रकृति कम करके तिरेषठ प्रकृतियाँ होती है (व्युच्छिन्न प्रकृतियाँ-चार प्रत्याख्यानावरण कषाय) उदय प्रकृतियाँ इक्यासी हैं क्योंकि देशसंयत में आठ की उदय व्युच्छित्ती थी किंतु यहाँ दो प्रकृति (आहारकद्विक उदय योग्य है। सत्त्व पूर्वोक्त एक सौ छयालीस का।

302. अचक्षुदर्शन अप्रमत्तसंयत गुणस्थान

1.	गुणस्थान	अप्रमत्त गुणस्थान (अप्रमत्त संयत गुणस्थान)
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 संज्ञा (आहार बिना)
6.	गति	मनुष्य गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	भाव से 3, द्रव्य से पुरुष वेद
11.	कषाय	13 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	3 (सा., छेदो., परिहार विशुद्धि)
14.	दर्शन	अचक्षु दर्शन
15.	लेश्या	भाव से 3, द्रव्य से 6 लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षायिक, उपशम, क्षयोपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 (4 ज्ञानोपयोग + 1 दर्शनोपयोग)
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान
22.	आस्रव	22 (13+9)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	29699103
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा– सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा– ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीव की अपेक्षा– निरन्तर, एक जीव की अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन
30.	भाव	29 (औ.13 + मि.12 + 2 + 1 +1)
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष
32.	बन्ध	59
33.	उदय	76
34.	सत्त्व	146 (नरक, तिर्यंच आयु के बिना)

302. अचक्खुदंसण अपमत्तसंजदो गुणट्ठाणं

तेसुं अचक्खु दंसणी अपमत्तसंजदो जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि - एग अपमत्तसंजदो गुणट्ठाणं, एगं सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, आहारेण विणा तिण्णि सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, भावेण तिण्णि वेदा दव्वेण एग पुरिस वेदो, तेरस कसाया, केवल णाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा विहार सुद्धि तिण्णि संजमा, एगं अचक्खु दंसणं, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण तिण्णि सुह लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खओवसम खइय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, चत्तारि धम्मज्झाणा, बाबीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा बे कोडि छण्णवदि लक्ख णवणवदि सहस्स तिउत्तर सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गलपरायट्टं, उणतीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, ऊणसट्ठि पयडीणं बंधो, छसत्तदि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि अचक्खु दंसणीसु अपमत्तसंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

अचक्षुदर्शन अप्रमत्तसंयत गुणस्थान

उन्हीं अचक्षुदर्शनी अप्रमत्तसंयत जीवों के आलाप कहने पर - एक अप्रमत्त संयत गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, आहार बिना तीन संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, भाव से तीन द्रव्य से एक वेद, तेरह कषाय, चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना-परिहार विशुद्धि तीन संयम, एक अचक्षु दर्शन, द्रव्य से छहों लेश्या भाव से तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षयोपशम क्षायिक तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, चार धर्म ध्यान, बाईस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा दो करोड़ छ्यानवे लाख निन्यानवे हजार एक सौ तीन, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल नानाजीवापेक्षा-सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर-नानाजीवापेक्षा-निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्ध पुद्गल परावर्तन, उनतीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, उनसठ प्रकृतियों का बंध, छियत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार अचक्षु दर्शनियों में अप्रमत्त गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- यहाँ कुछ भी कथन करने योग्य नहीं है सभी पूर्वोक्त ही है। मात्र बंध उदय का थोड़ा सा कथन करते हैं बंध योग्य प्रकृतियाँ उनसठ हैं क्योंकि अस्थिर, अशुभ, असाता वेदनीय, अयशकीर्ति, अरति, शोक इन छह प्रकृतियों की बंध व्युच्छित्ति प्रमत्त गुणस्थान में हो गई साथ ही आहारकद्विक जो अभी तक अबन्ध प्रकृति थी उसका बन्ध होने लगा इस प्रकार उनसठ प्रकृतियाँ बन्ध योग्य हैं। उदय छियत्तर प्रकृति का है क्योंकि उदय व्युच्छित्ती (स्त्यानगृद्धि, आहारक द्विक, निद्रा-निद्रा, प्रचला-प्रचला) इस प्रकार कम करने पर, सत्त्व पूर्वोक्त एक सौ छयालीस प्रकृति का है।

303. अचक्षुदर्शन अपूर्वकरण गुणस्थान

1.	गुणस्थान	अपूर्वकरण गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवसमास
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 संज्ञा
6.	गति	मनुष्य गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	भाव से 3, द्रव्य से पुरुष वेद
11.	कषाय	13 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	2 (सा., छेदो.)
14.	दर्शन	अचक्षु दर्शन
15.	लेश्या	1 शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (क्षायिक, उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 (4 ज्ञानोपयोग + 1 दर्शनोपयोग)
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान अथवा एक शुक्ल ध्यान
22.	आस्रव	22 (13 कषाय +9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	897 (उपशामक-299, क्षपक- 598)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	उपशामक- नाना व एक जीव की अपेक्षा- ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक- नाना व एक जीव की अपेक्षा- अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उपशामक- नाना जीव की अपेक्षा-ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीव-ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परा. क्षपक- नाना जीव की अपेक्षा- ज. एक समय उ. 6 माह, एक जीव-निरन्तर
30.	भाव	27 (औद.11, मि.10, क्षा.2, औ.2, पा.2) उपशामक = 26 क्षपक = 25
31.	अवगाहना	जघन्य- 3½ हाथ उत्कृष्ट- 525 धनुष
32.	बन्ध	58
33.	उदय	72
34.	सत्त्व	क्षपक-138 उपशामक-146, 145, 142, 141, 139, 138

303. अचक्खुदंसण अपुव्वयरण गुणट्ठाणं

तेसुं अचक्खु दंसणी अपुव्वयरण गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि - एग अपुव्वयरण गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छपज्जत्ती, दस पाणा, आहारेण विणा तिण्णि सण्णा, मणुस्मसगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, दव्वेण पुरिस भावेण तिण्णि वेदा, तेरस कसाया, केवलणाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, एग अचक्खु दंसणं, एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, चत्तारि धम्म एग सुक्कज्झाणं वा, बाबीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा सत्तणउदि उत्तर अट्ठसयं उवसामगेसु णवणउदि उत्तर बे सयं खवगेसु अट्ठणउदि उत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो उवसामगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरायट्टं खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण छम्मास एग जीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण णिरंतरं, सत्तवीस भावा उवसामगेसु छब्बीस भावा खवगेसु पणवीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, अट्ठावण्ण पयडीणं बंधो, बेसत्तदि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं पणदालुत्तर सयं बादालुत्तर सयं इगदालुत्तर सयं ऊणदालुत्तर सयं अट्ठतीसुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि अचक्खु दंसणीसु अपुव्वयरण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

अचक्षु दर्शन अपूर्वकरण गुणस्थान

उन्हीं अचक्षु दर्शनी अपूर्वकरण जीवों के आलाप कहने पर - एक अपूर्वकरण गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त एक जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, आहार बिना तीन संज्ञाएँ, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, द्रव्य से पुरुष भाव से तीनों वेद, तेरह कषाय, चार ज्ञान (केवलज्ञान बिना), सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, अचक्षु दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्यसिद्धिक, उपशम क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, चार धर्म व एक शुक्ल ध्यान, बाईस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा आठ सौ संत्तानवे उपशामक दो सौ निन्यानवे क्षपक पाँच सौ अट्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल-उपशामक नानैकजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपक नानैक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर-उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अर्द्ध पुद्गल परावर्तन क्षपक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह माह एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट निरन्तर, सत्ताईस भाव उपशामकों में छब्बीस क्षपकों में पच्चीस भाव, जघन्य अवगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, अट्ठावन प्रकृतियों का बंध, बहत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस एक सौ पैंतालीस, एक सौ ब्यालीस, एक सौ इकतालीस, एक सौ उन्तालीस व एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार अचक्षु दर्शनियों में अपूर्वकरण गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- वीर सेनाचार्य के मत से चार धर्मध्यान किन्तु पूज्यपाद आचार्य के मत से एक शुक्ल ध्यान पाया जाता है बन्ध उदय गुणस्थानवत् समझना तथा सत्त्व का पूर्व में कथन किया है वहाँ से जान लेना चाहिए शेष सभी कथन सुगम है। कुछ भी व्याख्या योग्य नहीं है।

बन्ध प्रकृतियाँ एक देवायु कम करके अट्ठावन प्रकृतियों का बन्ध है। उदय प्रकृतियाँ बहत्तर है क्योंकि अप्रमत्त संयत में चार प्रकृतियाँ उदय से व्युच्छिन्न होती है। (सम्यक्त्व, अर्द्धनाराच, कीलक, सृपाटिका संहनन) सत्त्व पूर्वोक्त ही है।

304. अचक्षु दर्शन अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

1.	गुणस्थान	अनिवृत्तिकरण गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवसमास
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	2 संज्ञा
6.	गति	मनुष्य गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	भाव से 3, द्रव्य से पुरुष वेद
11.	कषाय	7 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	2 (सा., छेदो.)
14.	दर्शन	अचक्षु दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (क्षायिक, उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 (4 ज्ञानोपयोग + 1 दर्शनोपयोग)
21.	ध्यान	एक शुक्ल ध्यान अथवा 4 धर्मध्यान
22.	आस्रव	16 (7 कषाय +9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	897 (उपशामक–299, क्षपक– 598)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	उपशामक– नाना व एक जीव की अपेक्षा– ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक– नाना व एक जीव की अपेक्षा– ज. उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उपशामक– नाना जीव की अपेक्षा– ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व एक जीव–ज. अन्तर्मुहूर्त उ. अर्द्धपुद्गल परावर्तन क्षपक– नाना जीव की अपेक्षा– ज. एक समय उ. 6 माह एक जीव–निरन्तर
30.	भाव	27 उप. 26 क्ष.25
31.	अवगाहना	जघन्य– 3½ हाथ उत्कृष्ट– 525 धनुष
32.	बन्ध	22
33.	उदय	66
34.	सत्त्व	उपशामक–146 से 138 क्षपक–138 से 103 क्रमश:

304. अचक्खुदंसण अणियट्टियरण गुणट्ठाणं

तेसुं अचक्खु दंसणी अणियट्टियरणट्ठाणे जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अणियाट्टियरण गुणट्ठाणं, एगं सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीवसमासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, मेहुणपरिग्गह बे सण्णा*[1], मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, दव्वेण पुरिस वेदो भावेण तिण्णि वेदा*[2], सत्त कसाया, केवलणाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, एग अचक्खु दंसणं, एग सुक्क लेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, एग सुक्क चत्तारि धम्मज्झाणं वा, सोलह आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा सत्तणउदि उत्तर अट्ठसयं उवसामगेसु णवणउदि उत्तर बे सयं खवगेसु अट्ठणउदि उत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो उवसामगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेगजीवावेक्खा अंतोमुहुत्तं, अंतरं उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरायट्टं खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण छम्मास एगजीवावेक्खा णिरंतरं, सत्तवीस भावा उवसामगेसु छब्बीस*[3] खवगेसु पणवीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, बाबीस पयडीणं बंधो, छावट्ठि पयडीणं उदओ एवं उवसामगेसु छादालुत्तर सयं बादालुत्तर सयं ऊणदालुत्तर सयं अट्ठतीसुत्तर सयं व खवगेसु अट्ठतीसुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि अचक्खु दंसणीसु अणियट्टियरण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

अचक्षु दर्शन अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

उन्हीं अचक्षु दर्शनी अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में जीवों के आलाप कहने पर – एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, मैथुन परिग्रह दो संज्ञाएँ, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, द्रव्य से पुरुषवेद भाव से तीनों वेद, सात कषाय, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, एक अचक्षु दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, शुक्ल ध्यान वा चार धर्म ध्यान, सोलह आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा आठ सौ सत्तानवे उपशामक दो सौ निन्यानवे क्षपक पाँच सौ अट्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल–उपशामक नानाजीवापेक्षा व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपक नानैकजीवापेक्षा अंतर्मुहूर्त, अंतर–उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अर्द्ध पुद्गल परावर्तन क्षपक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह माह एकजीवापेक्षा निरन्तर, सत्ताइस भाव उपशामक में छब्बीस क्षपक में पच्चीस भाव होते हैं। जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, बाईस प्रकृतियों का बंध, छ्यासठ प्रकृतियों का उदय एवं उपशामकों में एक सौ छयालीस एक सौ ब्यालीस एक सौ उन्तालीस एक सौ अड़तीस क्षपक में एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार अचक्षु दर्शनियों में अनिवृत्तिकरण गुणस्थान समाप्त हुआ।

---

*[1] चार संज्ञा होती है किंतु आहार संज्ञा छटवे गुणस्थान तक ही होती है सातवें आठवें गुणस्थान में तीन संज्ञा रह जाती हैं परन्तु आठवें गुणस्थान में भय प्रकृति की उदय व्युछित्ति हो जाने पर नौवे गुणस्थान में दो संज्ञा रह जाती है। पश्चात् वेद का क्षय हो जाने पर मात्र परिग्रह संज्ञा रह जाती है।

*[2] इसी गुणस्थान में वेदों का क्षय करके अवेदी हो जाता है।

*[3] भावों की अपेक्षा कथन करने पर सामान्य से सत्ताइस भाव हैं किंतु उपशामक जीवों में क्षायिक चारित्र न होने से छब्बीस भाव रह जाते हैं। क्षपकों में उपशम सम्यकत्व व उपशम चारित्र न होने से पच्चीस भाव होते हैं। भावों का खुलासा इस प्रकार है– गति=1 (मनु.) कषाय 4 (क्रोध मान माया लोभ) लिंग=3 (स्त्री. पुरुष, नपुंसक) अज्ञान, असिद्धत्व, शुक्ल लेश्या, चार ज्ञान (मति, श्रुत, अवधि मन:पर्यय) अचक्षुदर्शन 5 लब्धि (दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य) क्षायिक सम्यक्त्व व चारित्र उपशम सम्यक्त्व व चारित्र, नीवत्व व भव्यत्व। पारिणामिक–जीवत्व भव्यत्व बन्ध प्रकृतियाँ 58 में से 36 (36 व्युच्छिन्न प्रकृतियां इस प्रकार– निद्रा, प्रचला, तीर्थंकर, निर्माण, प्रशस्त विहायोगति, पंचेन्द्रिय जाति, तैजस, कार्मण, आहारकद्विक, समचतुरस्र संस्थान, देवद्विक, वैक्रियक द्विक, वर्णादि चार, अगुरुलघु, उपघात, परघात, उच्छ्वास, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक शरीर, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, अनादेय, हास्य, रति, भय, जुगुप्सा) इस प्रकार छत्तीस प्रकृति कम करके 22 प्रकृति बन्ध रूप रह जाती है उदय योग्य प्रकृतियाँ छयासठ क्योंकि अपूर्वकरण में छह प्रकृति की उदय व्युच्छित्ति होती है सत्त्व पूर्वोक्त।

305. अचक्षु दर्शन सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान

1.	गुणस्थान	सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	1 परिग्रह संज्ञा
6.	गति	मनुष्य गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	0 (अवेद)
11.	कषाय	सूक्ष्मलोभ
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	सूक्ष्मसाम्पराय संयम
14.	दर्शन	अचक्षु दर्शन
15.	लेश्या	1 शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (क्षायिक, उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 (4 ज्ञानोपयोग+ 1 दर्शनोपयोग)
21.	ध्यान	1 शुक्ल ध्यान अथवा एक धर्म ध्यान
22.	आस्रव	10 (9 योग + 1 कषाय)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	897 (उपशा. 299, क्षपक. 598)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	उपशामक नाना जीवों व एक जीव की अपेक्षा-ज. एक समय उ. अन्तमुहूर्त क्षपक नाना व एक जीवापेक्षा ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उपशामक नाना जीवापेक्षा- ज.एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा- ज. अन्तर्मुहूर्त उ.अर्द्धपुद्गल परावर्तन क्षपक नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उ. 6 माह एक जीवापेक्षा - निरन्तर
30.	भाव	सा. 21, उप. 20, क्षपक. 19
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	17 (गुणस्थानोक्त)
33.	उदय	60 (गुणस्थानोक्त)
34.	सत्त्व	उप. - 146, 145, 142, 141, 139, 138, क्ष.- 102 गुणस्थानोक्त उपशामक - 146-4 अनंतानुबंधी 3 दर्शन मोहनीय, मनुष्य व देवायु सहित), 145- देवायु रहित, 142-अनंतानुबंधी रहित देवायु सहित, 141-देवायु रहित, 139 - अनंतानुबंधी, दर्शन मोहनीय रहित, देवायु सहित 138-देवायु रहित

305. अचक्खुदंसण सुहुमसंपराय गुणट्ठाणं

तेसिं अचक्खु दंसणी सुहुमसाम्पराय जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग सुहुमसाम्पराय गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, एग परिग्गहसण्णा, मणुस्सगदी, पंचेदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, अवेदी, एग सुहुम लोह कसाओ, केवल णाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, एग सुहुमसाम्पराय संजमो, एग अचक्खु दंसणं, एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता*[1], सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, एग सुक्कज्झाणं अहवा एग धम्मज्झाणं, दस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा सत्तणउदि उत्तर अट्ठ सयं उवसामगेसु णवणउदिउत्तर बे सयं खवगेसु अट्ठ णउदि उत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो उवसामगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरायट्टं खवगेसु णाणा जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छम्मासा एग जीवावेक्खा निरंतर, सामण्णेण इगबीस भावा उवसामगेसु बीस खवगेसु उणबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, सत्तदस पयडीणं बंधो, सट्ठि पयडीणं उदओ एवं उवसामगेसु छादालुत्तर सयं बादालुत्तर सयं इगदालुत्तर सयं उणदालुत्तर सयं अट्ठतीसुत्तर सयं व खवगेसु बे उत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि अचक्खु दंसणीसु सुहुमसंपराय गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

अचक्षुदर्शन सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान

उन्हीं अचक्षुदर्शनी सूक्ष्मसाम्पराय जीवों के आलाप कहने पर – एक सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, एक परिग्रह संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, अवेद, एक सूक्ष्मलोभ कषाय, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान, एक सूक्ष्मसाम्पराय संयम, एक अचक्षु दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, एक शुक्ल ध्यान अथवा एक धर्मध्यान, दस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा आठ सौ सत्तानवे उपशामक दो सौ निन्यानवे क्षपक पाँच सौ अन्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवाँ भाग, काल – उपशामक नानैकजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपक नानैकजीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर–उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अर्द्ध पुद्गल परावर्तन क्षपक नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छ माह एक जीवापेक्षा निरंतर, सामान्य से इक्कीस भाव उपशामकों में बीस क्षपकों में उन्नीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, सत्रह प्रकृतियों का बंध, साठ प्रकृतियों का उदय एवं उपशामकों में एक सौ छ्यालीस–एक सौ पैंतालीस एक सौ ब्यालीस–एक सौ इकतालीस–एक सौ उनतालीस–एक सौ अड़तीस व क्षपकों में एक सौ दो प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार अचक्षु दर्शनियों में सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशषार्थ :– * यहाँ पर सूक्ष्म लोभ कषाय रह जाने से एक परिग्रह संज्ञा रह जाती है। वेद समाप्त होने से अवेदी होता है।

*[1] क्षायिक सम्यग्दृष्टि दोनों श्रेणी माड़ सकता है किंतु चारित्र श्रेणी के अनुरुप ही होगा जैसे क्षपक श्रेणी में क्षायिक चारित्र ही होगा उपशम श्रेणी में उपशम चारित्र होगा किन्तु उपशम सम्यक्त्व वाला एक उपशम श्रेणी ही माड़ता है। क्षायिक सम्यग्दृष्टि को उपशम श्रेणी में द्वितीयोपशम सम्यग्दृष्टि नहीं कहते क्योंकि उसका सम्यक्त्व क्षायिक है अब उसे द्वितीयोपशम करने की आवश्यकता नहीं हैं। बंध प्रकृति सत्रह है क्योंकि अनिवृत्तिकरण में पुरुष वेद संज्वलन क्रोध, संज्वलन मान संज्वलन माया संज्वलन लोभ की बंध व्युच्छित्ति हो जाने से क्योंकि अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में बाइस प्रकृति का बन्ध था बाईस में से पाँच कम हो गई तो सूक्ष्म सांपराय गुणस्थान में सत्रह प्रकृतियों का बन्ध है।

उदय– साठ प्रकृति का क्योंकि तीनों वेद व संज्वलन क्रोध मान माया की उदय व्युच्छित्ति हो जाने से साठ प्रकृति का उदय सत्त्व प्रकृतियाँ उपशामकों में एक सौ छयालीस से एक सौ अड़तीस तक पूर्ववत् जानना चाहिए। क्षपक श्रेणी में अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में सत्त्व प्रकृति एक सौ अड़तीस में से नरक द्विक, तिर्यंच द्विक, विकलत्रय, स्त्यानगृद्धि आदि तीन निद्रा, उद्योत, आतप, एकेन्द्रिय, साधारण, सूक्ष्म, स्थावर ये सोलह प्रकृतियाँ प्रथम भाग में सत्त्व से रहित हो जाती हैं। पश्चात् द्वितीय भाग में अप्रत्याख्यानावरण, प्रत्याख्यानावरण ये आठ कषाय सत्त्व से व्युच्छित्त हो जाती हैं। तृतीय भाग में नपुंसक वेद चतुर्थ भाग में स्त्री वेद, पंचम भाग में हास्यादि, छः नो कषाय, षष्ट भाग में पुरुष वेद, सप्तम भाग में संज्वलन क्रोध, अष्टम भाग में मान, नवम भाग में माया इस प्रकार अनिवृत्तिकरण के नौ भागों में छत्तीस प्रकृतियों की सत्त्व व्युच्छित्ति हो जाने से सूक्ष्म सांपराय गुणस्थान में एक सौ दो प्रकृतियाँ सत्त्व में रहती है शेष कथन सुगम है।

306. अचक्षु दर्शन उपशान्त कषाय गुणस्थान

1.	गुणस्थान	उपशान्त मोह (11वाँ गुण)
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	उपशांत संज्ञा
6.	गति	मनुष्य गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	अवेद
11.	कषाय	उपशांत कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	यथाख्यात चारित्र
14.	दर्शन	अचक्षु दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	दो (उपशम, क्षायिक सम्यक्त्व)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 (4 ज्ञानोपयोग+ 1 दर्शनोपयोग)
21.	ध्यान	1 शुक्ल ध्यान (पृथक्त्व वितर्क)
22.	आस्रव	9 योग
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	299
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना व एक जीव अपेक्षा – ज. एक समय उ. अंतर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. अर्द्ध पुद्गल परावर्तन
30.	भाव	19
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	1 साता वेदनीय
33.	उदय	59 (गुणस्थानोक्त)
34.	सत्त्व	146, 145, 142, 141, 139, 138 पूर्वोक्त

306. अचक्खुदंसण उवसंतकसाय गुणट्ठाणं

तेसिं अचक्खु दंसणी उवसंत कसाय जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग उवसंत मोह गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, उवसंत सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, अवेदी/अवगय वेदो, उवसंत कसाओ, केवलणाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, एगं जहाक्खाद संजमो, एगं अचक्खु दंसणं, एग सुक्क लेस्सा, भव्व सिद्धिया, खइय उवसम बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, एग सुक्कज्झाणं, णव आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा णवणउदि उत्तर बे सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अद्धपोग्गलपरायट्टं, उणबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, एग सादा वेयणीयो बंधो, ऊणसट्ठि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं पणदालुत्तर सयं बादालुत्तर सयं इगदालुत्तर सयं उणदालुत्तर सयं व अडतीसुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि अचक्खु दंसणीसु उवसंत कसाय गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

अचक्षुदर्शन उपशान्त कषाय गुणस्थान

उन्हीं अचक्षु दर्शनी उपशान्तमोह जीवों के आलाप कहने पर – एक उपशान्त मोह गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, उपशांत संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, अवेदी अपगत वेद, उपशांत कषाय, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान, एक यथाख्यात संयम, एक अचक्षु दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक उपशम दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, एक शुक्ल ध्यान, नौ आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा दो सौ निन्यानवे, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग, काल – नानैकजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अर्द्ध पुद्गल परावर्तन, उन्नीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक साता वेदनीय का बंध, उनसठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छयालीस, एक सौ पैंतालीस, एक सौ बयालीस, एक सौ इकतालीस, एक सौ उनतालीस व एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार अचक्षु दर्शनियों में उपशांत कषाय गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– बन्ध प्रकृति एक साता वेदनीय क्योंकि सूक्ष्म सांपराय गुणस्थान में पाँच ज्ञानावरण पाँच अन्तराय चार दर्शनावरण यश:कीर्ति और उच्च गौत्र इन सोलह प्रकृतियों की बन्ध व्युच्छित्ति हो जाती है। इसलिए यहाँ मात्र साता वेदनीय का ही बन्ध होता है। एक सूक्ष्म लोभ की उदय व्युच्छित्ति होने से उनसठ् प्रकृतियों का उदय तथा सत्त्व का कथन करते हुए जिसने देवायु का बन्ध किया है और अनंतानुबंधी की सत्ता है तो उसके एक सौ छ्यालीस जिसने देवायु का बन्ध नहीं किया है उसके एक सौ पैतालीस का जिसने देवायु का बन्ध किया है और अनंतानुबंधी का विसंयोजक है उसके एक सौ ब्यालीस का देवायु रहित एक सौ इकतालीस दर्शन मोहनीय का क्षय कर दिया है और देवायु का सत्त्व है तो एक सौ उनतालीस देवायु रहित एक सौ अड़तीस प्रकृति का सत्त्व है।

नोट :– उपशम श्रेणी वाले जीवों के अनंतानुबंधी की विसंयोजना एक आचार्य के मत से होती है। तभी श्रेणी आरोहण करता है किन्तु द्वितीय सिद्धांत कषाय पाहुड़ के रचयिता गुणधर आचार्य के मत से अनंतानुबंधी की विसंयोजना किये बिना भी श्रेणी चढ़ सकता है दोनों मत हैं अभी वर्तमान समय में केवली श्रुत केवली का अभाव है अत: दोनों मत स्वीकार है।

307. अचक्षु दर्शन क्षीणकषाय गुणस्थान

1.	गुणस्थान	क्षीण मोह
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	0 क्षीण संज्ञा
6.	गति	मनुष्य गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	अपगत वेद
11.	कषाय	क्षीणकषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	यथाख्यात चारित्र
14.	दर्शन	अचक्षु दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 (4 ज्ञानो. एक दर्शनो.)
21.	ध्यान	2 (शुक्ल ध्यान पृथक्त्व वितर्क, एकत्व वितर्क)
22.	आस्रव	9 आस्रव
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	598
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट–अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा ज. एक समय उ. छ: माह एक जीवापेक्षा – निरन्तर
30.	भाव	18 (औद. 4, क्षयो. 10, क्षा.2, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	1 साता वेदनीय
33.	उदय	57 गुणस्थानोक्त
34.	सत्त्व	101 गुणस्थानोक्त

307. अचक्खु दंसण खीणकसाय गुणट्ठाणं

तेसिं अचक्खु दंसणी खीण कसायी जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग खीणमोह गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीवसमासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, खीण सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, अवगदवेदो, खीणकसाओ, केवलणाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, एग जहाक्खाद संजमो, अचक्खु दंसणं, एग सुक्क लेस्सा, भव्व सिद्धिया, खइय सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, बे सुक्कज्झाणाणि, णव आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अट्ठणउदि उत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा व एगजीवावेक्खा अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणा जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छम्मासा एगजीवावेक्खा णिरंतरं, अट्ठदस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, एग सादा वेयणीयो बंधो, सत्तावण्ण पयडीणं उदओ एवं एगुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि अचक्खु दंसणीसु खीणकसाय गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

अचक्षुदर्शन क्षीणकषाय गुणस्थान

उन्हीं अचक्षुदर्शनी क्षीण कषायी जीवों के आलाप कहने पर – एक क्षीणमोह गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, क्षीण संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौयोग, अपगत वेद, क्षीण कषाय, केवल ज्ञान बिना चार ज्ञान, एक यथाख्यात संयम, अचक्षु दर्शन, शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, दो शुक्ल ध्यान, नौ आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पाँच सौ अन्ठानवै, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल – नानाजीव व एकजीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – नाना जीवापेक्षा जघन्य से एक समय उत्कृष्ट छः माह एक जीवापेक्षा निरंतर है, अठारह भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक सातावेदनीय का बंध, सत्तावन प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ एक प्रकृति का सत्त्व होता है।

इस प्रकार अचक्षु दर्शनियों में क्षीण कषाय गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– एक साता वेदनीय का बंध होता है। उदय सत्तावन प्रकृति का क्योंकि वज्रनाराच तथ सूक्ष्म लोभ इनकी उदय व्युच्छित्ति दसवें गुणस्थान में होती है। सत्त्व प्रकृतियाँ एक सौ एक क्योंकि सूक्ष्म सांपराय में सूक्ष्मलोभ की सत्त्व व्युच्छित्ति हो जाती है।

308. अवधि दर्शन सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	4–12	–	6,4, गुण.
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त, अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा व क्षीण संज्ञा	4 संज्ञा व क्षीण संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	चारों गति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	15 योग	11 योग	4 योग
10.	वेद	3 वेद (अवेद)	–	2 वेद (स्त्री वेद बिना)
11.	कषाय	21 कषाय, क्षीण कषाय	21 क. व क्षीण कषाय	20 कषाय (स्त्री वेद बिना)
12.	ज्ञान	4 ज्ञान	–	3 ज्ञान
13.	संयम	7 (सा., छे.,प., सू.सां. यथाख्यात, असंयम,सं.)	–	3 (असंयम, सा., छे.)
14.	दर्शन	अवधि दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षायिक, क्षयोपशम, उपशम)	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	5 (4 ज्ञानो.+ 1 दर्शनो.)		4 (उपयोग)
21.	ध्यान	14 (4 आर्त्त, 4 रौद्र, 4 धर्म, 2 शुक्ल)	–	11 (4+4+3 धर्मध्यान)
22.	आस्रव	48 (12 अवि.+21क.+15यो.)	44 (21क.+12अवि.+11 योग)	36 (21+12+3)
23.	जाति	26 लाख		
24.	कुलकोटि	108½ लाख करोड़		
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यात वा भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवा भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवा भाग व देशोन् 8/14, देशोन् 6/14 राजू		
28.	काल	नाना जीव– सर्वकाल, एक जीव अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 66 सागर		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर, एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन		
30.	भाव	39 (औद. 20, मि. 13, क्षा.2, औप.2, पा.2) अपर्या. 34 भाव		
31.	अवगाहना	जघ. संख्यात अंगुल	उ. 1000 योजन	
32.	बन्ध	79 (मिथ्यात्व सम्बन्धी 16 व सासादन गुणस्थान सम्बन्धी 25 कुल मिलाकर 41 प्रकृति बिना		
33.	उदय	106 (16 प्रकृति बिना (प्रथम द्वितीय व तृतीय गुणस्थान सम्बन्धी 15 व एक तीर्थंकर)		
34.	सत्त्व	148		

308. ओहीदंसण सामण्णं

अह दंसण मग्गणाणुवादेण ओही दंसणी जीवाणं सामण्णालाव भण्णमाणे अत्थि – चउत्थो बारस णव गुणट्ठाणाणि अपज्जत्तेसु चउ छ बे गुणट्ठाणाणि, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, दस पाणा अपज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा व खीण सण्णा अपज्जत्तेसु चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, पंचदस जोगा पज्जत्तेसु एगादस अपज्जत्तेसु चत्तारि जोगा, तिण्णि वेदा व अवेदी अपज्जत्तेसु बे वेदा, इगबीस कसाया व खीण कसाओ अपज्जत्तेसु थी वेद विणा बीस कसाया, केवल णाणेण विणा चत्तारि णाणाणि अपज्जत्तेसु तिण्णि णाणाणि, सत्त संजमा असंजम सामाइय छेदोवट्ठावणा विहार सुद्धि जहक्खाद सुहुमसांपरायो संजमासंजम अपज्जत्तेसु असंजम सामाइय छेदोवट्ठावणा तिण्णि संजमा, एग ओहि दंसणं, छल्लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम–खओवसम खइय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द चत्तारि धम्म बे सुक्क चोद्दस अपज्जत्तेसु एगारस झाणाणि, अडदाल आसवा पज्जत्तेसु चदुदाल अपज्जत्तेसु छत्तीस आसवा, छब्बीस लक्ख जादी, अट्ठद्धुत्तर सयं कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा – पल्लोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठ चोद्स छ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण छावट्ठि सायरोवमाणि देसूणाणि, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गलपरायट्टं, ऊणदाल भावा अपज्जत्तेसु चउतीस भावा, जहण्णमवगहणं संखेज्जांगुल उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, ऊणासीदि पयडीणं बंधो, छउत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि दंसण मग्गणासु ओही दंसणं सामण्णं सम्मत्ता।

अवधिदर्शन सामान्य

अब दर्शन मार्गणा के अनुवाद से – अवधि दर्शनी जीवों के सामान्यालाप कहने पर – चार से बारह नौ गुणस्थान अपर्याप्त में चार–छ दो गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, दस प्राण अपर्याप्त में सात प्राण, चारों संज्ञा व क्षीण संज्ञा अपर्याप्तक में चार संज्ञा, चारों गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, सामान्य से पन्द्रह योग पर्याप्त में ग्यारह अपर्याप्त में चार योग, तीनों वेद व अवेद अपर्याप्तक में स्त्री वेद बिना दो वेद, इक्कीस कषाय व क्षीण कषाय अपर्याप्तक में बीस कषाय, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान अपर्याप्तक में तीन ज्ञान, सात संयम असंयम–सामायिक–छेदोपस्थापना–परिहार विशुद्धि–यथाख्यात सूक्ष्म सांपराय संयमासंयम अपर्याप्त में असंयम सामा–छेदो–तीन संयम, एक अवधि दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षयोपशम क्षायिक तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, पाँच उपयोग अपर्याप्त में चार उपयोग, चार आर्त – चार रौद्र चार धर्म दो शुक्ल चौदह ध्यान अपर्याप्त में चार आर्त्त चार रौद्र तीन धर्म ग्यारह ध्यान, अड़तालीस आस्रव पर्याप्त में चवालीस अपर्याप्त में छत्तीस आस्रव, छब्बीस लाख जाति, एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पल्योपमक का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 8/14 – 6/14 राजू, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट कुछ अधिक छ्यासठ सागर, अंतर – नानाजीवापेक्षा – निरंतर एकजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्ध पुद्गल परावर्तन, उनतालीस भाव अपर्याप्तकों में चौतीस भाव, जघन्यावगाहना संख्यात अंगुल उत्कृष्ट एक हजार योजन, उन्यासी प्रकृतियों का बंध, एक सौ छह प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार दर्शन मार्गणा में अवधि दर्शनियों का सामान्यालाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– अवधि दर्शन का प्रकरण है पहली बात तो ये है कि अवधि दर्शन चतुर्थ गुणस्थान से ही प्रारंभ होता है यद्यपि ग्रंथराज कर्मकाण्ड में अवधि दर्शन तृतीय गुणस्थान में भी स्वीकार किया है किंतु वह यहाँ पर विवक्षित नहीं है। अवधि दर्शन में अपर्याप्त अवस्था में स्त्री वेद न होने से दो वेद होते हैं नपुंसक वेद भी प्रथम नरक की अपेक्षा अपवाद स्वरुप स्वीकार किया है। संयम सभी पाये जाते हैं। अपर्याप्त में तीन संयम स्वीकार किये हैं। काल की अपेक्षा कथन करने पर कुछ अधिक छ्यासठ सागर इस प्रकार है कोई देव या नारकी उपशम सम्यक्त्वी होकर अवधि दर्शनी हो गया पश्चात् क्षयोपशम सम्यक्त्व प्राप्त कर अन्तर्मुहूर्त अवधि दर्शनी रह मरण कर एक पूर्व कोटि आयु वाले मनुष्यों में उत्पन्न होकर पुन: बीस सागरोपम आयु वाले देवों में उत्पन्न हो पुन: एक कोटि पूर्व के मनुष्य में उत्पन्न हो आयु पूर्ण कर बाईस सागरोपम आयु वाले देवों में पुन: पूर्व कोटि आयु वाले मनुष्यों में उत्पन्न हुआ आयु पूर्ण कर मरण कर चौबीस सागर की आयु वाले देवों में पश्चात् एक पूर्व कोटि आयु वाले मनुष्यों में उत्पन्न हो संयमी हो निर्वाण को प्राप्त हुआ। इस प्रकार कुछ अधिक छयासठ सागर प्राप्त हुआ। तृतीय गुणस्थान में अवधि दर्शन मान लेने पर अवधि दर्शन का उत्कृष्ट काल दो छ्यासठ सागर भी प्राप्त हो सकता है किन्तु यहाँ धवला ग्रंथ के अनुसार कथन किया है।

309. अवधि दर्शन असंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	असंयत गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त, अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	4	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	13 (आहारक द्विक बिना)	10	3
10.	वेद	3 वेद	–	2 (दो) स्त्री वेद बिना
11.	कषाय	21 कषाय	–	20 (बीस) स्त्री वेद बिना
12.	ज्ञान	3 ज्ञान	–	–
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	अवधि दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षायिक, क्षयोपशम, उपशम)*	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	4 उपयोग (3 ज्ञानो.+ 1 दर्शनो.)	–	–
21.	ध्यान	10	–	–
22.	आस्रव	46 (21क.+12 अवि.+13 यो.)	43 (21 क.+12 अवि.+10यो.)	35 (20+12+3)
23.	जाति	26 लाख		
24.	कुलकोटि	108½ लाख करोड़		
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवा भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवा भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवा भाग व देशोन 8/14 राजू		
28.	काल	नाना जीव– सर्वकाल एक जीवापेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 33 सागर		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम पूर्व कोटि प्रमाण		
30.	भाव	34 (औद. 20, मि. 10, क्षा.1, औप.1, पा.2) अपर्या. 33 (स्त्री वेद बिना)		
31.	अवगाहना	जघ. संख्यात अंगुल	उ. 1000 योजन	
32.	बन्ध	77 (आहारकद्विक बिना)		
33.	उदय	104 (आहारकद्विक बिना)		
34.	सत्त्व	148		

* अपर्याप्त में द्वितीयोपशम सम्यक्त्व होता है।

309. ओहि दंसण असंजद गुणट्ठाणं

तेसिं ओहि दंसणी असंजद जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अविरद संजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, दस पाणा अपज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु बे वेदा, इगबीस कसाया अपज्जत्तेसु बीस कसाया, तिण्णि णाणाणि, एग असंजमो, एग ओहि दंसणं, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, चत्तारि उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द बे धम्म दस झाणाणि, छादाल आसवा, पज्जत्तेसु तिदाल अपज्जत्तेसु पणत्तीस आसवा, छब्बीस लक्ख जादी, अद्धट्ठुत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठचोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि साहिरेयाणि, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण पुव्वकोडीणं, चउतीस भावा अपज्जत्तेसु तेतीस भावा, जहण्णमवगहणं संखेज्जंगुल उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सत्तसत्तदि पयडीणं बंधो, चदुत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि ओहि दंसणेसु असंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

अवधिदर्शन असंयत गुणस्थान

उन्ही अवधिदर्शनी असंयत जीवों के आलाप कहने पर – एक अविरत संयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, दस प्राण अपर्याप्त में सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीन वेद अपर्याप्तक में दो वेद, इक्कीस कषाय अपर्याप्तक में बीस कषाय, तीन सुज्ञान, एक असंयम, एक अवधिदर्शन, छहों लेश्या, भव्यसिद्धिक, उपशम क्षायिक क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहरक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, चार उपयोग, चार आर्त्त चार रौद्र दो धर्म दस ध्यान, छयालीस आस्रव पर्याप्त में तैतालीस अपर्याप्त में पैंतीस आस्रव, छब्बीस लाख जाति, एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग व देशोन 8/14 राजू, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक तैतीस सागर, अंतर – नानाजीवापेक्षा निरंतर एकजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम एक पूर्व कोटि, चौंतीस भाव अपर्याप्तक में तेतीस भाव, जघन्यावगाहना संख्यात अंगुल उत्कृष्ट एक हजार योजन, सत्तत्तर प्रकृतियों का बंध, एक सौ चार प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार अवधि दर्शन में असंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ काल का कथन किया जाता है वह इस प्रकार है– कोई प्रमत्तसंयत अप्रमत्त संयत अथवा चारों उपशामकों में से कोई एक जीव मरण कर एक समय कम तेतीस सागरोपम स्थिति वाले देवों में उत्पन्न हुआ आयु पूर्ण कर मरण को प्राप्त हो एक कोटि पूर्व की आयु वाले मनुष्यों में उत्पन्न हुआ अन्तर्मुहूर्त कम सारा जीवन असंयत रहा। पश्चात् अप्रमत्त भाव से संयत हुआ पुन: 1. प्रमत्त अप्रमत्त में सहस्रो परावर्तन कर 2. अपूर्वकरण 3. अनिवृत्तिकरण 4. सूक्ष्म सांपराय 5. क्षीण मोह 6. सयोग केवली 7. अयोग केवली 8. सिद्ध हो गया। इस प्रकार नौ अन्तर्मुहूर्त कम एक पूर्व कोटि अधिक तेतीस सागर उत्कृष्ट काल प्राप्त हुआ। अन्तर का कथन सुगम है। बन्ध प्रकृतियाँ सतत्तर है क्योंकि यहाँ आहारकद्विक का बन्ध नहीं पाया जाता उदय एक सौ चार प्रकृतियों का है क्योंकि अवधि दर्शन में अवधिज्ञान के समान एक सौ छ: प्रकृतियों का उदय पाया जाता है यहाँ आहारकद्विक का उदय न होने से एक सौ चार का ही उदय पाया जाता है।

अवधि दर्शन में अनुदय प्रकृतियाँ (मिथ्यात्व, आतप, सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त, चार अनंतानुबंधी, एकेन्द्रिय, द्वी, त्रिइन्द्रिय, चतुरिंद्रिय, स्थावर तथा सम्यग्मिथ्यात्व इस प्रकार पन्द्रह तथा तीर्थंकर ये सोलह प्रकृतियों का उदय नहीं पाया जाता। शेष कथन सुगम है।

शंका– एक समय कम तेतीस सागर की आयु वाले देवों में क्यों उत्पन्न कराया पूरे तेतीस सागर की आयु वालों में क्यों उत्पन्न नहीं कराया ?

समाधान–सर्वार्थसिद्धि की आयु तेतीस सागर हैं किंतु वहाँ से चयकर आने वाले जीव ज्यादा लम्बे समय तक असंयमी नहीं रह सकते।

310. अवधि दर्शन संयमासंयम गुणस्थान

1.	गुणस्थान	संयमासंयम गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव समास पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	दो गति (तिर्यंच व मनुष्य)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	17 कषाय
12.	ज्ञान	3 ज्ञान
13.	संयम	संयमासंयम
14.	दर्शन	अवधिदर्शन
15.	लेश्या	तीन शुभ लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (उप., क्षा., क्षयो.)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	4 (3 ज्ञानो.+ 1 दर्शनो.)
21.	ध्यान	11 ध्यान (4 आर्त्त, 4 रौद्र, 3 धर्मध्यान)
22.	आस्रव	37 (17 कषाय+ 11 अवि. + 9 योग)
23.	जाति	18 लाख
24.	कुलकोटि	57½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व मा. कुछ कम 6/14 राजू
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम एक पूर्व कोटि
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर, एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 66 सागर
30.	भाव	29 (औद. 14, मि.11, क्षा.1, औ.1, पा.2)
31.	अवगाहना	ज. संख्यात अंगुल उ. 1000 योजन
32.	बन्ध	67 (चतुर्थ गुणस्थान की 10 व्युच्छिन्न प्रकृति बिना)
33.	उदय	87 (चतुर्थ गुणस्थान की 17 प्रकृतियाँ व्युच्छिन्न बिना)
34.	सत्त्व	147 (नरकायु बिना)

310. ओहिदंसण संजदासंजद गुणट्ठाणं

तेसिं ओहि दंसणी देस संजदो जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग संजदासंजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, मणुस्सतिरिक्ख बे गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, तिण्णि वेदा, सत्तदस कसाया, तिण्णि णाणाणि, एयं संजमासंजमो, एग ओहिदंसणं, तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, चत्तारि उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द तिण्णि धम्म एगारस झाणाणि, सत्ततीस आसवा, अट्ठदस लक्ख जादी, अद्धुत्तर सत्तावण्ण लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा मारणांतिओ छ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पुव्व कोडि देसूणं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण छावट्ठि सायरोवमाणि सादिरेणाणि, उणतीस भावा, जहण्णमवगहणं संखेज्जांगुल उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सडसट्ठि पयडीणं बंधो, सत्तासीदि पयडीणं उदओ एवं सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि ओहि दंसणे संजदासंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

अवधिदर्शन संयतासंयत गुणस्थान

उन्हीं अवधिदर्शनी देशसंयत जीवों के आलाप कहने पर – एक संयतासंयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्य तिर्यंच दो गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, तीनों वेद, सत्रह कषाय, तीन ज्ञान, एक संयमासंयम, एक अवधि दर्शन, तीन शुभ लेश्या, भव्यसिद्धिक, उपशम क्षायिक क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, चार उपयोग, चार आर्त्त चार रौद्र तीन धर्म ग्यारह ध्यान, सैंतीस आस्रव, अठारह लाख जाति, साढ़े सत्तावन लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवाँ भाग व मारणांतिक कुछ कम छः राजू, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम एक पूर्व कोटि, अंतर – नानाजीवापेक्षा निरन्तर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक छ्यासठ सागर, उन्तीस भाव, जघन्यावगाहना संख्यात अंगुल उत्कृष्ट एक हजार योजन, सड़सठ प्रकृतियों का बंध, सत्तासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार अवधिदर्शन में संयतासंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– स्पर्शन चौदह भागों में से छ भाग कहने का तात्पर्य यह है कि यहाँ पर तिर्यंचों की प्रधानता है इससे पूर्व के गुणस्थानों में देवों की प्रधानता थी जिसके कारण विहार, वेदना, विक्रिया, कषाय आदि पदों की अपेक्षा 8/14 भाग स्पर्शन बन रहा था। यहाँ देवों में पंचम गुणस्थान पाया नहीं जाता अत: मनुष्य और तिर्यंचों में ही पाया जाता है चूंकि मनुष्यों की प्रधानता बन नहीं सकती क्योंकि मनुष्य इतने कम हैं कि उनकी अपेक्षा कथन करना ही नहीं बन सकता। अब रहते हैं तिर्यंच तो संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच यदि विहार करते हैं तो लोक के असंख्यात वे भाग में ही करते हैं, इसलिए वेदना विक्रिया कषाय समुद्घात आदि पदों की अपेक्षा भी लोक का असंख्यातवां भाग ही स्पर्शन बनता है। अब मारणांतिक समुद्घात की अपेक्षा कथन करने पर कुछ कम 6/14 राजू बन जाता है क्योंकि देशव्रती तिर्यंच सोलहवें स्वर्ग तक जन्म ले सकते हैं अत: वहीं तक मारणांतिक समुद्घात भी होता है। सोलहवां स्वर्ग मध्यलोक से छह राजू पर है। इसी प्रकार काल का कथन सुगम है अन्तर भी सुगम है। बन्ध प्रकृतियों में असंयत गुणस्थान में व्युच्छिन्न प्रकृतियों को कम करके सढ़सठ प्रकृतियाँ बँधती है जो गुणस्थानोक्त हैं।

उदय सतासी प्रकृतियों का है क्योंकि गुणस्थानोक्त असंयत गुणस्थान में सत्रह प्रकृतियों की उदय व्युच्छित्ति हो जाती है। सत्त्व नरक का न होने से एक सौ सैंतालीस का है। शेष कथन सुगम है। संख्या की अपेक्षा कथन करने पर पल्योपम का असंख्यातवां भाग है किन्तु अवहार काल मतिज्ञानियों और श्रुत ज्ञानियों से असंख्यात गुणा है।

311. अवधि दर्शन प्रमत्तसंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	प्रमत्त संयत गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्तक	पर्याप्त	अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	मनुष्य गति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	11 योग	10	1 योग (आहारक मिश्र)
10.	वेद	द्रव्य से 1 पुरुष वेद, भाव से 3 वेद)	–	1 (पुरुष वेद)*
11.	कषाय	13 कषाय	–	11 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान	–	3 ज्ञान (मन:पर्यय बिना)
13.	संयम	3 (सा., छेदो., परिहार विशुद्धि)	–	2 (सा., छेदो.)
14.	दर्शन	अवधि दर्शन	–	–
15.	लेश्या	द्रव्य से 6, भाव से 3 शुभ लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षायिक, क्षयोपशम, उपशम)	–	2 (क्षायिक, क्षयोपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक	–	–
20.	उपयोग	5 (4 ज्ञानो.+ 1 दर्शनो.)	–	4 (3 ज्ञानो. 1 दर्शनो.)
21.	ध्यान	7 (3 आर्त्त + 4 धर्मध्यान)	–	–
22.	आस्रव	24 (13 क., 11 यो.)	23 (13 क.+10 यो.)	12 (11 क.+1 यो.)
23.	जाति	14 लाख		
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़		
25.	संख्या	59398206 संख्यात (यह संख्या सामान्य से हैं।) विशेषता से– संख्यात है		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
28.	काल	नाना जीवापेक्षा – सर्वकाल एक जीवापेक्षा– ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 33 सागर अपर्याप्तक में नाना जीवापेक्षा जघन्य–एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व, एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट साधिक 33 सागर		
30.	भाव	29 (औद.13, मि.12, पा.2, क्षा.1, औ.1)	अपर्याप्त 25 (औ. 11, क्षयो.11, पा.2, क्षा.1)	
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ	उ. 525 धनुष	
32.	बन्ध	63 पूर्वोक्त		
33.	उदय	81 पूर्वोक्त		
34.	सत्त्व	146 (नरक, तिर्यंच आयु बिना)		
		नोट:– अपर्याप्त अवस्था आहारक शरीर की अपेक्षा से बनती है इसलिए अपर्याप्त अवस्था में 11 कषाय, एक वेद तथा 12 आस्रव, आहारक मिश्र काययोग तीन ज्ञान दो सम्यक्त्व बनते हैं।		

311. ओहिदंसण पमत्तसंजद गुणट्ठाणं

तेसिं ओहि दंसणी पमत्त जीवाणामालाव भणमाणे अत्थि – एग पमत्तसंजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छह पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, दस पाणा सत्तपाणा, चत्तारि सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, एगारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु एगं आहारमिस्स काय जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु एग पुरिसवेदो, तेरस कसाया अपज्जत्तेसु एगारस कसाया, केवल णाणेण बिणा चत्तारि णाणाणि अपज्जत्तेसु तिण्णि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा विहार सुद्धि तिण्णि संजमा अपज्जत्तेसु विहार सुद्धि विणा बे संजमा, एग ओहि दंसणं, दव्वेण छ भावेण तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता अपज्जत्तेसु उवसम विणा बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, तिण्णि अट्ट चत्तारि धम्म सत्त झाणाणि, चउबीस आसवा पज्जत्तेसु तेबीस अपज्जत्तेसु बारस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पंच कोडि तिणउदि लक्ख अट्ठणउदि सहस्स छ उत्तर बे सयं[*1] संखेज्ज अपज्जत्तेसु सत्ताबीस, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा–लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं अपज्जत्तेसु जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि सादिरेयाणि अपज्जत्तेसु णाणा जीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, ऊणतीस भावा अपज्जत्तेसु पणबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, तिसट्ठिपयडीणं बंधो, एगासीदि पयडीणं उदओ एवं छादालोत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि ओहि दंसणे पमत्तसंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

अवधिदर्शन प्रमत्तसंयत गुणस्थान

उन्हीं अवधिदर्शनी प्रमत्त जीवो के आलाप कहने पर – एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीवसमास, छहों पर्याप्ति छह अपर्याप्ति, दस प्राण सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, ग्यारह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में एक आहारक मिश्र काय योग, द्रव्य से एक पुरुष भाव से तीनों वेद अपर्याप्तक में एक पुरुष वेद, तेरह कषाय अपर्याप्तक में ग्यारह कषाय, चार ज्ञान केवल ज्ञान बिना अपर्याप्तक में तीन ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना परिहार विशुद्धि तीन संयम अपर्याप्त में परिहार विशुद्धि बिना दो संयम, एक अवधि दर्शन, द्रव्य से छह भाव से तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व अपर्याप्तक में उपशम बिना दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग अपर्याप्तक में चार उपयोग, तीन आर्त चार धर्म सात ध्यान, चौबीस आस्रव पर्याप्त में तेईस अपर्याप्त में बारह आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा संख्यात (पाँच करोड़ तेरानवे लाख अन्ठानवे हजार दो सौ छह) अपर्याप्त में 27[*1], क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त अपर्याप्तक जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अन्तर नाना जीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट साधिक तेतीस सागर अपर्याप्तक में नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट अन्तर साधिक तेतीस सागर, उनतीस भाव अपर्याप्तक में पच्चीस भाव जघन्य, अवगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, तिरेसठ प्रकृतियों का बंध, इक्यासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार अवधिदर्शन में प्रमत्तसंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– काल का कथन सुगम है अन्तर का कथन करते है कोई एक प्रमत्त संयत गुणस्थानवर्ती अप्रमत्त हुआ 1. अपूर्वकरण 2. अनिवृत्तिकरण, 3 सूक्ष्म सांपराय, 4. उपशांत मोह पुन: 5. सूक्ष्मसांपराय 6. अनिवृत्तिकरण 7 अपूर्वकरण 8. अप्रमत्त हुआ और आयु क्षय के कारण मरण कर एक समय कम तेतीस सागर आयु वाले अनुत्तर विमान में उत्पन्न हुआ आयु पूर्ण कर एक कोटि पूर्व के मनुष्यों में उत्पन्न हुआ आयु में एक अन्तर्मुहूर्त अब शेष रह जाने पर अप्रमत्त हुआ पुन: प्रमत्त हुआ इन में ऊपर के 6 अन्तर्मुहूर्त मिलाए 2. भीतर के नौ अन्तर्मुहूर्तों में से बाहर के आठ अन्तर्मुहूर्त घटाने पर एक अन्तर्मुहूर्त अधिक पूर्व कोटि साधिक तेतीस सागर प्राप्त होता है। बंध प्रकृति उदय प्रकृति सत्त्व प्रकृति सभी गुणस्थानोक्त हैं कुछ विशेष नहीं है। सभी सुगम है।

*1 संख्या यह सामान्य से है किंतु अवधि दर्शनी अपने गुणस्थान की संख्या के संख्यातवे भाग प्रमाण होते हैं परन्तु कितने होते हैं ऐसा उपदेश नहीं पाया जाता। यह नियम प्रमत्त, अप्रमत्त इन दो गुणस्थानों के लिए है शेष आगे कहेंगे।

312. अवधिदर्शन अप्रमत्तसंयत गुणस्थान

1.	गुणस्थान	अप्रमत्त संयत गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 संज्ञा
6.	गति	मनुष्य गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	द्रव्य से 1, भाव से 3 वेद
11.	कषाय	13 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	3 (सा., छेदो., परिहार विशुद्धि)
14.	दर्शन	अवधि दर्शन
15.	लेश्या	द्रव्य से 6, भाव से 3 शुभ लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षायिक, क्षयोपशम, उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 (4 ज्ञानो.+ 1 दर्शनो.)
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान
22.	आस्रव	22 (13 कषाय + 9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	29699103 संख्यात (यहसंख्या सामान्यता से है) विशेषता से गुणस्थानोक्त जीव/संख्यात
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवा भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवा भाग
28.	काल	नाना जीवापेक्षा – सर्वकाल एक जीवापेक्षा– ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 33 सागर
30.	भाव	29 (औद. 13, मि.12, पा.2, क्षा.1, औप.1)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	59 गुणस्थानोक्त
33.	उदय	76 गुणस्थानोक्त
34.	सत्त्व	146 (नरक व तिर्यंचायु बिना)

312. ओहिदंसण अपमत्तसंजद गुणट्ठाणं

तेसिं ओहि दंसणी अप्पमत्त जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अपमत्तसंजदो गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, आहारेण विणा तिण्णि सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, दव्वेण एग पुरिस वेदो भावेण तिण्णि वेदा, तेरस कसाया, केवल णाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा विहार सुद्धि तिण्णि संजमा, एग ओहि दंसण, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण तिण्णि सुह लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, चत्तारि धम्मज्झाणा, बाबीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा बे कोडि छण्णउदि लक्ख णवणउदि सहस्स तिउत्तर सयं संखेज्ज, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, उणतीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पचं सयं धणू, ऊणसट्ठि पयडीणं बंधो, छ सत्तदि पयडीणं उदओ एवं छादाल पणदाल बादाल इगदाल उणदाल अडतीसुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि ओहि दंसणे अपमत्त संजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

अवधिदर्शन अप्रमत्तसंयत गुणस्थान

उन्हीं अवधि दर्शनी अप्रमत्त जीवों के आलाप कहने पर – एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, आहार बिना तीन संज्ञाएँ, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, द्रव्य से एक पुरुष भाव से तीनों वेद, तेरह कषाय, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना परिहार विशुद्धि तीन संयम, एक अवधि दर्शन, द्रव्य से छहों भाव से तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, चार धर्मध्यान, बाईस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा दो करोड़ छियानवे लाख निन्यानवे हजार एक सौ तीन, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक तेतीस सागर, उनतीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, उनसठ प्रकृतियों का बंध, छियत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छयालीस एक सौ पैतालीस एक सौ ब्यालीस एक सौ इकतालीस एक सौ उनतालीस एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार अवधि दर्शन में अप्रमत्तसंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– विषय सरल है कुछ भी विशेष नहीं है बंध, उदय गुणस्थानोक्त है सत्त्व का कथन पहले कर आये है पुन: एक बार कर देते हैं। कोई जीव उपशम अथवा क्षयोपशम सम्यग्दृष्टि हुआ पश्चात संयत हो अप्रमत्त गुणस्थान को प्राप्त हुआ उसके एक सौ छयालीस प्रकृति का सत्त्व है देव आयु सहित। किसी जीव ने देवायु का अभी बन्ध नहीं किया है उक्त सम्यग्दृष्टि के उसके एक सौ पैतालीस प्रकृति का सत्त्व है, कोई वेदक सम्यग्दृष्टि अप्रमत्त गुणस्थान वाले ने अनंतानुबंधी चतुष्क की विसंयोजना कर दी है तथा देवायु का बन्ध किया है उसके एक सौ ब्यालीस प्रकृति का सत्त्व है तथा जिसने देवायु का बन्ध नहीं किया है उसके एक सौ इकतालीस प्रकृति का सत्त्व है। जिसने दर्शन मोहनीय का क्षय किया है तथा देवायु का बन्ध किया है उसके एक सौ उनतालीस तथा जिसने देवायु का बन्ध नहीं किया है उसके एक सौ अड़तीस प्रकृति का सत्त्व पाया जाता है शेष कथन सुगम है। इसी प्रकार सभी गुणस्थानों में समझना चाहिए यानि प्रमत्त गुणस्थान से उपशामक उपशांत मोह तक जानना चाहिए। संख्या का कथन करते हुए प्रमत्त संयत व अप्रमत्त संयत गुणस्थान में अपनी अपनी संख्या के संख्यात वे भाग जीव पाये जाते हैं। परन्तु इतने ही पाये जाते है ऐसा उपदेश वर्तमान में नहीं पाया जाता।

313. अवधि दर्शन अपूर्वकरण गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	अपूर्वकरण गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3
6.	गति	मनुष्य गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	द्रव्य से पुरुष वेद, भाव से 3 वेद
11.	कषाय	13 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	2 (सामायिक, छेदोपस्थापना)
14.	दर्शन	अवधि दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (उपशम, क्षायिक) (क्षपक= एक क्षायिक, उपशामकों में दोनों)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 (4 ज्ञानो.+ 1 दर्शनो.)
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान अथवा 1 शुक्लध्यान
22.	आस्रव	22 (9 योग 13 कषाय)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	42 (उप. 14 क्षपक–28)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीवापेक्षा व एक जीवापेक्षा (उपशा.)– ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त नाना व एक जीवापेक्षा (क्षपक) – अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा (उप.)–ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा–ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 66 सागर (क्षप.) नाना जीवापेक्षा ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा – निरन्तर
30.	भाव	27 (औद.11 + मि.10 + क्षा.2 + औ.2 + पा.2) उपशामक= 26 क्षपक= 25
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	58 गुणस्थानोक्त अथवा चक्षु व अचक्षु दर्शनी के समान
33.	उदय	72 गुणस्थानोक्त
34.	सत्त्व	उप. 146, 145, 142, 141, 139, 138 क्षप. 138

313. ओहि दंसण अपुव्वयरण गुणट्ठाणं

तेसिं ओहि दंसणी अपुव्वयरण जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अपुव्वयरण गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीवसमासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, आहारेण विणा तिण्णि सण्णा*1, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, दव्वेण एग पुरिस वेदो भावेण तिण्णि वेदा, तेरस कसाया, केवल णाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा*2, एग ओहि दंसण, एग सुक्क लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता उवसामगेसु बे सम्मत्ता खवगेसु एग खइय सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, चत्तारि धम्म एगं सुक्कज्झाणं वा, बाबीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खाए बादाल उवसामगेसु चोद्दस खवगेसु अट्ठावीस, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागो, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागो, कालो उवसामगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण छावट्टि सायरोवमाणि सादिरेयाणि*3 खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण वास पुधत्तं एगजीवावेक्खा णिरंतरं, सत्ताबीस भावा उवसामगेसु छब्बीस खवगेसु पणबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, अट्ठावण्ण पयडीणं बंधो, बेसत्तदि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं पणदालुत्तर सयं बादालुत्तर सयं इगदालुत्तर सयं ऊणदालुत्तर सयं व अट्ठतीसुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति

इदि ओहि दंसणे अपुव्वयरण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

अवधिदर्शन अपूर्वकरण गुणस्थान

उन्हीं अवधिदर्शनी अपूर्वकरण जीवों के आलाप कहने पर – एक अपूर्वकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, आहार बिना तीन संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, द्रव्य से एक पुरुष वेद भाव से तीनों वेद, तेरह कषाय, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, एक अवधिदर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक दो सम्यक्त्व क्षपकों में क्षायिक और उपशामकों में दोनों सम्यक्त्व पाये जाते है। संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, चार धर्म अथवा एक शुक्ल ध्यान, बाईस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा ब्यालीस (उपशामक जीव चौदह क्षपक अट्ठाईस), क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग, काल – उपशामक नानाजीवापेक्षा व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपक नाना व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक छ्यासठ सागर क्षपक–नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा – निरंतर, सत्ताईस भाव उपशामक में छब्बीस क्षपक श्रेणी में पच्चीस, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, अट्ठावन प्रकृति का बंध, बहत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस एक सौ पैंतालीस एक सौ बयालीस एक सौ इकतालीस एक सौ उनतालीस एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार अवधि दर्शन में अपूर्वकरण गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :–

*1 जब तक भय प्रकृति का उदय है तब तक तीन संज्ञा होती हैं पश्चात दो संज्ञा रह जाती है उसके बाद जब वेद समाप्त हो जाते हैं तो एक संज्ञा और लोभ कषाय के समाप्त होते ही क्षीण संज्ञा कहलाती है। उपशम श्रेणी वालों के उपशांत तथा क्षपक श्रेणी वालों के क्षीण संज्ञा कहलाती है।

*2 परिहार विशुद्धिसंयम सातवें गुणस्थान तक ही पाया जाता है और सामायिक छेदोपस्थापना संयम नोवें गुणस्थान तक रहता है अत: यहाँ दो संयम कहे हैं। संख्या की अपेक्षा यहाँ क्षपक जीव अट्ठाईस उपशामक चौदह ही पाये जाते हैं। शेष कथन सुगम है कुछ भी व्याख्या करने योग्य नहीं है।

*3 अन्तर उपशामकों में एक जीव का उत्कृष्ट अन्तर कुछ अधिक छ्यासठ सागर कहा है वह क्षयोपशम सम्यक्त्व के समान कहा है क्योंकि अवधि दर्शन के साथ कोई भी जीव छ्यासठ सागर तक रह सकता है उससे अधिक नहीं रह सकता। अत: जो कुछ अधिक कहा है वह उपशम सम्यक्त्व का काल भी जोड़ा गया है इसलिए इतना समय प्राप्त होता है। शेष कथन सुगम है।

314. अवधिदर्शन अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	अनिवृत्तिकरण
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	2 (आहार, भय बिना)
6.	गति	मनुष्य गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	द्रव्य से पुरुष वेद, भाव से तीन वेद
11.	कषाय	7 कषाय*
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	2 (सामायिक, छेदोपस्थापना)
14.	दर्शन	अवधि दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (उपशम, क्षायिक)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 (4 ज्ञानो.+ 1 दर्शनो.)
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान अथवा 1 शुक्लध्यान
22.	आस्रव	16 (9 योग+4 कषाय+3 वेद (नो कषाय)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	42 (उप. 14, क्षपक–28)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवा भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवा भाग
28.	काल	उपशामक नाना व एक जीवापेक्षा ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक नाना व एक जीवापेक्षा ज.उ.–अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उप. नाना जीव– ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीवापेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 66 सागर क्षपक नाना जीवापेक्षा ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीवापेक्षा निरन्तर
30.	भाव	27 (औद.11, क्षयो. 10, क्षा.2, औ.2, पा.2) उप. 26 क्षपक 25
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	58 गुणस्थानोक्त
33.	उदय	72 गुणस्थानोक्त
34.	सत्त्व	उपशामक – 146, 145, 142, 141, 139, 138 क्षपक– 138 क्रमश: क्षय होते होते 103
		* छह नो कषाय की उदय व्युच्छित्ति अपूर्वकरण (आठवे भाग में) गुणस्थान में हो जाती है अत: यहाँ संज्वलन तीन वेद इस प्रकार सात कषाय का उदय पाया जाता है इस प्रकार सात कषाय व नौ योग इस प्रकार सोलह आस्रव हो जाते हैं।

314. ओहिदंसण अणियट्टियरण गुणट्ठाणं

तेसिं ओहि दंसणी अणियट्टियरण गुणट्ठाण जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अणियट्टियरण गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, आहार भयेहिं विणा बे सण्णा, एग मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, दव्वेण एगं पुरिस वेदो भावेण तिण्णि वेदा, सत्त कसाया, केवलणाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, एगं ओहि दंसणं, एगं सुक्क लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता उवसामगेसु बे खवगेसु एग खइय सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, एगं सुक्कज्झाणं वा चत्तारि धम्मज्झाणा, सोलह आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा बादाल उवसामागेसु चोद्दस खवगेसु अट्ठावीस, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो उवसामगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतर उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण वास पुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण छावट्ठि सायरोवमाणि सादिरेयाणि खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एग जीवावेक्खा णिरंतरं, सत्ताबीस भावा उवसामगेसु छब्बीस खवगेसु पणबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, बाबीस पयडीणं बंधो, छावट्ठि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं पणदालुत्तर सयं बादालुत्तर सयं इगदालुत्तर सयं ऊणदालुत्तर सयं व अडतीसुत्तर सयं कमसो खयत्तो तिउत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि ओहि दंसणे अणियट्टियरण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

अवधिदर्शन अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

उन्हीं अवधिदर्शनी अनिवृत्तिकरण जीवों के आलाप कहने पर – एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, आहार भय बिना दो संज्ञाएँ, एक मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, द्रव्य से एक पुरुष वेद भाव से तीन वेद, सात कषाय, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान, सामयिक छेदोपस्थापना दो संयम, एक अवधि दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक दो सम्यक्त्व क्षपकों में एक उपशामकों में दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, एक शुक्ल ध्यान/चार धर्मध्यान, सोलह आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – ब्यालीस उपशामक में चौदह क्षपक में अट्ठाईस, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग, काल – उपशामक नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपकों में नाना व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक छ्यासठ सागर क्षपक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा निरन्तर, सत्ताईस भाव उपशामको में छब्बीस क्षपकों में पच्चीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, बाईस प्रकृतियों का बंध, छ्यासठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छयालीस एक सौ पैंतालीस एक सौ ब्यालीस एक सौ इकतालीस एक सौ उनतालीस एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार अवधि दर्शन में अनिवृत्तिकरण गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– विषय सरल है कुछ भी कथन करने योग्य नहीं है जहाँ जैसा अवसर होगा वैसा कथन करेंगे।

315. अवधिदर्शन सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान

1.	गुणस्थान	सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	1 परिग्रह संज्ञा
6.	गति	मनुष्य गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	अपगत वेद
11.	कषाय	1 लोभ कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	सूक्ष्म साम्पराय
14.	दर्शन	अवधि दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (उपशम, क्षायिक)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 (4 ज्ञानो.+ 1 दर्शनो.)
21.	ध्यान	1 शुक्लध्यान अथवा चार धर्मध्यान*
22.	आस्रव	10 (9 योग + 1 लोभ कषाय)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	42 (उप. 14, क्ष. 28)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवा भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवा भाग
28.	काल	(उपशामक) नाना व एक जीवापेक्षा– ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त, (क्षपक) नाना व एक जीवापेक्षा–ज.व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	(उप.) नाना जीवापेक्षा– ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीवापेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 66 सागर (क्षप.) नाना जीवापेक्षा– ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीवापेक्षा– निरन्तर
30.	भाव	21 (औद.5, मि. 10, क्षा.2, औप.2, पा.2) उपशामक 20 क्षपक– 19
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	17 गुणस्थानोक्त
33.	उदय	60 गुणस्थानोक्त
34.	सत्त्व	उपशामक – 146, 145, 142, 141, 139, 138 गुणस्थानोक्त क्षपक – 102
		* यहाँ चार धर्म ध्यान भावी प्रज्ञापन नय अथवा एक धर्म ध्यान में चारों गर्वित है इस अपेक्षा से यहाँ चार धर्मध्यान कह दिये हैं वास्तव में यदि यहाँ धर्म ध्यान माना जाता है तो एक रुपातीत धर्मध्यान ही बनेगा।

315. ओहि दंसण सुहुमसंपराय गुणट्ठाणं

तेसिं ओहि दंसणी सुहुमसांपराय जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग सुहुमसांपराय गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीवसमासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, एग परिग्गह सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, भावेण अवेदो दव्वेण एग पुरिस वेदा, एयं सुहुम लोह कसाओ, केवल णाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, एग सुहुमसाम्पराय संजमो, एग ओहि दंसणं, एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता खवगेसु खइयसम्मत्ता उवसामगेसु दोण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, एगं सुक्कज्झाणं चत्तारि धम्मज्झाणाणि वा, दस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा बादाल उवसामगेसु चोद्दस खवगेसु अट्ठावीस, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो उवसामगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण*1 अंतोमुहुत्तं, अंतरं उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण वास पुधत्तं*2 एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण छावट्ठि सायरोवमाणि सादिरेयाणि खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण वास पुधत्तं एग जीवावेक्खाए णिरंतरं, इगबीस भावा उवसामगेसु बीस खवगेसु उणबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, सत्तदस पयडीणं बंधो, सट्ठि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं पणदालुत्तर सयं बादालुत्तर सयं इगदालुत्तर सयं उणदालुत्तर सयं उडतीसुत्तर सयं पयडीणं खवगेसु बे उत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि ओहि दंसणे सुहुमसंपराय गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

अवधिदर्शन सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान

उन्हीं अवधिदर्शनी सूक्ष्मसाम्पराय जीवों के आलाप कहने पर – एक सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, एक परिग्रह संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, भाव से अपगत वेद द्रव्य से एक पुरुष वेद, एक सूक्ष्म लोभ कषाय, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान, एक सूक्ष्म साम्पराय संयम, अवधि दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्यसिद्धिक, उपशम क्षायिक दो सम्यक्त्व क्षपक श्रेणी वालों में एक क्षायिक उपशम श्रेणी वालों में दोनों सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, एक शुक्ल ध्यान, दस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा ब्यालीस उपशामक चौदह क्षपक अट्ठाईस, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग, काल – उपशामक नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपक नाना व एक जीवापेक्षा जघन्युत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर – उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट साधिक छयासठ सागर, क्षपक – नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा निरंतर, इक्कीस भाव क्षपक उन्नीस उपशामकों में बीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, सत्रह प्रकृतियों का बंध, साठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छयालीस एक सौ पैंतालीस एक सौ ब्यालीस एक सौ इकतालीस एक सौ उनतालीस एक सौ अड़तीस क्षपकों में एक सौ दो प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार अवधि दर्शन में सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :–

*1 क्षपकों का काल एक जीव व नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त बतलाया है उसमें एक जीव के काल की अपेक्षा संख्यात जीवों का काल संख्यात समय अधिक है क्योंकि संख्यात जीवों का काल संचय किया गया है अत: स्वमेव ही संख्यात समय अधिक हो जाता है।

*2 अन्तर का कथन करते हुए जो उपशामकों में वर्ष पृथक्त्व अन्तर बतलाया है उसका आशय है कोई अवधि दर्शनी जीव उपशम श्रेणी न चढ़े तो वर्ष पृथक्त्व तक नहीं चढ़ता इसके बाद कोई न कोई अवधि दर्शनी जीव अवश्य उपशम श्रेणी चढ़ता है इसी प्रकार क्षपकों का उत्कृष्ट अन्तर होता है। जघन्य अन्तर सुगम है।

बन्ध प्रकृतियाँ गुणस्थानोक्त ही हैं क्योंकि नौवे गुणस्थान में बाईस प्रकृतियों का बन्ध था उनमें से चार संज्वलन एक पुरुष वेद की व्युच्छित्ति हो जाती है। इसलिए सत्रह प्रकृति रह जाती हैं शेष उदय व सत्त्व पूर्वोक्त ही है कोई विशेषता नहीं है।

316. अवधिदर्शन उपशान्तमोह गुणस्थान

1.	गुणस्थान	उपशान्त मोह
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	उपशान्त संज्ञा
6.	गति	मनुष्य गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	अपगत वेद
11.	कषाय	0 (अकषाय)
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	यथाख्यात चारित्र
14.	दर्शन	अवधि दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (उपशम सम्यक्त्व, क्षायिक सम्यक्त्व)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 (4 ज्ञानो.+ 1 दर्शनो.)
21.	ध्यान	एक शुक्लध्यान
22.	आस्रव	9 योग
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	14 (संख्यात)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवां भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवां भाग
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 66 सागर
30.	भाव	19 (औद.4, क्षयो. 10, क्षा.1, औप. 2, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	1 साता वेदनीय गुणस्थानोक्त
33.	उदय	59 गुणस्थानोक्त
34.	सत्त्व	146, 145, 142, 141, 139, 138 गुणस्थानोक्त

316. ओहि दंसण उवसंतमोह गुणट्ठाणं

तेसिं ओहि दंसणी उवसंत जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग उवसंत मोह गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीवसमासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, उवसंत सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, अपगत वेदा, अकसायी, केवल णाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, एग जहाक्खाद संजमो, ओहि दंसणं, सुक्क लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, एगं सुक्कज्झाणं, णव आसवा, चोदस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा चोद्दस, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं – णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण वास पुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण छावट्ठि सायरोवमाणि सादिरेयाणि, उणबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, एयं सादा वेयणीओ बंधो, ऊणसट्ठि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं पणदालुत्तर सयं बादालुत्तर सयं इगदालुत्तर सयं उणदालुत्तर सयं अडतीसुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि ओहि दंसणे उवसंत मोह गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

अवधिदर्शन उपशान्तमोह गुणस्थान

उन्हीं अवधिदर्शनी जीवों में उपशान्त जीवों के आलाप कहने पर – एक उपशान्त मोह गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, उपशान्त संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, अपगत वेद, अकषायी, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान, एक यथाख्यात चारित्र (संयम), अवधि दर्शन, शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक उपशम दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, एक शुक्ल ध्यान, नौ आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा चौदह, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग, काल – नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक छ्यासठ सागर, उन्नीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक साता वेदनीय का बंध, उनसठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस – एक सौ पैंतालीस – एक सौ ब्यालीस – एक सौ इकतालीस एक सौ उनतालीस एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार अवधि दर्शन में उपशान्त मोह गुणस्थान समाप्त हुआ।

317. अवधिदर्शन क्षीणमोह गुणस्थान

1.	गुणस्थान	क्षीण मोह
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	क्षीण संज्ञा
6.	गति	मनुष्य गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	अपगत वेद
11.	कषाय	0 अकषाय (क्षीण कषाय)
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	यथाख्यात चारित्र
14.	दर्शन	अवधि दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 (4 ज्ञानो.+ 1 दर्शनो.)
21.	ध्यान	दो शुक्लध्यान
22.	आस्रव	9 (योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	28
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवां भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवां भाग
28.	काल	नाना व एक जीवापेक्षा – अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व एक जीव अपेक्षा – निरन्तर
30.	भाव	18 (औ.4, मि. 10, क्षा.2, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	1 साता वेदनीय गुणस्थानोक्त
33.	उदय	57 गुणस्थानोक्त
34.	सत्त्व	101 गुणस्थानोक्त

317. ओहि दंसण खीणमोह गुणट्ठाणं

तेसिं ओहि दंसणी खीणकसायी जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग खीणकसाय गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, खीण सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, एग अपगतवेदा, अकसायी, केवलणाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, जहाक्खाद संजमो, ओहि दंसणं, एग सुक्क लेस्सा, भव्व सिद्धिया, खइय सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, पुव्वस्स बे सुक्कज्झाणं, णव आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुल कोडीणं, संखावेक्खा अट्ठबीस, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणेगजीवावेक्खा अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एग जीवावेक्खा णिरंतरं, अट्ठदस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, एग सादावेयणीओ बंधो, सत्तावण्ण पयडीणं उदओ एवं एगुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि ओहि दंसणे खीणमोह गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

अवधिदर्शन क्षीणमोह गुणस्थान

उन्हीं अवधि दर्शनी क्षीण कषायी जीवों के आलाप कहने पर – एक क्षीण कषाय गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, क्षीण संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, अपगत वेद, अकषायी, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान, यथाख्यात संयम, अवधि दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, पूर्व के दो शुक्ल ध्यान, नौ आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा अट्ठाईस, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल – नाना व एकजीवापेक्षा अन्तर्मुहूर्त, अंतर – नाना जीवापेक्षा जघन्य अंतर एकसमय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा निरंतर, अठारह भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक साता का बंध, सत्तावन प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ एक प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार अवधिदर्शन में क्षीणमोह गुणस्थान समाप्त हुआ।

318. केवल दर्शन सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	सयोग केवली, अयोग केवली	सयोग, अयोग केवली	सयोग केवली
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त , अपर्याप्त	सं.पं.पं.	सं.पं. अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	4 व 2 व 1	4, 1 प्राण	2, 1 प्राण
5.	संज्ञा	0	–	–
6.	गति	मनुष्य गति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	7 (5 सामान्य, 2 समुद्घात के समय), अयोगी	5 व अयोग	2
10.	वेद	0	0	0
11.	कषाय	0	0	0
12.	ज्ञान	केवलज्ञान	–	–
13.	संयम	यथाख्यात चारित्र	–	–
14.	दर्शन	केवल दर्शन	–	–
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या/अलेश्या	शुक्ल लेश्या/अलेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व	–	–
18.	संज्ञी	नो संज्ञी, नो असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक/अनाहारक (दोनों)	दोनों
20.	उपयोग	2 (केवलज्ञान) + केवलदर्शनोपयोग)	युगपत्	–
21.	ध्यान	सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती व्युपरत क्रिया निवर्तीनि	सू.क्रि.व्यु.,क्रिया नि.	कोई ध्यान नहीं
22.	आस्रव	7 योग (4–5, अप.2)	5	2
23.	जाति	14 लाख	–	–
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़	–	–
25.	संख्या	898502+598	89502+598	100
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवा भाग व सर्वलोक*1		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवा भाग व सर्वलोक		
28.	काल	नाना जीवापेक्षा – सर्वकाल एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त*2 उ. कुछ कम एक कोटि पूर्व		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर एक जीवापेक्षा – निरन्तर, अयोग केवली नाना जीवापेक्षा ज. एक समय उ. 6 माह		
30.	भाव	14 (औद.3, क्षा.9, पा.2) अयोग केवली = 13 भाव		
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ	उ. 525 धनुष	
32.	बन्ध	1 गुणस्थानोक्त	अबंध	
33.	उदय	42 गुणस्थानोक्त	12 प्रकृति	
34.	सत्त्व	85 गुणस्थानोक्त	द्वितचरम समय= 85 चरम समय में 12/13	

*1 अयोग केवली का क्षेत्र व स्पर्शन लोक का असंख्यात वां भाग ही बनता है।

*2 अयोग केवली का काल नाना व एक जीव की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त ही होता है।

318. केवल दंसण सामण्णं

तेसिं दंसण मग्गणाणुवादेण केवलदंसण सामण्णालाव भण्णमाणे अत्थि-सजोग अजोग केवली बे गुणट्ठाणा अपज्जत्तेसु एग सजोगी गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीवसमासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, चत्तारि बे एग पाणा पज्जत्तेसु चदु एग अपज्जत्तेसु बे एग पाणा, खीण सण्णा, एग मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, सत्त जोगा अजोगो वा पज्जत्तेसु पंच अपज्जत्तेसु बे जोगा, अवेदी, अकसायी, एग केवलणाणं, एग जहाक्खाद संजमो, एग केवलदंसणं, सुक्कलेस्सा व अलेस्सा अपज्जत्तेसु सुक्क लेस्सा, भव्व सिद्धिया, एग खइय सम्मत्तं, णो सण्णी णो असण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि, बे उवजोगा जुगवं, बे सुक्कज्झाणा पज्जत्तेसु दोण्णि अपज्जत्तेसु झाण रहिदो, सत्त आसवा पज्जत्तेसु पंच अपज्जत्तेसु बे आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुल कोडीणं, संखावेक्खा अट्ठ लक्ख अट्ठणउदि सहस्स बे उत्तर पंच सयं व अट्णवदि उत्तर पंच सयं, अपज्जत्तेसु एग सयं खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व सव्वलोयो, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व सव्वलोगो, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पुव्वकोडीणं देसूणं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं अजोगीणं णाणा जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छम्मास, चोद्दस भावा अजोगीणं तेरस भावा, जहण्णमगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, एग सादावेयणीओ बंधो अजोगीसु अबंधो वा, सजोगीसु बादाल अजोगीसु बारस पयडीणं उदओ, पंचासीदि पयडीणं सच्चं अजोगीसु बे चरिमे पंचासीदि चरिमे बारस तेरस पयडीणं सच्चं होंति।

इदि केवल दंसणे सामण्णालाव सम्मत्ता।

केवल दर्शन सामान्य

उसी दर्शन मार्गणा के अनुवाद से केवल दर्शन का सामान्यलाप कहने पर-सयोग अयोग केवली दो गुणस्थान पर्याप्त में दोनों अपर्याप्त में एक सयोग केवली गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीवसमास, छह पर्याप्ति छह अपर्याप्ति, चार-दो व एक प्राण-पर्याप्त में चार व एक अपर्याप्त में दो व एक प्राण, क्षीण संज्ञा, एक मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, सात योग व अयोग पर्याप्त में पाँच योग व अयोग अपर्याप्त में दो योग, अवेद, अकषाय, एक केवलज्ञान, एक यथाख्यात संयम, एक केवलदर्शन, शुक्ल लेश्या व अलेश्या अपर्याप्त में एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, एक क्षायिक सम्यक्त्व, नो संज्ञी नो असंज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों, दो उपयोग युगपत, सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाति-व्युपरत क्रिया निवर्तीनि दो शुक्ल ध्यान अपर्याप्त में ध्यान रहित, सात आस्रव पर्याप्त में पाँच अपर्याप्त में दो आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा-आठ लाख अन्ठानवे हजार पाँच सौ दो व पांच सौ अट्ठानवे अपर्याप्त में सौ, क्षेत्रापेक्षा-लोक का असंख्यातवां भाग व सर्वलोक, स्पर्शन-लोक का असंख्यातवां भाग व सर्वलोक, काल-नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंर्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम एक कोटि पूर्व, अंतर-नानाजीवापेक्षा निरंतर अयोग केवली नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह मास, चौदह भाव अयोगी में तेरह भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक सातावेदनीय का बंध अयोगी में अबंध, सयोगी में ब्यालीस प्रकृतियों अयोगी में बारह प्रकृतियों का उदय, सयोगी में पचासी अयोगी के द्विचरम समय में पचासी चरम समय बारह/तेरह प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार केवलदर्शन में सामान्यालाप समाप्त हुआ।

319. केवल दर्शन सयोग केवलीजिन

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	सयोग केवली	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्तक	सं.पं.पं.	सं.पं. अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	4	4	2/1 प्राण
5.	संज्ञा	क्षीण संज्ञा	–	–
6.	गति	मनुष्य गति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	7	5	2
10.	वेद	अवेद	–	–
11.	कषाय	अकषाय	–	–
12.	ज्ञान	केवलज्ञान	–	–
13.	संयम	यथाख्यात	–	–
14.	दर्शन	केवल दर्शन	–	–
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्यत्व	भव्य	–
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक	–	–
18.	संज्ञी	नो संज्ञी, नो असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	दोनों	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	दो	दो	दो
21.	ध्यान	सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती	–	–
22.	आस्रव	7	5	2
23.	जाति	14 लाख	–	–
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़	–	–
25.	संख्या	898502	–	–संख्यात (100)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवा भाग व सर्वलोक		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवा भाग व सर्वलोक		
28.	काल	नाना जीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम एक कोटि पूर्व अपर्या. संख्यात समय		
29.	अन्तर	नाना व एक जीवपेक्षा निरंतर अपर्याप्त ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व		
30.	भाव	14 (औद.3, क्षा.9, पा.2)		
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ	उ. 525 धनुष	
32.	बन्ध	1 साता		
33.	उदय	42		
34.	सत्त्व	85		

319. केवलदंसण सजोगिजिणं

तेसिं केवलदंसणी सजोगि–गुणट्ठाण–जीवाणामालाव–भण्णमाणे अत्थि – एग सजोगकेवली गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीवसमासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, चत्तारि पाणा अपज्जत्तेसु बे एग पाणा, खीण सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, सत्त जोगा पज्जत्तेसु पंच अपज्जत्तेसु बे जोगा, अवेदी, अकषायी, केवलणाणं, एग जहाक्खाद संजमो, केवल दंसणं, एग परम सुक्क लेस्सा, भव्व सिद्धिया, खइय सम्मत्तं, णो सण्णी णो असण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, बे उवजोगा जुगमं, एग सुहुमक्किया पडिपाडि सुक्कज्झाणं अपज्जत्तेसु णत्थिझाणं, सत्त आसवा पज्जत्तेसु पंच अपज्जत्तेसु बे आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अट्ठ लक्ख अट्ठणउदि सहस्स बे उत्तर पंच सयं अपज्जत्तेसु सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व सव्वलोए, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व सव्वलोए, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पुव्व कोडि देसूणं, अंतरं णाणेगजीवावेक्खा णिरंतरं, चोद्दस भावा, जहण्ण मवगहणं अद्धुठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, एगं सादावेयणीओ बंधो, बादाल पयडीणं उदओ एवं पंचासीदि पयडीणं सच्चं होंति।

इदि केवल दंसणे सजोगिजिणं आलाव सम्मत्ता।

केवलदर्शन सयोगकेवलीजिन

अब केवलदर्शनी सजोगीजिन जीवों के आलाप कहने पर – एक सजोगकेवली गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छ अपर्याप्ति, चार प्राण अपर्याप्त में दो–एक प्राण, क्षीण संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, सात योग पर्याप्तक में पाँच अपर्याप्तक में दो योग (समुद्घात के समय), अवेदी, अकषायी, केवलज्ञान, यथाख्यात संयम, केवल दर्शन, परमशुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, नो संज्ञी नो असंज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, दो उपयोग युगपत्, एक सूक्ष्मक्रिया प्रतिपाति शुक्ल ध्यान, सात आस्रव पर्याप्तक में पाँच अपर्याप्तक में दो आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – आठ लाख अट्ठानवे हजार पाँच सौ दो, अपर्याप्तक में सौ, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग व सर्वलोक, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग व सर्वलोक, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम एक कोटि पूर्व, अंतर – नाना व एक जीवापेक्षा निरंतर, चौदह भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक साता वेदनीय प्रकृति का बंध, ब्यालीस प्रकृतियों का उदय एवं पचासी प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार केवलदर्शन में सयोग केवली जिन आलाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– पर्याप्ति–अपर्याप्ति यद्यपि यहाँ कोई शरीर संबंधी अपूर्णता नहीं है। किन्तु एक अवस्था ऐसी होती है जिस समय औदारिक शरीर के द्वारा पौद्गलिक वर्गणाओं को ग्रहण नहीं किया जाता है तथा मनोयोग और वचन योग भी नहीं होते हैं, उस समय कार्मण काय योग+औदारिक काय योग दोनों से मिलकर कर्म नो कर्म वर्गणाओं को ग्रहण करते हैं, यही अपर्याप्तक अवस्था है तथा एक अवस्था ऐसी भी आती है जिस समय कार्माण शरीर के द्वारा काययोग होता है उस समय कर्म वर्गणा तो ग्रहण होती है, किन्तु नो कर्म वर्गणा ग्रहण नहीं होती उसे ही अनाहारक कहा जाता है, केवली के ये दोनों अवस्था होती हैं इसलिए उन्हें अपर्याप्तक व अनाहारक भी कहते हैं। पर्याप्तक में दो मनोयोग दो वचन योग व औदारिक काय योग होता है इस अवस्था में केवली आहारक ही होते है। केवली के पाँचों इन्द्रियों का कार्य समाप्त हो जाने से तथा भाव मन न होने से चार प्राण (काय बल, वचनबल, आयु, श्वासोश्वास) होते है। अपर्याप्त अवस्था में वचन बल व श्वासोश्वास न होने से मात्र दो प्राण तथा अनाहारक में एक आयु प्राण ही होता है ये सारी अवस्था समुद्घात के समय बनती है। जो समुद्घात मात्र आठ समय में पूर्ण हो जाता है शेष समय केवली पर्याप्तक ही रहते हैं। केवली जिन सामान्य अवस्था में लोक के असंख्यात वे भाग में रहते हैं वही उनका स्पर्शन क्षेत्र है समुद्घात के समय लोक के असंख्यात वे भाग में संख्यात वे भाग में असंख्यात बहुभाग में और सर्वलोक में रहते हैं। बन्ध प्रकृति एक साता वेदनीय का ईर्यापथ आस्रव होता है उपचार से उसी का बन्ध कहा है उदय ब्यालीस प्रकृति का तीर्थंकर सहित यदि तीर्थंकर नहीं है तो इकतालीस प्रकृति का उदय पाया जाता है। सत्त्व प्रकृति यदि तीर्थंकर आहारकद्विक का सत्त्व है तो पिच्चासी यदि तीर्थंकर नहीं है आहारकद्विक है तो चौरासी यदि आहारकद्विक नहीं है तीर्थंकर है तो इक्यासी यदि तीर्थंकर आहारकद्विक नहीं है तो अस्सी प्रकृति का सत्त्व पाया जाता है। यहाँ आहारकद्विक के साथ आहारक बंधन व संघात भी रहता है इसलिए ये चारों साथ रहती हैं, अगर दो का अभाव हैं तो चारों का ही अभाव होगा दो के साथ दो का सद्भाव होगा ही शेष कथन सुगम है।

320. केवल दर्शन अयोगिजिन

1.	गुणस्थान	अयोग केवली गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	1 प्राण (आयु)
5.	संज्ञा	क्षीण संज्ञा
6.	गति	मनुष्य गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	अयोग
10.	वेद	0 (अपगतवेद)
11.	कषाय	अकषाय
12.	ज्ञान	केवलज्ञान
13.	संयम	यथाख्यात चारित्र
14.	दर्शन	केवल दर्शन
15.	लेश्या	अलेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक
18.	संज्ञी	नो संज्ञी, नो असंज्ञी
19.	आहारक	अनाहारक
20.	उपयोग	2 (एक ज्ञानो., एक दर्शनोपयोग
21.	ध्यान	समुच्छिन्न क्रिया प्रतिपाति
22.	आस्रव	0 अनास्रव
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	598
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवा भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवा भाग
28.	काल	नाना जीव व एक जीवापेक्षा – अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. 6 माह एक जीवापेक्षा – निरन्तर
30.	भाव	13 (औद.2, क्षायि.9, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	0
33.	उदय	12
34.	सत्त्व	85 द्विचरम समय 12/13 चरम समय

320. केवलदंसण अजोगीजिणं

तेसिं केवलदंसणी अजोगिजिण जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि, – एग अजोगकेवली गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, एग आऊ पाणा, खीण सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, अजोगी, अवगद वेदी, अकसायी, एग केवलणाणं, एग जहाक्खाद संजमो, एग केवल दंसणं, अलेस्सा, भव्वसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णो सण्णी णो असण्णी, अणाहारिणो, बे उवजोगा जुगमं, समुच्छिण्णक्किया पडिपाति एगं सुक्कज्झाणं, अणासवो, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अट्ठणउदि उत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणेगजीवावेक्खा अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण छम्मास एग जीवावेक्खा णिरंतरं, तेरस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, अबंधो, बारस पयडीणं उदओ एवं बेचरिमे पंचासीदि चरिमसमये बारस तेरस पयडीणं सच्चं होंति।

इदि केवल दंसणे अजोगिजिणं आलाव सम्मत्ता।

केवलदर्शन अयोगीजिन

उन्हीं केवलदर्शनी अयोगीजिन जीवों के आलाप कहने पर – एक अयोगकेवली गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, एक आयु प्राण, क्षीण संज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, अयोगी, अपगत वेदी, अकषायी, केवलज्ञान, यथाख्यात संयम, केवल दर्शन, अलेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, नो संज्ञी नो असंज्ञी, अनाहारक, दो उपयोग युगपत्, व्युपरतक्रिया निवर्तीनि (समुच्छिन्न क्रिया प्रतिपाती एक शुक्ल ध्यान, अनास्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पाँच सौ अट्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग, काल – नाना व एक जीवापेक्षा अंतर्मुहूर्त, अंतर – नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह माह एक जीवापेक्षा निरंतर, तेरह भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, अबंध, बारह प्रकृतियों का उदय एवं द्वि चरम समय में पचासी चरम समय में 12/13 प्रकृति का सत्त्व होता है।

इस प्रकार केवलदर्शन में अयोगिजिनों का आलाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– योग समाप्त हो जाने से अनास्रव हो जाते हैं। बालद्ध अन्तर्मुहूर्त कहा है वह काल पाँच ह्स्व अक्षर (अ इ उ ऋ लृ) बोलने में जितना समय लगता है उतना समय चौदहवें गुणस्थान का है उसके पश्चात् आत्मा सिद्धि शिला के ऊपर अन्तिम वात वलय में जाकर विराजमान हो जाती है उसे ही मोक्ष कहते हैं। अंतर की अपेक्षा कथन करने पर अधिक से अधिक छ माह तक कोई जीव मोक्ष न जाये उसके बाद नियम से कोई न कोई जीव मोक्ष जाता ही है क्योंकि छ माह आठ समय में छ सौ आठ जीव नियम से निर्वाण को प्राप्त होते हैं अगर छ माह तक न जाये तो आठ समयों में जाते हैं। द्वि चरम अर्थात् अन्तिम समय से एक समय पहले पिच्चासी प्रकृतियों में से एक समय में एक साथ तिहत्तर अथवा बहत्तर प्रकृति का क्षय कर देने से अन्तिम समय में बारह अथवा तीर्थंकर सहित तेरह प्रकृतियों का क्षय कर देते हैं। शेष कथन सुगम है।

प्रश्न–सिद्ध जीवों का निवास कहाँ पर है ?

उत्तर– तनुवात वलय के 1500 वें भाग में उत्कृष्ट अवगाहना वाले सिद्ध रहते हैं तथा 900000 (नो लाख) वे भाग में जघन्य अवगाहना (3½ हाथ) वाले सिद्ध रहते हैं। क्योंकि तनु वातवलय सिद्धलोक के पास 1575 धनुष की है। अत: 1575/525 =3 धनुष हुए। मनुष्यों के शरीर की अवगाहना व्यवहार अंगुल से मापी जाती है जबकि वातवलय प्रमाणांगुल से मापे जाते हैं अत: प्रमाणांगुल के व्यवहारांगुल बनाने पर=3X500=1500 होते हैं। 1575 धनुष के व्यवहार धनुष बनाने पर 787500 धनुष बने पुन: हाथ बनाने पर 787500X4=3150000 इसमें 3½ का भाग देने पर 3150000/3½=900000 प्राप्त हुए अत: सिद्ध हुआ कि उत्कृष्ट अवगाहना वाले सिद्ध 1500 वें भाग में जघन्य अवगाहना वाले 900000 (नौ लाख) वें भाग में विराजमान रहते है।

321. कृष्ण नील लेश्या सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	1–4	1–4	1,2,4
2.	जीवसमास	14 7 पर्या. 7 अपर्या.	7	7
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	3,4,5,6,7,7,8,9,10	10,9,8,7,6,4	7,7,6,5,4,3
5.	संज्ञा	4	4	4
6.	गति	चारों गति	3 गति (देवगति बिना)	4
7.	इन्द्रिय	1–5	–	–
8.	काय	षट्काय	–	–
9.	योग	13 योग (आहारकद्विक बिना)	10 योग	3 योग
10.	वेद	3	–	–
11.	कषाय	25 कषाय	–	–
12.	ज्ञान	6 ज्ञान	–	5 ज्ञान (कुअवधि बिना)
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	3 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	कृष्ण, नील	–	–
16.	भव्य	भव्य, अभव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	6	–	3 (क्षयो., मि., सा.)
18.	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	आहारक, अनाहारक
20.	उपयोग	9 (6 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)	–	8 (कुअवधिज्ञान के बिना)
21.	ध्यान	10	–	–
22.	आस्रव	55 (25क.+13 योग.+5 मि.+12 अ.)	52 (25+10+5+12)	45 (25+3+5+12)
23.	जाति	84 लाख	80 लाख (देव के बिना)	84 लाख
24.	कुलकोटि	199½ लाख करोड़	173½ लाख करोड़	199½ लाख करोड़
25.	संख्या	अनंतानंत		
26.	क्षेत्र	सर्वलोक		
27.	स्पर्शन	सर्वलोक		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 33 सागर व कुछ अधिक 17 सागर*		
29.	अन्तर	नाना जीव अपेक्षा – निरन्तर एक जीव अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 33 सागर		
30.	भाव	37 सामा. (औद. 17, क्षयो.15, क्षा.1, औप.1, पा.3), पर्या.36, अपर्या.34		
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग उ. 1000 योजन		
32.	बन्ध	118 (आहारक द्विक बिना) क्योंकि कृष्ण नील लेश्या में 118 प्रकृति ही बन्ध योग्य है।		
33.	उदय	119 (आहारक द्विक व तीर्थंकर बिना) कृष्ण, नील लेश्या में आ.द्वि. व तीर्थंकर प्रकृति का उदय नहीं होता अत: उदय योग्य 119 प्रकृति है।		
34.	सत्त्व	148		
		* अपर्याप्तक का काल अन्तर्मुहूर्त होता है।		

321. किण्हणील लेस्सा सामण्णं

अह लेस्सा मग्गणाणुवादेण किण्ह णीललेस्साजुत्त सामण्ण जीवाणामालावभण्णमाणे अत्थि – एगत्तो चउरो गुणट्ठाणं अपज्जत्तेसु एग बे चदु तिण्णि गुणट्ठाणा, चोद्दस जीवसमासा सत्त पज्जत्तेसु सत्त अपज्जत्तेसु, छ पंच चउ पज्जत्ती छ पंच चउ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस णव अट्ठ सत्त छ चदु पाणा अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छ पंच चउ ति पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि, पज्जत्तेसु देवेण गदि विणा तिण्णि गदी अपज्जत्तेसु चत्तारि*[1] गदी, एयत्तो पंचिंदियाणि, छक्काया, तेरस जोगा पज्जत्तेसु*[2] दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, छण्णाणाणि अपज्जत्तेसु विभंगणाणेण विणा पंच णाणाणि, एग असंजमो, केवल दंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, किण्ह णील बे लेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्वसिद्धिया दोण्णि, छ सम्मत्ता मिच्छत्त सासणसम्मामिच्छत्त खओवसमिय उवसम खइय अपज्जतेसु मिस्स उवसम खइय*[3] विणा तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी असण्णी दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, णव उवजोगा अपज्जत्तेसु अट्ठ उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द बे धम्म दस झाणाणि, पणवण्ण आसवा पज्जत्तेसु वावण्ण अपज्जत्तेसु पणदाल आसवा, पज्जत्तेसु देवेण विणा असीदि लक्ख जादी अपज्जत्तेसु चउरासीदि लक्ख जादी, पज्जत्तेसु अद्ध तिसत्तदि उत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं अपज्जत्तेसु अद्ध णवणउदि उत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अणंताणंत, खेत्तावेक्खा सव्वलोयो, फासावेक्खा सव्वलोयो, कालो*[4] णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि सादिरेयाणि सत्तदस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, अंतरं*[5] णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, सामण्णेण सत्ततीस पज्जत्तेसु छत्तीस अपज्जत्तेसु चौतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजणसहस्सं, अट्ठदसुत्तर सयं पयडीओ बंधो, उणबीसुत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि लेस्सा मग्गणासु किण्हणील लेस्सा सामण्णालाव सम्मत्ता।

कृष्ण नील लेश्या सामान्य

अब लेश्या मार्गणा द्वारा कृष्ण नील लेश्यायुक्त सामान्य जीवों के आलाप कहने पर – एक से चार गुणस्थान अपर्याप्त में एक दो चार (तीन) गुणस्थान, चौदह जीव समास (सात पर्याप्त सात अपर्याप्त), छह – पाँच – चार पर्याप्ति छ – पाँच – चार अपर्याप्ति, दस – नौ – आठ – सात – छह – चार प्राण अपर्याप्त में सात सात– छ – पाँच – चार – तीन प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति पर्याप्त में देवगति बिना तीन गति अपर्याप्त में चारों गति, एक से पाँच इन्द्रिय, छहों काय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीनों वेद, पच्चीस कषाय, छह ज्ञान अपर्याप्त में पाँच ज्ञान (कुअवधि) बिना, असंयम, केवलदर्शन बिना तीन दर्शन, कृष्ण नील दो लेश्या, भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक दोनों, मिथ्यात्व, सासादन,सम्यग्मिथ्यात्व, उपशम, क्षयोपशम क्षायिक छः सम्यक्त्व अपर्याप्तक में मिथ्यात्व सासादन क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी दोनों, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, नौ उपयोग अपर्याप्त में आठ उपयोग, दस ध्यान, पचपन आस्रव पर्याप्त में बावन अपर्याप्त में पैंतालीस आस्रव, चौरासी लाख जाति पर्याप्त में देव बिना अस्सी लाख जाति, पर्याप्त में एक सौ साढ़े तिहत्तर लाख करोड़ अपर्याप्त में एक सौ साढ़े निन्यानवे लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – अनंतानंत, क्षेत्रापेक्षा – सर्वलोक, स्पर्शन सर्वलोक, काल – नाना जीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट तेतीस सागर व साधिक सत्तरह सागर, अंतर – नाना जीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट साधिक तेतीस सागर, सामान्य से सेंतीस पर्याप्तक में छत्तीस अपर्याप्तक में चौतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ अठारह प्रकृतियों का बंध, एक सौ उन्नीस प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार लेश्या मार्गणा में कृष्ण नील लेश्या का सामान्यालाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– *[1] भवनत्रिक देवों की अपर्याप्तक अवस्था में तीनों अशुभ लेश्या पायी जाती हैं इसलिए अपर्याप्त अवस्था में चार गति तथा उन्हीं की पर्याप्त अवस्था में एक मात्र पीत लेश्या पायी जाती है इसलिए पर्याप्त अवस्था में तीन गति कहीं हैं।

*[2] यहाँ आहारक काययोग नहीं होता है इसलिए तेरह योग कहे हैं अपर्याप्त अवस्था में तीन पर्याप्त अवस्था में दस योग हैं।

*[3] पर्याप्त अवस्था में छः सम्यक्त्व पाये जाते हैं, किंतु अपर्याप्त अवस्था में क्षायिक सम्यक्त्व नहीं पाया जाता क्योंकि अपर्याप्त अवस्था में क्षायिक सम्यक्त्व यदि अशुभ लेश्या में पाया जाता है तो मात्र कापोत में ही पाया जाता है।मिश्र सम्यक्त्व व प्रथमोपशम सम्यक्त्व में मरण नहीं होता इसलिए वे भी नहीं पाये जाते। क्षयोपशम सम्यक्त्व छटवे नरक से जब कोई जीव नारकी मरण कर मनुष्यगति में आ रहा है उस समय अपर्याप्त अवस्था में सम्यक्त्व के साथ कृष्ण लेश्या पायी जाती है।

*[4] कृष्ण लेश्या की सातवे नरक में उत्कृष्ट स्थिति प्राप्त होती है नील लेश्या की पाँचवे नरक में इस प्रकार उत्पन्न होने के अन्तर्मुहूर्त पहले तथा वहाँ से निकलने के अन्तर्मुहूर्त बाद तक उक्त लेश्या पायी जाती है इसलिए साधिक कहा है।

*[5] अन्तर निकालते समय कोई जीव एक पूर्व कोटि के मनुष्यों में उत्पन्न हुआ पश्चात् गर्भ से लेकर 8 वर्ष के भीतर छः अन्तर्मुहूर्त शेष रहने पर कृष्ण लेश्या रूप से स्वयं को परिणमाकर प्राप्त हुआ इस प्रकार कृष्ण लेश्या का प्रारंभ कर क्रम से नील लेश्या कापोत आदि शुक्ल लेश्या में परिपाटी क्रम से जाकर अन्तर करता हुआ संयम ग्रहण किया तीन शुभ लेश्याओं में जीवन भर रहा पुनः तेतीस सागर की आयु वाले देवों में उत्पन्न हुआ, पश्चात् आयु पूर्ण कर मनुष्यों में उत्पन्न होकर क्रमशः शुक्ल पद्म तेज कापोत नील के बाद कृष्ण लेश्या रूप परिणमन किया। इस प्रकार दस अन्तर्मुहूर्त कम आठ वर्ष से हीन पूर्व कोटि अधिक तेतीस सागर प्रमाण अन्तर प्राप्त हुआ। इसी प्रकार नील लेश्या का जानना चाहिए। अन्तर इतना है नील लेश्या आठ अन्तर्मुहूर्त कम प्राप्त होता है। बंध प्रकृतियाँ एक सौ अठारह हैं क्योंकि तीर्थंकर प्रकृति का बंध होता है किंतु आहारकद्विक का बंध नहीं होता इसी प्रकार तीर्थंकर आहारकद्विक का उदय न होने से उदय योग्य एक सौ उन्नीस प्रकृति हैं।

322. कृष्ण लेश्या मिथ्यात्व गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	मिथ्यात्व	–	–
2.	जीवसमास	14 जीवसमास, पर्याप्त, अपर्याप्त	7 पर्याप्त जीवसमास	7 अपर्याप्त जीव समास
3.	पर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति, अपर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति	6,5,4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	3–10	4,6,7,8,9,10 प्राण	7,7,6,5,4,3
5.	संज्ञा	4	–	–
6.	गति	चारों गति	3 गति (देवगति बिना)	4
7.	इन्द्रिय	1–5	–	–
8.	काय	षट्काय	–	–
9.	योग	13 योग (आहारक द्विक के बिना)	10 योग	3 योग (औदा.मि.,वै.मि.,का. काययोग)
10.	वेद	3 वेद	–	–
11.	कषाय	25 कषाय	–	–
12.	ज्ञान	3 कुज्ञान	–	2 कुज्ञान
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	कृष्ण	–	–
16.	भव्य	भव्य, अभव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	5 उपयोग	–	4 उपयोग (कुअवधिज्ञान के बिना)
21.	ध्यान	8 (4 आर्त्त, 4 रौद्र)	–	–
22.	आस्रव	55(25क.+5मि.+12अवि.+13यो.)	52 (25+12+5+10)	45 (25+5+12+3)
23.	जाति	84 लाख	80 लाख	84 लाख
24.	कुलकोटि	199½ लाख करोड़	173½ लाख करोड़	199½ लाख करोड़
25.	संख्या	अनंतानंत		
26.	क्षेत्र	सर्वलोक		
27.	स्पर्शन	सर्वलोक		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 33 सागर अपर्या. अंतर्मुहूर्त		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर, एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम 33 सागर		
30.	भाव	सामान्य से 29 (औद.16, मि.10, पा.3)	पर्याप्त 28 (औद.15 मि.10 पा.3)	अपर्याप्त 28 (औद.16 मि.9 पा.3)
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग	उ. 1000 योजन	
32.	बन्ध	117 (तीर्थंकर बिना)		
33.	उदय	117 (सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, तीर्थंकर, आहारक द्विक बिना)		
34.	सत्त्व	147 (तीर्थंकर बिना)– कृष्ण लेश्या के साथ मिथ्यात्व गुणस्थान में तीर्थंकर प्रकृति का सत्त्व नहीं पाया जाता यद्यपि कृष्ण लेश्या के साथ सम्यक्त्व में तो तीर्थंकर प्रकृति का सत्त्व पाया जाता है परन्तु तीर्थंकर प्रकृति की सत्ता वाला नरक जाने के सम्मुख होता है उस समय अन्तर्मुहूर्त के लिए मिथ्यात्व को प्राप्त होता है, और उस समय मात्र एक कापोत लेश्या ही होती है। क्योंकि कापोत लेश्या के साथ ही नरक जा सकता है अन्य लेश्या में नहीं अत: मिथ्यात्व व कृष्ण लेश्या के साथ तीर्थंकर प्रकृति की सत्ता नहीं होती।		

322. किण्ह लेस्सा मिच्छत्त गुणट्ठाणं

तेसिं किण्ह लेस्सा जीवाणं मिच्छत्त गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि – एग मिच्छत्त गुणट्ठाणं, पज्जत्तापज्जत्तेसु सत्त सत्त चोद्दस जीव समासा, छ पंच चउ पज्जत्ती छ पंच चउ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस णव अट्ठ सत्त छ चउ पाणा अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छ पंच चउ ति पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी पज्जत्तेसु देवेण विणा तिण्णिगदी अपज्जत्तेसु चत्तारि गदी, एयत्तो पंचिदियाणि, छक्काय, तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि अपज्जत्तेसु बे अण्णाणाणि, एग असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, एग किण्ह लेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्वसिद्धिया दोण्णि, एग मिच्छत्त सम्मत्तं, सण्णी असण्णी दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द अट्ठ झाणाणि, पणवण्ण आसवा पज्जत्तेसु वावण्ण अपज्जत्तेसु पणदाल आसवा, चउरासीदि लक्ख जादी पज्जत्तेसु देवेण विणा असीदि लक्ख जादी, अद्धणवणउदि उत्तर सयं लक्ख कोडि कुल कोडीणं पज्जत्तेसु अद्धतिसत्तदि उत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अणंताणंत, खेत्तावेक्खा सव्वलोय, फासावेक्खा सव्वलोय, कालो णाणाजीवावेखा सव्वकालो एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण तेतीस सायरोवमाणि, उणतीसभावा अपज्जत्तेसु अट्ठवीस भावा पज्जत्तेसु अट्ठवीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजणसहस्सं, सत्तदसुत्तर सयं पयडीणं बंधो, सत्तदसुत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं तित्थयरेण विणा सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।*

इदि किण्ह लेस्सासु मिच्छत्त गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

कृष्ण लेश्या मिथ्यात्व गुणस्थान

उन्हीं कृष्ण लेश्या युक्त जीवों के मिथ्यात्व गुणस्थानालाव कहने पर – एक मिथ्यात्व गुणस्थान, सात पर्याप्त सात अपर्याप्त चौदह जीवसमास, छहों – पाँच चार पर्याप्ति छहों पाँच चार अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस – नौ – आठ – सात – छ – चार प्राण अपर्याप्त में सात – सात – छ – पाँच – चार – तीन प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति पर्याप्त में देव बिना तीन गति अपर्याप्त में चारों गति, एक से पाँच इंद्रिय, छहों काय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीनों वेद, पच्चीस कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्त में दो अज्ञान, एक असंयम, चक्षु अचक्षु दो दर्शन, कृष्ण लेश्या, भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक दोनों, एक मिथ्यात्व सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी दोनों, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तकों में आहारक अपर्याप्तकों में दोनों, पाँच उपयोग अपर्याप्त में चार उपयोग, चार आर्त्त चार रौद्र आठ ध्यान, पचपन आस्रव पर्याप्तक में बावन अपर्याप्तक में पैंतालीस आस्रव, चौरासी लाख जाति पर्याप्त में देव की चार लाख बिना अस्सी लाख, एक सौ साढ़े निन्यानवे लाख करोड़ कुल कोटि पर्याप्त में एक सौ साढ़े तिहत्तर लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – अनंतानंत, क्षेत्रापेक्षा – सर्वलोक, स्पर्शन – सर्वलोक, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक तेतीस सागर, अंतर – नाना जीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम तेतीस सागर, उनतीस भाव पर्याप्त में अपर्याप्त में अट्ठाईस–अट्ठाईस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल के असंख्यातवें भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ सत्रह प्रकृतियों का बंध, एक सौ सत्रह प्रकृतियों का उदय एवं तीर्थंकर बिना एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार कृष्ण लेश्या में मिथ्यात्व गुणस्थान समाप्त हुआ।

---

* विशेषार्थ– संदृष्टि के साथ दिया है वहाँ से जानो।

323. कृष्ण लेश्या सासादन गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	सासादन	–	–
2.	जीवसमास	7	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास	6 अपर्याप्तक जीव समास
3.	पर्याप्ति	6,5,4 अपर्याप्ति, पर्याप्ति 6	6 पर्याप्ति	6,5,4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	3–10	10 प्राण	7,7,6,5,4,3
5.	संज्ञा	4	–	–
6.	गति	चारों गति	3 गति (देवगति बिना)	3 गति (नरक गति बिना)
7.	इन्द्रिय	1–5	पंचेन्द्रिय	1–5
8.	काय	तीन स्थावर व त्रस काय	त्रसकाय	तीन स्थावर व त्रस काय
9.	योग	13 योग (आहारकद्विक बिना)	10 योग	3 योग
10.	वेद	3 वेद	–	–
11.	कषाय	25 कषाय	–	–
12.	ज्ञान	3 कुज्ञान	–	2 कुज्ञान
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 दर्शन	–	2 दर्शन
15.	लेश्या	कृष्ण लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	सासादन	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	आहारक, अनाहारक
20.	उपयोग	5 (3 ज्ञानो. + 2 दर्शनो.)	5	4 (2 ज्ञानो. + 2 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8 (4 आर्त्त 4 रौद्र)	–	–
22.	आस्रव	50 (25 क.+13 यो.+12 अवि.)	47 (25+10+12)	40 (25+3+12)
23.	जाति	56	22 लाख	52 लाख
24.	कुलकोटि	189½ लाख करोड़	82½ लाख करोड़	164½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवा भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवा भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवा भाग, कुछ कम 5/14 राजू		
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – ज. एक समय	उ. पल्योपम का असंख्यातवा भाग	
		एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय	उ. 6 आवली	
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय	उ. पल्योपम का असंख्यातवा भाग	
		एक जीवापेक्षा – ज. पल्योपम का असंख्यातवा भाग उ. कुछ कम 33 सागर		
30.	भाव	सा. 27 (औद. 15, क्षयो. 10, पारि.2)	पर्या. 26 (औद. 14, क्षयो. 10, पा.2)	अपर्या. 25 (14+9+2)
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का असंख्यातवा भाग	उ. संख्यात धनुष	
32.	बन्ध	101 गुणस्थानोक्त		
33.	उदय	111 सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, मिथ्यात्व, सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त, आतप, नरक गत्यानुपूर्वी इन 8 प्रकृतियों के बिना		
34.	सत्त्व	145 (आहारकद्विक, तीर्थंकर इन तीन प्रकृति बिना)		
		दूसरे (सासादन) गुणस्थान में तीर्थंकर व आहारकद्विक का सत्त्व नियम से नहीं पाया जाता क्योंकि ऐसा स्वभाव हैं।		

323. किण्ह लेस्सा सासाण गुणट्ठाणं

तेसिं किण्ह लेस्सा सासण गुणट्ठाणागद जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि, – एग सासण गुणट्ठाणं, सामण्णं सत्त जीव समासा पज्जत्तेसु सण्णी पंचिंदिय अपज्जत्तेसु एइंदियत्तो पंचिंदिय छ जीवसमासा, छ पज्जत्ती छ पंच चउ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस पाणा अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छ पंच चउ ति पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी पज्जत्तेसु देवेण विणा तिण्णि गदी अपज्जत्तेसु णिरय गदी विणा तिण्णि गदी, पज्जत्तेसु पंचिंदियाणि अपज्जत्तेसु एइंदियत्तो पंचिंदियाणि, पज्जत्तेसु तस अपज्जत्तेसु तिथावर त्रस काया, तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि अपज्जत्तेसु बे अण्णाणाणि, असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, किण्ह लेस्सा, भव्वसिद्धिया, एग सासणसम्मत्तं, सण्णी असण्णी दोण्णि पज्जत्तेसु सण्णी अपज्जत्तेसु दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु अहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द अट्ठ झाणाणि, पंचास आसवा पज्जत्तेसु सत्तदाल अपज्जत्तेसु दाल आसवा, छप्पण लक्ख जादी पज्जत्तेसु बाबीस लक्ख अपज्जत्तेसु वावण्ण लक्ख जादी, अद्ध णवासीदि उत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं पज्जत्तेसु अद्धुत्तर बेअसीदि लक्ख कोडि कुल कोडीणं अपज्जत्तेसु अद्ध चउसट्ठि उत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा एवं किंचिदूण पंच चोद्दस भागा वा देसूणा*, कालो णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण छावली, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण तेतीस सागरोवमाणि देसूणाणि, सामण्णेण सत्तबीस पज्जत्तेसु छब्बीस भावा अपज्जत्तेसु पणवीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण संखेज्ज धणू, एगुत्तर सयं पयडीणं बंधो, एगादसुत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं तित्थयर व आहार दुगेहिं विणा पणदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि किण्ह लेस्सासु सासण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

कृष्ण लेश्या सासादन गुणस्थान

उन्हीं कृष्ण लेश्या सासादन गुणस्थानवर्ती जीवों के आलाप कहने पर – एक सासादन गुणस्थान, सात जीव समास पर्याप्त में संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त में एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय छह छहों पर्याप्ति छ – पाँच –चार अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस प्राण अपर्याप्त में सात – सात – छह – पाँच – चार – तीन प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारो गति पर्याप्त में देव बिना तीन गति अपर्याप्त में नरक बिना तीन गति, पर्याप्त में पंचेन्द्रिय अपर्याप्त में एक से पाँच इन्द्रिय, पर्याप्त में त्रस अपर्याप्त में तीन स्थावर व त्रस काय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीनों वेद, पच्चीस कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्त में दो अज्ञान, असंयम, चक्षु अचक्षु दो दर्शन, कृष्ण लेश्या, भव्यसिद्धिक, एक सासादन सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी दोनों पर्याप्तक में संज्ञी अपर्याप्तक में दोनों, आहारक अनाहारक दोनों अपर्याप्त में दोनों पर्याप्तक में आहारक, पाँच उपयोग अपर्याप्त में चार उपयोग, चार आर्त्त चार रौद्र आठ ध्यान, पचास आस्रव पर्याप्त में सैंतालीस अपर्याप्त में चालीस आस्रव, छप्पन लाख जाति पर्याप्त में बाईस लाख अपर्याप्त में बावन लाख जाति, एक सौ साढ़े नवासी लाख करोड़ कुल कोटि पर्याप्त में साढ़े ब्यासी लाख करोड़ अपर्याप्त में एक सौ साढ़े चौंसठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 5/14 राजू, काल – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह आवली, अंतर – नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य पल्योपम का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट कुछ कम तेतीस सागर, सत्ताईस भाव पर्याप्तक व अपर्याप्तक में छब्बीस–पच्चीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट संख्यात धनुष, एक सौ एक प्रकृतियों का बंध, एक सौ ग्यारह प्रकृतियों का उदय एवं तीर्थंकर व आहारकद्विक बिना एक सौ पैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार कृष्ण लेश्या में सासादन गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– गति का कथन करने पर कृष्ण लेश्या देवों की पर्याप्त अवस्था में होती नहीं है इसलिए पर्याप्तक में तीन गति कहीं सासादन सम्यक्त्व के साथ नरक में नहीं जाता किन्तु भवनत्रिक में अपर्याप्तक देव कृष्ण लेश्या वाला हो सकता है इसलिए अपर्याप्त में नरक बिना तीन गति कही हैं। स्पर्शन का कथन करने पर कोई छटवी पृथ्वी का नारकी नरक से निकला और तिर्यंचों में उत्पन्न होता है तो उसका स्पर्शन 5/14 राजू बन जाता है शेष कथन सुगम है।

324. कृष्ण लेश्या मिश्र गुणस्थान

1.	गुणस्थान	सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4
6.	गति	3 गति (देवगति बिना)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	10
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	21 कषाय (अनंतानुबंधी बिना)
12.	ज्ञान	3 मिश्रज्ञान
13.	संयम	असंयम
14.	दर्शन	2 दर्शन
15.	लेश्या	कृष्ण
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	सम्यग्मिथ्यात्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 (3 ज्ञानो. + 2 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8 (4 आर्त्त 4 रौद्र)
22.	आस्रव	43 (21 कषाय, 10 योग 12, अवि.)
23.	जाति	22 लाख
24.	कुलकोटि	82½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवा भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवा भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवा भाग
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. पल्योपम का असंख्यातवा भाग एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. अन्तर्मुहूर्त [*1]
29.	अन्तर	नाना जीव अपेक्षा – ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवा भाग एक जीव अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम 33 सागर [*2]
30.	भाव	26 (औद. 14, मि.10, औ. 1, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग उ. 1000 योजन
32.	बन्ध	74 गुणस्थानोक्त
33.	उदय	98 (4 अनंतानुबंधी कषाय, एकेन्द्रियादि 4 जाति, स्थावर, देवद्विक, देवायु, तिर्यंचगत्यानुपूर्वी, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, सम्यक्त्व, मिथ्यात्व, आतप, सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त, नरक गत्यानुपूर्वी इन 21 प्रकृति बिना)
34.	सत्त्व	147 (तीर्थंकर बिना)[*]
		[*] मिश्र गुणस्थान आहारकद्विक का सत्त्व पाया जा सकता है लेकिन तीर्थंकर प्रकृति का सत्त्व कदापि नहीं पाया जाता ऐसा अटल सिद्धांत है। [*1](ध.पु.–4, सूत्र – 9–10–11–12) [*2](ध. पु. 5, सूत्र5 299, 300–301)

324. किण्ह लेस्सा सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणं

तेसिं किण्ह लेस्सागद सम्मामिच्छाइट्ठी जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग सम्मामिच्छाइट्ठी गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छपज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, देवेण विणा तिण्णि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, इगबीस कसाया, तिण्णि मिस्स णाणाणि, एग असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, किण्ह लेस्सा, भव्वसिद्धिया, सम्मामिच्छत्त सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, अट्ठज्झाणाणि, तिदाल आसवा, बाबीस लक्ख जादी, अद्धुत्तर बेअसीदि लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा*, कालो णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमयो उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि देसूणाणि, छब्बीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजणसहस्सं, चउसत्तदि पयडीणं बंधो, अट्ठणउदि पयडीणं उदओ एवं सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि किण्ह लेस्सासु सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

कृष्णलेश्या सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान

उन्हीं कृष्णलेश्यागत सम्यग्मिथ्यात्वी जीवों के आलाप कहने पर – एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, देवगति बिना तीन गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, दस योग, तीनों वेद, इक्कीस कषाय, तीन मिश्रज्ञान, एक असंयम, चक्षु अचक्षु दो दर्शन, कृष्ण लेश्या, भव्य सिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, आठ ध्यान, तेतालीस आस्रव, बाईस लाख जाति, साढ़े ब्यासी लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग, काल – नानाजीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एकजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम तेतीस सागर, छब्बीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, चौहत्तर प्रकृतियों का बंध, अन्ठानवे प्रकृतियों का उदय, एवं एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार कृष्ण लेश्या में सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– * यहाँ केवल स्पर्शन का कथन करते हैं क्योंकि यहाँ स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग इसलिए कहा है कि यहाँ मारणांतिक उपपाद पद तो होते ही नहीं है विहार नारकियों का व तिर्यंचों का ज्यादा होता नहीं उनका लोक का असंख्यातवां भाग मात्र है। इसी प्रकार वेदना कषाय विक्रिया आदि का जानना चाहिए शेष कथन सुगम है।

शंका– नरकों में लेश्या परावर्तन किस प्रकार होता है ? क्या कापोत लेश्या नील लेश्या रूप हो जाती है अथवा कृष्ण रूप हो जाती है यदि ऐसा है तो लेश्याओं का उक्त काल संभव नहीं है दूसरी बात फिर सातवे नरक में कृष्ण लेश्या ही क्यों बनी रहती है ? छहों लेश्या होना चाहिए क्योंकि ऐसा राजवार्तिक ग्रंथ में आया है वहाँ कहा गया है– भाव लेश्यस्तु षडपि प्रत्येक अन्तर्मुहूर्त परिवर्तिन्य: (त.राज.वा.पृ.264 अ.3 सू.3 की टीका) भाव लेश्या प्रत्येक अन्तर्मुहूर्त में छ प्रकार से परिवर्तन करती है सो इसका क्या आशय है ? (र.मु.व्य.कृति. से साभार)

समाधान– लेश्याओं में दो प्रकार का संक्रमण होता है 1. स्वस्थान संक्रमण 2. परस्थान संक्रमण वहाँ परस्थान संक्रमण नहीं होता स्वस्थान षट्स्थान पतित हानि वृद्धिरूप होता है। क्योंकि भाव लेश्या में अविभागी प्रतिच्छेद की अपेक्षा षट्स्थान पतित हानि वृद्धिरूप असंख्यात स्थान पाये जाते हैं वहाँ अन्तर्मुहूर्त बाद स्वस्थान संक्रमण हानिवृद्धि रूप स्थान होते रहते हैं यही अर्थ यहाँ ग्रहण करना चाहिए न कि एक लेश्या दूसरी लेश्या हो जाती है ऐसा ग्रहण नहीं करना चाहिए। क्योंकि ध.पु.7 पत्र 7 गो.जी.का.गा. नं. 528 में कृष्णादि लेश्याओं का काल क्रमश: 33, 17, 7 सागर कहा है। वही गा.नं. 488 में नरकों में कृष्ण, नील, कापोत लेश्या ही पायी जाती है जो जीवन पर्यंत रहती हैं।

गोम्मटसार जीवकाण्ड में द्रव्य से नारकियों में एक कृष्ण लेश्या कही है किंतु राजवार्तिक में तीनों अशुभ लेश्या कहीं हैं जो जीवन पर्यंत रहती हैं। विशेष जानने के लिए उक्त ग्रंथों का अवलोकन करना चाहिए।

325. कृष्ण लेश्या असंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	अविरत संयत गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10,7	10	7
5.	संज्ञा	4	–	–
6.	गति	3 (देवगति बिना)	–	एक मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	12	10 (4 म., 4 व., औ.वै.)	2 (औदारिक मिश्र, कार्मण)
10.	वेद	3	–	पुरुषवेद
11.	कषाय	21	–	19 कषाय (स्त्री व नपुंसक वेद बिना)
12.	ज्ञान	3 ज्ञान	–	–
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	3 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	कृष्ण	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा.,क्षयो., उप.)	3 (तीनों)	1 (क्षयो.)
18.	संज्ञी	संज्ञी		
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	आहारक, अनाहारक
20.	उपयोग	6 (3 ज्ञानो. + 3 दर्शनो.)	6	–
21.	ध्यान	10	–	–
22.	आस्रव	45 (21 क.+12 यो+12 अवि.)	43 (21+10+12)	33 (19+2+12)
23.	जाति	22 लाख	22 लाख	14 लाख
24.	कुलकोटि	82½ लाख करोड़	82½ लाख करोड़	14 लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग	–	संख्यात
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम 33 सागर		
29.	अन्तर	नाना जीव अपेक्षा – निरन्तर एक जीव अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम 33 सागर		
30.	भाव	30 (औद. 14, मि.12, क्षा.1, पा.2, औप.1) अपर्याप्त में 24 भाव		
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवा भाग अथवा संख्यात अंगुल उ. 1000 योजन		
32.	बन्ध	77 गुणस्थानोक्त		
33.	उदय	99 * (पूर्वोक्त 21–1 म. गत्या. 20+1 स.मि. 21– सम्यक्त्व = 20 प्रकृति बिना)		
34.	सत्त्व	148		
		* क्योंकि यहाँ मनुष्य गत्यानुपूर्वी का उदय होता है अत: इक्कीस में म.गत्या. कम की बची बीस सम्यग्मिथ्यात्व का अनुदय सम्यक्त्व प्रकृति का उदय इस प्रकार बीस प्रकृतियों का अनुदय होने से निन्यानवे प्रकृतियों का उदय पाया जाता है। विशेष– अपर्याप्तक में सम्यक्त्व के साथ कृष्ण लेश्या केवल मनुष्य गति में ही पायी जाती है अन्य गति में नहीं क्योंकि छटवें अथवा पाँचवे नरक से निकलने वाला नारकी जब मनुष्य गति में आता है उसी समय यह लेश्या पायी जाती है, अन्य स्थानों पर नहीं अत: मनुष्यगति सबंधी सर्वपद पाये जाते हैं। सम्यक्त्व एक क्षयोपशम ही पाया जाता है।		

नोट – नील लेश्या का सम्पूर्ण विवरण कृष्ण लेश्या के समान है विशेषता यह है कि उसका उत्कृष्ट काल 17 सागर है। कृष्ण लेश्या अथवा नील लेश्या के साथ तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध व सत्त्व केवल मनुष्यगति पर्याप्तक में ही पाया जाता है।

325. किण्ह लेस्सा असंजद गुणट्ठाणं

तेसिं किण्ह लेस्सागद जीवाणं अविरद संजदो गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अविरद संजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासो, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, दस सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, देवेण विणा तिण्णि गदी अपज्जत्तेसु एग मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, बारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु ओरालियमिस्स कम्माण बे काय जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु पुरिस वेदो, इगबीस कसाया अपज्जत्तेसु उणबीस कसाया, तिण्णि णाणाणि, एग असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, एग किण्ह लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खओवसमिय खइय तिण्णि सम्मत्ता अपज्जत्तेसु एग खओवसमिय सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, छ उवजोगा, दस झाणाणि, पणदाल आसवा पज्जत्तेसु तिदाल अपज्जत्तेसु तेतीस आसवा, बाबीस लक्ख जादी अपज्जत्तेसु चोद्दस लक्ख जादी, अद्धुत्तर बेअसीदि लक्ख कोडि कुलकोडीणं अपज्जतेसु चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा अपज्जत्तेसु संखेज्जा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि देसूणाणि, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि देसूणाणि, तीस भावा अपज्जत्तेसु चउवीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजणसहस्सं, सत्त सत्तदि पयडीणं बंधो, णवणउदि पयडीणं उदओ एवं अड़दालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि किण्ह लेस्सासु असंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

कृष्ण लेश्या असंयत गुणस्थान

उन्हीं कृष्ण लेश्यागत जीवों के अविरत संयत गुणस्थानालाप कहने पर – एक अविरत संयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, दस–सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, देवगति बिना तीन गति अपर्याप्त में मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, बारह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में औ. मिश्र. कार्माण काय दो योग, तीन वेद अपर्याप्तक में पुरुष वेद, इक्कीस कषाय अपर्याप्तक उन्नीस कषाय, तीन ज्ञान, एक असंयम, तीन दर्शन, एक कृष्ण लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षयोपशम क्षायिक तीन सम्यक्त्व अपर्याप्त में एक क्षयोपशम सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, छह उपयोग, दस ध्यान, छ्यालीस आस्रव पर्याप्त में तेतालीस अपर्याप्त में छत्तीस आस्रव, बाईस लाख जाति अपर्याप्त में चौदह लाख जाति, साढ़े ब्यासी लाख करोड़ कुल कोटि अपर्याप्त में चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पल्योपम का असंख्यातवां भाग अपर्याप्तक संख्यात, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एकजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम तेतीस सागर, अंतर – नानाजीवापेक्षा – निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम तेतीस सागर, तीस भाव अपर्याप्तक में चौबीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, सतत्तर प्रकृतियों का बंध, निन्यानवे प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार कृष्ण लेश्या में असंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

नोट – नील लेश्या का संपूर्ण कथन कृष्ण लेश्या के समान है सिर्फ काल में अंतर है, नील लेश्या का उत्कृष्ट काल सत्रह सागर है।

विशेषार्थ :– यहाँ वैक्रियक मिश्र काययोग नहीं पाया जाता क्योंकि चतुर्थ गुणस्थान वाला जीव भवनत्रिक देवों में व नारकियों में उत्पन्न नहीं होता और कल्पवासियों में कृष्ण लेश्या नहीं पायी जाती वहाँ सिर्फ तीनों शुभ लेश्याऐं ही पायी जाती हैं, इसलिए वैक्रियक मिश्र काय योग नहीं होता। कृष्ण लेश्या वाला सम्यग्दृष्टि जीव अपर्याप्तक अवस्था में पुरुष वेद के साथ ही उत्पन्न होता है नपुंसक व स्त्री वेद कदापि नहीं होता। कृष्ण लेश्या के साथ सम्यग्दृष्टि जीव अपर्याप्तक अवस्था में मनुष्य ही होता है शेष गति वाला नहीं होता किंतु पर्याप्त में तीन गति में हो सकता है। अपर्याप्तक अवस्था में उसके मात्र क्षयोपशम सम्यक्त्व ही पाया जाता है क्योंकि छटवें नरक से निकलने वाले नारकी के मात्र क्षयोपशम सम्यक्त्व ही पाया जाता है, और वह सम्यक्त्व के साथ मनुष्य ही होता है और उसी के साथ अपर्याप्त अवस्था में कृष्ण लेश्या पायी जाती है अन्य सम्यक्त्व के साथ नहीं पायी जाती अत: क्षयोपशम सम्यक्त्व ही पाया जाता है। स्पर्शन सभी पदों की अपेक्षा लोक का असंख्यात वां भाग है इसका कारण पूर्व की मार्गणाओं में कह आये हैं। काल अन्तर का कथन भी पूर्व की मार्गणाओं व गुणस्थानों में कह आये है वहाँ से जान लेना चाहिए। अवगाहना जघन्य शाली सिक्थ मत्स्य तथा उत्कृष्ट स्वंभूरमण समुद्र में महामत्स्य की अपेक्षा कही गयी है। बन्ध प्रकृति सतत्तर हैं क्योंकि मिश्र गुणस्थान में चौहत्तर प्रकृतियों का बन्ध था क्योंकि वहाँ मनुष्यायु देवायु का बन्ध नहीं होता व तीर्थंकर प्रकृति भी बन्ध रहित थी परन्तु चतुर्थ गुणस्थान में बन्ध होने लगता है। उदय प्रकृतियों का विवरण संदृष्टि में दिया ही हैं शेष कथन सुगम है।

*[1] अपर्याप्त अवस्था में संख्यात जीव ही हो सकते हैं, क्योंकि वहाँ सिर्फ मनुष्य ही पाये जाते हैं और मनुष्य संख्यात ही होते हैं।

326. कापोत लेश्या सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	1–4	–	1,2,4
2.	जीवसमास	14 जीव समास	7 पर्याप्त जीव समास	7 अपर्याप्त जीव समास
3.	पर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति व अपर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति	6,5,4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	3–10 प्राण	4,6,7,8,9,10 प्राण	7,7,6,5,4,3 प्राण
5.	संज्ञा	4	–	–
6.	गति	चारों गति	3 (देवगति बिना)	4
7.	इन्द्रिय	1–5	1–5	–
8.	काय	षट्काय	–	–
9.	योग	13 योग (आहारकद्विक बिना)	10 (4 म., 4 व.,औ.,वै.)	3 (औ.मि.,वै.मि., कार्माण)
10.	वेद	3 वेद	–	–
11.	कषाय	25 कषाय	–	–
12.	ज्ञान	6 (3 सुज्ञान, 3 कुज्ञान)	–	5 (कुअवधि बिना)
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	3 दर्शन (केवलदर्शन बिना)	–	3 दर्शन (केवलदर्शन बिना)
15.	लेश्या	कापोत लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य, अभव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	6	6	4 (उपशम, सम्यग्मिथ्यात्व बिना)
18.	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	आहारक, अनाहारक
20.	उपयोग	9 (6 ज्ञानो. + 3 दर्शनो.)	–	8 उपयोग (5 ज्ञानो. +तीन दर्शनो.)
21.	ध्यान	10	–	–
22.	आस्रव	55 (25क.+13यो.+12अवि.+5मि.)	52 (25+10+12+5)	45 लाख (25+3+12+5)
23.	जाति	84 लाख	80 लाख (देवगति बिना)	84 लाख
24.	कुलकोटि	199½ लाख करोड़	173½ लाख करोड़	199½ लाख करोड़
25.	संख्या	अनंतानंत		
26.	क्षेत्र	सर्वलोक		
27.	स्पर्शन	सर्वलोक		
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 7 सागर		
29.	अन्तर	नाना जीव अपेक्षा – निरन्तर एक जीव अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 33 सागर (षट्. पु.7खुद्दाबन्ध सूत्र– 126–127)		
30.	भाव	36 (औद.16, मि. 15, क्षा.1, औप.1, पा.3) पर्याप्त–35 (औ.15, मि.15, क्षा.1, औ.1, पा.3) अपर्याप्त– 34 (औ.16, मि. 14, क्षा.1, पा.3)		
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग उ. 1000 योजन		
32.	बन्ध	118 आहारकद्विक बिना पूर्वोक्त		
33.	उदय	119 पूर्वोक्त		
34.	सत्त्व	148 पूर्वोक्त		

326. काउ लेस्सा सामण्णं

अह काउ लेस्साओ सामण्णालाव भण्णमाणे अत्थि – एयत्तो चत्तारि गुणट्ठाणा अपज्जत्तेसु एग बे चउ तिण्णि गुणट्ठाणा, चोद्दस जीव समासा, छ पंच चउ पज्जत्ती छ पंच चउ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस णव अट्ठ सत्त छ चउ पाणा अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छ पंच चउ ति पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी पज्जत्तेसु देवेण विणा तिण्णि गदी अपज्जत्तेसु चत्तारि गदी, एयत्तो पंचिंदियाणि, छक्काया, तेरसजोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, छण्णाणाणि अपज्जत्तेसु पंच णाणाणि, एग असंजमो, केवल दंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, एग काऊ लेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्वसिद्धिया दोण्णि, छ सम्मत्ता अपज्जत्तेसु उवसम व मिस्सेहि विणा चत्तारि सम्मत्ता, सण्णी असण्णी दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, णव उवजोगा अपज्जत्तेसु अट्ठ उवजोगा, दस झाणाणि, पणवण्ण आसवा पज्जत्तेसु वावण्ण अपज्जत्तेसु पणदाल आसवा, चउरासीदि लक्ख जादी पज्जत्तेसु असीदि लक्ख अपज्जत्तेसु चउरासीदि लक्ख जादी, अद्ध णवणउदि उत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, पज्जत्तेसु अद्ध ति सत्तदि उत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अणंताणंत, खेत्तावेक्खा सव्वलोय, फासावेक्खा सव्वलोय, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण सत्त सायरोवमाणि सादिरेयाणि, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, छत्तीस भावा पज्जत्तेसु पणतीस व अपज्जत्तेसु चउतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजणसहस्सं, अट्ठदसुत्तर सयं पयडीणं बंधो, उणबीसुत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं अड़दालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति

इदि लेस्सा मग्गणासु काउ लेस्सा सामण्णालाव सम्मत्ता।

कापोत लेश्या सामान्य

अब कापोत लेश्या का सामान्य कथन करने पर – एक से चार गुणस्थान अपर्याप्त में एक – दो – चार तीन गुणस्थान, चौदह जीव समास, छ – पाँच – चार पर्याप्ति छ – पाँच – चार अपर्याप्ति, तीन से दस प्राण पर्याप्त में दस – नौ – आठ – सात – छ – चार प्राण अपर्याप्त में सात – सात – छ – पाँच – चार – तीन प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति पर्याप्त में देवगति बिना तीन गति, एक से पाँच इन्द्रिय, छहों काय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीनों वेद, पच्चीस कषाय, छह ज्ञान अपर्याप्तक में कुअवधिज्ञान बिना पाँच ज्ञान असंयम केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, एक कापोत लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक दोनों, छहों सम्यक्त्व अपर्याप्त में उपशम व सम्यग्मिथ्यात्व बिना चार सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी दोनों, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, नौ उपयोग अपर्याप्त में आठ उपयोग, दस ध्यान, पचपन आस्रव पर्याप्त में बावन अपर्याप्त में पैंतालीस आस्रव, चौरासी लाख जाति पर्याप्त में अस्सी लाख अपर्याप्त में चौरासी लाख जाति, एक सौ साढ़े निन्यानवे लाख करोड़ कुल कोटि पर्याप्त में एक सौ साढ़े तिहत्तर लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – अनंतानंत, क्षेत्रापेक्षा – सर्वलोक, स्पर्शन – सर्वलोक, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक सात सागर, अंतर – नानाजीवापेक्षा निरंतर एकजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक तेतीस सागर, छत्तीस भाव पर्याप्त में पैंतीस व अपर्याप्त में चौतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ अठारह प्रकृतियों का बंध, एक सौ उन्नीस प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार लेश्या मार्गणा में कापोत लेश्या का सामान्यालाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यद्यपि कापोत लेश्या में सारा कथन कृष्ण नील लेश्या के समान ही है थोड़ा अन्तर है वो ये है कि कृष्ण लेश्या में अपर्याप्तक अवस्था में एक क्षयोपशम सम्यक्त्व ही पाया जाता था यहाँ क्षयोपशम व क्षायिक दो सम्यक्त्व पाये जाते हैं, दूसरा काल में अन्तर है यहाँ उत्कृष्ट काल सात सागर है योग में भी थोड़ा अन्तर है क्योंकि चतुर्थ गुणस्थान में वैक्रियक मिश्र काय योग पाया जाता है जबकि कृष्ण लेश्या में चतुर्थ गुणस्थान में वैक्रियक मिश्र काययोग नहीं पाया जाता।

* यहाँ भी पर्याप्त अवस्था में देवगति नहीं पाई जाती और अपर्याप्तक अवस्था में चारों गति पायी जाती हैं उसी अपेक्षा से कुलकोटि व जाति आदि का कथन समझना चाहिए।

327. कापोत लेश्या मिथ्यात्व गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	मिथ्यात्व गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	14 जीव समास	7 जीव समास पर्याप्त	7 जीव समास अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति व अपर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति	6,5,4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	3–10 प्राण	4,6,7,8,9,10 प्राण	7,7,6,5,4,3 प्राण
5.	संज्ञा	4	–	–
6.	गति	चारों	3 (देवगति बिना)	4
7.	इन्द्रिय	1–5	–	–
8.	काय	षट्काय	–	–
9.	योग	13	10 योग	3 योग
10.	वेद	3 वेद	–	–
11.	कषाय	25 कषाय	–	–
12.	ज्ञान	3 कुज्ञान	–	2 कुज्ञान
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 दर्शन (चक्षु, अचक्षु)	–	2 दर्शन
15.	लेश्या	कापोत लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य, अभव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	आहारक, अनाहारक
20.	उपयोग	5 (3 ज्ञानो. 2 दर्शनो.)	–	4 उपयोग
21.	ध्यान	8 (4 आर्त 4 रौद्र)	–	–
22.	आस्रव	55 (25क.+13 योग+5मि.+12अवि.)	52 (25+10+5+12)	45 (25+3+5+12)
23.	जाति	84 लाख	80 लाख	84 लाख
24.	कुलकोटि	199½ लाख करोड़	173½ लाख करोड़	199½ लाख करोड़
25.	संख्या	अनंतानंत		
26.	क्षेत्र	सर्वलोक		
27.	स्पर्शन	सर्वलोक		
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 7 सागर		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर, एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम 7 सागर		
30.	भाव	29 (औद.16, क्षयो.10, पा.3)	प. 28 (औद.15, क्षयो.10, पा.3)	अप.28 (औद.16, क्षयो. 9, पा.3)
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग	उ. 1000 योजन	
32.	बन्ध	117 पूर्वोक्त		
33.	उदय	117 पूर्वोक्त गुणस्थानोक्त		
34.	सत्त्व	148 पूर्वोक्त		

327. काउ लेस्सा मिच्छत्त गुणट्ठाणं

तेसिं काउ लेस्साओ मिच्छत्त जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग मिच्छत्त गुणट्ठाणं, सत्त पज्जत्त सत्त अपज्जत्त चोद्दस जीवसमासा, छ – पंच चदु पज्जत्ती छ पंच चदु अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस णव अट्ठ सत्त छ चउ पाणा अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छ पंच चउ ति पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी पज्जत्तेसु देवेण विणा तिण्णि गदी, एयत्तो पंचिंदियाणि, छक्काया, तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि अपज्जत्तेसु बे अण्णाणाणि, एग असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, एग काउलेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्वसिद्धिया दोण्णि, एग मिच्छत्त सम्मत्तं, सण्णी असण्णी दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, अट्ठ झाणाणि, पणवण्ण आसवा पज्जत्तेसु बावण्ण अपज्जत्तेसु पणदाल आसवा, चउरासीदि लक्ख जादी पज्जत्तेसु असीदि लक्ख अपज्जत्तेसु चउरासीदि लक्ख जादी, अद्धणव णउदि उत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं पज्जत्तेसु अद्धुत्तर तिसत्तरि सयं लक्ख कोडी कुलकोडीणं अपज्जत्तेसु अद्धणव णउदि उत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अणंताणंत, खेत्तावेक्खा सव्वलोय, फासावेक्खा सव्वलोय, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण सत्त सायरोवमाणि सादिरेयाणि, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण सत्त सायरोवमाणि देसूणाणि, उणतीस भावा पज्जत्तापज्जत्तेसु अट्ठबीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजणसहस्सं, सत्तदसुत्तर सयं पयडीणं बंधो, सत्तदसुत्तर सयं पयडीणं उदओ एयं अड़दालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि काउ लेस्सासु मिच्छत्त गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

कापोत लेश्या मिथ्यात्व गुणस्थान

उन्हीं कापोत लेश्या युत मिथ्यात्वी जीवों के आलाप कहने पर – एक मिथ्यात्व गुणस्थान, चौदह जीवसमास, सात पर्याप्तक सात अपर्याप्तक छह – पाँच – चार पर्याप्ति छ – पाँच – चार अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस – नौ आठ – सात – छ –चार प्राण अपर्याप्त में सात – सात – छ – पाँच – चार – तीन प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति पर्याप्त में देव बिना तीन गति, एक से पाँच इंद्रिय, छहों काय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीनों वेद, पच्चीस कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्त में दो अज्ञान, एक असंयम, चक्षु अचक्षु दो दर्शन, एक कापोत लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक दोनों, एक मिथ्यात्व सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी दोनों, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, पाँच उपयोग अपर्याप्त में चार उपयोग, आठ ध्यान, पचपन आस्रव पर्याप्त में बावन अपर्याप्त में पैंतालीस आस्रव, चौरासी लाख जाति पर्याप्त में अस्सी लाख अपर्याप्त में चौरासी लाख जाति, एक सौ साढ़े निन्यानवे लाख करोड़ कुल कोटि पर्याप्त में एक सौ साढ़े तिहत्तर लाख करोड़ अपर्याप्त में एक सौ साढ़े निन्यानवे लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – अनंतानंत, क्षेत्रापेक्षा – सर्वलोक, स्पर्शन – सर्वलोक, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक सात सागर, अंतर – नानाजीवापेक्षा – निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम सात सागर, उनतीस भाव पर्याप्तक में अट्ठाईस अपर्याप्तक में अट्ठाईस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ सत्रह प्रकृतियों का बंध, एक सौ सत्रह प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार कापोत लेश्या में मिथ्यात्व गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ पर्याप्तक में देवगति नहीं होती क्योंकि भवनत्रिक में अपर्याप्त अवस्था में तीनों अशुभ लेश्या पायी जाती हैं किंतु पर्याप्तक में एक पीत लेश्या ही होती है इसलिए यहाँ देवगति का निषेध किया है, इसलिए पर्याप्तकों में अस्सी लाख जाति क्योंकि देवों की चार लाख कम कर दी साथ ही एक सौ साढ़े तिहत्तर लाख करोड़ कुल कोटि क्योंकि देवों की छब्बीस लाख करोड़ कम हो जाती हैं। शेष कथन सुगम है अन्तर का कथन और कर देते हैं क्योंकि अन्तर जघन्य से अन्तर्मुहूर्त यानि कोई कापोत लेश्या वाला मिथ्यादृष्टि नारकी सम्यक्त्व को प्राप्त हुआ, अन्तर्मुहूर्त सम्यक्त्व के साथ रहा फिर मिथ्यात्व को चला गया इस प्रकार जघन्य अन्तर प्राप्त हुआ। उत्कृष्ट अन्तर कोई कापोत लेश्या वाला मिथ्यादृष्टि जीव तृतीय पृथ्वी में सात सागर की आयु लेकर उत्पन्न हुआ पर्याप्त हो विश्राम ले विशुद्ध हो सम्यक्त्व को प्राप्त हुआ सारा जीवन सम्यक्त्व के साथ रहकर आयु के अन्त समय में मिथ्यात्व को प्राप्त हुआ। इस प्रकार अन्तर प्राप्त हुआ पश्चात् मरण कर मनुष्यों में उत्पन्न हुआ अत: चार अन्तर्मुहूर्त कम सात सागरोपम उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त हुआ शेष कथन सुगम है।

शंका– उत्कृष्ट अन्तर तो ठीक है जघन्य अन्तर भी नारकियों में क्यों प्राप्त कराया अन्य गति में क्यों प्राप्त नहीं कराया ?

समाधान– नहीं क्योंकि मनुष्य तिर्यंचों में लेश्या परावर्तन होता रहता है अन्तर्मुहूर्त के बाद लेश्या बदल जाती है अत: एक ही लेश्या में दो बार मिथ्यात्व गुणस्थान होना नहीं बनता, नारकियों में लेश्या परिवर्तन नहीं होता वहाँ एक ही लेश्या रहती है। अत: उसमें असंख्यातों बार गुणस्थान परावर्तन कर सकता है इसलिए यहाँ नारकी ही ग्रहण किया है।

328. कापोत लेश्या सासादन गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	सासादन	–	–
2.	जीवसमास	7 जीव समास (1 पर्याप्त, 6 अपर्याप्त)	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	6 अपर्याप्त जीव समास
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6,5,4 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6,5,4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10,7,7,6,5,4,3 प्राण	10 प्राण	7,7,6,5,4,3 प्राण
5.	संज्ञा	4 (आहार, भय, मैथून परिग्रह)	–	–
6.	गति	चारों गति	3 (देवगति बिना)	3 (नरकगति बिना)
7.	इन्द्रिय	1–5	पंचेन्द्रिय	1–5
8.	काय	त्रस व तीन स्थावर	त्रसकाय	तीन स्थावर व त्रस काय
9.	योग	13 (4 मन 4 वचन औ.औ.मि.वै.वै.मि.का.)	10 (4 म., 4 व. औ., वै.काय योग)	3 (औ.मि.वैक्रि.मि.कार्मण काययोग)
10.	वेद	3 वेद	–	–
11.	कषाय	25 कषाय	–	–
12.	ज्ञान	3 कुज्ञान	–	2 कुज्ञान
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	कापोत लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	सासादन	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	आहारक, अनाहारक
20.	उपयोग	5 (3 ज्ञानो. 2 दर्शनो.)	–	4 उपयोग (2 ज्ञानो.+2 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8 (4 आर्त्त 4 रौद्र	–	–
22.	आस्रव	50 (25+12+13)	47 (25+12+10)	40 (25+12+3)
23.	जाति	56 लाख	22 लाख	52 लाख
24.	कुलकोटि	189½ लाख करोड़	82½ लाख करोड़	164½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 2/14 राजू		(ध.पु.4 सू. 148)
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवां भाग*1 एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. 6 आवली		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा – ज. पल्योपम का असंख्यातवां भाग उ. कुछ कम सात सागर*2		
30.	भाव	27 (औद. 15, मि.10, पा.2)	पर्याप्त 26 (देवगति बिना)	अपर्याप्त 25 (नरक गति व कुज्ञान बिना)
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का असंख्यातवा भाग	उ. संख्यात धनुष	
32.	बन्ध	101 पूर्वोक्त (कृष्ण लेश्यावत्)		
33.	उदय	111 पूर्वोक्त (कृष्ण लेश्यावत्)		
34.	सत्त्व	145 पूर्वोक्त (कृष्ण लेश्यावत्) *1(ध.पु.सू. 4 286) *2(ध.पु. 5 सूत्र–299–300–301)		

328. काउ लेस्सा सासण गुणट्ठाणं

तेसिं काउ लेस्साओ सासण गुणट्ठाणजीवाणामालावभण्णमाणे अत्थि – एग सासण गुणट्ठाणं, पज्जत्तेसु एग सण्णी पंचिंदिय अपज्जत्तेसु एयत्तो सण्णी पंचिंदिय सत्त जीव समासा, छ पज्जत्ती छ पंच चउ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस पाणा अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छ पंच चउ ति पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी पज्जत्तेसु देवेण विणा तिण्णि गदी अपज्जत्तेसु णिरयेण विणा तिण्णि गदी, एयत्तो पंचिंदियाणि, तिथावर तस काया पज्जत्तेसु तसकाय अपज्जत्तेसु ति थावर तस काया, तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि अपज्जत्तेसु बे अण्णाणाणि, एग असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, एग काउ लेस्सा, भव्वसिद्धिया, एग सासण सम्मत्तं, सण्णी असण्णी दोण्णि पज्जत्तेसु सण्णी अपज्जत्तेसु दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, अट्ठ झाणाणि, पंचास आसवा पज्जत्तेसु सत्तदाल आसवा अपज्जत्तेसु दाल आसवा, छप्पण लक्ख जादी पज्जत्तेसु बाबीस लक्ख अपज्जत्तेसु बावण्ण लक्ख जादी, अद्ध णवासीदि उत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं पज्जत्तेसु अद्धुत्तर वेअसीदि लक्ख कोडि कुलकोडीणं अपज्जत्तेसु अद्धचउसटिठ उत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व बे चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ अक्कस्सेण छावली, अन्तरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एग जीवावेखा जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण सत्त सायरोवमाणि देसूणाणि, सत्तबीस भावा पज्जत्तेसु छब्बीस अपज्जत्तेसु पणबीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण संखेज्ज धणू, एगुत्तर सयं पयडीणं बंधो, एगादसुत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं पणदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि काउलेस्सासु सासण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

कापोत लेश्या सासादन गुणस्थान

उन्हीं कापोत लेश्यागत सासादन जीवों के आलाप कहने पर – एक सासादन गुणस्थान, पर्याप्त में एक संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त में एक से पंचेन्द्रिय सात जीव समास, छह पर्याप्ति छह–पाँच–चार अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस प्राण अपर्याप्त में सात – सात – छह – पाँच – चार – तीन प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति पर्याप्त में देव बिना तीन गति अपर्याप्त में नरक बिना तीन गति, एक से पाँच इंद्रिय, तीन स्थावर व त्रस काय पर्याप्त में त्रसकाय अपर्याप्तक में छह काय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीनों वेद, पच्चीस कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्त में दो अज्ञान, एक असंयम, चक्षु अचक्षु दो दर्शन, एक कापोत लेश्या, भव्य सिद्धिक, एक सासादन सम्यक्त्व, संज्ञी–असंज्ञी दोनों पर्याप्त में संज्ञी अपर्याप्तक में दोनों, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्त में आहारक अपर्याप्त में दोनों, पाँच उपयोग अपर्याप्त में चार उपयोग, आठ ध्यान, पचास आस्रव पर्याप्त में सैंतालीस आस्रव अपर्याप्त में चालीस आस्रव, छप्पन लाख जाति पर्याप्त में बाईस लाख अपर्याप्त में बावन लाख जाति, एक सौ साढ़े नवासी लाख करोड़ कुल कोटि पर्याप्त में साढ़े ब्यासी लाख करोड़ अपर्याप्त में एक सौ साढ़े चौसठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 2/14 राजू, काल – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एकजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट 6 आवली, अंतर नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य पल्योपम का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट कुछ कम सात सागर, सत्ताईस भाव अपर्याप्त में पच्चीस पर्याप्तक में छब्बीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट संख्यात धनुष, एक सौ एक प्रकृतियों का बंध, एक सौ ग्यारह प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ पैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार कापोत लेश्या में सासादन गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यद्यपि धवलाकार के अनुसार संज्ञी पंचेन्द्रियों में ही पर्याप्त अपर्याप्त अवस्था में सासादन गुणस्थान पाया जाता है परन्तु आचार्य यतिवृषभकृत कषाय पाहुड़ के अनुसार सासादन गुणस्थान में भी अपर्याप्त अवस्था में एक दो तीन चार पाँच संज्ञी असंज्ञी जीव पाये जाते है किन्तु पर्याप्त अवस्था में एक संज्ञी जीव ही पाया जाता है। जहाँ जाति का कथन करते समय छप्पन लाख जाति कहीं हैं क्योंकि एकेन्द्रिय में भी नित्य निगोद, इतर निगोद, अग्निकायिक, वायुकायिक जीवों में सासादन गुणस्थान नहीं पाया जाता इसलिए प्रत्येक की सात सात लाख जाति कम करने पर अट्ठाइस लाख कम हो जाती है। इसी प्रकार सभी प्रकार के सूक्ष्म जीवों में लब्ध्यपर्याप्तक जीवों में सासादन गुणस्थान नहीं पाया जाता इसी प्रकार कुल कोटि का कथन करने पर सामान्य से वायुकायिक व अग्निकायिक की दस लाख करोड़ कम करके एक सौ साढ़े नवासी लाख करोड़ होते हैं। पर्याप्तक में क्रमश: (14 लाख करोड़ मनुष्य 43.5 लाख करोड़ तिर्यंच 25 लाख करोड़ नारकी कुल मिलाकर 82.5 लाख करोड़ तथा अपर्याप्तक में एक सौ साढे नवासी लाख करोड़ में से नारकी के 25 लाख करोड़ कम करके एक सौ साढ़े चौसठ लाख करोड़ कुल कोटि होते हैं। शेष कथन सुगम है।

329. कापोत लेश्या मिश्र गुणस्थान

1.	गुणस्थान	सम्यग्मिथ्यात्व
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	3 (देवगति बिना)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	10 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	21 कषाय (अनंतानुबंधी के बिना)
12.	ज्ञान	3 मिश्रज्ञान
13.	संयम	असंयम
14.	दर्शन	2 दर्शन
15.	लेश्या	भाव से कापोत लेश्या, द्रव्य से 6 लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	सम्यग्मिथ्यात्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 उपयोग
21.	ध्यान	8 (4 आर्त 4 रौद्र)
22.	आस्रव	43 (21+12+10)
23.	जाति	22 लाख
24.	कुलकोटि	82½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवां भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवां भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवां भाग
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा–ज.अन्तर्मुहूर्त उ. पल्योपम का असंख्यातवां भाग*[1] एक जीव की अपेक्षा–ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीव अपेक्षा–ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीव अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम 7 सागर*[2]
30.	भाव	26 (औद.14, मि. 10, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवा भाग उ. 1000 योजन
32.	बन्ध	74 पूर्वोक्त
33.	उदय	98 (4 अनंतानुबंधी कषाय, एकेन्द्रियादि 4 जाति, स्थावर, देवद्विक, देवायु, मिथ्यात्व, आतप,सूक्ष्म, साधारण, अपर्याप्त, सम्यक्त्व, मनुष्य व तिर्यंच गत्यानुपूर्वी, नरक गत्यात्यानुपूर्वी सहित 21 प्रकृति का अनुदय)
34.	सत्त्व	147 (तीर्थंकर बिना)
		*[1](ध.पु. 4 सूत्र–287) *[2](ध.पु. 5 सूत्र–299–300–301)

329. काउ लेस्सा सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणं

तेसिं काउ लेस्साओ सम्मामिच्छाइट्टीणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग सम्मामिच्छाइट्ठी गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, देवेण विणा तिण्णि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, इगबीस कसाया, तिण्णि मिस्सणाणाणि, एग असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, एग काउ लेस्सा, भव्वसिद्धिया, एग मिस्स सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, अट्ठ झाणाणि, तिदाल आसवा, बाबीस लक्ख जादी, अद्धुत्तर बेअसीदि लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणा जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंत्तोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंत्तोमुहुत्तं उक्कस्सेण सत्तसायरोवमाणि देसूणाणि, छब्बीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, चउ सत्तदि पयडीणं बंधो, अट्ठणउदि पयडीणं उदओ एवं सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि काउ लेस्सासु सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

कापोत लेश्या सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान

उन्हीं कापोत लेश्यायी सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों के आलाप कहने पर – एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञा, देव बिना तीन गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, दस योग, तीनों वेद, इक्कीस कषाय, तीन मिश्र ज्ञान, एक असंयम, चक्षु अचक्षु दो दर्शन, एक कापोत लेश्या, भव्य सिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, आठ ध्यान, तेतालीस आस्रव, बाईस लाख जाति, साढ़े ब्यासी लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग काल – नानाजीवो की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीव जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम सात सागर, छब्बीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुलका संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, चौहत्तर प्रकृतियों का बंध, अन्ठानवे प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार कापोत लेश्या में सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान समाप्त हुआ।

330. कापोत लेश्या असंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	असंयत गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	–	–
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4	–	–
6.	गति	3 (देव गति बिना)	3 (न.ति.म.)	3 (न.ति.म.)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	13 (आहारकद्विक बिना)	10	3
10.	वेद	तीन वेद	–	2 वेद (स्त्री वेद बिना)
11.	कषाय	21 कषाय	–	20 (स्त्री वेद बिना)
12.	ज्ञान	3 ज्ञान	–	–
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	3 (केवलदर्शन बिना)	–	–
15.	लेश्या	कापोत लेश्या (द्रव्य से 6 लेश्या)	–	(द्रव्य से का शु.ले.)
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो., उप.)	–	2 (क्षा., क्षयो.)
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	6 (3 ज्ञानो. 3 दर्शनो.)	–	–
21.	ध्यान	10 (4 आर्त 4 रौद्र 2 धर्मध्यान)	–	–
22.	आस्रव	46 (21+13+12)	43 (21+10+12)	36 (21+3+12)
23.	जाति	22 लाख	–	–
24.	कुलकोटि	82½ लाख करोड़	–	सत्तर लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवां भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवां भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवां भाग		
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम 7 सागर		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम 7 सागर		
30.	भाव	30 (औद.14,मि.12,पा.2,क्षा.1,औप.1) पर्या. 30 (औद.14,मि.12,पा.2,क्षा.1,औप.1) अपर्या.28 (औद.13,मि.12,पा.2,क्षा.1)		
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उ. 1000 योजन		
32.	बन्ध	77 पूर्वोक्त		
33.	उदय	101 (पूर्व की 21+1 सम्यग्मिथ्यात्व =22–4 देवगत्यानुपूर्वी बिना तीन आनुपूर्वी और सम्यक्त्व इन 18 प्रकृति बिना)		
34.	सत्त्व	148		
		* कापोत लेश्या निर्वृत्यपर्याप्तक के दो ही सम्यक्त्व पाये जाते हैं क्योंकि क्षायिक सम्यक्त्व अथवा कृतकृत्य वेदक भोग भूमिज मनुष्यों तिर्यंचों कर्मभूमिज मनुष्य अथवा प्रथम नर्क में पाया जाता है और इन गतियों में अपर्याप्त अवस्था में उपशम सत्यक्त्व नहीं पाया जाता उपशम सम्यक्त्व देवगति में ही पाया जाता है लेकिन वहाँ कापोत लेश्या नहीं होती।		

330. काउ लेस्सा असंजद गुणट्ठाणं

तेसिं काउ लेस्साओ अविरद जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अविरद संजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीवसमासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, दस – सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, देवेण विणा तिण्णि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु बे वेदा, इगबीस कसाया अपज्जत्तेसु इत्थि वेदेण विणा बीस कसाया, तिण्णि णाणाणि, एग असंजमो, केवल दंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, एग काउ लेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता अपज्जत्तेसु उवसमेण विणा बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, छ उवजोगा, दस झाणाणि, छादाल आसवा पज्जत्तेसु तिदाल अपज्जत्तेसु छत्तीस आसवा, बाबीस लक्ख जादी, अद्धबेअसीदि लक्ख कोडि कुलकोडीणं अपज्जत्तेसु सत्तर लक्ख कोडि कुलकोडिणं ,संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण सत्त सायरोवमाणि देसूणाणि, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण सत्तसायरोवमाणि देसूणाणि, तीस भावा अपज्जत्तेसु अठबीस भाग, अपज्जत्तेसु अट्ठाबीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सत्तसत्तदि पयडीणं बंधो, एगुत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि काउ लेस्सासु असंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

कापोत लेश्या असंयत गुणस्थान

उन्हीं कापोत लेश्यागत अविरत जीवों के आलाप कहने पर – एक अविरत सम्यक्त्व गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, दस – सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, देव बिना तीन गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीन वेद अपर्याप्तक में दो वेद, इक्कीस कषाय अपर्याप्तक में बीस कषाय, तीन ज्ञान, एक असंयम, केवलदर्शन बिना तीन दर्शन, एक कापोत लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम – क्षायिक – क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व अपर्याप्त में उपशम बिना दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, छह उपयोग, दस ध्यान, छयालीस आस्रव पर्याप्त में तेतालीस अपर्याप्त में छत्तीस आस्रव, बाईस लाख जाति, साढ़े बयासी लाख करोड़ कुल कोटि अपर्याप्तक में सत्तर लाख करोड़ कुलकोटि, संख्यापेक्षा – पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम सात सागर, अंतर – नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम सात सागर, तीस भाव पर्याप्तक में तीस अपर्याप्तक में अट्ठावीस, जघन्यावगाहना घनांगुल के संख्यातवें भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, सतत्तर प्रकृतियों का बंध, एक सौ एक प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार कापोत लेश्या में असंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– कापोत लेश्या के साथ असंयत गुणस्थान में देवगति नहीं होती क्योंकि कापोत लेश्या के साथ भवनत्रिक में ही जाता है और सम्यग्दृष्टि भवनत्रिक में उत्पन्न नहीं होता इसलिए देवगति का निषेध है किंतु प्रथम नरक में जा सकता है। अपर्याप्तक में स्त्री वेद के बिना दो वेद क्योंकि सम्यग्दृष्टि जीव किसी प्रकार की स्त्रियों में नहीं जाता पर्याप्तक में तीनों वेद हो सकते हैं। अपर्याप्तक अवस्था में उपशम के बिना दो ही सम्यक्त्व होते हैं क्योंकि प्रथमोपशम में मरण नहीं होता, द्वितीयोपशम सम्यक्त्व केवल देवगति में ही होता है। पर्याप्तक में साढ़े ब्यासी लाख करोड़ कुल कोटि हैं किंतु अपर्याप्तक में सत्तर लाख करोड़ कुल कोटि होती हैं कारण का कथन करते है कापोत लेश्या के साथ सम्यग्दृष्टि यदि तिर्यंचों में जाता है तो भोगभूमि में ही जाता है, कर्मभूमि में नहीं जाता और भोगभूमि में जलचर जीव नहीं पाये जाते अत: जलचरों के साढे बारह लाख करोड़ कुल कम करने पर सत्तर लाख करोड़ बचते हैं। स्पर्शन सुगम है। काल का कथन करने पर जघन्य काल सुगम है। उत्कृष्ट कुछ कम सात सागर इस प्रकार है कोई मिथ्यादृष्टि जीव कापोत लेश्या के साथ सात सागर की आयु के साथ नारकी हुआ पर्याप्त हो विश्राम ले विशुद्ध होकर सम्यक्त्व को प्राप्त किया सारा जीवन सम्यक्त्व के साथ रहा व सम्यक्त्व के साथ ही निकला इस प्रकार तीन अन्तर्मुहूर्त कम सात सागर उत्कृष्ट काल प्राप्त हुआ। यहाँ कदाचित् किसी का प्रश्न हो सकता है कि कापोत लेश्या में नारकी अपर्याप्त में सम्यक्त्व कहा है फिर मिथ्यात्व के साथ उत्पन्न क्यों कराया ?

इसका उत्तर यह है कि सम्यग्दृष्टि जीव यदि नरक जाये तो प्रथम नरक में ही जाता है द्वितीयादि में नहीं और प्रथम नरक की उत्कृष्ट स्थिति एक सागर की है, सात सागर की आयु प्राप्त करने के लिए मिथ्यादृष्टि होना अनिवार्य है, प्रथम नरक में भी सम्यग्दृष्टि को एक सागर में से पल्य के असंख्यात वे भाग कम ही आयु प्राप्त होती है यही उसकी उत्कृष्ट आयु है, यदि जघन्य आयु प्राप्त करेगा तो चौरासी हजार वर्ष से कम नहीं करता यद्यपि नरक की जघन्य आयु दस हजार वर्ष की है परन्तु सम्यग्दृष्टि को जघन्य आयु चौरासी हजार वर्ष ही मिलेगी। कापोत लेश्या के साथ अपर्याप्त अवस्था में क्षयोपशम सम्यक्त्व कहा है वह नरक अथवा तिर्यंच के कृतकृत्य वेदक की अपेक्षा कहा है यदि नारकी मरकर मनुष्य में उत्पन्न हो रहा है, उसके भी पाया जाता है किंतु वहाँ कृतकृत्य वेदक नहीं होता शेष कथन सुगम है।

331. पीत पद्म लेश्या सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	1–7	1–7	1,2,4,6
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त जीव समास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10	7 प्राण
5.	संज्ञा	4	–	–
6.	गति	3 (नरक गति बिना)	–	देव, मनुष्य गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	15 (4 म. 4 व. 7 काय योग)	11 (तीनो मि.व.,का.काययोग बिना)	4 (तीनों मिश्र व कार्माण का.यो.)
10.	वेद	3 वेद	–	2 (स्त्री पुरुष)/पद्म ले.अप. एक पुरुष वेद
11.	कषाय	25 कषाय	–	24
12.	ज्ञान	7 (4 ज्ञान, 3 कुज्ञान)	–	5 (कुअवधिज्ञान व मन:पर्यय बिना)
13.	संयम	5 (असंयम, सा., छे., परि.)	–	3 (परि.विशु. व संयमासंयम बिना)
14.	दर्शन	3	–	–
15.	लेश्या	पीत, पद्म लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य, अभव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	6 (मि.,सा.,मिश्र, उप.,क्षयो.,क्षा.)	–	5 (सम्यग्मिथ्यात्व बिना)
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	10 उपयोग (7 ज्ञानो. 3 दर्शनो.)	7+3=10	8 (5 ज्ञानो.+3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	12 (4 आर्त्त+4 रौद्र+4 धर्म)	–	–
22.	आस्रव	57 (25+15 योग+12 अवि.+5 मि.)	53 (25+11+12+5)	45 (24+4+12+5)
23.	जाति	22 लाख		अपर्या. 18 लाख
24.	कुलकोटि	83½ लाख करोड़ (देव=26, मनु. 14, ति. 43½ लाख करोड़		अपर्या. 40 लाख करोड़
25.	संख्या	असंख्यात (देवों से कुछ अधिक)		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवा भाग, पीत व पद्म कुछ कम वि.वेद.वि. 8/14, उपपाद 1½/14 राजू, 5/14 राजू, मा. 9/14 राजू, 5/14 राजू		
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 2 सागर व कुछ अधिक 18 सागर		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. असंख्यात पुद्गल परावर्तन स्वरूप अनंतकाल		
30.	भाव	38 (औ.15, मि. 18, पा.3, औ.1, क्षा.1)		अप. 34
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवां भाग	उ. संख्यात धनुष	
32.	बन्ध	पीत=111* पद्म=108*		
33.	उदय	108 उदय योग्य प्रकृति ही है आतप, विकलेन्द्रिय, स्थावरादि 4, नरकद्विक, नरकायु तिर्यंच गत्यानुपूर्वी, एकेन्द्रिय		
		और तीर्थंकर इन 14 प्रकृति का उदय नहीं होता है।		
34.	सत्त्व	148		
		* पीत= बन्ध योग्य 111 प्रकृति है सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, नरक गति, नरकगत्यानुपूर्वी और नरकायु इन 9 प्रकृति का बन्ध पीत लेश्या में नहीं होता है। * पद्म लेश्या = बन्ध योग्य 108 प्रकृति हैं, असम्प्राप्ता सृपाटिका संहनन, एकेन्द्रिय जाति, स्थावर, आतप+9 पूर्व वाली इन 12 प्रकृति का बन्ध पद्म लेश्या में नहीं होता है।		

331. तेउपम्म लेस्सा सामण्णं

अह तेजो पम्म लेस्सागद जीवाणं सामण्णालाव भण्णमाणे अत्थि – एयत्तो सत्त गुणट्ठाणा अपज्जत्तेसु एग विय चदु छ चत्तारि गुणट्ठाणा, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीवसमासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, णिरयेण विणा तिण्णि गदी अपज्जत्तेसु बे गदि, पंचिंदियाणि, तसकाया, पंचदस जोगा पज्जत्तेसु एगारस अपज्जत्तेसु चत्तारि जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु बे वेदा*[1], पणबीस कसाया अपज्जत्तेसु चउबीस कसाया, चत्तारि णाणाणि तिण्णि अण्णाणाणि अतो सत्त णाणाणि अपज्जत्तेसु मणपज्जव विभंगेहि विणा पंच णाणाणि, असंजम संजमासंजम सामाइय छेदोवट्ठावणा विहारसुद्धि पंच संजमा अपज्जत्तेसु संजमासंजम विहार सुद्धिहिं विणा तिण्णि संजमा, केवल दंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, तेजो पम्म लेस्सा, भव्व सिद्धिया अभव्व सिद्धिया दोण्णि, छ सम्मत्ता अपज्जत्तेसु मिस्सेण विणा पंच सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, सत्त णाण तिण्णि दंसणोवजोगा दस उवजोगा अपज्जत्तेसु अट्ठ उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारिरुद्द चत्तारि धम्म बारस झाणाणि, सत्तावण्ण आसवा पज्जत्तेसु तिवण्ण अपज्जत्तेसु छादाल आसवा, बाबीस लक्ख जादी अपज्जत्तेसु अट्ठदसलक्ख जादी, अद्धुत्तर तिअसीदि लक्ख कोडि कुलकोडीणं अपज्जत्तेसु दाल लक्ख कोडी कुल कोडीणं, संखावेक्खा असंखेज्ज, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा तेउलेस्सा उववादेहि दिवड्ढ चोद्दस भागा देसूणा व अट्ठ चोद्दस णव चोद्दस भागा वा देसूणा पम्मलेस्सा समुदग्घादेहि अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा उववादेहि पंच चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण बे सायरोवमाणि सादिरेयाणि व अट्ठदस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण असंखेज्ज पोग्गलपरायट्टण रुव अणंतकालो, अडतीस भावा अपज्जत्तेसु चौतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजणसहस्सं, एगादसुत्तर सयं तेजो लेस्साए अट्ठुत्तर सयं पयडीणं पम्म लेस्साए बंधो, अट्ठुत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि लेस्सा मग्गणासु तेउ पम्प लेस्सा सामण्णालाव सम्मत्ता।

पीत पद्म लेश्या सामान्य

अब पीत व पद्म लेश्यागत जीवों के सामान्यालाप कहने पर – एक से सात गुणस्थान अपर्याप्त में एक – दो – चार – छह – चार गुणस्थान संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस अपर्याप्त में सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, नरक गति बिना तीन गतियाँ अपर्याप्तक में दो गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, पन्द्रह योग पर्याप्त में ग्यारह अपर्याप्त में चार योग, तीनों वेद, पच्चीस कषाय, चार ज्ञान तीन अज्ञान सात ज्ञान अपर्याप्त में मन:पर्यय कुअवधि बिना पाँच ज्ञान, असंयम – संयमासंयम – सामायिक – छेदोपस्थापना – परिहारविशुद्धि पाँच संयम अपर्याप्तक में संयमासंयम परिहार विशुद्धि बिना तीन संयम, केवलदर्शन बिना तीन दर्शन, पीत पद्म लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक दोनों, छहों सम्यक्त्व अपर्याप्त में सम्यग्मिथ्यात्व बिना पाँच सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक – अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, दस उपयोग (सात ज्ञान तीन दर्शनोपयोग) पर्याप्तक में दस अपर्याप्तक में आठ उपयोग, चार आर्त्त चार रौद्र चार धर्म बारह ध्यान, सत्तावन आस्रव पर्याप्त में तिरेपन अपर्याप्त में छयालीस आस्रव, बाईस लाख जाति अपर्याप्तक में अठारह लाख जाति, साढ़े तेरासी लाख करोड़ कुल कोटि अपर्याप्तक में चालीस लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – असंख्यात देव देवियों से कुछ अधिक, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 1½, 8/14, 9/14, 5/14 राजू, काल – नाना जीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक दो सागर व कुछ अधिक अठारह सागर, अंतर – नाना जीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अर्द्ध पुद्गल परावर्तन रूप अनंतकाल, अड़तीस अपर्याप्तक में चौतीस भाव, जघन्य अवगाहना संख्यात अंगुल उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ ग्यारह व एक सौ आठ प्रकृतियों का बंध, एक सौ आठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार लेश्या मार्गणा में पीत पद्म लेश्या का सामान्यालाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ जाति बाईस लाख कहीं क्योंकि चार लाख देव चौदह लाख मनुष्य चार लाख तिर्यंच की इसी प्रकार कुल कोटि का कथन करना चाहिए 26 लाख करोड़, देव चौदह लाख करोड़ मनुष्य साढ़े तेतालीस लाख करोड़ तिर्यंच की होती हैं। स्पर्शन का कथन करते हुए कहा है तेजो लेश्या में स्वस्थान लोक का असंख्यात वा भाग सुगम है ते जो लेश्या में उपपाद पद की अपेक्षा डेढ़ राजू है, क्योंकि सौधर्म और ईशान का प्रभव पटल उक्त प्रमाण ऊँचा है मारणांतिक की अपेक्षा 9 राजू बनता है क्योंकि वह एकेन्द्रियों में भी मारणांतिक समुद्घात करता है।

शंका– सनत कुमार स्वर्ग उससे ऊँचाहै ?

समाधान– नहीं क्योंकि वह वहाँ से कुछ ही ऊँचा है।

इसी प्रकार पद्म लेश्या में जानना चाहिए अन्तर इतना है कि यहाँ मारणांतिक व उपपाद की अपेक्षा कुछ कम पाँच राजू बनता है। शेष कथन सुगम है।

* पद्म लेश्या अपर्याप्तक में केवल एक पुरुष वेद ही पाया जाता है। पर्याप्तक में तीनों वेद पाये जाते हैं।

332. पीत लेश्या मिथ्यादृष्टि गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	मिथ्यात्व गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	3 (नरकगति बिना)	–	एक देव गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	12 योग (आहारकद्विक, औ.मि. बिना)	10 योग (4 म., 4 व., औ.,वै.)	2 योग (वै.मि.,का.का.)
10.	वेद	तीन वेद	–	नपुसंक बिना दो वेद
11.	कषाय	25 कषाय	–	24 कषाय
12.	ज्ञान	3 कुज्ञान	–	2 (कुअवधि बिना)
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 (चक्षु, अचक्षु दर्शन)	–	–
15.	लेश्या	पीत लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य/अभव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक/अनाहारक	आहारक	आहारक, अनाहारक
20.	उपयोग	5 (3 ज्ञानो.+2 दर्शनो.)	5	(4 (2 ज्ञानो.+2 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8	–	–
22.	आस्रव	55 (25 कषाय+5 मि.+12 अवि.+13 योग)	52 (25+5 मि.+12 अवि.+10 योग)	43 (24+5 मि.+12 अवि.+2 यो.)
23.	जाति	22 लाख		4 लाख
24.	कुलकोटि	83½ लाख करोड़		26 लाख करोड़
25.	संख्या	असंख्यात (ज्योतिषी देवों से कुछ अधिक)		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग, कुछ कम 8/14 राजू व कुछ कम 9/14 राजू, उप. कुछ कम 3/28 राजू		
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 2 सागर		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक दो सागर		
30.	भाव	28 (औ.15, मि.10, पा.3)	अपर्याप्तक (औद.12, मिश्र 9, पा.3=24)	
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवां भाग	उ. 1000 योजन	
32.	बन्ध	108 (तीर्थंकर, आहारकद्विक इन तीन प्रकृति बिना)		
33.	उदय	103 (मिश्र, सम्यक्त्व, आहारकद्विक, मनुष्यगत्यानुपूर्वी इन पाँच प्रकृति का उदय नहीं होता है।)		
34.	सत्त्व	147 (तीर्थंकर प्रकृति बिना)		

332. तेउ लेस्सा मिच्छाइट्ठी गुणट्ठाणं

तेसिं तेजोलेस्सा मिच्छाइट्ठी जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग मिच्छत्त गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, णिरयेण विणा तिण्णि गदी अपज्जत्तेसु एग देवगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, बारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु बे जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु बे वेदा, पणबीस कसाया अपज्जत्तेसु चउबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि अपज्जत्तेसु बे अण्णाणाणि, एग असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, तेजो लेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्वसिद्धिया दोण्णि, मिच्छत्तसम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, अट्ठज्झाणाणि, पणवण्ण आसवा पज्जत्तेसु बावण्ण अपज्जत्तेसु तिदाल आसवा, बाबीस लक्ख जादी अपज्जत्तेसु चत्तारि लक्ख जादी, अद्धुत्तर तिअसीदि लक्ख कोडि कुलकोडीणं अपज्जत्तेसु छब्बीस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा असंखेज्ज जोदिसिय देवेहि सादिरेयं*[1], खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठ चोद्दस णव चोद्दस दिवड्ढ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण बे सायरोवमाणि सादिरेयाणि*[2], अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण बेसायरोवमाणि सादिरेयाणि, अट्ठबीस भावा अपज्जत्तेसु चउबीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, अट्ठुत्तर सयं पयडीणं बंधो, तिउत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि तेसु लेस्सासु मिच्छाइट्ठी गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

पीत लेश्या मिथ्यादृष्टि गुणस्थान

उन्हीं पीत लेश्या मिथ्यादृष्टि जीवों के आलाप कहने पर – एक मिथ्यात्व गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस अपर्याप्त में सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, नरक गति बिना तीन गति अपर्याप्तक में एक देवगति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, बारह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में दो योग, तीनों वेद अपर्याप्तक में दो वेद, पच्चीस कषाय अपर्याप्तक में चौबीस कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्त में दो अज्ञान, एक असंयम, चक्षु–अचक्षु दो दर्शन, पीत लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक दोनों, मिथ्यात्व सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, पाँच उपयोग अपर्याप्त में चार उपयोग, आठ ध्यान, पचपन आस्रव पर्याप्त में बावन अपर्याप्त में तेतालीस आस्रव, बाईस लाख जाति अपर्याप्तक में चार लाख जाति, साढ़े तेरासी लाख करोड़ कुल कोटि अपर्याप्तक में छब्बीस लाख करोड़, कुल कोटी, संख्यापेक्षा – असंख्यात ज्योतिषी देवों से कुछ अधिक, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 8/14 राजू, 9राजू कुछ कम 1½ राजू, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक दो सागर, अंतर – नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक दो सागर, अट्ठाईस भाव अपर्याप्तक में चौबीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन एक सौ आठ प्रकृतियों का बंध, एक सौ तीन प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार पीत लेश्या में मिथ्यादृष्टि गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :–*[1] ज्योतिषी देवों में व्यन्तर, भवनवासी, मनुष्य तिर्यंचों की संख्या मिलाने पर पीत लेश्या वाले जीवों की संख्या प्राप्त होती है।

*[2] स्पर्शन का कथन करते हुए कहते हैं स्वस्थान की अपेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग विहार वेदना विक्रिया कषाय समुद्घात की अपेक्षा कुछ कम आठ राजू क्योंकि प्रथम स्वर्ग का देव नीचे तीसरी पृथ्वी तक जाता है जो मध्यलोक से दो राजू नीचे है ऊपर स्वशक्ति से डेढ राजू मित्र की सहायता से छ: राजू तक विहार करता है इस प्रकार छ: और दो आठ राजू हो जाती है कुछ कम का तात्पर्य नीचे एक हजार योजन पृथ्वी में नरकावास नहीं है इसलिए उसे छोड़ना चाहिए। मारणांतिक अपेक्षा नौ राजू क्योंकि यह एकेन्द्रियों में मारणांतिक समुद्घात कर सकता है (सात राजू ऊपर दो राजू नीचे) क्योंकि कोई देव नीचे तीसरी पृथ्वी में विराजमान है और अष्टम् पृथ्वी पर एकेन्द्रियों में समुद्घात करता है तो उक्त प्रमाण स्पर्शन बन जाता है। उपपाद डेढ़ राजू क्योंकि सौधर्म ईशान कल्प का प्रभव विमान की ऊँचाई उक्त प्रमाण है।

*[3] कोई मिथ्यादृष्टि मनुष्य या तिर्यंच घातायुष्क (जिसने पहले ऊपर के स्वर्ग की आयु बांधी बाद में मिथ्यादृष्टि हो आयु का घात कर नीचे सौधर्म स्वर्ग की आयु रख ली) पल्य का असंख्यात वां भाग अधिक दो सागर की आयु लेकर उत्पन्न हुआ आयु को पूर्ण कर मरा और मनुष्यों में पैदा हो अन्तर्मुहूर्त तेजो लेश्या के साथ रहकर अन्य लेश्या को चला गया इस प्रकार कुछ अधिक दो सागर काल प्राप्त हुआ।

शंका – कोई सम्यग्दृष्टि घातायुष्क मनुष्य देवों में उत्पन्न होता है उसको ढाई सागर की आयु प्राप्त होती है उसे मिथ्यात्व में लाकर काल और अधिक प्राप्त हो सकता था वह क्यों नहीं कहा ?

समाधान – क्योंकि आचार्य परम्परा के उपदेशानुसार वह जीव मिथ्यात्व को प्राप्त नहीं होता किन्तु अन्य आचार्यों के उपदेशानुसार ऐसा भी संभव है। इसी प्रकार से अन्तर जानना चाहिए। शेष कथन सुगम है।

333. पीत लेश्या सासादन गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	सासादन	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	3 गति (नरकगति बिना)	–	एक देव गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	12 योग	10 योग	2 योग (वै.मि.,का.काय योग)
10.	वेद	तीन वेद	–	2 वेद (नपुंसक वेद बिना
11.	कषाय	25 कषाय	–	24 (नपुंसक वेद बिना)
12.	ज्ञान	3 कुज्ञान	–	2 कुज्ञान
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 (चक्षु, अचक्षु)	–	–
15.	लेश्या	पीत लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	सासादन	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	आहारक, अनाहारक
20.	उपयोग	5 (3 ज्ञानो.+2 दर्शनो.)	5	4 (2 ज्ञानो.+2 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8 (4 आर्त्त, 4 रौद्र)	–	–
22.	आस्रव	49 (25+12+12)	47 (25+10+12)	39 (25+12+2)
23.	जाति	22 लाख	22 लाख	4 लाख
24.	कुलकोटि	83½ लाख करोड़	83½ लाख करोड़	26 लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14 राजू व 9/14 राजू, 3/28 राजू*		
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवा भाग एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. 6 आवली		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवा भाग एक जीवापेक्षा – ज. पल्योपम का असंख्यातवा भाग उ. कुछ अधिक 2 सागर		
30.	भाव	26 (औद. 14, मि. 10, पा.2) अपर्याप्त 22 भाव		
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवां भाग उ. संख्यात धनुष		
32.	बन्ध	101		
33.	उदय	102		
34.	सत्त्व	145 (तीर्थंकर और आहारकद्विक बिना)		
		✲ $\frac{3}{28}$ = 1½/ 14 या $\frac{3}{28}$		

333. तेउ लेस्सा सासण गुणट्ठाणं

तेसिं तेजो लेस्सा सासण गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग सासण गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, णिरयेण विणा तिण्णि गदी अपज्जत्तेसु एग देवगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, बारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु बे जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु बे वेदा, पणबीस कसाया अपज्जत्तेसु चउबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि अपज्जत्तेसु बे अण्णाणाणि, एग असंजमो, चक्खु–अचक्खु बे दंसणाणि, तेजो लेस्सा, भव्व सिद्धिया, सासण सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, अट्ठज्झाणाणि, ऊणपचास आसवा पज्जत्तेसु सत्तदाल अपज्जत्तेसु उणदाल आसवा, बाबीस लक्ख जादी अपज्जत्तेसु चत्तारि लक्ख जादी, अद्धुत्तर तिअसीदि लक्ख कोडि कुलकोडीणं अपज्जत्तेसु छब्बीस लक्ख कोडी कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठ चोद्दस णव चोद्दस दिवड्ढ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छावली, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण बे सायरोवमाणि सादिरेयाणि, छब्बीस भावा अपज्जत्तेसु बाबीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण संखेज्ज धणू, एगुत्तर सयं पयडीणं बंधो, बे उत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं पणदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि तेउ लेस्सासु सासण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

पीत लेश्या सासादन गुणस्थान

उन्हीं पीत लेश्या सासादन गुणस्थानवर्ती जीवों के आलाप कहने पर – एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छह पर्याप्ति छह अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस – अपर्याप्त में सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, नरक बिना तीन गतियाँ अपर्याप्तक में एक देवगति*, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, बारह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में दो योग, तीनों वेद अपर्याप्तक में दो पुरुष वेद स्त्री वेद, पच्चीस कषाय अपर्याप्तक में चौबीस कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्त में दो अज्ञान, एक असंयम, चक्षु–अचक्षु दो दर्शन, पीत लेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, पाँच उपयोग अपर्याप्त में चार उपयोग, आठ ध्यान, उनंचास आस्रव पर्याप्त में सैंतालीस अपर्याप्त में उनतालीस आस्रव, बाईस लाख जाति अपर्याप्तक में चार लाख जाति, साढ़े तेरासी लाख करोड़ कुल कोटि अपर्याप्तक में छब्बीस लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोका का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 8/14, 9/14, 3/28 राजू, काल – नानाजीवापेक्षा जघन्य से एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह आवली, अंतर – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा – जघन्य पल्योपम का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट कुछ अधिक दो सागर, छब्बीस भाव अपर्याप्तक में बाईस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट संख्यात धनुष, एक सौ एक प्रकृतियों का बंध, एक सौ दो प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ पैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार पीत लेश्या में सासादन गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– सभी पद सुगम है मात्र बन्ध उदय सत्त्व का थोड़ा खुलासा करते हैं। तीर्थंकर, आहारकद्विक ये तीन तथा मिथ्यात्व, हुंडक संस्थान, नपुंसक वेद, असंप्राप्ता सृपाटिका संहनन, एकेन्द्रिय जाति, आतप, स्थावर, इस प्रकार ये दस प्रकृतियों का बन्ध नहीं होता। उदय योग्य प्रकृतियां एक सौ दो हैं क्योंकि सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, आहारकद्विक, मनुष्यगत्यानुपूर्वी और मिथ्यात्व इन 6 प्रकृतियों का उदय नहीं पाया जाता। तीर्थंकर आहारक द्विक इन तीन के बिना एक सौ पैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व पाया जाता है। शेष कथन सुगम है स्पर्शन का कथन प्रथम गुणस्थान के समान जानना चाहिए।

शंका– अपर्याप्त अवस्था में एक देव गति ही कही है अन्य गति क्यों नहीं कही क्योंकि देव गति से आने वाला देव मनुष्य या तिर्यंचों में जन्म लेता है तो क्या उसके उक्त लेश्या होती है ?

समाधान – नहीं जिस समय अपनी पर्याय (देव) से च्युत होता है उसी समय लेश्या परावर्तन होकर अशुभ लेश्या हो जाती है। सम्यग्दृष्टि की लेश्या वही रहती है।

334. पीत लेश्या सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान

1.	गुणस्थान	सम्यग्मिथ्यात्व
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	3 गति (नरकगति बिना)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	10 योग
10.	वेद	तीन वेद
11.	कषाय	21 कषाय (चारों अनंतानुबंधी बिना)
12.	ज्ञान	3 मिश्रज्ञान
13.	संयम	असंयम
14.	दर्शन	2 दर्शन (चक्षु, अचक्षु)
15.	लेश्या	पीत लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	सम्यग्मिथ्यात्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 (3 ज्ञानो.+2 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8 (4 आर्त्त + 4 रौद्र)
22.	आस्रव	43 (21 कषाय+12 अवि.+10 योग)
23.	जाति	22 लाख
24.	कुलकोटि	83½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14 राजू
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग, एक जीव की अपेक्षा – ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग, एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 2 सागर
30.	भाव	26 (औ.14, क्षयो.10, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उ. 1000 योजन
32.	बन्ध	74
33.	उदय	98
34.	सत्त्व	147 (तीर्थंकर बिना)

334. तेउ लेस्सा सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणं

तेसिं तेजो लेस्सागद सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि – एग सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीवसमासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, णिरयेण विणा तिण्णि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, इगबीस कसाया, तिण्णि मिस्स णाणाणि, एग असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, तेउ लेस्सा, भव्वसिद्धिया, सम्मामिच्छत्त सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, अट्ठज्झाणाणि, तिदाल आसवा, बाबीस लक्ख जादी, अद्धुत्तर तिअसीदि लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठचोद्दस भागा वा देसूणा*[1], कालो णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण अंत्तोमुहुत्तं उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण बे सायरोवमाणि सादिरेयाणि, छब्बीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, चउसत्तदि पयडीणं बंधो, अट्ठणउदि पयडीणं उदओ एवं सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि तेउ लेस्सासु सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

पीत लेश्या सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान

उन्हीं पीत लेश्यागत सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों के आलाप कहने पर – एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, नरक बिना तीन गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, दस योग, तीनों वेद, इक्कीस कषाय, तीन मिश्रज्ञान, एक असंयम, चक्षु–अचक्षु दो दर्शन, पीत लेश्या, भव्य सिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, आठ ध्यान, तेतालीस आस्रव, बाईस लाख जाति, साढ़े तेरासी लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 8/14 राजू, काल नाना जीव जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीव जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एकजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक दो सागर, छब्बीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, चौहत्तर प्रकृतियों का बंध, अन्ठानवे प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार पीत लेश्या में सम्यग्मियात्व गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– स्पर्शन का कथन करने पर स्वस्थान लोक का असंख्यातवां भाग है विहार, वेदना, विक्रिया, कषाय समुद्घात की अपेक्षा कुछ कम आठ राजू है। यहाँ पर मारणांतिक व उपपाद पद नहीं होता, विहार भी स्वशक्ति से तो मात्र कुछ कम साढ़े तीन राजू है किंतु किसी मित्र देव की सहायता से उसके साथ सोलहवें स्वर्ग तक जा सकता है। जैसे देवियां देवियों की पीत लेश्या पायी जाती है क्योंकि देवियों का जन्म सौधर्म कल्प में ही होता है, परन्तु जिस देव का जिस देवी से नियोग होता है वह ले जाता है। उसका स्पर्श नीचे दो राजू ऊपर छः राजू इस प्रकार आठ राजू बन जाता है शेष कथन सुगम है।

शंका – सासादन गुणस्थान में अवगाहना संख्यात अंगुल कही थी परन्तु यहाँ घनांगुल का संख्यातवां भाग कहीं सौ कैसे ?

समाधान – यह कोई दोष नहीं है क्योंकि घनांगुल के संख्यातवें भाग में भी संख्यात अंगुल पाये जाते है।

शंका – घनांगुल के संख्यात वे भाग में संख्यात अंगुल कैसे पाये जाते है ?

समाधान–जीवों की अवगाहना की लम्बाई चौडाई और मोटाई समान नहीं पायी जाती है और संख्यात भी अज्ञात है अत: घनांगुल के संख्यातवे भाग में संख्यात अंगुल पाये जाते हैं। एक बात यहाँ और विचारणीय है, सासादन गुणस्थान उपशम सम्यक्त्व पूर्वक ही होता है और उपशम सम्यक्त्व गर्भजो को ही होता है सम्मूर्छनों को नहीं, अत: जितनी अवगाहना में स्त्री–पुरुष का व्यवहार हो सकता है उतनी अवगाहना में सासादन गुणस्थान हो सकता है। संख्यात अंगुल कह देने पर सारी अवगाहना सम्मिलित है। अत: तद्योग्य अवगाहना ग्रहण कर लेनी चाहिए। किन्तु सम्यग्मिथ्यात्व गर्भज व सम्मूर्छन सभी को हो सकता है अत: वहाँ घनांगुल का संख्यातवां भाग कहने में कोई दोष नहीं है। बन्ध योग्य प्रकृतियां चौहत्तर है क्योंकि प्रथम द्वितीय गुणस्थान में क्रमश: सात व पच्चीस इस प्रकार बत्तीस तीन प्रकृति अबंध तथा देवायु, मनुष्य का बन्ध नहीं होता इस प्रकार एक सौ ग्यारह में से सैंतीस कम करने पर चौहत्तर बचती है। उदय प्रकृतियाँ भी अन्ठानवें हैं क्योंकि पूर्व में एक सौ दो प्रकृतियों का उदय था वहाँ पर चार अनंतानुबंधी की उदय व्युच्छित्ति होने से यहाँ उक्त प्रकृतियां रह जाती हैं।

335. पीत लेश्या असंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	असंयत गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	2 (संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त)	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	3 गति (नरकगति बिना)	–	2 गति (देव, मनुष्य)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	13 योग (आहारकद्विक बिना)	10 योग (4 म., 4व., औ.,वै.)	3 योग (औ.मि.,वै.मि., कार्माण)
10.	वेद	तीन वेद*1	–	अपर्याप्तक में एक पुरुष वेद
11.	कषाय	21 कषाय*2	–	19 कषाय (स्त्री., नपुं. वेद बिना)
12.	ज्ञान	3 ज्ञान	–	–
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	3 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	पीत लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो., औप.)*3	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	आहारक, अनाहारक दोनों
20.	उपयोग	6 उपयोग	–	–
21.	ध्यान	10 (4 आर्त्त+4 रौद्र+2 धर्म)	–	–
22.	आस्रव	46 (21क.+12 अवि.+13 यो.)	43 (21 क.+12 अवि.+10 यो.)	34 (19 क.+12 अवि.+3 यो.)*4
23.	जाति	22 लाख	–	18 लाख
24.	कुलकोटि	83½ लाख करोड़	–	40 लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवा भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवा भाग		
27.	स्पर्शन	स्वस्थान लोक का असंख्यातवा भाग वि.वे.,वि.क. कुछ कम 8/14 राजू, मा., उप. 3/28 राजू*		
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम दो सागर		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक दो सागर		
30.	भाव	30 (औद.14, मि.12, क्षा.1, पा.2, औप.1) अपर्याप्तक में – 27 (औद.11, क्षायो.12, पा.2, क्षा.1, औप.1)		
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उ. 1000 योजन		
32.	बन्ध	77		
33.	उदय	100		
34.	सत्त्व	148		

*1 अपर्याप्तक मे एक पुरुष वेद ही पाया जाता है क्योंकि पीत लेश्या का प्रकरण है।

*2 कषाय भी दो व चार कम करके उन्नीस होती हैं।

*3 द्वितीयोपशम सम्यक्त्व के साथ देवगति में जीव पाया जाता है।

*4 अपर्याप्तक अवस्था में दो वेद बिना चौंतीस आस्रव पाये जाते हैं।

✻ 3/28/2= 1½/14 अथवा 3/28

335. तेउ लेस्सा असंजद गुणट्ठाणं

तेसिं तेजो लेस्सा अविरद संजदो गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि – एग असंजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, दस पाणा सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, णिरयेण विणा तिण्णि गदी अपज्जत्तेसु बे गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, तेरसजोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु ति जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु एग पुरिस वेदो, इगबीस कसाया अपज्जत्तेसु उणबीस कसाया, तिण्णि णाणाणि, एग असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, एग तेउ लेस्सा, भव्व सिद्धिअ, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, छ उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द बे धम्म दस झाणाणि, छादाल आसवा पज्जत्तेसु तिदाल अपज्जत्तेसु चउतीस आसवा, बाबीस लक्ख जादी अपज्जत्तेसु अट्ठदस लक्ख जादी, अद्धुत्तर तिअसीदि लक्ख कोडि कुलकोडीणं अपज्जत्तेसु दाल लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा* उववादावेक्खा दिवड्ढ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण बे सायरोवमाणि देसूणाणि, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण बे सायरोवमाणि सादिरेयाणि, तीस भावा अपज्जत्तेसु सत्तबीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्स, सत्तसत्तदि पयडीणं बंधो, सयं पयडीणं उदओ एवं अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि तेउ लेस्सासु असंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

पीत लेश्या असंयत गुणस्थान

उन्हीं पीत लेश्या अविरत संयत गुणस्थानालाप कहने पर – एक असंयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहो अपर्याप्ति , दस प्राण अपर्याप्तक में सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, नरक गति बिना तीन गति अपर्याप्त में दो गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीन वेद अपर्याप्त में एक पुरुष वेद, इक्कीस कषाय अपर्याप्तक में उन्नीस कषाय, तीन ज्ञान, एक असंयम, तीन दर्शन, पीत लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम – क्षायिक – क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक – अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, छ उपयोग, चार आर्त्त चार रौद्र दो धर्म दस ध्यान, छयालीस आस्रव पर्याप्त में तेतालीस अपर्याप्त में चौत्तीस आस्रव, बाईस लाख जाति अपर्याप्तक में अठारह लाख जाति, साढ़े तेरासी लाख करोड़ कुलकोटि अपर्याप्त में चालीस लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 8/14 राजू उपपाद 3/28 राजू, काल – नाना जीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम दो सागर, अंतर – नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक दो सागर, तीस भाव अपर्याप्तक में सत्ताईस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, सतत्तर प्रकृतियों का बंध, सौ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार पीत लेश्या में असंजद गुणस्थान समाप्त हुआ।

---

* विशेषार्थ :– स्पर्शन का कथन करते हुए यद्यपि विहारादि की अपेक्षा कथन किया जा चुका है यहाँ इतना अवश्य है कि मारणांतिक व उपपाद पद भी पाया जाता है। और उसका डेढ़ राजू बनता है, क्योंकि कोई सम्यग्दृष्टि तिर्यंच पीत लेश्या के साथ मारणांतिक समुद्घात कर सकता है और मरण कर सौ धर्म आदि स्वर्ग में उत्पन्न होता है।

शंका – यहाँ पूर्व की तरह 9 राजू स्पर्शन क्यों नहीं कहा ?

समाधान – नहीं कहा क्योंकि सम्यग्दृष्टि देव तिर्यंचों में एकेन्द्रिय आदि में उत्पन्न नहीं होता और न ही मारणांतिक समुद्घात करता है।

शंका– उत्पन्न भले ही न होवे किन्तु मारणांतिक समुद्घात करने में क्या दोष है ? क्योंकि जिस प्रकार सासादन गुणस्थान में मारणांतिक समुद्घात एकेन्द्रियों में पाया जाता है ?

समाधान– ऐसी शंका नहीं करना चाहिए क्योंकि जिस प्रकार सासादन से पतित हो मिथ्यात्व में जाकर मरण करता है वैसा यहाँ नहीं कर सकता क्योंकि समय सम्यक्त्व का अधिक है सासादन का कम है। सासादन से मिथ्यात्व में जाकर मर जाता है किंतु सम्यक्त्व से मिथ्यात्व में जाकर शीघ्र ही मरण नहीं होता। ऐसा मेरा स्वयं का चिंतन है किंतु पाठकगण आगम का भी अवलोकन करें क्योंकि आगम सर्वोपरि है उसे ही स्वीकार करें। मिथ्यात्व, मिश्र, आहारकद्विक व अनंतानुबंधी चतुष्क के बिना सौ प्रकृति उदययोग्य कहीं है। सत्त्व एक सौ अड़तालीस का जो सुगम है। अपर्याप्तक में वेद एक पुरुष वेद ही है क्योंकि प्रथम नरक जाने के साथ नपुंसक वेद भी पाया जाता था किंतु पीत लेश्या के साथ नरक नहीं जाता है इसलिए एक मात्र पुरुष वेद ही कहना चाहिए। अपर्याप्तक अवस्था में द्वितीयोपशम सम्यक्त्व की अपेक्षा तीन सम्यक्त्व पाये जाते है। शेष कथन सुगम है।

336. पीत लेश्या संयतासंयत गुणस्थान

1.	गुणस्थान	संयमासंयम
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	2 (मनुष्य, तिर्यंच गति)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	तीन वेद
11.	कषाय	17 कषाय (4 अनं., 4 अप्रत्या.बिना)
12.	ज्ञान	3 ज्ञान
13.	संयम	संयमासंयम
14.	दर्शन	3 (चक्षु, अचक्षु, अवधि)
15.	लेश्या	पीत लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (उपशम, क्षयो., क्षायिक)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	6 (3 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	11 ध्यान (4 आर्त्त+4 रौद्र+3 धर्म)
22.	आस्रव	37 (17 कषाय + 11 अवि. + 9 योग)
23.	जाति	18 लाख
24.	कुलकोटि	57½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवां भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवां भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवां भाग 1½ राजू (मा.)
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर एक जीवापेक्षा – निरन्तर
30.	भाव	29 (औद.12, मि.13, औप.1, क्षा.1, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उ. 1000 योजन
32.	बन्ध	67 गुणस्थानोक्त (44 प्रकृति बिना)
33.	उदय	87 (21 प्रकृति बिना)[*1]
34.	सत्त्व	147 (नरकायु बिना)
		[*1] चतुर्थ गुणस्थान की

336. तेउ लेस्सा संजमासंजम गुणट्ठाणं

तेसिं तेउ लेस्सा देस संजदो जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग संजदासंजदो गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, मणुस्स तिरिक्ख बे गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, तिण्णि वेदा, सत्तदस कसाया, तिण्णि णाणाणि, एग संजमासंजमो, चक्खु अचक्खु ओहि तिण्णि दंसणाणि, एग तेउ लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, छह उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द तिण्णि धम्म एगादस झाणाणि, सत्ततीस आसवा, अट्ठदस लक्ख जादी, अद्धुत्तर सत्तावण्ण लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व दिवड्ढ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणेगजीवावेक्खा णिरंतरं, उणतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सडसट्ठी पयडीणं बंधो, सत्तासीदि पयडीणं उदओ एवं सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि तेउ लेस्सासु संजमासंजम गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

पीत लेश्या संयमासंयम गुणस्थान

उन्हीं पीत लेश्या देशसंयत जीवों के आलाप कहने पर – एक संयमासंयम गुणस्थान, एक संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्य तिर्यंच दो गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, तीन वेद, सत्रह कषाय, तीन ज्ञान, एक संयमासंयम, चक्षु–अचक्षु – अवधि तीन दर्शन, एक पीत लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम – क्षायिक – क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, चार आर्त्त चार रौद्र तीन धर्म ग्यारह ध्यान, सैंतीस आस्रव, अठारह लाख जाति, साढ़े सत्तावन लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग व डेढ़ राजू, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – नाना जीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा निरंतर, उनतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, सड़सठ प्रकृतियों का बंध, सत्तासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार पीत लेश्या में संयमासंयम गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ केवल मारणांतिक समुद्घात की अपेक्षा स्पर्शन डेढ़ राजू बनताहै शेष पदों की अपेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग ही होता है उपपाद पद यहाँ पाया नहीं जाता। काल का कथन करते समय चूंकि पाँचवा गुणस्थान मनुष्य व तिर्यंचों में ही पाया जाता है वहाँ लेश्या परिवर्तन अन्तर्मुहूर्त में होता रहता है इसलिए जघन्य काल एक समय कहा क्योंकि कोई सम्यग्दृष्टि चतुर्थ गुणस्थानवर्ती जीव पीत लेश्या वाला, लेश्या के काल में एक समय शेष रहने पर पंचम गुणस्थान को प्राप्त हुआ उसका उक्त काल एक समय प्राप्त होता है इसी प्रकार छटवां गुणस्थानवर्ती पंचम गुणस्थान को प्राप्त हुआ तो उसका भी बन जाता है। उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त सुगम है। अन्तर चूंकि लेश्या मार्गणा है और पाँचवे गुणस्थान से अन्य गुणस्थान को प्राप्त कर पुन: उसी में लौटना बन नहीं सकता क्योंकि तब तक लेश्या बदल जायेगी इसलिए अन्तर भी प्राप्त नहीं होता निरंतर है। शेष कथन सुगम है। यहाँ यद्यपि प्रकरण तो नहीं है फिर भी प्रश्न उठ रहा है कि विग्रह गति में अथवा अपर्याप्तक अवस्था में लेश्या परिवर्तन नहीं होता और पीत लेश्या में मरण करने वाले अर्थात् मिथ्यादृष्टि देव यदि एकेन्द्रियों में उत्पन्न होते हैं तो उनके अपर्याप्तक अवस्था में पीत लेश्या कैसे पायी जाती है क्योंकि अपर्याप्तक अवस्था में देवों में ही पीत लेश्या पायी जाती है अन्य गति में नहीं फिर पीत लेश्या के साथ जीवन पर्यंत रहने वाले देव मरण कर एकेन्द्रियों में उत्पन्न होते हैं, उनकी कौन सी लेश्या होगी अथवा भोग भूमियाँ मिथ्यादृष्टि भवनत्रिक में उत्पन्न होते हैं उनकी कौन सी लेश्या होगी ?

इस प्रश्न का उत्तर देते हैं यह सत्य है कि मिथ्यादृष्टि अपर्याप्त काल में पीत लेश्या के साथ देवगति में ही पाया जाता है किन्तु एकेन्द्रियों में उत्पन्न होने वाले मिथ्यादृष्टि देव के मरण के समय में ही अर्थात् शरीर छोड़ने के समय व लेश्या परिवर्तन के समय में अन्तर नहीं पाया जाता जैसे ही मरण को प्राप्त हुआ उसी समय पीत लेश्या समाप्त हो अशुभ लेश्या बन जाती है यही कारण है इसी प्रकार भोग भूमियां का भी जानना चाहिए कोई भेद नहीं है। शेष कथन सुगम है।

337. पीत लेश्या प्रमत्तसंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	प्रमत्त संयत गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त, अपर्याप्त	पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	मनुष्यगति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	11 योग	10	1 आहारक मिश्र
10.	वेद	तीन वेद	–	1 (पुरुष वेद)*1
11.	कषाय	13 कषाय	–	11 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान	–	3 ज्ञान
13.	संयम	3 (सा., परिहार, छेदो.)	–	2 (परिहार विशुद्धि बिना)
14.	दर्शन	3 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	पीत लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो., औप.)	–	2 (क्षा. क्षयो.)*2
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक	–	–
20.	उपयोग	7 उपयोग	–	6
21.	ध्यान	7(3 आर्त्त+4 धर्म)	–	–
22.	आस्रव	24 (13+11 योग)	23 (13+10)	12 (11 कषाय+1 योग)
23.	जाति	14 लाख	–	–
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़	–	–
25.	संख्या	संख्यात (सामान्य से किन्तु विशेषता से अलग हैं (संख्यात)	–	27
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवां भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवां भाग		
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर एक जीवापेक्षा – निरन्तर		
30.	भाव	29 (औद.11, क्षयो.14, औ.1, क्षा.1, पा.2) अपर्याप्तक में 25 भाव (औ.9+13क्षयो.+क्षा.1+पा.2)		
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष		
32.	बन्ध	63 गुणस्थानोक्त (48 प्रकृति बिना)		
33.	उदय	81 (27 प्रकृति बिना) पंचम गुणस्थान की अनु. 21 प्रकृति, (8) प्रत्याख्यानावरण, चार कषय, उद्योत, तिर्यंचायु, तिर्यंच गति, नीच गोत्र व्युच्छिन्न प्रकृति)		
34.	सत्त्व	146 नरकायु व तिर्यंचायु बिना		
		*1 आहारक काय योग स्त्री, नपुंसक वेद में नहीं होता ऐसा सिद्धांत है। *2 उपशम सम्यक्त्व के साथ आहारक काय योग नहीं होता इसलिए यहाँ दो ही सम्यक्त्व कहे है।		

337. तेउ लेस्सा पमत्तसंजद गुणट्ठाणं

तेसिं तेउ लेस्सा पमत्तसंजदो जीवाणामालाव भण्णमाणो अत्थि – एग पमत्तसंजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, दस पाणा सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, मणुस्स गदि, पंचिंदियाणि, तसकाओ, एगारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु एग आहारमिस्सकायजोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु एग पुरिस वेदो, तेरस कसाया अपज्जत्तेसु एगारस कसाया, केवल णाणेण विणा चत्तारि णाणाणि अपज्जत्तेसु मणपज्जयेण विणा तिण्णि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा विहार सुद्धि तिण्णि संजमा अपज्जत्तेसु विहार सुद्धिओ विणा बे संजमा, तिण्णि दंसणाणि, तेउ लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता अपज्जत्तेसु बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा अपज्जत्तेसु छ उवजोगा, तिण्णि अट्ट चत्तारि धम्म सत्त झाणाणि, चउबीस आसवा पज्जत्तेसु तेबीस आसवा अपज्जत्तेसु बारस आसवा, चोद्दस लक्ख जादि, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा सामण्णेण पंच कोडि तिणउदि लक्ख अट्ठणउदि सहस्सं छ उत्तर बे सयं* संखेज्ज अपज्जत्तेसु सत्तवीस, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एग जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमयो उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं अपज्जत्तेसु जहण्णुकस्सेण अंतोमुहुत्त,* अंतरं णाणेगजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा णिरंतरं, उणतीस भावा अपज्जत्तेसु पणबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, तिसट्ठि पयडीणं बंधो, एगासीदि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि तेउ लेस्सासु पमत्तसंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

पीत लेश्या प्रमत्तसंयत गुणस्थान

उन्हीं पीत लेश्या प्रमत्तसंयत जीवों के आलाप कहने पर – एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, दस प्राण सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, ग्यारह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में एक आहारक मिश्रकाय योग, तीनों वेद अपर्याप्तक में एक पुरुष वेद, तेरह कषाय अपर्याप्तक में ग्यारह कषाय, चार ज्ञान अपर्याप्त में तीन ज्ञान, सामायिक – छेदोपस्थापना – परिहार विशुद्धि तीन संयम अपर्याप्त में परिहार विशुद्धि बिना दो संयम, तीन दर्शन, पीत लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम – क्षायिक – क्षयोपशम तीन सम्यकत्व अपर्याप्तक में उपशम बिना दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग अपर्याप्त में छह उपयोग, तीन आर्त्त चार धर्म सात ध्यान, चौबीस आस्रव पर्याप्त में बाईस अपर्याप्त में बारह आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – संख्यात (पाँच करोड़ तेरानवे लाख अन्ठानवे हजार दो सौ छह) अपर्याप्तक में सत्ताईस, क्षेत्रापेक्षा–लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन–लोक का असंख्यातवां भाग, काल–नाना जीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त अपर्याप्तक का जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर – नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा निरंतर, उनतीस भाव अपर्याप्तक में पच्चीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, तिरेसठ प्रकृतियों का बंध, इक्यासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छयालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार पीत लेश्या में प्रमत्त गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– संख्या का कथन आलाप में सामान्य से किया गया है विशेषता से छटवें गुणस्थान में स्थिति सम्पूर्ण जीवों के संख्यात वे भाग संख्या आती हैं क्योंकि प्रमत्त संयत में तीनों लेश्या पायी जाती हैं और वे निरंतर हैं इसलिए पद्म व शुक्ल लेश्या में भी जीव रहेंगे इसलिए स्वत: ही सिद्ध है कि पीत लेश्या में संख्यात ही जीव राशि है परंतु कितनी हैं ऐसा अल्पबहुत्व से निकाला जा सकता है विशेष उपदेश का अभाव है। अपर्याप्तक अवस्था केवल आहारक शरीर के कारण बनती है उसकी अपेक्षा सारा कथन है जबतक आहारक शरीर पूर्ण नहीं होता तब तक अपर्याप्तक कहलाता है। आहारक शरीर के साथ अपर्याप्तक तो होता है परन्तु अनाहारक नहीं होता क्योंकि आत्मा एक शरीर त्याग किये बिना दूसरे शरीर में प्रवेश नहीं होती है शेष कथन सुगम है।

काल का कथन जघन्य एक समय किया है उसका आशय आगे पद्म लेश्या के प्रकरण में लिखा जा रहा है वहाँसे जान लेना इसी प्रकार पंचम गुणस्थान में भी जान लेना चाहिए।

* अपर्याप्तक का काल ज.उ. अन्तर्मुहूर्त ही होता है तथा संख्या आहारकों में पर्याप्तक 54 तथा अपर्याप्तक 27 होते है शेष कथन सुगम है।

अन्तर सामान्य से नाना जीवों का निरंतर किन्तु अपर्याप्तकों में जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व है जिसका खुलासा इसी ग्रंथ में किया है। एक जीव का पर्याप्त अपर्याप्त निरंतर है।

338. पीत लेश्या अप्रमत्तसंयत गुणस्थान

1.	गुणस्थान	अप्रमत्त संयत गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 संज्ञा (आहार बिना)
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	तीन वेद
11.	कषाय	13 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	3 (सामायिक, छेदो., परिहार विशुद्धि)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	पीत लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो., उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान
22.	आस्रव	22 (कषाय 13 + योग 9)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	संख्यात (29699103)[*1]
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – सर्वकाल , एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर एक जीवापेक्षा – निरन्तर
30.	भाव	29 (औद.11, मि.14, औप.1, क्षा.1, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	59 (पूर्व की 46+6 व्युच्छित्ति = 54 प्रकृति दो आहारकद्विक कम करने पर इन प्रकृति के बिना)[*2]
33.	उदय	76 (32 प्रकृति बिना) (छट्वें गुणस्थान की अनुदय प्रकृति + 5 व्युच्छित्ति प्रकृति)
34.	सत्त्व	146 (नरक, तिर्यंच आयु के बिना)

[*1] जो उक्त प्रमाण संख्या कही है वह सामान्य से है क्योंकि इसमें तीनों लेश्या वाले जीव है विशेषता इतनी है सबसे कम जीव शुक्ल लेश्या वाले उससे अधिक पद्म लेश्या उससे अधिक पीत लेश्या वाले जीवों की संख्या है।

[*2] क्योंकि यहाँ आहारक का बन्ध होने लगता है अत: दो कम करके (54–2)=52 प्रकृति के बिना 59 प्रकृति का बन्ध होता है।

338. तेउ लेस्सा अपमत्त संजद गुणट्ठाणं

तेसिं तेजो लेस्सा अपमत्तसंजद गुणट्ठाणालावभण्णमाणे अत्थि – एग अपमत्त संजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, आहारेण विणा तिण्णि सण्णा*, मणुस्स गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, भावेण तिण्णि वेदा दव्वेण पुरिस वेदो, तेरस कसाया, केवलणाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा विहार सुद्धि तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, तेउलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्मज्झाणाणि, बाबीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादि, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा संखेज्ज पमाण, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणेगजीवावेक्खा णिरंतरं, उणतीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, ऊणसट्ठि पयडीणं बंधो, छसत्तदि पयडीणं उदओ, छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि तेउ लेस्सासु अपमत्तसंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

पीत लेश्या अप्रमत्तसंयत गुणस्थान

उन्हीं पीत लेश्या अप्रमत्त संयत गुणस्थान जीवों के आलाप कहने पर – एक अप्रमत्त संयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, आहार बिना तीन संज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, तीन वेद, तेरह कषाय, चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना परिहार विशुद्धि तीन संयम, तीन दर्शन, पीत लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम – क्षायिक – क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्मध्यान, बाईस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा संख्यात, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त,अंतर – नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा निरंतर, उनतीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, उनसठ प्रकृतियों का बंध, छियत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छियालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार पीत लेश्या में अप्रमत्त संयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

---

* संज्ञा तीन होती है क्योंकि अप्रमत्त गुणस्थान में आहार संज्ञा नहीं होती। बंध प्रकृतियां उनसठ है क्योंकि 48 प्रकृतियाँ पूर्व के गुणस्थानों में छह प्रकृति प्रमत्त गुणस्थान में व्युच्छित्ति वाली इस प्रकार चौवन हुई उनमें से आहारकद्विक का बन्ध होने लगता है। इसलिए दो कम करने पर 52 प्रकृति अबंध है इसी प्रकार उदय प्रमत्त संयत गुणस्थान में 27 प्रकृति का अनुदय 5 की व्युच्छित्ति इस प्रकार बत्तीस प्रकृतियाँ अनुदय रूप है। (5 व्युच्छिन्न प्रकृतियाँ, स्त्यानगृद्धि, निद्रा निद्रा, प्रचला प्रचला, आहार शरीर आहारक आंगोपांग इस प्रकार 32 प्रतियां अनुदय रूप हैं, 76 प्रकृति उदय रूप है।

सत्त्व नरकायु तिर्यंचायु के बिना 146 प्रकृति का सत्त्व है इसके अलावा सत्व स्थान एक सौ पैंतालीस, एक सौ इकतालीस, एक सौ ब्यालीस, एक सौ उनतालीस एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व पाया जाता है जिसका कथन पहले किया जा चुका है वहाँ से जान लेना चाहिए शेष कथन सुगम है।

नोट– यहाँ काल की अपेक्षा जो एक समय का कथन है उसको आगे पद्म लेश्या में 5, 6, 7 गुणस्थानों में जिस प्रकार किया है वैसा ही यहाँ कहना चाहिए कुछ अन्तर नहीं है फर्क इतना है जहाँ पद्म लेश्या कही है यहाँ तेजो लेश्या कहना चाहिए।

339. पद्म लेश्या मिथ्यात्व गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	मिथ्यात्व	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्त	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	तीन गति (नरक बिना)	–	एक देव गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	12 (आहारकद्विक व औ.मि. बिना)	10	2 (वै.मि.,का.का.योग)
10.	वेद	तीन वेद	–	एक पुरुष वेद
11.	कषाय	25 कषाय	–	23 कषाय (स्त्री व नपुंसक वेद बिना)
12.	ज्ञान	3 (कुमति, कुश्रुत, कुअवधि)	–	2 (कुअवधि बिना)
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 (चक्षु, अचक्षु दर्शन)	–	–
15.	लेश्या	पद्म लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य, अभव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	आहारक, अनाहारक
20.	उपयोग	5 (3 ज्ञानो. + 2 दर्शनो.)	–	4 (2 ज्ञानो.+2 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8	–	–
22.	आस्रव	54 (25+12 यो.+12 अवि.+5 मि.)	52 (25+10+12+5)	44 (25+2+12+5)
23.	जाति	22 लाख	22 लाख	4 लाख
24.	कुलकोटि	83½ लाख करोड़	–	26 लाख करोड़ कुल कोटि
25.	संख्या	असंख्यात		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व वि.वे.विक्रि. मा. कुछ कम 8/14 राजू उप. कुछ कम 5/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवापेक्षा – सर्वकाल, एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 18 सागर		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर, एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 18 सागर		
30.	भाव	28 (औ. 15, मि.10, पा.3)		अपर्याप्तक में 23 भाव
31.	अवगाहना	जघ. संख्यात अंगुल अथवा घनांगुल का संख्यातवां भाग		उ. 1000 योजन
32.	बन्ध	105 (तीर्थंकर व आहारकद्विक के बिना)		
33.	उदय	103 (पीत लेश्या के समान)		
34.	सत्त्व	147 (तीर्थंकर प्रकृति बिना)		
		नोट :– पद्म लेश्या में बन्ध योग्य प्रकृतियाँ 108 हैं किन्तु यहाँ तीर्थंकर व आहारकद्विक का बन्ध न होने के कारण 105 प्रकृति का बन्ध होता है। सत्त्व में भी तीर्थंकर प्रकृति नहीं होती क्योंकि मिथ्यादृष्टि के कपोत लेश्या को छोड़कर अन्य लेश्या में तीर्थंकर प्रकृति का सत्त्व नहीं पाया जाता।		

339. पम्मलेस्सा मिच्छत्त गुणट्ठाणं

अह पम्मलेस्साओ मिच्छत्तगुणट्ठाणालावभण्णमाणे अत्थि – एग मिच्छत्त गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, णिरयेण विणा तिण्णि गदी अपज्जत्तेसु एग देवगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, बारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु बे जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु एग पुरिस वेदो, पणबीस कसाया अपज्जत्तेसु तेबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि अपज्जत्तेसु बे अण्णाणाणि, एग असंजमो, बे दंसणाणि, पम्मलेस्सा भव्व सिद्धिया अभव्व सिद्धिया दोण्णि, मिच्छत्त सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द अट्ठझाणाणि, चउवण्ण आसवा पज्जत्तेसु वावण्ण अपज्जत्तेसु चदुदाल आसवा, बाबीस लक्ख जादी अपज्जत्तेसु चत्तारि लक्ख जादी, अद्धुत्तर तिअसीदि लक्ख कोडि कुलकोडीणं अपज्जत्तेसु छब्बीस लक्ख कोडि कुलकोडिणं, संखावेक्खा असंखेज्ज, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा विहार वेयणा वेगुव्विया कसाय अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा उपपाद पंच चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अट्ठदस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अट्ठदस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, अट्ठबीस भावा अपज्जत्तेसु तेबीस भावा, जहण्णमवगहणं घणांगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजणसहस्सं, पंचुत्तर सयं पयडीणं बंधो, तिउत्तर सयं पयडीणं उदओ, सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि पम्म लेस्सासु मिच्छत्त गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

पद्म लेश्या मिथ्यात्व गुणस्थान

अब पद्म लेश्या मिथ्यात्व गुणस्थान जीवों के आलाप कहने पर – एक मिथ्यात्व गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस अपर्याप्त में सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, नरक बिना तीन गति अपर्याप्तक में एक देव गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, बारह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में दो योग, तीनों वेद अपर्याप्तक में एक पुरुष वेद, पच्चीस कषाय अपर्याप्तक में तेईस कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्त में दो अज्ञान, एक असंयम, चक्षु अचक्षु दो दर्शन, पद्म लेश्या, भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक दोनों, मिथ्यात्व सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, पाँच उपयोग अपर्याप्तक में चार उपयोग, चार आर्त्त चार रौद्र आठ ध्यान, चौपन आस्रव पर्याप्त में बावन अपर्याप्त में चवालीस आस्रव, बाईस लाख जाति अपर्याप्तक में चार लाख जाति, साढ़े तेरासी लाख करोड़ कुल कोटि अपर्याप्तक में छब्बीस लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – असंख्यात, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 8/14 राजू उपपाद कुछ कम 5/14 राजू, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक अठारह सागर, अंतर – नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक अठारह सागर, अट्ठाईस भाव अपर्याप्तक में तेईस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ पाँच प्रकृतियों का बंध, एक सौ तीन प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार पद्म लेश्या में मिथ्यात्व गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– अपर्याप्तक में केवल देवगति ही पायी जाती है क्योंकि मिथ्यादृष्टि पद्मलेश्या में नरक का तो सर्वथा निषेध है। पद्म लेश्या के साथ तिर्यंच में भी नहीं जाता तिर्यंच गति पर्याप्तक के तो पद्म लेश्या हो सकती है परन्तु अपर्याप्तक में नहीं मिथ्यादृष्टि मनुष्य के भी अपर्याप्तक अवस्था में पद्म लेश्या नहीं होती क्योंकि पद्म लेश्या वाला कोई देव मिथ्यात्व के साथ मनुष्यों में उत्पन्न हो रहा है, तो उसकी लेश्या देव का शरीर छोड़ते ही अन्य कापोत लेश्या रूप संक्रमण कर जाती है इसलिए मनुष्य में भी नहीं पायी जाती है। वेद का कथन करने पर एक पुरुष वेद ही होता है क्योंकि देवियों में पर्याप्त अपर्याप्त अवस्था में मात्र पीत लेश्या पायी जाती है। स्पर्शन स्वस्थान लोक का असंख्यातवां भाग विहार, वेदना, विक्रिया, कषाय मारणांतिक की अपेक्षा कुछ कम आठ राजू उपपाद की अपेक्षा कुछ कम पाँच राजू/काल जघन्य सुगम है उत्कृष्ट काल पल्योपम का असंख्यातवां भाग अधिक अठारह सागर यह घातायुष्क की अपेक्षा है अन्तर भी जघन्य सुगम है उत्कृष्ट कुछ अधिक अठारह सागर क्योंकि कोई मनुष्य तेजो लेश्या से पद्म लेश्या वाला हुआ मिथ्यात्व के साथ मरण कर कुछ अधिक अठारह सागर की आयु को प्राप्त हुआ पश्चात् पर्याप्त हो सम्यक्त्व को प्राप्त हुआ सारा जीवन सम्यक्त्व के साथ रहकर अन्तिम अन्तर्मुहूर्त में मिथ्यात्व को प्राप्त हुआ इस प्रकार अन्तर निकला। शेष कथन सुगम है।

340. पद्म लेश्या सासादन गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	सासादन	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्त	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	तीन गति (नरक गति बिना)	–	एक देवगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	12	10 योग	2 योग (वै.मि., का.का.योग)
10.	वेद	तीन वेद	–	एक पुरुष वेद
11.	कषाय	25 कषाय	–	23 कषाय
12.	ज्ञान	3 (कुमति, कुश्रुत, कुअवधि)	3	2 कुज्ञान
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 दर्शन (चक्षु, अचक्षु)	–	–
15.	लेश्या	पद्म लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	सासादन	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	5 (3 ज्ञानो. 2 दर्शनो.)	5	4 (2 ज्ञानो., 2 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8 (4 आर्त्त 4 रौद्र)	–	–
22.	आस्रव	49 (25+12 अवि.+12 योग)	47 (25+12+10)	37 (23+12+2)
23.	जाति	22 लाख	22 लाख	अपर्याप्तक में चार लाख
24.	कुलकोटि	83½ लाख करोड़	–	अप. 26 लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवा भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवा भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवा भाग व वि.वे.विक्रि.क.मा. कुछ कम 8/14 राजू उपपाद कुछ कम 5/14 राजू		
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवां भाग, एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. छह आवली		
29.	अन्तर	नाना जीव अपेक्षा – ज. एक समय	उ. पल्योपम का असंख्यातवां भाग	
		एक जीव अपेक्षा – ज. पल्योपम का असंख्यातवां भाग उ. कुछ अधिक 18 सागर		
30.	भाव	26 (औ. 14, मि.10, पा.2)		अपर्याप्तक में 21 भाव
31.	अवगाहना	जघ. संख्यात अंगुल	उ. संख्यात धनुष	
32.	बन्ध	101 (पूर्व की तीन+मिथ्यात्व, हुण्डक संस्थान, नपुंसक वेद, असंप्राप्तासृपाटिका संहनन इन सात प्रकृति बिना)		
33.	उदय	102 (पीत लेश्या के समान)		
34.	सत्त्व	145 (आहारकद्विक व तीर्थंकर के बिना)		

340. पउमलेस्सा सासण गुणट्ठाणं

तेसिं पउम लेस्सा सासण गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि – एग सासण गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, तिण्णि गदी अपज्जत्तेसु एग देवगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, ओरालिय मिस्स व आहार दुगेहि विणा बारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु बे जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु एग पुरिस वेदो, पणबीस कसाया अपज्जत्तेसु तेबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि अपज्जत्तेसु बे अण्णाणाणि, एग असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, एग पम्म लेस्सा, भव्व सिद्धिया, सासण सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द अट्ठ झाणाणि, उणंचास आसवा पज्जत्तेसु सत्तदाल अपज्जत्तेसु सत्ततीस आसवा, बाबीस लक्ख जादी अपज्जत्तेसु चत्तारि लक्ख जादी, अद्धुत्तर तिअसीदि लक्ख कोडि कुल कोडीणं अपज्जत्तेसु छब्बीस लक्ख कोडि कुल कोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा असंखेज्ज, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा पंच चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छावली, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण अट्ठदस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, छब्बीस भावा अपज्जत्तेसु इगबीस भावा, जहण्णमवगहणं संखेज्जांगुल उक्कस्सेण संखेज्ज धणू, एगुत्तर सयं पयडीणं बंधो, बे उत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं पणदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि पउम लेस्साए सासण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

पद्म लेश्या सासादन गुणस्थान

उन्हीं पद्म लेश्या सासादन गुणस्थानवर्ती जीवों के आलाप कहने पर – एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीवसमास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस अपर्याप्त में सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, तीन गति अपर्याप्तक में एक देवगति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, आहारकद्विक व औदारिक मिश्र बिना बारह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में दो योग, तीनों वेद अपर्याप्तक में एक पुरुष वेद, पच्चीस कषाय अपर्याप्तक में तेबीस कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्त में दो अज्ञान, एक असंयम, चक्षु अचक्षु दो दर्शन, एक पद्म लेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, पाँच उपयोग अपर्याप्तक में चार उपयोग, चार आर्त्त चार रौद्र आठ ध्यान, उणपचास आस्रव पर्याप्त में सैंतालीस अपर्याप्त में सैंतीस आस्रव, बाईस लाख जाति अपर्याप्तक में चार लाख जाति, साढ़े तेरासी लाख करोड़ कुल कोटि अपर्याप्तक में छब्बीस लाख करोड़ कुलकोटि, संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवां भाग (असंख्यात), क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 8/14 राजू, 5/14 राजू, काल नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह आवली, अंतर – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीव की अपेक्षा जघन्य पल्योपम का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट कुछ अधिक अठारह सागर, छब्बीस भाव अपर्याप्तक में इक्कीस भाव, जघन्यावगाहना संख्यात अंगुल उत्कृष्ट संख्यात धनुष, एक सौ पाँच प्रकृतियों का बंध, एक सौ तीन प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार पद्म लेश्या में सासादन गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– गति पूर्व की तरह कथन करना चाहिए वेद भी अपर्याप्तक में पुरुष वेद जानना चाहिए स्पर्शन मिथ्यादृष्टि के समान ही जानना चाहिए काल का कथन जिस प्रकार गुणस्थान में किया है उसी प्रकार जानना चाहिए अन्तर भी गुणस्थानवत् है। भाव पर्याप्तक में 26 सुगम है अपर्याप्तक में इक्कीस क्योंकि कुअवधि ज्ञान, दो गति, दो लिंग इस प्रकार पाँच कम हो जाते है। शेष कथन सुगम है।

341. पद्म लेश्या सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान

1.	गुणस्थान	सम्यग्मिथ्यात्व
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवसमास
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	तीन गति (नरक बिना)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	10 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	21 कषाय (अनंतानुबंधी के बिना)
12.	ज्ञान	3 मिश्रज्ञान
13.	संयम	असंयम
14.	दर्शन	2 दर्शन
15.	लेश्या	पद्म लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	सम्यग्मिथ्यात्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 (3 ज्ञानो., 2 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8 (4 आर्त्त, 4 रौद्र)
22.	आस्रव	43 (21 + 12 +10)
23.	जाति	22 लाख
24.	कुलकोटि	83½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14 राजू
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा – ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 18 सागर
30.	भाव	26 (औद. 14, मि. 10, पा. 2)
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उ. 1000 योजन
32.	बन्ध	74* (34 प्रकृति बिना)
33.	उदय	98 (पीत लेश्यावत्)
34.	सत्त्व	147 (तीर्थंकर बिना)
		* दूसरे गुणस्थान की बंध व्युच्छिन्न 25 प्रकृति + 7 अबन्ध + दो मनुष्यायु देवायु इन 34 व्युच्छत्ति प्रकृतियों के बिना

341. पउमलेस्सा सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणं

तेसिं पउमलेस्सा मिस्स गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि – एग सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, तिण्णि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, इगबीस कसाया, तिण्णि मिस्स णाणाणि, एग असंजमो, बे दसंणाणि, एग पम्म लेस्सा, भव्व सिद्धिया, सम्मामिच्छत्त सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, अट्ठ झाणाणि, तिदाल आसवा, बाबीस लक्ख जादी, अद्धुत्तर तिअसीदि लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण अंत्तोमुहुत्तं उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागो एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अट्ठदस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, छब्बीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, चउसत्तदि पयडीणं बंधो, अट्ठणउदि पयडीणं उदओ, एवं सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि पउम लेस्साए सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

पद्म लेश्या सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान

उन्हीं पद्म लेश्या मिश्र गुणस्थानवर्ती जीवों के आलाप कहने पर – एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, तीन गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, दस योग, तीनों वेद, इक्कीस कषाय, तीन मिश्रज्ञान, एक असंयम, दो दर्शन, एक पद्म लेश्या, भव्य सिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, आठ ध्यान, तेतालीस आस्रव, बाईस लाख जाति, साढ़े तेरासी लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 8/14 राजू, काल – नानाजीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एकजीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक अठारह सागर, छब्बीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, चौहत्तर प्रकृतियों का बंध, अन्ठानवें प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार पद्म लेश्या में सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– स्पर्शन पूर्ववत् समझना चाहिए क्योंकि ये देव किसी पूर्व भव के मित्र नारकी को संबोधन हेतु तृतीय नरक तक जाते हैं इससे आगे नहीं, वह तृतीय नरक मध्यलोक से दो राजू नीचे हैं ऊपर छह राजू इनका भ्रमण होता है अत: छह और दो आठ राजू पाया जाता है। कुछ कम का तात्पर्य नीचे नरक पृथ्वी में एक हजार योजन तक नारकी नहीं पाये जाते हैं वहाँ पर देव नहीं जाते। काल नाना जीवों का कहा है वह इस प्रकार है जघन्य अन्तर्मुहूर्त क्योंकि तृतीय गुणस्थान का काल इतना ही है। उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग क्योंकि यदि पद्म लेश्या वाले जीव लगातार तृतीय गुणस्थान को प्राप्त करें तो पल्य के असंख्यात वे भाग काल तक प्राप्त कर सकते है यानि एक समय में एक या दो चार जीव तृतीय गुणस्थान को प्राप्त हुए पश्चात् दूसरे समय में पश्चात् तीसरे समय इस प्रकार लगातार पल्योपम के असंख्यातवे भाग तक तृतीय गुणस्थान को प्राप्त हो सकते है इसके आगे अन्तर पड़ जायेगा जो जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग है यानि पल्य के असंख्यातवे भाग तक कोई मिश्र गुणस्थान वाला न हो। एक जीव की अपेक्षा अन्तर भी सुगम है काल भी सुगम है क्योंकि पहले कह आये हैं।

शंका – एक समय में तृतीय गुणस्थान में कितने जीव जा सकते हैं जघन्य व उत्कृष्ट से ?

समाधान – जघन्य से एक समय में एक जीव तृतीय गुणस्थान को प्राप्त हो सकता है तथा उत्कृष्ट से पल्योपम के असंख्यातवे भाग जीव तृतीय गुणस्थान को प्राप्त कर सकते है।

शंका – तृतीय गुणस्थान से नीचे व ऊपर कहाँ–कहाँ जा सकता है ?

समाधान – ऊपर गया तो मात्र असंयत गुणस्थान में ही जाता है नीचे जाता है तो मात्र एक मिथ्यात्व को ही प्राप्त करता है सासादन को कदापि प्राप्त नहीं होता। शेष कथन सुगम है।

342. पद्म लेश्या असंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	अविरत गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्त	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	तीन गति	–	2 (देव, मनुष्य)*[1]
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	13 (आहारकद्विक बिना)	10 योग	3 योग
10.	वेद	तीन वेद	–	एक पुरुष वेद
11.	कषाय	21 कषाय	–	19 (अनं. व नपु.स्त्री वेद बिना)
12.	ज्ञान	3 ज्ञान	–	–
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	3 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	पद्म लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	क्षा., क्षयोप., उपशम	–	3 (क्षा., क्षयो., उपशम)*[2]
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	6 (3 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)	–	–
21.	ध्यान	10		
22.	आस्रव	46 (21+13+12)	43 (21+10+12)	34 (19+3+12)
23.	जाति	22 लाख	–	18 लाख (देव, मनु.)
24.	कुलकोटि	83½ लाख करोड़	–	40 लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवा भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवा भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवा भाग वि.वे.वि.क. कुछ कम 8/14 राजू उप. कुछ कम 5/14 राजू		
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 18 सागर		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर, एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 18 सागर		
30.	भाव	30 (औद. 14, क्षयो. 12, पा.2, क्षा.1, उप.1)		अपर्याप्तक 27
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवाँ भाग	उ. 1000 योजन	
32.	बन्ध	77*[3] (31 प्रकृति बिना)		
33.	उदय	100 (पीत लेश्या के समान)		
34.	सत्त्व	148		

*[1] कोई देव चयकर सम्यक्त्व के साथ मनुष्य गति में उत्पन्न होता है तो उसका लेश्या परावर्तन नहीं होता किंतु वही जीव मिथ्यात्व या सासादन सम्यक्त्व के साथ उत्पन्न होता है तो चय होने के समय ही उसकी लेश्या परिवर्तित हो जाती है।

*[2] अपर्याप्त में उपशम सम्यक्त्व केवल देवगति में ही बनेगा मनुष्य गति में क्षयोपशम अथवा क्षायिक ही बनेगा।

*[3] पूर्व की अबन्ध 34 प्रकृति में से तीर्थंकर देवायु व मनुष्यायु इन तीन प्रकृति के घटाने पर 31 प्रकृति अबन्ध है, क्योंकि यहाँ इन प्रकृतियों का बन्ध होना प्रारम्भ हो जाता है।

342. पउमलेस्सा असंजद गुणट्ठाणं

तेसिं पउम लेस्सा अविरद संजद गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अविरद संजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, तिण्णि गदी अपज्जत्तेसु बे गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु एग पुरिस वेदो, इगबीस कसाया अपज्जत्तेसु उणबीस कसाया, तिण्णि णाणाणि, एग असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, एग पम्म लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो वा पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, छ उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द बे धम्म दस झाणाणि, छादाल आसवा पज्जत्तेसु तिदाल अपज्जत्तेसु चउतीस आसवा, बाईस लक्ख जादी अपज्जत्तेसु अट्ठदस लक्ख जादी, अद्धुत्तर तिअसीदि लक्ख कोडि कुलकोडीणं अपज्जत्तेसु दाल लक्ख कोडी कुलकोडीणं, संखावेक्खा-पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा – लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा पंच चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अट्ठदस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अट्ठदस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, तीस भावा अपज्जत्तेसु सत्तवीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सत्तसत्तदि पयडीणं बंधो, सयं पयडीणं उदओ, अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि पउम लेस्साए असंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

पद्म लेश्या असंयत गुणस्थान

उन्हीं पद्म लेश्या अविरत संयत गुणस्थानालाप कहने पर – एक अविरत संयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस अपर्याप्त में सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, तीन गति अपर्याप्तक में दो गति पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीनों वेद अपर्याप्तक में एक पुरुष वेद, इक्कीस कषाय अपर्याप्तक में उन्नीस कषाय, तीन ज्ञान, एक असंयम, तीन दर्शन, एक पद्म लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम – क्षायिक – क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, छह उपयोग, चार आर्त्त चार रौद्र दो धर्म दस ध्यान, छियालीस आस्रव पर्याप्त में तेतालीस अपर्याप्त में चौंतीस आस्रव, बाईस लाख जाति अपर्याप्तक में अठारह लाख जाति, साढ़े तेरासी लाख करोड़ कुल कोटि अपर्याप्तक में चालीस लाख करोड़ कुलकोटि, संख्यापेक्षा – पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन-लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 8/14, राजू, 5/14 राजू, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक अठारह सागर, अंतर – नानाजीवापेक्षा निरंतर एकजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक अठारह सागर, तीस भाव अपर्याप्तक में सत्ताईस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, सतत्तर प्रकृतियों का बंध, सौ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार पद्म लेश्या में असंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- सामान्य से तीन गति पर्याप्तक में तीन गति क्योंकि सम्यग्दृष्टि तिर्यंच में पद्म लेश्या तो पायी जाती है किंतु पर्याप्तक में ही पायी जाती है। अपर्याप्तक अवस्था में दो गति देवगति व मनुष्य गति पाई जाती हैं क्योंकि सम्यक्त्व के साथ यदि कोई देव मरण कर मनुष्यों में आता है तो उसके अन्तर्मुहूर्त तक पूर्व लेश्या ही पायी जाती है इसमें कोई विरोध नहीं है। वेद अपर्याप्तक अवस्था में एक ही पाया जाता है चाहे सम्यक्त्व के साथ हो अथवा मिथ्यादृष्टि हो पर्याप्त में तीनों वेद मनुष्य तिर्यंचों की अपेक्षा पाये जाते हैं। अपर्याप्तक अवस्था में देव गति में द्वितीयोपशम सम्यक्त्व पाया जाता है इसलिए तीन सम्यक्त्व पर्याप्त अपर्याप्तकों में कहे हैं, किन्तु मनुष्यों में अपर्याप्तक अवस्था में दो ही सम्यक्त्व पाये जाते हैं। स्पर्शन विहार वेदना विक्रिया कषाय समुद्घात की अपेक्षा कुछ कम आठ राजू पाया जाता है किंतु उपपाद पद की अपेक्षा कुछ कम पाँच राजू है। काल का कथन सुगम है। जिस प्रकार मिथ्यात्व गुणस्थान में प्राप्त है उतना ही है विशेषता इतनी है कि वहाँ साधिक से तात्पर्य पल्य का असंख्यातवां भाग था किंतु यहाँ आधा सागर है क्योंकि घातायुष्क सम्यग्दृष्टि को अपने स्वर्ग की आयु से आधा सागर अधिक प्राप्त होती है। इसी प्रकार अन्तर जानना चाहिए कोई विशेषता नहीं है साधिक का अर्थ काल के समान ही कथन करना चाहिए।

343. पद्म लेश्या संयतासंयत गुणस्थान

1.	गुणस्थान	संयमासंयम
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	2 गति (मनुष्य, तिर्यंच)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	17 कषाय (अनंतानुबंधी अप्रत्याख्यानावरण बिना)
12.	ज्ञान	3 ज्ञान
13.	संयम	संयमासंयम
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	पद्म लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो., उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	6 (3 ज्ञानोपयोग + 3 दर्शनोपयोग)
21.	ध्यान	11 ध्यान (4 आर्त्त + 4 रौद्र + 3 धर्म)
22.	आस्रव	37 (17 + 11+ 9 योग)
23.	जाति	18 लाख
24.	कुलकोटि	57½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 5/14 राजू
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना व एक जीवापेक्षा – निरन्तर
30.	भाव	29 (औद. 12+ मि. 13 + औप.1 क्षा.1 + पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उ. 1000 योजन
32.	बन्ध	67– (41 प्रकृति बिना*1)
33.	उदय	87 –)पीत लेश्याके समान)
34.	सत्त्व	147 (नरकायु बिना 143, 140 आदि*2)
		*1 चौथे गुणस्थान की 31 अबन्ध प्रकृति + 10 व्युच्छित्ति प्रकृति इस प्रकार 41 प्रकृति बिना *2 पंचम गुणस्थान के 40 सत्त्व स्थान होते हैं देखें कर्मकाण्ड गाथा 382 पृ. 381 143 अनंतानुबंधी बिना 140 दर्शन मोहनीय बिना 139, 138

343. पउमलेस्सा संजदासंजद गुणट्ठाणं

तेसिं पउम लेस्सा संजदासंजद गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि – एग संजदासंजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, मणुस्स तिरिक्ख बे गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, सत्तदस कसाया, तिण्णि णाणाणि, संजमासंजमो, तिण्णि दंसणाणि, एग पम्म लेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, छ उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द तिण्णि धम्म एगारस झाणाणि, सत्ततीस आसवा, अट्ठदस लक्ख जादी, अद्धुत्तर सत्तावण्ण लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व पंच चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणेगजीवावेक्खा णिरंतरं, ऊणतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सडसट्ठि पयडीणं बंधो, सत्तासीदि पयडीणं उदओ एवं तिदालुत्तर सयं दालुत्तर सयं सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि पउम लेस्साए संजदासंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

पद्म लेश्या संयतासंयत गुणस्थान

उन्हीं पद्म लेश्या संयतासंयत गुणस्थानालाप कहने पर–एक संयतासंयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्य तिर्यंच दो गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, तीनों वेद, सत्रह कषाय, तीन ज्ञान, संयमासंयम, तीन दर्शन, एक पद्म लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, चार आर्त्त चार रौद्र तीन धर्म ग्यारह ध्यान, सैंतीस आस्रव, अठारह लाख जाति, साढ़े सत्तावन लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम पाँच राजू, काल नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर नाना व एक जीवापेक्षा निरंतर, उनतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, सडसठ प्रकृतियों का बंध, सतासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस एक सौ छियालीस एक सौ तेतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार पद्म लेश्या में संयतासंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– स्पर्शन की अपेक्षा यहाँ स्वस्थान, विहार, वेदना, विक्रिया इन सभी पदों की अपेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग पाया जाता है क्योंकि यहाँ मनुष्य और तिर्यंच ही पाये जाते हैं और वे इतना ही स्पर्श कर पाते हैं वे ही तिर्यंच शतार, सहस्रार स्वर्ग में उत्पन्न होने के कारण मारणांतिक समुद्घात करते हैं उसकी अपेक्षा कुछ कम पाँच राजू स्पर्शन कहा है। उपपाद का इस गुणस्थान में अभाव है काल का कथन एक जीव की अपेक्षा जो एक समय कहा है वह दो प्रकार से बनता है एक तो गुणस्थान परावर्तन दूसरा लेश्या परावर्तन–जैसे कोई एक मिथ्यादृष्टि अथवा असंयत सम्यग्दृष्टि वर्द्धमान पद्म लेश्या में एक समय शेष रहने पर संयमासंयम को प्राप्त हुआ एक समय पद्म लेश्या के साथ रहा, द्वितीय समय में शुक्ल लेश्या वाला हो गया इस प्रकार लेश्या परावर्तन से एक समय प्राप्त हुआ। कोई एक जीव वर्द्धमान तेजो लेश्या के साथ संयमासंयम वाला, तेजो लेश्या का काल क्षय होने से पद्म लेश्या वाला हो गया एक समय संयमासंयम के साथ रहा और द्वितीय समय में अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती हो गया इस प्रकार गुणस्थान परावर्तन की अपेक्षा प्ररूपणा हुई। अथवा हीयमान शुक्ल लेश्या के साथ संयतासंयत पद्म लेश्या को प्राप्त हुआ एक समय रहा द्वितीय समय में असंयत अथवा सम्यग्मिथ्यादृष्टि अथवा सासादन सम्यग्दृष्टि अथवा मिथ्यादृष्टि हो गया इस प्रकार गुणस्थान परावर्तन के द्वारा एक समय की प्ररूपणा हुई। यहाँ मरण अथवा व्याघात की अपेक्षा एक समय नहीं पाया जाता। शेष कथन सुगम है।

344. पद्म लेश्या प्रमत्तसंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	प्रमत्त संयत गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्त	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	मनुष्यगति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	11 योग	10 योग	1 योग (आहारक मिश्र)
10.	वेद	3 वेद	–	1 पुरुष वेद
11.	कषाय	13 कषाय	–	11कषाय (स्त्री, नपुंसक वेद के बिना))
12.	ज्ञान	4 ज्ञान	–	3 ज्ञान
13.	संयम	3 (सा.,छे., परि.विशुद्धि)	–	2 (परिहार विशुद्धि बिना)
14.	दर्शन	3 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	पद्म लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो., उपशम)	–	2 (क्षा., क्षयो.)
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक	–	–
20.	उपयोग	7 उपयोग	7 (4 ज्ञानो., 3 दर्शनो.)	6 (3 ज्ञानो., 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	7 धर्मध्यान	–	–
22.	आस्रव	24 (11 योग+13 कषाय)	23 (13+10)	12 (11 कषाय + 1 योग)
23.	जाति	14 लाख	–	–
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़	–	–
25.	संख्या	संख्यात (59398206) (पीत लेश्या के संख्यातवें भाग प्रमाण) 27		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवा भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवा भाग		
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर एक जीवापेक्षा – निरन्तर		
30.	भाव	29 (औद. 11, मि. 14, क्षा.1, औप.1, पा.2), अपर्याप्तक 25 (औद.9, क्षयो.13, क्षा.1, पा.2)		
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष		
32.	बन्ध	63 – (45 प्रकृति के बिना पंचम गुणस्थान की 41+4 प्रत्याख्यानावरण कषाय 41+4=45 के बिना)		
33.	उदय	81 – (पीत लेश्या के समान)		
34.	सत्त्व	146 (नरक, तिर्यंचायु बिना)		

344. पउमलेस्सा पमत्तसंजद गुणट्ठाणं

तेसिं पउम लेस्सा पमत्त संजदो गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि – एग पमत्त संजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, दस पाणा सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, एगारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु एग आहारमिस्स काय जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु एग पुरिस वेदो, तेरस कसाया अपज्जत्तेसु एगारस कसाया, चत्तारि णाणाणि अपज्जत्तेसु तिण्णि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा विहार सुद्धि तिण्णि संजमा अपज्जत्तेसु विहार सुद्धिओ विणा बे संजमा, तिण्णि दंसणाणि, एग पम्म लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता अपज्जत्तेसु उवसम विणा बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा अपज्जत्तेसु छ उवजोगा, तिण्णि अट्टचत्तारिधम्मसत्तझाणाणि, चउबीस आसवा पज्जत्तेसु तेबीस अपज्जत्तेसु बारस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा संखेज्ज पमाणं अपज्जत्तेसु सत्ताबीस, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा व एग जीवावेक्खा णिरंतरं, उणतीस भावा अपज्जत्तेसु पणबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, तिसट्ठि पयडीणं बंधो, एगासीदि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर/बादालुत्तर/इगदालुत्तर/ऊणदालुत्तर/अट्ठतीसुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि पउमलेस्साए पमत्तसंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

पद्म लेश्या प्रमत्तसंयत गुणस्थान

उन्हीं पद्म लेश्या प्रमत्तसंयत गुणस्थानालाप कहने पर – एक प्रमत्त संयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, दस – सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, ग्यारह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में एक आहारक मिश्र काय योग, तीनों वेद अपर्याप्तक में पुरुष वेद, तेरह कषाय अपर्याप्तक में ग्यारह कषाय, चार ज्ञान अपर्याप्तक में तीन ज्ञान, सामायिक–छेदोपस्थापना – परिहार विशुद्धि तीन संयम अपर्याप्तक में दो संयम, तीन दर्शन, एक पद्म लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम – क्षायिक – क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व अपर्याप्तक में उपशम बिना दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग अपर्याप्तक में छह उपयोग, तीन आर्त्त चार धर्म सात ध्यान, चौबीस आस्रव पर्याप्तक में तेईस अपर्याप्तक में बारह आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – संख्यात अपर्याप्तक में सत्ताईस, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एकजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – नानाजीवापेक्षा व एक जीवापेक्षा निरंतर, उनतीस भाव अपर्याप्तक में पच्चीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, तिरेसठ प्रकृतियों का बंध, इक्यासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छियालीस/ब्यालीस/इकतालीस/उनतालीस/ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार पद्म लेश्या में प्रमत्तसंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– पीत लेश्या के संख्यातवे भाग जीव पद्म लेश्या में पाये जाते हैं क्योंकि पद्म लेश्या में प्रचुर मात्रा में प्रमत्त व अप्रमत्त जीव नहीं पाये जाते शेष कथन सुगम है कुछ भी कहने योग्य नहीं है। स्पर्शन सुगम है काल का कथन जिस प्रकार संयतासंयत में किया है उसी प्रकार जान लेना चाहिए क्योंकि लेश्या परावर्तन, गुणस्थान परावर्तन और मरण कराकर इस प्रकार तीन प्रकार से प्ररूपणा करना चाहिए। जैसे कोई हीयमान शुक्ल लेश्या का काल क्षय होने से तथा प्रमत्त गुणस्थान में एक समय शेष रहने पर पद्म लेश्या वाला हो गया पद्म लेश्या के साथ एक समय रहा, द्वितीय समय में संयमासंयम, असंयत सम्यग्दृष्टि अथवा सम्यग्मिथ्यादृष्टि अथवा सासादन या मिथ्यादृष्टि हो गया। गुणस्थान का काल क्षय होने से प्रमत्त गुणस्थानवर्ती हुआ एक समय रहा और मर गया इस प्रकार भव क्षय मरण की अपेक्षा पद्म लेश्या के साथ प्रमत्त गुणस्थान में एक समय दिखा। हीयमान पद्म लेश्या के साथ कोई अप्रमत्त गुणस्थान वाला पद्म लेश्या में एक समय शेष रह जाने पर प्रमत्त गुणस्थान को प्राप्त हुआ और एक समय पद्म लेश्या के साथ रहा और तेजो लेश्या को प्राप्त हो गया इस प्रकार लेश्या परिवर्तन से पद्म लेश्या का काल एक समय प्राप्त हुआ अथवा प्रमत्त संयत तेजो लेश्या में विद्यमान था तेजो लेश्या के काल क्षय से पद्म लेश्या आ गई एक समय प्रमत्त संयत रहा द्वितीय समय में अप्रमत्त हो गया इस प्रकार गुणस्थान परिवर्तन से एक समय प्राप्त हुआ शेष कथन सुगम है।

नोट :– हीयमान लेश्या में ऊपर के गुणस्थान को प्राप्त नहीं होता नीचे ही जाता है किंतु वर्द्धमान लेश्या में ऊपर जाता है।

345. पद्म लेश्या अप्रमत्तसंयत गुणस्थान

1.	गुणस्थान	अप्रमत्त संयत गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 संज्ञा (आहार संज्ञा बिना)
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद भाव से, द्रव्य से 1 पुरुष वेद
11.	कषाय	13 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	(सा., छे., परिहार विशुद्धि)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	पद्म लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो., उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान
22.	आस्रव	22 (13 कषाय + 9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	संख्यात 29699103 (संख्यात) (पीत लेश्या के संख्यातवें भाग)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर, एक जीवापेक्षा – निरन्तर
30.	भाव	29 (औ.11, मि. 14, क्षा.1, औ.1, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	59– 49 प्रकृति बिना (45+6–2 आहारकद्विक क्योंकि यहाँ आहारकद्विक का बन्ध होने लगता है।
33.	उदय	76 पीत लेश्या के समान
34.	सत्त्व	146, 142, 141, 139, 138*
		* देशसंयत गुणस्थान के समान ही जाना चाहिए। गाथा नं. 382 देखें।

345. पउमलेस्सा अपमत्तसंजद गुणट्ठाणं

तेसिं पउम लेस्सा अपमत्त गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि - एग अपमत्त संजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, आहारेण विणा तिण्णि सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, दव्वेण एग पुरिस वेदो भावेण तिण्णि वेदा, तेरस कसाया, चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा विहार सुद्धि तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, एग पम्म लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्मज्झाणाणि, बाबीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा संखेज्ज, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणेगजीवावेक्खा णिरंतरं, ऊणतीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, ऊणसट्ठि पयडीणं बंधो, छ सत्तदि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर/बादालुत्तर/इगदालुत्तर ऊणदालुत्तर/अट्ठतीसुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि पउम लेस्साए अपमत्तसंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

पद्म लेश्या अप्रमत्तसंयत गुणस्थान

उन्हीं पद्म लेश्या में अप्रमत्त गुणस्थानालाप कहने पर-एक अप्रमत्त गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण,आहार बिना तीन संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय त्रसकाय, नौ योग, द्रव्य से एक पुरुष वेद भाव से तीनों वेद, तेरह कषाय, चार ज्ञान, सामायिक-छेदोपस्थाना-परिहार विशुद्धि तीन संयम, तीन दर्शन, एक पद्म लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम-क्षायिक-क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्मध्यान, बाईस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा-संख्यात, क्षेत्रापेक्षा-लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन-लोक का असंख्यातवां भाग, काल-नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर-नाना व एक जीवापेक्षा निरंतर, उनतीस भाव, जघन्य अवगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, उनसठ प्रकृतियों का बंध, छियत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छियालीस/ब्यालीस/ इकतालीस/उनता लीस/अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार पद्म लेश्या में अप्रमत्तसंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

नोट- काल आदि का जो कथन प्रमत्त गुणस्थान में किया है वैसा ही यहाँ कहना चाहिए कोई अन्तर नहीं है।

346. शुक्ल लेश्या सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	1–13	–	1,2,4,6,13
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त, अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4	–	–
6.	गति	तीन गति (नरक बिना)	–	2 (नरक, तिर्यंच बिना)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	15	11	4
10.	वेद	3 वेद	–	एक पुरुष वेद
11.	कषाय	25	–	23 (स्त्री, नपुंसक वेद बिना)
12.	ज्ञान	8	–	6 (कुअवधि, मन:पर्यय बिना)
13.	संयम	7	–	4 (संयमासं.,परि.,सू.सा.बिना)
14.	दर्शन	4 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य, अभव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	6 सम्यक्त्व	–	5 (मिश्र बिना)
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	12	–	10 उपयोग
21.	ध्यान	16	–	12 (4 आर्त्त.+4 रौ.+4 धर्म.)
22.	आस्रव	57 (25+15+12+5)	53 (25क.+11यो.+12अवि.+5मि.)	46 (25क.+4यो.+12अवि.+5मि.)
23.	जाति	22 लाख	–	18 लाख तिर्यंच बिना
24.	कुलकोटि	83½ लाख करोड़	–	40 लाख करोड़
25.	संख्या	असंख्यात (पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग)		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 6/14 राजू		
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 33 सागर		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर, एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. असंख्यात पुद्गल परावर्तन स्वरूप अनंतकाल		
30.	भाव	47 (औद.15, क्षयो.18, औप.2, क्षा.9, पा.3) अपर्याप्त–41 (औद. 12, क्षयो.15, पा.3, क्षा.9, औप.2)		
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उ. 1000 योजन		
32.	बन्ध	104 (एकेन्द्रियादि चार जाति, नरकगति, गत्यानुपूर्वी, नरकायु, स्थावर, साधारण, आतप, सूक्ष्म, अपर्याप्तक ये 12 प्रकृति व शतार चतुष्क का बन्ध नहीं पाया जाता)		
33.	उदय	109 (आतप,एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय, स्थावरादि चार, नरकायु, नरकद्विक, तिर्यंच गत्यानुपूर्वी इन 13 प्रकृति बिना)		
34.	सत्त्व	148		

346. सुक्क लेस्सा सामण्ण

अह सुक्कलेस्सागद जीवाणं सामण्णालाव भण्णमाणे अत्थि–एयत्तो तेरस गुणट्ठाणाणि अपज्जत्तेसु एग बे चउ छ तेरस पंच गुणट्ठाणाणि, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीवसमासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, णिरयेण विणा तिण्णि गदी अपज्जत्तेसु बे गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, पंचदस जोगा पज्जत्तेसु एगारस अपज्जत्तेसु चत्तारि जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु एग पुरिस वेदो, पणबीस कसाया अपज्जत्तेसु णवुंसयी वेदेहिं विणा तेबीस कसाया, अट्ठणाणाणि अपज्जत्तेसु विभंग मणपज्जयेहिं विणा छण्णाणाणि, सत्त संजमा अपज्जत्तेसु चत्तारि संजमा, चत्तारि दंसणाणि, एग सुक्कलेस्सा, भव्व सिद्धिया अभव्व सिद्धिया दोण्णि, छसम्मत्ता अपज्जत्तेसु पंच सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, बारस उवजोगा अपज्जत्तेसु दस उवजोगा, सोलह झाणाणि अपज्जत्तेसु बारस झाणाणि, सत्तावण्ण आसवा पज्जत्तेसु तिवण्ण अपज्जत्तेसु छादाल आसवा, बाबीस लक्ख जादी अपज्जत्तेसु अट्ठदस लक्ख जादी, अद्धुत्तर तिअसीदि लक्ख कोडि कुलकोडीणं अपज्जत्तेसु दाल लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व छ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि सादिरोयाणि, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण असंखेज्ज पोग्गलपरायट्टं सरूवेण अणंतकालो, सत्तदाल भावा अपज्जत्तेसु इगदाल भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, चदुत्तर सयं पयडीणं बंधो, णवुत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सुक्क लेस्साए सामण्णालाव सम्मत्ता।

शुक्ल लेश्या सामान्य

अब शुक्ल लेश्यागत जीवों के सामान्यालाप कहने पर–एक से तेरह गुणस्थानअपर्याप्त में एक–दो–चार–छह–तेरह पाँच गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस अपर्याप्त में सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, नरक बिना तीन गति अपर्याप्तक में तिर्यंच बिना दो गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, पन्द्रह योग पर्याप्त में ग्यारह अपर्याप्त में चार योग, तीनों वेद अपर्याप्तक में एक पुरुष वेद, पच्चीस कषाय अपर्याप्तक में स्त्री व नपुंसक वेद बिना तेबीस कषाय, आठों ज्ञान अपर्याप्त में कुअवधि–मन:पर्यय बिना छह ज्ञान, सातों संयम अपर्याप्तक में चार संयम, चारों दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक दोनों, छह सम्यक्त्व अपर्याप्तक में पाँच सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, बारह उपयोग अपर्याप्तक में दस उपयोग, सोलह ध्यान अपर्याप्तक में बारह ध्यान, सत्तावन आस्रव पर्याप्त में तिरेपन अपर्याप्त में छियालीस आस्रव, बाईस लाख जाति अपर्याप्तक में अठारह लाख जाति, साढ़े तेरासी लाख करोड़ कुल कोटि अपर्याप्तक में चालीस लाख करोड़ कुलकोटि, संख्यापेक्षा–पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन–लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 6/14 राजू, काल–नाना जीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक तेतीस सागर, अंतर–नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट असंख्यात पुद्‌गल परावर्तन स्वरूप अनंतकाल, सैंतालीस भाव अपर्याप्तक में इकतालीस भाव, जघन्य अवगाहना घनांगुल का संख्यात वां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ चार प्रकृतियों का बंध, एक सौ नौ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार शुक्ल लेश्या में सामान्यालाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– शुक्ल लेश्या की अपर्याप्तक अवस्था में तिर्यंच गति नहीं पाई जाती क्योंकि तिर्यंच की अपर्याप्त अवस्था में तीन अशुभ लेश्या ही होती हैं। इसी प्रकार वेद में केवल पुरुष वेद ही पाया जाता है, क्योंकि स्त्री वेद अपर्याप्तक अवस्था में चार लेश्याऐं पायी जाती हैं (तीन अशुभ एक पीत लेश्या)। इसी प्रकार कषाय भी तेबीस हैं दो वेद के बिना। संयम, ज्ञान आदि का पूर्व में जिस प्रकार व्याख्यान किया है उसी प्रकार समझ लेना चाहिए कोई विशेषता नहीं है। काल की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त सुगम है उत्कृष्ट कुछ अधिक तेतीस सागर वह इस प्रकार है कोई संयमी मरण से अन्तर्मुहूर्त पूर्व शुक्ल लेश्या वाला हुआ और मरण कर तेतीस सागर वाले देवों में उत्पन्न हुआ जीवन भर शुक्ल लेश्या के साथ रहा और मरण कर मनुष्यों में शुक्ल लेश्या के साथ ही उत्पन्न हुआ और अन्तर्मुहूर्त तक शुक्ल लेश्या के साथ ही रहा पश्चात् अन्य लेश्या को प्राप्त हुआ इस प्रकार दो अन्तर्मुहूर्त अधिक तेतीस सागर उत्कृष्ट काल प्राप्त हुआ।

इसी प्रकार अन्तर का कथन करना चाहिए जैसे कोई जीव शुक्ल लेश्या से अन्य लेश्या में चला गया और मरण कर एकेन्द्रियों में चला गया असंख्यात पुद्‌गल परावर्तन काल तक एकेन्द्रियों में भ्रमण कर पंचेन्द्रियों में उत्पन्न होकर पर्याप्त हो शुक्ल लेश्या को प्राप्त हुआ इस प्रकार उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त हुआ। शेष कथन सरल है।

347. शुक्ल लेश्या मिथ्यात्व गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	मिथ्यादृष्टि	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त, अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4	–	–
6.	गति	तीन गति (नरक बिना)	–	एक देव गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	12 (औ.मि.,आ.द्वि.बिना)	10 योग	2 योग (वैक्रि.मि., कार्माण का.यो.)
10.	वेद	3 वेद	–	एक पुरुष वेद
11.	कषाय	25 कषाय	–	23 कषाय
12.	ज्ञान	3 कुज्ञान	–	2 कुज्ञान (कुअवधि बिना)
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य, अभव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	5 (3 ज्ञानो.+2 दर्शनो.)	–	4 (कुअवधि बिना)
21.	ध्यान	8 (4 रौद्र + 4 आर्त्त)	–	–
22.	आस्रव	54 (25क.+12यो.+12अवि.+5मि.)	52 आस्रव	42 (23+2+12+5)
23.	जाति	22 लाख		4 लाख
24.	कुलकोटि	83½ लाख करोड़		26 लाख करोड़
25.	संख्या	असंख्यात (पल्योपम का असंख्यात वां भाग)		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 6/14 राजू		
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 31 सागर प्रमाण		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम 31 सागर प्रमाण		
30.	भाव	28 (औद.15, मि.10, पा.3)	अपर्याप्तक – 23 (औद.11, मि. 9, पा.3)	
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवाँ भाग	उ. 1000 योजन	
32.	बन्ध	101 (क्योंकि तीर्थंकर, आहारक द्विक अबन्ध है)		
33.	उदय	103 (तीर्थंकर, आहारक द्विक, मनुष्यगत्यानु., सम्यग्मिथ्यात्व, सम्य. इन 6 के बिना)		
34.	सत्त्व	147 (तीर्थंकर बिना)		
		कोई जीव अन्तर्मुहूर्त में पर्याप्त हो सम्यक्त्व को प्राप्त हो गया अन्तर्मुहूर्त तक सम्यक्त्व में रहा और पुन: मिथ्यादृष्टि हो गया इस प्रकार जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त उपलब्ध हुआ। उत्कृष्ट अन्तर कोई मनुष्य मिथ्यात्व के साथ शुक्ल लेश्या सहित इकत्तीस सागर की आयु वाले देवों में उत्पन्न हुआ पर्याप्तियों से परिपूर्ण हो सम्यक्त्व को प्राप्त हो गया सारी उम्र सम्यक्त्व के साथ रहा पश्चात् आयु में अन्तर्मुहूर्त शेष रह जाने पर मिथ्यादृष्टि हो गया इस प्रकार दो अन्तर्मुहूर्त कम इकतीस सागर उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त हुआ शेष कथन सुगम है।		

347. सुक्क लेस्सा मिच्छत्त गुणट्ठाणं

तेसिं सुक्क लेस्सा मिच्छाइट्ठी जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि–एग मिच्छाइट्टि गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, णिरयेण विणा तिण्णि गदी अपज्जत्तेसु एग देवगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, बारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसे बे जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु एग पुरिस वेदो, पणबीस कसाया अपज्जत्तेसु थीणवुसंय वेद विणा तेबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि अपज्जत्तेसु बे अण्णणाणि, एग असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, सुक्क लेस्सा, भव्व सिद्धिया अभव्व सिद्धिया दोण्णि, मिच्छत्त सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, चत्तारि अ्ठ चत्तारि रूद्द अट्ठ झाणाणि, चोवण्ण आसवा पज्जत्तेसु वावण्ण अपज्जत्तेसु बादाल आसवा, बाबीस लक्ख जादी अपज्जत्तेसु चत्तारि लक्ख जादी, अद्धुत्तर तिअसीदि लक्ख कोडि कुल कोडीणं अपज्जत्तेसु छब्बीस लक्ख कोडी कुलकोडीणं, संखावेक्खा असंखेज्ज पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व छ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण इगतीस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण इगतीस सायरोवमाणि देसूणाणि, अट्ठाबीस भावा अपज्जत्तेसु तेबीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजणसहस्सं, एगुत्तर सयं पयडीणं बंधो, तिउत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सुक्क लेस्साए मिच्छत्त गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

शुक्ल लेश्या मिथ्यादृष्टि गुणस्थान

उन्हीं शुक्ल लेश्या वाले मिथ्यादृष्टि जीवों के आलाप कहने पर एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस अपर्याप्त में सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, नरक बिना तीन गति अपर्याप्तक में एक देव गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, बारह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में दो योग, तीन वेद अपर्याप्तक में एक पुरुष वेद, पच्चीस कषाय अपर्याप्तक में स्त्री नपुंसक वेद बिना तेबीस कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्तक में दो अज्ञान, एक असंयम, चक्षु अचक्षु दो दर्शन, शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक दोनों, मिथ्यात्व सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, पाँच उपयोग अपर्याप्तक में चार उपयोग, चार आर्त्त चार रौद्र आठ ध्यान, चौपन आस्रव पर्याप्त में बावन अपर्याप्त में ब्यालीस आस्रव, बाईस लाख जाति अपर्याप्तक में चार लाख जाति, साढे तेरासी लाख करोड़ कुल कोटि अपर्याप्तक में छब्बीस लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा–असंख्यात (पल्योपम का असंख्यातवां भाग), क्षेत्रापेक्षा–लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन–लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 6/14 राजू, काल–नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक इकतीस सागर, अंतर–नाना जीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम इकतीस सागर, अट्ठाईस भाव अपर्याप्तक में तेइस भाव, जघन्य अवगाहना घनांगुल का संख्यातवां भगा उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ एक प्रकृतियों का बंध, एक सौ तीन प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार शुक्ल लेश्या में मिथ्यादृष्टि गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– अपर्याप्तक अवस्था में यहाँ केवल देवगति ही पायी जाती है क्योंकि मिथ्यादृष्टि शुक्ल लेश्या वाला मरण कर अन्य गतियों में नहीं जाता।

शंका – नौवे ग्रैवेयक से च्युत हुआ कोई देव मनुष्यों में शुक्ल लेश्या व मिथ्यात्व के साथ उत्पन्न क्यों नहीं होता ?

समाधान – नहीं होता क्योंकि मरण के समय लेश्या परिवर्तन हो जाता है।

शंका– यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान– यह आचार्य परंपरा से जाना जाता है क्योंकि ऐसा उपदेश नहीं पाया जाता। वेद भी एक पुरुष वेद पाया जाता है। जाति, कुल कोटि भी देव गति की ही आयेगी। संख्या पल्योपम का असंख्यातवां भाग है उसका प्रतिभाग भी असंयत सम्यग्दृष्टियों से असंख्यातगुणा है। उसका गुणकार धवला पुस्तक तीन से जान लेना चाहिए। क्योंकि विषय विस्तार के भय से यहाँ देना संभव नहीं है। स्पर्शन कुछ कम छह राजू बनता है क्योंकि अच्युत स्वर्ग के देवों का नीचे की ओर गमन मध्यलोक तक अर्थात् मेरुतल की ऊपरी सतह तक ही होता है और वह कुछ कम 6/14 राजू बन जाता है शेष कथन सुगम है।

काल जघन्य अन्तर्मुहूर्त सुगम है उत्कृष्ट कुछ अधिक इकतीस सागर इस प्रकार है कोई जीव मरण से पूर्व अन्य लेश्या से शुक्ल लेश्या को प्राप्त हुआ और अन्तर्मुहूर्त रहा पश्चात् मरण कर इकतीस सागर की आयु वाले देवों में उत्पन्न हुआ सम्पूर्ण जीवन भर रहा मरण के समय अन्य लेश्या वाला हो गया इस प्रकार अन्तर्मुहूर्त अधिक इकतीस सागर प्राप्त हुआ। अन्तर जघन्य अन्तर्मुहूर्त यानि कोई मिथ्यादृष्टि मनुष्य मरण कर शुक्ल लेश्या वाले देवों में उत्पन्न हुआ पर्याप्त हो विशुद्ध हो सम्यक्त्व को प्राप्त किया अन्तर्मुहूर्त रहा पुन: मिथ्यादृष्टि हो गया इस प्रकार जघन्य अंतर प्राप्त हुआ उत्कृष्ट अन्तर सम्यक्त्व के साथ जीवन भर रहा अन्त में मिथ्यादृष्टि हो गया इस प्रकार उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम इकतीस सागर प्राप्त हुआ।

348. शुक्ल लेश्या सासादन गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	सासादन	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त/अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4	–	–
6.	गति	तीन गति (नरक बिना)	–	एक देवगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	12 योग	10 योग	2 योग (औदा. मि. बिना)
10.	वेद	3 वेद	–	एक पुरुष वेद
11.	कषाय	25 कषाय	–	23 कषाय (स्त्री, नपुंसक वेद बिना)
12.	ज्ञान	3 कुज्ञान	–	2 कुज्ञान
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	सासादन	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	अनाहारक आहारक दोनों
20.	उपयोग	5 (3 ज्ञानो.+2 दर्शनो.)	5 (3 ज्ञानो.+ 2 दर्शनो.)	4 (2+2) दर्शन+उपयोग
21.	ध्यान	8 ध्यान	–	–
22.	आस्रव	49 (25+12+12)	47 (25+10+12)	37 (23+2+12)
23.	जाति	22 लाख	–	4 लाख
24.	कुलकोटि	83½ लाख करोड़	–	छब्बीस लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 6/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – ज. एक समय उ. पल्योपम का अंसख्यातवाँ भाग, एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. छः आवली		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा–ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीवापेक्षा–ज. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग उ. कुछ कम 31 सागर		
30.	भाव	26 (औद.14, क्षयो. 10, पा.2)	अपर्याप्त– 21 (औद. 10, क्षयो. 9, पा.2)	
31.	अवगाहना	जघ. संख्यात अंगुल	उ. संख्यात धनुष	
32.	बन्ध	97 (तीन अबन्ध+ चार प्रथम गुणस्थान की व्युच्छिन्न)= सात प्रकृति बिना		
33.	उदय	102 (छः प्रकृति पूर्व की अनु.+ प्रथम गुण. की व्युछित्ती मि. प्रकृति सहित सात के बिना)		
34.	सत्त्व	145 (तीर्थंकर, आहारकद्विक बिना)		

348. सुक्क लेस्सा सासण गुणट्ठाणं

तेसिं सुक्क लेस्सा सासण गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि–एग सासण गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, णिरयेण विणा तिण्णि गदी अपज्जत्तेसु एग देव गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, बारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु बे जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु एग पुरिस वेदो, पणबीस कसाया अपज्जत्तेसु थीणवुंसयवेदबिणा तेबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि अपज्जत्तेसु बे अण्णाणाणि, असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, सुक्क लेस्सा, भव्व सिद्धिया, सासण सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, अट्ठ झाणाणि, उण पंचास आसवा पज्जत्तेसु सत्तदाल अपज्जत्तेसु सत्ततीस आसवा, बाबीस लक्ख जादी अपज्जत्तेसु चत्तारि लक्खजादी, अद्धुत्तर तिअसीदि लक्ख कोडि कुल कोडीणं अपज्जत्तेसु छब्बीस लक्ख कोडी कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा एवं छ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण छावली, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण इगतीस सायरोवमाणि देसूणाणि, छब्बीस भावा अपज्जत्तेसु इगबीस भावा, जहण्णमवगहणं संखेज्जांगुल उक्कस्सेण संखेज्ज धणू, सत्तणउदि पयडीणं बंधो, बे उत्तर सयं पयडीणं उदओ, एवं पणदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सुक्क लेस्साए सासण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

शुक्ल लेश्या सासादन गुणस्थान

उन्हीं शुक्ल लेश्या सासादन गुणस्थानालाप कहने पर–एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस अपर्याप्त में सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, नरक बिना तीन गति अपर्याप्त में एक देव गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, बारह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में दो योग, तीनों वेद अपर्याप्तक में एक पुरुष वेद, पच्चीस कषाय अपर्याप्तक में तेबीस कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्तक में दो अज्ञान, असंयम, चक्षु अचक्षु दो दर्शन, शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, सासादन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, पाँच उपयोग अपर्याप्त में चार उपयोग, आठ ध्यान, उनंचास आस्रव पर्याप्त में सैंतालीस अपर्याप्त में सैंतीस आस्रव, बाईस लाख जाति अपर्याप्त में चार लाख जाति, साढ़े तेरासी लाख करोड़ कुल कोटि अपर्याप्तक में छब्बीस लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग, क्षेत्रापेक्षा–लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन–लोक का असंख्यातवां भाग एवं कुछ कम 6/14 राजू, काल–नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग–एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छ आवली, अंतर–नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य पल्योपम का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट कुछ कम इकतीस सागर, छब्बीस भाव अपर्याप्तक में इक्कीस भाव, जघन्यावगाहना संख्यात अंगुल उत्कृष्ट संख्यात धनुष, सत्तानवै प्रकृतियों का बंध, एक सौ दो प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ पैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार शुक्ल लेश्या में सासादन गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– सासादन गुणस्थान में अपर्याप्त अवस्था में भी एक देव गति ही पायी जाती है कारण का कथन प्रथम गुणस्थानवत् है। उसी प्रकार वेद व कषाय जानना चाहिए। जाति व कुल कोटि का कथन भी प्रथम गुणस्थानवत् ही जानना चाहिए। संख्या पल्योपम का असंख्यातवां भाग उसका प्रतिभाग धवला पुस्तक तीन से जानें अथवा आगे इसी ग्रंथ में उसका प्रतिभाग कहेंगे, शेष कथन सुगम है। स्पर्शन का कथन भी प्रथम गुणस्थान के समान जानना चाहिए क्योंकि स्वस्थान पद परिणत जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग विहार वेदना विक्रिया कषाय मारणांतिक पद परिणत जीवों ने कुछ कम छह राजू स्पर्शन किया है। उपपाद पद की अपेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग होता है क्योंकि मिथ्यादृष्टि और सासादन सम्यग्दृष्टि तिर्यंच मरण कर शुक्ल लेश्या वाले देवों में उत्पन्न नहीं होते, अब रह जाते हैं मनुष्य तो मनुष्यों की अपेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग ही बनता है। विशेष जानने के लिए पढ़े धवल पुस्तक चार स्पर्शनानुयोग। काल की अपेक्षा कथन नाना जीवों का गुणस्थानवत् तथा एक जीव का भी गुणस्थानवत् जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह आवली है। शेष कथन सुगम है।

अन्तर नाना जीवों का जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग सुगम है क्योंकि पहले कई बार कहा जा चुका है एक जीव का जघन्य पल्योपम का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट इकतीस सागर इस प्रकार है–कोई जीव मिथ्यात्व के साथ शुक्ल लेश्या सहित इकतीस सागर की आयु वाले देवों में उत्पन्न होकर पर्याप्त हो प्रथमोपशम सम्यक्त्व को उत्पन्न किया पश्चात् सासादन को प्राप्त हुआ पश्चात् मिथ्यात्व को प्राप्त हो जीवन पर्यंत मिथ्यादृष्टि रहा आयु के अंत में पुन: प्रथमोपशम सम्यक्त्व प्राप्त कर सासादन सम्यक्त्व को प्राप्त हुआ इस प्रकार अन्तर प्राप्त हुआ।

349. शुक्ल लेश्या मिश्र गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	सम्यग्मिथ्यात्व
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	तीन गति (नरक बिना)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	10 योग (4 म., 4 व., औदा., वैक्रि.)
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	21 कषाय
12.	ज्ञान	3 मिश्रज्ञान
13.	संयम	असंयम
14.	दर्शन	2 दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	सम्यग्मिथ्यात्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 (3 ज्ञानो.+2 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8 ध्यान
22.	आस्रव	43 (21 कषाय + 10 योग + 12 अवि.)
23.	जाति	22 लाख
24.	कुलकोटि	83½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 6/14 राजू
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग, एक जीव की अपेक्षा – ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग, एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम 31 सागर
30.	भाव	26 (औद.14, क्षयो. 10, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उ. 1000 योजन
32.	बन्ध	74 (सात प्रकृति का अबन्ध इक्कीस की व्युच्छित्ती देवायु, मनुष्यायु बिना)
33.	उदय	98 (सात पूर्व गुणस्थान की अनुदय + चार अनुंतानुबंधी=11 प्रकृति के बिना)
34.	सत्त्व	147 (तीर्थंकर प्रकृति बिना)

349. सुक्कलेस्सा सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणं

तेसिं सुक्क लेस्सा सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि–एग सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, णिरयेण विणा तिण्णि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णिवेदा, इगबीस कसाया, तिण्णि मिस्स णाणाणि, असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, सुक्क लेस्सा, भव्व सिद्धिया, सम्मामिच्छत्त सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, अट्ठज्झाणाणि, तिदाल आसवा, बाबीस लक्ख जादी, अद्धुत्तर तिअसीदि लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा छ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण इगतीस सायरोवमाणि देसूणाणि, छब्बीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, चउसत्तदि पयडीणं बंधो, अट्ठणउदि पयडीणं उदओ, एवं सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सुक्क लेस्साए सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाण सम्मत्ता।

शुक्ल लेश्या सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान

उन्हीं शुक्ल लेश्या सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थानालाप कहने पर–एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, नरक बिना तीन गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, दस योग, तीन वेद, इक्कीस कषाय, तीन मिश्र ज्ञान, असंयम, चक्षु–अचक्षु दो दर्शन, शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, सम्यग्मिथ्यात्व सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, आठ ध्यान, तेतालीस आस्रव, बाईस लाख जाति, साढ़े तेरासी लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा–पल्योपम का असंख्यात वां भाग, क्षेत्रापेक्षा–लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन–लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 6/14 राजू, काल–नानाजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर–नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम इकतीस सागर, छब्बीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, चौहत्तर प्रकृतियों का बंध, अन्ठानवे प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार शुक्ल लेश्या में सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ पर सारे पद सुगम हैं कहीं कोई विशेषता नहीं है काल का कथन नाना जीवों का गुणस्थानवत् जानना एक जीव का भी जघन्य व उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त सुगम है। अन्तर कहते हैं जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त कोई देव शुक्ल लेश्या वाला इकतीस सागर की आयु वाला है उपपाद उसका मिथ्यात्व के साथ हुआ है पश्चात् पर्याप्त हो सम्यक्त्व को प्राप्त कर सम्यग्मिथ्यात्व को प्राप्त हुआ पश्चात् मिथ्यात्व को चला गया अन्तर्मुहूर्त रह कर पुन: सम्यग्मिथ्यात्व को प्राप्त हुआ इस प्रकार अन्तर लब्ध हुआ। उत्कृष्ट अन्तर उक्त देव सम्यग्मिथ्यात्व के पश्चात् कुछ कम इकतीस सागर मिथ्यात्व अथवा सम्यक्त्व को प्राप्त कर आयु के अन्तर्मुहूर्त शेष रहने पर सम्यग्मिथ्यात्वी पश्चात् सम्यक्त्व के साथ मरण को प्राप्त हुआ इसप्रकार उत्कृष्ट अन्तर काल प्राप्त हुआ। शेष कथन सुगम है।

350. शुक्ल लेश्या असंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	असंयत गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	तीन गति (नरक बिना)	–	दो गति (मनु., देव)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	13 योग	10 योग	3 योग
10.	वेद	3 वेद	–	एक पुरुष वेद
11.	कषाय	21 कषाय	–	19 कषाय (दो वेद बिना)
12.	ज्ञान	3 ज्ञान (मति, श्रुत, अवधि)	–	–
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	3 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो., उपशम)	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	6 (3 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)	–	–
21.	ध्यान	10	–	–
22.	आस्रव	46 (21 क.+12 अवि.+13 योग)	43 (21 क.+12 अवि.+10 योग)	34 (19क., 12 अवि., 3 यो.)
23.	जाति	22 लाख	–	18 लाख
24.	कुलकोटि	83½ लाख करोड़	–	40 लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 6/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवापेक्षा – सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 33 सागर (ध.पु. 4 सू. 14, 15)		
29.	अन्तर	नाना जीव अपेक्षा – निरन्तर, एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम 31 सागर (ध.पु. 5 सू. 310, 11)		
30.	भाव	30 (औद. 14, क्षयो. 12, क्षा.1, पा.2, औप.1) अपर्या. 27 (औद.11, मि.12, क्षा.1, औ.1, पा.2)		
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उ. 1000 योजन		
32.	बन्ध	77 (अबन्ध तीस में से तीर्थंकर, देवायु, मनु. के बिना क्योंकि इन तीन का बन्ध होने लगता है।		
33.	उदय	100 (11 पूर्व की अनुदय + गत्यानुपूर्वी=12 सम्यक्त्व, देव, मनु. गत्या.= 12–3=9)		
34.	सत्त्व	148		

350. सुक्क लेस्सा असंजद गुणट्ठाणं

तेसु सुक्क लेस्सा अविरदसंजदो गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि–एग अविरद संजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस पाणा अपज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, णिरयेण विणा तिण्णि गदी अपज्जत्तेसु देव मणुस्स बे गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु एगं पुरिस वेदो, इगबीस कसाया अपज्जत्तेसु उणबीस कसाया, मदि सुद ओहि तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, छ उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द बे धम्म दस झाणाणि, छादाल आसवा पज्जत्तेसु तिदाल अपज्जत्तेसु चउतीस आसवा, बाबीस लक्ख जादी अपज्जत्तेसु अट्ठदस लक्ख जादी, अद्धुत्तर तिअसीदि लक्ख कोडि कुलकोडीणं अपज्जत्तेसु दाल लक्ख कोडी कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा एवं छ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, अंतरं–णाणा जीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण इगतीस सायरोवमाणि देसूणाणि, तीस भावा अपज्जत्तेसु सत्तबीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सत्तसत्तदि पयडीणं बंधो, सयं पयडीणं उदओ एवं अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सुक्क लेस्साए असंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

शुक्ल लेश्या असंयत गुणस्थान

उन्हीं शुक्ल लेश्या अविरत संयत गुणस्थानालाप कहने पर–एक अविरत संयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस प्राण अपर्याप्त में सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, नरक बिना तीन गति अपर्याप्तक में मनुष्य देव गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीन वेद अपर्याप्तक में एक पुरुष वेद, इक्कीस कषाय अपर्याप्तक में उन्नीस कषाय, मति श्रुत अवधि तीन ज्ञान, असंयम, तीन दर्शन, शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, छह उपयोग, चार आर्त्त चार रौद्र दो धर्म दस ध्यान, छ्यालीस आस्रव पर्याप्त में तेतालीस अपर्याप्त में चौतीस आस्रव, बाईस लाख जाति अपर्याप्तक में अठारह लाख जाति, साढ़े तेरासी लाख करोड़ कुल कोटि अपर्याप्तक में चालीस लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा–पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा–लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 6/14 राजू, काल–नाना जीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक तेतीस सागर, अंतर–नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम इकतीस सागर, तीस भाव अपर्याप्तक में सत्ताईस भाव, जघन्य अवगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, सतत्तर प्रकृतियों का बंध, सौ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार शुक्ल लेश्या में असंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– चतुर्थ गुणस्थान में शुक्ल लेश्या के साथ अपर्याप्त अवस्था में देव और मनुष्य दो गति पायी जाती हैं क्योंकि मनुष्य अथवा तिर्यंच मर कर शुक्ल लेश्या वाले देवों में उत्पन्न होते हुए देखें जाते हैं किंतु सम्यक्त्व सहित देव चयकर नियम से मनुष्य ही होता है अन्य गति में नहीं जाता तथा उसकी लेश्या भी वही बनी रहती है जो देव में थी बाद में परिवर्तित होती है इसलिए अपर्याप्त अवस्था में मनुष्य गति पाई जाती है।

शंका–यदि शुक्ल लेश्या वाला देव मिथ्यात्व के साथ च्युत होता है तो क्या उसकी लेश्या परिवर्तित हो जाती है ?

समाधान– हाँ उसकी लेश्या नियम से परिवर्तित हो जाती है।

शंका– यह कहाँ से जाना जाता है ?

समाधान– क्योंकि मिथ्यादृष्टि जीव शुक्ल लेश्या के साथ अपर्याप्त अवस्था में देव गति के अलावा अन्य गति में नहीं पाये जाते हैं यहाँ इस सत्प्ररूपणा वचन से जाना जाता है। शेष कथन सुगम है, शेष पद सुगम है। काल जघन्य तो सुगम है उत्कृष्ट कुछ अधिक तेतीस सागर इस प्रकार है कोई संयत मनुष्य शुक्ल लेश्या के साथ मरण कर तेतीस सागर की आयु वाले देवों में गया सारा जीवन रहा पुन: च्युत हो उसी लेश्या के साथ मनुष्य हुआ अन्तर्मुहूर्त काल तक रहा और अन्य लेश्या को चला गया इस प्रकार दो अन्तर्मुहूर्त अधिक तेतीस सागर प्राप्त हुआ। अन्तर का कथन जिस प्रकार मिथ्यात्व का अन्तर कहा था उसी प्रकार यहाँ भी लगा लेना चाहिए फर्क इतना है जहाँ मिथ्यात्व कहा है वहाँ सम्यक्त्व कहना चाहिए शेष कथन सुगम है।

351. शुक्ल लेश्या संयतासंयत गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	संयमासंयम
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	मनुष्य व तिर्यंच गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	17 कषाय
12.	ज्ञान	3 ज्ञान
13.	संयम	संयमासंयम
14.	दर्शन	3 दर्शन (केवल दर्शन बिना)
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षयो., उप., क्षायिक)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	6 (3 ज्ञानो.+3. दर्शनो.)
21.	ध्यान	11 ध्यान
22.	आस्रव	37 (कषाय 17, योग 9, अवि. 11)
23.	जाति	18 लाख
24.	कुलकोटि	57½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग, मा.– कुछ कम 6/14 राजू
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर, एक जीवापेक्षा – निरन्तर (ध.पु.5, सू.315)
30.	भाव	29 (औद.12, क्षयो.13, पा.2, क्षा.1, औ.1)
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उ. 1000 योजन
32.	बन्ध	67 (पूर्व की सत्ताईस प्रकृति + दस प्रकृति चतुर्थ गुणस्थान की व्युच्छिन्न)
33.	उदय	87 (22 प्रकृति (9+13 व्युच्छित्ति)
34.	सत्त्व	147 (नरकायु क्योंकि नरकायु की सत्ता वाला जीव संयमासंयम गुणस्थान को प्राप्त नहीं होता।

351. सुक्क लेस्सा संजमासंजमो गुणट्ठाणं

तेसिं सुक्क लेस्सा संजमासंजम गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि–एग देससंजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, मणुस्स व तिरिक्ख बे गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, सत्तदस कसाया, तिण्णि णाणाणि, एग संजमासंजमो, केवल दंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, एग सुक्क लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, छ उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द ति धम्म एगारस झाणाणि, सत्ततीस आसवा, अट्ठदस लक्ख जादी, अद्धुत्तर सत्तावण्ण लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व मारणांतिओवेक्खा छ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एक जीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणेगजीवावेक्खा णिरंतरं, उणतीस भावा, जहण्णमवगहण घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सडसट्ठि पयडीणं बंधो, सत्तासीदि पयडीणं उदओ, एवं सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सुक्क लेस्साए संजमासंजमो गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

शुक्ल लेश्या संयमासंयम गुणस्थान

उन्हीं शुक्ल लेश्या संयमासंयम गुणस्थानालाप कहने पर–एक देशसंयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्य व तिर्यंच दो गति, पंचेन्द्रिय, त्रस काय, नौ योग, तीनों वेद, सत्तरह कषाय, तीन ज्ञान, एक संयमासंयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम–क्षायिक–क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, चार आर्त चार रौद्र तीन धर्म ग्यारह ध्यान, सैंतीस आस्रव, अठारह लाख जाति, साढ़े सत्तावन लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा–पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा–लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग मारणांतिक कुछ कम 6/14 राजू, काल–नाना जीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर–नानाजीवापेक्षा व एक जीवापेक्षा निरंतर, उनतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, सड़सठ प्रकृतियों का बंध, सतासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों क सत्त्व होता है।

इस प्रकार शुक्ल लेश्या में संयमासंयम गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ मनुष्य और तिर्यंच दो गति हैं पर्याप्तक ही होता है क्योंकि देशसंयम के साथ किसी का जन्म नहीं होता शेष सभी पद सुगम है। स्पर्शन को कहते हैं स्वस्थान विहार वेदना विक्रिया कषाय पद से परिणत लोक का असंख्यातवां भाग ही है क्योंकि यहाँ तिर्यंचों की प्रधानता है और तिर्यंच ज्यादा विहार नहीं कर सकते। मारणांतिक अपेक्षा कुछ कम छह राजू पाया जाता है क्योंकि शुक्ल लेश्या वाले देशव्रती तिर्यंच अच्युत कल्प तक उत्पन्न होते हैं अत: वहाँ तक मारणांतिक समुद्घात करते पाये जाते हैं, किंतु उपपाद पद इस गुणस्थान में नहीं पाया जाता। काल की अपेक्षा नाना जीवों का सर्वकाल सुगम है एक जीव का जघन्य काल एक समय दो प्रकार से बनता है लेश्या का काल क्षय अथवा गुणस्थान की अपेक्षा परिवर्तन जैसे कोई जीव हीयमान शुक्ल लेश्या के साथ प्रमत्त गुणस्थान में था लेश्या के काल में एक समय शेष रहने पर पंचम गुणस्थान को प्राप्त हुआ एक समय रहा पुन: पद्म लेश्या को प्राप्त हो गया, इस प्रकार लेश्या परिवर्तन से उक्त काल प्राप्त हुआ अथवा कोई जीव वर्धमान पद्म लेश्या के साथ संयतासंयत था पद्म लेश्या के काल क्षय होने पर शुक्ल लेश्या वाला हुआ एक समय शुक्ल लेश्या के साथ रहा पुन: लेश्या तो शुक्ल ही रही किन्तु गुणस्थान अप्रमत्त हो गया इस प्रकार गुणस्थान परावर्तन से एक समय प्राप्त हुआ। उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है जो सुगम है क्योंकि मनुष्य और तिर्यंचों में लेश्या अन्तर्मुहूर्त बाद परिवर्तित होती रहती है। अन्तर निरंतर है क्योंकि नाना जीवों की अपेक्षा इस गुणस्थान में जीव निरंतर बने ही रहते हैं एक जीव की अपेक्षा चूंकि लेश्या के काल से गुणस्थान का काल अधिक है इसलिए एक ही लेश्या में अन्य गुणस्थान में जाकर पुन: लौट कर नहीं आ सकता इसलिए निरंतर है शेष कथन सुगम है कहीं कोई विशेषता नहीं है।

352. शुक्ल लेश्या प्रमत्तसंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	प्रमत्त संयत गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्ता पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्या.	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	मनुष्यगति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	11 योग	10	1 आहारक मिश्र योग
10.	वेद	3 वेद	–	पुरुष वेद
11.	कषाय	13 कषाय	–	11 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान	–	3 ज्ञान (मन:पर्यय बिना)
13.	संयम	3 (सा., छेदो., परिहारविशुद्धि)	–	2 (सा., छे.)
14.	दर्शन	3 दर्शन (केवल दर्शन बिना)	–	–
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो., उपशम)	–	2 सम्यक्त्व (उपशम बिना)
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक	–	–
20.	उपयोग	7 उपयोग	–	6 उपयोग (मन:पर्यय बिना)
21.	ध्यान	7 (3 आर्त्त+ 4 धर्मध्यान)	–	–
22.	आस्रव	24 (13 कषाय + 11 योग)	23	12 (11 क.+1 यो.)
23.	जाति	14 लाख		
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़		
25.	संख्या	संख्यात (59398206) सामान्य का संख्यात वा भाग $\frac{(59398206)}{\text{संख्यात}}$ अप. 27		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – निरन्तर, एक जीव अपेक्षा – निरन्तर		
30.	भाव	29 (औद.11, क्षयो. 14, पा.2, क्षा.1, औप.1) अपर्याप्तक–25 (औद.9, क्षयो.13, पा.2, क्षा.1)		
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष		
32.	बन्ध	63 (सैंतीस+चार गुणस्थोक्त व्युच्छित्ती) =41 के बिना)		
33.	उदय	81 (पूर्वक्त 22 प्रकृति अनुदय + 8 प्रकृति उद.व्यु.=30–आहा.द्वि.क्योंकि यहाँ आहारकद्विक का उदय पाया जाता है।		
34.	सत्त्व	146 (नरक, तिर्यंचायु बिना क्योंकि जिसके भुज्यमान नरक, तिर्यंच आयु का सत्त्व होता है वह सकल संयमी (प्रमत्त गुणस्थान वाला नहीं हो सकता तथा जिसके बद्धयमान नरक, तिर्यंच, मनुष्यायु का सत्त्व होता है वह भी सकल संयमी नहीं हो सकता। किन्तु यहाँ भुज्यमान मनुष्यायु का सत्त्व व उदय तो पाया जाता है।)		

352. सुक्क लेस्सा पमत्तसंजदो गुणट्ठाणं

तेसिं सुक्क लेस्सापमत्त संजदो गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि–एग पमत्त गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, एग मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, एगारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु एग आहारिणो मिस्स काय जोगा, दव्वेण पुरिस वेदो भावेण तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु एगं पुरिस वेदो, तेरस कसाया अपज्जत्तेसु एगारस कसाया, केवल णाणेण विणा चत्तारि णाणाणि अपज्जत्तेसु मणपज्जययेण विणा तिण्णि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा विहार सुद्धि तिण्णि संजमा अपज्जत्तेसु विहार सुद्धिओ विणा बे संजमा, केवल दंसणेण बिणा तिण्णि दंसणाणि, एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता अपज्जत्तेसु उवसमेण विणा बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा अपज्जत्तेसु छ उवजोगा, चत्तारि धम्म तिण्णि अट्ठं सत्त झाणाणि, चउबीस आसवा पज्जत्तेसु तेबीस अपज्जत्तेसु बारस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा संखेज्ज पंच कोडि तिणउदि लक्ख अट्ठणउदि सहस्स छ उत्तर बे सयं अस्ससंखाओ संखेज्ज भागा अपज्जत्तेसु सत्तवीस, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणेगजीवावेक्खाए णिरंतरं, उणतीस भावा अपज्जत्तेसु पणवीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तरं पंचसयं धणू, तिसट्ठि पयडीणं बंधो, एगासीदि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सुक्कलेस्साऐ पमत्त संजद गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

शुक्ल लेश्या प्रमत्तसंयत गुणस्थान

उन्हीं शुक्ल लेश्या प्रमत्त संयत गुणस्थानालाप कहने पर–एक प्रमत्त संयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहो पर्याप्ती छहो अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस अपर्याप्त में सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, एक मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, ग्यारह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में एक आहारक मिश्र काययोग, द्रव्य से पुरुष भाव से तीनो वेद अपर्याप्तक में एक पुरुष वेद, तेरह कषाय अपर्याप्तक में ग्यारह कषाय, चार ज्ञान अपर्याप्त में मन:पर्यय बिना तीन ज्ञान, सामायिक–छेदोपस्थापना परिहार विशुद्धि तीन संयम अपर्याप्त में दो संयम, तीन दर्शन केवल दर्शन बिना, शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व अपर्याप्त में उपशम बिना दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग अपर्याप्त में छह उपयोग, तीन आर्त चार धर्म सात ध्यान, चौबीस आस्रव पर्याप्त में तेईस अपर्याप्त में बारह आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा संख्यात गुणस्थानोक्त संख्या (पाँच करोड़ तेरानवे लाख अन्ठानवे हजार दौ सौ छह) का संख्यातवां भाग अपर्याप्तक में सत्ताईस, क्षेत्रापेक्षा–लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन–लोक का असंख्यातवां भाग, काल–नानाजीवापेक्षा सर्वकाल, एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त अपर्याप्तक में जन्घन्योत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर–नानाजीवापेक्षा व एक जीवापेक्षा निरंतर, अट्ठाईस भाव अपर्याप्तक में पच्चीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, तिरेसठ प्रकृतियों का बंध, इक्यासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छियालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार शुक्ल लेश्या में प्रमत्त संयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ सभी पद सुगम हैं क्योंकि कई बार व्याख्यान किया जा चुका है विशेषता यह है कि संख्या का जो कथन है वह सामान्य से है विशेषता यह है कि जो प्रमत्त गुणस्थान में जो संख्या कही है उसमें संख्यात का भाग देने पर एक भाग प्रमाण शुक्ल लेश्या वाले जीव होते हैं क्योंकि यहाँ तीनों शुभ लेश्याऐं पाई जाती हैं और वे सभी निरंतर है, इसलिए इस लेश्या में संख्यात ही जीव पाये जाते हैं। कितने पाये जाते हैं इस प्रकार के उपदेश का वर्तमान में अभाव है। काल का कथन और करते हैं जो एक समय कहा है वह संयतासंयत के समान है, गुणस्थान परावर्तन की अपेक्षा वर्धमान पद्मलेश्या का काल समाप्त हुआ और शुक्ल लेश्या आ गई एक समय शुक्ल लेश्या के साथ रहा और अप्रमत्त गुणस्थान में चला गया इस प्रकार गुणस्थान परावर्तन का हुआ अब लेश्या परावर्तन हीयमान शुक्ल लेश्या वाला अप्रमत्त गुणस्थान वाला जीव लेश्या के काल में एक समय शेष रहने पर प्रमत्तसंयत हुआ एक समय शुक्ल लेश्या के साथ रहा और पदम् लेश्या वाला हो गया इस प्रकार लेश्या परावर्तन के द्वारा एक समय प्राप्त हुआ। अथवा कोई जीव अप्रमत्त गुणस्थान में हीयमान शुक्ल लेश्या के साथ प्रमत्त गुणस्थान शुक्ल लेश्या में ही प्रमत्त गुणस्थान को प्राप्त हुआ एक समय रहा और मरण को प्राप्त हो गया इस प्रकार मरण की अपेक्षा भी एक समय बनता है। शेष कथन सुगम है। अन्तर भी सुगम है क्योंकि निरंतर है वो इसलिए कि लेश्या के काल से गुणस्थान का काल अधिक है चूंकि लेश्या मार्गणा है एक ही लेश्या में अन्य गुणस्थान को जाकर वापस उसी में नहीं आ सकता और जब तक उसी स्थान को छोड़कर दुबारा ग्रहण न किया जाए तो अन्तर प्राप्त होगा ही नहीं। शेष कथन सुगम हैं।

353. शुक्ल लेश्या अप्रमत्त संयत गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	अप्रमत्तसंयत गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 संज्ञा (आहार बिना)
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	(द्रव्य से पुरुष वेद, भाव से 3)
11.	कषाय	13 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहार विशुद्धि
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो. उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 (4 ज्ञानो.+3. दर्शनो.)
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान
22.	आस्रव	22 (13 कषाय + 9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	संख्यात (29699103) सामान्य का संख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – सर्वकाल, एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर, एक जीवापेक्षा – ज.व उ. अन्तर्मुहूर्त
30.	भाव	29 (औद.11, क्षयो.14, क्षा.1, औप.1, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	59 (41+6–2 आहारकद्विक = 45 के बिना गुणस्थानोक्त)
33.	उदय	76 (पूर्व की 28 अनुदय +5 व्यु.=33 के बिना)
34.	सत्त्व	146 (पूर्वोक्तानुसार)

353. सुक्क लेस्सा अपमत्तसंजद गुणट्ठाणं

तेसिं सुक्क लेस्सा अपमत्तसंजद गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि-एग अपमत्त गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, आहारेण विणा तिण्णि सण्णा, मणुस्स गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, भावेण तिण्णि वेदा दव्वेण एग पुरिस वेदो, तेरस कसाया, केवलणाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठाणवणाविहार सुद्धि तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्म झाणाणि, बाबीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चौद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा संखेज्जाओ संखेज्ज भाग गुणट्ठाणावेक्खा बे कोडि छण्णउदि लक्ख णवणउदि सहस्स तिउत्तर सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणा जीवावेक्खा णिरंतरं एग जीवावेक्खा जहण्णुकस्सेण अंतोमुहुत्तं, उणतीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, ऊणसट्ठि पयडीणं बंधो, छसत्तदि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सुक्क लेस्साए अमपत्त संजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

शुक्ल लेश्या अप्रमत्त संयत गुणस्थान

उन्हीं शुक्ल लेश्या अप्रमत्त गुणस्थानालाप कहने पर-एक अप्रमत्त गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, आहार बिना तीन संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, भाव से तीनों वेद द्रव्य से एक पुरुष वेद, तेरह कषाय, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान, सामायिक-छेदोपस्थापना-परिहार विशुद्धि तीन संयम, तीन दर्शन, शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम-क्षायिक-क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्मध्यान, बाईस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा संख्यात गुणस्थानोक्त संख्या (दो करोड़ छयानवे लाख निन्यानवे हजार एक सौ तीन) का संख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन-लोक का असंख्यातवां भाग, काल-नाना जीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर-नाना जीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, उनतीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, उनसठ प्रकृतियों का बंध, छियत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छियालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार शुक्ल लेश्या में अप्रमत्त संयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- यहाँ सभी पद सरल हैं कुछ भी व्याख्यान करने योग्य नहीं है। काल में थोड़ी विशेषता है उसे कहते हैं यद्यपि प्रमत्त गुणस्थान में जिस प्रकार कहा था वैसा ही है इतनी और विशेषता है कि यहाँ मरण की अपेक्षा भी बन जाता है। कोई जीव शुक्ल लेश्या वाला प्रमत्त गुणस्थानवर्ती उसी लेश्या के साथ अप्रमत्त गुणस्थान वाला हुआ एक समय रहा और मरण कर देवों में उत्पन्न हुआ। इसी प्रकार श्रेणी से उतरता हुआ शुक्ल लेश्या में अपूर्वकरण से अप्रमत्त संयत हुआ एक समय रहा और मरण कर देवत्व को प्राप्त हो असंयत हो गया इस प्रकार दो ही भंग बनते हैं। शेष कथन सुगम है अन्तर में भी थोड़ी भिन्नता है वह भी कहते हैं क्योंकि जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त है क्योंकि दोनों अन्तर्मुहूर्त श्रेणी से उतारने पर प्राप्त होते हैं। अप्रमत्त गुणस्थान वाला कोई जीव श्रेणी चढ़ा उस समय शुक्ल लेश्या ही है जघन्य काल में ग्यारहवें गुणस्थान तक गया और पुन: नीचे उतर कर क्रमश: अपूर्वकरण के पश्चात् अप्रमत्त भाव को प्राप्त हुआ। इसी प्रकार उत्कृष्ट अन्तर का कथन करना चाहिए। विशेषता यह है कि यहाँ उत्कृष्ट समय में श्रेणी चढ़ाना उतारना चाहिए। संख्या का कथन जिस प्रकार प्रमत्त गुणस्थान में किया है वैसा ही करना चाहिए कोई विशेषता नहीं है शेष कथन सुगम है।

354. शुक्ल लेश्या अपूर्वकरण गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	अपूर्वकरण गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	13 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	सामायिक, छेदोपस्थापना
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (क्षा., उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 (4 ज्ञानो.+3. दर्शनो.)
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान अथवा 1 शुक्ल ध्यान
22.	आस्रव	22 (13 कषाय + 9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	897 (उपशामक–299, क्षपक–598)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	उपशामक– नाना व एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त, क्षपक– नाना व एक जीव की अपेक्षा – ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उपशामक–नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय, उ. वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा–ज.व उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक–नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. 6 माह एक जीव–निरंतर
30.	भाव	29 (औद. 11, क्षयो. 12, क्षा.2, औप.2, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	58 (45+1=46 के बिना)
33.	उदय	72 (33 पूर्व की अनु.+4 व्यु.=37 के बिना)
34.	सत्त्व	138 (क्षपक श्रेणी सहित) 146 (उपशम श्रेणी सहित)
		विशेषार्थ :– जिसने अनंतानुबंधी की विसंयोजना पूर्वक उपशम श्रेणी चढ़ी है तथा देवायु का बन्धक है उसके 142 प्रकृति का सत्त्व पाया जाताहै देवायु रहित 141 प्रकृति, दर्शन मोहनीय का क्षय कर दिया है और देवायु सहित है तो 139 प्रकृति, देवायु रहित 138 प्रकृति का सत्त्व है यदि दर्शन मोहनीय व अनंतानुबंधी सहित व देवायु सहित 146 प्रकृति, देवायु रहित 145 प्रकृति का सत्त्व पाया जाता है। क्षपक श्रेणी में 138 प्रकृति का सत्त्व होता है।

354. सुक्क लेस्सा अपुव्वयरण गुणट्ठाणं

तेसिं सुक्क लेस्सा अपुव्वयरण गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि–एग अपुव्वयरण गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीवसमासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, आहारेण विणा तिण्णि सण्णा, मणुस्स गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, भावेण तिण्णि वेदा दव्वेण एगं पुरिस वेदो, तेरस कसाया, केवलणाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, तिण्णि दंसणाणि, सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्मज्झाणाणि अहवा एग सुक्कज्झाणं, बाबीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा सत्तणउदिउत्तर अट्ठ सयं उवसामगेसु णवणउदिउत्तर बे सयं खवगेसु अट्ठणउदि उत्तर पंचसयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो उवसामगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छम्मास एगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण णिरंतरं, ऊणतीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, अट्ठावण्ण पयडीणं बंधो, बेसत्तदि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं एवं अठतीसुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सुक्क लेस्साए अपुव्वयरण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

शुक्ल लेश्या अपूर्वकरण गुणस्थान

उन्हीं शुक्ल लेश्या अपूर्वकरण गुणस्थानालाप कहने पर–एक अपूर्वकरण गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, आहार बिना तीन संज्ञाएँ, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, भाव से तीन वेद द्रव्य से पुरुष वेद, तेरह कषाय, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, तीन दर्शन, शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्मध्यान अथवा एक शुक्ल ध्यान, बाईस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा–आठ सौ सत्तानवे उपशामकों में दो सौ निन्यानवे क्षपकों में पाँच सौ अट्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा–लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन–लोक का असंख्यातवां भाग, काल–उपशामकों में नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपकों में नाना व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर–उपशामक नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपक–नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह मास एकजीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट निरंतर, उनतीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, अट्ठावन प्रकृतियों का बंध, बहत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छियालीस व एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार शुक्ल लेश्या में अपूर्वकरण गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ सभी पद सुगम है कोई विशेषता नहीं है संख्या सामान्यवत् ही है। काल सामान्यवत् है क्योंकि कई बार व्याख्यान हो चुका है अन्तर में भी कोई विशेषता नहीं है। बस उपशामक एक जीव का जघन्य व उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त वह इस प्रकार है कि शीघ्र उपशम श्रेणी चढ़कर नीचे आता है तो जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है वह श्रेणी के योग्य लघु समय वाला है और दीर्घ समय में श्रेणी चढ़कर वापस अपूर्वकरण में आता है तो श्रेणी के योग्य दीर्घ अन्तर्मुहूर्त प्राप्त होता है इस प्रकार दोनों ही प्रकार से अन्तर्मुहूर्त प्राप्त है। शेष कथन सुगम है।

बंध उदय सत्त्व का कथन यद्यपि पहले मार्गणाओं में किया है वहाँ से जान लेना चाहिए जो विशेषता है वह संदृष्टि के साथ दी है और विशेष जानने के लिए मूल ग्रंथ कर्मकाण्ड धवला आदि ग्रंथों का अध्ययन करें।

355. शुक्ल लेश्या अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	अनिवृत्तिकरण गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	2 संज्ञा (आहार, भय बिना)
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	7 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	2 (सामायिक, छेदोपस्थापना)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (क्षा., उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग (4 ज्ञानो.+3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान अथवा प्रथम शुक्ल ध्यान
22.	आस्रव	16 (7 कषाय + 9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	897 (उपशम–299, क्षपक–598)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	उपशामक– नाना व एक जीव की अपेक्षा–ज. एक समय, उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक–नाना जीव व एक जीव की अपेक्षा–ज.व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उपशामक–नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीव–ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक–नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. 6 माह एक जीव–निरन्तर
30.	भाव	29 क्षपक–27, उप.–28 (औद.11, क्षयो.12, क्षा.2, औ.2, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	22 (46+36 गुणस्थानोक्त= 82 के बिना)
33.	उदय	66 (37+6=43 गुणस्थानोक्त)
34.	सत्त्व	146, 138 (पूर्वोक्त कथनानुसार)

355. सुक्क लेस्सा अणियट्टियरण गुणट्ठाणं

तेसिं सुक्क लेस्सा अणियट्टियरण गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि–एग अणियट्ठियरण गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, मेहुण परिग्गह बे सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, भावेण तिण्णि वेदा दव्वेण पुरिस वेदो, सत्त कसाया, केवलणाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, सामइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, तिण्णि दंसण, एग सुक्क लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्म एगं सुक्कज्झाणं वा, सोलह आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा सत्तणवदि उत्तर अट्ठ सयं उवसामगेसु णवणउदि उत्तर बे सयं खवगेसु अट्ठणउदिउत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो उवसामगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णुक्स्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं उवसामगेसु णाणा जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुतं खवगेसु–णाणा जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छम्मास एगजीवावेक्खा णिरंतरं, ऊणतीस भावा, उवसामगेसु अट्ठबीस खवगेसु सत्तबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, बाबीस पयडीणं बंधो, छावट्ठि पयडीणं उदओ एवं अट्ठतीसुत्तर सयं एवं छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सुक्क लेस्साए अणियट्टियरण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

शुक्ल लेश्या अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

उन्हीं शुक्ल लेश्या अनिवृत्तिकरण गुणस्थानालाप कहने पर–एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छह पर्याप्ति, दस प्राण, मैथुन परिग्रह दो संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, भाव से तीन वेद द्रव्य से पुरुष वेद, सात कषाय, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, तीन दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्म ध्यान अथवा एक शुक्ल ध्यान, सोलह आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा–आठ सौ सत्तानवे उपशामक दो सौ निन्यानवे क्षपक पाँच सौ अट्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा–लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन–लोक का असंख्यातवां भाग, काल–उपशामक नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपक–नाना व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर–उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपक–नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह मास एक जीवापेक्षा निरंतर, उनतीस भाव उपशामकों में अट्ठाईस क्षपकों में सत्ताईस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, बाईस प्रकृतियों का बंध, छयासठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तीस व एक सौ छ्यालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार शुक्ल लेश्या में अनिवृत्तिकरण गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ पर सभी मार्गणाऐं सुगम है काल अन्तर भी अपूर्वकरण गुणस्थानवत् जान लेना चाहिए कोई विशेषता नहीं है बंध उदय में जो विशेषता है वह संदृष्टि में दी जा रही है। यहाँ क्षपक श्रेणी वाला 36 प्रकृतियों का क्षय कर सत्त्व से व्युच्छिन्न करता है और उपशम श्रेणी वाला सत्त्व से व्युच्छिन्न तो नहीं करता है किन्तु केवल मोहनीय कर्म की संज्वलन लोभ को छोड़कर सभी प्रकृतियों को दबा देता है क्योंकि लोभ दसवें गुणस्थान में उपशम को प्राप्त होता है शेष आचार्य भगवन्त श्री वीरसेन स्वामी के वचनामृत सुगम है।

356. शुक्ल लेश्या सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	सूक्ष्मसाम्पराय
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	1 परिग्रह संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	अवेद
11.	कषाय	1 सूक्ष्मलोभ
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	सूक्ष्मसाम्पराय
14.	दर्शन	3 दर्शन (केवलदर्शन बिना)
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (क्षा., उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान अथवा प्रथम शुक्ल ध्यान
22.	आस्रव	10 (1 कषाय + 9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	897 (उपशम-299, क्षपक-598)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	उपशामक- नाना व एक जीव की अपेक्षा-ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त, क्षपक- नाना जीव व एक जीव अपेक्षा- ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उपशामक-नाना जीवापेक्षा - ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीव-ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक-नाना जीवापेक्षा - ज. एक समय उ. 6 माह, एक जीव-निरन्तर
30.	भाव	23, उप. 22, क्षपक-21
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	17 (82+5= 87 प्रकृति के बिना
33.	उदय	60 (43+6 गुणस्थानोक्त = 49 प्रकृति के बिना)
34.	सत्त्व	146 पूर्व कथनानुसार 138,
		विशेषार्थ :- सत्त्व प्रकृतियाँ 102 क्योंकि 138 में से 36 प्रकृति को अनिवृत्तिकरण में नष्ट कर देता है इस प्रकार 102 शेष बची है।

356. सुक्कलेस्सा सुहुमसांपराय गुणट्ठाणं

तेसिं सुक्कलेस्सा सुहुमसांपराय गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि–एग सुहुमसांपराय गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, एग परिग्गह सण्णा, एगं मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, अवेदी, एग सुहुमलोह कसाओ, केवलणाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, एग सुहुमसांपराय संजमो, केवल दंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, एग सुक्कलेस्सा, भव्यसिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्म एग सुक्कज्झाणं वा, दस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा सत्तणवदि उत्तर अट्ठसयं उवसामगेसु णवणउदि उत्तर बे सयं खवगेसु अट्ठणउदि उत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो उवसामगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण छम्मास एगजीवावेक्खा णिरंतरं, तेबीस भाव, उवसामगेसु बाबीस खवगेसु इगबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, सत्तदस पयडीणं बंधो, सट्ठि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं बे उत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सुक्क लेस्साए सुहुम सांपराय गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

शुक्ल लेश्या सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान

उन्हीं शुक्ल लेश्या सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानालाप कहने पर– एक सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, एक परिग्रह संज्ञा, एक मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, अवेदी, एक सूक्ष्म लोभ कषाय, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान, एक सूक्ष्मसांपराय संयम, केवलदर्शन बिना तीन दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम–क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्मध्यान अथवा एक शुक्ल ध्यान, दस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा–आठ सौ सत्तानवे उपशामक दो सौ निन्यानवे क्षपक पाँच सौ अन्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा–लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन–लोक का असंख्यातवां भाग, काल–उपशामक नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपक नाना व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर–उपशामक नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह मास एक जीवापेक्षा निरंतर, तेईस भाव उपशामक बाईस क्षपक इक्कीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, सत्तरह प्रकृतियों का बंध, साठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छियालीस एक सौ अड़तीस से एक सौ दो प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार शुक्ल लेश्या में सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ पर सारे पद सुगम हैं काल, अन्तर, स्पर्शन आदि जिस प्रकार अपूर्वकरण में कहे हैं उसी प्रकार यहाँ जानना चाहिए कोई विशेषता नहीं है। सत्तरह प्रकृतियों का बन्ध क्योंकि अनिवृत्तिकरण में पाँच प्रकृति की बन्ध व्युच्छित्ति हो जाती है। शेष बन्ध व सत्त्व पूर्व के समान संदृष्टि में दिया हुआ है।

357. शुक्ल लेश्या उपशान्त मोह गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	उपशान्त मोह
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	उपशांत संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	अवेद
11.	कषाय	अकषाय (उपशान्त कषाय)
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	यथाख्यात चारित्र
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (उपशम, क्षायिक सम्यक्त्व)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग (4 ज्ञानो. 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	एक शुक्ल ध्यान
22.	आस्रव	9 योग
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	299
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त एक जीव अपेक्षा– ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त*[1]
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीवापेक्षा – निरन्तर
30.	भाव	21 (औद. 4, क्षयो. 12, क्षा.1, औप.2, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	1 साता वेदनीय
33.	उदय	59 (सूक्ष्म लोभ बिना अर्थात् 49 पूर्व की अनुदय एक सूक्ष्मलोभ की व्युच्छित्ति)
34.	सत्त्व	146, 145, 142, 141, 139, 138 पूर्व कथन के अनुसार 146 (नरकायु, तिर्यांचायु बिना (145) देवायु बिना (142) अनंतानुबंधी बिना (141) अनंतानुबंधी, देवायु बिना (139) दर्शन मोहनीय व अनंतानुबंधी बिना (138) दर्शन मोहनीय 3, अनंतानुबंधी 4, देवायु बिना)
		*[1] एक जीव की अपेक्षा नाना जीवों का काल संख्यात समय अधिक है इसका कारण सुगम है।

357. सुक्कलेस्सा उवसंतमोह गुणट्ठाणं

तेसिं सुक्कलेस्सा उवसंत गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि–एग उवसंत मोह गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, उवसंत सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, अवेदी, उवसंत कसायी, चत्तारि णाणाणि, एग जहाक्खाद संजमो, केवल दंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, सुक्कलेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, एग सुक्कज्झाणं, णव आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा णवणउदि उत्तर बे सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणा जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एगजीवावेक्खा णिरंतरं, इगबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, एगं सादावेयणीयस्स बंधो, ऊणसट्ठि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तरसयं/पणदालुत्तर सयं/बादालुत्तर सयं/इगदालुत्तर सयं/ऊणदालुत्तर सयं अट्ठतीसुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सुक्क लेस्साए उवसंत मोह गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

शुक्ल लेश्या उपशांत मोह गुणस्थान

उन्हीं शुक्ल लेश्या उपशान्त गुणस्थानालाप कहने पर– एक उपशान्त मोह गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छह पर्याप्ति, दस प्राण, उपशांत संज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, अवेदी, अकषायी, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान, एक यथाख्यात संयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, एक शुक्ल ध्यान, नौ आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा–दो सौ निन्यानवे, क्षेत्रापेक्षा–लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन–लोक का असंख्यातवां भाग, काल–नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर–नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व ओघवत् एक जीवापेक्षा निरंतर, इक्कीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक साता वेदनीय का बंध, उनसठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस–एक सौ पैंतालीस, एक सौ ब्यालीस, एक सौ इकतालीस, एक सौ उनतालीस एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार शुक्ल लेश्या में उपशांत मोह गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ नाना जीवों की अपेक्षा काल एक समय कहा है उसका आशय यह है कि बहुत से जीव एक साथ उपशांत मोह को प्राप्त हुए एक समय रहे और मरण को प्राप्त हो गये इस प्रकार एक समय बन गया इसी प्रकार एक जीव का बनेगा। उत्कृष्ट काल बहुत से जीव एक साथ उपशांत मोह गुणस्थान को प्राप्त हुए अन्तर्मुहूर्त रहे पश्चात् सूक्ष्मसांपराय को लौट आये अथवा एक जीव उपशांत मोह को प्राप्त हुआ दूसरे समय में दूसरा तीसरे समय में तीसरा इस प्रकार धारा प्रवाह क्रम परिपाटी से भी उनका उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त ही प्राप्त होता है क्योंकि उपशम श्रेणी में चढने वाले मनुष्य ही होते हैं और मनुष्यों की संख्या संख्यात ही है इसलिए एक–एक क्रम परिपाटी से चढ़ने पर संख्यात समय प्राप्त होते है तथा प्रत्येक मनुष्य उक्त गुणस्थान में अन्तर्मुहूर्त काल तक रहते हैं तो सारे मनुष्यों का काल अन्तर्मुहूर्त होता है। अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा सुगम है एक जीव की अपेक्षा निरंतर इसलिए है क्योंकि लेश्या मार्गणा है एक ही लेश्या में दो बार उपशांत मोह गुणस्थान प्राप्त नहीं किया जा सकता क्योंकि उपशांत मोह से उतर कर अप्रमत्तादि गुणस्थानों में हजारों बार परिवर्तन करके पुन: उपशम श्रेणी चढ़ता है, ऐसा नहीं होता कि सीधा अप्रमत्त गुणस्थान में आया और दुबारा श्रेणी चढ़ जाये अप्रमत्त से प्रमत्त फिर अप्रमत्त इस प्रकार हजारों परिवर्तनों में कई बार लेश्या परिवर्तन हो जाती है। इसलिए शुक्ल लेश्या में उपशांत मोह का अन्तर प्राप्त नहीं होता, क्योंकि अन्तर तभी प्राप्त होता है जब एक ही मार्गणा में दो या दो से अधिक बार आना जाना हो। शेष कथन सुगम है।

✻ अन्तर्मुहूर्त के असंख्यात भेद है असंख्यात अन्तर्मुहूर्त मिलकर भी अन्तर्मुहूर्त होता है।

358. शुक्ल लेश्या क्षीणमोह गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	क्षीण मोह
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	क्षीणसंज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	अवेद
11.	कषाय	क्षीणकषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	यथाख्यात चारित्र
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग
21.	ध्यान	दो शुक्ल ध्यान (प्रथम व द्वितीय)
22.	आस्रव	9 आस्रव (योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	598
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीव व एक जीव की अपेक्षा – ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – ज. एक समय उ. 6 माह एक जीव की अपेक्षा – निरन्तर
30.	भाव	20 (औद. 4 क्षयो. 12 क्षा. 2 पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	1 साता वेदनीय
33.	उदय	57 (पूर्वोक्त 50 अनुदय में वज्रनाराच व नाराच जोड़ने पर क्योंकि वज्रनाराच व नाराच का उदय उपशांत मोह गुणस्थान तक ही पाया जाता है।
34.	सत्त्व	101 – अपूर्वकरण गुणस्थान की 138 में से (36) प्रकृति का क्षय अनिवृत्तिकरण में कर दिया एक सूक्ष्म लोभ का क्षय सूक्ष्मसांपराय में हो गया इसलिए यहाँ एक सौ एक का सत्त्व पाया जाता है।

358. सुक्कलेस्सा खीणमोह गुणट्ठाणं

तेसिं सुक्कलेस्सागद खीणमोह गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि–एग खीणमोह गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, खीण सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, अवेदी, खीण कसायी, केवलणाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, एग जहाक्खादसंजमो, केवल दंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, खइय सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, पिथक्क वित्तक्क एकत्तवितक्क बे सुक्कज्झाणं, णव आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अट्ठणवदिउत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागो, कालो णाणेगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छम्मास एगजीवावेक्खा णिरंतरं, बीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, एगं सादावेयणीयो बंधो, सत्तावण्ण पयडीणं उदओ एवं एगुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सुक्क लेस्साए खीणमोह गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

शुक्ल लेश्या क्षीणमोह गुणस्थान

उन्हीं शुक्ल लेश्यागत क्षीणमोह गुणस्थान आलाप कहने पर– एक क्षीण मोह गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, क्षीण संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, अवेदी, क्षीण कषायी, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान, यथाख्यात संयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, पृथक्त्व वितर्क व एकत्व वितर्क दो शुक्ल ध्यान, नौ आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पाँच सौ अन्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा–लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन–लोक का असंख्यातवां भाग, काल–नाना व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर–नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह माह एक जीवापेक्षा निरंतर, बीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक साता वेदनीय का बंध, सत्तावन प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ एक प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार शुक्ल लेश्या में क्षीणमोह गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ केवल क्षपक श्रेणी ही होती है सभी पद सुगम हैं, कोई विशेषता नहीं है। केवल क्षायिक सम्यक्त्व ही होता है, ध्यान दो होते है, क्योंकि इस गुणस्थान के दो भाग होते हैं प्रथम भाग में पृथक्त्ववितर्क ध्यान होता है द्वितीय भाग में एकत्ववितर्क शुक्ल ध्यान होता है जिससे कर्म प्रकृतियाँ नष्ट कर केवली हो जाता है। इस गुणस्थान में एक साथ पाँच सौ अन्ठानवे जीव हो सकते हैं। इस गुणस्थान का जघन्य उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त पाया जाता है। नाना जीवों की अपेक्षा भी काल अन्तर्मुहूर्त ही होता है कारण का कथन उपशांत मोह के समान जानना चाहिए। अन्तर नाना जीवों का जघन्य से एक समय उत्कृष्ट से छह माह क्योंकि कोई एक जीव क्षीण मोह गुणस्थान वाला हुआ दूसरे समय में कोई जीव क्षीण कषाय वाला नहीं हुआ तीसरे समय में फिर कोई क्षीण कषाय वाला हुआ इस प्रकार जघन्य अन्तर हुआ उत्कृष्ट अन्तर छह माह क्योंकि कोई भी जीव क्षीण कषाय वाला न हो तो छह माह तक नहीं होता, उसके बाद कोई न कोई जीव क्षीण कषायी होगा ही इस प्रकार नाना जीवों का उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त होता है। एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं होता क्योंकि क्षीण मोह गुणस्थान एक बार ही होता है। ग्यारहवें गुणस्थान में उनसठ प्रकृतियों का उदय था यहाँ वज्रनाराच व नाराच संहनन का उदय नहीं पाया जाता क्योंकि वज्रनाराच व नाराच संहनन में उपशम श्रेणी तो चढ़ सकता है किंतु क्षपक श्रेणी वज्रवृषभनाराच संहनन वाला ही चढ़ता है इसलिए यहाँ दो प्रकृतियों को हटा करके सत्तावन प्रकृतियों का उदय ही होता है। सोलह प्रकृतियों (5 ज्ञानावरण, 4 दर्शनावरण, 5 अन्तराय, निद्रा, प्रचला) को नष्ट करता है।

359. शुक्ल लेश्या सयोगीजिन गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	सयोगकेवली	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त	पर्याप्त	अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	4 प्राण	4 प्राण	2 प्राण (आयु, काय बल)
5.	संज्ञा	0 (क्षीण संज्ञा)	–	–
6.	गति	मनुष्यगति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	7 योग (5 सामान्य+ 2 समुद्घात)	पाँच योग (2म.,2व.,औ.का.यो.)	दो योग (औ.मि., का.का.यो.)
10.	वेद	अवेद	–	–
11.	कषाय	क्षीणकषाय	–	–
12.	ज्ञान	केवलज्ञान	–	–
13.	संयम	यथाख्यात चारित्र	–	–
14.	दर्शन	केवलदर्शन	–	–
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व	–	–
18.	संज्ञी	नो संज्ञी, नो असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	2 उपयोग	–	–
21.	ध्यान	सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती शुक्ल ध्यान	–	–
22.	आस्रव	7 योग	5	2
23.	जाति	14 लाख	–	–
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़	–	–
25.	संख्या	898502	–	संख्यात (100)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग व सर्वलोक		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व सर्वलोक		
28.	काल	नाना जीव की अपेक्षा सर्वकाल, एक जीव अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. 8 वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम एक कोटि पूर्व		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर, एक जीवापेक्षा – निरन्तर		
30.	भाव	14 (क्षा.9, औद.3, पा.2)		
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ	उ. 525 धनुष	
32.	बन्ध	1 साता वेदनीय		
33.	उदय	42		
34.	सत्त्व	85, 84, 81, 80		

359. सुक्क लेस्सा सजोगी गुणट्ठाणं

तेसिं सुक्कलेस्सा सजोगी गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि–एग सजोग केवली गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासो, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, चदु पाणा अपज्जत्तेसु बे पाणा, एग खीण सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, सत्त जोगा सामण्णेण सत्तजोगा पज्जत्तेसु पंच जोगा अपज्जत्तेसु समुग्घादेण बे जोगा, अवेदी, खीण कसाय, केवलणाणं, जहक्खाद संजमो, केवल दंसणं, सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, खइय सम्मत्तं, णो सण्णी णो असण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, बे उवजोगा, सुहमक्किया पडिपाडि सुक्कज्झाणं, सत्त आसवा पज्जत्तेसु पंच आसवा अपज्जत्तेसु बे आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अट्ठ लक्ख अट्ठणउदि सहस्स बे उत्तर पंच सयं अपज्जत्तेसु सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व सव्वलोयो, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व सव्वलोयो, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण कोडि पुव्वं देसूणं, अंतरं–णाणेगजीवावेक्खा णिरंतरं, चोद्दस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, एग सादावेयणीओ बंधो, बादाल पयडीणं उदओ एवं पंचासीदि पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सुक्क लेस्साए सजोगी गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

शुक्ल लेश्या सयोगकेवली गुणस्थान

उन्हीं शुक्ल लेश्यागत सयोग केवली गुणस्थान कहने पर–एक सयोगकेवली गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, चार प्राण अपर्याप्तक में दो व एक प्राण, क्षीण संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, सात योग पर्याप्तक में पाँच अपर्याप्तक (समुद्घात) में दो योग, अवेदी, क्षीण कषाय, केवलज्ञान, यथाख्यात संयम, केवल दर्शन, शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, नो संज्ञी नो असंज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, दो उपयोग, सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति शुक्ल ध्यान, सात आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटी, संख्यापेक्षा–आठ लाख अन्ठानवै हजार पाँच सौ दो अपर्याप्तक में सौ, क्षेत्रापेक्षा–लोक का असंख्यातवां भाग व सर्वलोक, स्पर्शन–लोक का असंख्यातवां भाग व सर्वलोक, काल–नाना जीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट आठ वर्ष अंतर्मुहूर्त कम कोटी पूर्व, अंतर एक व नाना जीवापेक्षा निरंतर, चौदह भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक साता वेदनीय का बंध, ब्यालीस प्रकृतियों का उदय एवं पचासी प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार शुक्ल लेश्या में सयोग केवली गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ पर भी सारे पद सुगम हैं इतनी विशेषता है कि यहाँ अपर्याप्त अवस्था औदारिक मिश्र काययोग की अपेक्षा उपचार से कही है ऐसा नहीं है कि वे पर्याप्तियों को पूर्ण करके पर्याप्तक होते हैं। औदारिक मिश्र काययोग में कायबल व आयु ये दो प्राण तथा कार्मण काययोग में केवल एक आयु प्राण होता है। इसी प्रकार पर्याप्तक में (सत्य, अनुभय) दो मनोयोग व सत्य, अनुभय दो वचनयोग तथा औदारिक काययोग इस प्रकार पाँच योग होते हैं, अपर्याप्तक में औदारिक मिश्र व कार्मण काय योग में से एक समय में एक योग होता है। शेष पद सुगम है। क्षेत्र व स्पर्शन दोनों एक जैसे ही हैं क्योंकि वर्तमान में केवली लोक के असंख्यातवें भाग में निवास करते हैं इस अपेक्षा से लोक का असंख्यातवां भाग बनता है, विहारादि की अपेक्षा उनका स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग बनता है। लोक पूरण समुद्घात में केवली सम्पूर्ण लोक में निवास करते हैं वही उनका सर्वलोक क्षेत्र बन जाता है तथा वही स्पर्शन बन जाता है। काल यद्यपि नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल है एक जीव का जघन्य अन्तर्मुहूर्त है क्योंकि किन्ही मुनिराज की आयु अन्तर्मुहूर्त शेष रहने पर केवली हुए और निर्वाण को प्राप्त हुए इस प्रकार जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त प्राप्त हुआ उत्कृष्ट आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम से तात्पर्य कोई मनुष्य एक कोटि पूर्व की आयु वाला आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त की आयु में मुनि बनकर केवल ज्ञान को प्राप्त करता है तो उसका उक्त काल प्राप्त होता है। अन्तर सुगम है। बन्ध, उदय सुगम है। सत्त्व का कथन सुगम है क्योंकि कई बार कहा जा चुका है शेष मर्हदाचार्य भगवन्त के वचनामृत सुगम हैं।

360. अलेश्या अयोगकेवली गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	14
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6
4.	प्राण	एक आयु
5.	संज्ञा	0 (क्षीण संज्ञा)
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	अयोग
10.	वेद	अवेद
11.	कषाय	अकषाय
12.	ज्ञान	केवलज्ञान
13.	संयम	यथाख्यात
14.	दर्शन	केवलदर्शन
15.	लेश्या	अलेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	नो संज्ञी, नो असंज्ञी
19.	आहारक	अनाहारक
20.	उपयोग	2 युगपत्
21.	ध्यान	व्युपरत क्रिया निवर्तीनि
22.	आस्रव	निरास्रव
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	598
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना व एक जीवापेक्षा अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा ज. एकसमय उ. 6 माह, एक जीवापेक्षा निरन्तर
30.	भाव	13
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	अबंध
33.	उदय	12 प्रकृति
34.	सत्त्व	85, 13

360. अलेस्सा अजोगी गुणट्ठाणं

तेसिं अलेस्सागद अजोगी गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि-एग अजोग केवली गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, एग आउ पाणा, खीण सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, अजोगी, अवेदी, अकसायी, केवलणाणं, जहक्खाद संजमो, केवलदंसणं, अलेस्सा, भव्वसिद्धिया, खइय सम्मत्तं, णो सण्णी णो असण्णी, अणाहारिणो, बे उवजोगा जुगपद, विपुरतक्किया णिवत्तीणि सुक्कज्झाणं, णिरासवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अट्णउदिउत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणेग जीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छम्मास एग जीवावेक्खा णिरंतरं, तेरस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, अबंधो, बारस पयडीणं उदओ एवं पंचासीदि व तेरस पयडीणं सच्चं होंति।

इदि लेस्सा मग्गणाए अजोगी गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

अलेश्या अयोग केवली गुणस्थान

उन्हीं अलेश्यागत अयोग केवली गुणस्थानालाप कहने पर- एक अयोग केवली गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, एक आयु प्राण, क्षीण संज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, अयोगी, अपगत वेदी, अकषायी, केवलज्ञान, यथाख्यात संयम, केवल दर्शन, अलेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, नो संज्ञी नो असंज्ञी, अनाहारक, दो उपयोग, व्युपुरत क्रिया निवर्तीनि शुक्ल ध्यान, निरास्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा- पाँच सौ अन्ठानवै, क्षेत्रापेक्षा-लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन-लोक का असंख्यातवां भाग, काल-नाना व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर-नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह माह एक जीवापेक्षा निरंतर, तेरह भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, अबंध, बारह प्रकृतियों का उदय एवं पचासी व तेरह प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार लेश्या मार्गणा में अयोग केवली गुणस्थान समाप्त हुआ।

361. भव्य मार्गणा सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	1–14	1–14	1,2,4,6,13
2.	जीवसमास	14 जीव समास	7 जीव समास	7 जीव समास
3.	पर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति व अपर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति	6,5,4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	3–10 प्राण	4,6,7, 8,9,10 प्राण	3,4,5,6,7,7 प्राण
5.	संज्ञा	4 व क्षीण संज्ञा	–	–
6.	गति	4	–	–
7.	इन्द्रिय	1–5	–	–
8.	काय	त्रस–स्थावर	–	–
9.	योग	15	11	4
10.	वेद	3 व अवेद	–	–
11.	कषाय	25 व अकषाय	–	–
12.	ज्ञान	8	–	6
13.	संयम	7	7	4
14.	दर्शन	4	–	–
15.	लेश्या	6 व अलेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य, अभव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	6	–	5 (सम्यग्मिथ्यात्व बिना)
18.	संज्ञी	संज्ञी व असंज्ञी (नो संज्ञी नो असंज्ञी)	–	–
19.	आहारक	आहारक–अनाहारक	आहारक	अनाहारक, आहारक
20.	उपयोग	12	–	10 (6 ज्ञानो.+4 दर्शनो.)
21.	ध्यान	16		12
22.	आस्रव	57 (25+15+12+5)	53 (25+11+12+5)	46 (25+4+12+5)
23.	जाति	84 लाख		
24.	कुलकोटि	199½ लाख करोड़		
25.	संख्या	भव्य अनंतानंत अभव्य (जघन्य युक्तानंत) जी.का.गा. 560)		
26.	क्षेत्र	सर्वलोक व लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	सर्वलोक व लोक का असंख्यातवाँ भाग		
28.	काल	नाना व एक जीव की अपेक्षा – सर्वकाल		
29.	अन्तर	नाना व एक जीवापेक्षा – निरन्तर		
30.	भाव	53 (औ.21, क्षयो. 18, क्षा.9, औप. 2, पा.3) अपर्या. 49		
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग उ. 1000 योजन		
32.	बन्ध	120 प्रकृति		
33.	उदय	122 प्रकृति		
34.	सत्त्व	148 प्रकृति		

361. भव्व मग्गणा सामण्णं

अह भव्वमग्गणाणुवादेण सामण्णालाव भण्णमाणे अत्थि-एयत्तो चोद्दस गुणट्ठाणाणि अपज्जत्तेसु एग बे चउ छह तेरस पंच गुणट्ठाणाणि, चोद्दस जीवसमासा, छ पंच चउ पज्जत्ती छह पंच चउ अपज्जत्ती, तिण्णिदो दस पाणा पज्जत्तेसु चउ पंच छ अट्ठ णव दस अपज्जत्तेसु ति चउ पंच छ सत्त सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा व खीण सण्णा, चत्तारि गदी, एयत्तो पंचिंदियाणि, छक्काया, पंचदस जोगा पज्जत्तेसु एगारस अपज्जत्तेसु चत्तारि जोगा, तिण्णि वेदा व अवेदी, पणबीस कसाया व अकषायी, अट्ठणाणाणि अपज्जत्तेसु विभंग व मणपज्जयेहिं विणा छण्णाणि, सत्त संजमा अपज्जत्तेसु असंजम सामाइय छेदोवट्ठावणा जहाक्खाद चत्तारि संजमा, चत्तारि दंसणाणि, छल्लेसा व अलेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्वसिद्धिया दोण्णि, छ सम्मत्ता अपज्जत्तेसु मिस्सेण विणा पंच सम्मत्ता, सण्णी असण्णी व णो सण्णी णो असण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, बारस उवजोगा अपज्जत्तेसु दस उवजोगा, सोडस झाणाणि अपज्जत्तेसु बारस झाणाणि, सत्तावण्ण आसवा पज्जत्तेसु तिरेवण्ण अपज्जत्तेसु छादाल आसवा, चउरासीदि लक्ख जादि, अद्धणव णवदि उत्तर सयं लक्ख कोडि कुल कोडीणं, संखावेक्खा भव्व अणंताणंत अभव्व जहण्ण जुत्ताणंत, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व सव्वलोय, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व सव्वलोय, कालो णाणेग जीवावेक्खा सव्वकालो, अंतरं णाणेग जीवावेक्खा णिरंतरं, तिरेवण्ण भावा अपज्जत्तेसु उणदान भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, बीसुत्तर सयं पयडीणं बंधो, बाबीसुत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि भव्वत्त मग्गणासु भव्व जीवाण सामण्णालाव सम्मत्ता।

भव्य मार्गणा सामान्य

अब भव्यमार्गणा के अनुवाद से सामान्य जीवों के आलाप कहने पर-एक से चौदह गुणस्थान अपर्याप्त में एक-दो-चार-छः-तेरह ये पाँच गुणस्थान, चौदह जीव समास, चार पाँच छह पर्याप्ति चार पाँच छह अपर्याप्ति, तीन से दस प्राण पर्याप्त में चार छह सात आठ नौ दस अपर्याप्त में तीन चार पाँच छ सात सात प्राण, चारों संज्ञा व क्षीण संज्ञा, चारों गति, एक से पाँच इन्द्रिय, छहों काय, पंद्रह योग पर्याप्त में ग्यारह अपर्याप्त में चार योग, तीनों वेद व अवेदी, पच्चीस कषाय व अकषायी, आठ ज्ञान अपर्याप्त में कुअवधि मनःपर्यय बिना चार ज्ञान, सात संयम अपर्याप्त में चार संयम, चार दर्शन, छहों लेश्या व अलेश्या, भव्यसिद्धिक अभव्य सिद्धिक दोनों, छहों सम्यक्त्व अपर्याप्त में मिश्र बिना पाँच सम्यक्त्व,संज्ञी असंज्ञी दोनों व नो संज्ञी नो असंज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्त में आहारक अपर्याप्त में दोनों, बारह उपयोग अपर्याप्त में दस उपयोग, सोलह ध्यान अपर्याप्त में बारह ध्यान, सत्तावन आस्रव पर्याप्त में तिरेपन अपर्याप्त में छियालीस आस्रव, चौरासी लाख जाति, एक सौ साढ़े निन्यानवे लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा-भव्य अनंतानंत अभव्य जघन्य युक्तानंत, क्षेत्रापेक्षा -लोक का असंख्यातवां भाग व सर्वलोक, स्पर्शन-लोक का असंख्यातवां भाग व सर्वलोक, काल-नानैकजीवापेक्षा सर्वकाल, अंतर-नाना व एक जीवापेक्षा निरंतर, तिरेपन भाव अपर्याप्त में उनन्चास भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ बीस प्रकृतियों का बंध, एक सौ बाईस प्रकृतियों का उदय और एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार भव्यत्व मार्गणा में भव्य जीवों का सामान्यालाप समाप्त हुआ।

362. अभव्य सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	मिथ्यात्व*1	–	–
2.	जीवसमास	14 जीव समास	7 जीव समास पर्याप्त	7 जीव समास पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति व अपर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति	6,5,4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	3–10 प्राण	4,6,7,8,9,10 प्राण	7,7,6,5,4,3 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	चारों	–	–
7.	इन्द्रिय	एकेन्द्रिय – पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	स्थावर/त्रसकाय	–	–
9.	योग	13 (आहारकद्विक बिना)	10	3
10.	वेद	3 वेद	–	–
11.	कषाय	25 कषाय	–	–
12.	ज्ञान	3 कुज्ञान	3	2 कुज्ञान
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 दर्शन	–	2 दर्शन
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	अभव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक–अनाहारक	आहारक	अनाहारक, आहारक दोनों
20.	उपयोग	5 (3 ज्ञानो.+ 2 दर्शनो.)	–	4 उपयोग (2 ज्ञानो., 2 दर्शनो.)
21.	ध्यान	8	–	–
22.	आस्रव	55 (25+13+12+5)	52 (25+12+5+10)	45 (25+12+5+3)
23.	जाति	84 लाख		
24.	कुलकोटि	199½ लाख करोड़		
25.	संख्या	अनंत (जघन्य युक्तानंत) जी.का.गा. 560)		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग/सर्वलोक		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग /सर्वलोक व कुछ कम 8/14 राजू		
28.	काल	नाना व एक जीव की अपेक्षा – सर्वकाल		
29.	अन्तर	नाना व एक जीवापेक्षा – निरन्तर		
30.	भाव	33 (औद.21 क्षयो.10 पा.2)*2	अपर्याप्त 32 (कुअवधि बिना)	
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग	उ. 1000 योजन	
32.	बन्ध	117 (आहारकद्विक, तीर्थंकर बिना)		
33.	उदय	117 (तीर्थंकर, आहारकद्विक, स.मि., सम्यक्त्व प्रकृति बिना)		
34.	सत्त्व	143 (आहारकद्विक, तीर्थंकर, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व के बिना)*3		

*1 भव्य मार्गणा 1–14 गुणस्थानवत् ही बनेगा

*2 यहाँ पारिणमिक भाव दो ही बनेंगे क्योंकि जहाँ अभव्य है वहाँ भव्यत्व नहीं है और जहाँ भव्यत्व है वहाँ अभव्य नहीं है।

*3 आहारकद्विक, तीर्थंकर, सम्यक्त्व व सम्यग्मिथ्यात्व ये 5 प्रकृतियों का सत्त्व नियम से भव्य को ही होता है अभव्य को नहीं हो सकता।

362. अभव्व–सामण्णं

अह भव्व मग्गणाणुवादेण अभव्व जीवाणं सामण्णालाव भण्णमाणे अत्थि–एग मिच्छत्त गुणट्ठाणं, चोद्दस जीव समासा सत्त पज्जत्तेसु सत्त अपज्जत्तेसु, छ पंच चउ पज्जत्ती छ पंच चउ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस णव अट्ठ सत्त छ चउ अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छ पंच चउ ति पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, एइंदियत्तो पंचिंदियाणि, छक्काय, आहारदुगेण विणा तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि अपज्जत्तेसु बे अण्णाणाणि, एगं असंजमो, बे दंसणाणि, छल्लेस्सा, अभव्वसिद्धिया, मिच्छत्तसम्मत्तं, सण्णी असण्णी दोण्णि, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु चदु उवजोगा, चत्तारि अट्ठ चत्तारि रुद्द अट्ठ झाणाणि, पणवण्ण आसवा पज्जत्तेसु वावण्ण अपज्जत्तेसु पणदाल आसवा, चउरासीदि लक्ख जादी, अद्धणव णवदि उत्तर एग लक्खसयं कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अणंत (जहण्णजुत्ताणंत),*[1] खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व सव्वलोयो, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा व सव्वलोयो, कालो णाणेग जीवावेक्खा सव्वकालो, अंतरं णाणेगजीवावेक्खा णिरंतरं, तेतीस भावा अपज्जत्तेसु बत्तीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सत्तदसुत्तर सयं पयडीणं बंधो, सत्तदसुत्तर सयं पयडीणं उदओ, एवं तिदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि भव व मग्गणासु अभव्व जीवाणं सामण्णालाव सम्मत्ता।

अभव्य –सामान्य

अब भव्यत्व मार्गणा के अनुवाद से अभव्य जीवों के सामान्य आलाप कहने पर–एक मिथ्यात्व गुणस्थान, चौदह जीव समास सात पर्याप्त सात अपर्याप्त, छह–पाँच–चार पर्याप्ति छह–पाँच–चार अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस–नौ–आठ–सात–छह–चार अपर्याप्त में सात–सात–छह–पाँच–चार–तीन प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय, छहों काय, आहारक द्विक बिना तेरह योग पर्याप्त में दस योग अपर्याप्त में तीन योग, तीनों वेद, पच्चीस कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्त में दो अज्ञान, एक असंयम, दो दर्शन, छहों लेश्या, अभव्य सिद्धिक, मिथ्यात्व सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी दोनों, आहारक–अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, पाँच उपयोग अपर्याप्तक में चार उपयोग, चार आर्त चार रौद्र आठ ध्यान, पचपन आस्रव पर्याप्त में बावन अपर्याप्त में पैंतालीस आस्रव, चौरासी लाख जाति, एक सौ साढ़े निन्यानवे लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा–अनंत (जघन्ययुक्तानंत), क्षेत्रापेक्षा–लोक का असंख्यातवां भाग व सर्वलोक, स्पर्शन–लोक का असंख्यातवां भाग कुछ कम 8/14 व सर्वलोक, काल–नाना व एक जीवापेक्षा सर्वकाल, अंतर–नाना व एक जीवापेक्षा निरंतर, तेतीस भाव अपर्याप्त में बत्तीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ सत्तरह प्रकृतियों का बंध, एक सौ सत्तरह प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ तेतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार भव्यत्व मार्गणा में अभव्य जीवों का सामान्यालाप समाप्त हुआ।

नोट :– भव्य मार्गणा का सामान्य आलाप गुणस्थान सामान्यवत् बनेगा तथा भव्य मार्गणा प्रथम गुणस्थान से चौदह गुणस्थानवत् जानना चाहिए विशेष इतना है अभव्य मार्गणा में केवल एक मिथ्यात्व गुणस्थान कहना चाहिए, भव्य में एक से चौदह गुणस्थान कहना चाहिए और कुछ भी विशेषता नहीं है। भव्य में भव्य सिद्धिक अभव्य में अभव्य सिद्धिक कहना चाहिए।

*[1] अभव्य जीव संख्या की अपेक्षा जघन्य युक्तानंत प्रमाण होते हैं भव्य जीव संख्या की अपेक्षा मध्यम अनंतानंत (अभव्यों से अनंतानंत गुणे सिद्ध, सिद्धों से अनंतानंत गुणे संसारी भव्य जीव राशि) शेष सभी पद सुगम हैं कुछ भी व्याख्या करने योग्य नहीं है।

भव्य मार्गणा प्रथम गुणस्थान से अयोगी तक गुणस्थानवत् ही बनेगा विशेषता यह है कि एक भव्य सिद्धिक ही आएगा शेष सुगम है।

363. सम्यक्त्व सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	4–14	4–14	4,6,13
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा, क्षीण संज्ञा	–	–
6.	गति	चारों गति, अगति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	15 योग, अयोगी	11 योग	4 योग
10.	वेद	3 अवेद, अवेदी	–	दो (स्त्री वेद बिना) अवेद
11.	कषाय	21 कषाय, अकषाय	–	20 अकषाय (स्त्री वेद बिना)
12.	ज्ञान	5 ज्ञान	–	4 (मन:पर्यय बिना)
13.	संयम	7 (अ.सा.,छे.,प.,सू.,यथा स.)	–	4 (सू.,प., संयमा.बिना)
14.	दर्शन	4 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या, अलेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो., उपशम)	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी, नो संज्ञी, नो असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	आहारक अनाहारक दोनों
20.	उपयोग	9 (5 ज्ञान + 4 दर्शन)	–	8 (मन: पर्यय ज्ञान बिना)
21.	ध्यान	16 ध्यान	–	12
22.	आस्रव	48 (21 कषाय+12 अवि.+15 योग)	44 (21+12+11 योग)	36 (20+12+4 योग)
23.	जाति	26 लाख		
24.	कुलकोटि	108½ लाख करोड़		
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग अथवा अनंतानंत		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14 राजू, लोक का असंख्यात बहुभाग (प्रतर समुद्घात के समय) सर्व लोक (लोक पूरण समुद्घात)		
28.	काल	नाना जीवापेक्षा – सर्वकाल, एक जीवापेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम 66 सागर		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर, एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन		
30.	भाव	48 (औद.20, क्षयो.15, क्षा.9, औप.2,पा.2) अपर्याप्तक में 43 (औद.19, क्षयो.12, क्षा.9, औप.1.पा.2)		
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उ. 1000 योजन		
32.	बन्ध	77		
33.	उदय	106		
34.	सत्त्व	148		
		मिथ्यात्व, सासादन व मिश्र सम्यक्त्व के आलाप गुणस्थानवत् ही बनेंगे। सम्यक्त्व मार्गणा सामान्य का आलाप गुणस्थान सामान्य के समान ही बनेगा कोई भी फर्क नहीं है इसलिए यहाँ उसे नहीं दे रहे हैं।		

363. सम्मत्त मग्गणा सामण्णं

अह सम्मत्त मग्गणाणं सामण्णालाव भण्णमाणे अत्थि–चउत्तो चोद्दस गुणट्ठाणं अपज्जत्तेसु चार छ तेरस तिण्णि गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छह अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा खीण सण्णा, चत्तारि गदी, पंचिंदियाणि, तस काओ, पंचदस जोगा पज्जत्तेसु एगारस अपज्जत्तेसु चत्तारि जोगा अजोगी य, तिण्णि वेदा अवेदी य अपज्जत्तेसु बे वेदा, इगबीस कसाया य अपज्जत्तेसु बीस कसाया अकषायी, पंच णाणाणि अपज्जत्तेसु मणपज्जयेण विणा चत्तारि णाणाणि, सत्त संजमा अपज्जत्तेसु संजमासंजम विहार सुद्धि सुहुमसाम्परायेहि विणा चत्तारि संजमा, चत्तारि दंसणाणि, छल्लेस्सा व अलेस्सा, भव्वसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी णो सण्णी णो असण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, णवउवजोगा अपज्जत्तेसु अट्ठउवजोगा, सोलह झाणाणि अपज्जत्तेसु बारस झाणाणि, अडदाल असावा अपज्जत्तेसु छत्तीस पज्जत्तेसु चतुदाल आसवा, छब्बीस लक्ख जादी, अद्धअट्ठुत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा अणंता वा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठचोद्दस भागा सव्वलोगो वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकाल एग जीवावेक्खा जहण्णेण अन्तोमुहुत्तं उक्कस्सेण छावट्ठि सायरोवमाणि देसूणाणि, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गल परायट्ठं, अडदाल भावा अपज्जत्तेसु तिदाल भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजणसहस्सं, सत्तसत्तदि पयडीणं बंधो, छउत्तर सयं पयडीणं उदओ, अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सम्मत्त मग्गणासु सामण्णालाव सम्मत्ता।

सम्यक्त्व मार्गणा सामान्य

अब सम्यक्त्व मार्गणा का सामान्यलाप कहने पर–चार से चौदह गुणस्थान अपर्याप्त में (चार–छ–तेरह) तीन गुणस्थान, पर्याप्त–अपर्याप्त दो जीव समास, छह पर्याप्ति–छह अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस प्राण अपर्याप्त में सात प्राण, चारों संज्ञा व क्षीण संज्ञा, चारों गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, पन्द्रह योग पर्याप्त में ग्यारह अपर्याप्त में चार योग व अयोग, तीनो वेद व अवेद अपर्याप्तक में दो वेद, इक्कीस कषाय व अकषाय अपर्याप्तक में बीस कषाय, पाँच ज्ञान अपर्याप्त में मन:पर्यय ज्ञान बिना चार ज्ञान, सात संयम अपर्याप्त में संयमासंयम नो संज्ञी नो असंज्ञी, परिहारविशुद्धि–सूक्ष्मसाम्पराय बिना चार संयम, चारों दर्शन, छहों लेश्या व अलेश्या, भव्यसिद्धिक, तीन सम्यक्त्व संज्ञी व अनंतानंत, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, नौ उपयोग अपर्याप्त में आठ उपयोग, सोलह ध्यान अपर्याप्त में बारह ध्यान, अडतालीस आस्रव पर्याप्त में चवालीस आस्रव अपर्याप्तक में छत्तीस आस्रव, छब्बीस लाख जाति, एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवां भाग क्षेत्रापेक्षा–लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन– लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 8/14 राजू,काल सर्वकाल, अंतर–नाना जीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन अड़तालीस अपर्याप्तक में तेतालीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, सतत्तर प्रकृतियों का बंध, एक सौ छह प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार सम्यक्त्व मार्गणा का सामान्यालाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– सम्यक्त्व मार्गणा में यहाँ मिथ्यात्व, सासादन, मिश्र सम्यक्त्व को छोड़ दिया है क्योंकि सम्यक्त्व मार्गणा का सामान्य आलाप सामान्य गुणस्थानवत् बनता है इसमें कुछ भी विशेषता नहीं है इसलिए इनको छोड़कर अर्थात् मिथ्यात्व का आलाप मिथ्यात्व गुणस्थान के अनुसार सासादन सम्यक्त्व का सासादन गुणस्थानवत् और मिश्र सम्यक्त्व का मिश्र गुणस्थानवत् बनेगा इसलिए वहाँ से जान लेना चाहिए। शेष कथन सुगम है।

364. क्षायिक सम्यक्त्व सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	4–14	4–14	4,6,13
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7	10	7
5.	संज्ञा	4 संज्ञा, क्षीण संज्ञा	–	–
6.	गति	4 अगति	–	–
7.	इन्द्रिय	5	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	15 अयोग	11 (4 म., 4 व., औ.,वै.,आ.)	4 योग (औ.मि.'वै.मि.,आ.मि.,का.)
10.	वेद	3 अवेद	–	2 पुरुष वेद, नपुसंक वेद
11.	कषाय	21 अकषाय	–	20 कषाय
12.	ज्ञान	5 ज्ञान	–	4 (मन:पर्यय बिना)
13.	संयम	7 (असंयम, स., सा., छे., प.,सू.,य.)	–	4 (संयमा., परि.,सू.सा.बिना)
14.	दर्शन	4 दर्शन	–	4 (कृष्ण व नील बिना)
15.	लेश्या	6 लेश्या, अलेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक	–	–
18.	संज्ञी	नो संज्ञी नो असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	दोनों	आहारक	आहारक, अनाहारक दोनों
20.	उपयोग	9, 7, 2	–	सामान्य से 8 उप.(6 उप.2, (मन:प.बिना)
21.	ध्यान	16	–	12
22.	आस्रव	48 (क.21+अवि.12+यो.15)	44 (क.21+यो.11+अवि.12)	36 (क.20+अवि.12+यो.4)
23.	जाति	26 लाख		
24.	कुलकोटि	96 लाख करोड़		
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग या अनंतानंत		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग व सर्वलोक		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग, असंख्यात बहुभाग, 8/14 राजू, सर्वलोक		
28.	काल	नाना जीवापेक्षा – सर्वकाल, एक जीवापेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 33 सागर (अनंतकाल)		
29.	अन्तर	नाना व एक जीवापेक्षा–निरंतर		
30.	भाव	46 (औद.20, क्षयो.14, क्षा.9, पा.2, औप.1) अपर्या. 43 (औद.19, क्षयो.13+क्षा.9+पा.2)		
31.	अवगाहना	जघ. एक हाथ	उ. तीन कोस	
32.	बन्ध	77 (16+15 प्रकृति बिना)		
33.	उदय	106		
34.	सत्त्व	141 (तीन दर्शन मोह., 4 अनंतानुबंधी बिना)		

364. खइय सम्मत्तं सामण्णं

अह खइय सम्मत्ताणुवादेण सामण्णालाव भण्णमाणे अत्थि–चदुओ/चोद्दस एगारस गुणट्ठाणा, अपज्जत्तेसु चउ छ तेरस तिण्णि गुणट्ठाणा, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा खीण सण्णा, चत्तारिगदी अगदिवा, पंचिंदियाणि, तसकाओ, पंचदस जोगा, पज्जत्तेसु ग्यारस अपज्जत्तेसु चत्तारि जोगा अजोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु बे वेदा अवेदो, इगबीस कसाया अपज्जत्तेसु बीस कसाया अकसाया, पंच णाणाणि अपज्जत्तेसु मणपज्जयेण विणा चत्तारि णाणाणि, सत्त संजमा अपज्जत्तेसु विहार सुद्धि संजमासंजम सुहुमसांपराय विणा चत्तारि संजमा, चत्तारि दंसणाणि, छल्लेस्सा अपज्जत्तेसु चत्तारि लेस्सा अलेस्सा, भव्वसिद्धिया, खइय सम्मत्तं, सण्णी णो सण्णी णो असण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, णवसत्त बे उवजोगा*[1] अपज्जत्तेसु अट्ठ बे उवजोगा, सोलह झाणाणि अपज्जत्तेसु बारस झाणाणि, अट्ठदाल आसवा पज्जत्तेसु चदुदाल अपज्जत्तेसु छत्तीस आसवा, छब्बीस लक्ख जादी, छण्णउदि लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखोवेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा व अणंताणंत*[2] सिद्ध जीवावेक्खा अणंताणंत संसारी जीवावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व सव्वलोयो, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा असंखेज्ज बहु भागो सगट्ठाणं लोयस्स*[3] असंखेज्जदि भागा पदर सम्मुग्घादेण लोयस्स असंखेज्जदि बहु भागो विहार वेयणा वेगुव्विया कसायावेक्खा अट्ठचोद्दस भागा वा देसूणा लोग पूरण समुग्घादे सव्वलोयो, कालो णाणा जीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, अंतरं णाणेग जीवावेक्खा णिरंतरं, छादाल भावा अपज्जत्तेसु तिदाल भावा, जहण्णमवगहणं एग हत्थं उक्कस्सेण तिण्णि कोसाणि, सत्तसत्तदि पयडीणं बंधो, छ उत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं इगदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सम्मत्त मग्गणासु खइय सम्मत्त सामण्णालाव सम्मत्ता।

क्षायिक सम्यक्त्व सामान्य

अब क्षायिक सम्यक्त्व के अनुवाद से सामान्यालाप कहने पर–चार से चौदह ग्यारह गुणस्थान अपर्याप्त में चार छह तेरह तीन गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस अपर्याप्त में सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, पन्द्रह योग पर्याप्त में ग्यारह अपर्याप्त में चार योग, तीनों वेद अपर्याप्तक में पुरुष नपुंसक दो वेद, इक्कीस कषाय पर्याप्तक में बीस कषाय, पाँच ज्ञान अपर्याप्तक में मन: पर्यय बिना चार ज्ञान, सातों संयम अपर्याप्तक में संयमासंयम परिहार विशुद्धि सूक्ष्मसांपराय बिना चार संयम, चारों दर्शन, छहों लेश्या अपर्याप्तक में कापोत पीत पदम शुक्ल चार लेश्यायें, भव्य सिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, नौ–सात–दो उपयोग अपर्याप्त में आठ और दो उपयोग, सोलह ध्यान अपर्याप्तक में बारह ध्यान, अड़तालीस आस्रव पर्याप्त में चवालीस अपर्याप्त में सैंतीस आस्रव, छब्बीस लाख जाति, छियानवे लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा–पल्योपम का असंख्यातवां भाग या अनंतानंत क्षेत्रापेक्षा–लोक का असंख्यातवां भाग व सर्वलोक, स्पर्शन–लोक का असंख्यातवां भाग–असंख्यात बहु भाग 8/14 राजू व सर्वलोक, काल–नाना जीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक तेतीस सागर (सादि अनंत), अंतर–नाना व एक जीवापेक्षा निरंतर, छियालीस भाव अपर्याप्तक में चवालीस भाव, जघन्यावगाहना एक हाथ उत्कृष्ट तीन कोश, सतत्तर प्रकृतियों का बंध, एक सौ छह प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ इकतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार सम्यक्त्व मार्गणा में क्षायिक सम्यक्त्व का सामान्यालाप समाप्त हुआ।

---

*[1] सामान्य से 6 से 12 गुणस्थान तक 7 उपयोग तेरहवें गुणस्थान में 2 उपयोग होते हैं।

*[2] सिद्धजीव राशि की अपेक्षा अनंतानंत संसारी जीव की अपेक्षा पल्योपम का असंख्यातवां भाग।

*[3] स्वस्थान की अपेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग प्रतर समुद्घात की अपेक्षा लोक का असंख्यात बहुभाग विहार–वेदना–विक्रिया–कषाय की अपेक्षा कुछ कम 8/14, लोक पूरण समुद्घात की अपेक्षा सर्वलोक।

विशेषार्थ :– क्षायिक सम्यक्त्व के साथ अपर्याप्त अवस्था में कृष्ण, नील लेश्याऐं नहीं होती क्योंकि यदि वह तिर्यंच गति में जाता है तो कापोत लेश्या रहती है। नरक में प्रथम नरक तक ही जाता है देवगति में कल्पवासी देवों में उत्पन्न होता है इसी प्रकार मनुष्यों में कर्मभूमि में जन्म लेता है तो देवगति व नरक गति से मनुष्यों में आता है उस समय वही लेश्या रहती है जो वहां थी अत: उक्त कथन बन जाता है। ध्यान भी अपर्याप्त अवस्था में बारह ही होते हैं क्योंकि चतुर्थ गुणस्थान में दस छटवे में सात आगे तेरहवे गुणस्थान में अपर्याप्त अवस्था में कोई ध्यान नहीं पाया जाता। अत: 4 आर्त 4 रौद्र 4 धर्मध्यान इस प्रकार बारह ध्यान कहे हैं।

365. क्षायिक सम्यक्त्व असंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	असंयत गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10	7
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	चारों गति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	13 योग (आहारकद्विक काययोग बिना)	10	3
10.	वेद	3 वेद	–	2 (पुरुष वेद, नपुसंक वेद)
11.	कषाय	21 कषाय	–	20 कषाय
12.	ज्ञान	3 ज्ञान	–	–
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	3 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	4 लेश्या (कृष्ण, नील के बिना)
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक		
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	दोनों	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	6 (3 ज्ञानो. + 3 दर्शनो.)	–	–
21.	ध्यान	10 ध्यान	–	–
22.	आस्रव	46 (21+13+12)	43 (21+12+10)	35 (20+12+3)
23.	जाति	26 लाख		
24.	कुलकोटि	96 लाख करोड़		
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवापेक्षा – सर्वकाल एक जीव अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 33 सागर		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर एक जीवापेक्षा ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक एक पूर्व कोटि		
30.	भाव	34 (औद.20, क्षयो.11, क्षा.1, पा.2) अपर्याप्तक में 31 (औद.17, क्षयो.11, पा.2 क्षा.1)		
31.	अवगाहना	जघ. एक हाथ	उ. तीन कोस (भोगभूमि में)	
32.	बन्ध	77 (16+25 = 41 प्रकृति बिना)		
33.	उदय	103		
34.	सत्त्व	141 (4 अनंतानुबंधी, तीन दर्शन मोहनीय की)		
		[*1] नोट–सर्वार्थसिद्धि से आने वाला जीव आयु में वर्ष पृथक्त्व काल शेष रहने पर नियम से संयम को प्राप्त हो ही जाता है। [*2] तीर्थंकर के जीवन काल में वर्ष पृथक्त्व काल शेष रहने पर उन्हें, केवलज्ञान हो ही जाता है।		

365. खइय सम्माइट्ठि असंजदो गुणट्ठाणं

तेसुं खइय सम्मत्तं असंजदो जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि–एग असंजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाय, तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु णवुंसय पुरिस बे वेदा, इगबीस कसाया अपज्जत्तेसु बीस कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, केवल दंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, छल्लेस्सा अपज्जत्तेसु चदु लेस्सा, भव्वसिद्धिया, खइय सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, छ उवजोगा, दस झाणाणि, छादाल आसवा पज्जत्तेसु तिदाल अपज्जत्तेसु पणतीस आसवा, छब्बीस लक्ख जादी, छण्णउदि लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणा जीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, अंतरं णाणा जीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पुव्व कोडीणं देसूणाणि, चउतीस भावा अपज्जत्तेसु इगतीस भावा, जहण्णमवगहणं एग हत्थं उक्कस्सेण तिण्णि कोसाणि, सत्तसत्तदि पयडीणं बंधो, तिउत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं इगदाल उत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सम्मत्त मग्गणासु असंजद खइय सम्माइट्ठि गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

क्षायिक सम्यक्त्व असंयत गुणस्थान

उन्हीं क्षायिक सम्यक्त्वी असंयत जीवों के आलाप कहने पर एक असंयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस अपर्याप्त में सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीनों वेद अपर्याप्तक में पुरुष नपुंसक दो वेद, इक्कीस कषाय अपर्याप्तक में बीस कषाय, तीन ज्ञान, असंयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, छहों लेश्या अपर्याप्तक में कृष्ण नील बिना चार लेश्या, भव्व सिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, छह उपयोग, दस ध्यान, छ्यालीस आस्रव पर्याप्त में तेतालीस अपर्याप्तक में पैतीस आस्रव, छब्बीस लाख जाति, छियानवे लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा–पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा–लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन–लोक का असंख्यात वा भाग कुछ कम 8/14 राजू, काल–नाना जीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक तेतीस सागर, अंतर–नाना जीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम एक कोटि पूर्व, चौंतीस भाव अपर्याप्तक में इकतीस भाव, जघन्यावगाहना एक हाथ उत्कृष्ट तीन कोस, सतत्तर प्रकृतियों का बंध, एक सौ तीन प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ इकतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार सम्यक्त्व मार्गणा में असंयत क्षायिक सम्यग्दृष्टि गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– स्पर्शन स्वस्थान की अपेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग विहार, वेदना, विक्रिया, कषाय समुद्घात की अपेक्षा कुछ कम आठ राजू जिसका व्याख्यान पूर्व में किया ही है। मारणांतिक व उपपाद लोक का असंख्यातवां भाग है क्योंकि क्षायिक सम्यग्दृष्टि असंयत गुणस्थान वाला जीव कर्म भूमि का मनुष्य ही होता है और मनुष्यों का स्पर्शन लोक का असंख्यात वा भाग ही बनता है और तिर्यंच है तो भोग भूमि वाला है जो मरण कर सौधर्म आदि विमानों में ही उत्पन्न होता है। अत: उनका स्पर्श भी उक्त प्रमाण ही बनताहै। काल कुछ अधिक तेतीस सागर पूर्व की तरह कोई संयमी मनुष्य एक समय कम तेतीस सागर की आयु वाले देवों में उत्पन्न हुआ, वहाँ से च्युत हो एक कोटि पूर्व की आयु वाले मनुष्यों में उत्पन्न हो सारा जीवन असंयम के साथ रहा जीवन के अन्तिम अन्तर्मुहूर्त में संयमी होकर श्रेणी आरोहण कर केवली हो निर्वाण को प्राप्त किया इस प्रकार उक्त काल प्राप्त हुआ।

शंका – उक्त जीवों को पूरे तेतीस सागर की आयु वाले देवों में उत्पन्न क्यों नहीं कराया ?

समाधान– नहीं क्योंकि सर्वार्थसिद्धि से आने वाला जीव अधिक समय तक असंयमी नहीं रह सकता इसलिए नहीं कराया। अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा सुगम है एक जीव का जघन्य अन्तर्मुहूर्त भी सुगम है। एक जीव का उत्कृष्ट कहते समय निम्न कथन कहते है कोई एक कोटि पूर्व की आयु वाला मनुष्य आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त के पश्चात् क्षायिक सम्यक्त्व को प्राप्त कर अन्तर्मुहूर्त के पश्चात् संयमासंयम अथवा संयम को प्राप्त हुआ सारा जीवन संयम के साथ रहा अन्त में मृत्यु के समय असंयमी हो गया इस प्रकार आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम एक कोटि पूर्व उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त हुआ। शेष कथन सुगम है कुछ भी विशेष नहीं है।

शंका– तेतीस सागर की आयु वाले देवों में मात्र सकल संयमी ही जा सकते हैं फिर यहाँ असंयमी मनुष्य क्यों कहा ?

समाधान–वह था तो सकल संयमी किन्तु मरण के समय संयम के च्युत हो जाता हैं क्योंकि जैसे ही आत्मा शरीर का त्याग करती है असंयमी हो जाती है इस विवक्षा से असंयमी मनुष्य कहा है।

366. क्षायिक सम्यक्त्व संयतासंयत गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	संयतासंयत गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	एक मनुष्य गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	17 कषाय
12.	ज्ञान	3 ज्ञान
13.	संयम	संयमासंयम
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	3 शुभ लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	6 उपयोग
21.	ध्यान	11
22.	आस्रव	37 आस्रव (17+11+9)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	संख्यात (13 करोड़) सामान्य से (सम्पूर्ण संयतासंयत मनुष्यों का संख्यातवां भाग)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीवापेक्षा– सर्वकाल, एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछकम एक पूर्व कोटि
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर, एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 33 सागर
30.	भाव	28 (औद. 13, क्षयो. 12, क्षा. 1, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	67
33.	उदय	83
34.	सत्त्व	139

366. खइय सम्मत्तं संजमासंजम गुणट्ठाणं

तेसुं खइय सम्मत्ते देससंजदो गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि–एग संजदासंजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, एग मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, सत्तदस कसाया, तिण्णि णाणाणि, एग संजमासंजमो, तिण्णि दंसणाणि, तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, खइय सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, छ उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द ति धम्म एगारस झाणाणि, सत्ततीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा तेरस कोडि, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पुव्व कोडीणं देसूणाणि, अंतरं णाणा जीवावेक्खा णिंरतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणणि सादिरेयाणि, अट्ठबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, सडसट्ठि पयडीणं बंधो, तिअसीदि पयडीणं उदओ एवं ऊणदालुत्तर सयं पयडीणं सच्च होंति।

इदि सम्मत्त मग्गणासु खइय सम्मत्ते देससंजद गुणट्ठाण सम्मत्ता।

क्षायिक सम्यक्त्व संयमासंयम गुणस्थान

उन्हीं क्षायिक सम्यक्त्वी देशसंयत जीवों के गुणस्थानालाप कहने पर – एक संयतासंयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त एक जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, एक मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, तीन वेद, सत्रह कषाय, तीन ज्ञान, एक संयमासंयम, तीन दर्शन, तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, ग्यारह ध्यान, सैंतीस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा तेरह करोड़, क्षेत्रापेक्षा–लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन–लोक का असंख्यातवां भाग, काल–नाना जीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम एक कोटि पूर्व, अंतर– नाना जीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक तेतीस सागर, अट्ठाईस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, सड़सठ प्रकृतियों का बंध, तेरासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ उनतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार सम्यक्त्व मार्गणा में क्षायिक सम्यक्त्व में संयमासंयम गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ केवल मनुष्यगति इसलिए है कि क्षायिक सम्यग्दृष्टि यदि तिर्यंच गति में जन्म लेता है तो भोगभूमि में ही जायेगा, और भोगभूमि में संयमासंयम होता नहीं है, कर्मभूमि में तिर्यंच क्षायिक सम्यग्दृष्टि होता नहीं है इसलिए केवल मनुष्य गति है। संख्या जो बताई है वह सामान्य की अपेक्षा है इसमें क्षयोपशम व उपशम तीनों प्रकार के सम्यक्त्वी सम्मिलित हैं अत: क्षायिक सम्यक्त्व वाले सम्पूर्ण देश संयमी मनुष्यों का संख्यातवां भाग होता है। अंतर पूर्व गुणस्थान का जो काल कह आये हैं उसमें अन्तर्मुहूर्त और जोड़ने पर संयमासंयम गुणस्थान का अन्तर प्राप्त होता है। काल भी असंयत गुणस्थान में जो अन्तर कहा है उतना समझना चाहिए यानि कोई पूर्व कोटि प्रमाण आयु वाला मनुष्य आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त काल के पश्चात् क्षायिक सम्यक्त्व को प्राप्त कर एक अन्तर्मुहूर्त में ही संयतासंयम को प्राप्त हुआ सारा जीवन संयतासंयत रहा अन्त में मरण कर असंयत हो गया इस प्रकार आठ वर्ष तीन अन्तर्मुहूर्त कम एक पूर्व कोटि वर्ष प्रमाण काल प्राप्त हुआ।

367. क्षायिक सम्यक्त्व प्रमत्त संयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	प्रमत्त संयत गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	एक मनुष्य गति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	11 योग	10 योग	1 योग (आहारक मिश्रकाय योग)
10.	वेद	तीनों	–	एक पुरुष वेद
11.	कषाय	13 कषाय	–	11 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान	–	3 ज्ञान
13.	संयम	3 (सा., छेदो., परि.)	–	2 (सा.,छे.)
14.	दर्शन	3 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	3 शुभ लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक	–	–
20.	उपयोग	7 उपयोग	–	6 उपयोग
21.	ध्यान	7 ध्यान	–	–
22.	आस्रव	24	23	12
23.	जाति	14 लाख	–	–
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़	–	–
25.	संख्या	संख्यात (59393206)	संख्यात	संख्यात (सत्ताईस)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
28.	काल	नाना जीवापेक्षा – सर्वकाल एक जीवापेक्षा– ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 33 सागर		
30.	भाव	29 (औद.13, क्षयो.13, क्षा.1, पा.2) अपर्याप्तक–26 (औद.11, क्षयो.12, क्षा.1,पा.2)		
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ	उ. 525 धनुष	
32.	बन्ध	63		
33.	उदय	80		
34.	सत्त्व	138/139 (देवायु सहित 139, देवायु रहित 138)		

367. खइय सम्मत्तं पमत्तसंजद गुणट्ठाणं

तेसुं खइय सम्मत्तं संजदो जीवाणामालव भण्णमाणे अत्थि–एग पमत्त संजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, दस पाणा अपज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, एग मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, एगारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु एगं आहार मिस्स काय जोगा, दव्वेण एग पुरिसवेदो भावेण तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु एग पुरिस वेदो, तेरस कसाया अपज्जत्तेसु ग्यारस कसाया, चत्तारि णाणाणि अपज्जत्तेसु मणपज्जयेण विणा तिण्णि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा विहार सुद्धि तिण्णि संजमा अपज्जत्तेसु विहार सुद्धिओ विणा बे संजमा, तिण्णि दंसणाणि, तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, खइय सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा अपज्जत्तेसु छ उवजोगा, सत्त झाणाणि, चउबीस आसवा पज्जत्तेसु तेबीस अपज्जत्तेसु बारस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं,संखावेक्खा पंच कोडि तिणउदि लक्ख अट्ठणउदि सहस्स छ उत्तर बे सयं संखेज्ज अपज्जत्तेसु सत्तावीस, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणा जीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं अपज्जत्तेसु जहण्णुक्स्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणा जीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, उणतीस भावा अपज्जत्तेसु छब्बीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्त पंच सयं धणू, तिसट्ठि पयडीणं बंधो, असीदि पयडीणं उदओ एवं अट्ठतीसुत्तर सयं व ऊणदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि खइय सम्मत्ते पमत्तसंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

क्षायिक सम्यक्त्व प्रमत्तसंयत गुणस्थान

उन्हीं क्षायिक सम्यक्त्व प्रमत्त संयत जीवों के आलाप कहने पर– एक प्रमत्त संयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, दस प्राण सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, एक मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रस काय, ग्यारह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में एक आहारक मिश्र काय योग, द्रव्य से एक पुरुष वेद भाव से तीनो वेद अपर्याप्तक में एक पुरुष वेद, तेरह कषाय अपर्याप्तक में ग्यारह कषाय, चार ज्ञान अपर्याप्त में मन:पर्यय बिना तीन ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना परिहार विशुद्धि तीन संयम अपर्याप्तक में परिहार विशुद्धि बिना दो संयम, तीन दर्शन, तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञी, एक आहारक, सात उपयोग अपर्याप्त में छह उपयोग, सात ध्यान, चौबीस आस्रव पर्याप्त में तेईस अपर्याप्त में बारह आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा–पाँच करोड़ तेरानवे लाख अन्ठानवे हजार दो सौ छह अपर्याप्तक में सत्ताईस, क्षेत्रापेक्षा–लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन–लोक का असंख्यातवां भाग, काल–नाना जीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा–जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त अपर्याप्तक में जघन्य व उत्कृष्ट अन्तमुहूर्त, अंतर–नाना जीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक तेतीस सागर, उनतीस भाव अपर्याप्त में छब्बीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, तिरेसठ प्रकृतियों का बंध, अस्सी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अडतीस व एक सौ उनतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार क्षायिक सम्यक्त्व में प्रमत्त संयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ पर सभी पद सुगम हैं क्योंकि पहले भी कहा जा चुका है वहाँ से भी जान लेना चाहिए आस्रव का कथन करते हैं आस्रव यहाँ कषाय और योग से होता है कषायों में भी संज्वलन की चार और नौ नो कषाय इस प्रकार तेरह तथा चार मनोयोग, चार वचन योग, औदारिक,आहारक, आहारक मिश्र इस प्रकार ग्यारह योग, कुल=चौबीस आस्रव पर्याप्तक में तेबीस आस्रव क्योंकि आहारक मिश्र नहीं पाया जाता। अपर्याप्तक में ग्यारह कषाय क्योंकि अपर्याप्तक में आहारक मिश्र काय योग ही होता है और आहारक शरीर केवल पुरुष वेद में ही होता है स्त्री–नपुंसक वेद में नहीं। अत: दो नो कषाय कम हो गई। इसी प्रकार योग में भी केवल एक मिश्र काय योग है अत: सात नो कषाय चार संज्वलन और एक योग इस प्रकार बारह आस्रव होते हैं। संख्या अपेक्षा यहाँ जो संख्या का कथन किया है वह गुणस्थानवत् किया है किन्तु सम्यक्त्व मार्गणा देखें तो संख्यात जीव ही क्षायिक सम्यग्दृष्टि प्रमत्त संयत होते हैं। क्योंकि सामान्य से जो संख्या कही है उसमें उपशम क्षयोपशम व क्षायिक तीनों सम्यग्दृष्टि सम्मिलित हैं, अत: सामान्य संख्या में संख्यात का भाग देने पर एक भाग प्रमाण क्षायिक सम्यक्त्वी प्रमत्त संयत गुणस्थानवर्ती हैं। परन्तु कितने हैं ऐसा उपदेश वर्तमान समय में नहीं पाया जाता । शेष कथन सुगम है। काल जघन्य काल एक समय मरण की अपेक्षा समझना चाहिए क्योंकि कोई अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती जीव परिणाम वशात् प्रमत्त संयत हुआ एक समय रहा और द्वितीय समय में मरकर देवों में असंयत गुणस्थानवर्ती हो गया उत्कृष्ट काल सुगम है। अन्तर का कथन संयतासंयत के समान कहना चाहिए शेष कथन सुगम है।

368. क्षायिक सम्यक्त्व अप्रमत्त संयत गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	अप्रमत्त संयत गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 (आहार संज्ञा बिना)
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद (द्रव्य से पुरुष वेद)
11.	कषाय	13 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	3 (सा., छेदो., परिहार विशुद्धि)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	भाव से 3 शुभ लेश्या, द्रव्य से 6 लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग (चार ज्ञानो. + 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान
22.	आस्रव	22 (योग 9 + 13 कषाय)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	संख्यात
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीवापेक्षा - सर्वकाल, एक जीवापेक्षा- ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा - निरन्तर, एक जीवापेक्षा - ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 33 सागर
30.	भाव	29 (औद.13+ क्षयो.13 + क्षा.1+पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	59
33.	उदय	76
34.	सत्त्व	138/139 (139 देवायु सहित, 138 देवायु रहित))

368. खइय सम्मत्तं अपमत्तसंजद गुणट्ठाणं

तेसुं खइय सम्मत्तं अपमत्त जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि–एग अपमत्तसंजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, आहारेण विणा तिण्णि सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, दव्वेण पुरिस वेदो भावेण तिण्णि वेदा, तेरस कसाया, केवलणाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा विहार सुद्धि तिण्णि संजमा, केवल दंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, खइय सम्मत्तं, सण्णी,आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्मज्झाणाणि, बाबीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुल कोडीणं, संखावेक्खा बे कोडि छण्णउदि लक्ख णवणउदि सहस्सं तिउत्तर सयं संखेज्ज, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एग जीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, ऊणतीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं, उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच संय धणू, ऊणसट्ठि पयडीणं बंधो, छ सत्तदि पयडीणं उदओ एवं ऊणदालुत्तर सयं व अडतीसुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि खइय सम्मत्ते अपमत्तसंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

क्षायिक सम्यक्त्व अप्रमत्तसंयत

उन्हीं क्षायिक सम्यक्त्व अप्रमत्त जीवों के आलाप कहने पर–एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, आहार बिना तीन संज्ञाएँ, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग द्रव्य से पुरुष वेद भाव से तीनों वेद, तेरह कषाय, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना परिहार विशुद्धि तीन संयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, द्रव्य से छहों लेश्या, भाव से तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्म ध्यान, बाईस आस्रव, चौदह लाख जाती, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा–दो करोड़ छियानवे लाख निन्यानवे हजार एक सौ तीन (संख्यात) क्षेत्रापेक्षा–लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन–लोक का असंख्यातवां भाग, काल–नाना जीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर–नाना जीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक तेतीस सागर, उनतीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, उनसठ प्रकृतियों का बंध, छियत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ उनतालीस व एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार क्षायिक सम्यक्त्व में अप्रमत्त संयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ सभी पद सुगम हैं कुछ भी व्याख्यान करने योग्य नहीं है काल में इतनी विशेषता है कि कोई उपशम श्रेणी वाला अपूर्वकरण से अप्रमत्त संयत हुआ एक समय रहा और मरण कर असंयत देवों में उत्पन्न हो गया अथवा प्रमत्त संयत अप्रमत्त संयत हुआ और एक समय रहा द्वितीय समय में मरकर असंयत देवों में उत्पन्न हो गया इस प्रकार काल प्राप्त होता है शेष सुगम है।

369. क्षायिक–सम्यग्दृष्टि अपूर्वकरण गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	अपूर्वकरण गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	द्रव्य–पुरुष वेद, भाव से 3 वेद
11.	कषाय	13 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	2 (सा., छे.)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग (4ज्ञानो. + 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान अथवा एक शुक्ल ध्यान
22.	आस्रव	22 (13 कषाय 9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	संख्यात (897) उपशामक–299, क्षपक – 598
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	उपशामक–नाना व एक जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक–नाना व एक जीवापेक्षा– ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उपशामक–नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा–ज. एक समय उ. कुछ अधिक 33 सागर क्षपक–नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. 6 माह एक जीव–निरन्तर
30.	भाव	28 (औद.11, क्षयो.12, क्षा.2, पा.2, औ.1) उपशामक में (27) क्षपक में (27)*
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	58 – (21 प्रकृति बिना–अप्रमत्त गुणस्थान की 20 प्रकृति अबन्ध+1 व्युच्छिन्न (देवायु के बिना)
33.	उदय	72 – (अप्रमत्त गुणस्थान की 31 प्रकृति अनुदय वाली 3 व्युच्छित्ति वाली इस प्रकार 34 के बिना)
34.	सत्त्व	138/139 – उपशम क्षपक–138
		* उपशामक में 27 भाव पाये जाते हैं क्योंकि सम्यक्त्व एक क्षायिक है, उपशम चारित्र है इसी प्रकार क्षपक श्रेणी में जानना चाहिए विशेषता यह है कि यहाँ क्षायिक चारित्र है।

369. खइयसम्मत्त अपुव्वयरण गुणट्ठाणं

तेसुं खइय सम्मत्तं अपुव्वयरण जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अपुव्वयरण गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, तिण्णि सण्णा, एगं मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, दव्वेण पुरिस वेदो भावेण तिण्णि वेदा[*1], तेरस कसाया, केवल णाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, केवलदंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, खइय सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्म एग सुक्कज्झाणाणि वा, बाबीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चौद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा संखेज्ज सत्तणउदि उत्तर अट्ठसयं, उवसामगेसु णवणउदिउत्तर बेसयं खवगेसु ओघं अट्ठणउदि उत्तर पंचसयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो उवसामगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेग जीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि सादिरेयाणि[*2] खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छम्मास एगजीवावेक्खा णिरंतरं, अट्ठबीस भावा उवसामगेसु सत्तवीस भावा खवगेसु सत्तवीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, अट्ठावण्ण पयडीणं बंधो, बेसत्तदि पयडीणं उदओ एवं ऊणदालुत्तर[*3] सयं व अट्ठतीसुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि खइय सम्मत्ते अपुव्वयरण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

क्षायिक सम्यक्त्व अपूर्वकरण गुणस्थान

उन्हीं क्षायिक सम्यक्त्व अपूर्वकरण जीवों के अलाप कहने पर – एक अपूर्वकरण गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, तीन संज्ञाएँ, एक मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौयोग, द्रव्य से पुरुष वेद भाव से तीनों वेद, तेरह कषाय, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्म अथवा एक शुक्ल ध्यान, बाईस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा आठ सौ संतानवे (संख्यात) उपशामक दो सौ निंन्यानवे क्षपक (कुल पाँच सौ अन्ठानवे), क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग, काल – उपशामक नाना व एकजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपक नाना व एकजीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एकजीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक तेतीस सागर क्षपक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह माह एक जीवापेक्षा निरंतर, अट्ठाईस भाव उपशामक में सत्ताईस क्षपक में सत्ताईस, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, अट्ठावन प्रकृतियों का बंध, बहत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ उनतालीस व एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार क्षायिक सम्यक्त्व में अपूर्वकरण गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– [*1]क्षायिक सम्यग्दृष्टि का यद्यपि जन्म केवल एक पुरुष वेद के साथ ही होता है नरक गति को छोड़कर शेष गतियों में पुरुष वेद के साथ ही जन्म लेता है किंतु यहाँ तो मनुष्य गति है और आठवां गुणस्थान है अत: उसका जन्म तो पुरुष वेद में ही होता है किंतु कोई मिथ्यादृष्टि स्त्रीवेद अथवा नपुंसक वेद के साथ जन्मा बाद में उसने केवली, श्रुत केवली के पादमूल में क्षायिक सम्यक्त्व को प्राप्त किया पश्चात् सकल संयमी हो श्रेणी आरोहण कर अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती हो गया। यह कथन भाव वेद का है द्रव्य से तो मात्र एक पुरुष वेद ही होता है। संख्या का कथन करने पर क्षायिक सम्यग्दृष्टि उपशामक कितने होते हैं तो संख्यात होते हैं विशेषता से कोई कथन उपलब्ध नहीं होता है। क्षपक जीव ओघ के समान है क्योंकि क्षपक श्रेणी वाले क्षायिक सम्यग्दृष्टि ही होते हैं और उनकी संख्या मूल में दी ही है।

अन्तर निकालते समय उपशामक नाना जीवों का सुगम है। एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर भी सुगम है। उत्कृष्ट अन्तर कहते हैं कोई एक मनुष्य एक कोटि पूर्व की आयु लेकर उत्पन्न हुआ आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त के बाद प्रमत्त संयत हुआ पुन: प्रमत्त अप्रमत्त में सहस्रों परिवर्तनों को करके उसी काल में क्षायिक सम्यग्दृष्टि हुआ तथा उपशम श्रेणी के योग्य विशुद्धि से विशुद्ध हो अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्मसांपराय, उपशांत मोह पुन: सूक्ष्मसांपराय, अनिवृत्तिकरण, अपूर्वकरण को प्राप्त कर अन्तर को प्राप्त हुआ पुन: पूर्व कोटि काल संयम का परिपालन कर अन्त में मरण कर एक समय कम तेतीस सागर की आयु वाले देवों में उत्पन्न हुआ, वहाँ से च्युत हो पूर्व कोटि की आयु वाला मनुष्य हुआ जीवन काल में अन्तर्मुहूर्त अवशिष्ट रह जाने पर अपूर्वकरण गुणस्थान को प्राप्त हुआ।

नोट– इस पृष्ठ का शेष मेटर अगले आलाप के नीचे पृष्ठ पर है।

370. क्षायिक–सम्यग्दृष्टि अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	अनिवृत्तिकरण गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	2 संज्ञा (मैथून, परिग्रह)
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	द्रव्य से पुरुष वेद, भाव से तीन वेद
11.	कषाय	7 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	2 (सा., छे.)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग (4ज्ञानो. + 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान अथवा एक शुक्ल ध्यान
22.	आस्रव	16 (7 कषाय + 9 योग) अंत में ग्यारह
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	संख्यात (897) उपशामक = 299, क्षपक = 598
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	उपशामक–नाना व एक जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक–नाना व एक जीवापेक्षा– ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उपशामक–नाना जीवापेक्षा–ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीवापेक्षा–ज. अन्तर्मुहूर्त उ.कुछ अधिक 33 सागर क्षपक–नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. 6 माह, एक जीवापेक्षा –निरन्तर
30.	भाव	28 (औद.11, मि.12, क्षा.2, औप.1, पा.2) उपशामक = 27 क्षपक = 27
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	22 (8वें गुणस्थान की 21 अबंध 36 प्रकृति की व्युच्छित्ति इस प्रकार 57 प्रकृति बिना)
33.	उदय	66 (40 प्र. अनुदय (8वें गुणस्थान की अनु. 34 प्रकृति+6 हास्यादि की व्युच्छित्ति इस प्रकार 40 प्रकृति बिना)
34.	सत्त्व	क्षपक– 138 गुणस्थानवत् उपशम–138, 139 गुणस्थानवत्

370. खइय सम्मत्तं अणियट्टियरण गुणट्ठाणं

तेसुं खइय सम्मत्त अणियट्टियरण जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अणियट्टियरण गुणट्ठाणं, एग सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, मेहुण परिग्गह बे सण्णा, मणुस्स गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, दव्वेण पुरिस वेदो भावेण तिण्णि वेदा, सत्त कसाया, केवलणाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, केवल दंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, एग सुक्क लेस्सा, भव्व सिद्धिया, खइय सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्म अहवा एग सुक्कज्झाणं, सोलह आसवा अंते एगारस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेकखा सत्तणउदिउत्तर अट्ठ सयं उवसामगेसु णवणउदिउत्तर बे सयं (संखेज्ज) खवगेसु अट्ठणउदि उत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो उवसामगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेगजीवावेक्खा अंतोमुहुत्तं, अंतरं उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सागरोवमाणि सादिरेयाणि खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छम्मास एगजीवावेक्खा णिरंतरं, अट्ठबीस भावा उवसामगेसु सत्तवीस खवगेसु सत्तवीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, बाबीस पयडीणं बंधो, छावट्ठि पयडीणं उदओ एवं अटठतीसुत्तर सयं व ऊणदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि खइय सम्मत्ते अणियट्टियरण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

क्षायिक सम्यक्त्व अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

उन्हीं क्षायिक सम्यक्त्व अनिवृत्तिकरण जीवों के आलाप कहने पर – एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवसमास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, मैथुन परिग्रह दो संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, द्रव्य से पुरुष वेद भाव से तीनों वेद, सात कषाय, केवल ज्ञान बिना चार ज्ञान, सामायिक – छेदोपस्थापना दो संयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्मध्यान अथवा एक शुक्ल ध्यान, सोलह आस्रव अंत में ग्यारह आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा आठ सौ सत्तानवे उपशामक दो सौ निन्यानवे क्षपक पाँच सौ अट्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग, काल – उपशामक नाना व एकजीवापेक्षा जघन्य एकसमय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपक नाना व एक जीवापेक्षा अंतर्मुहूर्त, अंतर – उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक तेतीस सागर क्षपक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह माह एक जीवापेक्षा निरंतर, अट्ठाईस भाव उपशामक में सत्ताईस व क्षपकों में सत्ताईस, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, बाईस प्रकृतियों का बंध, छ्यासठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तीस एक सौ उनतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार क्षायिक सम्यक्त्व में अनिवृत्तिकरण गुणस्थान समाप्त हुआ।

इस प्रकार अन्तर प्राप्त हुआ पुनः अनिवृत्तिकरण, सूक्ष्म सांपराय, उपशांत कषाय पुनः सूक्ष्म सांपराय अनिवृत्तिकरण, अपूर्वकरण यहाँ तक अठारह अन्तर्मुहूर्त हो जाते हैं। पुनः अप्रमत्तादि के नौ इस प्रकार आठ वर्ष सत्ताईस अन्तर्मुहूर्त से कम दो कोटि पूर्व अधिक तेतीस सागर उत्कृष्ट अन्तर लब्ध हुआ। इसी प्रकार अनिवृत्तिकरण में जानना चाहिए विशेषता यह है कि वहाँ पच्चीस अन्तर्मुहूर्त सूक्ष्म सांपराय में तेबीस उपशांत कषाय में इक्कीस अन्तर्मुहूर्त कम करना चाहिए।

सत्त्व प्रकृतियों में यदि पूर्व आयु को बाँध लिया है जिसने वह क्षपक श्रेणी नहीं चढ़ सकता मात्र उपशम श्रेणी ही चढता है उसके एक सौ उनतालीस प्रकृतियों का सत्त्व पाया जाता है शेष क्षपक व पूर्व आयु का अबन्धक उपशामक के एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व पाया जाता है। शेष कथन सुगम है।

371. क्षायिक सम्यक्त्व सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	सूक्ष्म साम्पराय
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	1 संज्ञा (परिग्रह)
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	अवेद
11.	कषाय	1 लोभ कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	सूक्ष्म साम्पराय
14.	दर्शन	3 दर्शन (केवलदर्शन बिना)
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग (4ज्ञानो. + 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	एक शुक्ल ध्यान अथवा चार धर्मध्यान
22.	आस्रव	10 (9 योग + एक कषाय)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	897 (उपशामक सामान्य से 299 क्षपक (संख्यात) 598
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	उपशामक–नाना व एक जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक–नाना व एक जीवापेक्षा– ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उपशामक–नाना जीवापेक्षा–ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीवापेक्षा–ज. अन्तर्मुहूर्त उ.कुछ अधिक 33 सागर क्षपक–नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. 6 माह, एक जीवापेक्षा –निरन्तर
30.	भाव	22 (औद.5, क्षयो.12, पा.2, क्षा.2, औप.1) उपशामक–21 क्षपक–21
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	17 (9वें गुणस्थान की अबन्ध 57 प्रकृति 4 संज्वलन कषाय पुरुष वेद) 62 प्रकृति बिना)
33.	उदय	60 (46 प्रकृति 9वें गुणस्थान 40 प्रकृति अनुदय + 6 तीन वेद संज्वलन क्रोध, मान, माया बिना)
34.	सत्त्व	क्षपक– 102 उपशम श्रेणी में–138 या139 गुणस्थानवत्

371. खइय सम्मत्त सुहुमसांपराय गुणट्ठाणं

तेसुं खइय सम्मत्तं सुहुम सांपराय गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि – एग सुहुमसंपराय गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, एग परिग्गह सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, अवेदी, एयं लोह कसाओ, केवल णाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, सुहुसांपराय संजमो, तिण्णि दंसणाणि, एग सुक्क लेस्सा, भव्व सिद्धिया, एग खइय सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, एग सुक्क अहवा चत्तारि धम्मज्झाणाणि, दस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा संखेज्ज सत्तणउदि उत्तर अट्ठसयं उवसामगेसु णवणउदि उत्तर बे सयं खवगेसु अट्ठणउदि उत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो उवसामगेसु णाणेग जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेग जीवावेक्खा जहण्णुक्कस्स अंतोमुहुत्तं, अंतरं उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि सादिरेयाणि खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण छम्मास एग जीवावेक्खा णिरंतरं, बाबीस भावा खवगेसु इगबीस भावा उवसामगेसु इगबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्त पंच सयं धणू, सत्तदस पयडीणं बंधो, सट्ठि पयडीणं उदओ एवं उवसामगेसु ऊणदालुत्तर सयं/अट्ठतीसुत्तर सयं खवगेसु बे उत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि खइय सम्मत्ते सुहुम संपराय गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

क्षायिक सम्यक्त्व सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान

उन्हीं क्षायिक सम्यक्त्व सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थानालाप कहने पर – एक सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, एक परिग्रह संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, अवेदी, एक लोभ कषाय, केवल ज्ञान बिना चार ज्ञान, एक सूक्ष्म साम्पराय संयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, एक क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, एक शुक्ल अथवा चार धर्मध्यान, दस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा–संख्यात आठ सौ सत्तानवे उपशामक दो सौ निंन्यानवे क्षपक पाँच सौ अन्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवाँ भाग, काल–उपशामक नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपक नाना व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर उपशामक नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एकजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक तेतीस सागर क्षपक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह माह एक जीवापेक्षा निरंतर, बाईस भाव उपशामक व क्षपक में इक्कीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, सत्तरह प्रकृतियों का बंध, साठ प्रकृतियों का उदय एवं उपशामकों में एक सौ अड़तीस – एक सौ उनतालीस क्षपकों में एक सौ दो प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार क्षायिक सम्यक्त्व में सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– चार धर्म ध्यान अथवा एक शुक्ल ध्यान कहने का तात्पर्य दो मतों से हैं आचार्य पूज्यपाद स्वामी के अनुसार एक शुक्ल ध्यान आचार्य वीरसेन स्वामी के अनुसार चार धर्मध्यान यद्यपि चार उपचार से कहे हैं किन्तु वहाँ तो एक रूपापीत धर्म ध्यान ही पाया जाता है। सत्त्व प्रकृतियाँ–उपशामकों में 138 या 139 प्रकृतियों का सत्त्व पाया जाता हैं क्योंकि जिसने पूर्वभव की आयु बांध ली है, ऐसे जीव उपशम श्रेणी ही चढ़ सकते है क्षपक श्रेणी नहीं चढ़ सकते और उन्हीं के 139 प्रकृति का सत्त्व पाया जाता है क्योंकि यहाँ क्षायिक सम्यग्दृष्टि का कथन है और क्षायिक सम्यग्दृष्टि के दर्शन मोहनीय संबंधी सात प्रकृतियों का अभाव होता है चूंकि यहाँ सकल संयमी होने के कारण नरक तिर्यंचायु का भी अभाव है 7+2=9 प्रकृति बिना 139 का सत्त्व पाया जाता है। जिसने आगे की आयु को नहीं बाँधा है उसके एक सौ अड़तीस प्रकृति का सत्त्व पाया जाता है। क्योंकि उपशम श्रेणी में एक भी प्रकृति का क्षय नहीं होता। अब प्रश्न हो सकता है कि दर्शन मोहनीय की सात प्रकृतियों का तो क्षय पाया जाता है ? इसका उत्तर यह है कि सात प्रकृतियों का क्षय पहले ही हो जाता है उपशम श्रेणी बाद में चढ़ता है सात प्रकृतियाँ उपशम श्रेणी में नष्ट नहीं होती।

क्षपक श्रेणी में चारित्र मोह संबंधी बीस व सोलह अन्य प्रकृतियाँ इस प्रकार छत्तीस प्रकृतियाँ अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में समाप्त कर देता है, तो सत्त्व एक सौ दो प्रकृति का रहता है। यहाँ आगामी आयु का बन्ध नहीं होता है शेष कथन सुगम है।

372. क्षायिक सम्यक्त्व उपशान्त मोह गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	उपशान्त मोह गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	उपशांत संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	अपगतवेद
11.	कषाय	अकषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	यथाख्यात संयम
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग (4 ज्ञानो. 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	एक शुक्ल ध्यान पृथक्त्व वितर्क
22.	आस्रव	9 आस्रव (9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	299 (सामान्य विशेषता से संख्यात)*[1]
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीव एक जीवापेक्षा– ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा– ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीवापेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. साधिक 33 सागर
30.	भाव	20 (औद.4, मिश्र. 12, पा.2, , क्षा.1, औप.1)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	1 साता वेदनीय (10वें गुणस्थान की अबन्ध 62 प्रकृति+16 व्युच्छिन्न प्रकृति 78 प्रकृति)
33.	उदय	59 – 47 प्रकृति (10वें गुणस्थान की 46 प्रकृति+1 सूक्ष्म लोभ बिना)
34.	सत्त्व	138 गुणस्थानवत् (अबद्धायुष्क) 139 गुणस्थानवत् (बद्धायुष्क)
		* संख्या जो 299 दी है वह सामान्य से है, विशेषता से संख्यात कह दिया है क्योंकि 299 में औपशमिक सम्यक्त्व वाले भी है व क्षायिक वाले भी है अब यह ज्ञात नहीं होता कि कितने औपशमिक सम्यक्त्व वाले हैं और कितने क्षायिक सम्यक्त्वी हैं क्योंकि दोनों ही प्रकार के जीव उपशम श्रेणी पर आरूढ़ हो सकते हैं।

372. खइय सम्मत्तं उवसंतमोह गुणट्ठाणं

तेसुं खइय सम्मत्त उवसंत मोह जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग उवसंत कषाय गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, उवसंत सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, अवेदी, अकसायी, केवलणाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, जहाक्खाद संजमो, केवल दंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, खइय सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, एग पिथक्क वितक्क सुक्कज्झाणं, णव आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा संखेज्ज णवणउदिउत्तर बे सयं (संखेज्ज), खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागो, कालो णाणेग जीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणा जीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कसेण वासपुधत्तं एग जीवावेक्खा जहणेण अन्तोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, बीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, एगं सादावेयणीओ बंधो, ऊणसट्ठि पयडीणं उदओ एवं ऊणदालुत्तर सयं अट्ठतीसुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि खइय सम्मत्ते उवसंतमोह गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

क्षायिक सम्यक्त्व उपशांत मोह गुणस्थान

उन्हीं क्षायिक सम्यक्त्व उपशान्त मोह गुणस्थानालाप कहने पर – एक उपशान्त मोह गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, उपशांत संज्ञा, मनुष्यगति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, अवेदी, अकषायी, केवल ज्ञान बिना चार ज्ञान, यथाख्यात संयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, एक पृथक्त्व वितर्क शुक्ल ध्यान, नौ आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा–दो सौ निन्यानवे (संख्यात), क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग, काल – नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक तेतीस सागर, बीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक साता वेदनीय का बंध, उनसठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तीस या उनतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार क्षायिक सम्यक्त्व में उपशांत मोह गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ जो आस्रव कहें है वे नौ योग ही हैं क्योंकि कषाय नष्ट हो गयी मात्र योग शेष हैं वे ही आस्रव है।

सत्त्व प्रकृतियाँ अनंतानुबंधी चतुष्क, मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सम्यक्त्व ये सात प्रकृतियाँ तथा नरकायु तिर्यंचायु के बिना उनतालीस प्रकृति का सत्त्व होता है। क्योंकि इन दो आयु (नरक तिर्यंच) की सत्ता वाला संयमी नहीं बन सकता बिना संयम के श्रेणी नहीं चढ़ता और यदि आगामी भव की आयु का बन्ध नहीं किया है तो एक सौ अड़तीस प्रकृति का सत्त्व पाया जाता है। आगामी आयु भी देवायु के बिना अन्य आयु नहीं बांध सकता। क्योंकि जिसने मनुष्य, तिर्यंच, नरकायु का बन्ध कर लिया है वह तो संयम अथवा देश संयम धारण ही नहीं कर सकता। संयम धारण वही कर सकता है जिसने पूर्व भव की आयु का बन्ध नहीं किया है और यदि किया है तो देवायु का ही किया है आगे करेगा तो देवायु का ही करेगा इसलिए सत्त्व प्रकृतियाँ उक्त प्रमाण कहीं है।

373. क्षायिक सम्यक्त्व क्षीण मोह गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	12वाँ क्षीण मोह गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	क्षीण संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	अवेद
11.	कषाय	अकषाय (क्षीण कषाय)
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	यथाख्यात संयम
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग (4 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	2 (पृथक्त्व वितर्क वीचार, एकत्व वितर्क वीचार शुक्ल ध्यान)
22.	आस्रव	9 (योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	598
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीव व एक जीवापेक्षा– ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा– ज. एक समय उ. 6 माह, एक जीवापेक्षा– ज. व उ. निरन्तर
30.	भाव	20 (औद.4, क्षयो.12, क्षा.2, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	1 साता वेदनीय (78 प्रकृति बिना)
33.	उदय	57 – (49 प्रकृति बिना 47 पूर्व की गुणस्थान में व्युच्छित्ति वाली 2 वज्रनाराच+नाराचसंहनन बिना)
34.	सत्त्व	101 (गुणस्थानवत्)

373. खइय सम्मत्तं खीणमोह गुणट्ठाणं

तेसुं खइय सम्मत्तं खीणमोह गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि – एग खीण मोह गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, खीण सण्णा, मणुस्स गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, अवेदी, अकसायी, केवल णाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, जहाक्खाद संजमो, केवलदंसणेणं विणा तिण्णि दंसणाणि, सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, खइय सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, पिथक्क वितक्क वीयार–एकत्तवितक्क वीयार बे सुक्कज्झाणा, णव आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अट्ठणउदि उत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणेग जीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतर णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छम्मास एगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण णिरंतरं, बीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, एग सादावेयणीओ बंधो, सत्तावण्ण पयडीणं उदओ एवं एगुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि खइय सम्मत्ते खीणमोह गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

क्षायिक सम्यक्त्व क्षीण मोह गुणस्थान

उन्हीं क्षायिक सम्यक्त्वी क्षीण मोह गुणस्थानालाप कहने पर – एक क्षीणकषाय गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, क्षीण संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, अवेद, अकषाय, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान, यथाख्यात संयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, पृथक्त्व वितर्क एकत्व वितर्क दो शुक्ल ध्यान, नौ आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पाँच सौ अट्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग, काल – नाना व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह माह एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट निरंतर, बीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक साता वेदनीय का बंध, सत्तावन प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ एक प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार क्षायिक सम्यक्त्व में क्षीणमोह गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ सत्त्व प्रकृति एक सौ एक हैं, क्योंकि छत्तीस प्रकृतियों का अनिवृत्तिकरण गुणस्थान में क्षय कर दिया, एक सूक्ष्म लोभ का सूक्ष्म सांपराय गुणस्थान में क्षय कर दिया इस प्रकार 37 प्रकृतियाँ नष्ट हो गई एक सौ एक शेष हैं उनमें से 16 प्रकृतियाँ नष्ट कर अरिहंत जिन हो जायेंगे उनके सत्त्व पचासी प्रकृतियों का है यहाँ एक बात और कह दें कि आगामी भव की आयु का बन्धक क्षपक श्रेणी नहीं चढ़ता। शेष कथन सुगम है।

374. क्षायिक सम्यक्त्व सयोग केवली गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	सयोग केवली गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	4 प्राण (आयु, श्वासो., मनोबल, कायबल)	4 प्राण	2 व एक प्राण (आयु व कायबल)
5.	संज्ञा	क्षीण संज्ञा	–	–
6.	गति	मनुष्यगति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	7 योग (5 पर्याप्त + 2 समुद्घात में)	5 योग	2 योग
10.	वेद	अवेद	–	–
11.	कषाय	क्षीण कषाय	–	–
12.	ज्ञान	केवलज्ञान	–	–
13.	संयम	यथाख्यात चारित्र	–	–
14.	दर्शन	1 दर्शन (केवल दर्शन)	–	–
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व	–	–
18.	संज्ञी	नो संज्ञी, नो असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	2 उपयोग (1 केवलज्ञान + 1 केवलदर्शन)	–	–
21.	ध्यान	1 (सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति)	–	–
22.	आस्रव	7	5 (योग)	2 (औदा.मि., कार्माण)
23.	जाति	14 लाख		
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़		
25.	संख्या	898502 (संख्यात) (अपर्याप्तक अवस्था में 100 जीव होते है)*1		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग व सर्वलोक		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व सर्वलोक		
28.	काल	नाना जीवापेक्षा– सर्वकाल, एकजीवापेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम एक पूर्व कोटि*2		
29.	अन्तर	नाना व एक जीवापेक्षा– निरन्तर		
30.	भाव	14 (औ.3, क्षा.9, पा.2)		
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ	उ. 525 धनुष	
32.	बन्ध	1 साता वेदनीय (18 प्रकृति बिना)		
33.	उदय	42 – (64 प्रकृति बिना (पूर्व के गुणस्थान 49+16 व्युच्छित्ति–तीर्थंकर)		
34.	सत्त्व	85, 84, 81, 80 गुणस्थानवत्		
		*1 20 जीव दंड समुद्घात में 20 कपाट में इस प्रकार औदारिक मिश्र काययोग में 40 तथा प्रत्तर में बीस पुन: लौटते हुए प्रतर 20 लोक पूरण में 20 इस प्रकार कार्माण काय योग में 60 होते है 60+40=100 जीव होते हैं। *2 पूर्व कोटि प्रमाण=8400000X8400000X10000000 वर्ष= एक कोटि पूर्व=70560000000000000000 वर्ष।		

374. खइय सम्मत्तं सजोगी गुणट्ठाणं

तेसुं खइय सम्मत्तं सजोग केवली गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि, – सजोगकेवली गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासो, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, चत्तारि पाणा अपज्जत्तेसु बे व एग पाणा*[1], खीण सण्णा, मणुस्स गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, सत्त जोगा पज्जत्तेसु पंच अपज्जत्तेसु बे जोगा, अवेदी, खीण कसाओ, केवलणाणं, जहाक्खाद संजमो, केवलदंसणं, सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, खइय सम्मत्तं, णो सण्णी णो असण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहरिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, बे उवजोगा जुगुमं, एगं सुहुमक्किया पडिपाडि सुक्कज्झाणं, सत्त आसवा पज्जत्तेसु पंच अपज्जत्तेसु बे आसवा*[2] ओरालिय मिस्स, कम्माण काय जोग, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अट्ठ लक्ख अट्ठ णउदि सहस्स बे उत्तर पंच सयं अपज्जत्तेसु एगसयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व सव्वलोयो, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व सव्वलोयो, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण पुव्वकोडीणं, अंतरं णाणेगजीवावेक्खा णिरंतरं, चोद्दस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणवीसुत्तर पंच सयं धणू, एग सादावेयणीणं बंधो, बादाल पयडीणं उदओ एवं पंचासीदि पयडीणं सच्चं होंति।

इदि खइय सम्मत्ते सजोगी गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

क्षायिक सम्यक्त्व सयोगी गुणस्थान

उन्हीं क्षायिक सम्यक्त्वी सयोग केवली गुणस्थानालाप कहने पर – एक सयोग केवली गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त दो जीवसमास, छहों पर्याप्ति छहो अपर्याप्ति, चार प्राण अपर्याप्तक में दो व एक प्राण, क्षीण संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, सात योग अपर्याप्तक में दो योग, अवेद, क्षीण कषाय, केवलज्ञान, यथाख्यात संयम, केवलदर्शन, शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, नो संज्ञी नो असंज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, दो उपयोग युगपत्, एक सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति शुक्ल ध्यान, सात आस्रव पर्याप्तक में पाँच अपर्याप्तक में दो आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – आठ लाख अट्ठानवे हजार पाँच सौ दो अपर्याप्तक में सौ, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवाँ भाग व सर्वलोक, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग व सर्वलोक, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम एक कोटि पूर्व, अंतर–नाना व एक जीवापेक्षा निरंतर, चौदह भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक सातावेदनीय का बंध, ब्यालीस प्रकृतियों का उदय एवं पचासी प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार क्षायिक सम्यक्त्व में सजोगी जिन गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– *[1]अपर्याप्तक अवस्था में केवल कायबल और आयु ये दो प्राण पाये जाते हैं तथा *[2]औदारिक मिश्र व कार्माण ये दो योग ही (दो आस्रव) पाये जाते हैं। अपर्याप्तक अवस्था केवली समुद्घात के समय होती है। तथा अनाहारक अवस्था में एक ही प्राण पाया जाता है।

काल–कोई मनुष्य एक कोटि पूर्व की आयु वाला आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त के पश्चात् सकल संयमी हो श्रेणी माड़कर घातिया कर्मों का क्षय कर केवली हुआ पूरा जीवन केवली रहा पश्चात् निर्वाण को प्राप्त हुआ, इस प्रकार उत्कृष्ट काल कुछ कम एक कोटि पूर्व प्राप्त हुआ। जघन्य काल कोई जीव अपनी आयु में अन्तर्मुहूर्त शेष रहने पर क्षपक श्रेणी आरोहण कर घाति कर्मों का क्षय कर केवली हुआ अन्तर्मुहूर्त रहकर सिद्ध हो गया। इस प्रकार जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त प्राप्त हुआ। सत्त्व प्रकृतियाँ–यदि कोई तीर्थंकर है तथा जिन्होंने आहारकद्विक का बन्ध किया है तो उनके पचासी प्रकृतियों का सत्त्व पाया जाता है यदि कोई तीर्थंकर है किंतु आहारक का बन्ध नहीं किया है तो इक्यासी प्रकृति का सत्त्व होता है इसी प्रकार यदि कोई तीर्थंकर नहीं हैं किंतु आहारकद्विक की सत्ता है तो चौरासी प्रकृति की सत्ता तथा तीर्थंकर भी नहीं है आहारकद्विक भी नहीं है तो अस्सी प्रकृतियों का सत्त्व पाया जाता है शेष कथन सुगम है।

375. क्षायिक सम्यक्त्व अयोग केवली गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	अयोग केवली
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	एक आयुप्राण
5.	संज्ञा	0
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	अयोग
10.	वेद	अपगतवेद
11.	कषाय	क्षीण कषाय
12.	ज्ञान	केवलज्ञान
13.	संयम	यथाख्यात चारित्र
14.	दर्शन	केवल दर्शन
15.	लेश्या	अलेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	नो संज्ञी, नो असंज्ञी
19.	आहारक	अनाहारक
20.	उपयोग	2 उपयोग
21.	ध्यान	व्युपरत क्रिया निवर्तीनि
22.	आस्रव	0
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	598
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीवापेक्षा– अन्तर्मुहूर्त एक जीवापेक्षा– अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा– ज. एक समय उ. 6 माह एक जीवापेक्षा निरंतर
30.	भाव	13 (क्षायिक 9, औद. 2, पा.2)*
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	अबन्ध
33.	उदय	12 (94 प्रकृति बिना पूर्व की 64 अनुदय वाली 30 व्युच्छित्ति वाली
34.	सत्त्व	द्विचरम समय में 85 गुणस्थानवत्, चरम समय में 13 (गुणस्थानवत्)
		* क्षा. लब्धि= अनंतज्ञान, दर्शन, दान, लाभ, भोग, उपभोग, वीर्य, सम्यक्त्व, चारित्र, औद.–गति, असिद्धत्व, पारिणामिक–भव्यत्व, जीवत्व।

375. खइय सम्मत्तं अजोगी जिन गुणट्ठाणं

तेसुं खइय सम्मत्तं अजोग केवली गुणट्ठाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अजोगकेवलीगुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, एग पाणा, खीण सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, अजोगी, अवेदी, अकसायी, केवलणाणं, जहाक्खाद संजमो, केवलदंसणं, अलेस्सा, भव्व सिद्धिया, खइय सम्मत्तं, णो सण्णी णो असण्णी, अणाहारिणो, बे उवजोगा, एगं समुच्छिण्णक्रियिया सुक्कज्झाणं, णिरासवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अट्ठ णउदि उत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा व एगजीवावेक्खा अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छम्मास एगजीवावेक्खा णिरंतरं, तेरस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, अबंधो, बारस पयडीणं उदओ एवं द्विचरिमे पंचासीदि चरिमे तेरस/बारस पयडीणं सच्चं होंति।

इदि खइय सम्मत्ते अजोगी गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

क्षायिक सम्यक्त्व अयोगी जिन गुणस्थान

उन्हीं क्षायिक सम्यक्त्वी अयोग केवली गुणस्थानालाप कहने पर – एक अयोग केवली गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, एक प्राण, क्षीण संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, अयोगी, अवेदी, क्षीण कषाय, केवलज्ञान, यथाख्यात संयम, केवल दर्शन, अलेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, नो संज्ञी नो असंज्ञी, अनाहारक, दो उपयोग, एक व्युपरत क्रिया निवर्तीनि शुक्ल ध्यान, निरास्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पाँच सौ अट्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग, काल – नानाजीवापेक्षा व एक जीवापेक्षा अंतर्मुहूर्त, अंतर – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह मास एक जीवापेक्षा निरंतर, तेरह भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, अबंध, बारह प्रकृतियों का उदय एवं द्विचरम समय में 85 चरम समय में 13 प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार क्षायिक सम्यक्त्व में अयोगी जिन गुणस्थान समाप्त हुआ।

376. क्षायिक सम्यक्त्व गुणस्थानातीत

		सामान्य
1.	गुणस्थान	गुणस्थानातीत
2.	जीवसमास	जीव समासातीत
3.	पर्याप्ति	0
4.	प्राण	0
5.	संज्ञा	0
6.	गति	अतीतगति
7.	इन्द्रिय	0
8.	काय	0
9.	योग	अयोग
10.	वेद	अपगतवेद
11.	कषाय	अकषाय
12.	ज्ञान	केवलज्ञान
13.	संयम	0
14.	दर्शन	केवल दर्शन
15.	लेश्या	अलेश्या
16.	भव्य	जीवत्व
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	नो संज्ञी, नो असंज्ञी (0)
19.	आहारक	अनाहारक
20.	उपयोग	2 उपयोग
21.	ध्यान	0
22.	आस्रव	0
23.	जाति	0
24.	कुलकोटि	0
25.	संख्या	अनंतानंत
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	अनंतकाल
29.	अन्तर	निरंतर
30.	भाव	10
31.	अवगाहना	चरम शरीर से कुछ कम
32.	बन्ध	0
33.	उदय	0
34.	सत्त्व	0

376. खइय सम्मत्तं गुणट्ठाणातीद

तेसुं खइय सम्मत्तं गुणट्ठाणातीद जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि - गुणट्ठाणातीद, जीव समासो रहिदं, पज्जत्ती रहिदं, पाणातीद, खीण सण्णा, अगदि, अतिंदिय, अकाय, अजोगी, अवेदी, अकसायी, खइय णाणं, खइय चरित्तं, खइय दंसण, अलेस्सा, भव्वातीद, खइय सम्मत्तं, सण्णातीद, आहारातीद, बे उवजोगा, झाणातीद, णिरासवो, अजादि, कुल कोडीणं रहिदं, संखावेक्खा अणंताणंत, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो सव्वकालो, अंतरं - णिरंतरं, दस भावा, चरम सरीरत्तो किंचिदूण, अबंधो, अणुदओ, असच्चं होंति।

इदि खइये सम्मत्ते गुणट्ठाणां तीदालाव सम्मत्ता।

क्षायिक सम्यक्त्व गुणस्थानातीत

उन्हीं क्षायिक सम्यक्त्वी गुणस्थानातीत जीवों के आलाप कहने पर - गुणस्थानातीत, जीव समास रहित, पर्याप्ति रहित, प्राणातीत, क्षीण संज्ञा, अगति, अतीन्द्रिय, अकाय, अयोगी, अवेदी, अकषायी, क्षायिक ज्ञान, क्षायिक चारित्र, क्षायिक दर्शन, अलेश्या, भव्यातीत, क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञातीत, आहारातीत, दो उपयोग, ध्यानातीत, निरास्रव, अजाति, कुलकोटि रहित, अनंतानंत, क्षेत्रापेक्षा - लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन - लोक का असंख्यातवां भाग, काल - सर्वकाल, अंतर - निरंतर, दस भाव, अंतिम शरीर से किंचित् न्यून, अबंध, अनुदय, सत्त्व रहित होते हैं।

इस प्रकार क्षायिक सम्यक्त्व में गुणस्थानातीत आलाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- सिद्धों में दस भावों का पाया जाना-9 क्षायिक एक जीवत्व यद्यपि सामान्य से कहा जाता है कि सिद्धों में पाँच भाव पाये जाते हैं किंतु यहाँ प्रश्न उठता है, कि कर्म के क्षय से उत्पन्न होने वाले दान, लाभ, भोग, उपभोग, चारित्र ये अरिहंत अवस्था में तो पाये जाते ही हैं परन्तु सिद्धों में कैसे पाये जाते हैं ? क्योंकि जब सिद्धों के भाव कहने में आते है तब पाँच भाव ही कहे जाते हैं। गोम्मटसार कर्मकाण्ड गाथा नं. 845 में सिद्धों के चार क्षायिक भाव कहे हैं अब शेष भावों का क्या होता है क्या वे साथ में है अथवा अलग हो जाते हैं ?

समाधान-सिद्धों के क्षायिक सम्यक्त्व, क्षायिक दर्शन, क्षायिक ज्ञान और सिद्धत्व ये चार क्षायिक भाव बतलाये हैं इन चार भावों में ही अन्य सर्व क्षायिक भावों का अन्तर्भाव हो जाता है।

गोम्मटसार कर्मकाण्ड गाथा 845 के अतिरिक्त श्री उमास्वामी आचार्य ने तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय 10 सूत्र 4 में भी कहा है औपशमिक आदि भावों के तथा भव्यत्व आदि भावों का विनाश होने से मोक्ष होता है, किंतु क्षायिक सम्यक्त्व, ज्ञान, दर्शन, सिद्धत्व भाव का अभाव नहीं होता है। और भी कहते हैं-यदि चत्वार एवाव दृष्यन्ते अनन्तवीर्यादिनां निवृत्तिः प्राप्नोति ?-नैषदोषः ज्ञान दर्शनाबिना भावित्वादनन्त वीर्यादीनामविशेषः सर्वार्थसिद्धि 10, 4 यदि सिद्धों में चार ही भाव पाये जाते हैं तो अनंत वीर्यादि क्षायिक भावों की निवृत्ति प्राप्त होगी ? आचार्य कहते हैं कि ऐसा दोष देना ठीक नहीं हैं। क्योंकि ज्ञानदर्शन के अविनाभावी अनंत वीर्यादि क्षायिक भाव भी सिद्धों में अवशिष्ट रहते हैं।

और भी कहा है अरिहंतों में दानादि क्षायिक भाव दिखाई देते हैं क्योंकि यहाँ उनके कार्य मौजूद है, किंतु सिद्धों में कार्य नहीं पाये जाते अतः कार्य के अभाव में कारण भी लुप्तवत् रहते हैं। अतः सिद्ध है, सिद्धों के क्षायिक के 9 भाव होते हैं परन्तु चार प्रकट रूप हैं शेष लुप्तवत् है शेष कथन सुगम है।

377. क्षयोपशम सम्यक्त्व सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	4–7	4–7	4 व 6 गुण.
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4	–	–
6.	गति	चारों गति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	15 (4म., 4व., 7 काय योग)	11 योग (सभी मिश्र व का.बिना)	4 (औद.मि., आहारक मि.,वै.मि.,कार्मण)
10.	वेद	3 वेद	–	2 वेद (स्त्री वेद बिना)
11.	कषाय	21	–	20 (स्त्री वेद बिना)*[1]
12.	ज्ञान	4 ज्ञान	–	3 ज्ञान (मन:पर्यय ज्ञान बिना)
13.	संयम	5 (असं., संयमासंयम, सा., छे., परि.)	–	3 (असंयम, सा.,छे.)
14.	दर्शन	3 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	3 शुभ लेश्या, 3 अशुभ लेश्या*[2]=6	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	क्षयोपशम सम्यक्त्व	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	7 उपयोग	–	6 उपयोग (मन:पर्यय ज्ञान के बिना)
21.	ध्यान	12 (4 आर्त्त, 4 रौद्र, 4 धर्मध्यान)	–	–
22.	आस्रव	48 (क.21+12 अवि.+15 योग)	44 (21+12+11)	36 (20+12+4)
23.	जाति	26 लाख		
24.	कुलकोटि	108½ लाख करोड़		
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवां भाग व देशोन् 8/14 (कुछ कम), कुछ कम 6/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवापेक्षा – सर्वकाल, एक जीवापेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. 66 सागर		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर, एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन		
30.	भाव	37 (औद.20, क्षयो.15, पा.2)	अपर्याप्त में 34	
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवाँ भाग	उ. 1000 योजन	
32.	बन्ध	79 (41 प्रकृति बिना (मिथ्यात्व की 16+सासादन की 25 प्रकृति की व्युच्छित्ति)		
33.	उदय	106 (16 प्रकृति का उदय नहीं है)		
34.	सत्त्व	148, 144, (4 अनंतानुबंधी के बिना) तथा जिसने मिथ्यात्व का क्षय किया उसके एक सौ तैतालीस का और जिसने सम्यग्मिथ्यात्व का क्षय किया है उसके एक सौ ब्यालीस प्रकृति का सत्त्व पाया जाता है।		

*[1] तीन शुभ लेश्या अपर्याप्तक अवस्था में देवों में ही पायी जाती हैं नारकी, तिर्यंच की अपर्याप्तक अवस्था में कापोत लेश्या ही पायी जाती है।

*[2] मनुष्य के अपर्याप्तक अवस्था में छ: लेश्या पायी जाती है।

377. खओवसम सम्मत्तं सामण्णं

अह सम्मत्त मग्गणाणुवादेण खओवसम सम्मत्त सामण्णालाव भण्णमाणे अत्थि – असंजदादो अपमत्तसंजद चत्तारि गुणट्ठाणाणि अपज्जत्तेसु चउ छ बे गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी*, पंचिंदियाणि, तसकाओ, सामण्णेण पंचदस जोगा पज्जत्तेसु एगारस जोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु बे वेदा, इगबीस कसाया अपज्जत्तेसु बीस कसाया, चत्तारि णाणाणि अपज्जत्तेसु मणपज्जयेण विणा तिण्णि णाणाणि, असंजम संजमासंजम सामाइय छेदोवट्ठावणा विहार सुद्धि पंच संजमा अपज्जत्तेसु असंजम सामाइय छेदोवट्ठावणा तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, छल्लेसा, भव्वसिद्धिया, खओवसमिय सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, सत्त उवजोगा अपज्जत्तेसु छ उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द चत्तारि धम्म बारस झाणाणि, अट्ठदाल आसवा पज्जत्तेसु चदुदाल अज्जत्तेसु छत्तीस आसवा, छब्बीस लक्ख जादी, अट्ठ अद्धुत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठ चोद्दस व छ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण छावट्ठि सायरोवमाणि, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गलपरायट्टं, सत्ततीस भावा अपज्जत्तेसु चउतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, ऊणासीदि पयडीणं बंधो, छ उत्तर सयं पयडीणं उदओ, अडदालुत्तर सयं चदुदालुत्तर सयं व पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सम्मत्त मग्गणासु खओवसम सम्मत्ते सामण्णालाव सम्मत्ता।

क्षयोपशम सम्यक्त्व सामान्य

अब सम्यक्त्व मार्गणा के अनुवाद से क्षयोपशम सम्यक्त्व के सामान्यालाप कहने पर – चार से सात चार गुणस्थान अपर्याप्त 4 व 6 दो गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस अपर्याप्त में सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, पंद्रह योग पर्याप्तक में ग्यारह अपर्याप्तक में चार योग ही होते है, तीनों वेद अपर्याप्तक में दो वेद, इक्कीस कषाय अपर्याप्तक में बीस कषाय, चार ज्ञान अपर्याप्त में मन:पर्यय बिना तीन ज्ञान, असंयम–संयमासंयम–सामायिक–छेदोपस्थापना परिहार विशुद्धि पाँच संयम अपर्याप्तक में (असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना) तीन संयम, तीन दर्शन, छह लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षयोपशम सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक–अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, सात उपयोग अपर्याप्त में छह उपयोग, (चार आर्त्त चार रौद्र चार धर्म) बारह ध्यान, अड़तालीस आस्रव पर्याप्तक में चवालीस अपर्याप्तक में छत्तीस आस्रव, छब्बीस लाख जाति, एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन–लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 8/14 व 6/14 राजू, काल – नानाजीवापेक्षा – सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट छ्यासठ सागर, अंतर – नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्ध पुद्गल परावर्तन, सैंतीस भाव अपर्याप्तक में चौतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, उन्यासी प्रकृतियों का बंध, एक सौ छह प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस/एक सौ चवालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार सम्यक्त्व मार्गणा में क्षयोपशम सम्यक्त्व का सामान्यालाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– वेदक सम्यक्त्व में अपर्याप्तक अवस्था में नरक गति कृतकृत्य वेदक की अपेक्षा बनती है वह भी मात्र प्रथम पृथ्वी में ही पाया जाता है शेष पृथ्वियों में कोई भी सम्यक्त्व के साथ उत्पन्न नहीं होता। इसी प्रकार से तिर्यंच गति में जानना किंतु नियम से भोगभूमि में ही उत्पन्न होता है अन्य भूमि में नहीं, मनुष्य से मनुष्य कृतकृत्य वेदक वाला ही होता है और वह भी भोग भूमि में ही होता है। देवगति अथवा नरक गति से वेदक सम्यक्त्व के साथ निकलने वाला कर्मभूमि में मनुष्य ही होता है। इस प्रकार अपर्याप्तक अवस्था में नरक तिर्यंच गति तो कृतकृत्य वेदक की अपेक्षा ही बनती है मनुष्य और देवगति भजनीय है। सम्यक्त्वी जीव किसी भी प्रकार की द्रव्य या भाव स्त्रियों में जन्म नहीं लेता इसलिए अपर्याप्तक अवस्था में मात्र दो वेद पाये जाते हैं तथा बीस कषाय होती है। वेदक सम्यक्त्व का जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट काल छ्यासठ सागर है जो सुगम है क्योंकि छ्यासठ सागर तक मनुष्य और देवों में ही घुमाना चाहिए। अन्तर का कथन भी सहज है क्योंकि पहले भी कहा जा चुका है। जो प्रकृति सत्त्व है वह इस प्रकार है सम्यग्दृष्टि जीव के एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व पाया जा सकता है किंतु किसी जीव ने अनंतानुबंधी कषाय की विसंयोजना कर दी है तो उसके एक सौ चवालीस प्रकृति का सत्त्व भी पाया जाता है। शेष कथन सुगम है।

शंका– अनंतानुबंधी कषाय की विसंयोजन कौन करता है ?

समाधान– चारों गति के सम्यग्दृष्टि जीव अनंतानुबंधी कषाय की विसंयोजना कर सकते हैं।

शंका– संयोजना कौन करते हैं ?

समाधान– चारों गति के मिथ्यादृष्टि जीव संयोजना करते हैं।

378. क्षयोपशम सम्यक्त्व असंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	असंयत	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 अपर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	चारों गति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	13 योग (आहारक द्विक बिना)	10 योग	3 योग
10.	वेद	3 वेद	–	2 वेद (स्त्री वेद बिना)
11.	कषाय	21 कषाय	–	20 कषाय (स्त्री वेद बिना)
12.	ज्ञान	3 ज्ञान	–	–
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	3 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6 (3 शुभ लेश्या + 3 अशुभ लेश्या)	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	क्षयोपशम सम्यक्त्व	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	6 उपयोग	–	–
21.	ध्यान	10	–	–
22.	आस्रव	46 (21+12+13)	43 (21+12+10)	35 (20+12+3)
23.	जाति	26 लाख		
24.	कुलकोटि	108½ लाख करोड़		
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14 राजू, कुछ कम 6/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवापेक्षा – सर्वकाल, एकजीवापेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. साधिक 33 सागर		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर, एकजीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम एक कोटि पूर्व		
30.	भाव	34 (औद. 20, क्षयो. 12, पा. 2)	अप. 33 भाव	
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवाँ भाग	उ. 1000 योजन	
32.	बन्ध	77 (आहारकद्विक बिना)		
33.	उदय	104 (आहारकद्विक का चतुर्थ गुणस्थान में उदय नहीं होता)		
34.	सत्त्व	*148, 144, 143, 142		
		* अनंतानुबंधी की विसंयोजना करने वाले चारों गति के जीवों के एक सौ चवालीस प्रकृति का सत्त्व पाया जाता है। तथा जिसने मिथ्यात्व प्रकृति का क्षय किया है उसके एक सौ तैतालीस जिसने सम्यग्मिथ्यात्व का क्षय कर दिया उसके एक सौ ब्यालीस का सत्त्व।		

378. खओवसम सम्मत्तं असंजद गुणट्ठाणं

तेसिं खओवसमिय सम्मत्तं असंजद जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अविरद संजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु बे वेदा, इगबीस कसाया अपज्जत्तेसु बीस कसाया, तिण्णि णाणाणि, एगं असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया, खओवसमिय सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, छ उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द बे धम्म दस झाणाणि, छादाल आसवा पज्जत्तेसु तिदाल अपज्जत्तेसु पणत्तीस आसवा, छब्बीस लक्ख जादी, अट्ठद्धुत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठचोद्दस छ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण पुव्वकोडीणं, चउतीस भावा अपज्जत्तेसु तेतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सत्तसत्तदि पयडीणं बंधो, चउरुत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं अडदालुत्तर सयं/चदुदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि खओवसम सम्मत्ते असंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

क्षयोपशम सम्यक्त्व असयंत गुणस्थान

उन्हीं क्षयोपशम सम्यक्त्वी असयंत जीवों के आलाप कहने पर – एक अविरत सम्यक्त्व गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस अपर्याप्त में सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीनों वेद अपर्याप्तक में दो वेद, इक्कीस कषाय अपर्याप्तक में बीस कषाय, तीन ज्ञान, एक असंयम, तीन दर्शन, छह लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षयोपशम सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक–अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, छह उपयोग, चार आर्त्त–चार रौद्र दो धर्म दस ध्यान, छियालीस आस्रव पर्याप्तक में तेतालीस अपर्याप्तक में पैंत्तीस आस्रव, छब्बीस लाख जाति, एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा–पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन–लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 8/14–6/14 राजू, काल–नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एकजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक तेतीस सागर, अंतर–नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम एक कोटि पूर्व, चौंतीस भाव अपर्याप्तक में तेतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, सतत्तर प्रकृतियों का बंध, एक सौ चार प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस/एक सौ चवालीस/एक सौ ब्यालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार क्षयोपशम सम्यक्त्व में असंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– गति का कथन हमने पूर्व में कर ही दिया है वहाँ से जान लेना चाहिए। स्पर्शन का कथन इस प्रकार है स्वस्थान की अपेक्षा लोक का असंख्यात वां भाग सुगम है। विहार, वेदना, विक्रिया कषायादि पदों की अपेक्षा कुछ कम आठ राजू होता है जो देवों की प्रधानता से है। मारणांतिक की अपेक्षा कुछ कम छः राजू पाया जाता है यह तिर्यंचों की प्रधानता से है, क्योंकि वेदक सम्यक्त्व के साथ मारणांतिक समुद्घात करने वाले तिर्यंच अच्युतकल्प तक पाये जाते है अच्युत कल्प मध्यलोक से छह राजू की ऊँचाई पर है। उपपाद की अपेक्षा भी कुछ कम छह राजू पाया जाता है परन्तु यहाँ देवों की मुख्यता है क्योंकि तिर्यंच सम्यक्त्व के साथ मरने वालों का उपपाद देवों में ही होता है। काल की अपेक्षा नानाजीवों का सर्वकाल व एक जीव का जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है जो सुगम है। एक जीव का उत्कृष्ट काल कहते हैं, कोई मनुष्य वेदक सम्यक्त्व के साथ संयम को प्राप्त हो देवों की उत्कृष्ट आयु को बांध कर जीवन भर संयम का परिपालन कर अन्त में मरण कर एक समय कम तेतीस सागर आयु वाले देवों में उत्पन्न हुआ आयु को व्यतीत कर मरण कर एक कोटि पूर्व की आयु वाले मनुष्यों में उत्पन्न हुआ जीवन के अन्तर्मुहूर्त शेष रहने पर दर्शन मोहनीय की क्षपणा व सकल संयम को प्राप्त हुआ। प्रमत्त अप्रमत्त गुणस्थानों में सहस्रों परावर्तन करके क्षपक श्रेणी आरोहण की अधःकरण, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण पश्चात् सूक्ष्म सांपराय, क्षीण मोह सयोगी अयोगी हो निर्वाण को प्राप्त हुआ इस प्रकार कुछ कम एक पूर्व कोटि अधिक तेतीस सागर प्राप्त हुआ। अन्तर भी नाना जीवों का सुगम है एक जीव का जघन्य भी सुगम है। एक जीव का अन्तर कोई जीव मोहनीय कर्म की अट्ठाईस प्रकृति की सत्ता सहित एक कोटि पूर्व की आयु वाले सम्मूर्च्छन जन्म वाले तिर्यंचों में उत्पन्न हुआ। अन्तर्मुहूर्त से पर्याप्त हो विशुद्धि से विशुद्ध हो वेदक सम्यक्त्वी हुआ अन्तर्मुहूर्त रहकर संयमासंयम को प्राप्त हुआ इस प्रकार अन्तर को प्राप्त करके सारा जीवन संयमासंयम के साथ रहा आयु के अन्त में असंयम को प्राप्त हुआ इस प्रकार उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त हुआ। शेष कथन सुगम है।

379. क्षयोपशम सम्यक्त्व संयमासंयम गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	संयमासंयम गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	2 गति (मनुष्य, तिर्यंच)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	17 कषाय
12.	ज्ञान	3 ज्ञान
13.	संयम	संयमासंयम
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	3 शुभ लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	क्षयोपशम सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	6 उपयोग (3 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	11 ध्यान (4 आर्त्त, 4 रौद्र, 3 धर्मध्यान)
22.	आस्रव	38 (17 कषाय + 11 अवि. + 10 योग)
23.	जाति	18 लाख
24.	कुलकोटि	57½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवां भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवां भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 6/14 राजू
28.	काल	नाना जीवापेक्षा– सर्वकाल, एक जीवापेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम एक कोटि पूर्व
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा– निरंतर, एक जीवापेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम 66 सागर
30.	भाव	29 (औद. 14, मि. 13, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उ. 1000 योजन
32.	बन्ध	67 (आहारकद्विक, अप्रत्याख्यान की 4, वज्रवृषभनाराच संहनन, औदारिक शरीर व आंगोपांग, मनुष्यायु मनुष्यद्विक इन 12 प्रकृति बिना)
33.	उदय	87 (19 प्रकृति बिना)
34.	सत्त्व	147 (नरकायु बिना) 143, 142, 141

379. खओवसम सम्मत्तं संजमासंजम गुणट्ठाणं

तेसिं खओवसमिय सम्मत्तं देससंजद जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग संजदासंजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, मणुस्स तिरिक्ख बे गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, तिण्णि वेदा, सत्तदस कसाया, तिण्णि णाणाणि, एग संजमासंजमो, तिण्णि दंसणाणि, तिण्णि सुहलेस्सा, भव्व सिद्धिया, खओवसम सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, छ उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द तिण्णि धम्म एगारस झाणाणि, अडतीस आसवा, अट्ठदस लक्ख जादी, अद्धुत्तर सत्तावण लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व छ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणा जीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण पुव्वकोडीणं, अंतरं णाणा जीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण छावट्ठि सायरोवमाणि देसूणाणि, उणतीस भावा, जहण्ण मवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सडसट्ठि पयडीणं बंधो, सत्तासीदि पयडीणं उदओ एवं सत्तदालुत्तर सयं/तिदालुत्तर सयं/बादालुत्तर सयं इगदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि खओवसम सम्मत्ते संजमासंजम गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

क्षयोपशम सम्यक्त्व संयमासंयम गुणस्थान

उन्हीं क्षयोपशम सम्यक्त्वी देशसंयत जीवों के आलाप कहने पर – एक देशसंयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्य तिर्यंच दो गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, तीनों वेद, सत्तरह कषाय, तीन ज्ञान, एक संयमासंयम, तीन दर्शन, तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षयोपशम सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, चार आर्त चार रौद्र तीन धर्म ग्यारह ध्यान, अड़तीस आस्रव, अठारह लाख जाति, साढ़े सत्तावन लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 6/14 राजू, काल नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एकजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम एक कोटि पूर्व, अंतर – नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम छियासठ सागर, उनतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, सड़सठ प्रकृतियों का बंध, सतासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस/एक सौ तेतालीस/एक सौ बयालीस/एक सौ इकतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार क्षयोपशम सम्यक्त्व में संयमासंयम गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– स्पर्शन की अपेक्षा विहार वेदना विक्रिया कषाय आदि सभी पदों की अपेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग पाया जाता है क्योंकि यहाँ तिर्यंचों की प्रधानता है और तिर्यंच अधिक विहार नहीं करते अत: उनका स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग पाया जाता है, मारणांतिक समुद्घात भी करते हैं उस अपेक्षा से कुछ कम छह राजू स्पर्शन पाया जाता है क्योंकि वे अच्युत स्वर्ग तक उत्पन्न होते हैं, उपपाद पद यहाँ पाया नहीं जाता है।

काल नाना जीवों का सदा काल है एक जीव का जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम एक कोटि पूर्व जो सुगम है क्योंकि कई बार विवेचन किया जा चुका है। अन्तर का कथन करते समय जघन्य अन्तर्मुहूर्त सुगम है उत्कृष्ट अन्तर कहते हैं यथा कोई मिथ्यादृष्टि जीव वेदक सम्यक्त्व व संयमासंयम को एक साथ प्राप्त हुआ अन्तर्मुहूर्त काल तक रहा फिर संयम को प्राप्त हो गया और अन्तर प्रारंभ किया पुन: मरण कर जितने समय तक संयम के साथ रहा उतने काल से कम तेतीस सागर की आयु वाले देवों में उत्पन्न हुआ वहाँ से च्युत हो मनुष्यों में उत्पन्न हुआ वहाँ पर जितने काल तक संयम के अथवा असंयम के साथ रहा उतने काल से कम तेतीस सागर की आयु वाले देवों में उत्पन्न हुआ वहाँ से च्युत हो मनुष्यों में उत्पन्न हुआ इस प्रकार वेदक सम्यक्त्व के काल में दो अन्तर्मुहूर्त शेष रहने पर परिणामों के निमित्त से संयमासंयम को प्राप्त हुआ। पश्चात् दर्शन मोहनीय की क्षपणा कर क्षायिक सम्यग्दृष्टि हो गया। इस प्रकार पूर्व के दो पश्चात् का एक इस प्रकार तीन अन्तर्मुहूर्त कम छ्यासठ सागर उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त हुआ। शेष कथन सुगम है।

यहाँ सत्त्व प्रकृतियों का कथन करते हैं नरकायु बिना एक सौ सैंतालीस प्रकृति का सत्त्व पाया जाता है जिसने अनंतानुबंधी की विसंयोजना कर दी है उसका एक सौ तेतालीस तथा जिसने मिथ्यात्व का क्षय कर दिया है उसके एक सौ ब्यालीस का जिसने सम्यग्मिथ्यात्व का क्षय कर दिया है उसके एक सौ इकतालीस का सत्त्व पाया जाता है।

380. क्षयोपशम सम्यक्त्व प्रमत्तसंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	प्रमत्त संयत गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	मनुष्यगति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	11 योग	10 योग	आहारक मिश्र काययोग
10.	वेद	3 वेद	–	एक पुरुष वेद
11.	कषाय	13 कषाय	–	11 कषाय (स्त्री व नपुंसक वेद बिना)
12.	ज्ञान	4 ज्ञान	–	3 ज्ञान (मन:पर्यय बिना)
13.	संयम	3 (सा.,छे., परि.)	–	2 (सा., छे.)
14.	दर्शन	3 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	3 शुभ लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	क्षयोपशम सम्यक्त्व	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक	–	–
20.	उपयोग	7 उपयोग	–	6 उपयोग (मन: पर्यय ज्ञान बिना)
21.	ध्यान	7 (3 आर्त्त+ 4 धर्मध्यान)	–	–
22.	आस्रव	24 (13 कषाय + 11 योग)	23 (13 कषाय+10)	12 (11+1)
23.	जाति	14 लाख	–	–
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़	–	–
25.	संख्या	संख्यात*1	संख्यात	–
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग	–	अपर्या. 27
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
28.	काल	नाना जीवापेक्षा – सर्वकाल एक जीवापेक्षा– ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 33 सागर		
30.	भाव	29 (औद. 13, क्षयो. 14, पा.2)	अपर्याप्त 26	
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ	उ. 525 धनुष	
32.	बन्ध	*2 63		
33.	उदय	*3 81		
34.	सत्त्व	146 (नरक, तिर्यंच, आयु बिना)	142 (अनंता. बिना), 140 (मि. व सम्य.मि. बिना)	

*1 संख्या के प्रकरण में यहाँ जीव संख्यात हैं क्योंकि कितने हैं ऐसा स्पष्ट उल्लेख नहीं है।

*2 (16 प्रकृति बिना (12 पूर्व की अबन्ध 4 तथा संयतासंयत गुणस्थान में चार प्रत्याख्यानावरण की व्यु. इस प्रकार 16 प्रकृति)

*3 19 पूर्व की अनुदय + प्रत्याख्यानावरण कषाय, तिर्यंचायु, तिर्यंच गति, नीच गोत्र, उद्योत ये आठ प्रकृति = 19+8=27 के बिना

380. खओवसम सम्मत्तं पमत्तसंजद गुणट्ठाणं

तेसुं खओवसम सम्मत्ते पमत्तसंजदो जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग पमत्तसंजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, दस पाणा सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, मणुस्स गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, एगारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु एग आहार मिस्स काय जोगो, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु एग पुरिस वेदो, तेरस कसाया अपज्जत्तेसु एगारस कसाया, केवल णाणेण विणा चत्तारि णाणाणि अपज्जत्तेसु मण पज्जयेण विणा तिण्णि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा विहार सुद्धि तिण्णि संजमा अपज्जत्तेसु विहार सुद्धिओ विणा बे संजमा, केवलदंसणेण विणा तिण्णि दंसणं, तिण्णि सुह लेस्सा, भव्व सिद्धिया, खओवसम सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा अपज्जत्तेसु छ उवजोगा, तिण्णि अट्ट चत्तारि धम्म सत्त झाणाणि, चउबीस आसवा पज्जत्तेसु तेबीस अपज्जत्तेसु बारस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पंच कोडि तिणउदि लक्ख अट्ठणउदि सहस्सं छउत्तर बे सयं अपज्जत्तेसु सत्तबीस, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं अपज्जत्तेसु जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि सादिरेयाणि अपज्जत्तेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समयो उक्कस्सेण वास पुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण छावट्ठि सायरोवमाणि, ऊणतीस भावा अपज्जत्तेसु छब्बीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, तिसट्ठि पयडीणं बंधो, एगासीदि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं/बादालुत्तर सयं/दालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि खओवसम सम्मत्ते पमत्तसंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

क्षयोपशम सम्यक्त्व प्रमत्तसंयत गुणस्थान

उन्हीं क्षयोपशम सम्यक्त्वी प्रमत्त संयत जीवों के आलाप कहने पर – एक प्रमत्त संयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, दस प्राण सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, ग्यारह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में एक आहारक मिश्रकाय योग, तीनों वेद अपर्याप्तक में एक पुरुष वेद, तेरह कषाय अपर्याप्तक में ग्यारह कषाय, केवल ज्ञान बिना चार ज्ञान अपर्याप्त में मन:पर्यय बिना तीन ज्ञान, सामायिक – छेदोपस्थापना – परिहार विशुद्धि तीन संयम अपर्याप्त में परिहार विशुद्धि बिना दो संयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षयोपशम सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग अपर्याप्तक में छह उपयोग, तीन आर्त्त चार धर्म सात ध्यान, चौबीस आस्रव पर्याप्त में तेईस अपर्याप्त में बारह आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पाँच करोड़ तेरानवे लाख अन्ठानवे हजार दो सौ छह अपर्याप्तक में सत्ताईस, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त अपर्याप्त में नाना व एक जीवापेक्षा अंतर्मुहूर्त, अंतर – नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट साधिक तेतीस सागर अपर्याप्त में नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट छ्यासठ सागर, उनतीस भाव अपर्याप्तक में छब्बीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, तिरेसठ प्रकृतियों का बंध, इक्यासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छियालीस/एक सौ ब्यालीस/एक सौ चालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार क्षयोपशम सम्यक्त्व में प्रमत्त संयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ पर सारे पद सुगम हैं क्योंकि पहले कई बार व्याख्यान कर चुके हैं मात्र अन्तर का कथन करते हैं, यथा जघन्य अन्तर सुगम है उत्कृष्ट अन्तर इस प्रकार है, कोई प्रमत्त संयत वेदक सम्यग्दृष्टि मनुष्य अप्रमत्तसंयत होकर अन्तर्मुहूर्त रहा और मरण करके एक समय कम तेतीस सागर की आयु वाले देवों में उत्पन्न हुआ आयु प्रमाण स्थिति भोग कर वहाँ से च्युत होकर एक पूर्व कोटि प्रमाण आयु वाले मनुष्यों में उत्पन्न हुआ सारा जीवन असंयम के साथ रहा आयु में अन्तर्मुहूर्त शेष रह जाने पर प्रमत्त संयत हुआ इस प्रकार अन्तर लब्ध हुआ पुन: क्षायिक सम्यक्त्व को प्राप्त कर अप्रमत्त संयत हो श्रेणी आरोहण कर अपूर्वकरणादि छह अन्तर्मुहूर्त से निर्वाण को प्राप्त हुआ। इस प्रकार एक अन्तर्मुहूर्त पहले का छह बाद के इस प्रकार सात अन्तर्मुहूर्त कम एक पूर्व कोटि अधिक तेतीस सागर प्रमाण अन्तर प्राप्त हुआ शेष कथन सुगम है।

381. क्षयोपशम सम्यक्त्व अप्रमत्त संयत गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	अप्रमत्त संयत गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 संज्ञा (आहार संज्ञा बिना)
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	13 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	3 (सा.,छे., परि.)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	3 शुभ लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	क्षयोपशम सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग (4 ज्ञानो., 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान
22.	आस्रव	22 (13 कषाय + 9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	संख्यात
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीवापेक्षा – सर्वकाल एक जीवापेक्षा– ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 33 सागर
30.	भाव	29 (औ. 13, क्षयो. 14, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	59 – (20 प्रकृति बिना[*1])
33.	उदय	76 = (25[*2] + 5=30 के बिना)
34.	सत्त्व	146, 142, 140
		[*1] 20 (16–2 आहारकद्विक=14 क्योंकि आहारकद्विक का यहाँ बन्ध होने लगता है इसलिए सोलह अबन्ध में से घटाया है।+अस्थिर, अशुभ, असाता वेदनीय, अयश:कीर्ति, अरति, शोक इस प्रकार 6 प्रकृति=14+6=20) [*2] 25 पूर्व की + आहाद्विक, स्त्यानगृद्धि, निद्रा निद्रा, प्रचला प्रचला ये पाँच प्रकृति मिला कर 30 प्रकृति बिना

381. खओवसम सम्मत्तं अप्पमत्तसंजद गुणट्ठाणं

तेसुं खओवसम सम्मत्त अपमत्त गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अपमत्त संजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, आहारेण विणा तिण्णि सण्णा, मणुस्स गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, तिण्णि वेदा, तेरस कसाया, केवल णाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा विहार सुद्धि तिण्णि संजमा, केवल दंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, भावेण तिण्णि सुहलेस्सा दव्वेण छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया, खओवसम सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्मज्झाणाणि, बाबीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादि, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा किंचिदूण ओघं बे कोडि छण्णउदि लक्ख णवणउदि सहस्स तिउत्तर सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, ऊणतीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, ऊणसट्ठि पयडीणं बंधो, छ सत्तदि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं/बादालुत्तर सयं/दालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि खओवसम सम्मत्ते अप्पमत्तसंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

क्षयोपशम सम्यक्त्व अप्रमत्तसंयत गुणस्थान

उन्हीं क्षयोपशम सम्यक्त्वी अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती जीवों के आलाप कहने पर – एक अप्रमत्त संयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, आहार बिना तीन संज्ञाएँ, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, तीनों वेद, तेरह कषाय, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान, तीन संयम (सामायिक–छेदोपस्थापना – परिहार विशुद्धि), केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, भाव से तीन शुभ लेश्या द्रव्य से छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षयोपशम सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्मध्यान, बाईस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – कुछ कम ओघ प्रमाण (दो करोड़ छियानवे लाख निन्यानवे हजार एक सौ तीन), क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक तेतीस सागर, उनतीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, उनसठ प्रकृतियों का बंध, छियत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस एक सौ ब्यालीस एक सौ चालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार क्षयोपशम सम्यक्त्व में अप्रमत्तसंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– सभी प्ररूपणाएँ सुगम है। विशेषता यह है कि जो संख्या का कथन है वह सामान्य से है विशेषता से कुछ कम ओघ के समान संख्या बन जाती है क्योंकि सामान्य से क्षायिक उपशम सम्यग्दृष्टियों की भी राशि सम्मिलित है। किंतु वह राशि वेदक सम्यग्दृष्टियों से अल्प है इसलिए कुछ कम ओघ प्रमाण कहीं है किंतु कितनी है ऐसा उपदेश हमें प्राप्त नहीं हो सका है शेष कथन सुगम है। इतनी और विशेषता है कि अन्तर का कथन करना चाहिए सो ही करते हैं– एक अप्रमत्त संयत जीव प्रमत्त संयत हो अन्तर्मुहूर्त रहकर एक समय कम तेतीस सागरोपम की आयु स्थिति वाले देवों में उत्पन्न हुआ वहाँ से च्युत हो एक कोटि पूर्व की आयु वाले मनुष्यों में उत्पन्न हुआ आयु के अन्तर्मुहूर्त शेष रहने पर अप्रमत्त संयत हुआ इस प्रकार अन्तरलब्ध हुआ पश्चात् प्रमत्त या अप्रमत्त संयत गुणस्थान में क्षायिक सम्यक्त्व को प्राप्त कर क्षपक श्रेणी के योग्य अप्रमत्त संयत होकर क्षपक श्रेणी चढ़ा और अपूर्वकरणादि छः अन्तर्मुहूर्त में निर्वाण को प्राप्त हो गया इस प्रकार अन्तर के आदि का एक अन्तर्मुहूर्त बाहरी नौ अन्तर्मुहूर्तों में से घटाकर आठ अन्तर्मुहूर्त कम एक कोटि पूर्व अधिक तेतीस सागर उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त हुआ शेष कथन सुगम है।

382. उपशम सम्यक्त्व सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	4–11	4–11	4
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 व उपशांत संज्ञा	4 व उपशांत संज्ञा	4
6.	गति	चारों गति	–	1 देवगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	12 (आहारकद्विक व औद. मिश्र बिना)	10	2 (कार्मण व वै.मि.)
10.	वेद	3 वेद, अवेद	–	एक पुरुष वेद
11.	कषाय	21 कषाय, उपशांत कषाय	21 व उपशांत	19 कषाय
12.	ज्ञान	4 सुज्ञान	–	3 सुज्ञान (मन:पर्यय बिना)
13.	संयम	6 (अ.,सयं.,सा.,छे.,सू.,यथा.)	6	1 (असंयम)
14.	दर्शन	3 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	(3 शुभ लेश्या, 3 अशुभ) 6 लेश्या	–	3 शुभ लेश्या
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	उपशम सम्यक्त्व	–	उपशम सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	अनाहारक, आहारक दोनों
20.	उपयोग	7 उपयोग (4 ज्ञानो., 3 दर्शनो.)	–	6 उपयोग (मन.पर्यय ज्ञान के बिना)
21.	ध्यान	13 (4 आर्त्त, 4 रौद्र, 4 धर्मध्यान, 1 शुक्ल)	–	10 ध्यान
22.	आस्रव	45 (कषाय 21+ अवि. 12+12 योग)	43 (21क.+10यो.+12अवि.)	33 (19+2+12)
23.	जाति	26 लाख	–	4 लाख
24.	कुलकोटि	108½ लाख करोड़	–	26 लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग	–	संख्यात
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग, एक जीवापेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. अन्तर्मुहूर्त		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. सात दिन+रात एक जीवापेक्षा – ज. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग उ. कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन		
30.	भाव	38 (पर्याप्तक औद=20+क्षयो.14+पा.2+औप.2) अपर्या. 26 (औद.12, क्षयो.11, औप. 1, पा.2)		
31.	अवगाहना	जघ. संख्यात अंगुल	उ. संख्यात धनुष	
32.	बन्ध	77 – (प्रथम व द्वितीय गुणस्थान की व्युच्छित्ति 16+25+देवायु+मनुष्यायु बिना 120–43=77)		
33.	उदय	100		
34.	सत्त्व	148 (गुणस्थानवत्)		

382. उवसम सम्मत्त सामण्णं

अह सम्मत्त मग्गणाणुवादेण उवसम सम्मत्ते सामण्णालाव भण्णमाणे अत्थि – चउरो एगारस अट्ठ गुणट्ठाणाणि अपज्जत्तेसु एगं चउ गुणट्ठाणाणि, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा व उवसंत सण्णा, चत्तारि गदी अपज्जत्तेसु एग देवगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, बारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु बे जोगा, तिण्णि वेदा व अवेदी अपज्जत्तेसु एगं पुरिस वेदो, इगबीस कसाया उवसंत कसाया व अपज्जत्तेसु उणबीस कसाया, केवलणाणेण विणा चत्तारि णाणाणि अपज्जत्तेसु मण पज्जयेण विणा तिण्णि णाणाणि, असंजम संजमासंजम सामाइय छेदोवट्ठावणा सुहुम सांपराय जहाक्खाद छ संजमा अपज्जत्तेसु असंजम, तिण्णि दंसणाणि, छल्लेस्सा अपज्जत्तेसु तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, सत्त उवजोगा अपज्जत्तेसु छ उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द चत्तारि धम्म एग सुक्क तेरस झाणाणि अपज्जत्तेसु दस झाणाणि, पणदाल आसवा पज्जत्तेसु तिदाल अपज्जत्तेसु तेतीस आसवा, छब्बीस लक्ख जादी अपज्जत्तेसु चत्तारि लक्ख जादी, अद्धट्ठुत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं अपज्जत्तेसु छब्बीस लक्ख कोडि कुलकोडिणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा अपज्जत्तेसु संखेज्जा[*1], खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण सत्तरांदिरेयाणि एगजीवावेक्खा जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण किंचिदूण अद्धपोग्गलपरायट्ठं, अडतीस भावा अपज्जत्तेसु छब्बीस भावा, जहण्णमवगहणं संखेज्जांगुल उक्कस्सेण संखेज्ज धणू, सत्तसत्तदि पयडीणं बंधो, सयं पयडीणं उदओ एवं अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि उवसम सम्मत्ते सामण्णालाव सम्मत्ता।

उपशम सम्यक्त्व सामान्य

अब सम्यक्त्व मार्गणा के अनुवाद से उपशम सम्यक्त्व का सामान्यालाप कहने पर – चार से ग्यारह आठ गुणस्थान अपर्याप्त में एक चौथा गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस अपर्याप्त में सात प्राण, चारों संज्ञाएँ व उपशांत संज्ञा, चारों गति अपर्याप्तक में एक देवगति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, बारह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में दो योग, तीनों वेद व अवेद अपर्याप्तक में एक वेद, इक्कीस कषाय उपशांत कषाय अपर्याप्तक में उन्नीस कषाय, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान अपर्याप्त में तीन ज्ञान, छह संयम अपर्याप्त में असंयम, तीन दर्शन केवल दर्शन बिना, छहों लेश्या अपर्याप्तक में तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, सात उपयोग, चार आर्त्त चार रौद्र – चार धर्म एक शुक्ल तेरह ध्यान अपर्याप्तक में दस ध्यान, पैंतालीस आस्रव पर्याप्तक में तेतालीस अपर्याप्तक में तेतीस आस्रव, छब्बीस लाख जाति अपर्याप्तक में चार लाख जाति, एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ कुल कोटि अपर्याप्तक में छब्बीस लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग अपर्याप्तक में संख्यात, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14 राजू, काल – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यात्वाँ भाग एक जीवापेक्षा जघन्य पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन, अड़तीस भाव अपर्याप्तक में छब्बीस भाव, जघन्यावगाहना संख्यात अंगुल उत्कृष्ट संख्यात धनुष, सत्तत्तर प्रकृतियों का बंध, सौ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार उपसम सम्यक्त्व का सामान्यालाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ अपर्याप्तक अवस्था द्वितीयोपशम सम्यक्त्व की अपेक्षा से है क्योंकि प्रथमोपशम सम्यक्त्व में मरण नहीं होता गति भी एक देवगति है क्योंकि अन्य आयु का बन्धक संयम नहीं ले सकता बिना संयम के द्वितीयोपशम सम्यक्त्व होता ही नहीं है। इसलिए औदारिक मिश्र काययोग भी नहीं होता वेद भी एक पुरुष वेद ही पाया जाता है क्योंकि सम्यग्दृष्टि अन्य वेद में उत्पन्न नहीं होता अपवाद को छोड़कर।

[*1] संख्या की अपेक्षा भी अपर्याप्तक संख्यात ही होते हैं क्योंकि उपशम श्रेणी या द्वितीयोपशम सम्यक्त्व केवल मनुष्यों में ही होता है और मनुष्य संख्यात ही हैं। अत: उपशम सम्यक्त्वी अपर्याप्तक संख्यात ही पाये जाते हैं। शेष कथन सुगम है जहाँ विशेषता रहेगी यथावसर आगे गुणस्थानों में व्याख्यान करेंगे।

383. उपशम सम्यक्त्व असंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	असंयत गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4	–	–
6.	गति	चारों गति	–	1 देव गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	12 (आहारकद्विक बिना व औदा.मिश्र बिना)	10	2 (वै.क्रि.मिश्र व कार्माण काययोग)
10.	वेद	3 वेद	–	1 पुरुष वेद
11.	कषाय	21 कषाय	–	19 कषाय
12.	ज्ञान	3 ज्ञान	–	–
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	3 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या*[1]	–	3 शुभ लेश्या
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	उपशम सम्यक्त्व	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	आहारक, अनाहारक
20.	उपयोग	6 उपयोग	–	–
21.	ध्यान	10 (4 आर्त्त, 4 रौद्र, 2 धर्म.)	–	–
22.	आस्रव	45 (कषाय 21+ अवि. 12+12 योग)	43 (21+10+12)	33 (19+2+12)
23.	जाति	26 लाख	–	4 लाख
24.	कुलकोटि	108½ लाख करोड़	–	26 लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवां भाग	–	संख्यात
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवां भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 8/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीवापेक्षा– ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. सात दिन रात्रि, एक जीवापेक्षा – ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त*[2]		
30.	भाव	34 (औ.20, क्षयो.11, पा.2, औ.1)	पर्या. 34	अपर्या. 26
31.	अवगाहना	जघ. संख्यात अंगुल	उ. संख्यात धनुष अथवा 525 धनुष	
32.	बन्ध	75*[3] (आहारकद्विक बिना)		
33.	उदय	100 (सामान्यवत्)		
34.	सत्त्व	148*[4] (अलग अलग अपेक्षा से नाना जीव संबंधी जान लेना चाहिए।)		

*[1] मनुष्य तिर्यंचों में तीन शुभ लेश्याओं में ही, उपशम सम्यक्त्व, देवों में तीनों शुभ लेश्याओं में, नारकियों में तीनों अशुभ लेश्याओं में सम्यक्त्व पाया जाता है।

*[2] कोई संयत उपशम श्रेणी से उतरकर असंयत हुआ अन्तर्मुहूर्त रहकर संयतासंयत हुआ पश्चात् अप्रमत्त हुआ फिर प्रमत्त हो असंयत हो गया इस प्रकार अन्तर्मुहूर्त काल का अन्तर प्राप्त हुआ।

*[3] प्रथमोपशम सम्यक्त्व में सामान्य से 75 प्रकृति का ही बन्ध होता है।

383. उवसम सम्मत्त असंजद गुणट्ठाणं

तेसुं उवसम सम्मत्त जीवाणं असंजदो गुणट्ठाणालाव भण्णमाणे अत्थि – एग असंजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी अपज्जत्तेसु एग देवगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, आहार दुगेण व ओरालिय मिस्सेण विणा वारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु बे जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु एग पुरिस वेदो, इगबीस कसाया अपज्जत्तेसु उणवीस कसाया, तिण्णि णाणाणि, एग असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, छल्लेस्सा अपज्जत्तेसु तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, छ उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द बे धम्म दस झाणाणि, पणदाल आसवा पज्जत्तेसु तिदाल अपज्जत्तेसु तेतीस आसवा, छब्बीस लक्ख जादी अपज्जत्तेसु चत्तारि लक्खजादी, अद्धट्ठुत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं अपज्जत्तेसु छब्बीस लक्ख कोडि कुल कोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि* भागा अपज्जत्तेसु संखेज्ज, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण सत्त दिवसराइओ एग जीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, चउतीस भावा पज्जत्तेसु चउतीस अपज्जत्तेसु छब्बीस भावा, जहण्णमवगहणं संखेज्जांगुल उक्कस्सेण संखेज्ज धणू अहवा पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, पंचसत्तदि पयडीणं बंधो, सयं पयडीणं उदओ एवं अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि उवसम सम्मत्ते असंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

उपशम सम्यक्त्व असंयत गुणस्थान

उन्हीं उपशम सम्यक्त्वी जीवों के असंयत गुणस्थानालाप कहने पर – एक अविरत सम्यक्त्व गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस अपर्याप्त में सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति अपर्याप्तक में एक देवगति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, आहारकद्विक व औदारिक मिश्र बिना बारह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में दो योग, तीनों वेद अपर्याप्तक में एक पुरुष वेद, इक्कीस कषाय अपर्याप्तक में उन्नीस कषाय, तीन ज्ञान, एक असंयम, तीन दर्शन, छहों लेश्या अपर्याप्तक में तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, छह उपयोग, दस ध्यान (चार आर्त्त चार रौद्र, दो धर्म ध्यान), पैंतालीस आस्रव पर्याप्त में तेतालीस अपर्याप्त में तेतीस आस्रव, छब्बीस लाख जाति अपर्याप्तक में चार लाख जाति, एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ कुल कोटि अपर्याप्तक में छब्बीस लाख करोड़ कुल कोटि संख्यापेक्षा – पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग अपर्याप्तक में संख्यात, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन– लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14 राजू, काल – नानाजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट सात दिन रात्रि एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, चौंतीस भाव पर्याप्त में चौंतीस अपर्याप्त में छब्बीस, जघन्यावगाहना संख्यात अंगुल उत्कृष्ट संख्यात धनुष अथवा पाँच सौ पच्चीस धनुष*, पचहत्तर प्रकृतियों का बंध, सौ प्रकृतियों का उदय, एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार उपशम सम्यक्त्व में असंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ – किन्हीं आचार्यों के मतानुसार 14 दिन रात भी अन्तर बताया है तथा अवगाहना संख्यात अंगुल लेने का तात्पर्य यह है कि उपशम सम्यक्त्व सिर्फ गर्भजों में ही होता है यही कारण है कि गर्भज संख्यात अंगुल से कम अवगाहना वाले नहीं हो सकते उत्कृष्ट भी संख्यात धनुष इसका कारण समझना चाहिए। शेष कथन सुगम है। द्वितीयोपशम सम्यक्त्व के अनुसार चतुर्थ गुणस्थान में अपर्याप्त अवस्था में उपशम सम्यक्त्व हो सकता है।

* अवगाहना जो उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष कही है वह द्वितीयोपशम सम्यक्त्व की है प्रथमोपशम सम्यक्त्व की अपेक्षा तीन कोस भी होती है क्योंकि भोगभूमि में मनुष्यों तिर्यंचों की उक्त प्रमाण अवगाहना पायी जाती है। अन्तर का कथन भी द्वितीयोपशम सम्यक्त्व की अपेक्षा है क्योंकि द्वितीयोपशम सम्यक्त्व के साथ कोई जीव असंयत हुआ, अंतर्मुहूर्त रहा और संयत हो गया पुन: अंतर्मुहूर्त पश्चात् असंयत हो गया। इस प्रकार जघन्य अन्तर प्राप्त हुआ इसी प्रकार उत्कृष्ट भी जानना चाहिए शेष कथन सरल है। इतनी और विशेषता है कि प्रथमोपशम सम्यक्त्व का एक जीव की अपेक्षा अन्तर प्राप्त नहीं होता।

384. उपशम सम्यक्त्व संयमासंयम गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	संयतासंयत गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	2 मनुष्यगति, तिर्यञ्च गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	17 कषाय
12.	ज्ञान	3 ज्ञान
13.	संयम	संयमासंयम
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	द्रव्य से 6 लेश्या भाव से 3 शुभ लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	उपशम सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	6 उपयोग (3 ज्ञानो. + 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	11 ध्यान (4 आर्त्त +4 रौद्र + 3 धर्मध्यान)
22.	आस्रव	37 (17 कषाय+9 योग+11 अविरति)
23.	जाति	18 लाख
24.	कुलकोटि	57½ लाख करोड़
25.	संख्या	असंख्यात (पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग, एकजीवापेक्षा– ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. चौदह दिन रात, एकजीवापेक्षा – ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
30.	भाव	29 (औ. 14, क्षयो. 12, पा.2, औप. 1)
31.	अवगाहना	जघ. संख्यात अंगुल उ. संख्यात धनुष
32.	बन्ध	66 (77 प्रकृति में से 11 के बिना (आहारकद्विक, 4 अप्र. कषाय, औदारिक द्विक, मनु. द्वि. , मनुष्यायु)
33.	उदय	86 – (14 प्रकृति के बिना चतुर्थ गुणस्थान व्युच्छिन्न 14 प्रकृति बिना*[1])
34.	सत्त्व	147 (नरकायु बिना)
		*[1] अप्रत्याख्यानावरण कषाय 4, देव, नरक आयु, देव, नरक गति, देवगत्या., वैक्रियक द्विक, दुर्भग, अनादेय, अयशकीर्ति, इन 14 प्रकृति के बिना।

384. उवसम सम्मत्त संजमासंजम गुणट्ठाणं

तेसुं उवसम सम्मत्त संजदासंजद गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग संजदासंजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, मणुस्स तिरिक्ख बे गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, तिण्णि वेदा, सत्तदस कसाया, तिण्णि णाणाणि, एग संजमासंजमो, तिण्णि दंसणाणि, दव्वेण छल्लेस्सा भावेण तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, छ उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द तिण्णि धम्म एगारस झाणाणि, सत्ततीस आसवा, अट्ठदस लक्ख जादी, अद्धुत्तर सत्तावण्ण लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्स अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण चोद्दस रादिंद्याणि एगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, ऊणतीस भावा, जहण्णमवगहणं संखेज्ज अंगुल, उक्कस्सेण पणबीसुत्तर संखेज्ज धणू, छावट्ठि पयडीणं बंधो, छयासीदि पयडीणं उदओ, एवं सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि उवसम सम्मत्ते संजमासंजम गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

उपशम सम्यक्त्व संयमासंयम गुणस्थान

उन्हीं उपशम सम्यक्त्वी संयमासंयम गुणस्थान वर्ती जीवों के आलाप कहने पर – एक संयतासंयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्य तिर्यंच दो गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, तीनों वेद, सत्तरह कषाय, तीन ज्ञान, एक संयमासंयम, तीन दर्शन, द्रव्य से छहों लेश्या भाव से तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, (चार आर्त्त चार रौद्र तीन धर्म) ग्यारह ध्यान, सैंतीस आस्रव, अठारह लाख जाति, साढ़े सत्तावन लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – असंख्यात (पल्योपम का असंख्यातवां भाग), क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग, काल – नानाजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एकजीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट चौदह दिन रात एकजीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, उनतीस भाव, जघन्यावगाहना संख्यात अंगुल उत्कृष्ट संख्यात धनुष, छयासठ प्रकृतियों का बंध, छ्यासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार उपशम सम्यक्त्व में संयमासंयम गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– स्पर्शन यद्यपि सामान्य से व चतुर्थ गुणस्थान में जो कुछ कम आठ राजू कहा था वह प्रथमोपशम सम्यक्त्व की अपेक्षा से था क्योंकि देवों की प्रधानता होने के कारण पर्याप्तक अवस्था में वहाँ प्रथमोपशम सम्यक्त्व ही पाया जाता है क्योंकि द्वितीयोपशम सम्यक्त्व पर्याप्त अवस्था में केवल मनुष्यों में ही पाया जाता है और अपर्याप्त अवस्था में सिर्फ देवों में ही पाया जाता है किंतु अपर्याप्त अवस्था में उनका स्पर्शन लोक का असंख्यातवाँ भाग ही बनता है। इसलिए सिद्ध हुआ कि कुछ कम आठ राजू स्पर्शन मात्र प्रथमोपशम सम्यक्त्व में ही पाया जाता है। यहाँ संयतासंयतों में स्पर्शन लोक का असंख्यातवां भाग ही बनता है क्योंकि तिर्यंचों की प्रधानता है और तिर्यंचों में प्रथमोपशम के सिवाय द्वितीयोपशम नहीं पाया जाता। प्रथमोपशम सम्यक्त्व में विहार, वेदना, कषाय, विक्रिया समुद्घात पद ही पाये जाते हैं, मारणांतिक उपपाद आदि पद नहीं पाये जाते उनकी अपेक्षा स्पर्शन उक्त प्रमाण ही पाया जाता है। यद्यपि मनुष्यों में द्वितीयोपशम सम्यक्त्व पाया जाता है, किंतु उनका स्पर्शन भी लोक का असंख्यातवाँ भाग पाया जाता है। काल का कथन सुगम है अन्तर का कथन करते हुए कहते हैं चतुर्थ गुणस्थान का सात रात्रिदिवस पंचम गुणस्थान का चौदह रात्रि दिवस यह स्वभाव से ही है यद्यपि द्वितीय सिद्धांत की अपेक्षा यह अन्तर इक्कीस रात्रि दिवस भी पाया जाता है। एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त यथा कोई जीव उपशम सम्यक्त्व के साथ संयतासंयत हुआ अन्तर्मुहूर्त रहा और असंयत हो गया असंयत में अन्तर्मुहूर्त रहा और पुन: संयतासंयत हो गया इस प्रकार जघन्य अन्तर लब्ध हुआ उत्कृष्ट अन्तर कोई जीव उपशम सम्यक्त्व के साथ संयतासंयत हुआ पश्चात् असंयत हो गया अन्तर्मुहूर्त के बाद अप्रमत्त संयत हुआ पुन: प्रमत्त और उसके पश्चात् संयतासंयत हुआ इस प्रकार उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त हुआ। शेष कथन सुगम है।

385. उपशम सम्यक्त्व प्रमत्तसंयत गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	प्रमत्तसंयत गुण.
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	13 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	2 (सा., छे.)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	3 शुभ लेश्या (द्रव्य से 6 लेश्या)
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	उपशम सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	6 उपयोग
21.	ध्यान	7 (3 आर्त्त + 4 धर्मध्यान)
22.	आस्रव	22 (13 कषाय + 9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	संख्यात
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना व एक जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त[*1]
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. 15 दिन रात एक जीवापेक्षा – ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
30.	भाव	28 (औद.13, क्षयो. 12, पा.2 + औप.1)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	62 (66 में से 4 प्रत्याख्यान की कम करने पर)
33.	उदय	78 (86 में से 4 प्रत्या. कषाय, तिर्यंच गति, तिर्यंच आयु, उद्योत, नीच गोत्र के बिना)
34.	सत्त्व	146 (नरक, तिर्यंच आयु के बिना[*2])
		[*1] यहाँ पर नाना जीवों के अन्तर्मुहूर्त में व एक जीव के अन्तर्मुहूर्त में भी फर्क है क्योंकि नाना जीवों का अन्तर्मुहूर्त बड़ा है एक जीव का छोटा है विशेष जानने के लिए (षट्खण्डागम पु. 4 पृ. 324) का अवलोकन करें। [*2] यद्यपि जिस द्वितीयोपशम सम्यक्त्व वाले ने अनंतानुबंधी की विसंयोजना की है उसके एक सौ ब्यालीस का सत्त्व भी पाया जाताहै और जिसने परभव की आयु का बन्ध नहीं किया है उसके एक सौ इकतालीस का अथवा अनंतानुबंधी सहित एक सौ पैंतालीस का सत्त्व भी जानना चाहिए।

385. उवसमसम्मत्तं पमत्तसंजद गुणट्ठाणं

तेसुं उवसम सम्मत्तं पमत्त गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग पमत्तसंजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, मणुस्स गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, तिण्णिवेदा, तेरस कसाया, चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, तिण्णि दंसणाणि, तिण्णि सुहलेस्सा दव्वेण छलेस्सा भावेण तिण्णि सुहलेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, छ उवजोगा, सत्त झाणाणि, बाबीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा संखेज्ज, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उवकेक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पंचदसरादिंद्याणि एगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अट्ठबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, बासट्ठि पयडीणं बंधो, अट्ठसत्तदि पयडीणं उदओ, एवं छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि उवसम सम्मत्ते पमत्तसंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

उपशम सम्यक्त्व प्रमत्तसंयत गुणस्थान

उन्हीं उपशम सम्यक्त्वी प्रमत्त गुणस्थानवर्ती जीवों के आलाप कहने पर – एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, तीनों वेद, तेरह कषाय, चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, तीन दर्शन, तीन शुभ लेश्या द्रव्य से छहों लेश्या, भव्यसिद्धिक, उपशम सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, सात ध्यान, बाईस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – संख्यात क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवाँ भाग, काल – नानाजीवापेक्षा व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पन्द्रह दिन रात एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अट्ठाईस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, बासठ प्रकृतियों का बंध, अठहत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छियालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार उपशम सम्यक्त्व में प्रमत्तसंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– सारे पद सुगम हैं विशेषता इतनी है कि यहाँ केवल पर्याप्त अवस्था ही कही है अपर्याप्त नहीं क्योंकि उपशम सम्यक्त्व के साथ आहारकद्विक का उदय नहीं पाया जाता और प्रमत्त संयत में अपर्याप्त अवस्था आहारक शरीर के कारण ही प्राप्त होती है। काल का कथन द्वितीयोपशम सम्यक्त्व की अपेक्षा जघन्य एक समय कहा है उसका आशय यह है कि कोई जीव (मनुष्य) उपशम श्रेणी चढ़ा और ग्यारहवे गुणस्थान तक गया वहाँ से क्रमश: दशवे गुणस्थान में आया नौवे में आया आठवें सातवें में और प्रमत्त संयत हुआ एक समय रहा दूसरे समय में आयु क्षय के कारण मरण को प्राप्त हुआ और असंयत गुणस्थान के साथ देवों में उत्पन्न हुआ इसी प्रकार नाना जीवों की अपेक्षा भी काल जानना चाहिए। उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त सुगम है।

शंका – यहाँ प्रथमोपशम सम्यक्त्व क्यों नहीं ग्रहण किया ?

समाधान – नहीं किया क्योंकि प्रथमोपशम में मरण नहीं होता। अन्तर का कथन सुगम है कुछ भी व्याख्यान करने योग्य नहीं है शेष कथन सुगम है।

नोट : वस्तुत प्रथमोपशम सम्यक्त्व के साथ मन: पर्यय ज्ञान का निषेध है किन्तु द्वितीयोपशम सम्यक्त्व के साथ कोई विरोध नहीं है।

386. उपशम सम्यक्त्व अप्रमत्तसंयत गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	अप्रमत्तसंयत गुण.
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद (द्रव्य से पुरुष वेद)
11.	कषाय	13 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	2 (सा., छे.)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	3 शुभ लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	उपशम सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान
22.	आस्रव	22 (13 कषाय + 9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	संख्यात
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त एक जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. 15 दिन रात, एक जीवापेक्षा – ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
30.	भाव	28 (औद.13, क्षयो. 12, पा.2, औप.1)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	58 (77 प्रकृति में 19 कम करके क्योंकि 15 अबन्ध में दो आ.द्वि कम करे =13 तथा छटवें गुण. की व्यु. 6 प्रकृति)
33.	उदय	75 (पूर्व की अनुदय प्रकृति में तीन निद्रा निद्रा, प्रचला प्रचला, (स्त्यानगृद्धि जोड़ने पर)
34.	सत्त्व	146, 145, 141, 142*
		*(नरक तिर्यंच आयु रहित देवायु सहित एक सौ छ+यालीस, देवायु रहित एक सौ पैंतालीस, अनंतानुबंधी रहित देवायु सहित एक सौ ब्यालीस, देवायु व अनंतानुबंधी रहित एक सौ इकतालीस।)

386. उवसम सम्मत्त अपमत्तसंजद गुणट्ठाणं

तेसुं उवसम सम्मत्त अपमत्त गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अपमत्त गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, आहारेण विणा तिण्णि सण्णा, मणुस्स गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, तिण्णि वेदा दव्वेण एग पुरिस वेदो, तेरस कसाया, चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणां बे संजमा, तिण्णि दंसणाणि, तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्मज्झाणाणि, बाबीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा संखेज्ज, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्त एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पंचदस रादिंद्याणि एग जीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अट्ठबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, अट्ठावण्ण पयडीणं बंधो, पंचसत्तदि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं/पणदालुत्तर सयं/बादालुत्तर सयं/इगदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि उवसम सम्मत्ते अपमत्तसंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

उपशम सम्यक्त्व अप्रमत्तसंयत गुणस्थान

उन्हीं उपशम सम्यक्त्वी अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती जीवों के आलाप कहने पर – एक अप्रमत्त गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, आहार बिना तीन संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, तीनों वेद, द्रव्य से पुरुष वेद, तेरह कषाय, तीन ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, तीन दर्शन, तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्म ध्यान, बाईस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – संख्यात, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग, काल – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर – नाना जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट पन्द्रह दिन–रात एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अट्ठाईस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, अट्ठावन प्रकृतियों का बंध, पचहत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छयालीस/एक सौ पैतालीस/एक सौ ब्यालीस/एक सौ इकतालीस/एक सौ उनतालीस/एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार उपशम सम्यक्त्व में अप्रमत्तसंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :

शंका– प्रथमोपशम सम्यक्त्व कौन से गुणस्थान से कौन से गुणस्थान तक होता हैं ?

समाधान– प्रथमोपशम सम्यक्त्व चौथे गुणस्थान से सातवें गुणस्थान तक होता है क्योंकि यदि कोई द्रव्यलिंगी मुनि अनादि मिथ्यादृष्टि है यदि वह प्रथमोपशम सम्यक्त्व उत्पन्न करता है तो सीधा सातवां गुणस्थान होता है और यदि देशव्रती है तो पाँचवां गुणस्थान और यदि अव्रती है तो चौथा गुणस्थान होता है इसलिए चतुर्थ गुणस्थान से सप्तम गुणस्थान तक प्रथमोपशम सम्यक्त्व होता है इसलिए उत्कृष्ट अन्तर पन्द्रह दिन बतलाया है क्योंकि पन्द्रह दिन के अन्दर में कोई न कोई अप्रमत्त संयत के साथ उपशम सम्यग्दृष्टि हो जाता है यद्यपि द्वितीयोपशम भी होता है इसलिए दोनों प्रकार का उपशम सम्यक्त्व यहाँ पाया जाता है। काल का कथन पूर्व की तरह ही समझना चाहिए क्योंकि कोई एक जीव अथवा बहुत से जीव द्वितीयोपशम सम्यक्त्व के साथ अपूर्वकरण गुणस्थान से अप्रमत्त गुणस्थान में आये एक समय रहे और मरण को प्राप्त हुए इस प्रकार जघन्य काल प्राप्त हुआ, उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त सुगम है एक बार पुन: बता दे प्रथमोपशम सम्यक्त्व की अपेक्षा काल जघन्य भी अन्तर्मुहूर्त प्राप्त होता है और उत्कृष्ट भी किन्तु द्वितीयोपशम में श्रेणी से उतरते समय जघन्य काल एक समय पाया जाता है।

शंका – श्रेणी पर चढ़ते समय एक समय क्यों नहीं पाया जाता ?

समाधान – नहीं क्योंकि श्रेणी चढ़ने का प्रारंभ अपूर्वकरण से होता है यहाँ अप्रमत्त संयत गुणस्थान है अत: उतरते समय ही संभव है। शेष कथन सुगम है।

* प्रथमोशम सम्यक्त्व के साथ छह उपयोग पाये जाते हैं क्योंकि प्रथमोशम सम्यक्त्व के साथ मन:पर्यय ज्ञान का निषेध है किन्तु द्वितीयोपशम सम्यक्त्व के साथ मन:पर्यय ज्ञान भजनीय है। इसी प्रकार सभी मार्गणाओं व गुणस्थान में जानना चाहिए। अत: यहाँ सात उपयोग बन जाते हैं।

387. उपशम सम्यक्त्व अपूर्वकरण गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	अपूर्वकरण गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद (द्रव्य से पुरुष वेद)
11.	कषाय	13 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	2 (सा., छे.)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	उपशम सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग (4 ज्ञानो., 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान अथवा एक शुक्ल ध्यान
22.	आस्रव	22 (13 कषाय + 9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	299
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नानाजीवापेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त, एकजीवापेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नानाजीवापेक्षा – ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व, एकजीवापेक्षा – ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
30.	भाव	27 (औद.11, क्षयो. 12, औ.2, पा.2)*
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	58 (77 में से पूर्व की 19 प्रकृति कम करने पर 58 प्रकृति का बन्ध)
33.	उदय	72 (75 में से तीन प्रकृति कम करके (अर्द्ध नाराच, कीलक, असंप्राप्तासृंपाटिका सं.)
34.	सत्त्व	146 (नरक व तिर्यंच आयु बिना)
		*(औदयिक = 1 गति, 4 कषाय, 3 लिंग, एक अज्ञान, एक असिद्धत्व, एक लेश्या, क्षयो.–4 ज्ञान, 3 दर्शन, 5 लब्धि, औपशमिक 2–औप. सम्यक्त्व, औप. चारित्र, पारिणामिक 2–भव्यत्व, जीवत्व)

387. उवसम सम्मत्त अपुव्वयरण गुणट्ठाणं

तेसुं उवसम सम्मत्तं अपुव्वयरण गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अपुव्वयरण गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, तिण्णि सण्णा, मणुस्स गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, तिण्णि वेदा, तेरस कसाया, चत्तारिणाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, तिण्णि दंसणाणि, एगं सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम सम्मत्तं सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्म एग सुक्कज्झाणं वा, बाबीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा णवणउदि उत्तर बे सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एग जीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, सत्तबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, अट्ठावण्ण पयडीणं बंधो, बेसत्तदि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं होंति।

इदि उवसम सम्मत्ते अपुव्वयरण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

उपशम सम्यक्त्व अपूर्वकरण गुणस्थान

उन्हीं उपशम सम्यक्त्वी अपूर्वकरण गुणस्थानवर्ती जीवों के आलाप कहने पर एक अपूर्वकरण गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, तीन संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, तीन वेद, तेरह कषाय, चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, तीन दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्म ध्यान अथवा एक शुक्ल ध्यान, बाईस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – दो सौ निन्यानवे, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवाँ भाग, काल – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, सत्ताईस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, अट्ठावन प्रकृतियों का बंध, बहत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार उपशम सम्यक्त्व में अपूर्वकरण गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ द्वितीयोपशम सम्यक्त्व पाया जाता है उसकी अपेक्षा कथन है ध्यान का जो व्याख्यान किया है वह दोनों आचार्यों के दोनों मतो के अनुसार किया है शेष पद सुगम है। इतनी और विशेषता है कि काल जघन्य एक समय पाया जाता है वो उतरते समय ही पाया जाता है, श्रेणी चढ़ते समय तो अन्तर्मुहूर्त से कम नहीं पाया जाता क्योंकि आठवें गुणस्थान में श्रेणी चढ़ते हुए जब तक भय और जुगप्सा की उदय व्युच्छित्ति नहीं होती तब तक मरण नहीं होता और भय जुगुप्सा की व्युच्छित्ति अपूर्वकरण के काल का संख्यात बहुभाग बीतने पर होती है इसलिए चढ़ते हुए अपूर्वकरण गुणस्थान का एक समय नहीं पाया जाता। उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त सुगम है कोई विशेषता नहीं है। अन्तर नाना जीवों का जघन्य एक समय यानि एक जीव या बहुत से जीव एक साथ अपूर्वकरण में दिखाई दिये द्वितीय समय में अन्य गुणस्थान में चले गये अत: अपूर्वकरण में एक भी जीव नहीं है तृतीय समय में पुन: जीव अपूर्वकरण को प्राप्त हुये यह जघन्य अन्तर प्राप्त है उत्कृष्ट अन्तर वर्ष पृथक्त्व जो कि सुगम है। एक जीव का अन्तर ज.उ. अन्तर्मुहूर्त है ये भी सुगम है शेष कथन सुगम है।

388. उपशम सम्यक्त्व अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	अनिवृत्तिकरण गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	2 संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद (द्रव्य से पुरुष वेद)
11.	कषाय	7 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	2 (सा., छे.)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	उपशम सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान या एक पृथक्त्व वितर्क शुक्ल ध्यान
22.	आस्रव	16 (7 कषाय + 9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	299
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना व एक जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त एकजीवापेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व एकजीवापेक्षा – ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
30.	भाव	27 (औद.11, क्षयो. 12, औ.2, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	22 (77 प्रकृति में से 55 कम करके (36 आठवे गुण. की व्युच्छित्ति + 19 पूर्व की अबन्ध प्रकृति)
33.	उदय	66 (पूर्व की 72 प्रकृति में से 6(हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा) कम करने पर)
34.	सत्त्व	146 (तिर्यंच, नरकायु बिना)

388. उवसम सम्मत्त अणियट्टियरण गुणट्ठाणं

तेसुं उवसम सम्मत्तं अणियट्टियरण गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अणियट्टियरण गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, मेहुण परिग्गह विणा बे सण्णा, मणुस्स गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, तिण्णि वेदा, सत्त कसाया, केवल णाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, केवल दंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्म एग सुक्कज्झाणं वा, सोडस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा णवणउदि उत्तर बे सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणेग जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, छब्बीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, बाबीस पयडीणं बंधो, छावट्ठि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं बादाल उत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि उवसम सम्मत्ते अणियट्टियरण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

उपशम सम्यक्त्व अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

उन्हीं उपशम सम्यक्त्वी अनिवृत्तिकरण गुणस्थानवर्ती जीवों के आलाप कहने पर – एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, मैथुन परिग्रह दो संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, तीनों वेद, सात कषाय, केवल ज्ञान बिना चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, केवलदर्शन बिना तीन दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्म या एक शुक्ल ध्यान, सोलह आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – दो सौ निन्यानवे, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग, काल – नानाजीवापेक्षा व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट– अन्तर्मुहूर्त, अन्तर–नाना जीवापेक्षा जघन्य–एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, सत्ताईस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, बाईस प्रकृतियों का बंध, छ्यासठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छयालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार उपशम सम्यक्त्व में अनिवृत्तिकरण गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ संज्ञा का कथन करते हुए सातवे गुणस्थान में आहार संज्ञा समाप्त हो जाती है तथा अपूर्वकरण में भय कषाय की उदय व्युच्छुत्ति हो जाने पर भय संज्ञा समाप्त हो जाती है अनिवृत्तिकरण में जब तक वेद का उदय है तब तक मैथुन संज्ञा पायी जाती है वेदों के समाप्त होने पर मैथुन संज्ञा समाप्त हो जाती है। शेष सभी पद सुगम है विशेषता इतनी और है कि जघन्य काल मरण की अपेक्षा एक समय प्राप्त होता है क्योंकि इस गुणस्थान में मरण हो सकता है। यद्यपि अपूर्वकरण गुणस्थान में श्रेणी चढ़ते हुए एक समय प्राप्त नहीं हो सकता था मात्र उतरते हुए ही एक समय प्राप्त होता था किंतु यहाँ चढ़ते समय व उतरते समय मरण संभव है इसलिए दोनों अवस्थाओं में जघन्य काल एक समय प्राप्त हो जाता है इतना और बता दें मरण उसी का हो सकता है जिसने पहले से आयु का बन्ध किया है यदि आयु का बन्ध नहीं किया है तो उसका मरण भी संभव नहीं है। क्योंकि जिसकी भुज्यमान आयु का अन्तर्मुहूर्त शेष बचा है और आगामी आयु का बन्ध नहीं किया है तो ऐसा जीव उपशम श्रेणी नहीं माड़ सकता इसी प्रकार शेष सूक्ष्म सांपराय व उपशांत मोह गुणस्थान में भी जानना चाहिए शेष कथन सुगम है।

389. उपशम सम्यक्त्व सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	परिग्रह संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	अवेद
11.	कषाय	1 (सूक्ष्म लोभ कषाय)
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	सूक्ष्मसाम्पराय संयम
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	उपशम सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग (4 ज्ञानो. + 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान या एक पृथक्त्व वितर्क शुक्ल ध्यान
22.	आस्रव	10 (9 योग + 1 लोभ कषाय)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	299
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना व एक जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीवापेक्षा – ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
30.	भाव	21 (औद.5, क्षयो.12, पा.2, औप.2)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	17 (5 ज्ञानावरण, 4 दर्शनावरण, 5 अन्तराय, यश:कीर्ति, उच्च गोत्र, साता वेदनीय)
33.	उदय	60 (66 में से 6 (तीन वेद,संज्वलन क्रोध, मान, माया)
34.	सत्त्व	146 (नरकायु, तिर्यंचायु बिना)

389. उवसम सम्मत्त सुहुमसांपराय गुणट्ठाणं

तेसुं उवसम सम्मत्तं सुहुमसंपराय गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि - एग सुहुमसंपराय गुणट्ठाणं, सण्णी, पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, एग परिग्गह सण्णा, मणुस्स गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, अवेदी, एग सुहुम लोह कसाओ, केवल णाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, सुहुमसांपराय संजमो, तिण्णि दंसणाणि, सुक्क लेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्म एग सुक्कज्झाणं वा, दस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा णवणउदि उत्तर बे सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, इगबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, सत्त दस पयडीणं बंधो, सट्ठि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्च होंति।

इदि उवसम सम्मत्ते सुहुम संपराय गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

उपशम सम्यक्त्व सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान

उन्हीं उपशम सम्यक्त्वी सूक्ष्मसांपराय गुणस्थानवर्ती जीवों के आलाप कहने पर - एक सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, एक परिग्रह संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, अवेद एक सूक्ष्मलोभ कषाय, केवल ज्ञान बिना चार ज्ञान, सूक्ष्मसांपराय संयम, तीन दर्शन, शुक्ललेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्म ध्यान या एक शुक्ल ध्यान, दस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा दो सौ निन्यानवे, क्षेत्रापेक्षा - लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन - लोक का असंख्यातवां भाग, काल - नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर - नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, इक्कीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, सत्तरह प्रकृतियों का बंध, साठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छियालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार उपशम सम्यक्त्व में सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान तक सूक्ष्म लोभ के कारण परिग्रह संज्ञा पायी जाती है इसी गुणस्थान में उसका क्षय अथवा उपशम हो जाता है इसलिए आगे के गुणस्थानों में परिग्रह संज्ञा नहीं पायी जाती है, सही अर्थों में ये ही निर्ग्रंथ हैं ये ही चौबीस प्रकार के परिग्रह के पूर्ण त्यागी है इनसे निचली श्रेणी में व्यवहार से निर्ग्रंथ हैं। नौ योग व एक कषाय होने के कारण दस प्रकार का आस्रव कहा है शेष पद सुगम है। जो थोड़ी बहुत विशेषता है उन्हें ही यहाँ पर कहा जा रहा है। काल का कथन पूर्व में कर चुके है। अन्तर का कथन करते हैं यद्यपि पूर्व में नाना जीवों की अपेक्षा कथन किया जा चुका है इसलिए नाना जीवों का सुगम है, एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त से तात्पर्य है कोई जीव सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान से उपशांत मोह को प्राप्त हुआ और अन्तर्मुहूर्त रहा, पुन: सूक्ष्म सांपराय गुणस्थान को प्राप्त हुआ इस प्रकार जघन्य अन्तर हुआ उत्कृष्ट अन्तर भी इसी प्रकार प्राप्त होता है। विशेषता इतनी है कि प्रथम बार श्रेणी चढ़कर उतरने वाले जीव के उत्कृष्ट अन्तर पाया जाता है, द्वितीय बार श्रेणी चढ़कर उतरने वाले जीव के जघन्य अन्तर पाया जाता है।

शंका - जघन्य अन्तर काल एक समय क्यों नहीं कहा क्योकि उपशांत कषाय गुणस्थान का जघन्य काल एक समय है ?

समाधान - नहीं क्योंकि उपशांत मोह गुणस्थान का जघन्य काल एक समय मरण की अपेक्षा पाया जाता है और मरण करके सीधा असंयत (चतुर्थ) गुणस्थान को प्राप्त होता है।

शंका - श्रेणी चढ़कर उतरते हुए जीव के अन्तर अन्तर्मुहूर्त कहा है किंतु श्रेणी से उतार कर अन्तर्मुहूर्त में पुन: श्रेणी चढ़ाकर अन्तर क्यों नहीं कहा ?

समाधान - नहीं क्योंकि श्रेणी से उतरकर वेदक सम्यक्त्व में जाए बिना पुन: श्रेणी नहीं चढ़ सकता और हमें अन्तर उपशम में ही निकालना है इसलिए उक्त कथन नहीं किया शेष कथन सुगम है।

390. उपशम सम्यक्त्व उपशान्त मोह गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	उपशान्त मोह गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	0 (उपशांत संज्ञा)
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	उपशांत वेद
11.	कषाय	उपशांत कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	यथाख्यातसंयम
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	उपशम सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग (4 ज्ञानो. + 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	एक पृथक्त्व वितर्क शुक्ल ध्यान
22.	आस्रव	9 (योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	299
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीवापेक्षा – निरन्तर
30.	भाव	20 (औ.4, क्षयो. 12, पा.2, औप.2)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	1 साता वेदनीय
33.	उदय	59 (पूर्व की 60 प्रकृतियों में से एक संज्वलन लोभ प्रकृति कम करने पर 59 प्रकृति का उदय)
34.	सत्त्व	146, 145, 142, 141 (नरकायु, तिर्यंचायु बिना)

390. उवसम सम्मत्त उवसंतमोह गुणट्ठाणं

तेसुं उवसम सम्मत्तं उवसंत मोह गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग उवसंतमोह गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, उवसंत सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, अवेदी, उवसंत कसाया, केवलणाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, जहाक्खाद संजमो, तिण्णि दंसणाणि, सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, एयं पिथक्कवितक्क सुक्कज्झाणं, णवआसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुल कोडीणं,संखावेक्खा णवणउदि उत्तर बे सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एगजीवावेक्खा णिरंतरं, बीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, एग सादावेयणीयं बंधो, ऊणसट्ठि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं पणदालुत्तर सयं बादालुत्तर सयं इगदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि उवसम सम्मत्ते उवसंत मोह गुणट्ठाणालाव सम्मत्ता।

उपशम सम्यक्त्व उपशांत मोह गुणस्थान

उन्हीं उपशम सम्यक्त्वी उपशांत गुणस्थानवर्ती जीवों के आलाप कहने पर – एक उपशांतमोह गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, क्षीण संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, अवेद, अकषाय, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान, यथाख्यात संयम, तीन दर्शन, शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, एक पृथक्त्व वितर्क शुक्ल ध्यान, नौ आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – दो सौ निन्यानवे, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवाँ भाग, काल – नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा निरंतर, बीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक साता वेदनीय का बंध, उनसठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस/एक सौ ब्यालीस/एक सौ इकतालीस/एक सौ उनतालीस/एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार उपशम सम्यक्त्व उपशांत मोह गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ मोहनीय कर्म की इक्कीस प्रकृतियों को पूर्ण रूप से दबा देता है इसलिए संज्ञातीत है, अवेदी है, उपशांत कषाय है, शेष कथन सुगम है विशेषता यह है कि काल का कथन यद्यपि सुगम है फिर भी कुछ व्याख्यान करते हैं। जघन्य काल एक समय भव क्षय की अपेक्षा बन जाता है। क्योंकि एक जीव अथवा संख्यात जीव एक साथ उपशांत मोह गुणस्थान को प्राप्त हुए एक समय तक रहे द्वितीय समय में मर कर असंयत गुणस्थान के साथ देवों में उत्पन्न हुए इस प्रकार नाना जीव व एक जीव का जघन्य काल प्राप्त हुआ उत्कृष्ट काल कालक्षय की अपेक्षा सुगम है। अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीव की अपेक्षा जघन्य व उत्कृष्ट निरंतर है क्योंकि उसी सम्यक्त्व के साथ दो बार उपशांत गुणस्थान प्राप्त करना संभव नहीं है बिना दो बार उपशांत मोह के अन्तर प्राप्त हो नहीं सकता शेष कथन सुगम है।

391. संज्ञी मार्गणा सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	1–12	1–12	1,2,4,6
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4	–	–
6.	गति	चारों गति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	15 योग	11	4
10.	वेद	3 वेद	–	–
11.	कषाय	25 कषाय	–	–
12.	ज्ञान	7 ज्ञान	–	5 (कुअवधि, मन:पर्यय बिना)
13.	संयम	7 (अ., संयमासं.,सा., छे.,प., सू.सा., यथा)	–	3 (असंयम, सा., छे.)
14.	दर्शन	3 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य, अभव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	6 (मि., सा., मिश्र., उप., क्षा., क्षयो.)	6	5 (मिश्रबिना)
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	आहारक, अनाहारक
20.	उपयोग	10 उपयोग (7 ज्ञानो. + 3 दर्शनो.)	–	8 उपयोग
21.	ध्यान	14 (4 आर्त्त, 4 रौद्र, 4 धर्म., 2 शुक्ल)	–	12 (4 आ., 4 रौ., 4 ध.
22.	आस्रव	57 (25+12+15+5)	53 (25+12+11+5)	46 (25+12+4+5)
23.	जाति	26 लाख		
24.	कुलकोटि	108½ लाख करोड़ (14 लाख करोड़ मनुष्य 14+ नारकी 25 लाख करोड़ + तिर्यंच 43½ लाख करोड़+26 लाख देव)		
25.	संख्या	असंख्यात जगत् श्रेणी प्रमाण/देवों से कुछ अधिक		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व वि.वे.विक्रि.कषाय मा..उ. कुछ कम 8/14 राजू, सर्वलोक		
28.	काल	नाना जीवापेक्षा – सर्वकाल एक जीवापेक्षा– ज. क्षुद्रभव ग्रहण प्रमाण उ. सागरोपम शत पृथक्त्व		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर एक जीव अपेक्षा – ज. क्षुद्रभव ग्रहण प्रमाण उ. अनंतकाल रूप असंख्यात पुद्गल परावर्तन		
30.	भाव	46 (औद. 21, क्षयो. 18, औप.2, पा.3, क्षा.2) अपर्याप्त 43 (औद.21, क्षयो. 15, क्षा.2, औप.2, पा.3)		
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का असंख्यातवां भाग उ. 1000 योजन		
32.	बन्ध	120		
33.	उदय	113		
34.	सत्त्व	148		

391. सण्णी मग्गणा सामण्णं

अह सण्णी मग्गणाणुवादेण सामण्णं सण्णी जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एयत्तो बारस गुणट्ठाणाणि अपज्जत्तेसु एगं बे चउ छ गुणट्ठाणाणि, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, पंचदस जोगा पज्जत्तेसु एगारस अपज्जत्तेसु चत्तारि जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, केवल णाणेण विणा सत्त णाणाणि अपज्जत्तेसु पंच णाणाणि, सत्त संजमा अपज्जत्तेसु असंजम सामाइय छेदोवट्ठावणा तिण्णि संजमा, केवल दंसणेण विणा तिण्णि दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्वसिद्धिया दोण्णि, छ सम्मत्ता अपज्जत्तेसु मिस्सेण विणा पंच सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, दस उवजोगा अपज्जत्तेसु अट्ठ उवजोगा, चोद्दस झाणाणि अपज्जत्तेसु बारस झाणाणि, सत्तावण्ण आसवा पज्जत्तेसु तिवण्ण अपज्जत्तेसु छादाल आसवा, छब्बीस लक्ख जादी, अद्धट्ठुत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा असंखेज्ज जगसेढी पमाणो/साहिय देवत्तो, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागो, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा वेगुव्विय वेयणा कसाय समुग्घादे अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा व सव्वलोयो, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण खुद्दाभव गहणपमाणं उक्कस्सेण सायरोवम सदपुधत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण खुद्दाभवोगहण पमाणं उक्कस्सेण अणंतकाल सरुव असंखेज्ज पोग्गलपरायट्टं, पज्जत्तेसु छादाल अपज्जत्तेसु तिदाल भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा, उक्कस्सेण जोजण सहस्सं बीसुत्तर सयं पयडीणं बंधो, तेरसुन्तर सयं पयडीण उदओ एवं अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सण्णी मग्गणाए सामण्णालाव सम्मत्ता।

संज्ञी मार्गणा सामान्य

अब संज्ञी मार्गणा के अनुवाद से सामान्य संज्ञी जीवों के आलाप कहने पर, एक से बारह गुणस्थान अपर्याप्त में एक दो चार छह गुणस्थान संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस अपर्याप्त में सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, पंद्रह योग पर्याप्त में ग्यारह अपर्याप्त में चार योग, तीनों वेद, पच्चीस कषाय, केवल ज्ञान बिना सात ज्ञान अपर्याप्त में पाँच ज्ञान, सातों संयम अपर्याप्त में (असंयम, सामायिक, छेदोपस्थापना) तीन संयम, केवल दर्शन बिना तीन दर्शन, छहों लेश्या, भव्यसिद्धिक अभव्यसिद्धिक, छहों सम्यक्त्व अपर्याप्त में मिश्र बिना पाँच सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, दस उपयोग अपर्याप्त में आठ उपयोग, चौदह ध्यान अपर्याप्तक में बारह ध्यान, सत्तावन आस्रव पर्याप्तक में तिरेपन अपर्याप्तक में छ्यालीस आस्रव, छब्बीस लाख जाति, एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – असंख्यात जगत्श्रेणी प्रमाण/देवों से कुछ अधिक, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग विहार–विक्रिया वेदना कषाय अपेक्षा कुछ कम 8/14 राजू व सर्वलोक, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य क्षुद्रभव ग्रहण प्रमाण उत्कृष्ट सागरोपम शत पृथक्त्व, अंतर – नानाजीवापेक्षा निरंतर एकजीवापेक्षा जघन्य क्षुद्रभव उत्कृष्ट अनंतकाल रूप असंख्यात पुद्गल परावर्तन, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग, उत्कृष्ट एक हजार योजन, तिरेपन भाव, एक सौ बीस प्रकृतियों का बंध, एक सौ तेरह प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार संज्ञी मार्गणा में सामान्यालाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ संज्ञी मार्गणा का कथन है असंज्ञियों का विकलत्रय के कथन के अनुसार समझना चाहिए सभी पद सुगम हैं ध्यान का कथन करते हैं क्योंकि पर्याप्तक में क्षीण मोह गुणस्थान में दो शुक्ल ध्यान पाये जाते हैं बारह ध्यान अन्य निचले गुणस्थानों में पाये जाते हैं, बारहवें गुणस्थान में अपर्याप्तक अवस्था नहीं होती, चौथे गुणस्थान में आर्त्त ध्यान रौद्र ध्यान धर्म ध्यान व छटवे गुणस्थान में आर्त्त और धर्म ध्यान पाये जाते हैं। प्रथम व द्वितीय गुणस्थान में आर्त्त, रौद्र ध्यान ही पाये जाते हैं और इन्हीं गुणस्थानों में अपर्याप्तक होता है इसलिए अपर्याप्त अवस्था में चार आर्त्त, चार रौद्र, चार धर्मध्यान इस प्रकार बारह ध्यान होते हैं। शेष पदों को स्थगित करके यहाँ काल को कहते हैं कोई भी जीव यदि संज्ञी पंचेन्द्रियों में भ्रमण करता है तो सात सौ आठ सौ सागर तक ही भ्रमण करता है इससे अधिक नहीं उसके बाद असंज्ञियों में अथवा एकेन्द्रियों में चला जाता है। क्योंकि त्रस पर्याय दो हजार सागर के लिए मिली है जिसमें संज्ञी का शत पृथक्त्व सागर ही प्राप्त होता है शेष समय असंज्ञियों में रहता है पश्चात् एकेन्द्रियों में चला जाता है।

इसी प्रकार अन्तर जघन्य से क्षुद्रभव सुगम है उत्कृष्ट असंख्यात पुद्गल परावर्तन स्वरूप अनंत काल है क्योंकि संज्ञी पर्याप्त से च्युत होकर अनंतकाल तक स्थावरों में रहता है यही उत्कृष्ट अन्तर है शेष कथन सुगम है।

392. संज्ञी मिथ्यात्व गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	मिथ्यात्व		
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4	–	–
6.	गति	चारों गति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	13 योग (आहारक द्विक बिना)	10 योग	3 योग
10.	वेद	3 वेद	–	–
11.	कषाय	25 कषाय	–	–
12.	ज्ञान	3 कुज्ञान	–	2 कुज्ञान
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य, अभव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	आहारक, अनाहारक दोनों
20.	उपयोग	5 उपयोग	–	4 उपयोग
21.	ध्यान	8	–	–
22.	आस्रव	55 (25+12+5+13)	52 (25+12+5+10)	45 (25+12+5+3)
23.	जाति	26 लाख		
24.	कुलकोटि	108½ लाख करोड़		
25.	संख्या	असंख्यात जगत् श्रेणी प्रमाण (देवों से कुछ अधिक)		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग कुछ कम 8/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवापेक्षा – सर्वलोक, एक जीवापेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. सागरोपम शत पृथक्त्व		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर, एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम 132 सागर		
30.	भाव	34 (औद. 21, क्षयो. 10, पा.3) अपर्या. 33 (कुअवधि ज्ञान बिना)		
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का असंख्यात भाग उ. 1000 योजन		
32.	बन्ध	117 (आहारकद्विक व तीर्थंकर प्रकृति बिना)		
33.	उदय	117 (आहारकद्विक व तीर्थंकर प्रकृति बिना)		
34.	सत्त्व	148		

392. सण्णी मिच्छत्त गुणट्ठाणं

तेसुं सण्णी मिच्छइट्ठी जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग मिच्छत्त गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि अपज्जत्तेसु बे अण्णाणाणि, असंजमो, बे दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्वसिद्धिया, मिच्छत्त सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, अट्ठज्झाणाणि, पणवण्ण आसवा पज्जत्तेसु बावण्ण अपज्जत्तेसु पणदाल आसवा, छब्बीस लक्ख जादी, अद्धट्ठुत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा असंखेज्ज जगसेढी पमाणं/देवत्तो साहियो, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठचोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण सायरोवम सदपुधतं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण बे छावट्ठि सायरोवमाणि देसूणाणि, चउतीस भावा पज्जत्तेसु चउतीस अपज्जत्तेसु तेतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा, उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सत्तदसुत्तर सयं पयडीणं बंधो, सत्तदसुत्तर सयं पयडीणं उदओ, अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सण्णी मग्गणाए मिच्छाइट्ठि गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

संज्ञी मिथ्यात्व गुणस्थान

उन्हीं संज्ञी मिथ्यादृष्टि जीवों के आलाप कहने पर – एक मिथ्यात्व गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस अपर्याप्त सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीनों वेद, पच्चीस कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्तक में दो अज्ञान, असंयम, दो दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक, मिथ्यात्वसम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में आहारक अनाहारक दोनों, पाँच उपयोग अपर्याप्तक में चार उपयोग, आठ ध्यान, पचपन आस्रव पर्याप्त में बावन अपर्याप्त में पैंतालीस आस्रव, छब्बीस लाख जाति, एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – असंख्यात जगत् श्रेणी प्रमाण देवों से कुछ अधिक, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14 राजू, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट सागरोपम शत पृथक्त्व, अंतर – नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम दो छ्यासठ सागर, चौंतीस भाव पर्याप्त में चौंतीस अपर्याप्त में तेतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ सत्तरह प्रकृतियों का बंध, एक सौ सत्तरह प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार संज्ञी मार्गणा में मिथ्यादृष्टि गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ सभी पद सुगम है क्योंकि पहले इसका विवेचन कर चुके हैं अन्तर में विशेषता है क्योंकि कोई संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव प्रथमोपशम सम्यक्त्व को प्राप्त हुआ और वेदक हो गया छ्यासठ सागर तक वेदक सम्यक्त्व के साथ रहा पश्चात् अन्तर्मुहूर्त के लिए मिश्र गुणस्थान में गया पश्चात् पुन: वेदक सम्यग्दृष्टि हो गया और छ्यासढ सागर तक रहा पश्चात् मिथ्यादृष्टि हो गया इस प्रकार दो छ्यासढ सागर अन्तर प्राप्त हुआ। अवगाहना लब्ध्यपर्याप्तक की अपेक्षा घनांगुल का असंख्यातवां भाग प्राप्त होती है शेष कथन सुगम है।

393. संज्ञी सासादन गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	सासादन	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त, अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	चारों गति	–	नरक बिना तीन गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	13 योग (आहारकद्विक बिना)	10 योग	3 योग
10.	वेद	3 वेद	–	–
11.	कषाय	25 कषाय	–	–
12.	ज्ञान	3 कुज्ञान	–	2 कुज्ञान
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	सासादन	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक, अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	5 उपयोग		4 उपयोग
21.	ध्यान	8	–	–
22.	आस्रव	50 (आहारक द्विक काय योग+5 मि.बिना)	47 (25+12+10)	40 (25+12+3)
23.	जाति	26 लाख	26 लाख	22 लाख (4 लाख नारकी बिना)
24.	कुलकोटि	108½ लाख करोड़	108½ लाख करोड़	83½ लाख करोड़ (25 ला.क. नरकबिना)
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14 राजू मा. ओघवत्		
28.	काल	नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीवापेक्षा– ज. एक समय उ. 6 आवली		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीवापेक्षा – ज. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग उ. सागरोपम शत पृथक्त्व		
30.	भाव	32 (औद. 20, क्षयो. 10, पा.2) अपर्याप्त 30 (औ. 19, क्षयो. 9, पा.2)		
31.	अवगाहना	जघ. संख्यात अंगुल	उ. संख्यात धनुष	
32.	बन्ध	101 (तीर्थंकर + आहारकद्विक + 16 प्र. गु. की व्युच्छिन्न प्रकृति)		
33.	उदय	106 (गुणस्थानोक्त)		
34.	सत्त्व	145 (तीर्थंकर, आहारकद्विक बिना)		

393. सण्णी सासण गुणट्ठाणं

तेसुं सण्णी सासण गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि - एग सासण गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी अपज्जत्तेसु णिरय विणा तिण्णि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि अपज्जत्तेसु विभंगेहि विणा बे अण्णाणाणि, असंजमो, बे दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया, सासण सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, अट्ठ झाणाणि, पंचास आसवा पज्जत्तेसु सत्तदाल अपज्जत्तेसु दाल आसवा, छब्बीस लक्ख जादी अपज्जत्तेसु बाबीस लक्ख जादी, अद्धट्ठुत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं अपज्जत्तेसु अद्धुत्तर तिअसीदि लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा मारणंतियो ओघवद्, कालो णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छावली, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण सायरोवम सदपुधत्तं, बत्तीस भावा अपज्जत्तेसु तीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा संखेज्जांगुल वा उक्कस्सेण संखेज्ज धणू, एगुत्तर सयं पयडीणं बंधो, छ उत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं पणदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सण्णी मग्गणाए सासण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

संज्ञी सासादन गुणस्थान

उन्हीं संज्ञी सासादनी जीवों के आलाप कहने पर - एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस अपर्याप्त में सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति अपर्याप्तक में नरक बिना तीन गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीनों वेद, पच्चीस कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्तक में दो अज्ञान, असंयम, दो दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, सासादन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में दोनों, पाँच उपयोग अपर्याप्तकों में चार उपयोग, आठ ध्यान, पचास आस्रव पर्याप्त में सैंतालीस अपर्याप्त में चालीस आस्रव, छब्बीस लाख जाति अपर्याप्त में बाईस लाख जाति, एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ कुल कोटि अपर्याप्त में साढ़े तेरासी लाख करोड़ कुलकोटि, संख्यापेक्षा - पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग, क्षेत्रापेक्षा - लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन - लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14 मा. ओघवत् राजू, काल - नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एकजीवापेक्षा जघन्य एकसमय उत्कृष्ट छह आवली, अंतर - नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एकजीवापेक्षा जघन्य पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट कुछ कम सागरोपम शत पृथक्त्व, बत्तीस भाव अपर्याप्तक में तीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवा भाग/संख्यात अंगुल उत्कृष्ट संख्यात धनुष एक सौ एक प्रकृतियों का बंध, एक सौ छह प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ पैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार संज्ञी मार्गणा में सासादन गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- सभी पद गुणस्थान अथवा अन्य मार्गणा वत ही हैं अपर्याप्तक अवस्था में नरक बिना तीन गति पहले कह आये हैं, क्योंकि सासादन गुणस्थान वाला नरक नहीं जाता ऐसा स्वभाव ही है और स्वभाव में कोई कारण नहीं होता अत: अपर्याप्त अवस्था में तीन गति होती है। उन्हीं के अनुसार जाति व कुल कोटि कही गई हैं। क्षेत्र सुगम है स्पर्शन भी सुगम है क्योंकि विहार, वेदना, विक्रिया व कषायादि सभी पदों की अपेक्षा आठ राजू होता है। काल का कथन सुगम है पहले कह चुके हैं क्योंकि नाना जीव यदि एक-एक करके अथवा अनेक जीव अधिक से अधिक पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग क्रमश: सासादन सम्यक्त्व को प्राप्त हो तो जघन्य से एक समय उत्कृष्ट से पल्य के असंख्यातवे भाग काल तक उक्त सम्यक्त्व को प्राप्त होते रहेंगे, इस प्रकार नाना जीवों का काल हुआ। एक जीव-माना कोई उपशमसम्यग्दृष्टि के काल में एक समय शेष रहा और अनंतानुबंधी चारों में से किसी का भी उदय आया तो सासादन गुणस्थान हो जाता है ऐसा जीव एक समय सासादन सम्यक्त्वी रहा, दूसरे समय में मिथ्यात्व को प्राप्त हुआ, यह एक समय प्राप्त हो गया, अथवा उपशम सम्यक्त्व के काल में छह आवली शेष रहने पर उक्त कषाय का उदय हुआ तो उत्कृष्ट काल प्राप्त हुआ। अन्तर भी सुगम है मात्र एक जीव का उत्कृष्ट अन्तर कहते हैं कोई जीव संज्ञी पंचेन्द्रिय हुआ, अन्तर्मुहूर्त में पर्याप्तियों से परिपूर्ण हो उपशम सम्यक्त्व को प्राप्त हुआ, पश्चात् अनंतानुबंधी के उदय में सासादनी हुआ पश्चात् मिथ्यादृष्टि हो अन्तर को प्राप्त हुआ शत पृथक्त्व सागर तक संज्ञी मिथ्यादृष्टि ही रहा तथा अन्तिम अन्तर्मुहूर्त में उपशम सम्यक्त्व को प्राप्त कर सासादन गुणस्थान को प्राप्त हुआ। धवला ग्रंथ के अनुसार मिथ्यात्व में जाकर मरण कर असंज्ञियों में गया किंतु कषाय पाहुड के अनुसार सासादन में ही मरण कर असंज्ञियों में चला गया। इस प्रकार कुछ कम शत पृथक्त्व सागर उत्कृष्ट अन्तर प्राप्त हुआ शेष कथन सुगम है। इसी प्रकार तृतीय मिश्र गुणस्थान में जानना चाहिए विशेषता इतनी है जहाँ जघन्य काल एक समय व उत्कृष्ट छह आवली कहा है वहाँ जघन्योत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त कहना चाहिए शेष सुगम है।

394. संज्ञी मिश्र गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	सम्यग्मिथ्यात्व
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	चारों गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	10 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	21 कषाय
12.	ज्ञान	3 मिश्रज्ञान
13.	संयम	असंयम
14.	दर्शन	2 दर्शन
15.	लेश्या	6 लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	सम्यग्मिथ्यात्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 उपयोग
21.	ध्यान	8
22.	आस्रव	43 (21 कषाय + 10 योग + 12 अविरति)
23.	जाति	26 लाख
24.	कुलकोटि	108½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14 राजू
28.	काल	नानाजीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नानाजीवापेक्षा–ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीवापेक्षा–ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम सागरोपमशत पृथक्त्व
30.	भाव	32 (औद. 20, क्षयो. 10, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उ. 1000 योजन
32.	बन्ध	74 (गुणस्थानवत् जानना)
33.	उदय	100 (गुणस्थानोक्त जानना चाहिए)
34.	सत्त्व	147 (तीर्थंकर बिना)

394. सण्णी सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणं

तेसुं सण्णी सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, इगबीस कसाया, तिण्णि मिस्स णाणाणि, एग असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया, मिस्स सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, अट्ठ झाणाणि, तिदाल आसवा, छब्बीस लक्ख जादी, अद्धट्ठुत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण सायरोवम सदपुधत्तं, बत्तीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, चउसत्तदि पयडीणं बंधो, सयं पयडीणं उदओ एवं सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सण्णी मग्गणाए सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

संज्ञी सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान

उन्हीं संज्ञी सम्यग्मिथ्यात्वी जीवों के आलाप कहने पर एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, दस योग, तीनों वेद, इक्कीस कषाय, तीन मिश्रज्ञान, असंयम, चक्षु अचक्षु दो दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, मिश्र सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, आठ ध्यान, तेतालीस आस्रव, छब्बीस लाख जाति, एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा–पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 14 भागों में से आठ भाग, काल – नानाजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम सागरोपम शत पृथक्त्व, बत्तीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, चौहत्तर प्रकृतियों का बंध, सौ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार संज्ञी मार्गणा में सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान समाप्त हुआ।

395. संज्ञी असंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	असंयत गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त, अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	चारों गति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	13 योग	10 योग	3 योग
10.	वेद	3 वेद	–	दो वेद (स्त्री वेद बिना)
11.	कषाय	21 कषाय	–	20 कषाय (स्त्री वेद बिना)
12.	ज्ञान	3 ज्ञान	–	–
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	3 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो., उप.)	–	क्षायिक, क्षयोपशम, उपशम*
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक व अनाहारक	आहारक	दोनों
20.	उपयोग	6 उपयोग	–	–
21.	ध्यान	10 ध्यान	–	–
22.	आस्रव	46 (21 कषाय+13योग+12 अविरति)	43 (21+12+10)	35 (20+12+3)
23.	जाति	26 लाख	26 लाख	26 लाख
24.	कुलकोटि	108½ लाख करोड़	–	–
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग	–	–
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग	–	–
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग कुछ कम 8/14 राजू, उपपाद 6/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवापेक्षा – सर्वकाल, एक जीवापेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. 66 सागर		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर, एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. सागरोपम शत पृथक्त्व		
30.	भाव	36 (औद. 20, क्षयो. 12, क्षा.1, औ.1, पा.2) अपर्याप्तक में 35 (औद.19 क्षयो. 12, क्षा.1 औप.1, पा.2)		
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उ. 1000 योजन		
32.	बन्ध	77 (तीर्थंकर, देवायु, मनुष्यायु सहित गुणस्थानवत्)		
33.	उदय	104 (गुणस्थानोक्त)		
34.	सत्त्व	148		
		* उपशम सम्यक्त्व द्वितीयोपशम की अपेक्षा देवगति में ही बनता है शेष गतियों में नहीं होता इसलिए अपर्याप्तक में भी तीनों सम्यक्त्व जानना चाहिए।		

395. सण्णी असंजद गुणट्ठाणं

तेसुं सण्णी अविरद सम्मत्त गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग असंजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस अप्पज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, तेरस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु बे वेदा, इगबीस कसाया अपज्जत्तेसु बीस कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो अणाहारिणो दोण्णि पज्जत्तेसु आहारिणो अपज्जत्तेसु दोण्णि, छ उवजोगा, दस झाणाणि, छादाल आसवा पज्जत्तेसु तिदाल अपज्जत्तेसु पणत्तीस आसवा, छब्बीस लक्ख जादी, अद्धट्ठुत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा उववादावेक्खा छचोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण छावट्ठि सायरोवमाणि, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण सायरोवम सदपुधत्तं, छत्तीस भावा अपज्जत्तेसु पणतीस भावा , जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सत्तसत्तदि पयडीणं बंधो, चत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सण्णी मग्गणाए असंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

संज्ञी असंयत गुणस्थान

उन्हीं संज्ञी अविरत सम्यक्त्वी जीवों के आलाप कहने पर एक असंयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस अपर्याप्त में सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, तेरह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में तीन योग, तीन वेद अपर्याप्तक में दो वेद, इक्कीस कषाय अपर्याप्तक में बीस कषाय, तीन ज्ञान, असंयम, तीन दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी , आहारक अनाहारक दोनों पर्याप्तक में आहारक अपर्याप्तक में आहारक अनाहारक दोनों, छ उपयोग, दस ध्यान, छ्यालीस आस्रव पर्याप्त में तेतालीस अपर्याप्त में पैंतीस आस्रव, छब्बीस लाख जाति, एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम आठ बटे चौदह राजू उपपादापेक्षा छह बटे चौदह राजू, काल नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एकजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट छ्यासठ सागर, अंतर नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट सागरोपम शत पृथक्त्व, छत्तीस भाव अपर्याप्तक में पैंतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, सतत्तर प्रकृतियों का बंध, एक सौ चार प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार संज्ञी मार्गणा में असंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ देव गति में अपर्याप्तक अवस्था में तीनों सम्यक्त्व पाये जाते हैं, क्योंकि द्वितीयोपशम सम्यक्त्व के साथ मरण हो सकता है। नरक और तिर्यंचों में अपर्याप्तक अवस्था में उपशम सम्यक्त्व नहीं पाया जाता, मनुष्यों में अपर्याप्त अवस्था में उपशम सम्यक्त्व कदापि नहीं पाया जाता, तिर्यंचों में व नारकियों में वेदक सम्यक्त्व कृतकृत्य वेदक की अपेक्षा पाया जाता है किंतु मनुष्यों में अपर्याप्त अवस्था में क्षायिक व वेदक सम्यक्त्व पाया जाता है तिर्यंचों में केवल भोगभूमि में ही पाया जाता है कर्मभूमि में नहीं पाया जाता शेष कथन सुगम है। आहारक तीन शरीर छह पर्याप्तियों के योग्य पुद्गल वर्गणाओं को जब यह जीव ग्रहण करता है उस समय आहारक कहलाता है तथा ग्रहण नहीं करता है तब अनाहारक कहलाता है विग्रह गति में अनाहारक ही होता है जब शरीर धारण कर लेता है उस समय आहारक है, किंतु उस समय अपर्याप्तक होता है विग्रह गति में भी अपर्याप्त माना है इसलिए अपर्याप्तक में आहारक अनाहारक दोनों स्वीकार किये हैं। स्पर्शन में कुछ कम आठ राजू देवगति की अपेक्षा स्वीकार किया हैं क्योंकि तीसरी पृथ्वी तक देवों का भ्रमण होता है इसलिए दो राजू वहाँ तक हो गया छह राजू अच्युत कल्प तक क्योंकि मध्यलोक से छह राजू ऊपर है, कुछ कम से तात्पर्य तीसरी पृथ्वी के नीचे एक हजार योजन तक नारकियों के बिल नहीं है वहाँ देव नहीं जाते इसलिए कुछ कम कहा शेष कथन सुगम है। उत्कृष्ट काल यद्यपि उपशम सम्यक्त्व का अन्तर्मुहूर्त, क्षायिक का कुछ अधिक तेतीस सागर क्षयोपशम का छ्यासठ सागर क्योंकि उसके बाद नियम से सम्यग्मिथ्यात्व में चला जाता है अथवा मिथ्यात्व में चला जायेगा। अन्तर जिस प्रकार सासादन सम्यक्त्व में कहा है वैसा ही यहाँ समझना चाहिए शेष कथन सुगम है।

396. संज्ञी संयतासंयत गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	संयमासंयम गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	2 (मनुष्य, तिर्यञ्च गति)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	17 कषाय
12.	ज्ञान	3 ज्ञान
13.	संयम	संयमासंयम
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	3 शुभ लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो., उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	6 उपयोग (3 ज्ञानो. + 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	11 (4 आर्त्त, 4 रौद्र, 3 धर्मध्यान)
22.	आस्रव	37 (17 कषाय + 11 अवि. + 9 योग)
23.	जाति	18 लाख
24.	कुलकोटि	57½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 6/14 राजू
28.	काल	नाना जीवापेक्षा – सर्वकाल, एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम एक कोटि पूर्व
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर, एक जीवापेक्षा – अन्तर्मुहूर्त उ. सागरोपम शत पृथक्त्व
30.	भाव	31 भाव (औद.14, क्षयो. 13, क्षा.1, औप.1, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उ. 1000 योजन
32.	बन्ध	67 (गुणस्थानोक्त)
33.	उदय	87 (चतुर्थ गुणस्थान में 17 प्रकृतियों की व्युच्छित्ति होने के कारण)
34.	सत्त्व	147 (नरकायु बिना)

396. सण्णी संजमासंजम गुणट्ठाणं

तेसुं सण्णी देससंजद गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग संजदासंजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, मणुस्स तिरिक्ख बे गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, तिण्णि वेदा, सत्तदस कसाया, तिण्णि णाणाणि, संजमासंजमो, तिण्णि दंसणाणि, तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, छ उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द तिण्णि धम्म एगारस झाणाणि, सत्ततीस आसवा, अट्ठारस लक्ख जादी, अद्धुत्तर सत्तावण्ण लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व छच्चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पुव्वकोडीणं देसूणं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण सायरोवम सदपुधत्तं, इगतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सडसट्ठि पयडीणं बंधो, सत्तासीदि पयडीणं उदओ, सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सण्णी मग्गणासु संजमासंजम गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

संज्ञी संयमासंयम गुणस्थान

उन्हीं संज्ञी देशसंयत जीवों के आलाप कहने पर – एक संयतासंयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्य तिर्यंच दो गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, तीनों वेद, सत्तरह कषाय, तीन ज्ञान, संयमासंयम, तीन दर्शन, तीन शुभ लेश्या, भव्व सिद्धिक, उपशम क्षायिक क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी,आहारक, छह उपयोग, चार आर्त्त चार रौद्र तीन धर्म ग्यारह ध्यान, सैंतीस आस्रव, अठारह लाख जाति, साढ़े सत्तावन लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवाँ भाग कुछ कम 6/14 राजू, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एकजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम एक पूर्व कोटि, अंतर – नानाजीवापेक्षा निरंतर एकजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट सागरोपम शत पृथक्त्व, इकतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, सड़सठ प्रकृतियों का बंध, सत्तासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार संज्ञी मार्गणा में संयमासंयम गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– स्पर्शन यद्यपि लोक का असंख्यातवाँ भाग कहा क्योंकि यहाँ तिर्यंचों की प्रधानता है, तिर्यंच अधिक विहार नहीं करते इसलिए लोक का असंख्यातवाँ भाग कहा है, मारणांतिक समुद्घातगत कुछ कम छह राजू बनता है, क्योंकि देशव्रती तिर्यंचों का उत्पाद अच्युत कल्प तक होता है अत: वहाँ तक मारणांतिक समुद्घात पाया जाता है। उपपाद यहाँ संभव नहीं है। यद्यपि सासादन गुणस्थान से क्षीण कषाय गुणस्थान तक का कथन जैसा गुणस्थानों में कहा है वैसा ही जान लेना चाहिए शेष कथन सुगम है। काल जघन्य सुगम है उत्कृष्ट काल को कहते हैं कोई जीव मोहनीय कर्म की अट्ठाईस प्रकृतियों की सत्ता वाला मिथ्यादृष्टि सम्मूर्च्छन तिर्यंचों में उत्पन्न हुआ वहाँ सर्व लघु काल में पर्याप्त हो सम्यक्त्व व संयमासंयम को एक साथ प्राप्त हुआ और एक कोटि पूर्व तक रहा अन्त में मरकर सौधर्मादिअच्युत स्वर्ग पर्यंत उत्पन्न हुआ। इस प्रकार उत्कृष्ट काल कुछ कम एक पूर्व कोटि हुआ अन्तर का कथन सरल है। शेष सभी पद सरल हैं।

397. संज्ञी प्रमत्त संयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	प्रमत्त संयत गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त, अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	मनुष्य गति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	11 योग	10 योग	1 योग (आहारक मिश्र)
10.	वेद	3 वेद	–	1 पुरुष वेद
11.	कषाय	13 कषाय	–	11 कषाय (नपु. व स्त्री वेद के बिना))
12.	ज्ञान	4 ज्ञान	–	3 ज्ञान (मन:पर्यय ज्ञान के बिना)
13.	संयम	3 (सा., छे., परि.)	–	2 (सा., छे.)
14.	दर्शन	3 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	3 लेश्या/छहों लेश्या	–	3 (शुभलेश्या)
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो., उप.)	–	2 सं. (उपशम बिना)
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक	–	–
20.	उपयोग	7 उपयोग (4 ज्ञानो. 3 दर्शनो.)	–	6 उपयोग (मन:पर्यय ज्ञानो. बिना)
21.	ध्यान	7 ध्यान	–	–
22.	आस्रव	24 (13 कषाय + 11 योग)	23	12 (11 क.+1 यो.)
23.	जाति	14 लाख	–	–
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़	–	–
25.	संख्या	संख्यात (59398206)	–	27
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग	–	–
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग	–	–
28.	काल	नाना जीवापेक्षा–सर्वकाल एक जीवापेक्षा–ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त अपर्या. का नाना व एक जीवापेक्षा ज. उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त		
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा–निरन्तर अपर्याप्तक में ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा–ज. अन्तर्मुहूर्त उ. सागरोपम शत पृथक्त्व		
30.	भाव	31 (औद. 13, क्षयो. 14, पा.2, क्षा.1, उप.1) अपर्याप्तक में 27*		
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ	उ. 525 धनुष	
32.	बन्ध	63 (गुणस्थानवत्)		
33.	उदय	81 (गुणस्थानवत्)		
34.	सत्त्व	146 (गुणस्थानवत्)		
		* चौंतीस भाव भी संभव है जब छह लेश्या स्वीकार करेंगे तो।		

397. सण्णी पमत्तसंजद गुणट्ठाणं

तेसुं सण्णी पमत्त संजद जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग पमत्त संजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, दस सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, एग मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, एगारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु एग आहार मिस्सकायजोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु एग पुरिसवेदो, तेरस कसाया अपज्जत्तेसु ग्यारस कसाया, चत्तारि णाणाणि अपज्जत्तेसु मणपज्जयेण विणा तिण्णि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा विहार सुद्धि तिण्णि संजमा अपज्जत्तेसु विहार सुद्धिओ विणा बे संजमा, तिण्णि दंसणाणि, तिण्णि सुह लेस्सा अहवा छल्लेस्सा अपज्जत्तेसु तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता अपज्जत्तेसु उवसमेण विणा बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा अपज्जत्तेसु छ उवजोगा, तिण्णि अट्ट चत्तारि धम्म सत्त झाणाणि, चउबीस आसवा पज्जत्तेसु तेबीस अपज्जत्तेसु बारस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पंच कोडि तिणउदि लक्ख अट्ठणउदि सहस्स छ उत्तर बे सयं अपज्जत्तेसु सत्तबीस, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं अपज्जत्तेसु जहण्णुकस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण सायरोवम सदपुधत्तं अपज्जत्तेसु णाणा जीवावेक्खा सायरोवमसद पुद समओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतामुहुत्तं उक्कसेण, इगतीस भावा अहवा चउतीस भावा अपज्जत्तेसु सत्तवीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठहत्थं उक्कस्सेण पणवीसुत्तर पंच सयं धणू, तिसट्ठि पयडीणं बंधो, एगासीदि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सण्णी मग्गणाए पमत्तसंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

संज्ञी प्रमत्तसंयत गुणस्थान

उन्हीं संज्ञी प्रमत्तसंयत जीवों के आलाप कहने पर – एक प्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, दस सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, एक मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, ग्यारह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में एक आहारक मिश्रकाय योग, तीनों वेद अपर्याप्तक में एक पुरुष वेद, तेरह कषाय अपर्याप्तक में ग्यारह कषाय, चार ज्ञान अपर्याप्त में मन: पर्यय बिना तीन ज्ञान, सामायिक – छेदोपस्थापना परिहार विशुद्धि तीन संयम अपर्याप्तक में दो संयम, तीन दर्शन, तीन शुभ लेश्या अथवा छहों लेश्या अपर्याप्तक में तीन शुभ लेश्या, भव्यसिद्धिक, उपशम क्षायिक क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व अपर्याप्त में उपशम बिना दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग अपर्याप्तक में छह उपयोग, (तीन आर्त्त चार धर्म) सात ध्यान, चौबीस आस्रव पर्याप्त में तेईस अपर्याप्त में बारह आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पाँच करोड़ तेरानवे लाख अट्ठानवे हजार दो सौ छह अपर्याप्तक में सताईस, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवाँ भाग, काल – नाना जीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – नानाजीवापेक्षा निरंतर अपर्याप्तक में जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट सागरोपम शत पृथक्त्व, इकतीस भाव अथवा चौतीस भाव अपर्याप्तक में सत्ताईस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, तिरसेठ प्रकृतियों का बंध, इक्यासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार संज्ञी मार्गणा में प्रमत्तसंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ सभी पद सुगम है, कुछ विशेषता है उन्हें बतलाते हैं। अपर्याप्त अवस्था में एक पुरुष वेद ही होता है ये पूर्व में भी बता चुके हैं इसी कारण कषायों में, भावों अथवा आस्रवों में और जिनका आपस में संबंध है उनमें फर्क आ जाता है। लेश्या आचार्य पूज्यपाद स्वामी अथवा किन्ही अन्य आचार्यो ने प्रमत्त गुणस्थान में कदाचित् छहों लेश्या स्वीकार की हैं, इसलिए छह लेश्या लिखी हैं किंतु अपर्याप्तक अवस्था में तीन शुभ लेश्या ही होती हैं क्योंकि आहारक पुतला शुभ लेश्या में ही निकलता है अशुभ लेश्या में नहीं निकलता है। अशुभ लेश्या में अशुभ तैजस पुतला निकलता है जो बिलाव के आकार का सिन्दूरवर्ण क्रोध में धधकता हुआ जो बारह योजन तक नष्ट कर देता है इसलिए प्रमत्त गुणस्थान में छहो लेश्या स्वीकार की हैं किंतु यहाँ अशुभ लेश्या की मुख्यता न होने के कारण आचार्य भगवन् वीरसेन स्वामी आदि ने तीन शुभ लेश्या ही स्वीकार की हैं। संख्या सामान्य की तरह है कोई फर्क नहीं है अपर्याप्तक में सत्ताईस हैं क्योंकि आहारक शरीर वाले अधिक से अधिक चौवन हो सकते हैं आहारक मिश्र वाले उनसे आधे अर्थात् सत्ताईस हो सकते हैं, आहारक मिश्र काययोग वालों का काल भी जघन्य उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त ही होता है अन्तर में भी फर्क है, नाना जीवों में वर्ष पृथक्त्व का अन्तर होता है, एक जीव का सामान्यवत जानना चाहिए शेष सुगम है। बन्ध, उदय, सत्त्व गुणस्थानवत् जानना चाहिए।

398. संज्ञी मार्गणा अप्रमत्तसंयत गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	अप्रमत्तसंयत गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 संज्ञा (आहार बिना)
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	13 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	3 संयम (सा., छे., परि.)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	3 शुभ लेश्या
16.	भव्य	भव्यत्व
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो., उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान
22.	आस्रव	22 (9 योग + 13 कषाय)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	संख्यात (29699103)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीवापेक्षा – सर्वकाल, एक जीवापेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा – निरन्तर, एक जीवापेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. सागरोपम शत पृथक्त्व
30.	भाव	31 (औद. 13, क्षयो. 14, पा.2, क्षा.1, उप.1)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	59
33.	उदय	76
34.	सत्त्व	146

398. सण्णी अपमत्तसंजद गुणट्ठाणं

तेसुं सण्णी अपमत्तसंजद जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अपमत्तसंजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, आहारेण विणा तिण्णि सण्णा, एग मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, दव्वेण पुरिस वेदो, तेरस कसाया, केवलणाणेण विणा चत्तारि णाणाणि, तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्मज्झाणाणि, बाबीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा बे कोडि छण्णउदि लक्ख णवणउदि सहस्स तिउत्तर सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण सायरोवम सदपुधत्तं, इगतीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, उणसट्ठि पयडीणं बंधो, छसत्तदि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सण्णी मग्गणाए अपमत्तसंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

संज्ञी अप्रमत्तसंयत गुणस्थान

उन्हीं संज्ञी अप्रमत्तसंयत जीवों के आलाप कहने पर – एक अप्रमत्तसंयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, आहार बिना तीन संज्ञाएँ, एक मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नो योग, तीनों वेद द्रव्य से पुरुष वेद, तेरह कषाय, केवलज्ञान बिना चार ज्ञान, तीन संयम, तीन दर्शन, तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्मध्यान, बाईस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – दो करोड़ छ्यानवे लाख निंन्यानवे हजार एक सौ तीन, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवाँ भाग, काल– नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – नानाजीवापेक्षा निरंतर एकजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट सागरोपम शत पृथक्त्व, इकतीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, उनसठ प्रकृतियों का बंध, छिहत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार संज्ञी मार्गणा में अप्रमत्तसंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ सभी पद सुगम हैं जो विशेषता है उसे कहते हैं काल का जो कथन है उसको कहते हैं नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल सुगम है, एक जीव की अपेक्षा जघन्य एक समय क्योंकि जीव प्रमत्तसंयत से अप्रमत्त हुआ अथवा अपूर्वकरण से अप्रमत्त भाव को प्राप्त हुआ एक समय रहा द्वितीय समय में मरण कर असंयत देव हो गया इस प्रकार जघन्य काल एक समय प्राप्त हुआ उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त सुगम है क्योंकि उक्त गुणस्थान का काल ही अन्तर्मुहूर्त है। अन्तर नाना जीवों का सुगम है क्योंकि निरंतर है यानि ऐसा एक भी समय नहीं होता जब इस मनुष्य लोक में सप्तम गुणस्थानवर्ती मुनिराज न हो एक जीव का जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है, क्योंकि अप्रमत्त गुणस्थान से अन्य गुणस्थान में जाकर पुन: अप्रमत्त में अन्तर्मुहूर्त से कम समय में वापस नहीं आ सकता और उत्कृष्ट अन्तर सात सौ आठ सौ सागर क्योंकि संज्ञी मार्गणा का काल ही इतना है शेष कथन सुगम है।

399. संज्ञी मार्गणा अपूर्वकरण गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	अपूर्वकरण गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	13 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	2 (सा., छे.)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (क्षा., उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग (4 ज्ञानो., 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान / एक शुक्ल ध्यान (प्रथम)
22.	आस्रव	22 (9 योग + 13 कषाय)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	897 (उप. 299, क्षपक 598)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	उपशामक=नाना जीवापेक्षा – ज. एक समय, उ. अन्तर्मुहूर्त, एक जीवापेक्षा ज. एक समय, उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक= नाना व एक जीवापेक्षा– ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उपशामक=नाना जीवापेक्षा–ज. एक समय, उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीवापेक्षा–ज. अन्तर्मुहूर्त, उ. सागरोपम शत पृथक्त्व क्षपक=नाना जीवापेक्षा– ज. एक समय, उ. 6 माह एक जीवापेक्षा–निरन्तर
30.	भाव	29 (औद.11, क्षयो. 12, क्षा.2, औप.2, पा.2) (उप. 28, क्षपक 27)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	58 (गुणस्थानवत्)
33.	उदय	72 (गुणस्थानवत्)
34.	सत्त्व	क्षपक – 138 उपशम– 146, 142, 138

399. सण्णी अपुव्वयरण गुणट्ठाणं

तेसुं सण्णी अपुव्वयरण गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अपुव्वयरण गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासों छ पज्जत्ती, दस पाणा, तिण्णि सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा, तेरस कसाया, चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, तिण्णि दंसणाणि, एग सुक्कलेस्सा, भव्व सिद्धिया, खइय ओवसमिय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्मज्झाणाणि एग सुक्कज्झाणं वा, बाबीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा सत्तणउदि उत्तर अट्ठ सयं उवसामगेसु णवणउदि उत्तर बे सयं खवगेसु अट्ठणउदि उत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो उवसामगेसु णाणेग जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेग जीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण सायरोवम सद पुधत्तं खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण छम्मास एगजीवावेक्खा णिरंतरं, ऊणतीस भावा खवगेसु सत्तलीस उवसामगेसु अट्ठलीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, अट्ठावण्ण पयडीणं बंधो, वे सत्तदि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं पयडीणं उणदालुत्तर अट्ठतीसोत्तरसयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सण्णी मग्गणाए अपुव्वयरण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

संज्ञी अपूर्वकरण गुणस्थान

उन्हीं संज्ञी अपूर्वकरण गुणस्थान जीवों के आलाप कहने पर – एक अपूर्वकरण गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, तीन संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, तीन वेद, तेरह कषाय, चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, तीन दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिक व उपशम दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्म ध्यान या एक शुक्ल ध्यान, बाईस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – आठ सौ सत्तानवे उपशामक में दो सौ निंन्यानवे क्षपक पाँच सौ अट्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवाँ भाग, काल – उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपक – नाना व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट सागरोपम शतपृथक्त्व क्षपक नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह माह एकजीवापेक्षा निरंतर, उनतीस भाव क्षपक में सत्ताईस औपशमिक में अट्ठाईस, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, अट्ठावन प्रकृतियों का बंध, छ्यासठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस ब्यालीस उनतालीस, अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार संज्ञी मार्गणा में अपूर्वकरण गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– सभी पद सुगम है कुछ व्याख्यान करने योग्य नहीं है गुणस्थानवत् जानना चाहिए।

400. संज्ञी अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	अनिवृत्तिकरण गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	2 संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	13 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	2 (सा., छे.)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (क्षा., उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान / एक शुक्ल ध्यान (प्रथम)
22.	आस्रव	22 (13 क. + 9 यो.)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	897 (उपशम श्रेणी वाले 299 क्षपक श्रेणी वाले 598)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	उपशामक=नाना जीव व एक जीवापेक्षा–ज. एक समय, उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक= नाना जीव व एक जीवापेक्षा– ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उपशामक=नाना जीवापेक्षा–ज. एक समय, उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीवापेक्षा–ज. अन्तर्मुहूर्त, उ. सागरोपमशत पृथक्त्व क्षपक=नाना जीवापेक्षा– ज. एक समय, उ. 6 माह एक जीवापेक्षा–निरन्तर
30.	भाव	29 (औद.11, क्षयो. 12, क्षा.2, औप. 2, पा.2) क्षपक सत्ताईस, औप. अट्ठाईस
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	22 (गुणस्थानवत्)
33.	उदय	66 (गुणस्थानवत्)
34.	सत्त्व	146 से 138 प्रकृति

400. सण्णी अणियट्टियरण गुणट्ठाणं

तेसुं सण्णी अणियट्टियरण गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अणियट्टियरण गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, मेहुण परिग्गह बे सण्णा, मणुस्सगदी, पंचेंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, तिण्णि वेदा दव्वेण एगपुरिस वेदो, तेरस कसाया, चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, तिण्णि दंसणाणि, एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्म एग सुक्कझाणं वा, बाबीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा सत्तणउदि उत्तर अट्ठ सयं उवसामगेसु णवणउदिउत्तर बे सयं खवगेसु अट्ठणउदि उत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो उवसामगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण सायरोवम सदपुधत्तं खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छम्मास एगजीवावेक्खा णिरंतरं, ऊणतीस भावा खवगेसु सत्तबीस उवसामगेसु अट्ठबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, बाबीस पयडीणं बंधो, छावट्ठि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं अडतीसुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सण्णी मग्गणाए अणियट्टियरण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

संज्ञी अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

उन्हीं संज्ञी अनिवृत्तिकरण गुणस्थानवर्ती जीवों के आलाप कहने पर एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, मैथुन परिग्रह दो संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, तीनों वेद द्रव्य से एक पुरुषवेद, तेरह कषाय, चार ज्ञान, सामायिक छेदोपस्थापना दो संयम, तीन दर्शन, शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्म ध्यान या एक शुक्ल ध्यान, बाईस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – आठ सौ संत्तानवे उपशामक दो सौ निंन्यानवे क्षपक पाँच सौ अन्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवाँ भाग, काल – उपशामक में नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपक – नाना व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट सागरोपम शत पृथक्त्व क्षपक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह माह एक जीवापेक्षा निरंतर, उनतीस भाव क्षपकों में सत्ताईस उपशामक अट्ठाईस, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, बाईस प्रकृतियों का बंध, छ्यासठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छयालीस से अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार संज्ञी मार्गणा में अनिवृत्तिकरण गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– सभी पद गुणस्थानवत् अथवा अन्य मार्गणाओं में जैसा व्याख्यान किया है वैसा ही जान लेना चाहिए शेष सुगम है।

401. संज्ञी मार्गणा सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	सूक्ष्म साम्पराय
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	1 परिग्रह
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	अवेद
11.	कषाय	सूक्ष्म लोभ
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	सूक्ष्मसाम्पराय
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (क्षा., उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान अथवा एक शुक्ल ध्यान
22.	आस्रव	10 (9 योग + 1 सूक्ष्म लोभ क.)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	897 (उपशामक 299 क्षपक 598)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	उपशामक=नाना जीवों की अपेक्षा- ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक - नाना जीवापेक्षा ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त एक जीव की अपेक्षा - उपशामक में ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक - ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उपशामक=नाना जीवापेक्षा-ज. एक समय, उ. वर्ष पृथक्त्व, क्ष.-ज. एक समय उ. 6 माह उपशामक=एक जीव की अपेक्षा- ज. अन्तर्मुहूर्त उ. सागरोपम शत पृथक्त्व क्ष.- निरन्तर
30.	भाव	23 (औ.5, क्षयो. 12, क्षा. 2, उप. 2, पा.2) उपशामक-22 क्षपकों में 21 भाव
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	17 (गुणस्थानोक्त)
33.	उदय	60 (गुणस्थानोक्त)
34.	सत्त्व	उपशम - 146, 145, 142, 141, 139, 138 क्षपक- 102

401. सण्णी सुहुमसंपराय गुणट्ठाणं

तेसुं सण्णी सुहुमसांपराय गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग सुहुमसंपराय गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, एग परिग्गह सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, अवेदी, एग सुहुम लोह कसाओ, चत्तारि णाणाणि, सुहुमसांपराय संजमो तिण्णि दसंणाणि, एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्म एग सुक्कज्झाणं वा, दस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा सत्तणउदिउत्तर अट्ठ सयं उवसामगेसु णवणउदिउत्तर बे सयं खवगेसु अट्ठणउदिउत्तर पंचसयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो उवसामगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेग जीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण सायरोवम सदपुधतं खवगेसु णाणा जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छम्मासा एग जीवावेक्खा णिरतरं, तेबीस भावा उवसामगेसु बाबीस खवगेसु इगबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थ उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, सत्तदस पयडीणं बंधो, सट्ठि पयडीणं उदओ, एवं छादालुत्तर सयं दो उत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सण्णी मग्गणाए सुहमसंपराय गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

संज्ञी सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान

उन्हीं संज्ञी सूक्ष्मसाम्पराय जीवों के आलाप कहने पर – एक सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, एक परिग्रह संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, अवेद, एक सूक्ष्मलोभ कषाय, चार ज्ञान, एक सूक्ष्मसाम्पराय संयम, तीन दर्शन, शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्मध्यान या एक शुक्ल ध्यान, दस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा आठ सौ संत्तानवें, उपशामक दो सौ निंन्यानवे क्षपक पाँच सौ अट्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवाँ भाग, काल उपशामक नाना व एकजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपक नाना व एकजीवापेक्षा जघन्य उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर उपशामक जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट सागरोपम शत पृथक्त्व क्षपकों में नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह मास एक जीवापेक्षा निरंतर, तेईस भाव उपशामक में बाईस क्षपक में इक्कीस भाव, जघन्य अवगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, सत्तरह प्रकृतियों का बंध, साठ प्रकृतियों का उदय, एक सौ छ्यालीस से एक सौ दो प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार संज्ञी मार्गणा में सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– सभी सुगम है। उपशामकों में एक सौ छ्यालीस, एक सौ पेंतालीस, एक सौ ब्यालीस, एक सौ इकतालीस, एक सौ उनतालीस, एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व पाया जाता है क्षपकों में एक सौ दो प्रकृति का सत्त्व पाया जाता है, क्योंकि अनिवृत्तिकरण में छत्तीस और उससे पूर्व सात दर्शन मोह की तथा तीन आयु सत्ता से बाहर थी इस प्रकार छ्यालीस प्रकृति यहाँ नहीं पाई जाती।

402. संज्ञी उपशान्त मोह गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	उपशान्त मोह गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय जीव समास
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	उपशांत संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	अवेद
11.	कषाय	उपशांत कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	यथाख्यात संयम
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक दो सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग (4 ज्ञानो., 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	एक शुक्ल ध्यान
22.	आस्रव	9 (योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	299
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना व एक जीवापेक्षा– ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा– ज. एक समय उ. वर्ष पृथकत्व एक जीवापेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. सागरोपम शत पृथक्त्व
30.	भाव	21 भाव (औद.4, क्षयो. 12, क्षा. 1, औप.2, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	1 साता वेदनीय
33.	उदय	59
34.	सत्त्व	146, 145, 141, 142, 139, 138

402. सण्णी उवसंतमोह गुणट्ठाणं

तेसुं सण्णी उवसंतमोह गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग उवसंतमोह गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, उवसंत सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, अवेदी, उवसंत कसाया, चत्तारि णाणाणि, जहाक्खाद संजमो, तिण्णि दंसणाणि, एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, एग सुक्कज्झाणं, णव आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा णवणउदिउत्तर बे सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंत्तोमुहुत्तं उक्कस्सेण सायरोवम सदपुधत्तं, इगबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, एग सादावेयणीणं बंधो, ऊणसटिठ पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं बादालुत्तर सयं पणदालुत्तर सयं इगदालुत्तर सयं ऊणदालुत्तर सयं अट्ठतीसुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सण्णी मग्गणाए उवसंतमोह गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

संज्ञी उपशांत मोह गुणस्थान

उन्हीं संज्ञी उपशान्त मोह जीवों के आलाप कहने पर – एक उपशान्त मोह गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, उपशांत संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, अवेद, उपशांत कषाय, चार ज्ञान, यथाख्यात संयम, तीन दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, एक शुक्ल ध्यान, नौ आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – दो सौ निन्यानवे, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवाँ भाग, काल – नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट सागरोपम शत पृथक्त्व, इक्कीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक साता वेदनीय का बंध, 59 प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस, एक सौ पैंतालीस, एक सौ ब्यालीस, एक सौ इकतालीस, एक सौ उनतालीस, एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार संज्ञी मार्गणा में उपशांत मोह गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– उपशांत संज्ञा व उपशांत कषाय कहने का तात्पर्य यह है कि संज्ञा व कषाय निर्मूल नष्ट नहीं हुई है मात्र दबी है, इसलिए एक समय अथवा अन्तर्मुहूर्त बाद पुन: उदय में आ जायेगी अगर क्षीण संज्ञा कहते तो उसका अर्थ होता है सर्वथा क्षय अर्थात् अंश मात्र भी अवशेष न रहे पुन: उदय सत्त्व रूप न हो।

403. संज्ञी क्षीण मोह गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	क्षीण मोह
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	क्षीण संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	अवेद
11.	कषाय	क्षीण कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	यथाख्यात संयम
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	1 शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग (4 ज्ञानो.+ 3 दर्शनो.)
21.	ध्यान	2 शुक्ल ध्यान
22.	आस्रव	9 (योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	598
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना व एक जीवापेक्षा– ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा– ज. एक समय उ. 6 माह एक जीवापेक्षा– निरन्तर
30.	भाव	20 भाव (औद.4, क्षयो. 12, पा.2, क्षा.2)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	1 साता वेदनी
33.	उदय	57
34.	सत्त्व	101

403. सण्णी खीणमोह गुणट्ठाणं

तेसुं सण्णी खीणमोह गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग खीणमोह गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छपज्जत्ती, दस णाणा, खीण सण्णा, मणुस्सगदी, पचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, अवेदी, खीण कसाया, चत्तारि णाणाणि, जहाक्खाद संजमो, तिण्णि दंसणाणि, एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, खइय सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, बे सुक्कज्झाणं, णव आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अट्ठणउदि उत्तर पंचसयं, खेत्तावेक्खाए लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणेग जीवावेक्खा जहण्णुक्कस्स अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छम्मासा एगजीवावेक्खा णिरंतरं, बीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणूं, एगं सादावेयणीओ बंधो, सत्तावण्ण पयडीणं उदओ एवं एगुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि सण्णी मग्गणासु खीणमोह गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

संज्ञी क्षीणमोह गुणस्थान

उन्हीं संज्ञी क्षीणमोह जीवों के आलाप कहने पर – एक क्षीण मोह गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, क्षीण संज्ञा, मनुष्य गति, पचेंन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, अवेद, क्षीण कषाय, चार ज्ञान, यथाख्यात संयम, तीन दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, दो शुक्ल ध्यान, नौ आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पाँच सौ अट्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवाँ भाग, काल – नाना व एकजीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह माह एकजीवापेक्षा निरंतर, बीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक साता वेदनीय का बंध, सत्तावन प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ एक प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार संज्ञी मार्गणा में क्षीणमोह गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– सभी पद सुगम है। गुणस्थानवत् जानना चाहिए। ध्यान का कथन करते हैं क्योंकि क्षीण मोह गुणस्थान के प्रथम भाग में प्रथम शुक्ल ध्यान पृथक्त्व वितर्क तथा द्वितीय भाग में एकत्व वितर्क शुक्ल ध्यान को ध्याते हैं जिसके माध्यम से सोलह प्रकृतियों का क्षय हो जाता है तथा सर्वज्ञ बन जाते हैं।

404. आहारक मार्गणा सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	1 से 13 गुणस्थान तक	1 से 13	1,2,,4,6,13
2.	जीवसमास	14 जीव समास	7 जीव समास पर्याप्त	7 जीव समास अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति, अपर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति	6,5,4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10,9,8,7,6,5,4,3 प्राण	10,9,8,7,6,4 प्राण	7,7,6,5,4,3 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	चारों गति	–	–
7.	इन्द्रिय	एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	स्थावर/त्रस	–	–
9.	योग	14 योग (कार्माण काययोग बिना)	11 योग	3 योग (कार्माण के बिना)*1
10.	वेद	3 वेद	–	–
11.	कषाय	25 कषाय	–	–
12.	ज्ञान	8 ज्ञान	–	6 (कुअवधि, मन:पर्यय बिना)
13.	संयम	7 संयम	–	4 (अस., यथाख्यात सा.,छे.)
14.	दर्शन	4 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य, अभव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	6 सम्यक्त्व	–	5 (सम्यग्मिथ्यात्व बिना)
18.	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी, नो संज्ञी, नो असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक	–	–
20.	उपयोग	12 (8+4)	–	10 (कुअवधि व मन:पर्यय ज्ञान बिना)
21.	ध्यान	16	–	12 (4 शुक्ल ध्यान के बिना)
22.	आस्रव	56 (25 क.+12 अवि.+14 यो.+5मि.)	53 (25+5+12+11)	45 (25+5+3+12)
23.	जाति	84 लाख	–	–
24.	कुलकोटि	199½ लाख करोड़	–	–
25.	संख्या	अनंतानत	–	–
26.	क्षेत्र	सर्वलोक	–	–
27.	स्पर्शन	सर्वलोक	–	–
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा–सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा–ज.तीन समय कम क्षुद्रभव उ.असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणीकाल*2		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – निरन्तर एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. तीन समय		
30.	भाव	53 (औद. 21+क्षयो. 18+क्षा.9+औप.2+पा.3) अपर्या. 50 (औ. 21, क्षयो. 15, क्षा.9, औ.2, पा.3)		
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग उ. 1000 योजन		
32.	बन्ध	120 गुणस्थानवत्		
33.	उदय	118 (चार आनुपूर्वी के बिना)*3		
34.	सत्त्व	148 गुणस्थानवत्		
		*1 कार्माण काययोग विग्रह गति में होता है और विग्रह गति में जीव आहारक नहीं होता अनाहारक होता है। *2 सूच्यंगुल का असंख्यातवाँ भाग यानि ऐसा भी हो सकता है कि इतने समय तक जीव विग्रह गति को प्राप्त न हो, मात्र ऋजुगति से ही जन्म लेता रहे। ऋजु गति में आहारक ही रहता है, अनाहारक नहीं होता। *3 चारों आनुपूर्वी का उदय विग्रह गति में पाया जाता है और विग्रह गति में आहारक नहीं अनाहारक होता है।		

404. आहार मग्गणा सामण्णं

अह आहार मग्गणाणुवादेण आहार सामण्णालाव भण्णमाणे अत्थि – एयत्तो तेरस गुणट्ठाणा अपज्जत्तेसु एगं बे चउ छ तेरस पंच गुणट्ठाणि, चोद्दस जीव समासा सत्त पज्जत्त सत्त अपज्जत्त, छ पंच चउ पज्जत्ती छ पंच चउ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस णव अट्ठ सत्त छ पंच चउ पाणा अपज्जत्तेसु सत सत्त छ पंच चउ ति पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, एइन्दियत्तो पंचिंदियाणि, छक्कायो, चोद्दस जोगा पज्जत्तेसु एगादस अपज्जत्तेसु तिण्णि जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, अट्ठणाणाणि अपज्जत्तेसु विभंगेहिं व मणपज्जयेहिं विणा छ णाणाणि, सत्तसंजमा अपज्जत्तेसु सामइय छेदोवट्ठावणा जहक्खाद असंजमो एदे चत्तारि संजमा, चत्तारि दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्वसिद्धिया, छ सम्मत्ता अपज्जत्तेसु मिस्सेण विणा पंच सम्मत्ता, सण्णी असण्णी एवं णोसण्णी णो असण्णी, आहारिणो, बारस उवजोगा अपज्जत्तेसु दस उवजोगा, सोडस झाणाणि अपज्जत्तेसु बारस झाणाणि, छप्पण्ण आसवा पज्जत्तेसु तिवण्ण अपज्जत्तेसु पणदाल आसवा, चउरासीदि लक्ख जादी, अद्धणवणउदि उत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अणंताणंत, खेत्तावेक्खा सव्वलोयो, फासावेक्खा सव्वलोयो, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण तिण्णि समिऊण खुद्दाभवो उक्कस्सेण असंखेज्जासंखेज्ज ओसप्पिणी अवसप्पणी, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एग जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण तिण्णि समया, तिवण्ण भावा अपज्जत्तेसु पंचास भाव, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजणसहस्सं, बीसुत्तर सयं पयडीणं बंधो, अट्ठदसुत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि आहार मग्गणाए सामण्णालाव सम्मत्ता।

आहारक मार्गणा सामान्य

अब आहार मार्गणा के अनुवाद से आहारक सामान्य के आलाप कहने पर – एक से तेरह गुणस्थान अपर्याप्त में एक दो चार छह–तेरह–पाँच गुणस्थान, चौदह जीव समास सात पर्याप्त सात अपर्याप्त, छह–पाँच–चार पर्याप्ति छह–पाँच–चार अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस–नौ–आठ–सात–छह–पाँच–चार अपर्याप्त में सात–सात–छह–पाँच–चार–तीन प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय, छहों काय, चौदह योग पर्याप्त में ग्यारह अपर्याप्त में तीन योग, तीनों वेद, पच्चीस कषाय, आठ ज्ञान अपर्याप्त में कुअवधि व मन: पर्यय ज्ञान बिना छह ज्ञान, सात संयम अपर्याप्तकों में सामायिक छेदोपस्थापना यथाख्यात व असंयम इस प्रकार चार संयम, चारों दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक, छहों सम्यक्त्व अपर्याप्तक में मिश्र बिना पाँच सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी नोसंज्ञी नोअसंज्ञी, आहारक, बारह उपयोग अपर्याप्तक में दस उपयोग, सोलह ध्यान अपर्याप्तक में बारह ध्यान, छप्पन आस्रव पर्याप्तक में तिरेपन अपर्याप्तक में पैंतालीस आस्रव, चौरासी लाख जाति, एक सौ साढ़े निन्यानवे लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा अनंतानंत, क्षेत्रापेक्षा – सर्वलोक, स्पर्शन – सर्वलोक, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एकजीवापेक्षा जघन्य तीन समय कम क्षुद्रभव उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी, अंतर – नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट तीन समय, तिरेपन भाव अपर्याप्तक में पचास भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ बीस प्रकृतियों का बंध, एक सौ अठारह प्रकृतियों का उदय, यहाँ अहारकों में 4 आनुपूर्वी प्रकृतियों का उदय नहीं होता अत: यहाँ उदय योग्य 118 प्रकृतियाँ कही हैं। एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार आहार मार्गणा में सामान्यालाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ आहारक का प्रकरण है चूंकि आहारक पर्याप्त अपर्याप्त दोनों अवस्थाओं में होता है, किंतु अनाहारक अपर्याप्त अवस्था/विग्रह गति में ही होता है। ऋजुगति में आहारक ही होता है ऋजुगति मुक्त जीव व संसारी जीव दोनों की होती है किंतु विग्रह गति केवल संसारी जीव की ही होती है और मुक्त जीव की ऋजुगति ही होती है, परन्तु वहाँ आहारक नहीं होता क्योंकि अब उन्हें शरीर नहीं मिलेगा, पर्याप्ति भी नहीं प्राप्त होगी। विग्रह गति दो या तीन समय की होती है, ऋजुगति नियम से एक समय की ही होती है। ऋजुगति का मतलब है सीधी गति और विग्रह यानि मोड़े वाली गति।

शंका– यह कब होती हैं ?

समाधान– जब जीव एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर को प्राप्त करने के लिए जाता है उस समय विग्रह गति अथवा ऋजुगति दोनों ही गतियों से जाता हैं। मुक्त जीव जब मुक्ति को प्राप्त होते हैं उस समय शरीर छोड़कर अशरीरी हो सिद्धालय में विराजमान हो जाते हैं शेष कथन आगे करेंगे।

405. आहारक मार्गणा मिथ्यात्व गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	मिथ्यात्व	मिथ्यात्व	मिथ्यात्व
2.	जीवसमास	14 जीव समास पर्याप्त, अपर्याप्त	7 जीव समास पर्याप्त	7 जीव समास अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति, अपर्याप्ति	6,5,4 पर्याप्ति	6,5,4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10,9,8,7,6,5,4,3 प्राण	10,9,8,7,6,5,4 प्राण	7,7,6,5,4,3 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	चारों गति	–	–
7.	इन्द्रिय	एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक	–	–
8.	काय	षट्काय	–	–
9.	योग	12 योग (आहारकद्विक व कार्माण के बिना)	10 योग	2 योग (कार्माण काय योग के बिना)
10.	वेद	3 वेद	–	–
11.	कषाय	25 कषाय	–	–
12.	ज्ञान	3 कुज्ञान	–	2 कुज्ञान
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य, अभव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक	–	–
20.	उपयोग	5 उपयोग	–	4 उपयोग
21.	ध्यान	8 (4 आर्त्त, 4 रौद्र)	–	–
22.	आस्रव	54 (25+12+12+5 मि.)	52 (25+10+12+5)	44 (25+2+12+5)
23.	जाति	84 लाख		
24.	कुलकोटि	199½ लाख करोड़		
25.	संख्या	अनंतानंत		
26.	क्षेत्र	सर्वलोक		
27.	स्पर्शन	सर्वलोक		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणि अवसर्पिणि		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – निरन्तर एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम दो 66 सागर		
30.	भाव	34 (औद.21, क्षयो. 10 पा.3) अपर्याप्त में 33		
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग उ. 1000 योजन		
32.	बन्ध	117 गुणस्थानोक्त		
33.	उदय	113 (118 में से पाँच प्रकृति (स.मि., सम्यक्त्व, आहारकद्विक और तीर्थंकर बिना+4 आनुपूर्वी)		
34.	सत्त्व	148 गुणस्थानोक्त		

405. आहार मग्गणा मिच्छत्त गुणट्ठाणं

तेसुं आहारय मिच्छत्त गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग मिच्छत्त गुणट्ठाणं, सत्त पज्जत्त सत्त अपज्जत्त चोद्दस जीव समासा, छ पंच चउ पज्जत्ती छ पंच चउ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस णव अट्ठ सत्त छ चउ पाणा अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छ–पंच चउ ति पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, एइंदियत्तो पंचिंदियाणि, छक्कायो, आहार दुगेण व कम्माण काय जोगेहि विणा बारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु बे जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि अपज्जत्तेसु विभंगेहिं विणा बे अण्णाणाणि, एग असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्वसिद्धिया, मिच्छत्त सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, अट्ठ झाणाणि, चउवण्ण आसवा पज्जत्तेसु बावण्ण अपज्जत्तेसु चदुदाल आसवा, चउरासीदि लक्ख जादी, अद्धणवणउदिउत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अणंताणंत, खेत्तावेक्खा सव्वलोयो, फासावेक्खा सव्वलोयो, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण घणांगुलस्स असंखेज्जदि भाग सरुवेणअसंखेज्जासंखेज्जओसप्पिणीअवसप्पिणी, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण बे छावट्टि सायरोवमाणि देसूणाणि, चउतीस भावा अपज्जत्तेसु तेतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सत्तदसुत्तर सयं पयडीणं बंधो, तेरसुत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं अड़दालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि आहार मग्गणाए मिच्छत्त गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

आहारक मार्गणा मिथ्यात्व गुणस्थान

उन्हीं आहारक मिथ्यादृष्टि जीवों के आलाप कहने पर – एक मिथ्यात्व गुणस्थान, सात पर्याप्त सात अपर्याप्त चौदह जीव समास, छह–पाँच–चार पर्याप्ति छह–पाँच–चार अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस–नौ–आठ–सात–छह–चार अपर्याप्त में सात–सात–छह–पाँच–चार तीन प्राण, चार संज्ञाएँ, चारों गति, एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय, षट्काय, आहारक द्विक व कार्माण बिना बारह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में दो योग, तीनों वेद, पच्चीस कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्त में कुअवधि बिना दो अज्ञान, एक असंयम, चक्षु अचक्षु दो दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक, मिथ्यात्व सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग अपर्याप्तक में चार उपयोग, आठ ध्यान, चौपन आस्रव पर्याप्त में बावन अपर्याप्त में चवालीस आस्रव, चौरासी लाख जाति, एक सौ साढ़े निन्यानवे लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – अनंतानंत, क्षेत्रापेक्षा – सर्वलोक, स्पर्शन – सर्वलोक, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग स्वरुप असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी, अंतर – नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम दो छ्यासठ सागर, चौतीस भाव व अपर्याप्तक में तेतीस भाव, जघन्य अवगाहना घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ सत्तरह प्रकृतियों का बंध, एक सौ तेरह प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार आहार मार्गणा में मिथ्यात्व गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :–

शंका– आहार किसे कहते हैं, क्या भोजन करना आहार कहलाता है ?

समाधान– नहीं भोजन करना आहार नहीं कहलाता है, यहाँ प्रकरण आहार मार्गणा का है यानि तीन शरीर छह पर्याप्ति के योग्य पुद्गल वर्गणाओं को ग्रहण करना आहार कहलाता है। विग्रह गति में ये वर्गणाऐं ग्रहण नहीं होती इसलिए वहाँ अनाहारक है। यहाँ सभी पद सुगम हैं, क्योंकि कई बार कहा जा चुका है, काल में जो विशेषता है उसको कहते हैं

सामान्य से एक जीव की अपेक्षा काल घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग स्वरुप असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी होता है, क्योंकि ऐसा समय भी आ सकता है जब कोई जीव इतने काल तक आहारक ही बना रहे अनाहारक हो ही नहीं, यानि मरणकर और ऋजुगति से गमन कर अन्य शरीर को धारण करे विग्रह गति में जाये ही नहीं यह उत्कृष्ट काल है और जघन्य काल सुगम है तीन समय कम क्षुद्र भव क्योंकि तीन समय का अनाहारक काल हुआ उसको कम करके शेष समय रहा वह आहारक का काल यह जघन्य है मिथ्यादृष्टि नाना जीवों का सर्व काल सुगम ही है एक जीव जघन्य से सुगम है उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी, क्योंकि यहाँ उत्कृष्ट आहारक काल है, यानि इस मार्गणा का उत्कृष्ट काल है और सादि मिथ्या दृष्टि का कुछ कम अर्द्धपुद्गल परावर्तन काल है जो इस काल की अपेक्षा असंख्यातासंख्यात गुणा बड़ा है अत: उक्त जीव का मिथ्यात्व के साथ उपरोक्त काल बन जाता है। अन्तर सुगम है यानि कोई जीव मरण कर विग्रहगति से अन्य गति में जाता है और एक मोड़ा लेता है तो एक समय लगता है जो जघन्य अन्तर है। और यदि तीन मोड़ा लेता है तो तीन समय लगते हैं यही इसका उत्कृष्ट अन्तर है, तीन से ज्यादा मोड़ा लेता नहीं है।

कहा भी है **एक द्वौ त्रीन्वानाहारक** – एक दो तीन समय तक अनाहारक रह सकता है, यानि जीव तीन समय तक बिना शरीर के रह सकता है इससे अधिक नहीं। यह अन्तर हमने सामान्य से कहा है गुणस्थान का अन्तर गुणस्थानवत् अर्थात् दो छ्यासठ सागर का जानना चाहिए। तथा जघन्य अन्तर्मुहूर्त क्योंकि यहाँ मार्गणा तो वही रहेगी। किन्तु गुणस्थान परावर्तन कराके अन्तर प्राप्त किया है शेष कथन सुगम है।

406. आहार मार्गणा सासादन गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	सासादन	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचे.पर्या.,अपर्या.में छह कुल सात जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	एके. से पंचे. अपर्या. छ जीव समास
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6, 5, 4 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6,5,4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10,7,7,6,5,4,3 प्राण	10 प्राण	7,7,6,5,4,3 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	चारों गति	–	3 गति (नरकगति बिना)
7.	इन्द्रिय	एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रस, स्थावर काय	त्रसकाय	त्रस, स्थावर काय
9.	योग	12 योग	10 योग	2 योग
10.	वेद	3 वेद	–	–
11.	कषाय	25 कषाय	–	–
12.	ज्ञान	3 कुज्ञान	–	2 अज्ञान
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	2 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	सासादन	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी
19.	आहारक	आहारक	–	–
20.	उपयोग	5 उपयोग	–	4 उपयोग (कुअवधि के बिना)
21.	ध्यान	8 (4 आर्त्त 4 रौद्र)	–	–
22.	आस्रव	49 (25 कषाय+12 योग+12 अवि.)	47 (25+10 योग+12)	39 (25+2 योग+12 अवि.)
23.	जाति	56 लाख	26 लाख	52 लाख (नरक गति के बिना)
24.	कुलकोटि	189½ लाख करोड़	108½ लाख करोड़	164½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14, 11/14, 12/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा– ज. एक समय उ. 6 आवली		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा – ज. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग उ. अंगुल का असंख्यातवाँ भाग स्वरुप असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी व अवसर्पिणि		
30.	भाव	32 (औद. 20, क्षयो. 10, पा.2)	अपर्याप्तक में 30 भाव	
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग	उ. संख्यात धनुष	
32.	बन्ध	101 गुणस्थानोक्त		
33.	उदय	108 (गुणस्थानोक्त प्रकृति कम करने पर मिथ्यात्व, आतप, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण बिना 113–5=108 प्रकृति)		
34.	सत्त्व	145 गुणस्थानोक्त		

406. आहार मग्गणा सासण गुणट्ठाणं

तेसुं आहारिणो सासण गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि - एग सासण गुणट्ठाणं, पज्जत्तेसु सण्णी पंचेंदिय अपज्जत्तेसु एइंदियत्तो पंचेन्दिय सत्त जीवसमासा, छ पज्जत्ती छ पंच चदु अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु सत्त सत्त छह पंच चदु ति पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी अपज्जत्तेसु णिरयेण विणा तिण्णि गदी, एइंदियत्तो पंचिंदियाणि पज्जत्तेसु पंचेंदिय, पज्जत्तेसु तसकाओ अपज्जत्तेसु तसथावरकाओ, बारसजोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु बे जोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, तिण्णि अण्णाणाणि अपज्जत्तेसु बे अण्णाणाणि, असंजमो, बे दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया, सासण सम्मत्तं, सण्णी असण्णी दोण्णि पज्जत्तेसु सण्णी अपज्जत्तेसु दोण्णि, आहारिणो, पंच उवजोगा अपज्जत्तेसु चत्तारि उवजोगा, अट्ठज्झाणाणि, ऊणपंचास आसवा पज्जत्तेसु सत्तदाल अपज्जत्तेसु ऊणदाल आसवा, छप्पण लक्ख जादी पज्जत्तेसु छब्बीस लक्ख अपज्जत्तेसु बावण्ण लक्ख जादी, अद्ध णवासीदिउत्तर सयं लक्ख कोडि कुल कोडीणं पज्जत्तेसु अद्धुदट्ठुत्तर सयं लक्ख कोडि अपज्जत्तेसु अद्धचउसट्ठी उत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडिणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठ चोद्दस एगादस चोद्दस बारस चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छावली, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा जहण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदि भाग सरुव असंखेज्जासंखेज्ज उस्सप्पिणी अवसप्पिणी, बत्तीस भावा अपज्जत्तेसु तीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण संखेज्ज धणू, एगुत्तर सयं पयडीणं बंधो, अट्ठुत्तर सयं पयडीणं उदओ एवं पणदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि आहार मग्गणाए सासण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

आहारक मार्गणा सासादन गुणस्थान

उन्हीं आहारक सासादन गुणस्थानवर्ती जीवों के आलाप कहने पर - एक सासादन गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय अपर्याप्तक सात जीव समास, छह पर्याप्ति छह-पाँच-चार अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस अपर्याप्त में सात-सात-छ-पाँच-चार-तीन प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति अपर्याप्तक में नरक बिना तीन गति, एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय पर्याप्त में पंचेन्द्रिय अपर्याप्त में एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय, पर्याप्त में त्रसकाय अपर्याप्त में त्रस स्थावर काय, बारह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में दो योग, तीनों वेद, पच्चीस कषाय, तीन अज्ञान अपर्याप्त में दो अज्ञान, असंयम, दो दर्शन, छहों लेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादन सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी दोनों पर्याप्त में संज्ञी अपर्याप्त में संज्ञी-असंज्ञी दोनों, आहारक, पाँच उपयोग अपर्याप्त में चार उपयोग, आठ ध्यान, उनंचास आस्रव पर्याप्त में सैंतालीस अपर्याप्त में उनतालीस आस्रव, छप्पन लाख जाति पर्याप्तक में छब्बीस लाख अपर्याप्त में बावन लाख जाति, एक सौ साढ़े नवासी लाख करोड़ पर्याप्तक में एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ अपर्याप्तक में एक सौ साढ़े चौसठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग, क्षेत्रापेक्षा लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14 - 11/14 - 12/14 राजू, काल - नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह आवली, अंतर - नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीवापेक्षा जघन्य पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट अंगुल का असंख्यातवाँ भाग स्वरूप असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी, बत्तीस भाव अपर्याप्तक में तीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट संख्यात धनुष, एक सौ एक प्रकृतियों का बंध, एक सौ आठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ पैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार आहार मार्गणा में सासादन गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- यहाँ पर्याप्तक में एकेन्द्रियादि जीव समास कषाय पाहुड़ ग्रंथ के अनुसार कहे हैं जिसका वर्णन हम पूर्व में कर चुके हैं कुछ विशेषता है उनको कहते हैं आस्रव उनंचास इसलिए कहे हैं क्योंकि यहाँ कार्माण काययोग नहीं होता शेष पद सुगम हैं। स्पर्शन कुछ कम आठ राजू विहार, वेदना, विक्रिया कषाय समुद्घात की अपेक्षा बनता है ग्यारह राजू उपपाद की अपेक्षा क्योंकि पाँच राजू नीचे नरक में छह राजू ऊपर क्योंकि छठवी पृथ्वी से सासादन सम्यक्त्व के साथ निकला जीव संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंचों में उत्पन्न होता है, तथा ऊपर अच्युत स्वर्ग तक संज्ञी पंचेन्द्रिय मरकर उत्पन्न होता है। मारणांतिक की अपेक्षा कुछ कम बारह राजू बनता है क्योंकि देव का एकेन्द्रियों में अष्टम् पृथ्वी तक मारणांतिक समुद्घात पाया जाता है। यद्यपि कषाय पाहुड़ ग्रंथ के अनुसार उपपाद भी कुछ कम बारह राजू बन सकता है। लेकिन मुख्यता ग्यारह राजू को लेकर चल रहे हैं उत्कृष्ट काल सुगम है, अन्तर उत्कृष्ट एक जीव का अंगुल के असंख्यातवें भाग स्वरूप असंख्यासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी पाया जाता है क्योंकि इस मार्गणा का इतना काल है शेष कथन सुगम है।

407. आहारक मार्गणा मिश्र गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	सम्यग्मिथ्यात्व
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	चारों गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	10 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	21 कषाय
12.	ज्ञान	3 मिश्रज्ञान
13.	संयम	असंयम
14.	दर्शन	2 दर्शन
15.	लेश्या	6 लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	सम्यग्मिथ्यात्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	5 उपयोग (3 ज्ञानो. + 2 दर्शनो.) (गोम्मटसार कर्मकाण्ड के अनुसार मिश्रगुणस्थान में तीन दर्शन स्वीकार किये हैं अत: 6 उपयोग भी होते हैं।)
21.	ध्यान	8 (चार आर्त्त, चार रौद्र ध्यान)
22.	आस्रव	43 (21 कषाय + 10 योग + 12 अवि.)
23.	जाति	26 लाख
24.	कुलकोटि	108½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14 राजू
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग, एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. अंगुल का असंख्यातवाँ भाग (असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी)
30.	भाव	32 (औद. 20, क्षयो. 10, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उ. 1000 योजन
32.	बन्ध	74 गुणस्थानोक्त
33.	उदय	100 (प्रथम गुणस्थान की अनुदय 5 प्रकृति द्वितीय गुणस्थान की 5 प्रकृति=5+5=10) 10–1 (सम्यग्मिथ्यात्व=9+9 (दूसरे गुणस्थान की व्युछिन्न प्रकृति = 18 के बिना)
34.	सत्त्व	147 (तीर्थंकर बिना) गुणस्थानोक्त

407. आहारक मग्गणा मिस्स गुणट्ठाणं

तेसुं आहारिणो सम्मामिच्छाइट्ठी जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि, एग सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, दस जोगा, तिण्णि वेदा, इगबीस कसाया, तिण्णि मिस्स णाणाणि, असंजमो, बे दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया, मिस्स सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, पंच उवजोगा, अट्ठ झाणाणि, तिदाल आसवा, छब्बीस लक्ख जादी, अद्ध अट्ठुत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदि भागा, बत्तीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, चउसत्तदि पयडीणं बंधो, सयं पयडीणं उदओ एवं सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि आहार मग्गणाए सम्मामिच्छत्त गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

आहरक मार्गणा सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान

उन्हीं आहारक सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों के आलाप कहने पर – एक सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, दस योग, तीनों वेद, इक्कीस कषाय, तीन मिश्र ज्ञान, असंयम, दो दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, मिश्र सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, पाँच उपयोग, आठ ध्यान, तेतालीस आस्रव, छब्बीस लाख जाति, एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14 राजू, काल – नानाजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीवापेक्षा जघन्योकृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अंगुल का असंख्यातवाँ भाग, बत्तीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, चौहत्तर प्रकृतियों का बंध, सौ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार आहार मार्गणा में सम्यग्मिथ्यात्व गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– सभी पद सुगम हैं कुछ भी विशेषता नहीं है क्योंकि पूर्व में कथन कर चुके हैं वहाँ से जान लेना चाहिए। इतना विशेष है एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व पाया जाता है क्योंकि तीर्थंकर प्रकृति की सत्ता वाला तृतीय गुणस्थान में नहीं जाता इसलिए यहाँ तीर्थंकर प्रकृति का सत्त्व नहीं पाया जाता। बंध चौहत्तर प्रकृति का क्योंकि सोलह प्रकृति की व्युच्छित्ति प्रथम गुणस्थान में, पच्चीस की व्युच्छित्ति सासादन गुणस्थान में इस प्रकार इकतालीस + देवायु + मनुष्यायु + तीर्थंकर = इस प्रकार यहाँ चवालीस प्रकृति का बन्ध नहीं होता। उदय सुगम है सारणी के साथ उसका उल्लेख किया है। फिर भी यहाँ स्पष्ट करते हैं पाँच प्रकृतियाँ तीर्थंकर, आहारकद्विक, सम्यक्त्व व सम्यग्मिथ्यात्व ये अनुदय पाँच की व्युच्छित्ति सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, आतप, मिथ्यात्व इस प्रकार 10–1 (सम्यग्मिथ्यात्व)=9+9 (द्वितीय गुणस्थान की व्युच्छिन्न प्रकृति) एकेन्द्रिय, विकलत्रय, स्थावर, चार अनंतानुबंधी इस प्रकार 18 प्रकृति बिना उदय 100 का।

शंका – जब अपर्याप्तक नाम कर्म की व्युच्छित्ति प्रथम गुणस्थान में हो जाती है तो फिर द्वितीय सासादन गुणस्थान अपर्याप्तक अवस्था में कैसे पाया जा सकता है ?

समाधान – नहीं वहाँ शरीर पर्याप्ति अपूर्ण होने के कारण उसे अपर्याप्तक कहा है किंतु उसके भी पर्याप्त नाम कर्म का उदय पाया जाता है अपर्याप्तक नाम कर्म का उदय तो लब्ध्यपर्याप्तक में पाया जाता है जो कभी पर्याप्तियाँ पूर्ण नहीं करता और मर जाता है, वह नियम से मिथ्यात्व गुणस्थान में ही होता है।

408. आहारक मार्गणा असंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	असंयत	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त व अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	चारों गति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	12 योग	10 योग	2 योग
10.	वेद	3 वेद	–	2 वेद (स्त्री वेद बिना)
11.	कषाय	21 कषाय	–	20 कषाय (स्त्री वेद बिना)
12.	ज्ञान	3 ज्ञान	–	–
13.	संयम	असंयम	–	–
14.	दर्शन	3 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	6 लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (उप. क्षयो. क्षायिक)	–	–
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक	–	आहारक
20.	उपयोग	6 (3 ज्ञानो. + 3 दर्शनो.)	–	–
21.	ध्यान	10 (4 आर्त्त, 4 रौद्र, दो धर्म ध्यान)	–	–
22.	आस्रव	45 (21+12+12)	43 (21+10+12)	35 (21+2+12)
23.	जाति	26 लाख		
24.	कुलकोटि	108½ लाख करोड़		
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग		
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ अधिक 33 सागर		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – निरन्तर एक जीव की अपेक्षा–ज. अन्तर्मुहूर्त उ. अंगुल का असंख्यातावाँ भाग स्वरूप असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी		
30.	भाव	36 (औद. 20, क्षयो. 12, पा.2, क्षा.1, औप.1)		
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उ. 1000 योजन		
32.	बन्ध	77 गुणस्थानोक्त		
33.	उदय	100 (सम्यग्मिथ्यात्व का अनुदय व सम्यक्त्व प्रकृति का उदय हुआ और 18 प्रकृति का अनुदय)		
34.	सत्त्व	148 गुणस्थानोक्त		

408. आहार मग्गणा असंजद गुणट्ठाणं

तेसुं आहारिणो असंजद गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अविरदसंजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, पज्जत्तेसु दस पाणा अपज्जत्तेसु सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, बारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु बे जोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु बे वेदा, इगबीस कसाया अपज्जत्तेसु बीस कसाया, तिण्णि णाणाणि, एग असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, छल्लेस्सा, भव्वसिद्धिया, तिण्णि सम्मत्ता*, सण्णी, आहारिणो, छ उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द बे धम्म दस झाणाणि, पणदाल आसवा पज्जत्तेसु तिदाल अपज्जत्तेसु पणतीस आसवा, छब्बीस लक्ख जादी, अद्धट्ठुत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व अट्ठ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण तेतीस सायरोवमाणि सादिरेयाणि, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदि भागरुवासंखेज्जासंखेज्ज उवसप्पिणीअवसप्पिणी, छत्तीस भावा अपज्जत्तेसु पणतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजणसहस्सं, सत्तसत्तदि पयडीणं बंधो, सयं पयडीणं उदओ एवं अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि आहार मग्गणाए असंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

आहारक मार्गणा असंयत गुणस्थान

उन्हीं आहारक असंयत जीवों के आलाप कहने पर – एक अविरत संयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहों अपर्याप्ति, पर्याप्त में दस प्राण अपर्याप्त में सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, बारह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में दो योग, तीनों वेद अपर्याप्तक में स्त्री वेद बिना दो वेद, इक्कीस कषाय अपर्याप्तक में बीस कषाय, तीन ज्ञान, एक असंयम, तीन दर्शन, छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, दस ध्यान, पैंतालीस आस्रव पर्याप्त में तेतालीस अपर्याप्त में पैंतीस आस्रव, छब्बीस लाख जाति, एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14 राजू, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ अधिक तेतीस सागर, अंतर – नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अंगुल का असंख्यातवाँ भाग स्वरूप असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी, छत्तीस भाव अपर्याप्तक में पैंतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, सतत्तर प्रकृतियों का बंध, सौ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार आहार मार्गणा में असंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– सभी पद सुगम है कुछ भी विशेष नहीं क्योंकि पहले कई बार कह चुके हैं बंध सतत्तर प्रकृति का क्योंकि यहाँ देवायु, मनुष्यायु व तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध होने लगता है। यहाँ भी सौ प्रकृतियों का उदय पाया जाता है क्योंकि सम्यग्मिथ्यात्व की जगह सम्यक्त्व प्रकृति का उदय होने लगता है सत्त्व पूरे एक सौ अड़तालीस प्रकृति का है शेष सुगम है।

* अपर्याप्तक अवस्था में तीनों सम्यक्त्व पाये जाते हैं क्योंकि देव गति की अपर्याप्त अवस्था में द्वितीयोपशम सम्यक्त्व पाया जाता है जिसका उल्लेख पूर्व में किया है किंतु शेष तीन गतियों में अपर्याप्तक अवस्था में दो सम्यक्त्व ही पाये जाते हैं।

409. आहारक मार्गणा संयतासंयत गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	संयतासंयत गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	2 गति (मनुष्य गति, तिर्यंच गति)
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग (4 म., 4 व., औ. काय यो.)
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	17 कषाय
12.	ज्ञान	3 ज्ञान
13.	संयम	संयमासंयम
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	भाव से 3 द्रव्य से 6 लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो., उपशम)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	6 उपयोग
21.	ध्यान	11 ध्यान (4 आर्त्त, 4 रौद्र, 3 धर्मध्यान)
22.	आस्रव	37 (17+9+11)
23.	जाति	18 लाख
24.	कुलकोटि	57½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 6/14 राजू
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम एक कोटि पूर्व
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– निरन्तर एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. अंगुल का असंख्यातवाँ भाग स्वरुप असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी
30.	भाव	31 (औ.14, क्षयो. 13, पा.2, क्षा.1, औ. 1)
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उ. 1000 योजन
32.	बन्ध	67 गुणस्थानोक्त
33.	उदय	87 गुणस्थानोक्त
34.	सत्त्व	147 (नरकायु के बिना)

409. आहारमग्गणा संजदासंजद गुणट्ठाणं

तेसुं आहारिणो संजदासंजद गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग देससंजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, चत्तारि सण्णा, मणुस्स तिरिक्ख बे गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, तिण्णि वेदा, सत्तदस कसाया, तिण्णि णाणाणि, एग संजमासंजमो, तिण्णि दंसणाणि, भावेण तिण्णि सुह लेस्सा दव्वेण छ लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खओवसम खइय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, छ उवजोगा, चत्तारि अट्ट चत्तारि रुद्द तिण्णि धम्म एगारस झाणाणि, सत्ततीस आसवा, अट्ठदस लक्ख जादी, अद्धुत्तर सत्तावण्ण लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व छ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण पुव्वकोडीणं, अंतरं णाणा जीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदि भागसरुवस्स असंखेज्जासंखेज्ज ओसप्पिणी अवसप्पिणी, इगतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजणसहस्सं, सडसट्ठि पयडीणं बंधो, सत्तासीदि पयडीणं उदओ एवं सत्तदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि आहार मग्गणाए संजदासंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

आहारक मार्गणा संयतासयंत गुणस्थान

उन्हीं आहारक संयतासंयत जीवों के आलाप कहने पर – एक देश संयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्य तिर्यंच दो गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, तीनों वेद, सत्तरह कषाय, तीन ज्ञान, एक संयमासंयम, तीन दर्शन, भाव से तीन शुभ लेश्या द्रव्य से छहों लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम – क्षायिक – क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, छह उपयोग, ग्यारह ध्यान (चार आर्त्त, चार रौद्र, तीन धर्म), सैंतीस आस्रव, अठारह लाख जाति, साढ़े सत्तावन लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 6/14 राजू, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम एक कोटि पूर्व, अंतर – नाना जीवापेक्षा निरंतर एकजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट सूंच्यंगुल का असंख्यातवाँ भाग स्वरूप असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी, इकतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का संख्यातवाँ भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, सड़सठ प्रकृतियों का बंध, सतासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार आहार मार्गणा में संयतासंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ पर सभी पद सुगम हैं फिर भी स्पर्शन को कहते हैं स्वस्थानादि पदों की अपेक्षा लोक का असंख्यातवाँ भाग सुगम है कुछ कम छह राजू मारणांतिक समुद्घात की अपेक्षा से बनता है, कारण पहले कह आये हैं। उपपाद पद यहाँ होता नहीं है कारण संयतासंयत गुणस्थान के साथ किसी का भी जन्म नहीं होता।

शंका – फिर सामायिक, छेदोपस्थापना और यथाख्यात संयम के साथ अपर्याप्तक कैसे होता है ?

समाधान – वहाँ जन्म की अपेक्षा अपर्याप्तक नहीं है, क्योंकि जन्म केवल असंयम के साथ ही होता है चाहे कोई भी गति हो प्रमत्त गुणस्थान में आहारक शरीर की उत्पत्ति करता है और वह उत्पत्ति जन्म से नहीं होती उस नवीन शरीर में जब तक पूर्णता नहीं होती है तब तक की अवस्था को अपर्याप्त कहते हैं।

यथाख्यात संयम में मात्र सयोग केवली गुणस्थान में जब समुद्घात करते हैं उसमें मात्र छह समय के लिए अपर्याप्तक होते हैं वहाँ कोई शरीर संबंधी पूर्णता अपूर्णता की अपेक्षा नहीं है वहाँ योग प्रवृत्ति की अपेक्षा है इसलिए जन्म से अपर्याप्त का वहाँ संबंध नहीं है शेष कथन सुगम है। सत्त्व एक सौ सैंतालीस प्रकृतियों का क्योंकि भुज्यमान तिर्यंचायु में संयतासंयत हो सकता है भुज्यमान मनुष्यायु में भी संयतासंयत होता है बद्धयमान देवायु में भी हो सकता है इसलिए तीनों आयु के सद्भाव में हो सकता है किन्तु यहाँ नरकायु का सर्वथा अभाव है बस इतना विशेष है कि बद्धायुष्क केवल देव होना चाहिए और भुज्यमान मनुष्य, तिर्यंचायु में से कोई भी हो सकती है। बन्ध, उदय गुणस्थानवत् जानना चाहिए।

410. आहारक मार्गणा प्रमत्तसंयत गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	प्रमत्त संयत गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त, अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति, 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	10, 7 प्राण	10 प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा	–	–
6.	गति	मनुष्यगति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	11 योग	10 योग	1 (आहारक मिश्र)
10.	वेद	3 वेद	–	1 (पुरुष वेद)
11.	कषाय	13 कषाय	–	11 (स्त्री, नपुंसक वेद बिना)
12.	ज्ञान	4 ज्ञान	–	3 ज्ञान (मन:पर्यय बिना)
13.	संयम	3 (सा., छे., परि.)	–	2 (सा., छे.)
14.	दर्शन	3 दर्शन	–	–
15.	लेश्या	3 शुभ लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो., उप.)	–	2 (क्षा., क्षयो.)
18.	संज्ञी	संज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक	–	–
20.	उपयोग	7 उपयोग (3+4)	–	6 उपयोग (मन:पर्ययज्ञान के बिना)
21.	ध्यान	7 ध्यान	–	–
22.	आस्रव	24 (13 कषाय +11 योग)	23 (13+10)	12 (11 कषाय +1 योग)
23.	जाति	14 लाख	–	–
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़	–	–
25.	संख्या	59398206	–	अपर्याप्तक में 27 जीव होते है
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व कुछ कम 8/14 राजू		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा – सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा– ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा – निरन्तर एक जीव की अपेक्षा – ज. अन्तर्मुहूर्त उ. अंगुल का असंख्यातवाँ भाग प्रमाण असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी		
30.	भाव	31 (औद.13, क्षयो. 14, पा.2, क्षा.1, उप.1) अपर्याप्त 27 (औद.11, क्षयो.13, पा.2, क्षा.1)		
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ	उ. 525 धनुष	
32.	बन्ध	63 गुणस्थानोक्त		
33.	उदय	81 गुणस्थानोक्त		
34.	सत्त्व	क्रम से – 146, 145, 142, 141, 139, 138		

410. आहार–मग्गणा पमत्तसंजद गुणट्ठाणं

तेसुं आहारिणो पमत्तसंजद गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग पमत्तसंजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासा, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, दस सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, एगारस जोगा पज्जत्तेसु दस अपज्जत्तेसु एग आहारमिस्सकायजोगा, तिण्णि वेदा अपज्जत्तेसु एगं पुरिस वेदो, तेरस कसाया अपज्जत्तेसु एगारस कसाया, चत्तारि णाणाणि अपज्जत्तेसु तिण्णि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावण विहार सुद्धि तिण्णि संजमा अपज्जत्तेसु विहार सुद्धिं विणा बे संजमा, तिण्णि दंसणाणि, तिण्णि सुह लेस्सा, भव्व सिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता अपज्जत्तेसु बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा अपज्जत्तेसु छ उवजोगा, तिण्णि अट्ट चत्तारि धम्म सत्त झाणाणि, चउबीस आसवा पज्जत्तेसु तेबीस अपज्जत्तेसु बारस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पंच कोडि तिणउदि लक्ख अट्ठणउदि सहस्स छ उत्तर बे सयं अपज्जत्तेसु सत्तवीस, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदि भागो असंखेज्जाओ ओसप्पिणी उसप्पिणीओ, इगतीस भावा अपज्जत्तेसु सत्तवीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थ उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंच सयं धणू, तिसट्ठि पयडीणं बंधो, एगासीदि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं पणदालुत्तर सयं बादालुत्तर सयं इगदालुत्तर सयं उणदालुत्तर सयं अट्ठतीसुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि आहार मग्गणाए पमत्तसंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

आहारक मार्गणा प्रमत्तसंयत गुणस्थान

उन्हीं आहारक प्रमत्तसंयत जीवों के आलाप कहने पर – एक प्रमत्त संयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तापर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छह अपर्याप्ति, दस प्राण अपर्याप्तक में सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, ग्यारह योग पर्याप्त में दस अपर्याप्त में एक आहारक मिश्र काय योग, तीनों वेद अपर्याप्तक में एक पुरुष वेद, तेरह कषाय अपर्याप्तक में ग्यारह कषाय, चार ज्ञान अपर्याप्तक में तीन ज्ञान, सामायिक–छेदोपस्थापना–परिहार विशुद्धि तीन संयम अपर्याप्तक में दो संयम, तीन दर्शन, तीन शुभलेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम–क्षायिक–क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व अपर्याप्तकों में उपशम बिना दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग अपर्याप्तक में छह उपयोग, तीन आर्त्त चार धर्म सात ध्यान, चौबीस आस्रव पर्याप्तक में तेबीस आस्रव अपर्याप्तक में बारह आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पाँच करोड़ तेरानवे लाख अट्ठानवे हजार दो सौ छह अपर्याप्तक में सत्ताईस, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवाँ भाग, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अंगुल का असंख्यातवाँ भाग स्वरूप असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी–अवसर्पिणी, इकतीस भाव अपर्याप्तक में सत्ताईस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, तिरेसठ प्रकृतियों का बंध, इक्यासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस – एक सौ पैंतालीस/एक सौ ब्यालीस/एक सौ इकतालीस/एक सौ उनतालीस/एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार आहारक मार्गणा में प्रमत्तसंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ सभी पद सुगम है कुछ विशेष नहीं क्योंकि प्रमत्त गुणस्थान का विवेचन पहले कई बार कर आये हैं। यहाँ सत्त्व प्रकृति पर थोड़ा सा प्रकाश डालते है यहाँ देवायु सहित एक सौ छ्यालीस प्रकृति का सत्त्व होता है क्योंकि यहाँ नरक तिर्यंच आयु का सर्वथा अभाव है। यदि अबद्धायुष्क है तो एक सौ पैंतालीस का इसी प्रकार एक सौ ब्यालीस, एक सौ इकतालीस, एक सौ उनतालीस व एक सौ अड़तीस आदि का कथन पूर्व में कर चुके हैं। यदि आहारक द्विक की सत्ता नहीं है तो दो प्रकृति और कम हो जाती है जैसे–146–144, 142–140, 139–137, 138–136 आदि। यदि तीर्थंकर प्रकृति की सत्ता नहीं है तो एक प्रकृति और कम करना चाहिए जैसे 146–143, 142–139, 138–135, 139–136 आदि इसी प्रकार सभी गुणस्थानों में लगा लेना चाहिए।

शंका– पहले गुणस्थान में आहारकद्विक का सत्त्व किस प्रकार होता है क्योंकि आहारकद्विक का बंध सातवें गुणस्थान में होता है ?

समाधान– पहले अप्रमत्त गुणस्थान में आहारकद्विक का बन्ध करके मिथ्यात्व गुणस्थान में आये हुए जीव के आहारकद्विक का सत्त्व पाया जाता है।

शंका– उद्वेलना कितने समय में होती है ?

समाधान– पल्योपम के असंख्यातवें भाग में उद्वेलना होती है।

411. आहारक मार्गणा अप्रमत्तसंयत गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	अप्रमत्त संयत गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 संज्ञा (आहार बिना)
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	13 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान (केवलज्ञान बिना)
13.	संयम	3 (सा., छे., परि.)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	3 शुभ लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (उप., क्षयो., क्षा.)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान
22.	आस्रव	22 (9 योग + 13 कषाय)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	29699103
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– निरन्तर एक जीव की अपेक्षा–ज. अन्तर्मुहूर्त उ. अंगुल का असंख्यातवाँ भाग प्रमाण स्वरूप असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी उत्सर्पिणी
30.	भाव	31 (औ.13, क्षयो. 14, पा.2, क्षा.1, औ.1)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	59 गुणस्थानोक्त
33.	उदय	76 गुणस्थानोक्त
34.	सत्त्व	146 गुणस्थानोक्त

411. आहारमग्गणा अपमत्तसंजद गुणट्ठाणं

तेसुं आहारिणो अपमत्तसंजद गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अपमत्तसंजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, आहारेण विणा तिण्णि सण्णा, मणुस्स गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, तिण्णि वेदा, तेरस कसाया, चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा विहार सुद्धि तिण्णि संजमा, तिण्णि दंसणाणि, तिण्णि सुहलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्मज्झाणाणि, बाबीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा बे कोडि छण्णउदि लक्ख णवणउदि सहस्स तिउत्तर सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा णिरंतरं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण सुइअंगुलस्स असंखेज्ज भागस्वरूव असंखेज्जासंखेज्ज ओसप्पिणी अवसप्पिणी, इगतीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, ऊणसट्ठि पयडीणं बंधो, छसत्तदि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि आहार मग्गणाए अपमत्त संजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

आहारक मार्गणा अप्रमत्तसंयत गुणस्थान

उन्हीं आहारक अप्रमत्त संयत जीवों के आलाप कहने पर एक अप्रमत्त संयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, आहार बिना तीन संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, तीनों वेद, तेरह कषाय, चार ज्ञान, सामायिक – छेदोपस्थापना – परिहार विशुद्धि तीन संयम, तीन दर्शन, तीन शुभ लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम – क्षायिक – क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्म ध्यान, बाईस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – दो करोड़ छ्यानवे लाख निन्नयानवें हजार एक सौ तीन, क्षेत्र लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवाँ भाग, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अंगुल का असंख्यातवाँ भाग स्वरूप असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी, इकतीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, उनसठ प्रकृतियों का बंध, छियत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छियालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है। सत्व प्रकृतियाँ प्रमत्तसंयत गुणस्थान के समान जानना चाहिए।

इस प्रकार आहार मार्गणा में प्रमत्तसंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– सभी पद सुगम है उत्कृष्ट अन्तर असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी है शेष कथन सुगम है।

412. आहारक मार्गणा अपूर्वकरण गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	अपूर्वकरण गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	3 संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	13 कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	2 (सा., छे.)
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (उपशम, क्षायिक)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान / एक शुक्ल ध्यान
22.	आस्रव	22 (13 कषाय + 9 योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	897 (उपशम 299 क्षपक 598)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	उपशामक–नाना जीवों की अपेक्षा– ज. एक समय, उ. अन्तर्मुहूर्त, एक जीवापेक्षा– ज. एक समय , उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक– नाना जीव व एक जीव की अपेक्षा – ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उपशामक–नाना जीवों की अपेक्षा–ज. एक समय, उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीव–ज. अन्तर्मुहूर्त, उ. अंगुल का असंख्यातवाँ भाग क्षपक–नाना जीव की अपेक्षा– एक समय, उ. 6 माह एक जीव– निरन्तर
30.	भाव	29 (औद. 11, क्षयो. 12, पा.2, उप.2, क्षा.2) क्षपक=27 उपशामक=28
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	58 गुणस्थानोक्त
33.	उदय	72 गुणस्थानोक्त
34.	सत्त्व	उपशम– 146 से 138 तक क्षपक–138

412. आहार मग्गणा अपुव्वयरण गुणट्ठाणं

तेसुं आहारिणो अपुव्वयरण गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अपुव्वयरण गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, आहारेण विणा तिण्णि सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, तिण्णि वेदा, तेरह कसाया, चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, तिण्णि दंसणाणि, सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्म वा एयं सुक्कज्झाणं, बाबीस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा सत्तणउदिउत्तर अट्ठ सयं उवसामगेसु णवणउदिउत्तर बे सयं खवगेसु अट्ठणउदि उत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो उवसामगेसु णाणेग जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं उवसामगेसु णाणा जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदि भागा खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छम्मास एगजीवावेक्खा णिरंतरं, ऊणतीस भावा उवसामगेसु अट्ठबीस खवगेसु सत्तबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणूं, अट्ठावण्ण पयडीणं बंधो, बे सत्तदि पयडीणं उदओ एवं उवसामगेसु छादालुत्तर सयं/बादालुत्तर सयं/पणदालुत्तर/बादालुत्तर/इगदालुत्तर/उणदालुत्तर/ अडतीसुत्तर सयं पयडीणं खवगेसु अट्ठतीसुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि आहार मग्गणाए अपुव्वयरण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

आहारक मार्गणा अपूर्वकरण गुणस्थान

उन्हीं आहारक अपूर्वकरण जीवों के आलाप कहने पर एक अपूर्वकरण गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, आहार बिना तीन संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय त्रसकाय, नौ योग, तीन वेद, तेरह कषाय, चार ज्ञान, सामायिक – छेदोपस्थाना दो संयम, तीन दर्शन, शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम–क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्म या एक शुक्लध्यान, बाईस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा आठ सौ सत्तानवे उपशामक दो सौ निन्यानवे क्षपक पाँच सौ अंट्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवाँ भाग, काल – उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपक – नाना व एकजीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – उपशामक जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एकजीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अंगुल का असंख्यातवाँ भाग क्षपक – नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह माह एकजीवापेक्षा निरंतर, उनतीस भाव क्षपक में सत्ताईस उपशामक में अट्ठाईस, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, अट्ठावन प्रकृतियों का बंध, बहत्तर प्रकृतियों का उदय एवं 146 से 138 तक प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार आहार मार्गणा में अपूर्वकरण गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– सभी पद सुगम है। सत्त्व पूर्व की तरह जानकर कहना चाहिए शेष सुगम है।

413. आहारक मार्गणा अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

		सामान्य	
1.	गुणस्थान	अनिवृत्तिकरण गुणस्थान	
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति	
4.	प्राण	10 प्राण	
5.	संज्ञा	2 संज्ञा (मैथुन व परिग्रह)	
6.	गति	मनुष्यगति	
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	
8.	काय	त्रसकाय	
9.	योग	9 योग	
10.	वेद	3 वेद	
11.	कषाय	7 कषाय	
12.	ज्ञान	4 ज्ञान	
13.	संयम	2 (सा., छे.)	
14.	दर्शन	3 दर्शन	
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या	
16.	भव्य	भव्य	
17.	सम्यक्त्व	2 (उपशम, क्षायिक)	
18.	संज्ञी	संज्ञी	
19.	आहारक	आहारक	
20.	उपयोग	7 उपयोग	
21.	ध्यान	4 धर्मध्यान व एक शुक्ल ध्यान	
22.	आस्रव	16 (9 योग + 7 कषाय)	
23.	जाति	14 लाख	
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़	
25.	संख्या	897 (उपशामक 299, क्षपक 598)	
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग	
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग	
28.	काल	उपशामक-नाना जीव व एक जीव की अपेक्षा- ज. एक समय, उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक- नाना जीव व एक जीव की अपेक्षा - ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त	
29.	अन्तर	उपशामक-नाना जीवों की अपेक्षा-ज. एक समय, उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीव-ज. अन्तर्मुहूर्त, उ. अंगुल का असंख्यातवाँ भाग क्षपक-नाना जीवों की अपेक्षा- एक समय, उ. 6 माह एक जीव- निरन्तर	
30.	भाव	29 (औद. 11, क्षयो. 12, क्षा. 2, उप. 2, पा. 2) (उप.28, क्षपक 27)	
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ	उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	22 गुणस्थानोक्त	
33.	उदय	66 गुणस्थानोक्त	
34.	सत्त्व	उपशम- 145, 142, 138	क्षपक-138

413. आहार मग्गणा अणियट्टियरण गुणट्ठाणं

तेसुं आहारिणो अणियट्टियरण गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि - एग अणियट्टियरण गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, मेहुण परिग्गह बे सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, तिण्णि वेदा, सत्त कसाया, चत्तारि णाणाणि, सामाइय छेदोवट्ठावणा बे संजमा, तिण्णि दंसणाणि, एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, चत्तारि धम्मो वा एग सुक्कज्झाणं, सोलह आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा सत्तणउदिउत्तर अट्ठ सयं उवसामगेसु णवणउदि उत्तर बे सयं खवगेसु अट्ठणउदि उत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेखा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो उवसामगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदि भागा खवगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छम्मासा एगजीवावेक्खा णिरंतरं, ऊणतीस भावा खवगेसु सत्तवीस उवसामगेसु अट्ठबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणुं, बाबीस पयडीणं बंधो, छावट्ठि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तर सयं खवगेसु अडतीसुत्तर संय पयडीणं सच्चं होंति।

इदि आहार मग्गणाए अणियट्टियरण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

आहारक मार्गणा अनिवृत्तिकरण गुणस्थान

उन्हीं आहारक अनिवृत्तिकरण जीवों के आलाप कहने पर - एक अनिवृत्तिकरण गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, मैथुन परिग्रह दो संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, तीन वेद, सात कषाय, चार ज्ञान, सामायिक-छेदोपस्थापना दो संयम, तीन दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम-क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, चार धर्म ध्यान या एक शुक्ल ध्यान, सोलह आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा - आठ सौ संत्तानवे उपशामक दो सौ निन्यानवे क्षपक पाँच सौ अट्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा - लोक का असंख्यातवाँ भाग, स्पर्शन-लोक का असंख्यातवाँ भाग, काल - उपशामक नाना व एक जीवा जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपक - नाना व एकजीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर - उपशामक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अंगुल का असंख्यातवाँ भाग क्षपक - नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह माह एकजीवापेक्षा निरंतर, उनतीस भाव उपशामक में अट्ठाईस क्षपक में सत्ताईस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, बाईस प्रकृतियों का बंध, छ्यासठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस से एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार आहार मार्गणा में अनिवृत्तिकरण गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- यहाँ सभी पद सुगम है कुछ भी विशेषता नहीं है। सत्त्व उपशामक में पूर्व के समान ही समझना चाहिए जैसे एक सौ छ्यालीस, एक सौ पैंतालीस एक सौ ब्यालीस, एक सौ उनतालीस, एक सौ अड़तीस तथा यहाँ और भी विकल्प बनते हैं जैसे आहारकद्विक बिना तीर्थंकर बिना। कभी दोनों के बिना कभी एक के बिना आदि कई विकल्प है ऐसा जानकर कथन करना चाहिए। शेष सुगम है।

414. आहारक मार्गणा सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	1 परिग्रह संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	अवेद
11.	कषाय	सूक्ष्मलोभ
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	सूक्ष्म साम्पराय संयम
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	2 (उपशम, क्षायिक)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग
21.	ध्यान	एक शुक्ल ध्यान
22.	आस्रव	10 (9 योग + 1 कषाय)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	897 (उपशामक 299, क्षपक 598)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	उपशामक-नाना व एक जीवापेक्षा- ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त, एक जीवापेक्षा - ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त क्षपक- नाना व एक जीवापेक्षा- ज.व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	उपशामक-नाना जीवों की अपेक्षा-ज. एक समय, उ. वर्ष पृथक्त्व, एक जीव-ज. अन्तर्मुहूर्त, उ. अंगुल का असंख्यातवाँ भागरुप असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी क्षपक-नाना जीव की अपेक्षा- ज. एक समय, उ. 6 माह एक जीव- निरन्तर
30.	भाव	23 (औद. 5, क्षयो. 12, पा.2, उप.2, क्षा.2) (उपशामक = 22 क्षपक = 21)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	17 गुणस्थानोक्त
33.	उदय	60 गुणस्थानोक्त
34.	सत्त्व	उपशामक- 146, 142, 138 क्षपक- 102 गुणस्थानोक्त

414. आहार मग्गणा सुहुमसंपराय गुणट्ठाणं

तेसुं आहारिणो सुहुमसंपराय गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग सुहुमसंपराय गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, एग परिग्गहसण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णवजोगा, अवेदी, एग सुहुमलोह कसाओ, चत्तारि णाणाणि, सुहुमसंपराय संजमो, तिण्णि दंसणाणि, एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, एगं सुक्कज्झाणं, दस आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा सत्तणउदि उत्तर अट्ठ सयं उवसामगेसु णवणउदिउत्तर बे सयं खवगेसु अट्ठणउदिउत्तर पंचसयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो उवसामगेसु णाणेग जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं खवगेसु णाणेगजीवावेखा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं उवसामगेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एग जीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदि भागसरूव असंखेज्जासंखेज्ज ओवसप्पिणीअवसप्पिणी खवगेसु णाणा जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छम्मासो एगजीवावेक्खा णिरंतरं, तेबीस भावा उवसामगेसु बाबीस खवगेसु इगबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्त पंच सयं धणुं, सत्तदस पयडीणं बंधो, सट्ठि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तरत्ती सयं बे उत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि आहार मग्गणाए सुहुमसंपराय गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

आहारक मार्गणा सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान

उन्हीं आहारक सूक्ष्मसाम्पराय जीवों के आलाप कहने पर – एक सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, एक परिग्रह संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, अवेद, एक सूक्ष्म लोभ कषाय, चार ज्ञान, सूक्ष्मसांपराय संयम, तीन दर्शन, एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम – क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, एक शुक्ल ध्यान, दस आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – आठ सौ संत्तानवे उपशामक दो सौ निंन्यानवे क्षपक पाँच सौ अंट्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग, काल – उपशामक नाना व एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त क्षपक – नाना व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – उपशामक में नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अंगुल के असंख्यातवें भाग रूप असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल प्रमाण क्षपक नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह माह एकजीवापेक्षा निरंतर, तेईस भाव उपशामक बाईस क्षपक में इक्कीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, सत्तरह प्रकृतियों का बंध, साठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार आहार मार्गणा में सूक्ष्मसांपराय गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– सभी पद सरल है पूर्व में जो विवेचन किया है वहाँ से जाने बन्ध, उदय, सत्त्व गुणस्थानवत् जानें।

415. आहारक मार्गणा उपशान्त मोह गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	उपशान्त मोह गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	उपशान्त संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	अवेद
11.	कषाय	उपशांत कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	यथाख्यातसंयम
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	उपशम, क्षायिक सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग
21.	ध्यान	पृथक्त्व वितर्क शुक्ल ध्यान
22.	आस्रव	9 आस्रव
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	299
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त एक जीव की अपेक्षा – ज. एक समय उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व एक जीव की अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. अंगुल का असंख्यातवाँ भाग स्वरूप असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी
30.	भाव	21 (औद. 4, क्षयो. 12, क्षा.1, औप.2, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	1 गुणस्थानोक्त
33.	उदय	59 गुणस्थानोक्त
34.	सत्त्व	146–138 गुणस्थानोक्त

415. आहार मग्गणा उवसंतमोह गुणट्ठाणं

तेसुं आहारिणो उवसंतमोह गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग उवसंत मोह गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छपज्जत्ती, दस पाणा, उवसंत सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि तसकाओ, णवजोगा, अवेदी, अकसायी, चत्तारि णाणाणि, जहाक्खाद संजमो, तिण्णि दंसणाणि, एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइये बे सम्मत्ता, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, एग पिथक्क वित्तक्क वीयारं सुक्कज्झाणं, णव आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा णवणउदिउत्तर बे सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणेग जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदि भागरूव असंखेज्जासंखेज्ज ओसप्पिणीअवसप्पिणी, इगबीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणूं, एगसादावेयणीयो बंधो, ऊणसट्ठि पयडीणं उदओ एवं छादालुत्तरत्ती सयं एवं अट्ठतीसुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि आहार मग्गणाए उवसंत मोह गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

आहारक मार्गणा उपशांत मोह गुणस्थान

उन्हीं आहारक उपशांत मोह जीवों के आलाप कहने पर – एक उपशांत मोह गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, उपशांत संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, अवेद, अकषाय, चार ज्ञान, यथाख्यात संयम, तीन दर्शन, शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम क्षायिक दो सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, एक पृथक्त्व वितर्क शुक्ल ध्यान, नौ आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – दो सौ निंन्यानवे, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग, काल – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त, अंतर – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अंगुल का असंख्यातवां भागरूप असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणीअवसर्पिणी, इक्कीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक सातावेदनीय का बंध, उनसठ प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ छ्यालीस से एक सौ अड़तीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार आहार मार्गणा में उपशांत मोह गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– सभी पद सुगम है क्योंकि पहले व्याख्यान कर चुके हैं। अन्तर का जो कथन किया है उसमें एक जीव का जघन्य अन्तर तो सुगम है उत्कृष्ट अन्तर अंगुल का असंख्यातवाँ भाग स्वरूप असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी कहा है उसका तात्पर्य यह है कि ऐसा भी संभव है कि कोई जीव इतने समय तक अनाहारक ही न हो केवल ऋजुगति से मरण कर दूसरी पर्याय को प्राप्त होता रहे और उसी आहारक मार्गणा में दो बार अथवा तीन बार अथवा चार बार उपशम श्रेणी चढ़े तो उसका अन्तर प्राप्त होता है अब एक जीव एक जीवन में दो बार उपशम श्रेणी चढ़ता हैं, तो कम से कम अन्तर्मुहूर्त समय के बाद ही चढ़ेगा और एक ही जीवन में अधिक से अधिक कुछ कम पूर्व कोटि का भी अन्तर हो सकता है एक जीवन में दो बार से अधिक श्रेणी चढ़ता नहीं है। अब यहाँ मार्गणा का प्रकरण है तो यूँ समझें एक जीव मनुष्य बनकर मुनि बन उसने अपने जीवन में उपशम श्रेणी के योग्य जघन्य काल में उपशम श्रेणी माड़ी पश्चात् मिथ्यात्व में चला गया और ऋजुगति से मरता रहा और असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल के अन्तिम भव में मनुष्य हुआ और उपशम श्रेणी चढ़ा इस प्रकार उत्कृष्ट अन्तर अंगुल का असंख्यातवाँ भाग स्वरूप असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी प्राप्त हुआ शेष कथन सुगम है।

शंका – अंगुल का असंख्यातवाँ भाग स्वरूप असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी से क्या तात्पर्य है ?

समाधान – एक प्रदेश मोटे और एक अंगुल लम्बे आकाश प्रदेश में असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणीअवसर्पिणी के समयों के बराबर प्रदेश रहते हैं और उसके असंख्यातवें भाग में असंख्यात वे भाग हीन आकाश प्रदेश पाये जाते है। जिनका प्रमाण पूर्वोक्त (असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी प्रमाण है)

शंका – इतने से छोटे क्षेत्र में इतने समय के प्रदेश कैसे आ सकते हैं ?

समाधान – यह कोई दोष नहीं है ? क्योंकि काल के प्रमाण से क्षेत्र प्रमाण अत्यंत सूक्ष्म होता है।

यह आगम प्रमाण से जाना जाता है आगम जिनेन्द्र कथित होताहै और जिनेन्द्र अन्यथा वादी नहीं होते उनका कथन अत्यंत सूक्ष्म है जो छद्मस्थों की समझ में आसानी से नहीं आ सकता है अत: उनके वचनों पर श्रद्धा करना यही सम्यक्त्व है जब हमारा ज्ञान इतना सूक्ष्म हो जायेगा उस दिन समझ में आ जायेगा अथवा केवली के पास जायेगे उस समय समझ में आयेगा अभी तो श्रद्धान करो। यही कल्याण का मार्ग है।

416. आहारक मार्गणा क्षीण मोह गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	क्षीण मोह गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	10 प्राण
5.	संज्ञा	क्षीण संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	9 योग
10.	वेद	अवेद
11.	कषाय	क्षीण कषाय
12.	ज्ञान	4 ज्ञान
13.	संयम	यथाख्यात संयम
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	आहारक
20.	उपयोग	7 उपयोग
21.	ध्यान	2 (प्रथम व द्वितीय शुक्ल ध्यान)
22.	आस्रव	9 (योग)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	598
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीवों व एक जीव की अपेक्षा– ज. व उ. अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– ज. एक समय उ. 6 माह एक जीव की अपेक्षा– निरन्तर
30.	भाव	20 (औद. 4, क्षयो. 12, क्षा.2, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	1 गुणस्थानोक्त
33.	उदय	57 गुणस्थानोक्त
34.	सत्त्व	101 गुणस्थानोक्त

416. आहार मग्गणा खीणमोह गुणट्ठाणं

तेसुं आहारिणो खीणमोह गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग खीणमोह गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, दस पाणा, खीण सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, णव जोगा, अवेदी, खीण कसाओ, चत्तारि णाणाणि, जहाक्खाद संजमो, तिण्णि दंसणाणि, एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, खइय सम्मत्तं, सण्णी, आहारिणो, सत्त उवजोगा, पिथक्क वित्तक्क एकत्तवितक्क बे सुक्कज्झाणं, णव आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अट्ठणउदि उत्तर पंच सयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणेगजीवावेक्खा जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छम्मास एगजीवावेक्खा णिरंतरं, बीस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू एयं सादावेयणीओ बंधो, सत्तावण्ण पयडीणं उदओ एवं एगुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि आहार मग्गणाए खीणमोह गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

आहारक मार्गणा क्षीणमोह गुणस्थान

उन्हीं आहारक क्षीणमोह जीवों के आलाप कहने पर – एक क्षीणमोह गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, दस प्राण, क्षीण संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, नौ योग, अवेद, क्षीण कषाय, चार ज्ञान, यथाख्यात संयम, तीन दर्शन, शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, संज्ञी, आहारक, सात उपयोग, पृथक्त्व व एकत्व वितर्क दो शुक्ल ध्यान, नौ आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पाँच सौ अट्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग, काल – नाना व एक जीवापेक्षा जघन्योत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त, अंतर – नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह माह एक जीवापेक्षा निरंतर, बीस भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक साता वेदनीय का बंध, सत्तावन प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ एक प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार आहार मार्गणा में क्षीणमोह गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– सभी पद सुगम हैं अन्तर नाना जीवों का जघन्य तो एक समय है और उत्कृष्ट छह माह है क्योंकि अधिक से अधिक छह माह तक कोई जीव क्षपक श्रेणी नहीं चढ़ता उसके बाद कोई न कोई चढ़ेगा ही। एक जीव निरंतर है क्योंकि कभी भी क्षीण मोह गुणस्थान दो बार प्राप्त नहीं होता इसलिए अन्तर नहीं है। शेष सुगम है।

417. आहारक मार्गणा सयोगकेवली गुणस्थान

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	सयोग केवली गुणस्थान	–	–
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति 6 अपर्याप्ति	6 पर्याप्ति	6 अपर्या.
4.	प्राण	4 प्राण व 2 प्राण	4 (आयु श्वासो. वचनबल व कायबल)	2 (आयु, कायबल)
5.	संज्ञा	0 क्षीण संज्ञा	–	–
6.	गति	मनुष्यगति	–	–
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	–	–
8.	काय	त्रसकाय	–	–
9.	योग	6 योग (2म.,2व., औदा.,औ. मि., का.यो.)	5 (2 म., 2 व., औदा.)	1 औदा.मि. काययोग
10.	वेद	अपगतवेद	–	–
11.	कषाय	अकषाय	–	–
12.	ज्ञान	केवलज्ञान	–	–
13.	संयम	यथाख्यात संयम	–	–
14.	दर्शन	केवलदर्शन	–	–
15.	लेश्या	शुक्ल लेश्या	–	–
16.	भव्य	भव्य	–	–
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक सम्यक्त्व	–	–
18.	संज्ञी	नो संज्ञी, नो असंज्ञी	–	–
19.	आहारक	आहारक	–	–
20.	उपयोग	2 (युगपत्)	–	–
21.	ध्यान	एक तृतीय शुक्ल ध्यान (सूक्ष्मक्रियाप्रतिपाति)	–	–
22.	आस्रव	6 (योग)	5 (आस्रव)	1 (आस्रव)
23.	जाति	14 लाख	–	–
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़	–	–
25.	संख्या	898502	–	40
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग व लोक का संख्यातवां भाग		
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग व लोक का संख्यातवां भाग		
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा– ज. अन्तर्मुहूर्त उ. कुछ कम एक पूर्व कोटि		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– निरन्तर एक जीव की अपेक्षा– निरन्तर		
30.	भाव	14 (क्षा.9, पा.2, औद.3)		
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ	उ. 525 धनुष	
32.	बन्ध	1 (साता वेदनीय)		
33.	उदय	42 गुणस्थानोक्त		
34.	सत्त्व	85 गुणस्थानोक्त		

417. आहार मग्गणा सजोग केवली गुणट्ठाणं

तेसुं आहारिणो सजोग केवली गुणट्ठाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग सजोगकेवलीगुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्तापज्जत्त बे जीव समासो, छ पज्जत्ती छ अपज्जत्ती, चत्तारि पाणा अपज्जत्तेसु बे पाणा, खीण सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, छ जोगा पज्जत्तेसु पंच अपज्जत्तेसु एग जोगा, अवेदी, अकसायी, केवलणाणं, जहाक्खादसंजमो, केवलदंसणं, सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, खइय सम्मत्तं, णो सण्णी णो असण्णी, आहारिणो, बे उवजोगा जुगवं, सुहुमक्किरिया पडिपाडि सुक्कज्झाणं, छ आसवा पज्जत्तेसु पंच अपज्जत्तेसु एग आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अट्ठ लक्ख अट्ठणउदि सहस्स बे उत्तर पंच सयं अपज्जत्तेसु दाल, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व लोयस्स संखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व लोयस्स संखेज्जदि भागा, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण अंतोमुहुत्तं उक्कस्सेण किंचिदूण पुव्वकोडीणं, अंतरं णाणेगजीवावेक्खा णिरंतरं, चोद्दस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, एयं सादावेयणीओ बंधो, बादाल पयडीणं उदओ एवं पंचासीदि पयडीणं सच्चं होंति।

इदि आहार मग्गणाए सजोग केवली गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

आहारक मार्गणा सयोगकेवली गुणस्थान

उन्हीं आहारक सयोग केवली गुणस्थान के आलाप कहने पर – एक सयोग केवली गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अपर्याप्त दो जीव समास, छहों पर्याप्ति छहो अपर्याप्ति, चार प्राण अपर्याप्तक में दो प्राण, क्षीण संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, छह योग पर्याप्तक में पाँच अपर्याप्तक में एक योग, अपगत वेद, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यात संयम, केवलदर्शन, शुक्ल लेश्या, भव्यसिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, नो संज्ञी नो असंज्ञी, आहारक, दो उपयोग युगपत्, सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाति शुक्ल ध्यान, छह आस्रव पर्याप्त में पाँच अपर्याप्तक में एक आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा आठ लाख अट्ठानवे हजार पाँच सौ दो अपर्याप्तक चालीस, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग व लोक का संख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग व लोक का संख्यातवां भाग, काल – नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य अंतर्मुहूर्त उत्कृष्ट कुछ कम एक पूर्व कोटि, अंतर – नाना व एक जीवापेक्षा निरंतर, चौदह भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक सातावेदनीय का बंध, ब्यालीस प्रकृतियों का उदय एवं पचासी प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार आहार मार्गणा में सयोग केवली गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– आहारक सयोग केवली में दो जीव समास पाये जाते हैं क्योंकि अपर्याप्तक अवस्था में आहारक मिश्र काययोग के माध्यम से आहार वर्गणा को ग्रहण करते हैं शेष पद सुगम हैं क्योंकि पहले भी कहा जा चुका है क्षेत्र और स्पर्शन दोनों समान है। उनका प्रमाण इस प्रकार है स्वस्थान की अपेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग, दण्ड समुद्घात में लोक का संख्यातवां भाग कपाट समुद्घात में संख्यात बहुभाग होता है और आहारक में दो ही समुद्घात होते हैं, क्योंकि प्रतर और लोक पूरण समुद्घात में कार्माण काययोग होता है वहाँ अनाहारक अवस्था होती है। प्रतर में लोक का असंख्यात बहुभाग क्षेत्र होता है लोक पूरण में सम्पूर्ण लोक में केवली रहते हैं। क्योंकि प्रतर समुद्घात में वात वलयों को छोड़कर सम्पूर्ण लोक में उनके प्रदेश फैल जाते हैं। इसी प्रकार स्पर्श है। काल सुगम है क्योंकि जघन्य अन्तर्मुहूर्त सुगम है उत्कृष्ट आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त कम एक पूर्व कोटि होता है क्योंकि कोई आठ वर्ष अन्तर्मुहूर्त की उम्र में दीक्षा लेकर केवलज्ञान उत्पन्न कर सकता है। अन्तर सुगम है। भावों का कथन करते हैं।

क्षायिक भावों में अनंतज्ञान, दर्शन, सुख, वीर्य, दान, लाभ, भोग, उपभोग, चारित्र तथा औदयिक भाव में गति, असिद्धत्व, लेश्या ये तीन तथा पारिणामिक भाव में भव्यत्व और जीवत्व ये दो प्रकार 9+3+2=चौदह भाव होते हैं। बन्ध उदय सत्त्व गुणस्थानवत् जानना चाहिए शेष सुगम है।

418. अनाहारक सामान्य

		सामान्य	पर्याप्त	अपर्याप्त
1.	गुणस्थान	1, 2, 4, 13, 14	14	1, 2, 4, 13
2.	जीवसमास	7 जीव समास, अपर्याप्तक में एक पर्याप्तक में	1 जीव समास	7 जीव समास
3.	पर्याप्ति	6, 5, 4 अपर्याप्ति, 6 पर्याप्ति	6 पर्या.	6, 5, 4 अपर्या.
4.	प्राण	7,7,6,5,4,3,2,1	1 प्राण	7,7,6,5,4,3,1
5.	संज्ञा	4 संज्ञा, क्षीण संज्ञा	क्षीण संज्ञा	4 संज्ञा व क्षीण संज्ञा
6.	गति	4 गति	1 मनु.	4 गति
7.	इन्द्रिय	एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय व स्थावर काय	त्रस	त्रस स्थावर दोनों
9.	योग	एक कार्माण काय योग व अयोग	अयोग	कार्माण काययोग
10.	वेद	3 वेद, अवेद	अवेद	3 वेद व अवेद
11.	कषाय	25 कषाय, अकषाय	अकषाय	25 कषाय व अकषाय
12.	ज्ञान	6 (कुअवधिज्ञान व मन:पर्यय बिना 6 ज्ञान)	केवलज्ञान	6 ज्ञान
13.	संयम	असंयम, यथाख्यात	यथाख्यात	असंयम व यथाख्यात
14.	दर्शन	4 (चक्षु, अचक्षु, अवधि व केवलदर्शन)	केवलदर्शन	4 दर्शन
15.	लेश्या	6 लेश्या व अलेश्या	अलेश्या	6 लेश्या व अलेश्या
16.	भव्य	भव्य, अभव्य	भव्य	दोनों
17.	सम्यक्त्व	मि., सा., क्षा., क्षयो., उपशम	क्षायिक	पाँच
18.	संज्ञी	संज्ञी, असंज्ञी व नो संज्ञी नो असंज्ञी	नो संज्ञी नो असंज्ञी	संज्ञी असंज्ञी व नो संज्ञी नो असंज्ञी
19.	आहारक	अनाहारक	अनाहारक	अनाहारक
20.	उपयोग	10 (6 ज्ञानो. + 4 दर्शनो.)	2 उपयोग	10 उपयोग
21.	ध्यान	12 (4 आर्त्त, 4 रौद्र, 2 धर्म, 2 शुक्लध्यान)	1 शुक्ल ध्यान	11 ध्यान
22.	आस्रव	43 (25+1 योग+12 अवि.+5 मि.)	निरास्रव	43 आस्रव
23.	जाति	84 लाख	14 लाख	84 लाख
24.	कुलकोटि	199½ लाख करोड़	14 लाख करोड़	199½ लाख करोड़
25.	संख्या	अनन्तानन्त	598	अनंतानंत
26.	क्षेत्र	सर्वलोक	लो.अ.भा.	लो.अ.भा. सर्वलोक
27.	स्पर्शन	सर्वलोक	लो.अ.भा.	लो.अ.भा. सर्वलोक
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा– ज. एक समय उ. 3 समय अन्तर्मुहूर्त पं. नानैक जी. ज. उ.		
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– निरन्तर एक जीव की अपेक्षा– पं. ज. तीन स. कम क्षुद्र. 3 अंगु. असंख्यातवां भाग नाना जीवापेक्षा ज. एक समय उ. 6 माह एक जीव निरंतर		
30.	भाव	48 (औ. 21, क्षयो. 14, क्षा. 9, पा. 3, औप.1) पर्याप्तक 13		
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का असंख्यातवां भाग	उ. 1000 योजन	
32.	बन्ध	112 (कार्माण काययोग के समान)		
33.	उदय	89 (कार्माण काययोग के समान)		
34.	सत्त्व	148 (कार्माण काययोग के समान)		

418. अणाहारिणो सामण्णं

अह आहार मग्गणाणुवादेण अणाहारिणो जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि एग दो चउ तेरह चोद्दस पंच गुणट्ठाणाणि अतीद गुणट्ठाणाणि, पज्जत्तेसु चोद्दस गुणट्ठाणं अट्ठ जीव समासा अतीदजीवसमासो वि सत्त अपज्जत्त जीव समासा एयं पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्तियो छ अपज्जत्तियो पंच चउ अपज्जत्ति, सत्त सत्त छ पंच चउ ति दो एगं पाणा पज्जत्तेसु एग आउपाणा अपज्जत्तेसु सत्तसत्त छ पंचचउ तिबे पाणा, चत्तारि सण्णा व खीण सण्णा, चत्तारि गदी पज्जत्तेसु एग मणुस्सगदी, एइंदियत्तो पंचिंदियाणि, छक्कायो, एग कम्माण कायजोगो व अजोगी, तिण्णि वेदा अवेदी, पणबीस कसाया व अकसायी, बे अण्णाणाणि चत्तारि णाणाणि, असंजमो व जहक्खाद बे संजमा, चत्तारि दंसणाणि, छल्लेस्सा अलेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्वसिद्धिया दोण्णि, मिच्छत्त सासण उवसम खइय खओवसमिय पंच सम्मत्ता, सण्णी असण्णी व णो सण्णी णो असण्णी, अणाहारिणो, दस उवजोगा, बारस झाणाणि, तिदाल आसवा व णिरासवा, चउरासीदि लक्ख जादी पज्जत्तेसु चोद्दस लक्ख जादी, अद्धणवणउदि उत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं पज्जत्तेसु चोद्दस लक्ख कोडी कुल कोडीणं, संखावेक्खाए अणंताणंत पज्जत्तेसु अट्ठणउदि पंच सयं, खेत्तावेक्खा सव्वलोयो, फासावेक्खा सव्वलोयो, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खाए जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण तिण्णि समया पज्जत्तेसु णाणेग जीवावेक्खा जहण्णुक्सेण अंतोमुहुत्तं, अंतरं णाणजीवावेक्खा णिरंतरं एग जीवावेक्खाए जहण्णेण तिसमऊण खुद्दाभवउक्कस्सेण सुइ अंगुलस्स असंखेज्जदि भागसरुवे असंखेज्जासंखेज्ज अवसप्पिणी उवसप्पिणी पज्जत्तेसु णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एग समओ उक्कस्सेण छम्मासा एग जीवावेक्खा णत्थि अंतरं, अडदाल भावा पज्जत्तेसु तेरस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, बारसुत्तर सयं पयडीणं बंधो व अबंधो, नवासीदि पयडीणं उदओ एवं अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि आहार मग्गणाए अणाहारिणं साम्मण्णालाव सम्मत्ता।

अनाहारक सामान्य

अब आहारक मार्गणा के अनुवाद से अनाहारक जीवों के आलाप कहने पर - एक-दो-चार-तेरह-चौदह पाँच गुणस्थान व गुणस्थानातीत पर्याप्त में 14वाँ अपर्याप्त में एक-दो-चार-तेरहवां गुणस्थान, सात अपर्याप्त एक पर्याप्त आठ जीवसमास अतीत जीव समास, छह पर्याप्ति छह-पाँच-चार अपर्याप्ति, सात-सात-छह-पाँच-चार-तीन-एक प्राण पर्याप्त में एक प्राण अपर्याप्त में सात-सात--छह-पाँच-चार-तीन-दो प्राण, चारों संज्ञा व क्षीण संज्ञा, चारों गति पर्याप्तक में एक मनुष्यगति, एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय, छहों काय, एक योग व अयोग, तीनों वेद व अवेद, पच्चीस कषाय व अकषाय, कुअवधि व मन:पर्यय बिना दो अज्ञान चार ज्ञान(छह ज्ञान), असंयम व यथाख्यात संयम, चारों दर्शन, छहों लेश्या व अलेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक दोनों, मिथ्यात्व सासादन उपशम क्षायिक क्षयोपशम पाँच सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी व नो संज्ञी नो असंज्ञी, अनाहारक, दस उपयोग, बारह ध्यान, तेतालीस आस्रव व निरास्रव, चौरासी लाख जाति पर्याप्तक में चौदह लाख जाति, एक सौ साढ़े निन्यानवे लाख करोड़ कुल कोटि अपर्याप्तक में चौदह लाख करोड़ कुल कोटी, संख्यापेक्षा - अनंतानंत पर्याप्तक में पाँच सौ अट्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा - सर्वलोक, स्पर्शन सर्वलोक, काल - नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट तीन समय पर्याप्तक में अंतर्मुहूर्त, अंतर - नानाजीवापेक्षा निरंतर एक जीवापेक्षा जघन्य तीन समय कम क्षुद्रभव उत्कृष्ट सूच्यंगुल का असंख्यात वां भाग स्वरूप असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी पर्याप्तक में नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह माह एक जीवापेक्षा निरन्तर, अड़तालीस भाव पर्याप्तक में तेरह भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ बारह प्रकृतियों का बंध व अबंध, नवासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार आहार मार्गणा में अनाहारकों का सामान्यालाप समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- अनाहारक जीवों में सामान्य से पाँच गुणस्थान व अतीत गुणस्थान होता है जिसका कथन मूल में किया ही है। शेष पदों का यथास्थान कथन किया जायेगा। अन्तर का कथन करते हैं क्योंकि सामान्य से अन्तर अंगुल का असंख्यातवां भाग स्वरूप असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी अवसर्पिणी काल तक होता है क्योंकि ऐसा भी संभव है कि जीव इतने समय तक आहारक ही बना रहे अनाहारक हो ही नहीं पश्चात् अनाहारक नियम से होता है। जघन्य अन्तर सुगम है क्योंकि कोई जीव सबसे छोटी आयु लेकर जन्मा तीन समय तक अनाहारक रहा पुन: आहारक हो अपनी आयु को पूर्ण कर पुन: अनाहारक हो गया इस प्रकार तीन समय कम क्षुद्रभव जघन्य अन्तर हुआ शेष कथन सुगम है। काल जघन्य एक समय उत्कृष्ट तीन समय सुगम है।

419. अनाहारक मिथ्यात्व गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	मिथ्यात्व गुणस्थान
2.	जीवसमास	7 अपर्याप्त जीव समास
3.	पर्याप्ति	6, 5, 4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	7,7,6,5,4,3 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	4 गति
7.	इन्द्रिय	एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक
8.	काय	त्रस/स्थावर
9.	योग	1 कार्मण काययोग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	25 कषाय
12.	ज्ञान	2 कुज्ञान
13.	संयम	असंयम
14.	दर्शन	2 दर्शन (चक्षु, अचक्षु)
15.	लेश्या	6 लेश्या द्र. एक शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य, अभव्य
17.	सम्यक्त्व	मिथ्यात्व
18.	संज्ञी	संज्ञी व असंज्ञी
19.	आहारक	अनाहारक
20.	उपयोग	4 उपयोग
21.	ध्यान	8 (4 आर्त्त + 4 रौद्र)
22.	आस्रव	43 (25 कषाय+5 मिथ्या.+1 योग+12 अविरति)
23.	जाति	84 लाख
24.	कुलकोटि	199½ लाख करोड़
25.	संख्या	अनन्तानन्त
26.	क्षेत्र	सर्वलोक
27.	स्पर्शन	सर्वलोक
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– सर्वकाल एक जीव की अपेक्षा– ज. एक समय उ. तीन समय
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– निरन्तर एक जीव की अपेक्षा– निरन्तर
30.	भाव	33 (औद. 21, क्षयो. 9, पा.3)
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग उ. 1000 योजन
32.	बन्ध	107 (कार्माण काययोग के समान)
33.	उदय	87 (कार्माण काययोग के समान)
34.	सत्त्व	148 (कार्माण काययोग के समान)

419. अणाहारिणो मिच्छत्त गुणट्ठाणं

तेसुं अणाहारिणो मिच्छत्त गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि - एग मिच्छत्तगुणट्ठाणं, अपज्जत्त सत्त जीव समासा, छ पंच चउ अपज्जत्ती, सत्त सत्त छ पंच चउ ति पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, एइंदियत्तो पंचिंदियाणि, छक्काय, एगं कम्माणकायजोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, बे अण्णाणाणि, असंजमो, चक्खु अचक्खु बे दंसणाणि, छल्लेस्सा दव्वेण एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया अभव्वसिद्धिया दोण्णि, मिच्छत्त सम्मत्तं, सण्णी असण्णी दोण्णि, अणाहारिणो, चत्तारि उवजोगा, अट्ठ झाणाणि, तिदाल आसवा, चउरासीदि लक्ख जादी, अद्ध णवणउदि उत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अणंताणंत, खेत्तावेक्खा सव्वलोयो, फासावेक्खया सव्वलोयो, कालो णाणाजीवावेक्खा सव्वकालो एगजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण तिण्णि समया, अंतरं णाणेगजीवावेक्खा णिरंतरं, तेतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजण सहस्सं, सत्तुत्तर सयं पयडीणं बंधो, सत्तासीदि पयडीणं उदओ एवं अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि आहार मग्गणाए अणाहारिणं मिच्छत्त गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

अनाहारक मिथ्यात्व गुणस्थान

उन्हीं अनाहरक मिथ्यादृष्टि जीवों के आलाप कहने पर - एक मिथ्यात्व गुणस्थान, अपर्याप्त सात जीव समास, छह-पाँच-चार अपर्याप्ति, सात-सात-छह-पाँच-चार-तीन प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय, छहों काय, एक कार्माण काय योग, तीनों वेद, पच्चीस कषाय, दो अज्ञान, असंयम, चक्षु अचक्षु दो दर्शन, भाव से छहों लेश्या द्रव्य से एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक अभव्य सिद्धिक, मिथ्यात्व सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी दोनों, अनाहारक, चार उपयोग, आठ ध्यान, तेतालीस आस्रव, चौरासी लाख जाति, एक सौ साढ़े निन्यानवे लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा - अनंतानंत, क्षेत्रापेक्षा - सर्वलोक, स्पर्शन - सर्वलोक, काल - नानाजीवापेक्षा सर्वकाल एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट तीन समय, अंतर - नाना व एक जीवापेक्षा निरंतर, तेतीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, एक सौ सात प्रकृतियों का बंध, सत्तासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार आहार मार्गणा में अनाहारकों में मिथ्यात्व गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :- यहाँ भाव से छहों लेश्या व द्रव्य से एक शुक्ल लेश्या होती है क्योंकि कार्माण वर्गणाओं का रंग शुक्ल (सफेद) होता है, शेष पद सुगम हैं। अन्तर का कथन करते हैं अन्तर नहीं है निरंतर है इसका कारण यह है कि अनाहारक अवस्था में गुणस्थान परिवर्तन नहीं हो सकता जब तक गुणस्थान परिवर्तन नहीं होगा तो अन्तर भी प्राप्त नहीं होता सामान्य से मार्गणा परिवर्तन की अपेक्षा अन्तर निकलता है किन्तु विशेषता से गुणस्थान परावर्तन करके अन्तर निकालते हैं। अनाहारक जीवों के किसी भी आयु का बन्ध नहीं होता नरकद्विक व आहारकद्विक बिना एक सौ बारह प्रकृतियों का बन्ध होता है। मिथ्यात्व गुणस्थान में देव चतुष्क व तीर्थंकर प्रकृति का अबन्ध होने से एक सौ सात का ही बन्ध है तथा कार्माण काय योग के समान सतासी प्रकृतियों का उदय व एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व जानना चाहिए जो कि सुगम है कोई व्याख्या के योग्य नहीं है। अवगाहना के विषय में कोई उपदेश प्राप्त नहीं होता मात्र यहाँ युक्ति का प्रयोग करते हुई अवगाहना कही है क्योंकि जब जीव पूर्व शरीर को छोड़कर नवीन शरीर को ग्रहण करने के लिए जाता है उस समय आनुपूर्वी नामकर्म के उदय से पूर्व आकार ही रहता है अत: वही अवगाहना मानना पड़ेगी। इसके अलावा अवगाहना प्राप्त करने का कोई उपाय नहीं है। शेष सुगम है।

420. अनाहारक सासादन गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	सासादन गुणस्थान
2.	जीवसमास	6 (बादर एकेन्द्रिय दो, तीन, चार व संज्ञी पंचेन्द्रिय व असंज्ञी पंचेन्द्रिय) अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6, 5, 4 अपर्याप्ति
4.	प्राण	7,7,6,5,4,3 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	तीन गति (नरक गति बिना)
7.	इन्द्रिय	एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक
8.	काय	त्रस/स्थावर
9.	योग	1 कार्माण काय योग
10.	वेद	3 वेद
11.	कषाय	25 कषाय
12.	ज्ञान	2 कुज्ञान
13.	संयम	असंयम
14.	दर्शन	2 दर्शन
15.	लेश्या	भाव से 6 लेश्या द्रव्य से एक शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	सासादन
18.	संज्ञी	संज्ञी व असंज्ञी
19.	आहारक	अनाहारक
20.	उपयोग	4 उपयोग
21.	ध्यान	8 (4 आर्त्त, 4 रौद्र)
22.	आस्रव	38 (25+12+1)
23.	जाति	52 लाख (नरक बिना)
24.	कुलकोटि	164½ लाख करोड़ (नरक बिना)
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग, कुछ कम 11/14 राजू
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– ज. एक समय उ. आवली का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा– ज. एक समय उ. दो समय
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– ज. एक समय उ. पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा– निरन्तर
30.	भाव	30 (औद. 19, क्षयो. 9, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग उ. संख्यात धनुष
32.	बन्ध	94 (कार्माण काययोग के समान)
33.	उदय	81 (कार्माण काययोग के समान)
34.	सत्त्व	144 (तीर्थंकर, आहारकद्विक, नरकायु बिना)

420. अणाहारिणो सासण गुणट्ठाणं

तेसुं अणाहारिणो सासण गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग सासण गुणट्ठाणं, एइंदिय सुहुमेण विणा छ अपज्जत्त जीव समासा, छ पंच चउ अपज्जत्ती, सत्त सत्त छ पंच चउ ति पाणा, चत्तारि सण्णा, णिरयेण विणा तिण्णिगदी, एइंदियत्तो पंचेदियाणि, तसथावरा, कम्माणकायजोगा, तिण्णि वेदा, पणबीस कसाया, बे अण्णाणाणि, असंजमो, बे दंसणाणि, भावेण छल्लेस्सा दव्वेण एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, सासण सम्मत्तं, सण्णी असण्णी दोण्णि, अणाहारिणो, चत्तारि उवजोगा, अट्ठ झाणाणि, अड़तीस आसवा, वावण्ण लक्ख जादी, अद्ध चउसट्ठि उत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स[1] असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व एगारस चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण आवलिओ असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण बे समया, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा एगजीवावेक्खा णिरंतरं, तीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स असंखेज्जदि भागा उक्कस्सेण संखेज्जधणुं,चउणवदि पयडीणं बंधो, एगासीदि पयडीणं उदओ एवं चदुदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि आहार मग्गणाए अणाहारिणं सासण गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

अनाहारक सासादन गुणस्थान

उन्हीं अनाहारक जीवों में सासादन गुणस्थानालाप कहने पर – एक सासादन गुणस्थान, एकेन्द्रिय सूक्ष्म बिना छह अपर्याप्त जीव समास, छह–पाँच–चार अपर्याप्ति, सात–सात–छह–पाँच–चार–तीन प्राण, चारों संज्ञाएँ, नरक बिना तीन गति, एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय, त्रसस्थावर काय, एक कार्माण काय योग, तीनों वेद, पच्चीस कषाय, दो अज्ञान, असंयम, दो दर्शन, भाव से छहों लेश्या द्रव्य से एक शुक्ल लेश्या, भव्यसिद्धिक, सासादन सम्यक्त्व, संज्ञी असंज्ञी दोनों, अनाहारक, चार उपयोग, आठ ध्यान, अड़तीस आस्रव, बावन लाख जाति, एक सौ साढ़े चौंसठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 11/14 राजू, काल – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट आवली का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट दो समय, अंतर – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट पल्योपम का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा निरंतर, तीस भाव, जघन्यावगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, चौरानवे प्रकृतियों का बंध, इक्यासी प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ चवालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार आहार मार्गणा में अनाहारकों में सासादन गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– जाति बावन लाख कही हैं उसका कारण ये है कि नरकगति में सासादन गुणस्थान कार्माण काययोग के साथ नहीं होता अत: चार लाख कम करने पर इसके अलावा 7 लाख वायु 7 लाख अग्निx7 लाख नित्य निगोद x7 इतर निगोद इस प्रकार 28+4=32 लाख घटाने पर क्योंकि इन जीवों में अपर्याप्त अवस्था में सासादन गुणस्थान का अभाव है इसी के अनुसार कुल कोटि बनेगी जानकर कहना चाहिए। काल नाना जीवों का जघन्य एक समय क्योंकि बहुत से जीव (सम्पूर्ण सासादन राशि में आवली के असंख्यातवें भाग का भाग देने पर) एक साथ अनाहारक हुए एक समय रहे पश्चात् या तो आहारक हो गये या मिथ्यादृष्टि हो गये। ध.पु. 4 पृ. 164 इस प्रकार जघन्य काल प्राप्त हुआ उत्कृष्ट काल आवली का असंख्यातवां भाग है क्योंकि लगातार सासादन सम्यग्दृष्टि जीव सासादन को प्राप्त कर अनाहारक होते रहें तो आवली के असंख्यातवें भाग काल तक ही होंगे इससे ज्यादा नहीं इस प्रकार उत्कृष्ट काल प्राप्त हुआ। अन्तर सुगम है शेष सभी पद सुगम है। बन्ध चौरानवें प्रकृति का कार्माण काय योगवत् जानना चाहिए। उदय भी यहाँ इक्यासी प्रकृति का है क्योंकि सामान्य से नवासी प्रकृति उदय योग्य हैं मिथ्यात्व गुणस्थान में तीन की व्युच्छित्ति व दो का अनुदय इस प्रकार पाँच+नरकद्विक, नरकायु इस प्रकार 5+3=8 कम करके 89–8= 81 का उदय व सत्त्व एक सौ चवालीस प्रकृति का क्योंकि तीर्थंकर, आहारक द्विक, नरकायु कम करके। शेष सुगम है।

नोट – यहाँ जो उत्कृष्ट दो समय काल लिया गया है इसका कारण यह है कि जो जीव त्रस नाली के बाहर जन्म लेता है वही जीव तीन समय तक अनाहारक रहता है किन्तु सासादन सम्यग्दृष्टि जीव त्रस नाली के बाहर नहीं जन्म लेता है इसलिए उसका दो समय काल उत्कृष्ट बनता है।

सासादन सम्यग्दृष्टियों की संख्या में आवली के असंख्यातवें भाग का भाग देकर एक भाग प्रमाण जीव मारणांतिक समुद्घात करते हैं।

421. अनाहारक असंयत गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	असंयत गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	7 प्राण
5.	संज्ञा	4 संज्ञा
6.	गति	4 गति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	1 कार्मण काययोग
10.	वेद	2 (स्त्री वेद बिना)
11.	कषाय	20 कषाय
12.	ज्ञान	3 ज्ञान
13.	संयम	असंयम
14.	दर्शन	3 दर्शन
15.	लेश्या	भाव से 4 लेश्या द्रव्य से एक शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	3 (क्षा., क्षयो., उप.)
18.	संज्ञी	संज्ञी
19.	आहारक	अनाहारक
20.	उपयोग	6 उपयोग
21.	ध्यान	10 (4 आर्त्त, 4 रौद्र, 2 धर्मध्यान)
22.	आस्रव	33 (20+12+1)
23.	जाति	26 लाख
24.	कुलकोटि	108½ लाख करोड़
25.	संख्या	पल्योपम का असंख्यातवाँ भाग
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग कुछ कम 6/14 राजू
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा- ज. एक समय उ. आवली का असंख्यातवाँ भाग एक जीव की अपेक्षा- ज. एक समय उ. दो समय
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा- ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व एक जीव की अपेक्षा- निरन्तर
30.	भाव	33 (औद. 17, औप. 1, क्षा.1, मि. 12, पा.2)
31.	अवगाहना	जघ. घनांगुल का असंख्यातवाँ भाग उ. 1000 योजन
32.	बन्ध	75 (कार्माण काय योग के समान)
33.	उदय	75 (कार्माण काय योग के समान)
34.	सत्त्व	148 (कार्माण काय योग के समान)

421. अणाहारिणो असंजद गुणट्ठाणं

तेसुं अणाहारिणो असंजद गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अविरदसंजदो गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय अपज्जत्त जीव समासो, छ अपज्जत्ती, सत्त पाणा, चत्तारि सण्णा, चत्तारि गदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, कम्माण काय जोगो, बे वेदा, बीस कसाया, तिण्णि णाणाणि, असंजमो, तिण्णि दंसणाणि, भावेण चत्तारि लेस्सा दव्वेण एग सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, उवसम खइय खओवसमिय तिण्णि सम्मत्ता, सण्णी, अणाहारिणो, छ उवजोगा, दस झाणाणि, तेतीस आसवा, छब्बीस लक्ख जादी, अद्धट्ठुत्तर सयं लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा पलिदोवमस्स असंखेज्जदि भागा, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा व छ चोद्दस भागा वा देसूणा, कालो णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण आवलिओ असंखेज्जदि भागा एग जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण बे समया, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एगजीवावेक्खा णिरंतरं, तेतीस भावा, जहण्णमवगहणं घणंगुलस्स संखेज्जदि भागा उक्कस्सेण जोजणसहस्सं, पंचसत्तदि पयडीणं बंधो, पंच सत्तदि पयडीणं उदओ एवं अडदालुत्तर सयं पयडीणं सच्चं होंति।

इदि आहार मग्गणाए अणाहारिणं असंजद गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

अनाहारक असंयत गुणस्थान

उन्हीं अनाहारक असंयत जीवों के आलाप कहने पर – एक अविरत संयत गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव समास, छहों अपर्याप्ति, सात प्राण, चारों संज्ञाएँ, चारों गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, कार्माण काययोग, दो वेद, बीस कषाय, तीन ज्ञान, असंयम, तीन दर्शन, भाव से चार लेश्या द्रव्य से एक शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, उपशम–क्षायिक–क्षयोपशम तीन सम्यक्त्व, संज्ञी, अनाहारक, छह उपयोग, दस ध्यान, तेतीस आस्रव, छब्बीस लाख जाति, एक सौ साढ़े आठ लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पल्योपम का असंख्यातवां भाग, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग व कुछ कम 6/14 राजू, काल – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट आवली का असंख्यातवां भाग एक जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट दो समय, अंतर – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा निरंतर, तेतीस भाव, जघन्य अवगाहना घनांगुल का असंख्यातवां भाग उत्कृष्ट एक हजार योजन, पिचहत्तर प्रकृतियों का बंध, पिचहत्तर प्रकृतियों का उदय एवं एक सौ अड़तालीस प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार आहार मार्गणा में अनाहारकों में असंयत गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– भाव से चार लेश्या द्रव्य से एक शुक्ल लेश्या सुगम है क्योंकि पहले भी कह चुके हैं। शेष पद सुगम है। स्पर्शन यहाँ स्वस्थान की अपेक्षा लोक का असंख्यातवां भाग है, उपपाद पद की अपेक्षा छह राजू होता है क्योंकि असंयत तिर्यंच मरण कर अच्युत स्वर्ग तक उत्पन्न होते हैं। कुछ कम का कथन पहले कर चुके है वहाँ से जानना चाहिए। काल का कथन सासादन गुणस्थानवत् जानना चाहिए एक जीव का उत्कृष्ट दो समय है।

शंका – यहाँ उत्कृष्ट काल तीन समय क्यों नहीं कहा ?

समाधान – क्योंकि तीन मोड़ा लेने वाले जीव का ही काल तीन समय होता है और तीन मोड़ा वही ले सकता है जो त्रस नाली के बाहर से आने वाला तथा त्रस नाली से बाहर जाने वाला सम्यग्दृष्टि अथवा सासादन सम्यक्त्वी नहीं होता केवल मिथ्यादृष्टि ही होता है। शेष कथन सुगम है। अन्तर एक जीव का सुगम है क्योंकि मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में विवेचन किया है वैसा ही जानना, नाना जीवों में जघन्य अन्तर सुगम है उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व से तात्पर्य है कि ऐसा भी संभव है कि सात आठ वर्ष तक कोई भी सम्यग्दृष्टि अनाहारक न हो उसके बाद कोई न कोई सम्यक्त्वी अनाहारक होगा ही शेष सुगम है। बन्ध उदय कार्माण काय योगवत् है, सत्त्व का कथन सुगम है कुछ व्याख्या नहीं है शेष सुगम है।

422. अनाहारक सयोगकेवली गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	सयोग केवली
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 अपर्याप्ति
4.	प्राण	1 प्राण (आयु)
5.	संज्ञा	क्षीण संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	1 कार्मण काययोग (समुद्घात के समय)
10.	वेद	अपगत वेद
11.	कषाय	अकषाय
12.	ज्ञान	केवलज्ञान
13.	संयम	यथाख्यात चारित्र
14.	दर्शन	केवलदर्शन
15.	लेश्या	द्रव्य भाव से शुक्ल लेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक
18.	संज्ञी	नो संज्ञी, नो असंज्ञी
19.	आहारक	अनाहारक
20.	उपयोग	2 (केवलज्ञान, केवलदर्शन)
21.	ध्यान	0
22.	आस्रव	1 योग, (समुद्घात के समय)
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	संख्यात (60)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ बहुभाग व सर्वलोक
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ बहुभाग व सर्वलोक
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– ज. तीन समय उ. संख्यात समय एक जीव ज.उ.तीन समय
29.	अन्तर	नाना जीवों की अपेक्षा– ज. एक समय उ. वर्ष पृथक्त्व एक जीव की अपेक्षा– निरन्तर
30.	भाव	14 (पा.2, क्षा.9, औद.3)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	1 साता वेदनीय (कार्माण काय योग के समान)
33.	उदय	25 (कार्माण काय योग के समान)
34.	सत्त्व	85 (कार्माण काय योग के समान)

422. अणाहारिणो सजोगकेवली गुणट्ठाणं

तेसुं अणाहारिणो सजोगकेवली गुणट्ठाणं जीवाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग सजोगकेवली गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय अपज्जत्त जीवसमासो, छ अपज्जत्ती, एग आउ पाणा, खीण सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, एग कम्माण कायजोगा समुग्घादेसु कम्माणकायजोगा, अवेदी, अकसायी, केवलणाणं, जहक्खादसंजमो, केवलदंसणं, दव्वेण भावेण सुक्कलेस्सा, भव्वसिद्धिया, खइय सम्मत्तं, णो सण्णी णो असण्णी, अणाहारिणो, बे उवजोगा जुगुमं, झाणातीद, एग आसवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा संखेज्ज (सट्ठि), खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि बहुभागा सव्वलोयो व, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्ज बहुभागं सव्वलोयं व, कालो णाण जीवावेक्खा जहण्णेण तिण्णि समया उक्कस्सेण संखेज्ज समया एग जीवावेक्खा जहण्णुकस्सेण तिण्णि समया, अंतरं णाणाजीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण वासपुधत्तं एगजीवावेक्खा णिरंतरं, चोद्दस भावा, जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणू, एग सादावेयणीयो बंधो, पणवीस पयडीणं उदओ एवं पंचासीदि पयडीणं सच्च होंति।

इदि आहार मग्गणाए अणाहारिणं सजोग केवली गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

अनाहारक सयोग केवली गुणस्थान

उन्हीं अनाहारक सयोग केवली जीवों के आलाप कहने पर – एक सयोग केवली गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव समास, छहों अपर्याप्ति, एक आयु प्राण, क्षीण संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, एक कार्माण काययोग समुद्घात के समय, अवेद, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यात संयम, केवल दर्शन, शुक्ल लेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, नो संज्ञी नो असंज्ञी, अनाहारक, दो उपयोग युगपत्, ध्यान रहित, एक आस्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – साठ, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यात बहुभाग एवं सर्वलोक, स्पर्शन – लोक का असंख्यात बहुभाग व सर्वलोक, काल – नाना जीवापेक्षा जघन्य तीन समय उत्कृष्ट संख्यात समय एक जीवापेक्षा जघन्युत्कृष्ट तीन समय, अंतर – नानाजीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट वर्ष पृथक्त्व एक जीवापेक्षा निरंतर, चौदह भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, एक सातावेदनीय का बंध, पच्चीस प्रकृतियों का उदय एवं पचासी प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार आहार मार्गणा में अनाहारकों में सयोग केवली गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ पर एक आयु प्राण ही होता है कार्माण काय योग पाया जाता है वही आस्रव है द्रव्य मन होने के कारण संज्ञी है भाव मन न होने से न संज्ञी है और न असंज्ञी हैं क्योंकि जब मन का प्रयोग होता है तब संज्ञी असंज्ञी की कल्पना होती है यहाँ मन है पर प्रयोग नहीं है इसलिए न संज्ञी है न असंज्ञी है शेष पद सुगम है, ध्यान से रहित कहने का तात्पर्य है समुद्घात के समय कोई ध्यान नहीं होता सयोग केवली गुणस्थान के अन्त में जब सूक्ष्म योग रह जाता है उस समय एक सूक्ष्म क्रिया प्रतिपाती शुक्ल ध्यान होता है। संख्या की अपेक्षा साठ होते हैं क्योंकि प्रतर समुद्घात में बीस लोकपूरण में बीस उतरते हुए प्रतर में बीस इस प्रकार साठ होते हैं। क्षेत्र और स्पर्शन एक जैसा है क्योंकि प्रतर समुद्घात में वात वलयों को छोड़कर तीनों लोक में आत्मा के प्रदेश फैल जाते हैं इस प्रकार लोक का असंख्यात बहुभाग बन जाता है लोक्पूरण समुद्घात में सम्पूर्ण लोक में फैल जाते हैं इस प्रकार सम्पूर्ण लोक बन जाता है। तथा लोक का असंख्यात बहुभाग व सर्वलोक बन जाता है। काल और अन्तर सुगम है क्योंकि यदि लगातार सयोग केवली समुद्घात करें तो संख्यात समय तक ही करते हैं जघन्य से एक साथ बहुत से केवली तीन समय तक समुद्घात करते हैं इसी प्रकार अन्तर जघन्य से एक समय उत्कृष्ट से यदि कोई भी केवली समुद्घात न करें तो सात आठ वर्ष तक नहीं करें उसके बाद कोई न कोई केवली समुद्घात करेंगे।

बन्ध, उदय, सत्त्व कार्माण काययोग के समान जानना चाहिए।

423. अनाहारक अयोगकेवली गुणस्थान

		सामान्य
1.	गुणस्थान	अयोग केवली गुणस्थान
2.	जीवसमास	संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त
3.	पर्याप्ति	6 पर्याप्ति
4.	प्राण	एक आयु प्राण
5.	संज्ञा	क्षीण संज्ञा
6.	गति	मनुष्यगति
7.	इन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
8.	काय	त्रसकाय
9.	योग	0 (अयोग)
10.	वेद	अपगत वेद
11.	कषाय	0 (अकषाय)
12.	ज्ञान	केवलज्ञान
13.	संयम	यथाख्यात चारित्र
14.	दर्शन	केवलदर्शन
15.	लेश्या	अलेश्या
16.	भव्य	भव्य
17.	सम्यक्त्व	क्षायिक
18.	संज्ञी	नो संज्ञी, नो असंज्ञी
19.	आहारक	अनाहारक
20.	उपयोग	2 (केवलज्ञान, केवलदर्शन युगपत्)
21.	ध्यान	1 (समुच्छिन्न क्रिया प्रतिपाति)
22.	आस्रव	0
23.	जाति	14 लाख
24.	कुलकोटि	14 लाख करोड़
25.	संख्या	संख्यात (598)
26.	क्षेत्र	लोक का असंख्यातवाँ भाग
27.	स्पर्शन	लोक का असंख्यातवाँ भाग
28.	काल	नाना जीवों की अपेक्षा– अन्तर्मुहूर्त व एक जीव की अपेक्षा– अन्तर्मुहूर्त
29.	अन्तर	नाना जीवापेक्षा– ज. एक समय उ. 6 माह एक जीव निरंतर
30.	भाव	13 (पा.2, क्षा.9, औद.2)
31.	अवगाहना	जघ. 3½ हाथ उ. 525 धनुष
32.	बन्ध	0 गुणस्थानोक्त
33.	उदय	12 गुणस्थानोक्त
34.	सत्त्व	85 गुणस्थानोक्त चरम समय में 13 प्रकृति का सत्त्व

423. अणाहारिणो अजोगकेवली गुणट्ठाणं

तेसुं अणाहारिणो अजोग केवली जीवाणं गुणट्ठाणामालाव भण्णमाणे अत्थि – एग अजोग केवली गुणट्ठाणं, सण्णी पंचिंदिय पज्जत्त जीव समासो, छ पज्जत्ती, एग आउपाणा, खीण सण्णा, मणुस्सगदी, पंचिंदियाणि, तसकाओ, अजोगी, अवेदी, अकसायी, केवलणाणं, जहक्खाद संजमो, केवलदंसणं, लेस्सातीदो, भव्वसिद्धिया, खइयसम्मत्तं, णो सण्णी णो असण्णी, अणाहारिणो, बे उवजोगा, एग समुच्छिण्णक्किया सुक्कज्झाणं, णिरासवा, चोद्दस लक्ख जादी, चोद्दस लक्ख कोडि कुलकोडीणं, संखावेक्खा अट्ठणउदि उत्तर पंचसयं, खेत्तावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, फासावेक्खा लोयस्स असंखेज्जदि भागा, कालो णाणेगजीवावेक्खा अंतोमुहुत्तं, अतरं णाणा जीवावेक्खा जहण्णेण एगसमओ उक्कस्सेण छम्मासा एग जीवावेक्खा णिरंतरं, तेरस भावा[*1], जहण्णमवगहणं अद्धुट्ठ हत्थं उक्कस्सेण पणबीसुत्तर पंचसयं धणूं, अबंधो, बारस पयडीणं उदओ एवं पंचासीदि पयडीणं सच्चं होंति।

इदि आहार मग्गणाए अणाहारिणं अजोग केवली गुणट्ठाणं सम्मत्ता।

अनाहारक अयोग केवली गुणस्थान

उन्हीं अनाहारक अयोग केवली जीवों के आलाप कहने पर – एक अयोग केवली गुणस्थान, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव समास, छहों पर्याप्ति, एक प्राण, क्षीण संज्ञा, मनुष्य गति, पंचेन्द्रिय, त्रसकाय, अयोग, अवेद, अकषाय, केवलज्ञान, यथाख्यात संयम, केवल दर्शन, अलेश्या, भव्य सिद्धिक, क्षायिक सम्यक्त्व, नो संज्ञी नो असंज्ञी, अनाहारक, दो उपयोग, एक व्युपरत क्रिया निवर्तीनि शुक्ल ध्यान, निरास्रव, चौदह लाख जाति, चौदह लाख करोड़ कुल कोटि, संख्यापेक्षा – पाँच सौ अन्ठानवे, क्षेत्रापेक्षा – लोक का असंख्यातवां भाग, स्पर्शन – लोक का असंख्यातवां भाग, काल – नाना व एक जीवापेक्षा अंतर्मुहूर्त, अंतर–नाना जीवापेक्षा जघन्य एक समय उत्कृष्ट छह माह एक जीवापेक्षा निरंतर, तेरह भाव, जघन्यावगाहना साढ़े तीन हाथ उत्कृष्ट पाँच सौ पच्चीस धनुष, अबंध, बारह प्रकृतियों का उदय एवं पचासी प्रकृतियों का सत्त्व होता है।

इस प्रकार आहार मार्गणा में अनाहारकों में अयोग केवली गुणस्थान समाप्त हुआ।

विशेषार्थ :– यहाँ अनाहारक होते हुए भी पर्याप्त होते हैं। अपर्याप्तक नहीं होते आयु प्राण होता हैं। शेष सभी पद सुगम हैं कुछ भी व्याख्या करने योग्य नहीं है।

[*1] भाव तेरह होते हैं क्योंकि औदयिक भावों में मात्र एक गति व असिद्धत्व रह जाता है क्षायिक भाव नौ होते है तथा पारिणामिक भव्यत्व और जीवत्व इस प्रकार दो होते हैं। काल अन्तर्मुहूर्त पहले कहा जा चुका है अन्तर भी कहा जा चुका है वहाँ से जान लेना चाहिए।